# अल-क़ुरआन

## समन्वित अंग्रेज़ी अनुवाद का हिन्दी रूपान्तर

ज़िया एच. शाह, एमडी

# भूमिका

यह अनुवाद शानदार क़ुरआन को पढ़ते हुए गुज़ारी गई एक उम्र का फल है, और इसे करने का हौसला उसी लम्बे साथ से मिला है।

आइज़क न्यूटन की तरह मैं भी अपने आप को दिग्गजों के कन्धों पर खड़ा पाता हूँ। मैंने क़ुरआन के अस्सी से ज़्यादा मौजूदा अंग्रेज़ी अनुवादों की ख़ूबियों से फ़ायदा उठाया है, जो ऑनलाइन उपलब्ध हैं, और मैं पूरी ईमानदारी से कह सकता हूँ कि मूल पाठ को ढालने में मैंने दूसरे जाने-माने और ख़ूब पढ़े जाने वाले अनुवादकों से ज़्यादा छूट नहीं ली—एम.ए.एस. अब्दुल हलीम, मुहम्मद असद और मुहम्मद मार्माड्यूक पिक्थाल, केवल तीन नाम लेने को।

आयतों को जोड़कर पैराग्राफ़ बनाने में मैंने, बहुत थोड़े अपवादों को छोड़कर, लगभग पूरी तरह एम.ए.एस. अब्दुल हलीम की पैरवी की है।

इस अनुवाद की एक ख़ूबी यह है कि यह आधुनिक अमरीकी अंग्रेज़ी में लिखा गया है। पुराने अनुवादों के “thee” और “thou” कितने ही आदरणीय क्यों न हों, अब पाठक और पाठ के बीच आड़ बन जाते हैं; इसके बजाय मैंने कोशिश की है कि क़ुरआन उस सादा, ज़िन्दा भाषा में बोले जो पाठक—ख़ास तौर पर नौजवान—सचमुच इस्तेमाल करते हैं। पूरी पारदर्शिता की ख़ातिर एक इक़रार भी ज़रूरी है। उर्दू मेरी मातृभाषा है, और उम्र भर में मैंने अरबी का अच्छा-ख़ासा शब्द-भंडार हासिल कर लिया है; मगर अरबी व्याकरण का मेरा ज्ञान सीमित है। मेरा मानना है कि अनगिनत अंग्रेज़ी और उर्दू अनुवादों से मशविरा करके इस कमी की काफ़ी हद तक भरपाई हो गई है।

दूसरी ख़ूबी यह है कि मैं क़ुरआन की अपनी समझ में उम्र भर के वैज्ञानिक अध्ययन को साथ लेकर आता हूँ। कोई भी सच्ची और खरी वैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि सब कुछ जानने वाले ख़ुदा से कभी छिपी न थी, और उसके अपने शब्द कई तरह से इस हक़ीक़त को झलकाते हैं। फिर भी मैंने विज्ञान को ज़बरदस्ती अनुवाद के भीतर ठूँसने की कोई कोशिश नहीं की। इसके बजाय मैं फ़ुटनोटों में टिप्पणियों के रूप में छोटी-छोटी अन्तर्दृष्टियाँ जोड़ता रहूँगा।

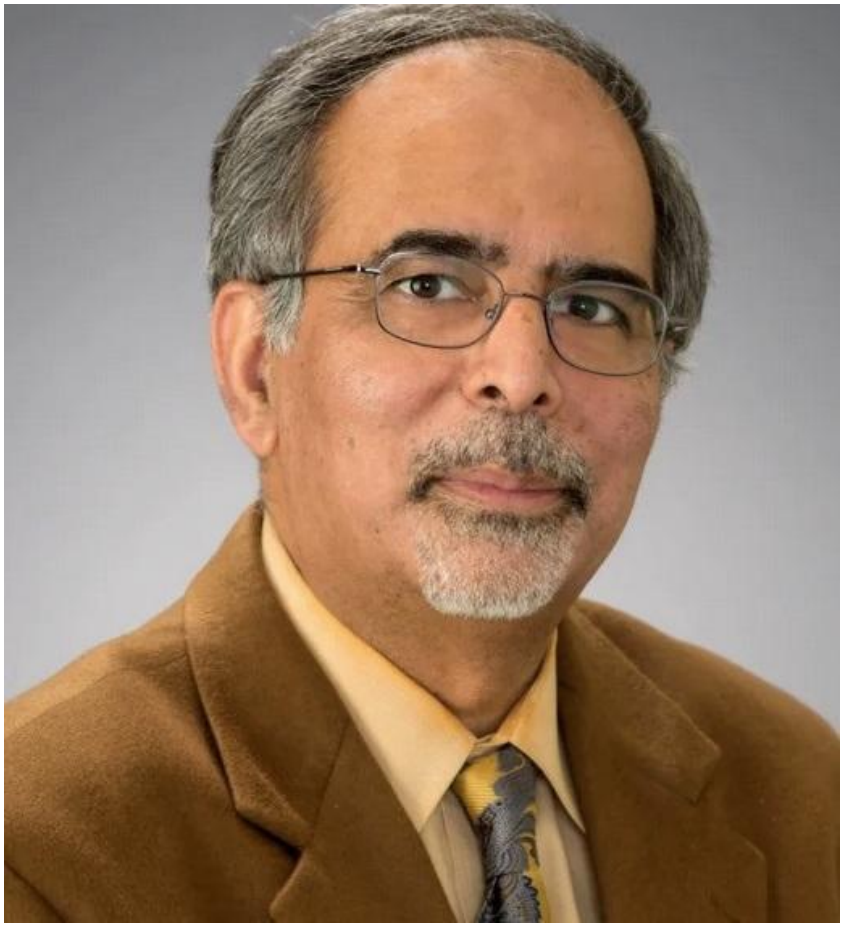
मैंने अपनी तस्वीर इसलिए जोड़ी है कि यह आपके लिए कम गुमनाम रहे, ताकि आप चाहें तो इतने सारे दूसरे जाने-माने अनुवादों के होते हुए इसे भी पढ़ें।

इस अनुवाद का जल्द ही 32 दूसरी आम भाषाओं में अनुवाद किया जाएगा: स्पेनी, फ़्रांसीसी, जर्मन, इतालवी, पुर्तगाली, डच, रूसी, पोलिश, यूक्रेनी, चेक, यूनानी, स्वीडिश, नॉर्वेजियन, डेनिश, फ़िनिश, रोमानियाई, हंगेरियन, तुर्की, हिब्रू, फ़ारसी (फ़ारसी), उर्दू, हिन्दी, बंगाली, पंजाबी, चीनी (सरल और पारम्परिक), जापानी, कोरियाई, इंडोनेशियाई, मलय, वियतनामी, थाई और फ़िलिपीनो/तागालोग।

अंग्रेज़ी अनुवाद मेरा है, और बाक़ी सब अनुवाद एआई की मदद से मेरे अंग्रेज़ी अनुवाद के अनुवाद हैं। इसलिए जब भी कोई शक हो, कृपया मूल अरबी पाठ या मेरे अंग्रेज़ी अनुवाद को देखिए।

अंग्रेज़ी अनुवाद लगभग रोज़ाना और दूसरे अनुवाद हर महीने अपडेट और बेहतर किए जाते रहेंगे। इंशाअल्लाह

और आप वर्ड फ़ाइलों का इस्तेमाल करके इसे बेहतर बना सकते हैं और ईश्वरीय पैग़ाम को लगातार सीखते रहने के लिए अपनी टिप्पणियाँ जोड़ सकते हैं।



ज़िया एच शाह एमडी: अपस्टेट न्यूयॉर्क में कार्यरत फेफड़ों के रोगों (पल्मोनोलॉजी) और नींद के रोगों के चिकित्सक

# विषय-सूची

## विषय-सूची

भूमिका ..... 2
विषय-सूची ..... 5
1. आरम्भ (अल-फ़ातिहा) ..... 9
2. गाय (अल-बक़रा) ..... 10
3. इमरान का घराना (आले-इमरान) ..... 34
4. औरतें (अन-निसा) ..... 48
5. दस्तरख़्वान (अल-माइदा) ..... 63
6. मवेशी (अल-अनआम) ..... 74
7. ऊँचाइयाँ (अल-आराफ़) ..... 86
8. जंग में हासिल माल (अल-अनफ़ाल) ..... 99
9. तौबा (अत-तौबा) ..... 105
10. यूनुस (यूनुस) ..... 115
11. हूद (हूद) ..... 122
12. यूसुफ़ (यूसुफ़) ..... 130
13. बादल की गरज (अर-रअद) ..... 137
14. इबराहीम (इबराहीम) ..... 141
15. अल-हिज्र (अल-हिज्र) ..... 145
16. शहद की मक्खी (अन-नह्ल) ..... 148
17. रात का सफ़र (अल-इसरा) ..... 155
18. गुफा (अल-कह्फ़) ..... 162
19. मरयम (मरयम) ..... 169
20. ता हा (ता हा) ..... 173
21. नबी (अल-अंबिया) ..... 179
22. हज (अल-हज) ..... 184
23. ईमान वाले (अल-मोमिनून) ..... 189
24. नूर (अन-नूर) ..... 194
25. फ़ुरक़ान (अल-फ़ुरक़ान) ..... 200
26. शायर (अश-शुअरा) ..... 204

27. चींटियाँ (अन-नम्ल) ..... 210
28. क़िस्सा (अल-क़सस) ..... 215
29. मकड़ी (अल-अनकबूत) ..... 221
30. रूमी (अर-रूम) ..... 225
31. लुक़मान (लुक़मान) ..... 229
32. सजदा (अस-सजदा) ..... 232
33. संयुक्त दल (अल-अहज़ाब) ..... 234
34. सबा (सबा) ..... 239
35. पैदा करने वाला (फ़ातिर) ..... 243
36. या सीन (या सीन) ..... 247
37. सफ़ बाँधने वाले (अस-साफ़्फ़ात) ..... 250
38. साद (साद) ..... 254
39. गिरोह (अज़-ज़ुमर) ..... 258
40. क्षमा करने वाला (ग़ाफ़िर) ..... 263
41. खोलकर बयान की गई (फ़ुस्सिलत) ..... 268
42. मशविरा (अश-शूरा) ..... 272
43. सोने के ज़ेवर (अज़-ज़ुख़रुफ़) ..... 276
44. धुआँ (अद-दुख़ान) ..... 280
45. घुटनों के बल (अल-जासिया) ..... 282
46. रेत के टीले (अल-अहक़ाफ़) ..... 285
47. मुहम्मद (मुहम्मद) ..... 288
48. फ़तह (अल-फ़त्ह) ..... 291
49. हुजरे (अल-हुजुरात) ..... 294
50. क़ाफ़ (क़ाफ़) ..... 296
51. बिखेरने वाली हवाएँ (अज़-ज़ारियात) ..... 298
52. पहाड़ (अत-तूर) ..... 300
53. तारा (अन-नज्म) ..... 302
54. चाँद (अल-क़मर) ..... 304
55. रहमान (अर-रहमान) ..... 306
56. होकर रहने वाली (अल-वाक़िआ) ..... 308
57. लोहा (अल-हदीद) ..... 310

58. तकरार (अल-मुजादला) ..... 313
59. लश्करों का इकट्ठा होना (अल-हश्र) ..... 316
60. जाँची जाने वाली औरतें (अल-मुम्तहिना) ..... 318
61. ठोस सफ़ें (अस-सफ़्फ़) ..... 320
62. जुमे का दिन (अल-जुमुआ) ..... 321
63. मुनाफ़िक़ (अल-मुनाफ़िक़ून) ..... 322
64. आपसी उपेक्षा (अत-तग़ाबुन) ..... 323
65. तलाक़ (अत-तलाक़) ..... 325
66. हराम ठहराना (अत-तहरीम) ..... 327
67. बादशाही (अल-मुल्क) ..... 329
68. क़लम (अल-क़लम) ..... 331
69. अटल घड़ी (अल-हाक़्क़ा) ..... 333
70. चढ़ाई के रास्ते (अल-मआरिज) ..... 335
71. नूह (नूह) ..... 336
72. जिन्न (अल-जिन्न) ..... 337
73. चादर में लिपटने वाला (अल-मुज़्ज़म्मिल) ..... 339
74. चादर ओढ़ने वाला (अल-मुद्दस्सिर) ..... 340
75. क़ियामत (अल-क़ियामा) ..... 342
76. इनसान (अल-इनसान) ..... 343
77. भेजी जाने वालियाँ (अल-मुरसलात) ..... 345
78. बड़ी ख़बर (अन-नबा) ..... 346
79. ज़ोर से खींचने वाले (अन-नाज़िआत) ..... 347
80. उसने त्योरी चढ़ाई (अबस) ..... 348
81. अँधेरे में लिपटा हुआ (अत-तकवीर) ..... 349
82. फट जाना (अल-इनफ़ितार) ..... 350
83. नाप-तौल में कमी करने वाले (अल-मुतफ़्फ़िफ़ीन) ..... 351
84. चिर जाना (अल-इनशिक़ाक़) ..... 352
85. ऊँचे बुर्ज (अल-बुरूज) ..... 353
86. रात को आने वाला (अत-तारिक़) ..... 354
87. सबसे ऊँचा (अल-आला) ..... 355
88. छा जाने वाली घटना (अल-ग़ाशिया) ..... 356

89. भोर (अल-फ़ज्र) ..... 357
90. शहर (अल-बलद) ..... 358
91. सूरज (अश-शम्स) ..... 359
92. रात (अल-लैल) ..... 360
93. चढ़ते दिन की रौशनी (अज़-ज़ुहा) ..... 361
94. राहत (अश-शर्ह) ..... 362
95. अंजीर (अत-तीन) ..... 363
96. चिमटने वाला रूप (अल-अलक़) ..... 364
97. शबे-क़द्र (अल-क़द्र) ..... 365
98. खुली दलील (अल-बय्यिना) ..... 366
99. भूचाल (अज़-ज़लज़ला) ..... 367
100. दौड़ते घोड़े (अल-आदियात) ..... 368
101. खड़खड़ा देने वाली चोट (अल-क़ारिआ) ..... 369
102. ज़्यादा पाने की धुन (अत-तकासुर) ..... 370
103. ढलता दिन (अल-अस्र) ..... 371
104. पीठ पीछे बुराई करने वाला (अल-हुमज़ा) ..... 372
105. हाथी (अल-फ़ील) ..... 373
106. क़ुरैश (क़ुरैश) ..... 374
107. आम बरतने की चीज़ें (अल-माऊन) ..... 375
108. भरपूर भलाई (अल-कौसर) ..... 376
109. सत्य के इनकारी (अल-काफ़िरून) ..... 377
110. मदद (अन-नस्र) ..... 378
111. खजूर की छाल (अल-मसद) ..... 379
112. ख़ालिस ईमान (अल-इख़लास) ..... 380
113. भोर (अल-फ़लक़) ..... 381
114. लोग (अन-नास) ..... 382

# 1. आरम्भ (अल-फ़ातिहा)

अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है। सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो सारे संसारों का रब है, अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान, बदले के दिन का मालिक। हम तेरी ही इबादत करते हैं, और तुझी से मदद माँगते हैं। हमें सीधे मार्ग पर चला, उन लोगों के मार्ग पर जिन पर तूने अनुग्रह किया—न उनके जो प्रकोप के भागी हुए, और न उनके जो राह से भटक गए। (1–7)

# 2. गाय (अल-बक़रा)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

अलिफ़ लाम मीम। (1)

यह वह किताब है जिसमें कोई सन्देह नहीं, मार्गदर्शन है उनके लिए जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं, जो परोक्ष पर ईमान लाते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं; जो उस पर ईमान लाते हैं जो ऐ नबी, तुम पर उतारा गया और उस पर भी जो तुमसे पहले उतारा गया, और जो आख़िरत पर पक्का विश्वास रखते हैं। यही लोग अपने रब की ओर से मार्गदर्शन पर हैं, और यही सफल होने वाले हैं। रहे वे लोग जिन्होंने ईमान को ठुकरा दिया, उनके लिए बराबर है कि तुम उन्हें सचेत करो या न करो: वे ईमान नहीं लाएँगे। अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर मुहर लगा दी है, और उनकी आँखों पर परदा पड़ा है। उनके लिए बड़ी यातना है। (2–7)

लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं, "हम अल्लाह पर और अंतिम दिन पर ईमान लाए," हालाँकि वे बिलकुल ईमान वाले नहीं। वे अल्लाह को और ईमान वालों को धोखा देना चाहते हैं, मगर वे अपने सिवा किसी को धोखा नहीं देते—और उन्हें इसका एहसास नहीं। उनके दिलों में एक रोग है, और अल्लाह ने उस रोग को और बढ़ने दिया; उनके लिए दुखद यातना है उस झूठ के कारण जो वे बोलते रहे। जब उनसे कहा जाता है, "ज़मीन में बिगाड़ न फैलाओ," तो कहते हैं, "हम तो बस सुधार करने वाले हैं।" सुन लो, यही लोग बिगाड़ फैलाने वाले हैं, मगर इन्हें एहसास नहीं। जब उनसे कहा जाता है, "ईमान लाओ जैसे दूसरे लोग ईमान लाए हैं," तो कहते हैं, "क्या हम वैसे ईमान लाएँ जैसे नासमझ लोग ईमान लाए हैं?" सुन लो, नासमझ तो यही हैं, मगर जानते नहीं। जब ये ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं, "हम ईमान लाए"; और जब अपने शैतान साथियों के साथ अकेले होते हैं तो कहते हैं, "हम तो तुम्हारे साथ हैं; हम तो बस हँसी उड़ा रहे थे।" अल्लाह उनकी हँसी उन्हीं पर लौटा देता है, और उन्हें उनकी सरकशी में अंधों की तरह भटकने के लिए छोड़ देता है। यही वे लोग हैं जिन्होंने मार्गदर्शन के बदले गुमराही ख़रीद ली: न उनके सौदे ने उन्हें कोई लाभ दिया, और न उन्होंने राह पाई। उनकी मिसाल उस आदमी जैसी है जिसने आग जलाई: फिर जब उसने उसके आस-पास सब कुछ रौशन कर दिया, तो अल्लाह ने उनकी रौशनी छीन ली और उन्हें तह-पर-तह अँधेरों में छोड़ दिया, कि कुछ देख नहीं पाते—बहरे, गूँगे और अंधे, सो वे लौट नहीं सकते। या फिर जैसे आसमान से घनघोर घटा, जिसमें अँधेरे हों, गरज और बिजली हो: वे कड़क के मारे मौत के डर से अपने कानों में उँगलियाँ ठूँस लेते हैं—और अल्लाह इनकार करने वालों को हर ओर से घेरे हुए है। बिजली उनकी निगाहें उचक लेने को होती है; जब-जब वह उनके लिए चमकती है वे उसमें चल पड़ते हैं, और जब उन पर अँधेरा छा जाता है तो ठिठककर खड़े रह जाते हैं। अल्लाह चाहता तो उनके कान और उनकी आँखें छीन लेता: अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। (8–20)

ऐ लोगो, अपने रब की इबादत करो, जिसने तुम्हें पैदा किया और उन्हें भी जो तुमसे पहले थे, ताकि तुम उसके प्रति सचेत हो जाओ—वही जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को ठहरने की जगह और आसमान को छत बनाया, और आसमान से पानी उतारा, फिर उसके द्वारा तुम्हारी रोज़ी के लिए फल निकाले। तो जानते-बूझते अल्लाह के समकक्ष न ठहराओ। और अगर तुम्हें उस चीज़ में सन्देह है जो हमने अपने बन्दे पर उतारी है, तो उस जैसी एक ही सूरा ले आओ, और अल्लाह के सिवा अपने गवाहों को बुला लो, अगर तुम सच्चे हो। फिर अगर तुम ऐसा न कर सको—और तुम कभी न कर सकोगे—तो उस आग से बचो जिसका ईंधन इनसान और पत्थर हैं, जो सत्य के इनकारियों के लिए तैयार की गई है। (21–24)

जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उन्हें शुभ-सूचना दे दो कि उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं। जब भी उनमें से कोई फल उन्हें रोज़ी के रूप में दिया जाएगा, वे कहेंगे, "यह तो वही है जो हमें पहले दिया गया था," क्योंकि उन्हें उससे मिलता-जुलता ही दिया जाएगा। वहाँ उनके लिए पाक-साफ़ जोड़े होंगे, और वे वहाँ सदैव रहेंगे।[1] (25)

अल्लाह इससे नहीं शरमाता कि मच्छर की मिसाल दे, या उससे भी बढ़कर किसी चीज़ की। जो ईमान लाए हैं वे जानते हैं कि यह उनके रब की ओर से सत्य है, और जो इनकार करते हैं वे पूछते हैं, "ऐसी मिसाल से अल्लाह का क्या अभिप्राय हो सकता है?" इसके द्वारा वह बहुतों को भटकने देता है, और इसके द्वारा बहुतों को राह दिखाता है—और इसके द्वारा वह भटकने नहीं देता सिवाय उनके जो जान-बूझकर अवज्ञा करते हैं: जो अल्लाह के वचन को पक्का बाँध लेने के बाद तोड़ देते हैं, जिसे अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया है उसे काटते हैं, और ज़मीन में बिगाड़ फैलाते हैं। यही लोग घाटे में हैं। तुम अल्लाह का इनकार कैसे करते हो, जबकि तुम बेजान थे तो उसने तुम्हें जीवन दिया? फिर वही तुम्हें मौत देगा, फिर वही तुम्हें दोबारा जीवित करेगा, और फिर उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे। वही है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो ज़मीन में है; फिर उसने आसमान की ओर रुख़ किया और उन्हें सात आसमानों के रूप में सँवार दिया। वह हर चीज़ का पूरा ज्ञान रखता है। (26–29)

ऐ नबी, जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा, "मैं ज़मीन में एक उत्तराधिकारी बनाने वाला हूँ," तो उन्होंने कहा, "क्या तू उसमें उसे रखेगा जो उसमें बिगाड़ फैलाएगा और ख़ून बहाएगा, जबकि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरा गुणगान करते और तेरी पवित्रता बयान करते हैं?" उसने कहा, "मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।" और उसने आदम को नाम सिखाए—सब के सब। फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने रखा और कहा, "मुझे इनके नाम बताओ, अगर तुम सच्चे हो।" उन्होंने कहा, "तू पाक है! हमें कोई ज्ञान नहीं सिवाय उसके जो तूने हमें सिखाया। निश्चय ही तू ही सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है।" उसने कहा, "ऐ आदम, इन्हें इनके नाम बता दो।" फिर जब उसने उन्हें उनके नाम बता दिए, तो उसने कहा, "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं

[1] यह आयत ज़ोरदार इशारा करती है कि जन्नत किसी न किसी अर्थ में हमारी मौजूदा दुनिया की तरह भौतिक होगी, केवल आध्यात्मिक नहीं।

आसमानों और ज़मीन की छिपी बातें जानता हूँ, और वह भी जानता हूँ जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छिपाते रहे हो?" (30–33)

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा, "आदम के आगे झुक जाओ," तो वे झुक गए—सिवाय इबलीस के। उसने इनकार किया और घमंड किया, और इनकार करने वालों में से हो गया। हमने कहा, "ऐ आदम, तुम और तुम्हारी पत्नी जन्नत में रहो, और उसमें से जहाँ से चाहो जी भरकर खाओ; मगर इस पेड़ के पास न जाना, वरना तुम दोनों ज़ालिमों में से हो जाओगे।" फिर शैतान ने उन दोनों को वहाँ से फिसला दिया, और जिस हालत में वे थे उससे उन्हें निकलवा दिया। हमने कहा, "उतर जाओ, तुम एक-दूसरे के दुश्मन होगे! और ज़मीन में तुम्हारे लिए एक समय तक ठिकाना और जीवन-सामग्री है।" फिर आदम ने अपने रब से कुछ कलिमे सीख लिए, तो उसने उस पर दया-दृष्टि की: निश्चय ही वही तौबा क़बूल करने वाला, सदा दयावान है। हमने कहा, "तुम सब यहाँ से उतर जाओ। फिर जब मेरी ओर से तुम्हारे पास मार्गदर्शन आए, तो जो मेरे मार्गदर्शन पर चलेंगे उन्हें न कोई भय होगा और न वे दुखी होंगे; और जो इनकार करेंगे और हमारी निशानियों को झुठलाएँगे—वही आग वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।" (34–39)

ऐ इसराईल की सन्तान, मेरे उस अनुग्रह को याद करो जो मैंने तुम पर किया। मेरे साथ किया हुआ अपना वचन पूरा करो, मैं तुम्हारे साथ किया हुआ अपना वचन पूरा करूँगा; और मुझी से डरो। उस पर ईमान लाओ जो मैंने उतारा है, जो उसकी पुष्टि करता है जो तुम्हारे पास पहले से है, और सबसे पहले उसका इनकार करने वाले न बनो। मेरी आयतों को थोड़े-से दाम पर न बेचो, और मेरे ही प्रति सचेत रहो। सत्य पर असत्य का परदा न डालो, और जानते-बूझते सत्य को न छिपाओ। नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो, और झुकने वालों के साथ झुको। क्या तुम दूसरों को नेकी का हुक्म देते हो और अपने-आप को भूल जाते हो, हालाँकि तुम किताब पढ़ते हो? क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? धैर्य और नमाज़ से मदद लो—और निस्संदेह यह भारी है, मगर उन विनम्र लोगों के लिए नहीं, जो जानते हैं कि उन्हें अपने रब से मिलना है, और उसी की ओर लौटकर जाना है। (40–46)

ऐ इसराईल की सन्तान, मेरे उस अनुग्रह को याद करो जो मैंने तुम पर किया, और यह कि मैंने तुम्हें सारे संसार वालों पर श्रेष्ठता दी। और उस दिन से बचो जब कोई जान किसी दूसरी जान के कुछ काम न आएगी, न उसकी ओर से कोई सिफ़ारिश क़बूल होगी, न उससे कोई फ़िदया लिया जाएगा, और न उन्हें मदद मिलेगी। और याद करो जब हमने तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुटकारा दिलाया, जो तुम्हें भयानक कष्ट देते थे, तुम्हारे बेटों को ज़बह करते और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित छोड़ देते थे—और इसमें तुम्हारे रब की ओर से बड़ी आज़माइश थी; और जब हमने तुम्हारे लिए समुद्र को फाड़ दिया, और तुम्हें बचा लिया, और तुम्हारे देखते-देखते फ़िरऔन के लोगों को डुबो दिया; और जब हमने मूसा से चालीस रातों का वादा ठहराया, फिर उसके पीछे तुमने बछड़े को अपना लिया, और तुम ज़ालिम ठहरे। फिर इसके बाद भी हमने तुम्हें माफ़ कर दिया, ताकि तुम शुक्र करो। (47–52)

और याद करो जब हमने मूसा को किताब और फ़ुरक़ान दिया, ताकि तुम राह पाओ; और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, "ऐ मेरी क़ौम, तुमने बछड़े को अपनाकर अपने ऊपर ज़ुल्म किया है। तो अपने पैदा करने वाले के आगे तौबा करो और अपने लोगों को क़त्ल करो: यही तुम्हारे पैदा करने वाले के निकट तुम्हारे लिए बेहतर है।" फिर उसने तुम पर दया-दृष्टि की: निश्चय ही वही तौबा क़बूल करने वाला, सदा दयावान है। और जब तुमने कहा, "ऐ मूसा, हम तुम्हारी बात हरगिज़ न मानेंगे जब तक अल्लाह को खुल्लम-खुल्ला न देख लें," तो तुम्हारे देखते-देखते कड़क ने तुम्हें आ पकड़ा। फिर हमने तुम्हारी मौत के बाद तुम्हें उठा खड़ा किया, ताकि तुम शुक्र करो। और हमने तुम पर बादलों की छाया की, और तुम पर मन्न और सलवा उतारा: "खाओ उन पाक चीज़ों में से जो हमने तुम्हें दी हैं।" उन्होंने हम पर ज़ुल्म नहीं किया; बल्कि वे अपने ही ऊपर ज़ुल्म करते रहे। (53–57)

और जब हमने कहा, "इस बस्ती में दाख़िल हो जाओ और इसमें से जहाँ से चाहो जी भरकर खाओ; दरवाज़े में विनम्रता से झुकते हुए दाख़िल होना और कहना, 'हमारे बोझ हमसे उतार दे,' हम तुम्हारी ख़ताएँ माफ़ कर देंगे और अच्छा करने वालों को और अधिक देंगे।" मगर ज़ालिमों ने उस बात को, जो उनसे कही गई थी, दूसरी बात से बदल डाला, तो हमने ज़ालिमों पर उनकी लगातार अवज्ञा के कारण आसमान से एक आफ़त उतारी। (58–59)

और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी की दुआ की, तो हमने कहा, "अपनी लाठी चट्टान पर मारो।" तो उससे बारह सोते फूट निकले, और हर गिरोह ने अपना घाट जान लिया। "अल्लाह की दी हुई रोज़ी में से खाओ और पियो, और ज़मीन में बिगाड़ फैलाते न फिरो।" और जब तुमने कहा, "ऐ मूसा, हम एक ही तरह के खाने पर सब्र नहीं कर सकते। तो हमारे लिए अपने रब से दुआ करो कि वह हमारे लिए वह निकाले जो ज़मीन उगाती है—उसका साग, उसकी ककड़ी, उसका लहसुन, उसकी मसूर और उसकी प्याज़।" उसने कहा, "क्या तुम बेहतर चीज़ के बदले घटिया चीज़ लेना चाहते हो? किसी शहर में उतर जाओ, वहाँ तुम्हें वह मिल जाएगा जो तुमने माँगा है।" और उन पर ज़िल्लत और बदहाली थोप दी गई, और वे अल्लाह का प्रकोप लेकर लौटे। यह इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों का इनकार करते रहे और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते रहे; यह इसलिए कि उन्होंने अवज्ञा की और हद से बढ़ते रहे। (60–61)

निस्संदेह जो ईमान लाए, और जो यहूदी हुए, और ईसाई, और साबी—जो भी अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाया और अच्छा कर्म किया—उनका बदला उनके रब के पास है; उन्हें न कोई भय होगा, और न वे दुखी होंगे।[2] (62)

और जब हमने तुमसे वचन लिया और तूर को तुम्हारे ऊपर उठाया: "जो कुछ हमने तुम्हें दिया है उसे मज़बूती से थामो, और जो उसमें है उसे याद रखो, ताकि तुम अल्लाह के प्रति सचेत हो जाओ।" फिर इसके बाद तुम फिर गए, और अगर तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और उसकी दयालुता न होती, तो तुम ज़रूर घाटा

[2] यह बुनियादी आयत इस्लाम में बहुलतावाद के बारे में बहुत कुछ कह देती है।

उठाने वालों में से होते। और तुम अपने उन लोगों को ख़ूब जानते हो जिन्होंने सब्त के मामले में हद तोड़ी थी, तो हमने उनसे कहा, "धुत्कारे हुए बन्दर बन जाओ!" फिर हमने इसे उस समय के लोगों के लिए और बाद में आने वालों के लिए शिक्षाप्रद सज़ा बना दिया, और अल्लाह के प्रति सचेत रहने वालों के लिए नसीहत। (63–66)

और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, "अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि एक गाय ज़बह करो," तो उन्होंने कहा, "क्या तुम हमसे मज़ाक़ करते हो?" उसने कहा, "मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ कि ऐसा जाहिल बनूँ।" उन्होंने कहा, "हमारे लिए अपने रब से दुआ करो कि वह हमें साफ़ बता दे कि वह कैसी हो।" उसने कहा, "वह कहता है कि वह ऐसी गाय है जो न बूढ़ी है न बछिया, बल्कि दोनों के बीच की उम्र की। अब जो हुक्म तुम्हें दिया जा रहा है उसे कर डालो।" उन्होंने कहा, "हमारे लिए अपने रब से दुआ करो कि वह हमें साफ़ बता दे कि उसका रंग कैसा हो।" उसने कहा, "वह कहता है कि वह पीली गाय है, गहरे चटक रंग की, देखने वालों का जी ख़ुश कर देने वाली।" उन्होंने कहा, "हमारे लिए अपने रब से दुआ करो कि वह हमें साफ़ बता दे कि वह कैसी हो; हमें तो सब गायें एक-सी लगती हैं। और अल्लाह ने चाहा तो हम ज़रूर राह पा लेंगे।" उसने कहा, "वह कहता है कि वह ऐसी गाय है जो न ज़मीन जोतने के लिए सधाई गई है और न खेतों को पानी देती है, भली-चंगी और बेदाग़।" उन्होंने कहा, "अब तुम ठीक बात लाए हो।" फिर उन्होंने उसे ज़बह किया, हालाँकि वे ऐसा करते लगते न थे। और याद करो जब तुमने एक आदमी को मार डाला और उसके बारे में आपस में झगड़ने लगे—और अल्लाह उसे ज़ाहिर करने वाला था जो तुम छिपा रहे थे—तो हमने कहा, "उसे उसके एक हिस्से से मारो।" इसी तरह अल्लाह मुर्दों को जीवित करता है और तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम बुद्धि से काम लो। फिर इस सब के बाद भी तुम्हारे दिल सख़्त हो गए, ऐसे कि वे पत्थरों जैसे हो गए, बल्कि उनसे भी ज़्यादा सख़्त—क्योंकि पत्थरों में तो ऐसे भी हैं जिनसे नहरें फूट निकलती हैं, और ऐसे भी जो फट जाते हैं और उनसे पानी निकल आता है, और ऐसे भी जो अल्लाह के भय से गिर पड़ते हैं। और अल्लाह उससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (67–74)

ऐ ईमान वालो, क्या तुम फिर भी यह आस रखते हो कि वे तुम्हारी बात मान लेंगे, जबकि उनमें एक गिरोह ऐसा रहा है जो अल्लाह का कलाम सुनता, फिर उसे समझ लेने के बाद जान-बूझकर उसे बदल डालता था? जब वे ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं, "हम ईमान लाए," और जब आपस में अकेले होते हैं तो कहते हैं, "क्या तुम उन्हें वह बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोला है, ताकि वे उसके द्वारा तुम्हारे रब के सामने तुमसे हुज्जत करें? क्या तुम्हें समझ नहीं?" क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो वे छिपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं? और उनमें अनपढ़ भी हैं, जो किताब को नहीं जानते सिवाय मनगढ़ंत आरज़ुओं के; वे बस अटकलें दौड़ाते हैं। तो तबाही है उनके लिए जो अपने हाथों से किताब लिखते हैं, फिर कहते हैं, "यह अल्लाह की ओर से है," ताकि उसके बदले थोड़ा-सा दाम कमा लें। तबाही है उनके लिए उसके कारण जो उनके हाथों ने लिखा, और तबाही है उनके लिए उसके कारण जो वे कमाते हैं! वे कहते हैं, "आग हमें हरगिज़ न छुएगी, सिवाय गिनती के कुछ दिनों के।" कह दो, "क्या तुमने अल्लाह से कोई वचन ले रखा है—अल्लाह तो

अपने वचन के ख़िलाफ़ कभी नहीं करता—या तुम अल्लाह के बारे में वह बात कहते हो जो तुम नहीं जानते?" क्यों नहीं: जिसने बुराई कमाई और उसका गुनाह उसे घेरे में ले चुका—वही आग वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे; और जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए—वही जन्नत वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे। (75–82)

और जब हमने इसराईल की सन्तान से वचन लिया: "अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करना; माँ-बाप और नातेदारों के साथ, अनाथों और मुहताजों के साथ भलाई करना; लोगों से भली बात कहना; नमाज़ क़ायम करना और ज़कात देना।" फिर तुम फिर गए, थोड़े-से लोगों के सिवा, और तुम अब भी मुँह मोड़े हुए हो। और जब हमने तुमसे वचन लिया: "आपस में एक-दूसरे का ख़ून न बहाना, और एक-दूसरे को अपने घरों से न निकालना।" तुमने इसका इक़रार किया, और तुम ख़ुद इसके गवाह हो। फिर तुम्हीं वे लोग हो कि एक-दूसरे को क़त्ल करते हो और अपने ही एक गिरोह को उनके घरों से निकालते हो, गुनाह और ज़्यादती के साथ उनके ख़िलाफ़ एका करते हो—और अगर वे क़ैदी होकर तुम्हारे पास आते हैं तो फ़िदया देकर उन्हें छुड़ाते हो, हालाँकि उनका निकालना ही तुम पर हराम था। तो क्या तुम किताब के एक हिस्से पर ईमान लाते हो और दूसरे हिस्से का इनकार करते हो? तो तुममें से जो ऐसा करें उनका बदला इसके सिवा क्या है कि दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई हो, और क़ियामत के दिन वे कठोरतम यातना की ओर फेर दिए जाएँ? और अल्लाह उससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। यही वे लोग हैं जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी ख़रीद ली: न उनकी यातना हल्की की जाएगी, और न उन्हें मदद मिलेगी। (83–86)

हमने मूसा को किताब दी और उसके बाद एक के बाद एक रसूल भेजे; और हमने मरयम के बेटे ईसा को खुली निशानियाँ दीं और पवित्र आत्मा के द्वारा उसे शक्ति दी। तो क्या ऐसा नहीं है कि जब भी कोई रसूल तुम्हारे पास वह चीज़ लेकर आया जो तुम्हारे मन को न भाती थी, तुमने घमंड किया—कुछ को तुमने झुठलाया, और कुछ को क़त्ल कर डाला? वे कहते हैं, "हमारे दिल ग़िलाफ़ों में लिपटे हैं।" नहीं—बल्कि अल्लाह ने उनके इनकार के कारण उन पर लानत की है, सो वे कम ही ईमान लाते हैं। और जब उनके पास अल्लाह की ओर से एक किताब आई जो उसकी पुष्टि करती है जो उनके पास है—हालाँकि इससे पहले वे सत्य के इनकारियों के मुक़ाबले में विजय की दुआएँ माँगा करते थे—तो जब उनके पास वह चीज़ आ गई जिसे उन्होंने पहचान लिया, तो उसका इनकार कर दिया। तो अल्लाह की लानत है इनकार करने वालों पर। कितनी बुरी है वह चीज़ जिसके बदले उन्होंने अपनी जानें बेच डालीं: कि वे उसका इनकार करें जो अल्लाह ने उतारा है, इस जलन में कि अल्लाह अपना अनुग्रह अपने बन्दों में से जिस पर चाहे उतारे। सो वे प्रकोप पर प्रकोप के भागी हुए; और सत्य के इनकारियों के लिए अपमानजनक यातना है। जब उनसे कहा जाता है, "उस पर ईमान लाओ जो अल्लाह ने उतारा है," तो कहते हैं, "हम उस पर ईमान रखते हैं जो हम पर उतारा गया," और जो उसके बाद आया उसका इनकार करते हैं, हालाँकि वह सत्य है और उसकी पुष्टि करता है जो उनके पास है। कह दो, "फिर तुम इससे पहले अल्लाह के नबियों को क्यों क़त्ल करते रहे, अगर तुम ईमान वाले थे?" मूसा तुम्हारे पास खुली निशानियाँ लेकर आया, फिर भी उसके पीछे तुमने बछड़े को अपना लिया, और तुम ज़ालिम ठहरे। (87–92)

और जब हमने तुमसे वचन लिया और तूर को तुम्हारे ऊपर उठाया: "जो कुछ हमने तुम्हें दिया है उसे मज़बूती से थामो, और सुनो।" उन्होंने कहा, "हमने सुना, और हम नहीं मानते"—और उनके इनकार के कारण बछड़ा उनके दिलों में रचा-बसा दिया गया। कह दो, "कितनी बुरी है वह बात जिसका हुक्म तुम्हारा ईमान तुम्हें देता है, अगर तुम ईमान वाले हो।" कह दो, "अगर अल्लाह के यहाँ आख़िरत का घर दूसरे सब लोगों को छोड़कर ख़ास तुम्हारे ही लिए है, तो मौत की तमन्ना करो—अगर तुम सच्चे हो।" मगर वे कभी उसकी तमन्ना न करेंगे, उसके कारण जो उनके हाथ आगे भेज चुके हैं। और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। तुम उन्हें सब लोगों से बढ़कर जीवन का लोभी पाओगे—उनसे भी बढ़कर जो अल्लाह के साथ साझी ठहराते हैं। उनमें से हर एक चाहता है कि काश उसे हज़ार बरस की उम्र मिल जाए; हालाँकि लम्बी उम्र का मिल जाना भी उसे यातना से दूर न कर सकेगा। और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसे देख रहा है। (93–96)

कह दो, "जो कोई जिबरील का दुश्मन हो—तो उसी ने इसे अल्लाह की अनुमति से तुम्हारे दिल पर उतारा है, जो उसकी पुष्टि करता है जो इससे पहले आ चुका, और ईमान वालों के लिए मार्गदर्शन और शुभ-सूचना है—जो कोई अल्लाह का, उसके फ़रिश्तों और उसके रसूलों का, जिबरील और मीकाईल का दुश्मन हो—तो निश्चय ही अल्लाह सत्य के इनकारियों का दुश्मन है।" हमने तुम्हारी ओर खुली आयतें उतारी हैं, और उनका इनकार वही करते हैं जो जान-बूझकर अवज्ञा करते हैं। क्या ऐसा नहीं है कि जब भी उन्होंने कोई वचन बाँधा, उनके एक गिरोह ने उसे उठा फेंका? बल्कि उनमें से अधिकतर ईमान नहीं रखते। (97–100)

और जब उनके पास अल्लाह की ओर से एक रसूल आया जो उसकी पुष्टि करता है जो उनके पास है, तो जिन्हें किताब दी गई थी उनके एक गिरोह ने अल्लाह की किताब को पीठ पीछे फेंक दिया, मानो वे कुछ जानते ही नहीं, और उसके पीछे हो लिए जो शैतान सुलैमान के राज्यकाल में पढ़ा करते थे। सुलैमान ने सत्य का इनकार नहीं किया; बल्कि शैतानों ने इनकार किया, जो लोगों को जादू सिखाते थे और वह भी जो बाबिल में दो फ़रिश्तों, हारूत और मारूत, पर उतारा गया था। मगर वे दोनों किसी को कुछ न सिखाते जब तक पहले यह न कह देते, "हम तो बस एक आज़माइश हैं, तो तुम सत्य का इनकार न करो।" फिर लोग उनसे वह सीखते जिससे पति और पत्नी के बीच फूट डाल दें—हालाँकि वे अल्लाह की अनुमति के बिना उससे किसी को हानि नहीं पहुँचा सकते थे—और वे वह सीखते जो उन्हें हानि पहुँचाता और कोई लाभ न देता, यह ख़ूब जानते हुए कि जिसने इसे ख़रीदा उसका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं। कितनी बुरी है वह चीज़ जिसके बदले उन्होंने अपनी जानें बेच डालीं, काश वे जानते। और अगर वे ईमान लाते और अल्लाह के प्रति सचेत रहते, तो अल्लाह के यहाँ का प्रतिफल कहीं बेहतर था, काश वे जानते। (101–103)

ऐ ईमान लाने वालो, नबी से 'राइना' न कहो, बल्कि 'उनज़ुरना' कहो, और ध्यान से सुनो—और सत्य के इनकारियों के लिए दुखद यातना है। न किताब वालों में से सत्य के इनकारी और न मुशरिक यह चाहते हैं कि तुम्हारे रब की ओर से तुम पर कोई भलाई उतरे; मगर अल्लाह अपनी दयालुता के लिए जिसे चाहता है ख़ास कर लेता है, और अल्लाह अपार अनुग्रह का मालिक है। हम जिस आयत को निरस्त करते या भुलवा

देते हैं, उससे बेहतर या उसी जैसी ले आते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है? क्या तुम नहीं जानते कि आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है, और अल्लाह के सिवा तुम्हारा न कोई संरक्षक है न मददगार? या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से वैसे ही सवाल करो जैसे इससे पहले मूसा से किए गए थे? और जो ईमान के बदले इनकार अपना ले वह सीधी राह से भटक गया। किताब वालों में से बहुत-से चाहते हैं कि तुम्हारे ईमान के बाद तुम्हें फिर से इनकारी बना दें, अपने जी की जलन के कारण, इसके बाद कि सत्य उन पर स्पष्ट हो चुका। तो माफ़ करो और दरगुज़र करो, यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म ले आए: अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो; और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहाँ पाओगे। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। (104–110)

वे कहते हैं, "जन्नत में कोई दाख़िल न होगा सिवाय उसके जो यहूदी हो या ईसाई।" ये उनकी मनगढ़ंत आरज़ुएँ हैं। कह दो, "अपना प्रमाण लाओ, अगर तुम सच्चे हो।" क्यों नहीं: जिसने अपने पूरे अस्तित्व को अल्लाह के आगे समर्पित कर दिया और वह अच्छा कर्म करने वाला है, उसका बदला उसके रब के पास है; उन्हें न कोई भय होगा, और न वे दुखी होंगे। यहूदी कहते हैं, "ईसाई किसी बुनियाद पर नहीं," और ईसाई कहते हैं, "यहूदी किसी बुनियाद पर नहीं," हालाँकि दोनों किताब पढ़ते हैं। ऐसी ही बात वे भी कहते हैं जिनके पास ज्ञान नहीं। तो अल्लाह क़ियामत के दिन उनके बीच उस बात का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे मतभेद करते रहे। (111–113)

और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की इबादतगाहों में उसके नाम के ज़िक्र से रोके, और उन्हें उजाड़ने की कोशिश करे? ऐसे लोगों को तो उनमें डरते हुए ही दाख़िल होना चाहिए था। उनके लिए दुनिया में रुसवाई है, और आख़िरत में बड़ी यातना। पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के हैं: तुम जिधर भी रुख़ करो, उधर ही अल्लाह का रुख़ है। निस्संदेह अल्लाह बड़ी समाई वाला, सब कुछ जानने वाला है। (114–115)

वे कहते हैं, "अल्लाह ने बेटा बना लिया है।" वह पाक है! नहीं—बल्कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब उसी का है; सब उसके आज्ञाकारी हैं, वह आसमानों और ज़मीन का आविष्कारक है। जब वह किसी बात का फ़ैसला करता है, तो उससे बस कहता है, "हो जा," और वह हो जाती है।[3] जिनके पास ज्ञान नहीं वे कहते हैं, "अल्लाह हमसे बात क्यों नहीं करता, या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती?" ऐसी ही बात उनसे पहले के लोग भी कह चुके हैं, बिलकुल इन्हीं की-सी: इन सब के दिल एक जैसे हैं। हमने निशानियाँ उन लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान कर दी हैं जो विश्वास रखते हैं। ऐ नबी, हमने तुम्हें सत्य के साथ भेजा

[3] पवित्र क़ुरआन: अल्लाह ही सबसे पहला और हर चीज़ का आरम्भ करने वाला है! – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस
**वीडियो: शून्य के बजाय ख़ुदा क्यों?**
वीडियो: शून्य के नौ स्तर कौन-से हैं? | रॉबर्ट लॉरेंस कून – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस
**आख़िरी सवालों को ठीक ढंग से पूछना ही नास्तिकता का खंडन कर देता है**
**वीडियो: परम शून्यता की कल्पना करके ख़ुदा तक पहुँचना**

है, शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर; और दहकती आग वालों के बारे में तुमसे पूछ न होगी। यहूदी तुमसे कभी राज़ी न होंगे, और न ईसाई, जब तक तुम उनके पंथ पर न चलने लगो। कह दो, "अल्लाह का मार्गदर्शन ही असल मार्गदर्शन है।" और अगर तुम उस ज्ञान के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है उनकी इच्छाओं पर चले, तो अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारा न कोई संरक्षक होगा, न मददगार। जिन्हें हमने किताब दी है, और जो उसे वैसे पढ़ते हैं जैसा उसके पढ़ने का हक़ है—वही उस पर ईमान रखते हैं। और जो उसका इनकार करें—वही घाटे में हैं। (116–121)

ऐ इसराईल की सन्तान, मेरे उस अनुग्रह को याद करो जो मैंने तुम पर किया, और यह कि मैंने तुम्हें सारे संसार वालों पर श्रेष्ठता दी। और उस दिन से बचो जब कोई जान किसी दूसरी जान के कुछ काम न आएगी, न उससे कोई फ़िदया क़बूल होगा, न कोई सिफ़ारिश उसे लाभ देगी, और न उन्हें मदद मिलेगी। और जब इबराहीम को उसके रब ने कुछ बातों से आज़माया, और उसने उन्हें पूरा कर दिखाया, तो उसने कहा, "मैं तुम्हें लोगों का पेशवा बनाने वाला हूँ।" इबराहीम ने पूछा, "और मेरी सन्तान में से?" उसने कहा, "मेरा वचन ज़ालिमों तक नहीं पहुँचता।" (122–124)

और जब हमने इस घर को लोगों के लिए लौट-लौटकर आने की जगह और शरणस्थल बनाया: "इबराहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ की जगह बना लो।" और हमने इबराहीम और इसमाईल को ताकीद की: "मेरे घर को तवाफ़ करने वालों, एतिकाफ़ में बैठने वालों, और रुकू व सजदा करने वालों के लिए पाक रखो।" और जब इबराहीम ने कहा, "ऐ मेरे रब, इसे अमन का शहर बना दे, और इसके रहने वालों को फलों की रोज़ी दे—उनमें से उन्हें जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाएँ।" उसने कहा, "और जो सत्य का इनकार करेगा उसे भी मैं थोड़ा-सा फ़ायदा उठाने दूँगा, फिर उसे आग की यातना की ओर घसीट ले जाऊँगा—और वह बहुत बुरा ठिकाना है।" (125–126)

और जब इबराहीम और इसमाईल इस घर की बुनियादें उठा रहे थे: "ऐ हमारे रब, हमसे यह क़बूल कर ले; निश्चय ही तू ही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। ऐ हमारे रब, हमें अपना आज्ञाकारी बना, और हमारी सन्तान में से भी एक ऐसा समुदाय उठा जो तेरा आज्ञाकारी हो; हमें हमारी इबादत के तरीक़े दिखा और हम पर दया-दृष्टि कर: निश्चय ही तू ही तौबा क़बूल करने वाला, सदा दयावान है। ऐ हमारे रब, उनमें उन्हीं में से एक रसूल उठा जो उन्हें तेरी आयतें पढ़कर सुनाए, उन्हें किताब और हिकमत सिखाए, और उन्हें पाक करे: निश्चय ही तू ही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है।" (127–129)

और इबराहीम के पंथ से कौन मुँह फेरेगा सिवाय उसके जिसने अपने-आप को मूर्ख बना लिया हो? हमने उसे दुनिया में चुन लिया, और आख़िरत में वह निश्चय ही नेक लोगों में होगा। जब उसके रब ने उससे कहा, "समर्पित हो जा," तो उसने कहा, "मैं सारे संसारों के रब के आगे समर्पित हो गया।" और इसी की वसीयत इबराहीम ने अपने बेटों को की, और याक़ूब ने भी: "ऐ मेरे बेटो, अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही दीन चुना है; तो तुम्हें मौत न आए मगर इस हाल में कि तुम उसके आज्ञाकारी हो।" (130–132)

क्या तुम उस समय मौजूद थे जब याक़ूब के सामने मौत आ खड़ी हुई, जब उसने अपने बेटों से कहा, "मेरे बाद तुम किसकी इबादत करोगे?" उन्होंने कहा, "हम आपके इलाह की और आपके बाप-दादा इबराहीम, इसमाईल और इसहाक़ के इलाह की इबादत करेंगे—एक ही इलाह की—और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।" वह एक समुदाय था जो गुज़र चुका: उसके लिए वह है जो उसने कमाया, और तुम्हारे लिए वह जो तुमने कमाया; और तुमसे यह न पूछा जाएगा कि वे क्या करते थे। (133–134)

वे कहते हैं, "यहूदी या ईसाई हो जाओ, तो राह पा लोगे।" कह दो, "नहीं—बल्कि इबराहीम का पंथ, जो एकनिष्ठ था; और वह अल्लाह के साथ साझी ठहराने वालों में से न था।" कहो, "हम ईमान लाए अल्लाह पर, और उस पर जो हमारी ओर उतारा गया, और उस पर जो इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़, याक़ूब और उनकी सन्तान की ओर उतारा गया, और उस पर जो मूसा और ईसा को दिया गया, और उस पर जो नबियों को उनके रब की ओर से दिया गया। हम उनमें से किसी के बीच फ़र्क़ नहीं करते, और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।" फिर अगर वे वैसे ही ईमान ले आएँ जैसे तुम ईमान लाए हो, तो वे राह पा गए; और अगर मुँह फेरें, तो वे बस हठधर्मी में पड़े हैं। तो उनके मुक़ाबले में तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी होगा: वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। हमारा रंग अल्लाह का रंग है—और अल्लाह से अच्छा रंग किसका हो सकता है? और हम उसी की इबादत करते हैं। (135–138)

कह दो, "क्या तुम अल्लाह के बारे में हमसे झगड़ते हो, हालाँकि वह हमारा भी रब है और तुम्हारा भी रब? हमारे लिए हमारे कर्म हैं, और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म; और हम तो निरे उसी के हो चुके हैं। या तुम कहते हो कि इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़, याक़ूब और उनकी सन्तान यहूदी या ईसाई थे?" कह दो, "तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह?" और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो उस गवाही को छिपाए जो अल्लाह की ओर से उसके पास है? और अल्लाह उससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। वह एक समुदाय था जो गुज़र चुका: उसके लिए वह है जो उसने कमाया, और तुम्हारे लिए वह जो तुमने कमाया; और तुमसे यह न पूछा जाएगा कि वे क्या करते थे। (139–141)

लोगों में से नासमझ कहेंगे, "इन्हें उस क़िबले से किस चीज़ ने फेर दिया जिस पर ये पहले थे?" कह दो, "पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के हैं; वह जिसे चाहता है सीधे मार्ग पर चला देता है।" और इसी तरह हमने तुम्हें बीच की राह वाला समुदाय बनाया है, ताकि तुम लोगों पर गवाह हो, और रसूल तुम पर गवाह हो। और जिस क़िबले पर तुम पहले थे उसे तो हमने केवल इसलिए ठहराया था कि हम उसे अलग पहचान लें जो रसूल के पीछे चलता है उससे जो उलटे पाँव फिर जाता है। यह बात भारी ज़रूर थी, मगर उनके लिए नहीं जिन्हें अल्लाह ने राह दिखाई; और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान को अकारथ कर दे। निस्संदेह अल्लाह लोगों के लिए बड़ा करुणामय, दयावान है। ऐ नबी, हम तुम्हारे चेहरे का बार-बार आसमान की ओर उठना देख रहे हैं; तो हम तुम्हें उसी क़िबले की ओर फेर देंगे जो तुम्हें पसन्द है। तो अपना चेहरा मस्जिदे-हराम की ओर फेर लो; और ऐ ईमान वालो, तुम जहाँ कहीं भी हो, अपने चेहरे उसी की ओर फेर लिया करो। जिन्हें किताब दी गई थी वे ख़ूब जानते हैं कि यही उनके रब की ओर से सत्य है; और अल्लाह उससे बेख़बर नहीं

जो वे करते हैं। और अगर तुम किताब वालों के पास हर निशानी भी ले आओ, तब भी वे तुम्हारे क़िबले के पीछे न चलेंगे, और न तुम उनके क़िबले के पीछे चलने वाले हो; और न वे आपस में एक-दूसरे के क़िबले के पीछे चलते हैं। और अगर तुम उस ज्ञान के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है उनकी इच्छाओं पर चले, तो निश्चय ही तुम ज़ालिमों में से होगे। जिन्हें हमने किताब दी है वे इसे ऐसे पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं; फिर भी उनमें एक गिरोह जानते-बूझते सत्य को छिपाता है। सत्य तुम्हारे रब की ओर से है, तो तुम हरगिज़ सन्देह करने वालों में से न होना। हर एक के लिए एक दिशा है जिसकी ओर वह रुख़ करता है; तो तुम भलाइयों में एक-दूसरे से आगे बढ़ो। तुम जहाँ कहीं भी होगे, अल्लाह तुम सब को ले आएगा: अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। (142–148)

और तुम जहाँ से भी निकलो, अपना चेहरा मस्जिदे-हराम की ओर फेर लो; निश्चय ही यही तुम्हारे रब की ओर से सत्य है। और अल्लाह उससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। और तुम जहाँ से भी निकलो, अपना चेहरा मस्जिदे-हराम की ओर फेर लो; और तुम जहाँ कहीं भी हो, अपने चेहरे उसी की ओर फेर लिया करो, ताकि लोगों के पास तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई हुज्जत न रहे—सिवाय उनमें के ज़ालिमों के; तो उनसे न डरो, बल्कि मुझसे डरो—और ताकि मैं तुम पर अपना अनुग्रह पूरा कर दूँ, और ताकि तुम राह पाओ; जैसे कि हमने तुम्हारे बीच तुम्हीं में से एक रसूल भेजा, जो तुम्हें हमारी आयतें पढ़कर सुनाता है, तुम्हें पाक करता है, तुम्हें किताब और हिकमत सिखाता है, और तुम्हें वह सिखाता है जो तुम नहीं जानते थे। तो तुम मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद रखूँगा; और मेरा शुक्र अदा करो और नाशुक्री न करो। (149–152)

ऐ ईमान लाने वालो, धैर्य और नमाज़ से मदद लो: निस्संदेह अल्लाह धैर्य रखने वालों के साथ है। और जो अल्लाह की राह में मारे जाएँ उन्हें "मुर्दा" न कहो। नहीं—बल्कि वे जीवित हैं, मगर तुम्हें एहसास नहीं होता। और हम तुम्हें ज़रूर आज़माएँगे कुछ भय और भूख से, और माल, जान और फ़सलों के नुक़सान से। और शुभ-सूचना दे दो उन धैर्य रखने वालों को—जो, जब उन पर कोई मुसीबत आ पड़ती है, तो कहते हैं, "निस्संदेह हम अल्लाह ही के हैं, और हमें उसी की ओर लौटना है।" यही वे लोग हैं जिन पर उनके रब की ओर से कृपाएँ हैं, और दयालुता; और यही राह पाए हुए हैं। (153–157)

सफ़ा और मरवा अल्लाह की निशानियों में से हैं। तो जो इस घर का हज करे, या उमरा करे, उस पर कोई गुनाह नहीं कि वह इन दोनों के बीच फेरे लगाए; और जो अपनी ख़ुशी से कोई भलाई करे—तो अल्लाह गुणग्राहक, सब कुछ जानने वाला है। जो लोग उन खुली निशानियों और उस मार्गदर्शन को छिपाते हैं जो हमने उतारा, इसके बाद कि हम उसे किताब में लोगों के लिए खोलकर बयान कर चुके—उन पर अल्लाह लानत करता है, और सब लानत करने वाले भी लानत करते हैं, सिवाय उनके जिन्होंने तौबा कर ली, सुधार कर लिया और सत्य को खोलकर बयान कर दिया: उन पर मैं दया-दृष्टि करता हूँ, और मैं ही तौबा क़बूल करने वाला, सदा दयावान हूँ। रहे वे लोग जिन्होंने सत्य का इनकार किया और इनकार ही की हालत में मर गए—उन पर अल्लाह की, फ़रिश्तों की और सारे इनसानों की लानत है। वे उसी में सदैव रहेंगे; न उनकी यातना हल्की की जाएगी, और न उन्हें मुहलत मिलेगी। (158–162)

तुम्हारा इलाह एक ही इलाह है: उसके सिवा कोई इलाह नहीं, अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान। निस्संदेह आसमानों और ज़मीन की रचना में; रात और दिन के अदल-बदलकर आने में; उन नावों में जो लोगों के काम की चीज़ें लेकर समुद्र में चलती हैं; उस पानी में जिसे अल्लाह आसमान से उतारता है, फिर उसके द्वारा ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद जीवन देता है और उसमें हर तरह के चलने-फिरने वाले जीव फैला देता है; हवाओं के रुख़ बदलने में, और उन बादलों में जो आसमान और ज़मीन के बीच काम पर लगे हुए हैं—उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं। फिर भी कुछ लोग ऐसे हैं जो दूसरों को अल्लाह के बराबर ठहराते हैं, उनसे ऐसा प्रेम करते हैं जैसा अल्लाह से होना चाहिए; मगर जो ईमान वाले हैं वे सबसे बढ़कर अल्लाह से प्रेम करते हैं। काश ज़ालिम देख पाते—जैसा कि वे यातना को देखते समय देख लेंगे—कि सारी शक्ति अल्लाह ही की है, और यह कि अल्लाह कठोर यातना देने वाला है। जब वे, जिनके पीछे चला गया था, अपने पीछे चलने वालों से बेज़ारी ज़ाहिर करेंगे, और वे यातना देख लेंगे, और उनके सारे नाते कट जाएँगे, तो पीछे चलने वाले कहेंगे, "काश हमें एक बार और मौक़ा मिलता, तो हम भी इनसे वैसे ही बेज़ार हो जाते जैसे ये हमसे बेज़ार हुए हैं।" इसी तरह अल्लाह उन्हें उनके कर्म हसरतें बनाकर दिखाएगा; और वे आग से कभी न निकल पाएँगे। (163–167)

ऐ लोगो, ज़मीन में जो कुछ हलाल और पाक है उसमें से खाओ, और शैतान के पदचिह्नों पर न चलो: वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। वह तुम्हें बस बुराई और बेहयाई का हुक्म देता है, और इस बात का कि तुम अल्लाह के बारे में वह कहो जो तुम नहीं जानते। जब उनसे कहा जाता है, "उस पर चलो जो अल्लाह ने उतारा है," तो कहते हैं, "नहीं—हम तो उसी पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया।" क्या! चाहे उनके बाप-दादा कुछ न समझते हों और न राह पर रहे हों? सत्य के इनकारियों की मिसाल उसकी-सी है जो ऐसे को पुकारे जो हाँक-पुकार के सिवा कुछ नहीं सुनता: बहरे, गूँगे और अंधे, सो वे कुछ नहीं समझते। ऐ ईमान लाने वालो, उन पाक चीज़ों में से खाओ जो हमने तुम्हें दी हैं, और अल्लाह का शुक्र अदा करो, अगर तुम उसी की इबादत करते हो। उसने तुम पर बस मुर्दार, ख़ून, सूअर का मांस, और वह चीज़ हराम की है जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो। फिर जो मजबूर हो जाए, न उसकी चाह रखता हो और न ज़रूरत की हद से आगे बढ़े, तो उस पर कोई गुनाह नहीं: निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (168–173)

जो लोग उसे छिपाते हैं जो अल्लाह ने किताब में से उतारा है और उसके बदले थोड़ा-सा दाम लेते हैं—वे अपने पेटों में आग के सिवा कुछ नहीं भरते। क़ियामत के दिन अल्लाह न उनसे बात करेगा, न उन्हें पाक करेगा; और उनके लिए दुखद यातना है। यही वे लोग हैं जिन्होंने मार्गदर्शन के बदले गुमराही, और क्षमा के बदले यातना ख़रीद ली। तो वे आग को सहने पर कितने जमे हुए हैं! यह इसलिए कि अल्लाह ने किताब सत्य के साथ उतारी है; और जिन्होंने किताब में मतभेद किया वे निश्चय ही गहरी हठधर्मी में पड़े हैं। (174–176)

नेकी यह नहीं कि तुम अपने चेहरे पूरब या पश्चिम की ओर कर लो। बल्कि नेक वह है जो अल्लाह पर, अंतिम दिन पर, फ़रिश्तों पर, किताब पर और नबियों पर ईमान लाए; जो अपना माल, उसके प्रेम में, नातेदारों,

अनाथों, मुहताजों, मुसाफ़िर और माँगने वालों को दे, और ग़ुलामों को छुड़ाने में; जो नमाज़ क़ायम करे और ज़कात दे; जो वचन दें तो अपने वचन पूरे करें; और जो तंगी और तकलीफ़ में और संकट के समय धैर्य रखें। यही लोग सच्चे हैं, और यही अल्लाह के प्रति सचेत रहने वाले हैं। (177)

ऐ ईमान लाने वालो, क़त्ल के मामलों में तुम पर बराबर का बदला फ़र्ज़ किया गया है: आज़ाद के बदले आज़ाद, ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम, स्त्री के बदले स्त्री। फिर जिसे उसके भाई की ओर से कुछ माफ़ी मिल जाए, तो भले तरीक़े से माँग की जाए, और अच्छे ढंग से उसे अदायगी कर दी जाए। यह तुम्हारे रब की ओर से एक रियायत और दयालुता है; फिर जो इसके बाद ज़्यादती करे उसके लिए दुखद यातना है। और ऐ बुद्धि वालो, बराबर के बदले में तुम्हारे लिए जीवन है, ताकि तुम अल्लाह के प्रति सचेत हो जाओ। तुम पर फ़र्ज़ किया गया है कि जब तुममें से किसी के सामने मौत आ खड़ी हो और वह माल छोड़ रहा हो, तो माँ-बाप और क़रीबी नातेदारों के लिए भले तरीक़े से वसीयत करे: यह अल्लाह के प्रति सचेत रहने वालों पर एक हक़ है। फिर जो इसे सुन लेने के बाद बदल डाले, तो उसका गुनाह उन्हीं पर है जो इसे बदलें: निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। मगर जिसे वसीयत करने वाले की ओर से चूक या ज़ुल्म का डर हो, और वह पक्षों के बीच सुलह करा दे, तो उस पर कोई गुनाह नहीं: निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (178–182)

ऐ ईमान लाने वालो, तुम पर रोज़ा फ़र्ज़ किया गया है, जैसे तुमसे पहले के समुदायों पर फ़र्ज़ किया गया था, ताकि तुममें अल्लाह के प्रति सचेतता बढ़े—गिनती के कुछ दिनों के लिए। फिर तुममें से जो बीमार हो या सफ़र पर हो, वह उतने ही दिन दूसरे दिनों में रोज़े रखे; और जो बड़ी कठिनाई से ही रोज़ा रख सकते हों उनके ज़िम्मे फ़िदया है: एक मुहताज को खाना खिलाना। फिर जो अपनी ख़ुशी से और भलाई करे, तो यह उसके लिए बेहतर है; और रोज़ा रखना ही तुम्हारे लिए बेहतर है, काश तुम जानते। रमज़ान का महीना वह है जिसमें क़ुरआन उतारा गया, लोगों के लिए मार्गदर्शन बनाकर, और मार्गदर्शन व फ़ुरक़ान की खुली निशानियों के साथ। तो तुममें से जो इस महीने को पाए वह इसके रोज़े रखे; और जो बीमार हो या सफ़र पर हो, वह उतने ही दिन दूसरे दिनों में रोज़े रखे। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है, कठिनाई नहीं चाहता; वह चाहता है कि तुम गिनती पूरी करो, और इस पर अल्लाह की बड़ाई बयान करो कि उसने तुम्हें राह दिखाई, और ताकि तुम शुक्र करो। और जब मेरे बन्दे तुमसे मेरे बारे में पूछें—तो मैं निश्चय ही क़रीब हूँ। पुकारने वाला जब मुझे पुकारता है तो मैं उसकी पुकार का जवाब देता हूँ। तो उन्हें चाहिए कि मेरी पुकार पर लब्बैक कहें और मुझ पर ईमान रखें, ताकि वे सही राह पाएँ। (183–186)

रोज़े की रात में तुम्हारे लिए अपनी पत्नियों के पास जाना हलाल किया गया है: वे तुम्हारा लिबास हैं, और तुम उनका लिबास हो। अल्लाह को मालूम था कि तुम अपने-आप से ख़यानत कर रहे थे, तो उसने तुम पर दया-दृष्टि की और तुम्हें माफ़ कर दिया। तो अब उनसे मिलो-जुलो, और वह चाहो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है। और खाओ-पियो यहाँ तक कि भोर की सफ़ेद धारी काली धारी से तुम्हारे लिए अलग दिखाई देने लगे; फिर रात तक रोज़ा पूरा करो। और जब तुम मस्जिदों में एतिकाफ़ में हो तो उनसे न मिलो। ये अल्लाह

की ठहराई हुई हदें हैं, तो इनके पास न फटको। इसी तरह अल्लाह अपनी आयतें लोगों के लिए खोलकर बयान करता है, ताकि वे उसके प्रति सचेत हो जाएँ। और आपस में एक-दूसरे का माल नाहक़ न खाओ, और न उसे हाकिमों तक रिश्वत में पहुँचाओ, कि जानते-बूझते गुनाह के साथ दूसरों के माल का कोई हिस्सा खा जाओ। (187–188)

ऐ नबी, वे तुमसे नए चाँदों के बारे में पूछते हैं। कह दो, "ये लोगों के लिए समय के हिसाब का, और हज का ज़रिया हैं।" और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में उनके पिछवाड़े से आओ; बल्कि नेक वह है जो अल्लाह के प्रति सचेत रहे। तो घरों में उनके दरवाज़ों से आओ, और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, ताकि तुम सफल हो। और अल्लाह की राह में उनसे लड़ो जो तुमसे लड़ते हैं, मगर हद से न बढ़ो: अल्लाह हद से बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता। और जहाँ कहीं उनसे तुम्हारा सामना हो उन्हें क़त्ल करो, और उन्हें वहाँ से निकालो जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला है, क्योंकि उत्पीड़न क़त्ल से भी बुरा है। मगर मस्जिदे-हराम के पास उनसे न लड़ो जब तक वे वहाँ तुमसे न लड़ें; फिर अगर वे तुमसे लड़ें, तो उन्हें क़त्ल करो—सत्य के इनकारियों का यही बदला है। फिर अगर वे बाज़ आ जाएँ, तो अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। और उनसे लड़ो यहाँ तक कि उत्पीड़न बाक़ी न रहे और दीन अल्लाह ही के लिए हो जाए; फिर अगर वे बाज़ आ जाएँ, तो ज़ालिमों के सिवा किसी पर ज़्यादती नहीं। प्रतिष्ठित महीने के बदले प्रतिष्ठित महीना, और सारी प्रतिष्ठित चीज़ों में बराबर का बदला है। तो जो तुम पर ज़्यादती करे, तुम भी उस पर उतनी ही ज़्यादती करो जितनी उसने तुम पर की है; और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, और जान लो कि अल्लाह उन्हीं के साथ है जो उसके प्रति सचेत रहते हैं। और अल्लाह की राह में ख़र्च करो, और अपने ही हाथों अपने-आप को तबाही में न डालो; और अच्छा करो, निस्संदेह अल्लाह अच्छा करने वालों को पसन्द करता है। (189–195)

और हज और उमरा अल्लाह के लिए पूरा करो। फिर अगर तुम रोक दिए जाओ, तो जो क़ुरबानी मयस्सर हो भेज दो, और अपने सिर न मुँडाओ जब तक क़ुरबानी अपने ठिकाने न पहुँच जाए। फिर तुममें से जो बीमार हो, या उसके सिर में कोई तकलीफ़ हो, तो रोज़ों, सदक़े या क़ुरबानी के रूप में फ़िदया दे। फिर जब तुम्हें अमन हासिल हो जाए, तो जो हज से पहले उमरे का फ़ायदा उठाए वह जो क़ुरबानी मयस्सर हो पेश करे; और जिसे न मिले वह तीन दिन के रोज़े हज के दिनों में रखे और सात जब तुम लौटो—ये पूरे दस हुए। यह उसके लिए है जिसके घर वाले मस्जिदे-हराम के पास न रहते हों। और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, और जान लो कि अल्लाह कठोर यातना देने वाला है। (196)

हज के महीने जाने-पहचाने हैं। तो जो इनमें हज का इरादा कर ले, वह हज के दौरान न संभोग की बातें करे, न कोई नाफ़रमानी, न झगड़ा। और जो भलाई तुम करोगे, अल्लाह उसे जान लेगा। और अपने साथ सफ़र का सामान ले लो—और सबसे अच्छा सामान तो अल्लाह के प्रति सचेतता है। तो ऐ बुद्धि वालो, मेरे ही प्रति सचेत रहो। तुम पर कोई गुनाह नहीं कि व्यापार के द्वारा अपने रब का अनुग्रह तलाश करो। फिर जब तुम अरफ़ात से चल पड़ो, तो मशअरे-हराम के पास अल्लाह को याद करो; और उसे वैसे याद करो जैसे उसने तुम्हें राह दिखाई है, हालाँकि इससे पहले तुम भटके हुओं में थे। फिर वहीं से चलो जहाँ से सब लोग चलते

हैं, और अल्लाह से क्षमा माँगो: निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। फिर जब तुम अपने हज के अरकान पूरे कर चुको, तो अल्लाह को वैसे याद करो जैसे अपने बाप-दादा को याद करते हो, बल्कि उससे भी बढ़कर। लोगों में कोई तो ऐसा है जो कहता है, "ऐ हमारे रब, हमें दुनिया ही में अपना दिया हुआ दे दे," और आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं; और कोई ऐसा है जो कहता है, "ऐ हमारे रब, हमें दुनिया में भी भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई दे, और हमें आग की यातना से बचा ले।" यही हैं जिनके लिए उनकी कमाई का हिस्सा है: और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (197–202)

और गिनती के उन ठहराए हुए दिनों में अल्लाह को याद करो। फिर जो दो ही दिन में जल्दी करके चल दे उस पर कोई गुनाह नहीं, और जो ठहरा रहे उस पर भी कोई गुनाह नहीं—बशर्ते कि वह अल्लाह के प्रति सचेत रहे। और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, और जान लो कि तुम उसी के पास इकट्ठे किए जाओगे। लोगों में कोई ऐसा भी है जिसकी बात दुनिया की ज़िन्दगी के बारे में तुम्हें भली लगती है, और जो उस पर अल्लाह को गवाह ठहराता है जो उसके दिल में है—हालाँकि वह सबसे सख़्त झगड़ालू है। और जब वह पीठ फेरता है, तो ज़मीन में इस दौड़-धूप में रहता है कि बिगाड़ फैलाए, खेती और नस्ल को तबाह करे; और अल्लाह बिगाड़ को पसन्द नहीं करता। और जब उससे कहा जाता है, "अल्लाह के प्रति सचेत रह," तो घमंड उसे गुनाह पर जमा देता है। तो उसके लिए जहन्नम ही काफ़ी है—और वह बहुत बुरा बिछौना है! और लोगों में कोई ऐसा भी है जो अल्लाह की प्रसन्नता की चाह में अपनी जान तक बेच देता है; और अल्लाह अपने बन्दों पर बड़ा करुणामय है। ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह की आज्ञाकारिता में पूरे-के-पूरे दाख़िल हो जाओ, और शैतान के पदचिह्नों पर न चलो: वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। फिर अगर तुम खुली निशानियाँ आ जाने के बाद भी फिसल गए, तो जान लो कि अल्लाह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। (203–209)

क्या वे बस इसी की राह देख रहे हैं कि अल्लाह बादलों की छाँव में उनके पास आ जाए, और फ़रिश्ते भी—और मामले का फ़ैसला ही कर दिया जाए? और सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटाए जाते हैं। इसराईल की सन्तान से पूछो कि हमने उन्हें कितनी खुली निशानियाँ दीं। और जो अल्लाह के अनुग्रह को, उसके अपने पास आ जाने के बाद, बदल डाले—तो अल्लाह कठोर यातना देने वाला है। सत्य के इनकारियों के लिए दुनिया की ज़िन्दगी लुभावनी बना दी गई है, और वे ईमान वालों की हँसी उड़ाते हैं; मगर जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं वे क़ियामत के दिन उनसे ऊपर होंगे। और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है। सारे लोग एक ही समुदाय थे; फिर अल्लाह ने नबियों को शुभ-सूचना देने वाले और सचेत करने वाले बनाकर भेजा, और उनके साथ सत्य के साथ किताब उतारी, ताकि वह लोगों के बीच उन बातों का फ़ैसला कर दे जिनमें उन्होंने मतभेद किया था। और उसमें मतभेद उन्हीं लोगों ने किया जिन्हें वह दी गई थी, इसके बाद कि उनके पास खुली निशानियाँ आ चुकी थीं, आपस की ज़िद के कारण। फिर अल्लाह ने अपनी अनुमति से ईमान वालों को उस सत्य की राह दिखा दी जिसमें उन्होंने मतभेद किया था: और अल्लाह जिसे चाहता है सीधे मार्ग पर चला देता है। (210–213)

क्या तुमने यह समझ रखा है कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे, हालाँकि अभी तुम पर वैसा कुछ नहीं बीता जैसा तुमसे पहले गुज़रे हुए लोगों पर बीत चुका? उन पर तंगी और तकलीफ़ आई, और वे ऐसे झिंझोड़े गए कि रसूल और उसके साथ ईमान लाने वाले पुकार उठे, "अल्लाह की मदद कब आएगी?" सुन लो, अल्लाह की मदद क़रीब है। ऐ नबी, वे तुमसे पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें। कह दो, "जो भी भला माल तुम ख़र्च करो वह माँ-बाप और नातेदारों के लिए, अनाथों, मुहताजों और मुसाफ़िर के लिए हो। और जो भलाई भी तुम करोगे, अल्लाह उसे ख़ूब जानता है।" (214–215)

तुम पर लड़ाई फ़र्ज़ की गई है, हालाँकि वह तुम्हें नागवार है। मगर हो सकता है कि तुम्हें कोई चीज़ नागवार हो और वह तुम्हारे लिए बेहतर हो, और हो सकता है कि तुम्हें कोई चीज़ पसन्द हो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो: अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। वे तुमसे प्रतिष्ठित महीने में लड़ने के बारे में पूछते हैं। कह दो, "उसमें लड़ना बड़ी गम्भीर बात है; मगर लोगों को अल्लाह की राह से रोकना, उसका इनकार करना, और मस्जिदे-हराम से रोकना और उसके लोगों को वहाँ से निकाल देना अल्लाह के निकट इससे भी ज़्यादा गम्भीर है, और उत्पीड़न क़त्ल से भी ज़्यादा गम्भीर है।" और वे तुमसे लड़ते ही रहेंगे यहाँ तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें, अगर उनका बस चले। और तुममें से जो कोई अपने दीन से फिर जाए और सत्य का इनकार करते हुए मरे—तो ऐसे लोगों के कर्म दुनिया और आख़िरत में अकारथ गए; वही आग वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे। निस्संदेह जो ईमान लाए, और जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया—वही अल्लाह की दयालुता की आस रख सकते हैं; और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (216–218)

वे तुमसे शराब और जुए के बारे में पूछते हैं। कह दो, "इन दोनों में बड़ा गुनाह है, और लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी; मगर इनका गुनाह इनके फ़ायदे से बढ़कर है।" और वे तुमसे पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें। कह दो, "जो ज़रूरत से बचे।" इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोलकर बयान करता है, ताकि तुम दुनिया और आख़िरत के बारे में सोच-विचार करो। और वे तुमसे अनाथों के बारे में पूछते हैं। कह दो, "उनके मामलों को सँवारना ही सबसे अच्छा है; और अगर तुम अपना मामला उनके साथ मिला लो, तो वे तुम्हारे भाई हैं।" और अल्लाह बिगाड़ने वाले को सँवारने वाले से अलग जानता है; और अल्लाह चाहता तो तुम्हें कठिनाई में डाल देता: निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। (219–220)

और अल्लाह के साथ साझी ठहराने वाली स्त्रियों से निकाह न करो जब तक वे ईमान न ले आएँ: एक ईमान वाली दासी ऐसी स्त्री से बेहतर है, चाहे वह तुम्हें कितनी ही भली लगे। और अपनी स्त्रियों का निकाह अल्लाह के साथ साझी ठहराने वाले पुरुषों से न करो जब तक वे ईमान न ले आएँ: एक ईमान वाला ग़ुलाम ऐसे पुरुष से बेहतर है, चाहे वह तुम्हें कितना ही भला लगे। ये लोग आग की ओर बुलाते हैं, और अल्लाह अपनी अनुमति से जन्नत और क्षमा की ओर बुलाता है; और वह अपनी आयतें लोगों के लिए खोलकर बयान करता है, ताकि वे नसीहत पकड़ें। (221)

और वे तुमसे हैज़ के बारे में पूछते हैं। कह दो, "वह एक तकलीफ़ है; तो हैज़ के दिनों में स्त्रियों से अलग रहो, और जब तक वे पाक न हो जाएँ उनके पास न जाओ। फिर जब वे अच्छी तरह पाक हो जाएँ, तो उनके पास उस तरह जाओ जैसे अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है।" निस्संदेह अल्लाह तौबा करने वालों को पसन्द करता है, और पाक-साफ़ रहने वालों को पसन्द करता है। तुम्हारी पत्नियाँ तुम्हारी खेती हैं; तो अपनी खेती में जैसे चाहो आओ, और अपने लिए आगे भलाई भेजो। और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, और जान लो कि तुम्हें उससे मिलना है; और ईमान वालों को शुभ-सूचना दे दो। (222–223)

और अल्लाह को अपनी क़समों के द्वारा इस बात में आड़ न बनाओ कि तुम भलाई न करो, उसके प्रति सचेत न रहो, और लोगों के बीच सुलह न कराओ: अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। अल्लाह तुम्हारी उन क़समों पर तुम्हें न पकड़ेगा जो बेइरादा निकल जाएँ, मगर उस पर ज़रूर पकड़ेगा जो तुम्हारे दिलों ने कमाया: और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सहनशील है। जो लोग अपनी पत्नियों से अलग रहने की क़सम खा बैठें उनके लिए चार महीने की मुहलत है; फिर अगर वे पलट आएँ, तो अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। और अगर वे तलाक़ ही की ठान लें, तो अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। और तलाक़ पाई हुई स्त्रियाँ तीन हैज़ तक अपने-आप को रोके रखें; और उनके लिए जायज़ नहीं कि वे उसे छिपाएँ जो अल्लाह ने उनके गर्भ में पैदा किया है, अगर वे अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखती हैं। और इस अवधि में उनके पति उन्हें वापस ले लेने के ज़्यादा हक़दार हैं, अगर वे सुलह चाहें। और स्त्रियों के लिए भी भले तरीक़े के मुताबिक़ वैसे ही हक़ हैं जैसी उन पर ज़िम्मेदारियाँ हैं, हालाँकि पुरुषों को उन पर एक दर्जा हासिल है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। (224–228)

तलाक़ दो बार है; फिर या तो भले तरीक़े से पत्नी को रोक लिया जाए या अच्छे सुलूक के साथ विदा कर दिया जाए। और तुम्हारे लिए जायज़ नहीं कि जो कुछ तुम उन्हें दे चुके हो उसमें से कुछ वापस लो, सिवाय इसके कि दोनों को डर हो कि वे अल्लाह की ठहराई हुई हदों पर क़ायम न रह सकेंगे। फिर अगर तुम्हें डर हो कि वे दोनों अल्लाह की हदों पर क़ायम न रह सकेंगे, तो उन दोनों पर इसमें कोई गुनाह नहीं कि स्त्री अपनी रिहाई के बदले कुछ दे दे। ये अल्लाह की ठहराई हुई हदें हैं, तो इनसे आगे न बढ़ो; और जो अल्लाह की हदों से आगे बढ़ें—वही ज़ालिम हैं। फिर अगर वह उसे तीसरी बार तलाक़ दे दे, तो इसके बाद वह उसके लिए हलाल नहीं जब तक वह किसी दूसरे पति से निकाह न कर ले। फिर अगर वह दूसरा उसे तलाक़ दे दे, तो इन दोनों पर कोई गुनाह नहीं कि एक-दूसरे की ओर लौट आएँ, बशर्ते कि उन्हें लगे कि वे अल्लाह की हदों पर क़ायम रह सकेंगे। ये अल्लाह की ठहराई हुई हदें हैं, जिन्हें वह उन लोगों के लिए खोलकर बयान करता है जो जानते हैं। (229–230)

और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दो और वे अपनी इद्दत की समाप्ति को पहुँचने लगें, तो या तो उन्हें भले तरीक़े से रोक लो या भले तरीक़े से विदा कर दो। और उन्हें सताने के लिए न रोके रखो, कि उन पर ज़्यादती करो; और जो ऐसा करे उसने अपने ही ऊपर ज़ुल्म किया। और अल्लाह की आयतों को हँसी-खेल न बनाओ। और अल्लाह के उस अनुग्रह को याद करो जो तुम पर है, और उस किताब और हिकमत को जो

उसने तुम पर उतारी है, जिसके द्वारा वह तुम्हें नसीहत करता है। और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, और जान लो कि अल्लाह हर चीज़ का पूरा ज्ञान रखता है। और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दो और वे अपनी इद्दत पूरी कर लें, तो उन्हें इससे न रोको कि वे अपने पहले पतियों से निकाह कर लें, जबकि वे आपस में भले तरीक़े से राज़ी हो जाएँ। यह नसीहत तुममें से उसे की जाती है जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखता है: यह तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़ा और ज़्यादा सुथरा है। और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (231–232)

माएँ अपने बच्चों को पूरे दो बरस दूध पिलाएँ, यह उसके लिए है जो दूध पिलाने की अवधि पूरी करना चाहे। और बाप के ज़िम्मे भले तरीक़े से उनका खाना और कपड़ा है। किसी जान पर उसकी सामर्थ्य से बढ़कर बोझ नहीं डाला जाता: न किसी माँ को उसके बच्चे के कारण तकलीफ़ दी जाए, और न किसी बाप को उसके बच्चे के कारण; और वारिस पर भी ऐसी ही ज़िम्मेदारी है। फिर अगर दोनों आपस की रज़ामन्दी और मशवरे से दूध छुड़ाना चाहें, तो उन पर कोई गुनाह नहीं। और अगर तुम अपने बच्चों को किसी दाई से दूध पिलवाना चाहो, तो भी तुम पर कोई गुनाह नहीं, बशर्ते कि जो कुछ देना तय किया है वह भले तरीक़े से चुका दो। और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, और जान लो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। (233)

और तुममें से जो लोग मर जाएँ और पत्नियाँ छोड़ जाएँ, तो वे पत्नियाँ चार महीने दस दिन अपने-आप को रोके रखें। फिर जब वे अपनी इद्दत पूरी कर लें, तो वे अपने बारे में भले तरीक़े से जो कुछ करें उसका तुम पर कोई गुनाह नहीं। और अल्लाह तुम्हारे कामों की पूरी ख़बर रखता है। और तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम ऐसी स्त्रियों को निकाह के पैग़ाम का इशारा दो, या उसे अपने मन में छिपाए रखो: अल्लाह जानता है कि तुम उनका ख़याल करोगे। मगर उनसे चुपके-चुपके वादा न कर लेना, सिवाय इसके कि कोई भली बात कह दो; और निकाह का बन्धन बाँधने का पक्का इरादा न करना जब तक ठहराई हुई अवधि पूरी न हो जाए। और जान लो कि अल्लाह उसे जानता है जो तुम्हारे दिलों में है, तो उससे डरते रहो; और जान लो कि अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सहनशील है। (234–235)

तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम स्त्रियों को इस हाल में तलाक़ दो कि न तुमने उन्हें हाथ लगाया हो और न उनके लिए कोई महर ठहराया हो। मगर उन्हें कुछ सामान दो—ख़ुशहाल अपनी हैसियत के मुताबिक़ और तंगदस्त अपनी हैसियत के मुताबिक़—भले तरीक़े का सामान: यह अच्छा करने वालों पर एक हक़ है। और अगर तुम उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दो, मगर उनके लिए महर ठहरा चुके हो, तो जो कुछ तुमने ठहराया था उसका आधा दे दो, सिवाय इसके कि वे स्त्रियाँ छोड़ दें, या वह छोड़ दे जिसके हाथ में निकाह का बन्धन है। और छोड़ देना अल्लाह के प्रति सचेतता से ज़्यादा क़रीब है। और आपस में एक-दूसरे पर उदारता करना न भूलो: जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। नमाज़ों की पाबन्दी करो, और ख़ासकर बीच की नमाज़ की; और अल्लाह के आगे विनम्र आज्ञाकारी बनकर खड़े हो। फिर अगर तुम्हें भय हो, तो पैदल या सवारी पर ही नमाज़ पढ़ लो; और जब तुम्हें फिर अमन मिल जाए, तो अल्लाह को याद करो, जैसे उसने तुम्हें वह सिखाया जो तुम नहीं जानते थे। (236–239)

और तुममें से जो लोग मर जाएँ और पत्नियाँ छोड़ जाएँ, वे अपनी पत्नियों के हक़ में वसीयत कर जाएँ: एक बरस का ख़र्च, बिना इसके कि उन्हें घर से निकाला जाए। फिर अगर वे ख़ुद निकल जाएँ, तो वे अपने बारे में भले तरीक़े से जो कुछ करें उसका तुम पर कोई गुनाह नहीं: और अल्लाह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। और तलाक़ पाई हुई स्त्रियों के लिए भी भले तरीक़े का ख़र्च है: यह अल्लाह के प्रति सचेत रहने वालों पर एक हक़ है। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोलकर बयान करता है, ताकि तुम बुद्धि से काम लो। (240–242)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो मौत के डर से अपने घरों से निकल पड़े थे, और वे हज़ारों थे? तो अल्लाह ने उनसे कहा, "मर जाओ," फिर उसने उन्हें दोबारा जीवित किया। निस्संदेह अल्लाह लोगों पर बड़ा अनुग्रह करने वाला है, मगर अधिकतर लोग शुक्र नहीं करते। और अल्लाह की राह में लड़ो, और जान लो कि अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। कौन है जो अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दे, कि वह उसे उसके लिए कई गुना बढ़ा दे? और अल्लाह ही तंगी करता है और वही कुशादगी देता है, और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे। (243–245)

क्या तुमने मूसा के बाद इसराईल की सन्तान के सरदारों को नहीं देखा, जब उन्होंने अपने एक नबी से कहा, "हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दो, तो हम अल्लाह की राह में लड़ेंगे"? उसने कहा, "कहीं ऐसा तो न होगा कि तुम पर लड़ाई फ़र्ज़ कर दी जाए और तुम न लड़ो?" उन्होंने कहा, "भला हम अल्लाह की राह में क्यों न लड़ेंगे, जबकि हमें हमारे घरों और हमारे बाल-बच्चों से निकाल दिया गया है?" मगर जब उन पर लड़ाई फ़र्ज़ कर दी गई, तो वे फिर गए, उनमें से थोड़े-से लोगों के सिवा। और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। उनके नबी ने उनसे कहा, "अल्लाह ने तालूत को तुम्हारा बादशाह मुक़र्रर किया है।" उन्होंने कहा, "उसे हम पर बादशाही कैसे मिल सकती है, जबकि हम उससे ज़्यादा बादशाही के हक़दार हैं, और उसे माल की बहुतायत भी नहीं दी गई?" उसने कहा, "अल्लाह ने उसे तुम पर चुन लिया है और उसे ज्ञान और डील-डौल में ख़ूब बढ़ोतरी दी है। और अल्लाह अपनी बादशाही जिसे चाहता है देता है: और अल्लाह बड़ी समाई वाला, सब कुछ जानने वाला है।" और उनके नबी ने उनसे कहा, "उसकी बादशाही की निशानी यह है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक़ आ जाएगा, जिसमें तुम्हारे रब की ओर से सुकून है और उन चीज़ों की यादगार जो मूसा के घराने और हारून के घराने ने छोड़ी थीं, उसे फ़रिश्ते उठाए होंगे। निश्चय ही इसमें तुम्हारे लिए निशानी है, अगर तुम ईमान वाले हो।" (246–248)

फिर जब तालूत सेनाओं को लेकर निकला, तो उसने कहा, "अल्लाह तुम्हें एक नदी से आज़माएगा। तो जो उसमें से पिएगा वह मेरा नहीं, और जो उसे न चखेगा वह मेरा है—सिवाय उसके जो अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले।" मगर उन्होंने उसमें से पी लिया, उनमें से थोड़े-से लोगों के सिवा। फिर जब वह और उसके साथ के ईमान वाले उसे पार कर गए, तो कहने लगे, "आज हममें जालूत और उसकी सेनाओं के मुक़ाबले की ताक़त नहीं।" मगर जिन्हें यक़ीन था कि उन्हें अल्लाह से मिलना है उन्होंने कहा, "कितनी ही बार एक छोटा गिरोह अल्लाह की अनुमति से बड़े गिरोह पर हावी हुआ है! और अल्लाह धैर्य रखने वालों के साथ है।" और जब वे

जालूत और उसकी सेनाओं के मुक़ाबले पर निकले, तो उन्होंने कहा, "ऐ हमारे रब, हम पर धैर्य उँडेल दे, हमारे क़दम जमा दे, और सत्य का इनकार करने वाली क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद कर।" तो उन्होंने अल्लाह की अनुमति से उन्हें मार भगाया, और दाऊद ने जालूत को क़त्ल कर दिया; और अल्लाह ने उसे बादशाही और हिकमत दी, और जो चाहा उसे सिखाया। और अगर अल्लाह कुछ लोगों को कुछ लोगों के द्वारा हटाता न रहता, तो ज़मीन बिगाड़ से भर जाती; मगर अल्लाह सारे संसारों पर बड़ा अनुग्रह करने वाला है। (249–251)

ये अल्लाह की आयतें हैं जो ऐ नबी, हम तुम्हें ठीक-ठीक पढ़कर सुना रहे हैं; और निश्चय ही तुम रसूलों में से हो। इन रसूलों में हमने कुछ को कुछ पर श्रेष्ठता दी: उनमें कोई ऐसा था जिससे अल्लाह ने बात की, और कुछ के उसने दर्जे ऊँचे किए; और मरयम के बेटे ईसा को हमने खुली निशानियाँ दीं और पवित्र आत्मा के द्वारा उसे शक्ति दी। और अगर अल्लाह चाहता, तो उनके बाद के लोग, अपने पास खुली निशानियाँ आ जाने के बाद, आपस में न लड़ते; मगर उन्होंने मतभेद किया—तो उनमें से कोई ईमान लाया और किसी ने इनकार किया। और अगर अल्लाह चाहता, तो वे आपस में न लड़ते; मगर अल्लाह जो चाहता है करता है। (252–253)

ऐ ईमान लाने वालो, जो कुछ हमने तुम्हें दिया है उसमें से ख़र्च करो, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न कोई सौदा होगा, न दोस्ती, और न सिफ़ारिश। और जो सत्य का इनकार करते हैं वही ज़ालिम हैं। (254)

अल्लाह: उसके सिवा कोई इलाह नहीं, वह सदा जीवित है, सबको थामे रखने और सँभालने वाला। उसे न ऊँघ आती है न नींद। आसमानों में जो कुछ है और ज़मीन में जो कुछ है सब उसी का है। कौन है जो उसकी अनुमति के बिना उसके सामने सिफ़ारिश कर सके? वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, और वे उसके ज्ञान में से किसी चीज़ को घेर नहीं सकते सिवाय उसके जो वह चाहे। उसकी कुर्सी आसमानों और ज़मीन पर छाई हुई है, और उनकी निगहबानी उसे थकाती नहीं। और वही सर्वोच्च, बड़ी महानता वाला है।[4] (255)

दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं: सही राह गुमराही से साफ़ अलग हो चुकी है। तो जो झूठे उपास्यों को ठुकरा दे और अल्लाह पर ईमान लाए, उसने सबसे मज़बूत कड़ा थाम लिया, जो कभी टूटने वाला नहीं। और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। अल्लाह ईमान वालों का संरक्षक है: वह उन्हें घोर अँधेरों से निकालकर रौशनी में लाता है। और जो सत्य का इनकार करते हैं उनके संरक्षक झूठे उपास्य हैं, जो उन्हें रौशनी से निकालकर घोर अँधेरों में ले जाते हैं। वही आग वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे। (256–257)

क्या तुमने उसे नहीं देखा जिसने इबराहीम से उसके रब के बारे में झगड़ा किया, इसलिए कि अल्लाह ने उसे बादशाही दे रखी थी? जब इबराहीम ने कहा, "मेरा रब वह है जो जीवन देता और मौत देता है," तो उसने

[4] इसे पवित्र क़ुरआन की सबसे शानदार आयत माना जाता है। ऑकेज़नलिज़्म (अवसरवाद का दर्शन) – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस

कहा, "मैं भी जीवन देता और मौत देता हूँ।" इबराहीम ने कहा, "अल्लाह सूरज को पूरब से निकालता है; तो तू उसे पश्चिम से निकाल ला।" इस पर वह सत्य का इनकारी भौचक्का रह गया। और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता। (258)

या उसकी मिसाल जो एक ऐसी बस्ती पर से गुज़रा जो अपनी छतों पर गिरी पड़ी थी, और उसने कहा, "अल्लाह इसे इसके मर जाने के बाद कैसे जीवित करेगा?" तो अल्लाह ने उसे सौ बरस तक मुर्दा रखा, फिर उसे उठा खड़ा किया। उसने पूछा, "तुम कितनी देर पड़े रहे?" उसने कहा, "मैं एक दिन, या दिन का कुछ हिस्सा पड़ा रहा।" उसने कहा, "नहीं—बल्कि तुम सौ बरस पड़े रहे। अब अपने खाने और पीने की चीज़ों को देखो: वे बासी तक नहीं हुईं। और अपने गधे को देखो। यह हमने इसलिए किया कि तुम्हें लोगों के लिए एक निशानी बनाएँ। और हड्डियों को देखो, हम उन्हें कैसे उठाते हैं, फिर उन पर मांस चढ़ाते हैं।" फिर जब बात उस पर खुल गई, तो उसने कहा, "मैं जानता हूँ कि अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है।" (259)

और जब इबराहीम ने कहा, "ऐ मेरे रब, मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को कैसे जीवित करता है।" उसने कहा, "तो क्या तुम ईमान नहीं रखते?" उसने कहा, "क्यों नहीं, मगर इसलिए कि मेरे दिल को इत्मीनान हो जाए।" उसने कहा, "तो चार पक्षी लो और उन्हें अपने से हिला लो; फिर उनका एक-एक हिस्सा हर पहाड़ी पर रख दो, फिर उन्हें पुकारो: वे उड़ते हुए तुम्हारे पास चले आएँगे। और जान लो कि अल्लाह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है।" (260)

जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल उस दाने जैसी है जिससे सात बालें निकलें, हर बाल में सौ दाने हों। और अल्लाह जिसके लिए चाहता है बढ़ोतरी देता है; और अल्लाह बड़ी समाई वाला, सब कुछ जानने वाला है। जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, फिर ख़र्च करके न एहसान जताते हैं और न दिल दुखाने वाली बात कहते हैं—उनका बदला उनके रब के पास है; उन्हें न कोई भय होगा, और न वे दुखी होंगे। भली बात कहना और माफ़ कर देना उस सदक़े से बेहतर है जिसके पीछे दिल दुखाना हो; और अल्लाह निस्पृह, सहनशील है। ऐ ईमान लाने वालो, अपने सदक़ों को एहसान जताकर और दिल दुखाकर बरबाद न करो, उस आदमी की तरह जो अपना माल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करता है और अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान नहीं रखता। उसकी मिसाल उस चिकनी चट्टान जैसी है जिस पर कुछ मिट्टी हो: फिर उस पर ज़ोर की बारिश पड़े और उसे साफ़-सपाट छोड़ जाए। ऐसे लोग अपनी कमाई में से किसी चीज़ पर क़ाबू नहीं रखते; और अल्लाह सत्य का इनकार करने वाली क़ौम को राह नहीं दिखाता। और जो लोग अपने माल अल्लाह की प्रसन्नता चाहने और अपने दिलों को जमाने के लिए ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल उस बाग़ जैसी है जो ऊँची ज़मीन पर हो: उस पर ज़ोर की बारिश पड़े तो वह दुगुना फल लाए; और अगर ज़ोर की बारिश न पड़े, तो हल्की फुहार ही काफ़ी हो जाए। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। क्या तुममें से कोई यह चाहेगा कि उसके पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, जिसके नीचे नहरें बहती हों, उसमें उसके लिए हर तरह के फल हों—और फिर जब उस पर बुढ़ापा आ जाए और उसके बच्चे अभी कमज़ोर हों, तो उस बाग़ पर एक बगूला आ पड़े जिसमें आग हो

और वह जलकर रह जाए? इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोलकर बयान करता है, ताकि तुम सोच-विचार करो। (261–266)

ऐ ईमान लाने वालो, अपनी कमाई की अच्छी चीज़ों में से ख़र्च करो, और उसमें से भी जो हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाला है। और उसमें से ख़राब चीज़ छाँटकर देने का इरादा न करो, जबकि तुम ख़ुद उसे लेने वाले नहीं सिवाय इसके कि आँखें मूँद लो। और जान लो कि अल्लाह निस्पृह, सारी प्रशंसा के योग्य है। शैतान तुम्हें तंगदस्ती से डराता है और बेहयाई का हुक्म देता है, जबकि अल्लाह तुमसे अपनी ओर से क्षमा और अनुग्रह का वादा करता है; और अल्लाह बड़ी समाई वाला, सब कुछ जानने वाला है। वह जिसे चाहता है हिकमत देता है, और जिसे हिकमत मिली उसे बड़ी भलाई मिल गई; मगर नसीहत वही पकड़ते हैं जो बुद्धि वाले हैं। और जो कुछ भी तुम ख़र्च करो, और जो मन्नत भी तुम मानो, अल्लाह उसे जानता है; और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। अगर तुम सदक़े खुलेआम दो, तो यह भी अच्छा है; और अगर उन्हें छिपाकर ग़रीबों को दो, तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, और यह तुम्हारी कुछ बुराइयों को मिटा देगा। और अल्लाह तुम्हारे कामों की पूरी ख़बर रखता है। ऐ नबी, उन्हें राह पर ले आना तुम्हारे ज़िम्मे नहीं; बल्कि अल्लाह ही जिसे चाहता है राह दिखाता है। और जो भी भला माल तुम ख़र्च करते हो वह तुम्हारे अपने ही लिए है, जबकि तुम अल्लाह की प्रसन्नता ही के लिए ख़र्च करते हो; और जो भी भला माल तुम ख़र्च करोगे वह तुम्हें पूरा-पूरा लौटा दिया जाएगा, और तुम पर ज़ुल्म न होगा। उन ग़रीबों को दो जो अल्लाह की राह में घिर गए हैं, ज़मीन में दौड़-धूप नहीं कर सकते; अनजान आदमी उनके न माँगने के कारण उन्हें मालदार समझता है। तुम उन्हें उनके चेहरों की निशानी से पहचान लोगे: वे लोगों से लिपटकर नहीं माँगते। और जो भी भला माल तुम ख़र्च करोगे, अल्लाह उसे ख़ूब जानता है। (267–273)

जो लोग अपने माल रात और दिन, छिपे और खुले ख़र्च करते हैं, उनका बदला उनके रब के पास है; उन्हें न कोई भय होगा, और न वे दुखी होंगे। जो लोग सूद खाते हैं वे नहीं उठेंगे मगर उस आदमी की तरह जिसे शैतान ने छूकर बावला कर दिया हो। यह इसलिए कि वे कहते हैं, "व्यापार भी तो सूद ही जैसा है," हालाँकि अल्लाह ने व्यापार को हलाल किया है और सूद को हराम। तो जिसके पास उसके रब की ओर से नसीहत पहुँची और वह बाज़ आ गया, तो जो पहले हो चुका वह उसी का रहा, और उसका मामला अल्लाह के हवाले है; और जो फिर वही करे—तो वही आग वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे। अल्लाह सूद को मिटाता है और सदक़ों को बढ़ाता है; और अल्लाह किसी नाशुक्रे गुनाहगार को पसन्द नहीं करता। निस्संदेह जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी, उनका बदला उनके रब के पास है; उन्हें न कोई भय होगा, और न वे दुखी होंगे। ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह के प्रति सचेत रहो और जो सूद बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो, अगर तुम ईमान वाले हो। फिर अगर तुमने ऐसा न किया, तो अल्लाह और उसके रसूल की ओर से युद्ध की घोषणा सुन लो। और अगर तुम तौबा कर लो, तो तुम्हारा मूलधन तुम्हारा है: न तुम ज़ुल्म करो, न तुम पर ज़ुल्म किया जाए। और अगर क़र्ज़दार तंगी में हो, तो ख़ुशहाली तक मुहलत दी जाए; और अगर तुम क़र्ज़ को सदक़ा करके छोड़ दो, तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, काश तुम जानते। और उस

दिन से बचो जिसमें तुम अल्लाह की ओर लौटाए जाओगे; फिर हर जान को उसकी कमाई का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा, और किसी पर ज़ुल्म न होगा। (274–281)

ऐ ईमान लाने वालो, जब तुम किसी ठहराई हुई अवधि के लिए आपस में क़र्ज़ का लेन-देन करो, तो उसे लिख लिया करो। और तुम्हारे बीच कोई लिखने वाला न्याय के साथ लिखे; और लिखने वाला लिखने से इनकार न करे, जैसा अल्लाह ने उसे सिखाया है। तो वह लिखे, और वह आदमी बोलकर लिखवाए जिस पर क़र्ज़ आता है; और उसे चाहिए कि अपने रब अल्लाह के प्रति सचेत रहे और उसमें से कुछ न घटाए। फिर अगर जिस पर क़र्ज़ आता है वह कम-समझ या कमज़ोर हो, या ख़ुद बोलकर न लिखवा सकता हो, तो उसका अभिभावक न्याय के साथ लिखवा दे। और अपने पुरुषों में से दो गवाह कर लो; फिर अगर दो पुरुष न हों, तो एक पुरुष और दो स्त्रियाँ, उन गवाहों में से जिन्हें तुम पसन्द करते हो, ताकि अगर उन दोनों में से एक भूल जाए तो दूसरी उसे याद दिला दे। और गवाह जब बुलाए जाएँ तो इनकार न करें। और मामला छोटा हो या बड़ा, उसकी अवधि के साथ उसे लिखने में सुस्ती न करो: यह अल्लाह के निकट ज़्यादा न्यायसंगत है, गवाही को ज़्यादा ठीक रखने वाला है, और इसके ज़्यादा क़रीब है कि तुम सन्देह में न पड़ो—सिवाय इसके कि सौदा हाथों-हाथ का हो जिसे तुम आपस में लेते-देते हो, तो उसे न लिखने में तुम पर कोई गुनाह नहीं। और जब आपस में सौदा करो तो गवाह कर लिया करो, और न लिखने वाले को हानि पहुँचाई जाए न गवाह को; और अगर तुम ऐसा करोगे, तो यह तुम्हारे लिए गुनाह की बात होगी। और अल्लाह के प्रति सचेत रहो: अल्लाह ही तुम्हें सिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ का पूरा ज्ञान रखता है। और अगर तुम सफ़र में हो और कोई लिखने वाला न पाओ, तो गिरवी की चीज़ क़ब्ज़े में दे दी जाए। फिर अगर तुममें से कोई दूसरे पर भरोसा करे, तो जिस पर भरोसा किया गया है वह उसकी अमानत अदा कर दे, और अपने रब अल्लाह के प्रति सचेत रहे। और गवाही को न छिपाओ; और जो उसे छिपाए उसका दिल गुनाहगार है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसका पूरा ज्ञान रखता है। आसमानों में जो कुछ है और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह ही का है। तुम अपने जी की बात ज़ाहिर करो या छिपाओ, अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा; फिर जिसे चाहेगा माफ़ कर देगा और जिसे चाहेगा यातना देगा। और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। (282–284)

रसूल उस पर ईमान लाया जो उसके रब की ओर से उसकी ओर उतारा गया, और ईमान वाले भी। हर एक ईमान लाया अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर: “हम उसके रसूलों में से किसी के बीच फ़र्क़ नहीं करते।” और उन्होंने कहा, “हमने सुना और हमने माना। ऐ हमारे रब, हमें तेरी क्षमा चाहिए; और तेरी ही ओर लौटना है।” अल्लाह किसी जान पर उसकी सामर्थ्य से बढ़कर बोझ नहीं डालता: उसी के लिए है जो उसने कमाया, और उसी पर है जो उसने अपने सिर लिया। “ऐ हमारे रब, अगर हम भूल जाएँ या चूक कर बैठें तो हमारी पकड़ न कर। ऐ हमारे रब, हम पर वैसा बोझ न डाल जैसा तूने हमसे पहले के लोगों पर डाला था। ऐ हमारे रब, हमसे वह बोझ न उठवा जिसे उठाने की हममें ताक़त नहीं।

हमें माफ़ कर, हमें क्षमा कर, और हम पर दया कर। तू ही हमारा संरक्षक है, तो सत्य का इनकार करने वाली क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद कर।” (285–286)

# 3. इमरान का घराना (आले-इमरान)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

अलिफ़ लाम मीम। अल्लाह: उसके सिवा कोई इलाह नहीं, वह सदा जीवित है, सबको थामे रखने और सँभालने वाला। उसने ऐ नबी, तुम पर सत्य के साथ किताब उतारी, जो उसकी पुष्टि करती है जो इससे पहले आ चुका; और उसने इससे पहले तौरात और इंजील उतारी, लोगों के मार्गदर्शन के लिए, और उसने फ़ुरक़ान उतारा। जो लोग अल्लाह की आयतों का इनकार करते हैं उनके लिए कठोर यातना है: और अल्लाह प्रभुत्वशाली, बदला लेने वाला है। अल्लाह से न ज़मीन की कोई चीज़ छिपी है, न आसमान की। वही है जो माँओं के पेट में जैसी चाहता है तुम्हारी सूरत बनाता है। उसके सिवा कोई इलाह नहीं, वह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। (1–6)

वही है जिसने तुम पर किताब उतारी। उसमें कुछ आयतें और निशानियाँ ऐसी हैं जो साफ़ और अटल हैं—वही किताब की असल बुनियाद हैं—और दूसरी ऐसी हैं जिनकी व्याख्या के कई पहलू निकलते हैं। तो जिनके दिलों में टेढ़ है वे उसी के पीछे पड़ते हैं जिसकी व्याख्या के कई पहलू हैं, फ़ितने की तलाश में और अपनी मनमानी व्याख्या थोपने की तलाश में; हालाँकि उसकी असल व्याख्या कोई नहीं जानता सिवाय अल्लाह के और उनके जो ज्ञान में पक्के हैं। वे कहते हैं, "हम इस पर ईमान लाए; यह सब हमारे रब ही की ओर से है।" और नसीहत वही पकड़ते हैं जो बुद्धि वाले हैं।[5] (7)

"ऐ हमारे रब, हमें राह दिखा देने के बाद हमारे दिलों को टेढ़ा न होने दे, और हमें अपने पास से दयालुता प्रदान कर: निश्चय ही तू ही बड़ा दाता है। ऐ हमारे रब, तू निश्चय ही सब लोगों को उस दिन के लिए इकट्ठा करने वाला है जिसमें कोई सन्देह नहीं: निस्संदेह अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता।" (8–9)

रहे वे लोग जो सत्य का इनकार करते हैं, तो अल्लाह के मुक़ाबले में न उनके माल उनके कुछ काम आएँगे, न उनकी सन्तान: और वही आग का ईंधन हैं—ठीक वैसे ही जैसे फ़िरऔन के लोग और उनसे पहले के लोग, जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। तो अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उन्हें पकड़ लिया; और अल्लाह कठोर यातना देने वाला है। सत्य के इनकारियों से कह दो, "तुम जल्द ही पराजित होगे और जहन्नम की ओर हाँके जाओगे—और वह बहुत बुरा बिछौना है।" तुम्हारे लिए उन दो गिरोहों में एक निशानी थी जो बद्र में आमने-सामने हुए: एक गिरोह अल्लाह की राह में लड़ रहा था, और दूसरा सत्य का इनकारी था, जो

[5] यह क़ुरआन की बुनियादी आयतों में से एक है। यह बताती है कि हर आदमी अपने-अपने दृष्टिकोण के अनुसार क़ुरआन से क्या हासिल करता है। इससे मुझे प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक गेटे का एक कथन याद आता है: "हम जितनी बार क़ुरआन के पास जाते हैं, वह हर बार पहले-पहल अरुचिकर लगता है; मगर धीरे-धीरे वह खींचता है, चकित करता है, और अन्त में अपनी प्रशंसा करवाकर रहता है।" — योहान वोल्फ़गांग फ़ॉन गेटे

उन्हें अपनी आँखों से अपने से दुगुना देख रहा था। और अल्लाह अपनी मदद से जिसे चाहता है शक्ति देता है: निश्चय ही इसमें आँखों वालों के लिए बड़ी सीख है। (10–13)

लोगों के लिए उन चीज़ों की चाह लुभावनी बना दी गई है जिनकी उन्हें ललक होती है: स्त्रियाँ, बेटे, सोने-चाँदी के जमा किए हुए ढेर, निशान लगे घोड़े, मवेशी और खेती की ज़मीन। ये दुनिया की ज़िन्दगी के सामान हैं; और सबसे अच्छा ठिकाना तो अल्लाह ही के पास है। कह दो, "क्या मैं तुम्हें इनसे बेहतर चीज़ बताऊँ? जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं उनके लिए उनके रब के पास ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जहाँ वे सदैव रहेंगे, और पाक-साफ़ जोड़े, और अल्लाह की प्रसन्नता।" और अल्लाह अपने बन्दों पर निगाह रखे हुए है—वे जो कहते हैं, "ऐ हमारे रब, हम ईमान ले आए, तो हमारे गुनाह माफ़ कर दे और हमें आग की यातना से बचा ले," जो धैर्य रखने वाले, सच्चे, आज्ञाकारी, अल्लाह की राह में ख़र्च करने वाले, और रात की पिछली घड़ियों में क्षमा माँगने वाले हैं। (14–17)

अल्लाह गवाही देता है कि उसके सिवा कोई इलाह नहीं, और फ़रिश्ते और ज्ञान वाले भी—वह न्याय पर क़ायम है। उसके सिवा कोई इलाह नहीं, वह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। अल्लाह के निकट सच्चा दीन उसके आगे समर्पण ही है। जिन्हें किताब दी गई थी उन्होंने अपने पास ज्ञान आ जाने के बाद ही मतभेद किया, आपस की जलन और ज़िद के कारण। और जो अल्लाह की आयतों का इनकार करे—तो अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। फिर अगर वे तुमसे झगड़ें, तो कह दो, "मैंने अपना पूरा अस्तित्व अल्लाह के आगे समर्पित कर दिया, और उन्होंने भी जो मेरे पीछे चलते हैं।" और जिन्हें किताब दी गई थी उनसे और अनपढ़ों से कहो, "क्या तुम भी समर्पित हुए?" फिर अगर वे समर्पित हो जाएँ, तो राह पा गए; और अगर मुँह फेरें, तो तुम्हारे ज़िम्मे बस सन्देश पहुँचा देना है। और अल्लाह अपने बन्दों पर निगाह रखे हुए है। (18–20)

जो लोग अल्लाह की आयतों का इनकार करते हैं, और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते हैं, और लोगों में से उन्हें क़त्ल करते हैं जो न्याय का हुक्म देते हैं—उन्हें दुखद यातना की ख़बर दे दो। यही वे लोग हैं जिनके कर्म दुनिया और आख़िरत में अकारथ गए, और उनका कोई मददगार न होगा। क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया था? उन्हें अल्लाह की किताब की ओर बुलाया जाता है कि वह उनके बीच फ़ैसला करे, फिर उनका एक गिरोह मुँह फेरकर कतरा जाता है—यह इसलिए कि वे कहते हैं, "आग हमें हरगिज़ न छुएगी, सिवाय गिनती के कुछ दिनों के।" और जो कुछ वे गढ़ते रहे उसी ने उन्हें उनके दीन के बारे में धोखे में डाल रखा है। तो कैसा होगा जब हम उन्हें उस दिन के लिए इकट्ठा करेंगे जिसमें कोई सन्देह नहीं, जब हर जान को उसकी कमाई का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा, और किसी पर ज़ुल्म न होगा? (21–25)

कहो, "ऐ अल्लाह, सारी बादशाही के मालिक: तू जिसे चाहे बादशाही दे और जिससे चाहे बादशाही छीन ले; तू जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे। सारी भलाई तेरे ही हाथ में है: निश्चय ही तू हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। तू रात को दिन में पिरो देता है और दिन को रात में पिरो देता है; तू बेजान से जानदार को

निकालता है और जानदार से बेजान को निकालता है; और तू जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है।" (26–27)

ईमान वाले ईमान वालों को छोड़कर सत्य के इनकारियों को अपना दोस्त और हिमायती न बनाएँ—और जो ऐसा करेगा उसका अल्लाह से कोई नाता नहीं—सिवाय इसके कि तुम उनसे बचाव के लिए एहतियात बरतो। और अल्लाह तुम्हें अपने-आप से डराता है: और अल्लाह ही की ओर लौटना है। कह दो, "जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे छिपाओ या ज़ाहिर करो, अल्लाह उसे जानता है; और वह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है।" जिस दिन हर जान अपनी की हुई भलाई को अपने सामने मौजूद पाएगी, और अपनी की हुई बुराई को भी, वह चाहेगी कि काश उसके और उस बुराई के बीच बहुत दूर का फ़ासला होता। और अल्लाह तुम्हें अपने-आप से डराता है; और अल्लाह अपने बन्दों पर बड़ा करुणामय है। कह दो, "अगर तुम अल्लाह से प्रेम करते हो, तो मेरे पीछे चलो: अल्लाह तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है।" कह दो, "अल्लाह और रसूल की आज्ञा मानो।" फिर अगर वे मुँह फेरें—तो अल्लाह सत्य के इनकारियों को पसन्द नहीं करता। (28–32)

अल्लाह ने आदम और नूह को, इबराहीम के घराने और इमरान के घराने को सारे संसार वालों पर चुन लिया, ये एक-दूसरे की नस्ल से थे। और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। याद करो जब इमरान की पत्नी ने कहा, "ऐ मेरे रब, जो कुछ मेरे पेट में है उसे मैं तेरी नज़र करती हूँ, तेरी ही सेवा के लिए वक़्फ़; तो इसे मुझसे क़बूल कर ले। निश्चय ही तू ही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।" फिर जब उसने उसे जन्म दिया तो कहा, "ऐ मेरे रब, मैंने तो लड़की को जन्म दिया है"—और अल्लाह ख़ूब जानता था कि उसने क्या जन्म दिया है; और लड़का लड़की जैसा नहीं होता—"और मैंने उसका नाम मरयम रखा है, और मैं उसे और उसकी सन्तान को धुत्कारे हुए शैतान से तेरी पनाह में देती हूँ।" तो उसके रब ने उसे बड़ी ख़ूबी से क़बूल किया और उसे अच्छी तरह परवान चढ़ाया, और उसे ज़करिया की सरपरस्ती में दे दिया। जब भी ज़करिया उसके पास मेहराब में जाता, उसके पास रोज़ी पाता। उसने कहा, "ऐ मरयम, यह तुम्हारे पास कहाँ से आता है?" उसने कहा, "यह अल्लाह के पास से है: निस्संदेह अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है।" वहीं ज़करिया ने अपने रब को पुकारा। उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मुझे अपने पास से पाकीज़ा सन्तान प्रदान कर: निश्चय ही तू दुआ सुनने वाला है।" तो फ़रिश्तों ने उसे आवाज़ दी, जबकि वह मेहराब में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था, "अल्लाह तुम्हें यह्या की शुभ-सूचना देता है, जो अल्लाह के एक कलिमे की पुष्टि करने वाला होगा, सरदार, संयमी, और नेक लोगों में से एक नबी।" उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा जबकि मुझ पर बुढ़ापा आ चुका है और मेरी पत्नी बाँझ है?" उसने कहा, "ऐसा ही होगा: अल्लाह जो चाहता है करता है।" उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मेरे लिए कोई निशानी ठहरा दे।" उसने कहा, "तुम्हारी निशानी यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से बात न करोगे, सिवाय इशारे के। और अपने रब को बहुत याद करो, और शाम और सुबह उसकी पाकी बयान करो।" (33–41)

और जब फ़रिश्तों ने कहा, "ऐ मरयम, अल्लाह ने तुम्हें चुन लिया और तुम्हें पाक किया, और सारे संसार की स्त्रियों पर तुम्हें चुन लिया। ऐ मरयम, अपने रब की आज्ञाकारी बनी रहो, सजदा करो, और झुकने वालों के साथ झुको।" ऐ नबी, यह परोक्ष की ख़बरों में से है जो हम तुम्हारी ओर वह्य कर रहे हैं। और तुम उनके पास न थे जब वे अपने क़लम डाल रहे थे कि उनमें से कौन मरयम की सरपरस्ती करे, और न तुम उनके पास थे जब वे झगड़ रहे थे। (42–44)

जब फ़रिश्तों ने कहा, "ऐ मरयम, अल्लाह तुम्हें अपने एक कलिमे की शुभ-सूचना देता है, जिसका नाम मसीह, मरयम का बेटा ईसा होगा, दुनिया और आख़िरत में प्रतिष्ठित, और अल्लाह के निकटवर्ती लोगों में से। वह लोगों से पालने में भी बात करेगा और पकी उम्र में भी, और वह नेक लोगों में से होगा।" उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा जबकि मुझे किसी पुरुष ने छुआ तक नहीं?" उसने कहा, "ऐसा ही होगा: अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है। जब वह किसी बात का फ़ैसला करता है, तो उससे बस कहता है, 'हो जा,' और वह हो जाती है।" और वह उसे किताब और हिकमत, और तौरात और इंजील सिखाएगा, और उसे इसराईल की सन्तान की ओर रसूल बनाकर भेजेगा, जो कहेगा, "मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया हूँ। मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से पक्षी जैसी सूरत बनाता हूँ; फिर उसमें फूँक मारता हूँ तो वह अल्लाह की अनुमति से पक्षी बन जाता है। और मैं अल्लाह की अनुमति से अंधे और कोढ़ी को अच्छा करता हूँ, और मुर्दों को जीवित करता हूँ; और मैं तुम्हें बता देता हूँ जो कुछ तुम खाते हो और जो कुछ अपने घरों में जमा करके रखते हो। निश्चय ही इसमें तुम्हारे लिए निशानी है, अगर तुम ईमान वाले हो। और मैं उस तौरात की पुष्टि करता हुआ आया हूँ जो मुझसे पहले की है, और इसलिए कि तुम्हारे लिए कुछ वे चीज़ें हलाल कर दूँ जो तुम पर हराम की गई थीं। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से निशानी लेकर आया हूँ, तो अल्लाह के प्रति सचेत रहो और मेरी आज्ञा मानो। निस्संदेह अल्लाह मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब, तो उसी की इबादत करो: यही सीधा मार्ग है।" (45–51)

फिर जब ईसा ने उनके इनकार को भाँप लिया, तो उसने कहा, "अल्लाह की राह में कौन मेरे मददगार हैं?" हवारियों ने कहा, "हम अल्लाह के मददगार हैं: हम अल्लाह पर ईमान लाए; और गवाह रहो कि हम उसके आज्ञाकारी हैं। ऐ हमारे रब, हम उस पर ईमान लाए जो तूने उतारा और हम रसूल के पीछे हो लिए, तो हमें गवाही देने वालों में लिख ले।" और उन्होंने चाल चली, और अल्लाह ने भी तदबीर की; और अल्लाह सबसे अच्छी तदबीर करने वाला है। (52–54)

जब अल्लाह ने कहा, "ऐ ईसा, मैं तुम्हें पूरा-पूरा ले लूँगा और तुम्हें अपनी ओर उठा लूँगा, और तुम्हें सत्य के इनकारियों से पाक कर दूँगा, और जो तुम्हारे पीछे चलेंगे उन्हें क़ियामत के दिन तक सत्य के इनकारियों के ऊपर रखूँगा। फिर तुम सब को मेरी ही ओर लौटना है, तो मैं तुम्हारे बीच उन बातों का फ़ैसला कर दूँगा जिनमें तुम मतभेद करते रहे। फिर जो सत्य का इनकार करते हैं, उन्हें मैं दुनिया और आख़िरत में कठोर यातना दूँगा, और उनका कोई मददगार न होगा।" और जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, उन्हें वह उनके बदले पूरे-पूरे देगा। और अल्लाह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता। (55–57)

ऐ नबी, यह है जो हम तुम्हें आयतों और हिकमत भरी याददिहानी में से पढ़कर सुना रहे हैं। अल्लाह के निकट ईसा की मिसाल आदम की मिसाल जैसी है: उसने उसे मिट्टी से पैदा किया, फिर उससे कहा, "हो जा," और वह हो गया। यह सत्य तुम्हारे रब की ओर से है, तो तुम सन्देह करने वालों में से न होना। फिर जो कोई उस ज्ञान के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है इस बारे में तुमसे झगड़े, तो कह दो, "आओ, हम बुला लें अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को, अपनी स्त्रियों को और तुम्हारी स्त्रियों को, अपने-आप को और तुम्हें भी; फिर हम गिड़गिड़ाकर दुआ करें और झूठों पर अल्लाह की लानत भेजें।" निश्चय ही यही सच्चा बयान है; और अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, और निस्संदेह अल्लाह ही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। फिर अगर वे मुँह फेरें—तो अल्लाह बिगाड़ फैलाने वालों को ख़ूब जानता है। कह दो, "ऐ किताब वालो, आओ एक ऐसी बात की ओर जो हमारे और तुम्हारे बीच समान है: यह कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें, उसके साथ किसी चीज़ को साझी न ठहराएँ, और हममें से कोई अल्लाह को छोड़कर किसी दूसरे को रब न बनाए।" फिर अगर वे मुँह फेरें, तो कह दो, "गवाह रहो कि हम तो अल्लाह के आज्ञाकारी हैं।" (58–64)

ऐ किताब वालो, तुम इबराहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो, जबकि तौरात और इंजील तो उसके बाद ही उतारी गई हैं? क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? तुम्हीं तो हो कि उस बात में झगड़ चुके जिसका तुम्हें कुछ ज्ञान था—मगर उस बात में क्यों झगड़ते हो जिसका तुम्हें कोई ज्ञान नहीं? अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। इबराहीम न यहूदी था न ईसाई; बल्कि वह एकनिष्ठ, अल्लाह का आज्ञाकारी था, और वह उसके साथ साझी ठहराने वालों में से न था। निस्संदेह इबराहीम से सबसे क़रीबी नाता रखने वाले वे लोग हैं जो उसके पीछे चले, और यह नबी, और वे जो ईमान लाए; और अल्लाह ईमान वालों का संरक्षक है। (65–68)

किताब वालों का एक गिरोह चाहता है कि काश तुम्हें भटका दे; मगर वे अपने सिवा किसी को नहीं भटकाते, और उन्हें इसका एहसास नहीं। ऐ किताब वालो, तुम अल्लाह की आयतों का इनकार क्यों करते हो, जबकि तुम ख़ुद उनके गवाह हो? ऐ किताब वालो, तुम सत्य पर असत्य का परदा क्यों डालते हो और जानते-बूझते सत्य को क्यों छिपाते हो? किताब वालों का एक गिरोह कहता है, "जो कुछ ईमान वालों पर उतारा गया है उस पर दिन के शुरू में ईमान लाओ, और उसके आख़िर में इनकार कर दो, शायद वे भी फिर जाएँ; और किसी की बात न मानो सिवाय उसके जो तुम्हारे दीन पर चले।" ऐ नबी, कह दो, "असल मार्गदर्शन तो अल्लाह का मार्गदर्शन है"—उन्हें डर है कि कहीं किसी को वैसा कुछ न मिल जाए जैसा तुम्हें मिला था, या वे तुम्हारे रब के सामने तुमसे हुज्जत न करने लगें। कह दो, "सारा अनुग्रह अल्लाह के हाथ में है: वह जिसे चाहता है देता है। और अल्लाह बड़ी समाई वाला, सब कुछ जानने वाला है; वह अपनी दयालुता के लिए जिसे चाहता है ख़ास कर लेता है, और अल्लाह बड़े अनुग्रह का मालिक है।" (69–74)

किताब वालों में कोई ऐसा है कि अगर तुम उसके पास सोने का ढेर भी अमानत रख दो, तो वह तुम्हें लौटा देगा; और उनमें कोई ऐसा है कि अगर तुम उसके पास एक दीनार भी अमानत रख दो, तो वह तुम्हें न लौटाएगा जब तक तुम उसके सिर पर खड़े रहकर तक़ाज़ा न करो। यह इसलिए कि वे कहते हैं, "अनपढ़ों के मामले में हम पर कोई पकड़ नहीं"—और वे जानते-बूझते अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं। क्यों नहीं! जो अपना

वचन पूरा करे और अल्लाह के प्रति सचेत रहे—तो अल्लाह उन्हें पसन्द करता है जो उसके प्रति सचेत रहते हैं। जो लोग अल्लाह के वचन और अपनी क़समों को थोड़े-से दाम पर बेच डालते हैं उनका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं। अल्लाह क़ियामत के दिन न उनसे बात करेगा, न उनकी ओर देखेगा, न उन्हें पाक करेगा; और उनके लिए दुखद यातना है। और उनमें एक गिरोह ऐसा है जो किताब पढ़ते हुए अपनी ज़बानें मरोड़ता है, ताकि तुम उसे किताब का हिस्सा समझो, हालाँकि वह किताब में से नहीं; और वे कहते हैं, "यह अल्लाह की ओर से है," हालाँकि वह अल्लाह की ओर से नहीं—और वे जानते-बूझते अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं। (75–78)

किसी इनसान का यह काम नहीं कि अल्लाह उसे किताब, हिकमत और नुबुव्वत दे, फिर वह लोगों से कहे, "अल्लाह को छोड़कर मेरे बन्दे बन जाओ।" बल्कि वह तो यही कहेगा, "रब वाले बनो, इसलिए कि तुम किताब सिखाते हो और इसलिए कि तुम उसे पढ़ते हो।" और न वह तुम्हें यह हुक्म देगा कि फ़रिश्तों और नबियों को रब बना लो। क्या वह तुम्हें सत्य के इनकार का हुक्म देगा, इसके बाद कि तुम अल्लाह के आज्ञाकारी हो चुके हो? (79–80)

जब अल्लाह ने नबियों से वचन लिया: "जो कुछ भी मैं तुम्हें किताब और हिकमत में से दूँ, फिर तुम्हारे पास कोई रसूल आए जो उसकी पुष्टि करे जो तुम्हारे पास है, तो तुम ज़रूर उस पर ईमान लाओगे और ज़रूर उसकी मदद करोगे।" उसने कहा, "क्या तुमने इक़रार किया, और इस पर मेरे अहद की ज़िम्मेदारी उठाई?" उन्होंने कहा, "हमने इक़रार किया।" उसने कहा, "तो गवाह रहो, और मैं भी तुम्हारे साथ गवाहों में हूँ।" फिर इसके बाद जो कोई फिर जाए—तो वही लोग अवज्ञाकारी हैं। क्या वे अल्लाह के दीन के सिवा कुछ और चाहते हैं, हालाँकि आसमानों और ज़मीन में जो कोई भी है, चाहे-अनचाहे, उसी के आगे समर्पित है, और उसी की ओर वे लौटाए जाएँगे? (81–83)

कहो, "हम ईमान लाए अल्लाह पर, और उस पर जो हम पर उतारा गया, और उस पर जो इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़, याक़ूब और उनकी सन्तान पर उतारा गया, और उस पर जो मूसा, ईसा और नबियों को उनके रब की ओर से दिया गया। हम उनमें से किसी के बीच फ़र्क़ नहीं करते, और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।" और जो अल्लाह के आगे समर्पण के सिवा कोई और दीन चाहेगा, उससे वह हरगिज़ क़बूल न किया जाएगा, और आख़िरत में वह घाटा उठाने वालों में होगा। अल्लाह उन लोगों को कैसे राह दिखाए जिन्होंने अपने ईमान के बाद सत्य का इनकार किया, इसके बाद कि वे गवाही दे चुके थे कि रसूल सच्चा है और उनके पास खुली निशानियाँ आ चुकी थीं? और अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। उनका बदला यह है कि उन पर अल्लाह की, फ़रिश्तों की और सारे इनसानों की लानत है, जिसमें वे सदैव रहेंगे। न उनकी यातना हल्की की जाएगी, और न उन्हें मुहलत मिलेगी—सिवाय उनके जिन्होंने इसके बाद तौबा कर ली और सुधार कर लिया, तो अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। जो लोग ईमान लाने के बाद सत्य का इनकार करें, फिर इनकार में बढ़ते चले जाएँ—उनकी तौबा हरगिज़ क़बूल न होगी: और वही भटके हुए हैं। जो लोग सत्य का इनकार करें और इनकार ही की हालत में मर जाएँ—उनमें से किसी से ज़मीन भर सोना भी क़बूल

न किया जाएगा, चाहे वह उसे फ़िदये में देना चाहे। उनके लिए दुखद यातना है, और उनका कोई मददगार न होगा। तुम सच्ची नेकी को हरगिज़ नहीं पहुँच सकते जब तक उसमें से ख़र्च न करो जो तुम्हें प्रिय है; और जो कुछ भी तुम ख़र्च करोगे, अल्लाह उसे ख़ूब जानता है। (84–92)

खाने की सारी चीज़ें इसराईल की सन्तान के लिए हलाल थीं, सिवाय उसके जो इसराईल ने तौरात के उतरने से पहले अपने ऊपर हराम कर ली थी। कह दो, "तौरात लाओ और उसे पढ़कर सुनाओ, अगर तुम सच्चे हो।" फिर इसके बाद भी जो अल्लाह पर झूठ गढ़ें—वही ज़ालिम हैं। कह दो, "अल्लाह ने सच कहा है। तो इबराहीम के दीन की पैरवी करो, जो एकनिष्ठ था; और वह अल्लाह के साथ साझी ठहराने वालों में से न था।" निस्संदेह पहला घर जो लोगों के लिए ठहराया गया वही है जो बक्का में है, बरकत वाला और सारे संसारों के लिए मार्गदर्शन। उसमें खुली निशानियाँ हैं—इबराहीम के खड़े होने की जगह—और जो उसमें दाख़िल हो गया वह अमन में आ गया। और लोगों पर अल्लाह का यह हक़ है कि जो उस तक पहुँचने की राह पा सके वह इस घर का हज करे। और जो इनकार करे—तो अल्लाह सारे संसारों से निस्पृह है। कह दो, "ऐ किताब वालो, तुम अल्लाह की आयतों का इनकार क्यों करते हो, जबकि अल्लाह उस सब का गवाह है जो तुम करते हो?" कह दो, "ऐ किताब वालो, तुम ईमान लाने वालों को अल्लाह की राह से क्यों रोकते हो, उसमें टेढ़ तलाश करते हुए, जबकि तुम ख़ुद उसकी सच्चाई के गवाह हो? और अल्लाह उससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो।" (93–99)

ऐ ईमान लाने वालो, अगर तुमने उन लोगों के एक गिरोह की बात मानी जिन्हें किताब दी गई थी, तो वे तुम्हारे ईमान के बाद तुम्हें फिर से इनकारी बना देंगे। और तुम सत्य का इनकार कैसे कर सकते हो, जबकि तुम्हें अल्लाह की आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं और उसका रसूल तुम्हारे बीच मौजूद है? और जो अल्लाह को मज़बूती से थाम ले उसे सीधे मार्ग की राह दिखा दी गई। ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह के प्रति वैसे सचेत रहो जैसा उसका हक़ है, और तुम्हें मौत न आए मगर इस हाल में कि तुम उसके आज्ञाकारी हो। और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो, और बिखर न जाओ। और अल्लाह के उस अनुग्रह को याद करो जो तुम पर हुआ: जब तुम एक-दूसरे के दुश्मन थे तो उसने तुम्हारे दिलों को जोड़ दिया, और उसके अनुग्रह से तुम भाई-भाई हो गए; और तुम आग के एक गढ़े के किनारे पर थे तो उसने तुम्हें उससे बचा लिया। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोलकर बयान करता है, ताकि तुम राह पाओ। और तुममें एक ऐसा समुदाय होना चाहिए जो भलाई की ओर बुलाए, नेकी का हुक्म दे और बुराई से रोके: यही लोग सफल होने वाले हैं। और उन लोगों की तरह न हो जाना जो खुली निशानियाँ आ जाने के बाद बिखर गए और मतभेद में पड़ गए; उनके लिए बड़ी यातना है, उस दिन जब कुछ चेहरे उजले होंगे और कुछ चेहरे काले पड़ जाएँगे। तो जिनके चेहरे काले पड़ जाएँगे: "क्या तुमने अपने ईमान के बाद सत्य का इनकार किया? तो अब अपने इनकार के बदले यातना चखो।" और जिनके चेहरे उजले होंगे, वे अल्लाह की दयालुता में होंगे, उसमें सदैव रहेंगे। ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हें ठीक-ठीक पढ़कर सुना रहे हैं;

और अल्लाह संसार वालों पर कोई ज़ुल्म नहीं चाहता। आसमानों में जो कुछ है और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह ही का है, और सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटाए जाते हैं। (100–109)

तुम सबसे अच्छा समुदाय हो जिसे लोगों के लिए निकाला गया है: तुम नेकी का हुक्म देते हो, बुराई से रोकते हो, और अल्लाह पर ईमान रखते हो। और अगर किताब वाले ईमान लाते, तो उनके लिए बेहतर होता; उनमें कुछ ईमान वाले भी हैं, मगर उनमें से अधिकतर अवज्ञाकारी हैं। वे थोड़ा-सा सताने के सिवा तुम्हारा कुछ न बिगाड़ सकेंगे; और अगर वे तुमसे लड़ेंगे तो तुम्हें पीठ दिखाएँगे, फिर उन्हें मदद न मिलेगी। वे जहाँ कहीं भी पाए गए उन पर ज़िल्लत थोप दी गई, सिवाय इसके कि अल्लाह की ओर से कोई सहारा हो और लोगों की ओर से कोई सहारा। वे अल्लाह का प्रकोप लेकर लौटे, और उन पर बदहाली थोप दी गई: यह इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों का इनकार करते और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते थे; यह इसलिए कि उन्होंने अवज्ञा की और हद से बढ़ते रहे। वे सब एक जैसे नहीं: किताब वालों में एक सीधी राह पर क़ायम समुदाय भी है जो रात की घड़ियों में अल्लाह की आयतें पढ़ता है, और वे सजदे करते हैं। वे अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हैं, नेकी का हुक्म देते और बुराई से रोकते हैं, और भले कामों में लपकते हैं: और यही नेक लोगों में से हैं। और जो भलाई भी वे करेंगे, उसकी नाक़द्री न की जाएगी; और अल्लाह उन्हें ख़ूब जानता है जो उसके प्रति सचेत रहते हैं। (110–115)

रहे वे लोग जो सत्य का इनकार करते हैं, तो अल्लाह के मुक़ाबले में न उनके माल उनके कुछ काम आएँगे, न उनकी सन्तान: और वही आग वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे। जो कुछ वे इस दुनिया की ज़िन्दगी में ख़र्च करते हैं उसकी मिसाल उस हवा जैसी है जिसमें कड़ाके का पाला हो: वह उन लोगों की खेती पर चले जिन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया है, और उसे तबाह कर दे। अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया; बल्कि वे ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं। (116–117)

ऐ ईमान लाने वालो, अपनों को छोड़कर दूसरों को अपना राज़दार न बनाओ: वे तुम्हें बरबाद करने में कोई कसर उठा न रखेंगे, और वे चाहते हैं कि तुम तकलीफ़ में पड़ो। बैर उनके मुँह से ज़ाहिर हो चुका है, और जो कुछ उनके सीने छिपाए हुए हैं वह इससे भी बढ़कर है। हमने तुम्हारे लिए आयतें खोलकर बयान कर दी हैं, अगर तुम बुद्धि से काम लो। तुम्हीं हो कि उनसे प्रेम करते हो जबकि वे तुमसे प्रेम नहीं करते, हालाँकि तुम पूरी किताब पर ईमान रखते हो। जब वे तुमसे मिलते हैं तो कहते हैं, “हम ईमान लाए,” और जब अकेले होते हैं तो तुम पर ग़ुस्से के मारे अपनी उँगलियों के पोर चबाते हैं। कह दो, “अपने ग़ुस्से में मर जाओ!” निस्संदेह अल्लाह दिलों की बात ख़ूब जानता है। अगर तुम्हें कोई भलाई पहुँचती है तो उन्हें बुरी लगती है; और अगर तुम पर कोई मुसीबत आती है तो वे इससे ख़ुश होते हैं। मगर अगर तुम धैर्य रखो और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, तो उनकी चाल तुम्हारा कुछ न बिगाड़ सकेगी: जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसे घेरे हुए है। (118–120)

ऐ नबी, याद करो जब तुम सुबह-सवेरे अपने घर से निकले थे कि ईमान वालों को लड़ाई के मोर्चों पर बिठाओ—और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है—जब तुममें से दो गिरोह हिम्मत हारने को थे, हालाँकि अल्लाह उनका संरक्षक था; और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। और अल्लाह बद्र में तुम्हारी मदद कर चुका था, जबकि तुम बहुत कमज़ोर थे; तो अल्लाह के प्रति सचेत रहो, ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। जब तुम ईमान वालों से कह रहे थे, "क्या तुम्हारे लिए यह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तीन हज़ार फ़रिश्ते उतारकर तुम्हारी मदद करे?" क्यों नहीं—अगर तुम धैर्य रखो और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, और दुश्मन तुम पर अचानक टूट पड़े, तो तुम्हारा रब पाँच हज़ार निशान लगे फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा। और अल्लाह ने यह केवल इसलिए किया कि तुम्हारे लिए शुभ-सूचना हो, और ताकि इससे तुम्हारे दिलों को इत्मीनान हो—और मदद तो बस अल्लाह ही के पास से आती है, जो प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है—और ताकि वह सत्य के इनकारियों का एक बाज़ू काट दे, या उन्हें ऐसा ज़लील करे कि वे नाकाम होकर लौट जाएँ। इस मामले में तुम्हारा कोई अधिकार नहीं: चाहे वह उन पर दया-दृष्टि करे या उन्हें यातना दे, क्योंकि वे ज़ालिम हैं। आसमानों में जो कुछ है और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह ही का है: वह जिसे चाहे माफ़ करे और जिसे चाहे यातना दे। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (121–129)

ऐ ईमान लाने वालो, दुगुना-चौगुना बढ़ता हुआ सूद न खाओ; और अल्लाह के प्रति सचेत रहो ताकि तुम सफल हो। और उस आग से बचो जो सत्य के इनकारियों के लिए तैयार की गई है, और अल्लाह और रसूल की आज्ञा मानो, ताकि तुम पर दया की जाए। और दौड़ो अपने रब की क्षमा की ओर और उस जन्नत की ओर जिसका फैलाव आसमानों और ज़मीन जैसा है, जो उनके लिए तैयार की गई है जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं—जो ख़ुशहाली में भी और तंगी में भी उसकी राह में ख़र्च करते हैं, जो ग़ुस्से को पी जाते हैं और लोगों को माफ़ कर देते हैं; और अल्लाह अच्छा करने वालों को पसन्द करता है—और जो, जब कोई बेहयाई कर बैठते हैं या अपने ऊपर ज़ुल्म कर लेते हैं, तो अल्लाह को याद करते हैं और अपने गुनाहों की माफ़ी माँगते हैं—और अल्लाह के सिवा कौन है जो गुनाह माफ़ करे?—और जानते-बूझते अपने किए पर अड़े नहीं रहते। ऐसे लोगों का बदला उनके रब की ओर से क्षमा है, और ऐसे बाग़ जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जहाँ वे सदैव रहेंगे। और मेहनत करने वालों का क्या ही अच्छा बदला है! (130–136)

तुमसे पहले बहुत-से तौर-तरीक़े गुज़र चुके हैं; तो ज़मीन में चलो-फिरो और देखो कि सत्य को झुठलाने वालों का क्या अंजाम हुआ। यह लोगों के लिए एक साफ़ बयान है, और अल्लाह के प्रति सचेत रहने वालों के लिए मार्गदर्शन और नसीहत। और न हिम्मत हारो, न ग़म करो: तुम्हीं ग़ालिब रहोगे, अगर तुम ईमान वाले हो। अगर तुम्हें कोई ज़ख़्म लगा है, तो वैसा ही ज़ख़्म उन दूसरे लोगों को भी लग चुका है। और इन दिनों को हम लोगों के बीच फेरते रहते हैं, ताकि अल्लाह ईमान वालों को जान ले और तुममें से कुछ को गवाह बना ले—और अल्लाह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता—और ताकि अल्लाह ईमान वालों को निखार दे और सत्य के इनकारियों को मिटा दे। क्या तुमने यह समझ रखा था कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे, हालाँकि अभी

अल्लाह ने तुममें से उन्हें जाना ही नहीं जो जी-जान से जिहाद करते हैं, और न उन्हें जाना जो धैर्य रखने वाले हैं? और तुम तो मौत का सामना करने से पहले उसकी तमन्ना किया करते थे: तो अब तुमने उसे अपनी आँखों से देख लिया। (137–143)

मुहम्मद बस एक रसूल ही तो है; उससे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं। तो क्या अगर वह मर जाए या क़त्ल कर दिया जाए, तो तुम उलटे पाँव फिर जाओगे? और जो उलटे पाँव फिर जाएगा वह अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेगा, और अल्लाह शुक्रगुज़ारों को बदला देगा। कोई जान अल्लाह की अनुमति के बिना मर नहीं सकती, एक लिखे हुए समय पर। और जो दुनिया का बदला चाहेगा, हम उसे उसमें से देंगे; और जो आख़िरत का बदला चाहेगा, हम उसे उसमें से देंगे; और हम शुक्रगुज़ारों को बदला देंगे। कितने ही नबी हुए हैं जिन्होंने लड़ाई की, और उनके साथ बहुत-से अल्लाह वाले थे! तो जो कुछ उन्हें अल्लाह की राह में पेश आया उससे न उन्होंने हिम्मत हारी, न वे कमज़ोर पड़े, और न वे दबे। और अल्लाह धैर्य रखने वालों को पसन्द करता है। उन्होंने बस यही कहा, "ऐ हमारे रब, हमारे गुनाह और हमारे मामलों में हमारी ज़्यादतियाँ माफ़ कर दे; हमारे क़दम जमा दे, और सत्य का इनकार करने वाली क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद कर।" तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया का बदला भी दिया और आख़िरत का उत्तम बदला भी। और अल्लाह अच्छा करने वालों को पसन्द करता है। (144–148)

ऐ ईमान लाने वालो, अगर तुमने सत्य के इनकारियों की बात मानी, तो वे तुम्हें उलटे पाँव फेर देंगे, और तुम घाटे में पड़ जाओगे। नहीं: बल्कि अल्लाह तुम्हारा संरक्षक है, और वही सबसे अच्छा मददगार है। हम जल्द ही सत्य के इनकारियों के दिलों में रोब डाल देंगे, इसलिए कि उन्होंने अल्लाह के साथ उसे साझी ठहराया जिसके लिए उसने कोई प्रमाण नहीं उतारा। उनका ठिकाना आग है—और ज़ालिमों का क्या ही बुरा ठिकाना है! और अल्लाह ने तुमसे अपना वादा सच्चा कर दिखाया जब तुम उसकी अनुमति से उन्हें काट रहे थे—यहाँ तक कि तुमने हिम्मत हार दी और हुक्म के बारे में झगड़ने लगे, और नाफ़रमानी की, इसके बाद कि उसने तुम्हें वह दिखा दिया था जो तुम चाहते थे। तुममें कोई दुनिया चाहता था, और तुममें कोई आख़िरत चाहता था। फिर उसने तुम्हें उनसे फेर दिया, ताकि तुम्हें आज़माए; और अब उसने तुम्हें माफ़ कर दिया, और अल्लाह ईमान वालों पर बड़ा अनुग्रह करने वाला है। याद करो जब तुम पहाड़ी पर चढ़े चले जा रहे थे, किसी की ओर मुड़कर न देखते थे, जबकि रसूल तुम्हें पीछे से पुकार रहा था। तो उसने तुम्हें ग़म पर ग़म दिया, ताकि तुम न उस पर दुखी हो जो तुम्हारे हाथ से निकल गया और न उस पर जो तुम पर बीती। और अल्लाह तुम्हारे कामों की पूरी ख़बर रखता है। फिर उस ग़म के बाद उसने तुम पर इत्मीनान उतारा—एक ऊँघ जो तुम्हारे एक गिरोह पर छा रही थी, जबकि एक दूसरा गिरोह, जिसे बस अपनी जानों की पड़ी थी, अल्लाह के बारे में नाहक़ गुमान कर रहा था, जाहिलियत के से गुमान, वे कहते थे, "क्या इस मामले में हमारा भी कुछ अधिकार है?" कह दो, "सारा मामला अल्लाह ही के अधिकार में है।" वे अपने दिलों में वह छिपाते हैं जो तुम पर ज़ाहिर नहीं करते। कहते हैं, "अगर इस मामले में हमारा कुछ अधिकार होता, तो हम यहाँ मारे न जाते।" कह दो, "अगर तुम अपने घरों में भी होते, तो जिनका मारा जाना लिखा जा चुका था वे

अपने गिरने की जगहों की ओर निकल ही आते"—और यह इसलिए कि अल्लाह उसे परख ले जो तुम्हारे सीनों में है और उसे निखार दे जो तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह दिलों की बात ख़ूब जानता है। तुममें से जो लोग उस दिन पीठ फेर गए जब दोनों सेनाएँ आमने-सामने हुईं—उन्हें तो शैतान ही ने उनकी कुछ करतूतों के कारण फिसला दिया था; और अब अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया। निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सहनशील है। (149–155)

ऐ ईमान लाने वालो, उन लोगों की तरह न हो जाओ जो सत्य का इनकार करते हैं और अपने भाइयों के बारे में, जब वे ज़मीन में सफ़र पर निकलते हैं या लड़ाई के लिए जाते हैं, कहते हैं, "अगर वे हमारे पास रहते, तो न मरते न मारे जाते"—ताकि अल्लाह इसे उनके दिलों में हसरत का कारण बना दे। और अल्लाह ही जीवन देता और मौत देता है; और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ, या मर जाओ, तो अल्लाह की क्षमा और दयालुता उस सबसे कहीं बेहतर है जो वे जमा करते हैं। और तुम मरो या मारे जाओ, तुम अल्लाह ही के पास इकट्ठे किए जाओगे। (156–158)

ऐ नबी, यह अल्लाह की दयालुता ही थी कि तुम उनके लिए नर्म रहे। और अगर तुम कड़े मिज़ाज के और सख़्त दिल होते, तो वे तुम्हारे पास से छँट जाते। तो उन्हें माफ़ कर दो, उनके लिए क्षमा माँगो, और मामले में उनसे मशवरा करते रहो; फिर जब तुम पक्का इरादा कर लो, तो अल्लाह पर भरोसा करो। निस्संदेह अल्लाह उन्हें पसन्द करता है जो उस पर भरोसा रखते हैं। अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे, तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता; और अगर वह तुम्हें छोड़ दे, तो उसके बाद कौन है जो तुम्हारी मदद करे? और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (159–160)

किसी नबी का यह काम नहीं कि वह ग़नीमत के माल में ख़यानत करे; और जो ख़यानत करेगा वह क़ियामत के दिन अपनी ख़यानत की हुई चीज़ लेकर हाज़िर होगा। फिर हर जान को उसकी कमाई का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा, और किसी पर ज़ुल्म न होगा। क्या जो अल्लाह की प्रसन्नता के पीछे चले वह उस जैसा हो सकता है जो अल्लाह का प्रकोप लेकर लौटा, और जिसका ठिकाना जहन्नम है? और वह बहुत बुरा ठिकाना है! अल्लाह के निकट उनके अलग-अलग दर्जे हैं; और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसे देख रहा है। (161–163)

निस्संदेह अल्लाह ने ईमान वालों पर बड़ा एहसान किया कि उनके बीच उन्हीं में से एक रसूल उठाया, जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है, उन्हें पाक करता है, और उन्हें किताब और हिकमत सिखाता है; हालाँकि इससे पहले वे खुली गुमराही में थे। और यह क्या कि जब तुम पर एक मुसीबत आ पड़ी, हालाँकि तुम अपने दुश्मन को इससे दुगुनी पहुँचा चुके थे, तो तुम कहने लगे, "यह कहाँ से आ गई?" कह दो, "यह तुम्हारी अपनी ही ओर से है।" निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। और जो कुछ तुम पर उस दिन बीता जब दोनों सेनाएँ आमने-सामने हुईं वह अल्लाह की अनुमति से था, और इसलिए कि वह ईमान वालों को जान ले, और इसलिए कि वह मुनाफ़िक़ों को जान ले, जिनसे जब कहा गया, "आओ, अल्लाह की

राह में लड़ो, या कम-से-कम अपना बचाव ही करो," तो उन्होंने कहा, "अगर हमें मालूम होता कि लड़ाई होगी, तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ चलते।" उस दिन वे ईमान की अपेक्षा इनकार के ज़्यादा क़रीब थे, वे अपने मुँह से वह कहते थे जो उनके दिलों में नहीं। और अल्लाह उसे ख़ूब जानता है जो वे छिपाते हैं। (164–167)

यही वे लोग हैं जो ख़ुद तो घर बैठे रहे, और अपने भाइयों के बारे में बोले, "अगर वे हमारी बात मान लेते तो मारे न जाते।" कह दो, "तो अपने ऊपर से मौत को टाल दो, अगर तुम सच्चे हो।" और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उन्हें मुर्दा न समझो: नहीं, बल्कि वे जीवित हैं, अपने रब के पास रोज़ी पा रहे हैं, उस पर ख़ुश हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने अनुग्रह से दिया है, और उन लोगों के बारे में भी प्रसन्न हैं जो अभी उनसे नहीं मिले बल्कि पीछे रह गए हैं, कि उन्हें न कोई भय होगा, और न वे दुखी होंगे—वे अल्लाह के अनुग्रह और उसकी कृपा पर प्रसन्न हैं, और इस पर कि अल्लाह ईमान वालों का बदला अकारथ नहीं करता। जिन लोगों ने ज़ख़्म खाने के बाद भी अल्लाह और रसूल की पुकार पर लब्बैक कहा—उनमें से जिन्होंने अच्छा किया और अल्लाह के प्रति सचेत रहे उनके लिए बड़ा बदला है—वे जिनसे लोगों ने कहा, "लोग तुम्हारे ख़िलाफ़ इकट्ठे हो गए हैं, तो उनसे डरो," तो इस बात ने उनका ईमान और बढ़ा दिया, और उन्होंने कहा, "हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है: और वह क्या ही अच्छा काम बनाने वाला है।" तो वे अल्लाह के अनुग्रह और कृपा के साथ लौटे; उन्हें कोई तकलीफ़ छू तक न सकी, और वे अल्लाह की प्रसन्नता के पीछे चले। और अल्लाह बड़े अनुग्रह का मालिक है। वह तो शैतान ही है जो तुम्हें अपने साथियों से डराता है; तो उनसे न डरो, बल्कि मुझसे डरो, अगर तुम ईमान वाले हो। (168–175)

और जो लोग इनकार में दौड़-दौड़कर बढ़ते हैं वे तुम्हें दुखी न करें: वे अल्लाह का कुछ न बिगाड़ सकेंगे। अल्लाह चाहता है कि आख़िरत में उनके लिए कोई हिस्सा न रखे; और उनके लिए बड़ी यातना है। जिन्होंने ईमान के बदले इनकार ख़रीद लिया वे अल्लाह का कुछ न बिगाड़ सकेंगे; और उनके लिए दुखद यातना है। और सत्य के इनकारी यह न समझें कि हम जो उन्हें ढील दे रहे हैं वह उनके लिए अच्छी है: हम तो उन्हें बस इसलिए ढील दे रहे हैं कि वे गुनाह में और बढ़ जाएँ। और उनके लिए अपमानजनक यातना है। अल्लाह ऐसा नहीं कि ईमान वालों को उसी हालत में छोड़ दे जिसमें तुम हो, जब तक कि वह नापाक को पाक से अलग न कर दे; और अल्लाह ऐसा भी नहीं कि तुम्हें परोक्ष की ख़बर दे दे। बल्कि अल्लाह अपने रसूलों में से जिसे चाहता है इसके लिए चुन लेता है। तो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ: और अगर तुम ईमान लाओगे और अल्लाह के प्रति सचेत रहोगे, तो तुम्हारे लिए बड़ा बदला है। और जो लोग उस चीज़ में कंजूसी करते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने अनुग्रह से दी है, वे यह न समझें कि यह उनके लिए अच्छा है; नहीं, बल्कि यह उनके लिए बुरा है। जिस चीज़ में उन्होंने कंजूसी की वही क़ियामत के दिन उनके गले का तौक़ बना दी जाएगी। और आसमानों और ज़मीन की विरासत अल्लाह ही की है; और अल्लाह तुम्हारे कामों की पूरी ख़बर रखता है। (176–180)

अल्लाह ने उन लोगों की बात सुन ली जिन्होंने कहा, "अल्लाह मुहताज है और हम मालदार हैं।" हम लिख रखेंगे जो कुछ उन्होंने कहा, और उनका नबियों को नाहक़ क़त्ल करना भी, और हम कहेंगे, "जलती आग

की यातना चखो! यह उसका बदला है जो तुम्हारे अपने हाथों ने आगे भेजा—और अल्लाह अपने बन्दों पर हरगिज़ ज़ुल्म करने वाला नहीं।" यही वे लोग हैं जो कहते हैं, "अल्लाह ने हमसे अहद लिया है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएँ जब तक वह हमारे सामने ऐसी क़ुरबानी न लाए जिसे आग खा जाए।" कह दो, "मुझसे पहले तुम्हारे पास रसूल खुली निशानियाँ लेकर आ चुके, और वह चीज़ भी जिसकी तुम बात करते हो; फिर तुमने उन्हें क्यों क़त्ल किया, अगर तुम सच्चे हो?" फिर ऐ नबी, अगर वे तुम्हें झुठलाते हैं, तो तुमसे पहले भी रसूल झुठलाए जा चुके हैं, जो खुली निशानियाँ, सहीफ़े और रौशन किताब लेकर आए थे। हर जान को मौत का मज़ा चखना है, और तुम्हें तुम्हारे बदले पूरे-पूरे क़ियामत के दिन ही दिए जाएँगे। तो जो आग से दूर हटा लिया गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया वही सचमुच कामयाब हुआ; और दुनिया की ज़िन्दगी तो बस धोखे का सामान है। तुम अपने मालों और अपनी जानों में ज़रूर आज़माए जाओगे, और तुम उनसे जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई और उनसे जो अल्लाह के साथ साझी ठहराते हैं बहुत-सी दिल दुखाने वाली बातें ज़रूर सुनोगे। और अगर तुम धैर्य रखो और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, तो निश्चय ही यह बड़े हौसले का काम है। (181–186)

और जब अल्लाह ने उन लोगों से वचन लिया जिन्हें किताब दी गई थी: "तुम इसे लोगों के सामने ज़रूर खोलकर बयान करोगे और इसे छिपाओगे नहीं।" मगर उन्होंने उसे पीठ पीछे फेंक दिया और उसके बदले थोड़ा-सा दाम ले लिया—तो कितना बुरा सौदा है जो वे कर रहे हैं! जो लोग अपने किए पर इतराते हैं, और चाहते हैं कि जो उन्होंने नहीं किया उस पर भी उनकी तारीफ़ हो—तुम हरगिज़ यह न समझना कि वे यातना से बच निकलेंगे: उनके लिए दुखद यातना है। (187–188)

आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है; और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। निस्संदेह आसमानों और ज़मीन की रचना में, और रात और दिन के अदल-बदलकर आने में, बुद्धि वालों के लिए निशानियाँ हैं—जो खड़े, बैठे और अपनी करवटों पर लेटे अल्लाह को याद करते हैं, और आसमानों और ज़मीन की रचना पर सोच-विचार करते हैं: "ऐ हमारे रब, तूने यह सब बेमक़सद नहीं बनाया। तू पाक है! तो हमें आग की यातना से बचा ले।" "ऐ हमारे रब, जिसे तूने आग में दाख़िल किया उसे तूने सचमुच रुसवा कर दिया; और ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा। ऐ हमारे रब, हमने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की ओर बुलाता था, 'अपने रब पर ईमान लाओ,' तो हम ईमान ले आए। ऐ हमारे रब, हमारे गुनाह माफ़ कर दे, हमारी बुराइयाँ हमसे दूर कर दे, और हमें नेक लोगों के साथ मौत दे। ऐ हमारे रब, हमें वह दे जिसका वादा तूने अपने रसूलों के ज़रिये हमसे किया है, और क़ियामत के दिन हमें रुसवा न कर: निस्संदेह तू अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता।" तो उनके रब ने उनकी दुआ क़बूल की: "मैं तुममें से किसी काम करने वाले का काम अकारथ नहीं करूँगा, पुरुष हो या स्त्री—तुम सब एक-दूसरे से हो। तो जिन्होंने हिजरत की और अपने घरों से निकाले गए, और मेरी राह में सताए गए, और लड़े और मारे गए—मैं ज़रूर उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर दूँगा और उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं: यह अल्लाह की ओर से बदला है, और सबसे अच्छा बदला अल्लाह ही के पास है।" (189–195)

ऐ नबी, सत्य के इनकारियों की देश-देश की चलत-फिरत तुम्हें धोखे में न डाले: यह थोड़ा-सा फ़ायदा है, फिर उनका ठिकाना जहन्नम है—और वह बहुत बुरा बिछौना है! मगर जो अपने रब के प्रति सचेत रहे उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जहाँ वे सदैव रहेंगे: यह अल्लाह की ओर से मेहमानी है; और जो अल्लाह के पास है वही नेक लोगों के लिए सबसे अच्छा है। (196–198)

और किताब वालों में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं, और उस पर जो तुम्हारी ओर उतारा गया, और उस पर जो उनकी ओर उतारा गया था, अल्लाह के आगे झुके हुए: वे अल्लाह की आयतों को थोड़े-से दाम पर नहीं बेचते। उनका बदला उनके रब के पास है; निस्संदेह अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। ऐ ईमान लाने वालो, धैर्य रखो, धैर्य में दूसरों से आगे बढ़ो, मोर्चे पर जमे रहो, और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, ताकि तुम सफल हो। (199–200)

# 4. औरतें (अन-निसा)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ऐ लोगो, अपने रब के प्रति सचेत रहो, जिसने तुम्हें एक ही जान से पैदा किया, और उसी से उसका जोड़ा पैदा किया, और उन दोनों से बहुत-से पुरुष और स्त्रियाँ फैला दीं। और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, जिसके नाम पर तुम एक-दूसरे से अपने हक़ माँगते हो, और नाते-रिश्तों का भी ध्यान रखो: निस्संदेह अल्लाह तुम पर निगरानी रखे हुए है।[6] (1)

अनाथों को उनके माल दे दो; अच्छे के बदले बुरा न बदलो, और उनके माल अपने माल के साथ मिलाकर न खा जाओ—निश्चय ही यह बड़ा गुनाह है। और अगर तुम्हें डर हो कि अनाथ लड़कियों के मामले में न्याय न कर सकोगे, तो दूसरी स्त्रियों में से जो तुम्हें भली लगें उनसे निकाह कर लो, दो-दो, तीन-तीन, या चार-चार; फिर अगर तुम्हें डर हो कि उनके बीच न्याय न कर सकोगे, तो बस एक ही, या फिर दासियाँ। यह इसके ज़्यादा क़रीब है कि तुम अन्याय से बचे रहो। और स्त्रियों को उनके महर ख़ुशदिली से भेंट के तौर पर दो; फिर अगर वे अपनी ख़ुशी से उसमें से कुछ तुम्हारे लिए छोड़ दें, तो उसे मज़े से और निश्चिंत होकर खाओ। (2–4)

और कम-समझ लोगों को वह माल न सौंपो जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए गुज़ारे का ज़रिया बनाया है; हाँ, उसमें से उन्हें खिलाओ, पहनाओ, और उनसे भली बात कहो। और अनाथों को परखते रहो, यहाँ तक कि वे निकाह की उम्र को पहुँच जाएँ; फिर अगर तुम उनमें सूझ-बूझ पाओ, तो उनके माल उनके हवाले कर दो। और इस डर से कि वे बड़े हो जाएँगे, उसे फ़ुज़ूलख़र्ची से और जल्दी-जल्दी न खा जाओ। और जो सरपरस्त मालदार हो वह उसमें से कुछ लेने से बचा रहे, और जो ग़रीब हो वह भले तरीक़े से जितना उचित हो खा सकता है। फिर जब तुम उनके माल उनके हवाले करो, तो उनके सामने गवाह बना लो—और हिसाब लेने के लिए अल्लाह ही काफ़ी है। (5–6)

पुरुषों के लिए उस माल में हिस्सा है जो माँ-बाप और क़रीबी नातेदार छोड़ जाएँ, और स्त्रियों के लिए भी उस माल में हिस्सा है जो माँ-बाप और क़रीबी नातेदार छोड़ जाएँ, वह थोड़ा हो या बहुत: एक ठहराया हुआ हिस्सा। और जब बँटवारे के समय दूसरे नातेदार, अनाथ और मुहताज मौजूद हों, तो उसमें से उन्हें भी कुछ दो और उनसे भली बात कहो। और लोगों को डरना चाहिए कि अगर वे अपने पीछे बेबस सन्तान छोड़ते, तो उन्हें उनके बारे में कैसा डर होता, वैसा ही डर वे दूसरों के बारे में भी रखें: तो उन्हें चाहिए कि अल्लाह के

[6] यह क़ुरआन की एक बुनियादी आयत है जो निकाह, यानी मुस्लिम विवाह, के समय हमेशा पढ़ी जाती है। इस आयत में निर्देशित विकास (गाइडेड इवोल्यूशन) की ओर एक बारीक मगर बड़ा असरदार इशारा है। बाइबिल के इस दावे के उलट कि हव्वा आदम की पसली से बनीं, क़ुरआन कहता है कि पहला जोड़ा एक मादा से निकला, जो उस समय की ओर इशारा है जब शुरुआती विकास में पहली बार लैंगिक प्रजनन सामने आया।

प्रति सचेत रहें और सीधी-सच्ची बात कहें। जो लोग अनाथों का माल नाहक़ खाते हैं वे अपने पेटों में बस आग भरते हैं; और वे जल्द ही दहकती ज्वाला में झोंके जाएँगे। (7–10)

अल्लाह तुम्हारी सन्तान के बारे में तुम्हें हिदायत करता है: लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के हिस्से के बराबर है। फिर अगर केवल लड़कियाँ हों, दो या दो से ज़्यादा, तो उनके लिए मरने वाले के छोड़े हुए का दो-तिहाई है; और अगर एक ही हो, तो उसके लिए आधा है। और मरने वाले के माँ-बाप में से हर एक के लिए उसके छोड़े हुए का छठा हिस्सा है अगर उसकी कोई सन्तान हो; और अगर उसकी कोई सन्तान न हो और उसके माँ-बाप ही उसके वारिस हों, तो उसकी माँ के लिए एक-तिहाई है; और अगर उसके भाई-बहन हों, तो उसकी माँ के लिए छठा हिस्सा है—यह सब उस वसीयत के बाद जो वह कर गया हो, या क़र्ज़ के बाद। तुम्हारे माँ-बाप और तुम्हारी सन्तान—तुम नहीं जानते कि उनमें से कौन फ़ायदे के लिहाज़ से तुमसे ज़्यादा क़रीब है। यह अल्लाह का ठहराया हुआ हिस्सा है; निस्संदेह अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। और जो कुछ तुम्हारी पत्नियाँ छोड़ जाएँ उसका आधा तुम्हारे लिए है अगर उनकी कोई सन्तान न हो; और अगर उनकी सन्तान हो, तो उनके छोड़े हुए का चौथाई तुम्हारा है—उस वसीयत के बाद जो वे कर गई हों, या क़र्ज़ के बाद। और जो कुछ तुम छोड़ जाओ उसका चौथाई उनके लिए है अगर तुम्हारी कोई सन्तान न हो; और अगर तुम्हारी सन्तान हो, तो तुम्हारे छोड़े हुए का आठवाँ हिस्सा उनका है—उस वसीयत के बाद जो तुम कर गए हो, या क़र्ज़ के बाद। और अगर कोई पुरुष या स्त्री ऐसा हो जिसका कोई सीधा वारिस न हो, मगर उसका एक भाई या एक बहन हो, तो दोनों में से हर एक के लिए छठा हिस्सा है; और अगर वे इससे ज़्यादा हों, तो वे एक-तिहाई में शरीक होंगे—उस वसीयत के बाद जो की गई हो, या क़र्ज़ के बाद, बशर्ते कि किसी को हानि न पहुँचाई जाए। यह अल्लाह की ओर से ताकीदी हुक्म है; और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, सहनशील है। ये अल्लाह की ठहराई हुई हदें हैं। और जो अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानेगा, उसे वह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जहाँ वे सदैव रहेंगे; और यही बड़ी कामयाबी है। और जो अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा और उसकी हदों से आगे बढ़ेगा, उसे वह आग में दाख़िल करेगा, जहाँ वह सदैव रहेगा; और उसके लिए अपमानजनक यातना है। (11–14)

और तुम्हारी स्त्रियों में से जो बेहयाई का काम करें, उन पर अपने में से चार गवाह लाओ; फिर अगर वे गवाही दे दें, तो उन्हें घरों में रोके रखो यहाँ तक कि मौत उन्हें उठा ले या अल्लाह उनके लिए कोई राह निकाल दे। और तुममें से जो दो यह काम करें, उन दोनों को सज़ा दो; फिर अगर वे तौबा कर लें और अपने-आप को सुधार लें, तो उन्हें छोड़ दो। निस्संदेह अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला, सदा दयावान है। अल्लाह के ज़िम्मे तौबा क़बूल करना बस उन्हीं के लिए है जो नादानी में बुराई कर बैठते हैं, फिर जल्द ही तौबा कर लेते हैं; ऐसे लोगों पर अल्लाह दया-दृष्टि करता है। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। मगर तौबा उनकी नहीं जो बुराइयाँ करते चले जाते हैं, यहाँ तक कि जब उनमें से किसी के सामने मौत आ खड़ी होती है, तो वह कहता है, “अब मैंने तौबा की,” और न उनकी जो सत्य का इनकार करते हुए मर जाते हैं: उनके लिए हमने दुखद यातना तैयार कर रखी है। (15–18)

ऐ ईमान लाने वालो, तुम्हारे लिए यह हलाल नहीं कि ज़बरदस्ती स्त्रियों के वारिस बन बैठो; और उन्हें इसलिए न तंग करो कि जो कुछ तुमने उन्हें दिया है उसका कुछ हिस्सा वापस ले लो, सिवाय इसके कि वे कोई खुली बेहयाई कर बैठें। और उनके साथ भले तरीक़े से रहो-सहो; फिर अगर वे तुम्हें नापसन्द हों, तो हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें नापसन्द हो और अल्लाह ने उसी में बहुत-सी भलाई रख दी हो। और अगर तुम एक पत्नी की जगह दूसरी पत्नी लाना चाहो, और उनमें से एक को तुम ढेर-सा माल दे चुके हो, तो उसमें से कुछ भी वापस न लो। क्या तुम उसे बुहतान लगाकर और खुला गुनाह करके लोगे? और तुम उसे कैसे ले सकते हो, जबकि तुम एक-दूसरे से मिल चुके हो और वे तुमसे पक्का वचन ले चुकी हैं? (19–21)

और उन स्त्रियों से निकाह न करो जिनसे तुम्हारे बाप निकाह कर चुके हों—मगर जो पहले हो चुका सो हो चुका: निस्संदेह यह बेहयाई थी, घिनौनी बात, और बुरी राह। तुम पर हराम की गई हैं तुम्हारी माएँ, तुम्हारी बेटियाँ, तुम्हारी बहनें, तुम्हारी फूफियाँ, तुम्हारी ख़ालाएँ, भतीजियाँ, भांजियाँ, तुम्हारी वे माएँ जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया, तुम्हारी दूध-शरीक बहनें, तुम्हारी पत्नियों की माएँ, और तुम्हारी सौतेली बेटियाँ जो तुम्हारी सरपरस्ती में हैं और तुम्हारी उन पत्नियों से हैं जिनसे तुम सोहबत कर चुके हो—हाँ, अगर तुमने उनसे सोहबत न की हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं—और तुम्हारे उन बेटों की पत्नियाँ जो तुम्हारी अपनी पीठ से हैं; और यह भी हराम है कि तुम दो बहनों को एक साथ जमा करो, मगर जो पहले हो चुका सो हो चुका। निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। और शादीशुदा स्त्रियाँ भी हराम हैं, सिवाय उनके जो तुम्हारी दासियाँ हों: यह तुम पर अल्लाह का लिखा हुआ हुक्म है। और इनके सिवा बाक़ी सब तुम्हारे लिए हलाल हैं, बशर्ते कि तुम अपने माल के ज़रिये उन्हें निकाह के बन्धन में लाना चाहो, बदकारी के लिए नहीं। फिर उनसे जो फ़ायदा तुमने उठाया है, उसके बदले उनके ठहराए हुए महर उन्हें अदा करो; और महर ठहर जाने के बाद तुम आपस की रज़ामन्दी से जो कुछ तय कर लो उसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। (22–24)

और तुममें से जिसे इतनी सामर्थ्य न हो कि आज़ाद ईमान वाली स्त्रियों से निकाह कर सके, तो वह ईमान वाली दासियों में से किसी से निकाह कर ले। और अल्लाह तुम्हारे ईमान को ख़ूब जानता है: तुम सब एक-दूसरे से हो। तो उनके मालिकों की अनुमति से उनसे निकाह कर लो, और भले तरीक़े से उन्हें उनके महर दो, इस हाल में कि वे पाकदामन हों, न खुली बदकारी करने वाली और न चोरी-छिपे यार बनाने वाली। फिर जब वे निकाह के बन्धन में आ जाएँ, और उसके बाद कोई बेहयाई कर बैठें, तो उन पर उस सज़ा की आधी है जो आज़ाद स्त्रियों के लिए ठहराई गई है। यह तुममें से उसके लिए है जिसे गुनाह में पड़ जाने का डर हो; और यह कि तुम सब्र करो तुम्हारे लिए बेहतर है। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिए बातें खोलकर बयान कर दे, तुम्हें उन लोगों के तरीक़ों पर चलाए जो तुमसे पहले गुज़रे हैं, और तुम पर दया-दृष्टि करे: और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। और अल्लाह तो चाहता है कि तुम पर दया-दृष्टि करे, मगर जो लोग अपनी इच्छाओं के पीछे चलते हैं वे चाहते हैं कि तुम

बहुत दूर हट जाओ। अल्लाह चाहता है कि तुम्हारा बोझ हल्का कर दे, क्योंकि इनसान कमज़ोर पैदा किया गया है। (25–28)

ऐ ईमान लाने वालो, आपस में एक-दूसरे का माल नाहक़ न खाओ, हाँ आपसी रज़ामन्दी से व्यापार हो तो और बात है; और एक-दूसरे को क़त्ल न करो। निस्संदेह अल्लाह तुम पर सदा दयावान है। और जो ज़्यादती और ज़ुल्म के साथ ऐसा करेगा, उसे हम जल्द ही आग में झोंक देंगे; और यह अल्लाह के लिए आसान है। अगर तुम उन बड़े-बड़े गुनाहों से बचते रहो जिनसे तुम्हें रोका गया है, तो हम तुम्हारी छोटी बुराइयाँ तुमसे दूर कर देंगे और तुम्हें इज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे। और उस चीज़ की लालसा न करो जिसमें अल्लाह ने तुममें से कुछ को कुछ पर बढ़त दी है: पुरुषों के लिए उसमें से हिस्सा है जो उन्होंने कमाया, और स्त्रियों के लिए उसमें से हिस्सा है जो उन्होंने कमाया। और अल्लाह से उसका अनुग्रह माँगो; निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ का पूरा ज्ञान रखता है। और हर एक के लिए हमने उस माल के वारिस ठहरा दिए हैं जो माँ-बाप और क़रीबी नातेदार छोड़ जाएँ; और जिनसे तुमने क़सम खाकर अहद किया हो, उन्हें उनका हिस्सा दे दो। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ का गवाह है। (29–33)

पुरुष स्त्रियों के सरपरस्त और निगराँ हैं, उसके कारण जो अल्लाह ने एक को दूसरे से बढ़कर दिया है, और इसलिए कि वे अपने माल ख़र्च करते हैं। तो नेक स्त्रियाँ आज्ञाकारी होती हैं, और पतियों की अनुपस्थिति में उस चीज़ की हिफ़ाज़त करती हैं जिसकी हिफ़ाज़त अल्लाह चाहता है। और जिन स्त्रियों से तुम्हें सरकशी का डर हो, उन्हें समझाओ, फिर बिस्तरों में उन्हें अकेला छोड़ दो, फिर उनसे अलग हो जाओ; फिर अगर वे तुम्हारी बात मान लें, तो उनके ख़िलाफ़ कोई राह न ढूँढो। निस्संदेह अल्लाह सर्वोच्च, महान है। और अगर तुम्हें दोनों के बीच अनबन का डर हो, तो एक पंच पुरुष के घर वालों में से और एक पंच स्त्री के घर वालों में से मुक़र्रर करो; अगर वे दोनों सुलह चाहेंगे, तो अल्लाह उनके बीच मेल करा देगा। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ जानने वाला, पूरी ख़बर रखने वाला है। (34–35)

और अल्लाह की इबादत करो, और उसके साथ किसी चीज़ को साझी न ठहराओ। और भलाई करो माँ-बाप के साथ, नातेदारों के साथ, अनाथों के साथ, मुहताजों के साथ, नातेदार पड़ोसी और अजनबी पड़ोसी के साथ, पास बैठने वाले साथी के साथ, मुसाफ़िर के साथ, और अपने ग़ुलामों के साथ। निस्संदेह अल्लाह इतराने वाले और डींग मारने वाले को पसन्द नहीं करता—जो ख़ुद कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी की सीख देते हैं, और उसे छिपाते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने अनुग्रह से दिया है। और सत्य के इनकारियों के लिए हमने अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है—और वे जो अपने माल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं, और न अल्लाह पर ईमान रखते हैं न अंतिम दिन पर। और जिसका साथी शैतान हो—तो वह बहुत ही बुरा साथी है! उनका क्या बिगड़ जाता अगर वे अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाते, और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते? और अल्लाह उन्हें ख़ूब जानता है। निस्संदेह अल्लाह कण भर भी ज़ुल्म नहीं करता; और अगर कोई नेकी हो, तो उसे कई गुना कर देता है और अपने पास से बड़ा बदला देता है। फिर कैसा होगा जब हम हर समुदाय में से एक गवाह लाएँगे, और ऐ नबी, तुम्हें

इन लोगों पर गवाह बनाकर लाएँगे? उस दिन वे लोग जिन्होंने सत्य का इनकार किया और रसूल की नाफ़रमानी की, चाहेंगे कि काश ज़मीन उन पर बराबर कर दी जाए; और वे अल्लाह से कोई बात छिपा न सकेंगे। (36–42)

ऐ ईमान लाने वालो, जब तुम नशे में हो तो नमाज़ के क़रीब न जाओ, जब तक यह न जानने लगो कि तुम क्या कह रहे हो; और न नापाकी की हालत में—सिवाय इसके कि राह से गुज़र रहे हो—जब तक गुस्ल न कर लो। और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो, या तुममें से कोई शौच से आया हो, या तुमने स्त्रियों को छुआ हो, और तुम्हें पानी न मिले, तो पाक मिट्टी लो और उससे अपने चेहरों और हाथों पर मसह कर लो। निस्संदेह अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, बड़ा क्षमाशील है। (43)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया था? वे गुमराही मोल लेते हैं, और चाहते हैं कि तुम भी राह खो बैठो। और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है; और संरक्षक के रूप में अल्लाह काफ़ी है, और मददगार के रूप में भी अल्लाह काफ़ी है। यहूदियों में कुछ ऐसे हैं जो शब्दों को उनकी जगह से फेर देते हैं और कहते हैं, "हमने सुना और हम नहीं मानते," और "सुनो, तुम सुनवाए न जाओ," और "राइना"—अपनी ज़बानें मरोड़कर और दीन पर चोट करते हुए। और अगर वे कहते, "हमने सुना और हमने माना," और "सुनिए," और "उनज़ुरना," तो यह उनके लिए बेहतर और ज़्यादा ठीक होता; मगर अल्लाह ने उनके इनकार के कारण उन पर लानत की है, सो वे कम ही ईमान लाते हैं। (44–46)

ऐ वे लोगो जिन्हें किताब दी गई, उस पर ईमान लाओ जो हमने उतारा है, जो उसकी पुष्टि करता है जो तुम्हारे पास पहले से है, इससे पहले कि हम चेहरों को मिटाकर उन्हें पीछे की ओर फेर दें, या उन पर वैसे ही लानत करें जैसे हमने सब्त वालों पर लानत की थी। और अल्लाह का हुक्म पूरा होकर ही रहता है। अल्लाह इसे माफ़ नहीं करता कि उसके साथ किसी को साझी ठहराया जाए, मगर इससे नीचे का जो कुछ है वह जिसके लिए चाहता है माफ़ कर देता है। और जिसने अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराया उसने बहुत बड़ा गुनाह गढ़ा। क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपनी पाकी का दावा करते हैं? नहीं—बल्कि अल्लाह ही जिसे चाहता है पाक करता है, और उन पर खजूर की गुठली के धागे के बराबर भी ज़ुल्म न होगा। देखो, वे अल्लाह पर कैसा झूठ गढ़ते हैं; और खुले गुनाह के लिए यही काफ़ी है। क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया था? वे बुतों और झूठे उपास्यों को मानते हैं, और सत्य के इनकारियों के बारे में कहते हैं, "ये ईमान वालों से ज़्यादा सही राह पर हैं।" यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की है; और जिस पर अल्लाह लानत करे, तुम उसका कोई मददगार न पाओगे। या क्या बादशाही में उनका कोई हिस्सा है? ऐसा होता तो वे लोगों को खजूर की गुठली के गढ़े के बराबर भी न देते। या वे लोगों से उस पर जलते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने अनुग्रह से दिया है? तो हमने इबराहीम के घराने को किताब और हिकमत दी, और हमने उन्हें बड़ा राज्य दिया। फिर उनमें से कोई उस पर ईमान लाया और किसी ने उससे मुँह मोड़ लिया; और दहकती आग के रूप में जहन्नम काफ़ी है। जो लोग हमारी आयतों का इनकार करते हैं उन्हें हम जल्द ही आग में झोंक देंगे: जब-जब उनकी खालें गल जाएँगी हम उन्हें दूसरी खालों से बदल

देंगे, ताकि वे यातना का मज़ा चखते रहें। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। और जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उन्हें हम ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जहाँ वे सदैव रहेंगे; वहाँ उनके लिए पाक-साफ़ जोड़े होंगे, और हम उन्हें घनी-से-घनी छाँव में दाख़िल करेंगे। (47–57)

अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें उनके हक़दारों को लौटा दो, और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो, तो न्याय के साथ फ़ैसला करो। अल्लाह तुम्हें क्या ही अच्छी नसीहत करता है! निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है। ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह की आज्ञा मानो और रसूल की आज्ञा मानो और उनकी जो तुममें अधिकार वाले हैं। फिर अगर किसी बात में तुम्हारे बीच मतभेद हो जाए, तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर लौटाओ, अगर तुम अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हो: यही बेहतर है, और अंजाम के लिहाज़ से सबसे अच्छा। क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वे उस पर ईमान लाए जो तुम्हारी ओर उतारा गया और उस पर भी जो तुमसे पहले उतारा गया? वे चाहते हैं कि अपने झगड़े झूठे हाकिमों के पास ले जाएँ, हालाँकि उन्हें हुक्म दिया गया था कि उन्हें ठुकरा दें; और शैतान चाहता है कि उन्हें भटकाकर बहुत दूर ले जाए। और जब उनसे कहा जाता है, “आओ उसकी ओर जो अल्लाह ने उतारा है, और रसूल की ओर,” तो तुम मुनाफ़िक़ों को देखते हो कि वे तुमसे कतराकर रुक जाते हैं। फिर कैसा होगा जब उन पर उसके कारण कोई मुसीबत आ पड़ेगी जो उनके अपने हाथों ने आगे भेजा? तब वे अल्लाह की क़समें खाते हुए तुम्हारे पास आएँगे, “हमने तो बस भलाई और मेल-मिलाप ही चाहा था।” ये वे लोग हैं जिनके दिलों की बात अल्लाह जानता है; तो तुम उनसे दरगुज़र करो, उन्हें नसीहत करो, और उनसे उनके अपने बारे में दिल में उतर जाने वाली बात कहो। (58–63)

हमने जो रसूल भी भेजा इसीलिए भेजा कि अल्लाह की अनुमति से उसकी आज्ञा मानी जाए। और काश जब उन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया था, तो ऐ नबी, वे तुम्हारे पास आ जाते और अल्लाह से क्षमा माँगते, और रसूल भी उनके लिए क्षमा माँगता—तो वे अल्लाह को तौबा क़बूल करने वाला, सदा दयावान पाते। मगर नहीं, तुम्हारे रब की क़सम, वे ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक अपने आपसी झगड़ों में तुम्हें फ़ैसला करने वाला न मान लें, फिर जो फ़ैसला तुम करो उस पर अपने दिलों में कोई तंगी न पाएँ, बल्कि पूरी तरह सिर झुका दें। और अगर हम उन पर यह फ़र्ज़ कर देते, “अपनी जानें दे दो,” या, “अपने घरों से निकल जाओ,” तो उनमें से थोड़े ही ऐसा करते। और अगर वे वह करते जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है, तो यह उनके लिए बेहतर होता और ज़्यादा जमाव का कारण; और तब हम उन्हें अपने पास से बड़ा बदला देते, और उन्हें सीधे मार्ग पर चला देते। और जो अल्लाह और रसूल की आज्ञा मानेगा वह उन लोगों के साथ होगा जिन पर अल्लाह ने अनुग्रह किया: नबी, सत्यनिष्ठ, शहीद और नेक लोग—और ये क्या ही अच्छे साथी हैं! यह अल्लाह का अनुग्रह है; और जानने के लिए अल्लाह ही काफ़ी है। (64–70)

ऐ ईमान लाने वालो, अपने बचाव का सामान ले लो; फिर टुकड़ियों में निकलो, या सब इकट्ठे निकलो। और तुममें कोई ऐसा भी है जो पीछे रह जाता है; फिर अगर तुम पर कोई मुसीबत आ पड़े, तो कहता है, “अल्लाह ने मुझ पर अनुग्रह किया कि मैं उनके साथ मौजूद न था।” और अगर तुम्हें अल्लाह की ओर से कोई अनुग्रह

मिले, तो कहता है—मानो तुम्हारे और उसके बीच कोई दोस्ती थी ही नहीं—"काश मैं भी उनके साथ होता, तो बड़ी कामयाबी पा जाता!" तो जो लोग आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी बेच देते हैं उन्हें चाहिए कि अल्लाह की राह में लड़ें; और जो अल्लाह की राह में लड़े, फिर मारा जाए या विजयी हो, हम उसे बड़ा बदला देंगे। और तुम्हें क्या हुआ है कि तुम अल्लाह की राह में न लड़ो, और उन बेबस पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के लिए जो पुकारते हैं, "ऐ हमारे रब, हमें इस बस्ती से निकाल जिसके लोग ज़ालिम हैं, और अपने पास से हमारा कोई संरक्षक बना दे, और अपने पास से हमारा कोई मददगार बना दे"? जो ईमान वाले हैं वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं, और जो सत्य के इनकारी हैं वे झूठे उपास्यों की राह में लड़ते हैं। तो तुम शैतान के साथियों से लड़ो: निश्चय ही शैतान की चाल बहुत कमज़ोर है। (71–76)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनसे कहा गया था, "अपने हाथ रोके रखो, नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो"? फिर जब उन पर लड़ाई फ़र्ज़ की गई, तो उनका एक गिरोह लोगों से ऐसे डरने लगा जैसे अल्लाह से डरना चाहिए, या उससे भी बढ़कर, और वे बोले, "ऐ हमारे रब, तूने हम पर लड़ाई क्यों फ़र्ज़ कर दी? काश तू हमें थोड़ी और मुहलत देता!" कह दो, "दुनिया का फ़ायदा थोड़ा है, और जो अल्लाह के प्रति सचेत रहे उसके लिए आख़िरत बेहतर है; और तुम पर खजूर की गुठली के धागे के बराबर भी ज़ुल्म न होगा।" तुम जहाँ कहीं भी होगे, मौत तुम्हें आ पकड़ेगी, चाहे तुम ऊँचे-ऊँचे बुर्जों में ही क्यों न हो। और अगर उन्हें कोई भलाई पहुँचती है, तो कहते हैं, "यह अल्लाह की ओर से है"; और अगर उन्हें कोई बुराई पहुँचती है, तो कहते हैं, "ऐ नबी, यह तुम्हारे कारण है।" कह दो, "सब कुछ अल्लाह ही की ओर से है।" तो इन लोगों को क्या हो गया है कि कोई बात समझने के क़रीब ही नहीं आते? तुम्हें जो भलाई भी पहुँचती है वह अल्लाह की ओर से है, और जो बुराई तुम्हें पहुँचती है वह तुम्हारी अपनी ओर से है। और हमने तुम्हें लोगों के लिए रसूल बनाकर भेजा है, और गवाह के रूप में अल्लाह काफ़ी है। जिसने रसूल की आज्ञा मानी उसने अल्लाह की आज्ञा मानी; और जो मुँह फेर गया—तो हमने तुम्हें उन पर निगहबान बनाकर नहीं भेजा। और वे कहते हैं, "हम आज्ञाकारी हैं," मगर जब तुम्हारे पास से निकलते हैं तो उनका एक गिरोह रात को उसके ख़िलाफ़ मनसूबे बाँधता है जो तुम कहते हो; और अल्लाह लिख रहा है जो वे रात को मनसूबे बाँधते हैं। तो तुम उनसे दरगुज़र करो और अल्लाह पर भरोसा रखो; और काम बनाने के लिए अल्लाह काफ़ी है। (77–81)

क्या वे क़ुरआन पर सोच-विचार नहीं करते? अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की ओर से होता, तो वे इसमें बहुत-सा विरोधाभास पाते।[7] (82)

और जब उनके पास अमन या डर की कोई बात पहुँचती है, तो वे उसे फैला देते हैं; हालाँकि अगर वे उसे रसूल की ओर और अपने में के अधिकार वालों की ओर लौटाते, तो उनमें से जो बात की तह निकाल सकते

[7] एक बुनियादी आयत: वैज्ञानिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक या धर्मशास्त्रीय अन्तर्विरोधों से पाक शानदार क़ुरआन
क़ुरआन 3:7 और 4:82 – विज्ञान, दर्शन और धर्मशास्त्र की रौशनी में एक समग्र व्याख्या
क़ुरआन 4:82 पर चिन्तन – ईश्वरीय सुसंगति का मनोविज्ञान, दर्शन और धर्मशास्त्र

हैं वे उसे जान लेते। और अगर तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और उसकी दयालुता न होती, तो थोड़े-से लोगों के सिवा तुम सब शैतान के पीछे हो लेते। (83)

तो ऐ नबी, अल्लाह की राह में लड़ो; तुम पर अपनी जान के सिवा किसी की ज़िम्मेदारी नहीं। और ईमान वालों को उभारो: हो सकता है कि अल्लाह सत्य के इनकारियों का ज़ोर रोक दे। और अल्लाह ज़ोर में सबसे बढ़कर है, और सज़ा देने में भी सबसे कड़ा। (84)

जो भली बात की सिफ़ारिश करेगा उसे उसमें से हिस्सा मिलेगा, और जो बुरी बात की सिफ़ारिश करेगा वह उसमें से बोझ उठाएगा; और अल्लाह हर चीज़ पर निगाह रखे हुए है। और जब तुम्हें सलाम किया जाए, तो उससे बेहतर सलाम करो, या वैसा ही लौटा दो; निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है।[8] (85–86)

अल्लाह: उसके सिवा कोई इलाह नहीं। वह तुम्हें क़ियामत के दिन के लिए ज़रूर इकट्ठा करेगा, जिसमें कोई सन्देह नहीं; और अल्लाह से बढ़कर सच्ची बात किसकी हो सकती है? (87)

तो तुम्हें क्या हुआ है कि मुनाफ़िक़ों के बारे में दो गिरोह हो गए हो, हालाँकि अल्लाह ने उनकी करतूतों के कारण उन्हें उलटा इनकार में फेर दिया है? क्या तुम चाहते हो कि उसे राह पर ले आओ जिसे अल्लाह ने भटकने दिया? और जिसे अल्लाह भटकने दे, तुम उसके लिए हरगिज़ कोई राह न पाओगे। वे तो चाहते हैं कि जैसे उन्होंने सत्य का इनकार किया वैसे ही तुम भी इनकार करो, ताकि तुम सब बराबर हो जाओ। तो उनमें से किसी को दोस्त न बनाओ जब तक वे अल्लाह की राह में हिजरत न करें; फिर अगर वे फिर जाएँ, तो उन्हें पकड़ो और जहाँ पाओ क़त्ल करो, और उनमें से किसी को न दोस्त बनाओ न मददगार—सिवाय उनके जो किसी ऐसी क़ौम से जा मिलें जिसके साथ तुम्हारा समझौता है, या जो तुम्हारे पास इस हाल में आएँ कि उनके दिल तुमसे लड़ने या अपनी क़ौम से लड़ने से तंग हो चुके हों। और अगर अल्लाह चाहता, तो उन्हें तुम पर हावी कर देता, फिर वे तुमसे लड़ते। तो अगर वे तुमसे किनारा कर लें और तुमसे न लड़ें, और तुम्हारी ओर सुलह का हाथ बढ़ाएँ, तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए उनके ख़िलाफ़ कोई राह नहीं रखी। तुम कुछ और लोग ऐसे पाओगे जो चाहते हैं कि तुमसे भी अमन में रहें और अपनी क़ौम से भी अमन में रहें; जब कभी उन्हें फ़ितने की ओर लौटाया जाता है तो वे उसमें औंधे जा गिरते हैं। तो अगर वे तुमसे किनारा न करें, और न तुम्हारी ओर सुलह का हाथ बढ़ाएँ, और न अपने हाथ रोकें, तो उन्हें पकड़ो और जहाँ उनसे सामना हो क़त्ल करो: ऐसे लोगों के ख़िलाफ़ हमने तुम्हें खुला अधिकार दे दिया है। (88–91)

किसी ईमान वाले का यह काम नहीं कि किसी ईमान वाले को क़त्ल करे, सिवाय इसके कि चूक से हो जाए। और जो किसी ईमान वाले को चूक से क़त्ल कर दे, तो उसे एक ईमान वाला ग़ुलाम आज़ाद करना होगा और

[8] ये बुनियादी आयतें ईमान वालों में दिल की उदारता पैदा करती हैं, क्योंकि उन्हें पक्का यक़ीन होता है कि उनका छोटे से छोटा नेक काम भी बेकार नहीं जा रहा। ये सब लिखे जा रहे हैं और इनका बदला दिया जाएगा। इसी तरह हमें सावधान रहना और गुनाह से बचना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि हम दोषी ठहराए जाएँ।

मारे गए के घर वालों को ख़ून-बहा देना होगा, सिवाय इसके कि वे उसे सदक़ा करके छोड़ दें। फिर अगर मारा गया व्यक्ति ईमान वाला था मगर उस क़ौम में से था जो तुम्हारी दुश्मन है, तो एक ईमान वाला गुलाम आज़ाद करना है; और अगर वह उस क़ौम में से था जिसके साथ तुम्हारा समझौता है, तो उसके घर वालों को ख़ून-बहा दिया जाए और एक ईमान वाला ग़ुलाम आज़ाद किया जाए। फिर जिसे इसकी सामर्थ्य न हो वह लगातार दो महीने के रोज़े रखे: यह अल्लाह की ओर से तौबा का तरीक़ा है। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। और जो किसी ईमान वाले को जान-बूझकर क़त्ल करे, उसका बदला जहन्नम है, जिसमें वह सदैव रहेगा: उस पर अल्लाह का प्रकोप और उसकी लानत है, और उसने उसके लिए बड़ी यातना तैयार कर रखी है। ऐ ईमान लाने वालो, जब तुम अल्लाह की राह में निकलो, तो अच्छी तरह जाँच-परख कर लिया करो, और जो तुम्हें सलाम पेश करे उससे यह न कहो, "तू ईमान वाला नहीं," इस चाह में कि दुनिया की ज़िन्दगी का सामान हाथ लगे—अल्लाह के पास तो बहुत-सी ग़नीमतें हैं। पहले तुम ख़ुद भी ऐसे ही थे, फिर अल्लाह ने तुम पर एहसान किया; तो अच्छी तरह जाँच-परख कर लिया करो। निस्संदेह अल्लाह तुम्हारे कामों की पूरी ख़बर रखता है। (92–94)

ईमान वालों में से वे जो घर बैठे रहें—सिवाय उनके जिन्हें कोई मजबूर कर देने वाली तकलीफ़ हो—उनके बराबर नहीं हो सकते जो अपने मालों और अपनी जानों से अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं। अल्लाह ने अपने मालों और जानों से जिहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर एक दर्जा बढ़ाया है। और हर एक से अल्लाह ने सबसे अच्छे बदले का वादा किया है; मगर अल्लाह ने जिहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर बड़े बदले के साथ बढ़त दी है—उसकी ओर से सम्मान के दर्जे, और क्षमा और दयालुता। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (95–96)

जिन लोगों की जानें फ़रिश्ते इस हाल में निकालते हैं कि वे अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे थे, उनसे वे पूछेंगे, "तुम किस हाल में थे?" वे कहेंगे, "हम ज़मीन में दबे हुए बेबस थे।" वे कहेंगे, "क्या अल्लाह की ज़मीन इतनी कुशादा न थी कि तुम उसमें हिजरत कर जाते?" तो ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है—और वह बहुत बुरा ठिकाना है!—सिवाय उन सचमुच बेबस पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के जिनके पास न कोई उपाय है और न वे कोई राह पाते हैं; तो उम्मीद है कि अल्लाह इन्हें माफ़ कर देगा: और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, बड़ा क्षमाशील है। और जो अल्लाह की राह में हिजरत करेगा वह ज़मीन में पनाह की बहुत-सी जगहें और बड़ी कुशादगी पाएगा। और जो अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल की ओर हिजरत करके निकले, फिर उसे मौत आ पकड़े, तो उसका बदला अल्लाह के ज़िम्मे पक्का हो गया; और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (97–100)

और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो, तो तुम पर कोई गुनाह नहीं कि नमाज़ छोटी कर लो, अगर तुम्हें डर हो कि सत्य के इनकारी तुम पर हमला कर देंगे: निस्संदेह सत्य के इनकारी तुम्हारे खुले दुश्मन हैं। और ऐ नबी, जब तुम उनके बीच हो और उन्हें नमाज़ पढ़ाओ, तो उनका एक गिरोह तुम्हारे साथ खड़ा हो, अपने हथियार लिए हुए। फिर जब वे सजदा कर चुकें, तो पीछे हट जाएँ और दूसरा गिरोह, जिसने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी,

आगे आए और तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़े, अपने बचाव का सामान और अपने हथियार लिए हुए। सत्य के इनकारी चाहते हैं कि तुम अपने हथियारों और अपने सामान से ग़ाफ़िल हो जाओ, तो वे तुम पर एक ही बार में टूट पड़ें। और तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर बारिश के कारण तुम्हें तकलीफ़ हो या तुम बीमार हो तो अपने हथियार उतार रखो; मगर अपने बचाव का सामान लिए रहो। निस्संदेह अल्लाह ने सत्य के इनकारियों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है। फिर जब तुम नमाज़ पूरी कर चुको, तो खड़े, बैठे और करवटों पर लेटे अल्लाह को याद करते रहो। फिर जब तुम्हें इत्मीनान हो जाए, तो नमाज़ पूरी तरह क़ायम करो: निस्संदेह नमाज़ ईमान वालों पर ठहराए हुए समयों में फ़र्ज़ है। और दुश्मन का पीछा करने में हिम्मत न हारो: अगर तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती है, तो उन्हें भी वैसी ही तकलीफ़ पहुँचती है जैसी तुम्हें, और तुम अल्लाह से उस चीज़ की उम्मीद रखते हो जिसकी उम्मीद वे नहीं रखते। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। (101–104)

ऐ नबी, हमने तुम्हारी ओर सत्य के साथ किताब उतारी है, ताकि तुम लोगों के बीच उसके मुताबिक़ फ़ैसला करो जो अल्लाह ने तुम्हें दिखाया है; तो तुम ख़यानत करने वालों की ओर से झगड़ने वाले न बनो। और अल्लाह से क्षमा माँगो: निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। और उन लोगों की ओर से न झगड़ो जो अपने-आप से ख़यानत करते हैं: निस्संदेह अल्लाह किसी ऐसे को पसन्द नहीं करता जो ख़यानत करने वाला, गुनाहगार हो। वे लोगों से तो छिपते हैं, मगर अल्लाह से नहीं छिप सकते: वह उनके साथ होता है जब वे रात को ऐसी बात के मनसूबे बाँधते हैं जो उसे पसन्द नहीं; और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसे घेरे हुए है। तुम्हीं हो कि दुनिया की ज़िन्दगी में उनकी ओर से झगड़ लिए; मगर क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने उनकी ओर से कौन झगड़ेगा, या कौन उनका काम बनाने वाला होगा? और जो कोई बुराई कर बैठे या अपने ऊपर ज़ुल्म कर ले, फिर अल्लाह से क्षमा माँगे, वह अल्लाह को बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान पाएगा। और जो कोई गुनाह कमाता है वह उसे अपने ही ख़िलाफ़ कमाता है; और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। और जो कोई ख़ता या गुनाह करे, फिर उसे किसी बेगुनाह के सिर थोप दे, उसने बुहतान और खुले गुनाह का बोझ अपने ऊपर लाद लिया। (105–112)

ऐ नबी, अगर तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और उसकी दयालुता न होती, तो उनके एक गिरोह ने तो ठान ही लिया था कि तुम्हें भटका दे; मगर वे अपने सिवा किसी को नहीं भटकाते, और वे तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। और अल्लाह ने तुम पर किताब और हिकमत उतारी है, और तुम्हें वह सिखाया है जो तुम नहीं जानते थे: और तुम पर अल्लाह का अनुग्रह बहुत बड़ा है। उनकी अधिकतर कानाफूसियों में कोई भलाई नहीं, सिवाय उसके जो सदक़े का हुक्म दे, या भली बात का, या लोगों के बीच सुलह कराने का; और जो अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हुए ऐसा करेगा, उसे हम बड़ा बदला देंगे। और जो मार्गदर्शन के उस पर स्पष्ट हो जाने के बाद रसूल का विरोध करे, और ईमान वालों की राह छोड़कर दूसरी राह पर चले, उसे हम उसी ओर चलने देंगे जिधर वह ख़ुद फिर गया, और उसे जहन्नम में झोंक देंगे—और वह बहुत बुरा ठिकाना है! (113–115)

अल्लाह इसे माफ़ नहीं करता कि उसके साथ किसी को साझी ठहराया जाए, मगर इससे नीचे का जो कुछ है वह जिसके लिए चाहता है माफ़ कर देता है; और जिसने अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराया वह भटककर बहुत दूर जा पड़ा। वे उसे छोड़कर बस देवियों को पुकारते हैं; और वे बस एक सरकश शैतान को पुकारते हैं, जिस पर अल्लाह ने लानत की है। उसने कहा था, "मैं तेरे बन्दों में से एक ठहराया हुआ हिस्सा लेकर रहूँगा; मैं उन्हें भटकाऊँगा और उन्हें झूठी आरज़ुओं में उलझाऊँगा; मैं उन्हें हुक्म दूँगा, तो वे मवेशियों के कान चीरेंगे; और मैं उन्हें हुक्म दूँगा, तो वे अल्लाह की बनावट को बदल डालेंगे।" और जिसने अल्लाह को छोड़कर शैतान को अपना संरक्षक बनाया वह खुले घाटे में पड़ गया। वह उनसे वादे करता है और उन्हें झूठी आरज़ुओं में उलझाता है; मगर शैतान उनसे जो वादा करता है वह धोखे के सिवा कुछ नहीं। ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है, और वे उससे बच निकलने की कोई जगह न पाएँगे। और जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उन्हें हम ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जहाँ वे हमेशा-हमेशा रहेंगे: यह अल्लाह का सच्चा वादा है—और अल्लाह से बढ़कर सच्ची बात किसकी हो सकती है? न तुम्हारी आरज़ुओं पर बात है, और न किताब वालों की आरज़ुओं पर: जो बुराई करेगा उसे उसका बदला दिया जाएगा, और वह अल्लाह के सिवा अपना न कोई संरक्षक पाएगा, न मददगार। और जो अच्छे कर्म करेगा, पुरुष हो या स्त्री, और वह ईमान वाला हो—तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, और उन पर खजूर की गुठली के गढ़े के बराबर भी ज़ुल्म न होगा। और दीन में उससे बेहतर कौन है जिसने अपना पूरा अस्तित्व अल्लाह के आगे समर्पित कर दिया, और वह अच्छा कर्म करने वाला है, और वह एकनिष्ठ इबराहीम के पंथ पर चला? और अल्लाह ने इबराहीम को अपना दोस्त बना लिया था। आसमानों में जो कुछ है और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह ही का है; और अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुए है। (116–126)

ऐ नबी, वे तुमसे स्त्रियों के बारे में हुक्म पूछते हैं। कह दो, "अल्लाह तुम्हें उनके बारे में हुक्म देता है, और वह भी जो तुम्हें किताब में पढ़कर सुनाया जाता है उन अनाथ लड़कियों के बारे में जिन्हें तुम वह नहीं देते जो उनके लिए ठहराया गया है, हालाँकि तुम उनसे निकाह करना चाहते हो, और बेबस बच्चों के बारे में, और यह कि तुम अनाथों के साथ न्याय पर क़ायम रहो। और जो भलाई भी तुम करोगे, अल्लाह उसे ख़ूब जानता है।" (127)

और अगर किसी स्त्री को अपने पति की ओर से बदसुलूकी या बेरुख़ी का डर हो, तो उन दोनों पर कोई गुनाह नहीं कि आपस में कोई समझौता कर लें; और समझौता ही बेहतर है। और जी तो लालच की ओर झुके ही रहते हैं; मगर अगर तुम अच्छा करो और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, तो अल्लाह तुम्हारे कामों की पूरी ख़बर रखता है। और तुम चाहे कितना ही चाहो, अपनी पत्नियों के बीच पूरी बराबरी हरगिज़ न कर सकोगे; तो ऐसा न करो कि एक ही की ओर पूरी तरह झुक जाओ, और दूसरी को अधर में लटकी हुई-सी छोड़ दो। और अगर तुम सुधार कर लो और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, तो अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। और अगर दोनों अलग हो जाएँ, तो अल्लाह अपनी कुशादगी से हर एक को बेनियाज़ कर देगा: और अल्लाह बड़ी समाई वाला, हिकमत वाला है। आसमानों में जो कुछ है और ज़मीन में जो कुछ है सब

अल्लाह ही का है। और हमने उन्हें भी ताकीद की थी जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई, और तुम्हें भी ताकीद करते हैं: अल्लाह के प्रति सचेत रहो। और अगर तुम सत्य का इनकार करो—तो आसमानों में जो कुछ है और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह ही का है; और अल्लाह निस्पृह, सारी प्रशंसा के योग्य है। आसमानों में जो कुछ है और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह ही का है; और काम बनाने के लिए अल्लाह काफ़ी है। ऐ लोगो, अगर वह चाहे, तो तुम सब को हटा दे और तुम्हारी जगह दूसरों को ले आए: और अल्लाह इसकी पूरी सामर्थ्य रखता है। जो दुनिया का बदला चाहता है—तो अल्लाह के पास दुनिया का बदला भी है और आख़िरत का भी; और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है। (128–134)

ऐ ईमान लाने वालो, न्याय पर मज़बूती से क़ायम रहो, अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बनकर, चाहे वह तुम्हारे अपने ख़िलाफ़ हो, या माँ-बाप के, या क़रीबी नातेदारों के; कोई मालदार हो या ग़रीब, अल्लाह दोनों से ज़्यादा क़रीब है। तो अपनी इच्छा के पीछे न चलो, कि न्याय से हट जाओ; और अगर तुम गवाही को तोड़ो-मरोड़ोगे या उससे कतराओगे, तो अल्लाह तुम्हारे कामों की पूरी ख़बर रखता है। ऐ ईमान लाने वालो, ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर, और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी, और उस किताब पर भी जो उसने पहले उतारी। और जो अल्लाह का, उसके फ़रिश्तों का, उसकी किताबों का, उसके रसूलों का और अंतिम दिन का इनकार करे वह भटककर बहुत दूर जा पड़ा। जो लोग ईमान लाए, फिर सत्य का इनकार किया, फिर ईमान लाए, फिर इनकार किया, फिर इनकार में बढ़ते चले गए—अल्लाह न उन्हें माफ़ करेगा, न उन्हें कोई राह दिखाएगा। मुनाफ़िक़ों को यह ख़बर सुना दो कि उनके लिए दुखद यातना है— (135–138)

वे जो ईमान वालों को छोड़कर सत्य के इनकारियों को अपना दोस्त बनाते हैं। क्या वे उनके पास इज़्ज़त ढूँढते हैं? तो सारी इज़्ज़त अल्लाह ही की है। और वह किताब में तुम पर यह उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इनकार किया जा रहा है और उनकी हँसी उड़ाई जा रही है, तो उन लोगों के साथ न बैठो जब तक वे किसी दूसरी बात में न लग जाएँ—वरना तुम भी उन्हीं जैसे होगे। निस्संदेह अल्लाह मुनाफ़िक़ों और सत्य के इनकारियों को, सब को एक साथ, जहन्नम में इकट्ठा करने वाला है—वे जो तुम्हारे बारे में ताक लगाए रहते हैं: फिर अगर तुम्हें अल्लाह की ओर से विजय मिले, तो कहते हैं, "क्या हम तुम्हारे साथ न थे?" और अगर सत्य के इनकारियों को कुछ हिस्सा मिल जाए, तो कहते हैं, "क्या हम तुम पर हावी न हो गए थे, और क्या हमने तुम्हें ईमान वालों से न बचाया था?" तो अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे बीच फ़ैसला कर देगा, और अल्लाह सत्य के इनकारियों को ईमान वालों पर हरगिज़ कोई राह न देगा। (139–141)

मुनाफ़िक़ अल्लाह को धोखा देना चाहते हैं, हालाँकि वही उन्हें धोखे में डाले हुए है। और जब वे नमाज़ के लिए खड़े होते हैं, तो अलसाए हुए खड़े होते हैं, लोगों को दिखाने के लिए, और अल्लाह को बस थोड़ा ही याद करते हैं—इसके और उसके बीच डाँवाडोल, न इनकी ओर न उनकी ओर। और जिसे अल्लाह भटकने दे, तुम उसके लिए हरगिज़ कोई राह न पाओगे। ऐ ईमान लाने वालो, ईमान वालों को छोड़कर सत्य के

इनकारियों को अपना दोस्त न बनाओ। क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह को अपने ख़िलाफ़ खुली हुज्जत दे दो? निस्संदेह मुनाफ़िक़ आग के सबसे निचले दर्जे में होंगे, और तुम उनका कोई मददगार न पाओगे—सिवाय उनके जिन्होंने तौबा कर ली, सुधार कर लिया, अल्लाह को मज़बूती से थाम लिया और अपने दीन को अल्लाह ही के लिए ख़ालिस कर लिया: तो ये ईमान वालों के साथ होंगे, और अल्लाह ईमान वालों को जल्द ही बड़ा बदला देगा। अगर तुम शुक्र करो और ईमान लाओ तो अल्लाह तुम्हें यातना देकर क्या करेगा? और अल्लाह गुणग्राहक, सब कुछ जानने वाला है। अल्लाह बुरी बात के खुलेआम कहे जाने को पसन्द नहीं करता, सिवाय उसके जिस पर ज़ुल्म हुआ हो; और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। तुम भलाई खुलेआम करो, या उसे छिपाओ, या किसी बुराई को माफ़ कर दो—तो अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, सामर्थ्य वाला है। (142–149)

जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इनकार करते हैं, और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के बीच फ़र्क़ करें, और कहते हैं, "हम कुछ को मानते हैं और कुछ का इनकार करते हैं," और चाहते हैं कि इसके बीच की कोई राह निकाल लें—वही पक्के इनकारी हैं; और इनकारियों के लिए हमने अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है। और जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी के बीच फ़र्क़ न किया—उन्हें वह जल्द ही उनके बदले देगा; और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (150–152)

किताब वाले तुमसे माँग करते हैं कि तुम उन पर आसमान से कोई किताब उतार लाओ। तो वे मूसा से इससे भी बड़ी माँग कर चुके हैं: उन्होंने कहा था, "हमें अल्लाह को खुल्लम-खुल्ला दिखा दो," तो उनके ज़ुल्म के कारण कड़क ने उन्हें आ पकड़ा। फिर उन्होंने बछड़े को पूज्य बना लिया, इसके बाद कि उनके पास खुली निशानियाँ आ चुकी थीं; फिर भी हमने उसे माफ़ कर दिया, और मूसा को खुला अधिकार दिया। और हमने उनसे वचन लेते समय तूर को उनके ऊपर उठाया, और उनसे कहा, "दरवाज़े में विनम्रता से झुकते हुए दाख़िल होना," और हमने उनसे कहा, "सब्त के मामले में हद से न बढ़ना," और हमने उनसे पक्का वचन लिया। तो उनके अपना वचन तोड़ने के कारण, और अल्लाह की आयतों का इनकार करने के कारण, और नबियों को नाहक़ क़त्ल करने के कारण, और उनके यह कहने के कारण, "हमारे दिल ग़िलाफ़ों में लिपटे हैं"—नहीं, बल्कि अल्लाह ने उनके इनकार के कारण उन पर मुहर लगा दी है, सो वे कम ही ईमान लाते हैं—और उनके इनकार के कारण, और मरयम पर बड़ा बुहतान बाँधने के कारण, और उनके यह कहने के कारण, "हमने मसीह, मरयम के बेटे ईसा, अल्लाह के रसूल को क़त्ल कर दिया।" हालाँकि न उन्होंने उसे क़त्ल किया, न सूली दी, बल्कि मामला उनके लिए उलझा दिया गया। और जो लोग इसमें मतभेद कर रहे हैं वे इस बारे में सन्देह में पड़े हैं: उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं, बस अटकल के पीछे चल रहे हैं; और निश्चय ही उन्होंने उसे क़त्ल नहीं किया। नहीं: बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी ओर उठा लिया; और अल्लाह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। और किताब वालों में से कोई ऐसा नहीं जो उसकी मौत से पहले उस पर ईमान न ले आए; और क़ियामत के दिन वह उन पर गवाह होगा। तो यहूदियों के ज़ुल्म के कारण हमने उन

पर कुछ पाक चीज़ें हराम कर दीं जो उनके लिए हलाल थीं, और इस कारण कि वे बहुतों को अल्लाह की राह से रोकते थे, और उनके सूद लेने के कारण, हालाँकि उन्हें उससे रोका गया था, और उनके लोगों के माल नाहक़ खाने के कारण। और उनमें से जो सत्य के इनकारी हैं उनके लिए हमने दुखद यातना तैयार कर रखी है। मगर उनमें जो ज्ञान में पक्के हैं, और ईमान वाले, वे उस पर ईमान रखते हैं जो ऐ नबी, तुम्हारी ओर उतारा गया और उस पर भी जो तुमसे पहले उतारा गया; और जो नमाज़ क़ायम करने वाले, ज़कात देने वाले, और अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखने वाले हैं—उन्हें हम बड़ा बदला देंगे। (153–162)

ऐ नबी, हमने तुम्हारी ओर वैसे ही वह्य भेजी है जैसे नूह और उसके बाद के नबियों की ओर भेजी थी; और हमने इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़, याक़ूब और उनकी सन्तान की ओर, और ईसा, अय्यूब, यूनुस, हारून और सुलैमान की ओर वह्य भेजी; और हमने दाऊद को ज़बूर दी। और कितने रसूल हैं जिनका हाल हम तुम्हें पहले बता चुके हैं, और कितने रसूल हैं जिनका हाल हमने तुम्हें नहीं बताया—और मूसा से अल्लाह ने सीधे बात की। रसूल जो शुभ-सूचना देने वाले और सचेत करने वाले थे, ताकि रसूलों के बाद लोगों के पास अल्लाह के मुक़ाबले में कोई हुज्जत न रहे: और अल्लाह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। मगर अल्लाह गवाही देता है उसकी जो उसने तुम्हारी ओर उतारा है: उसने उसे अपने ज्ञान के साथ उतारा है; और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं—और गवाह के रूप में अल्लाह काफ़ी है। जिन लोगों ने सत्य का इनकार किया और दूसरों को अल्लाह की राह से रोका वे भटककर बहुत दूर जा पड़े। जिन लोगों ने सत्य का इनकार किया और ज़ुल्म किया—अल्लाह न उन्हें माफ़ करेगा, न उन्हें कोई राह दिखाएगा सिवाय जहन्नम की राह के, जिसमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे; और यह अल्लाह के लिए आसान है। (163–169)

ऐ लोगो, यह रसूल तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य लेकर आ गया है, तो ईमान ले आओ: यह तुम्हारे लिए बेहतर है। और अगर इनकार करते हो—तो आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह ही का है; और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। ऐ किताब वालो, अपने दीन में हद से न बढ़ो, और अल्लाह के बारे में सत्य के सिवा कुछ न कहो। मसीह, मरयम का बेटा ईसा, बस अल्लाह का एक रसूल था, और उसका कलिमा जिसे उसने मरयम की ओर भेजा, और उसकी ओर से एक रूह। तो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ, और “तीन” न कहो। बाज़ आ जाओ: यह तुम्हारे लिए बेहतर है। अल्लाह तो बस एक ही इलाह है; वह इससे पाक है कि उसका कोई बेटा हो! आसमानों में जो कुछ है और ज़मीन में जो कुछ है सब उसी का है; और काम बनाने के लिए अल्लाह काफ़ी है। मसीह को हरगिज़ इसमें कोई आर नहीं कि वह अल्लाह का बन्दा हो, और न निकटवर्ती फ़रिश्तों को। और जो उसकी इबादत को आर समझे और घमंड करे—तो वह उन सब को अपने पास इकट्ठा करेगा। फिर जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, उन्हें वह उनके बदले पूरे-पूरे देगा और अपने अनुग्रह से और ज़्यादा भी देगा; और जिन्होंने आर समझा और घमंड किया उन्हें वह दुखद यातना देगा, और वे अल्लाह के सिवा अपना न कोई संरक्षक पाएँगे, न मददगार। (170–173)

ऐ लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से खुला प्रमाण आ चुका, और हमने तुम्हारी ओर एक साफ़ रौशनी उतारी है। तो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उसे मज़बूती से थामे रहे, उन्हें वह अपनी दयालुता और अनुग्रह में दाख़िल करेगा, और उन्हें अपनी ओर सीधे मार्ग से ले चलेगा। (174–175)

ऐ नबी, वे तुमसे हुक्म पूछते हैं। कह दो, "अल्लाह तुम्हें उस व्यक्ति के बारे में हुक्म देता है जिसके न माँ-बाप हों न सन्तान: अगर कोई पुरुष मर जाए जिसकी कोई सन्तान न हो मगर एक बहन हो, तो उसके लिए उसके छोड़े हुए का आधा है; और वह भी उस बहन का वारिस होगा अगर उसकी कोई सन्तान न हो। फिर अगर बहनें दो हों, तो उनके लिए उसके छोड़े हुए का दो-तिहाई है; और अगर कई भाई-बहन हों, तो पुरुष का हिस्सा दो स्त्रियों के हिस्से के बराबर है। अल्लाह तुम्हारे लिए यह खोलकर बयान करता है, ताकि तुम भटक न जाओ; और अल्लाह हर चीज़ का पूरा ज्ञान रखता है।" (176)

# 5. दस्तरख़्वान (अल-माइदा)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ऐ ईमान लाने वालो, अपने अहदों को पूरा करो। तुम्हारे लिए चौपाये मवेशी हलाल किए गए हैं, सिवाय उनके जो अभी तुम्हें पढ़कर सुनाए जा रहे हैं; मगर जब तुम इहराम की हालत में हो तो शिकार हलाल नहीं। निस्संदेह अल्लाह जो चाहता है हुक्म देता है। ऐ ईमान लाने वालो, न अल्लाह की निशानियों की बेहुरमती करो, न प्रतिष्ठित महीने की, न क़ुरबानी के जानवरों की, न उन पट्टों की जो उनकी पहचान हैं, और न उन लोगों की जो अपने रब के अनुग्रह और प्रसन्नता की तलाश में प्रतिष्ठित घर को जा रहे हों। और जब तुम इहराम से बाहर आ जाओ, तो शिकार कर सकते हो। और किसी क़ौम की दुश्मनी, कि उसने तुम्हें कभी मस्जिदे-हराम से रोका था, तुम्हें इस पर न उभारे कि तुम ज़्यादती करने लगो। नेकी और अल्लाह के प्रति सचेतता में एक-दूसरे की मदद करो; और गुनाह और ज़्यादती में एक-दूसरे की मदद न करो। और अल्लाह के प्रति सचेत रहो: निस्संदेह अल्लाह कठोर यातना देने वाला है। (1–2)

तुम पर हराम किए गए हैं मुर्दार, ख़ून, सूअर का मांस, वह जानवर जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो, वह जो गला घुटने से मरा हो, या चोट खाकर, या ऊँचाई से गिरकर, या सींग लगने से, या जिसे किसी दरिन्दे ने फाड़ खाया हो—सिवाय उसके जिसे तुम जीवित पाकर ज़बह कर लो—और वह जो थानों पर ज़बह किया गया हो; और यह भी हराम है कि पाँसे के तीरों से मांस बाँटो: यह नाफ़रमानी का काम है। आज सत्य के इनकारी तुम्हारे दीन को पलट देने से निराश हो चुके हैं, तो उनसे न डरो, बल्कि मुझसे डरो। आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन पूर्ण कर दिया, तुम पर अपना अनुग्रह पूरा कर दिया, और तुम्हारे लिए अल्लाह के आगे समर्पण को दीन के रूप में पसन्द किया। फिर जो भूख से मजबूर हो जाए, गुनाह की ओर झुकाव के बिना—तो अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (3)

वे तुमसे पूछते हैं कि उनके लिए क्या हलाल किया गया है। कह दो, “तुम्हारे लिए सारी पाक चीज़ें हलाल हैं, और वह भी जो तुम्हारे सधाए हुए शिकारी जानवर तुम्हारे लिए पकड़ रखें—तुम उन्हें उसमें से कुछ सिखाते हो जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है—तो जो वे तुम्हारे लिए पकड़ रखें उसमें से खाओ, और उस पर अल्लाह का नाम लो। और अल्लाह के प्रति सचेत रहो: निस्संदेह अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।” आज तुम्हारे लिए सारी पाक चीज़ें हलाल कर दी गईं। और जिन्हें किताब दी गई उनका खाना तुम्हारे लिए हलाल है, और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है। और तुम्हारे लिए हलाल हैं ईमान वालियों में से पाकदामन स्त्रियाँ और उनमें से भी पाकदामन स्त्रियाँ जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई, जबकि तुम उन्हें उनके महर दे दो, इज़्ज़त के साथ निकाह में लाकर, न बदकारी के लिए और न चोरी-छिपे याराना गाँठने के लिए। और जो ईमान को ठुकराए, उसका किया-धरा अकारथ गया, और आख़िरत में वह घाटा उठाने वालों में होगा। (4–5)

ऐ ईमान लाने वालो, जब तुम नमाज़ के लिए उठो, तो अपने चेहरे और अपने हाथ कुहनियों तक धो लो, अपने सिरों पर मसह कर लो, और अपने पाँव टख़नों तक धो लो। और अगर तुम नापाकी की हालत में हो, तो अच्छी तरह पाक हो लो। और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो, या तुममें से कोई शौच से आया हो, या तुमने स्त्रियों को छुआ हो, और तुम्हें पानी न मिले, तो पाक मिट्टी लो और उससे अपने चेहरों और हाथों पर मसह कर लो। अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी डाले; बल्कि वह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और तुम पर अपना अनुग्रह पूरा कर दे, ताकि तुम शुक्र करो। और अल्लाह के उस अनुग्रह को याद करो जो तुम पर हुआ, और उसके उस वचन को जो उसने तुमसे पक्का किया था जब तुमने कहा, "हमने सुना और हमने माना।" और अल्लाह के प्रति सचेत रहो: निस्संदेह अल्लाह दिलों की बात ख़ूब जानता है। (6–7)

ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह के लिए मज़बूती से क़ायम रहो, न्याय की गवाही देने वाले बनकर, और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें इस पर न उभारे कि तुम न्याय न करो। न्याय करो: यही अल्लाह के प्रति सचेतता से ज़्यादा क़रीब है। और अल्लाह के प्रति सचेत रहो: निस्संदेह अल्लाह तुम्हारे सब कामों की ख़बर रखता है। जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उनसे अल्लाह ने वादा किया है कि उनके लिए क्षमा और बड़ा बदला है; और जिन्होंने सत्य का इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया—वही दहकती आग वाले हैं। (8–10)

ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह के उस अनुग्रह को याद करो जो तुम पर हुआ, जब कुछ लोगों ने तुम पर हाथ उठाने की ठान ली थी, तो उसने उनके हाथ तुमसे रोक दिए। और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (11)

अल्लाह ने इसराईल की सन्तान से वचन लिया था, और हमने उनमें से बारह सरदार उठाए। और अल्लाह ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ हूँ। अगर तुम नमाज़ क़ायम रखोगे और ज़कात देते रहोगे, मेरे रसूलों पर ईमान लाओगे और उनका साथ दोगे, और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगे, तो मैं ज़रूर तुम्हारी बुराइयाँ तुमसे दूर कर दूँगा और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं। फिर इसके बाद तुममें से जो सत्य का इनकार करेगा वह सीधी राह से भटक गया।" फिर उनके अपना वचन तोड़ देने के कारण हमने उन पर लानत की और उनके दिल सख़्त कर दिए। वे शब्दों को उनकी जगह से फेर देते हैं, और जिसकी उन्हें नसीहत की गई थी उसका एक हिस्सा भुला बैठे। और तुम बराबर उनकी किसी-न-किसी ख़यानत का पता पाते रहोगे, उनमें से थोड़े-से लोगों के सिवा; तो उन्हें माफ़ करो और दरगुज़र करो: निस्संदेह अल्लाह अच्छा करने वालों को पसन्द करता है। और जो कहते हैं, "हम ईसाई हैं," उनसे भी हमने वचन लिया था, मगर वे भी उसका एक हिस्सा भुला बैठे जिसकी उन्हें नसीहत की गई थी; तो हमने क़ियामत के दिन तक के लिए उनके बीच दुश्मनी और बैर भड़का दिया, और अल्लाह जल्द ही उन्हें बता देगा जो कुछ वे करते रहे। (12–14)

ऐ किताब वालो, तुम्हारे पास हमारा रसूल आ गया है, जो तुम्हारे सामने किताब की बहुत-सी वे बातें खोल रहा है जिन्हें तुम छिपाते थे, और बहुत-सी बातों से दरगुज़र कर जाता है। तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से एक रौशनी और एक खुली किताब आ चुकी है, जिसके द्वारा अल्लाह उसे, जो उसकी प्रसन्नता का तलबगार हो, सलामती की राहें दिखाता है, और अपनी अनुमति से उन्हें घोर अँधेरों से निकालकर रौशनी में लाता है, और उन्हें सीधे मार्ग पर चलाता है। निश्चय ही उन लोगों ने सत्य का इनकार किया जिन्होंने कहा, "अल्लाह तो मरयम का बेटा मसीह ही है।" कह दो, "फिर अल्लाह के मुक़ाबले में किसका कुछ बस चल सकता है अगर वह मरयम के बेटे मसीह को, और उसकी माँ को, और ज़मीन पर जो कोई भी है सब को हलाक कर देना चाहे?" और आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच है सब की बादशाही अल्लाह ही की है: वह जो चाहता है पैदा करता है, और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। यहूदी और ईसाई कहते हैं, "हम अल्लाह के बेटे और उसके चहेते हैं।" कह दो, "फिर वह तुम्हें तुम्हारे गुनाहों पर यातना क्यों देता है? नहीं—बल्कि तुम भी उसके पैदा किए हुओं में से इनसान हो। वह जिसे चाहे माफ़ करे और जिसे चाहे यातना दे।" और आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच है सब की बादशाही अल्लाह ही की है, और उसी की ओर लौटना है। ऐ किताब वालो, तुम्हारे पास हमारा रसूल आ गया है, जो रसूलों के आने के एक लम्बे अन्तराल के बाद तुम्हारे लिए बातें खोलकर बयान कर रहा है, ताकि तुम यह न कहो, "हमारे पास न कोई शुभ-सूचना देने वाला आया न सचेत करने वाला।" तो अब तुम्हारे पास शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला आ गया। और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। (15–19)

और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, "ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह के उस अनुग्रह को याद करो जो तुम पर हुआ, जब उसने तुममें नबी उठाए, तुम्हें बादशाह बनाया, और तुम्हें वह दिया जो संसार में किसी और को नहीं दिया था। ऐ मेरी क़ौम, उस पवित्र भूमि में दाख़िल हो जाओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है, और पीठ न फेरो, वरना घाटे में पड़कर पलटोगे।" उन्होंने कहा, "ऐ मूसा, वहाँ तो बड़े ज़ोरावर लोग हैं, और हम वहाँ हरगिज़ दाख़िल न होंगे जब तक वे वहाँ से निकल न जाएँ। अगर वे वहाँ से निकल जाएँ, तो हम दाख़िल हो जाएँगे।" अल्लाह से डरने वालों में से दो आदमियों ने, जिन पर अल्लाह ने अनुग्रह किया था, कहा, "उन पर दरवाज़े से चढ़ाई कर दो; जब तुम उसमें दाख़िल हो जाओगे, तो तुम्हीं ग़ालिब रहोगे। और अल्लाह ही पर भरोसा रखो, अगर तुम ईमान वाले हो।" उन्होंने कहा, "ऐ मूसा, जब तक वे वहाँ हैं हम वहाँ कभी दाख़िल न होंगे। तो तुम और तुम्हारा रब जाओ, और दोनों लड़ो—हम तो यहीं बैठे हैं।" उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मेरा बस अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर नहीं चलता; तो हमारे और इन अवज्ञाकारी लोगों के बीच अलगाव कर दे।" उसने कहा, "तो यह भूमि चालीस बरस तक इन पर हराम है, ये ज़मीन में भटकते फिरेंगे। तो तुम इन अवज्ञाकारी लोगों पर अफ़सोस न करो।" (20–26)

और उन्हें आदम के दो बेटों का क़िस्सा ठीक-ठीक सुनाओ: जब दोनों ने एक-एक क़ुरबानी पेश की, तो उनमें से एक की क़बूल हुई और दूसरे की क़बूल न हुई। दूसरे ने कहा, "मैं तुझे ज़रूर क़त्ल कर दूँगा।" पहले ने कहा, "अल्लाह तो उन्हीं से क़बूल करता है जो उसके प्रति सचेत रहते हैं। अगर तू मुझे क़त्ल करने

के लिए मुझ पर हाथ उठाएगा, तो मैं तुझे क़त्ल करने के लिए तुझ पर हाथ न उठाऊँगा: मैं अल्लाह से डरता हूँ, जो सारे संसारों का रब है। मैं तो चाहता हूँ कि तू मेरा गुनाह भी और अपना गुनाह भी समेट ले और आग वालों में से हो जाए—और ज़ालिमों का यही बदला है।" फिर उसके जी ने उसे अपने भाई के क़त्ल पर उभार दिया, तो उसने उसे क़त्ल कर डाला, और घाटा उठाने वालों में से हो गया। फिर अल्लाह ने एक कौआ भेजा, जो ज़मीन कुरेदता था, ताकि उसे दिखाए कि अपने भाई की खुली लाश को कैसे छिपाए। उसने कहा, "हाय मेरी कमबख़्ती! क्या मैं इस कौए जैसा भी न हो सका कि अपने भाई की लाश छिपा देता?" और वह पछताने वालों में से हो गया। इसी कारण हमने इसराईल की सन्तान के लिए लिख दिया कि जिसने किसी इनसान को क़त्ल किया—बिना इसके कि वह किसी जान का बदला हो या ज़मीन में बिगाड़ फैलाने की सज़ा—तो मानो उसने सारे इनसानों को क़त्ल कर डाला; और जिसने किसी एक की जान बचाई, तो मानो उसने सारे इनसानों की जान बचा ली। और हमारे रसूल उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए, फिर भी इसके बाद उनमें से बहुत-से लोग ज़मीन में ज़्यादतियाँ करते ही रहे। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और ज़मीन में बिगाड़ फैलाने की दौड़-धूप करते हैं उनकी सज़ा बस यही है कि वे क़त्ल किए जाएँ, या सूली पर चढ़ाए जाएँ, या उनके हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं से काट दिए जाएँ, या उन्हें देश-निकाला दे दिया जाए। यह उनके लिए दुनिया में रुसवाई है, और आख़िरत में उनके लिए बड़ी यातना है—सिवाय उनके जो तुम्हारे उन पर क़ाबू पाने से पहले तौबा कर लें। तो जान लो कि अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (27–34)

ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह के प्रति सचेत रहो, उस तक पहुँचने का ज़रिया तलाश करो, और उसकी राह में जिहाद करो, ताकि तुम सफल हो। रहे वे लोग जो सत्य का इनकार करते हैं, तो अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है और उतना ही और भी, कि वे उसे देकर क़ियामत के दिन की यातना से छूट जाएँ, तब भी वह उनसे क़बूल न किया जाएगा: और उनके लिए दुखद यातना है। वे चाहेंगे कि आग से निकल जाएँ, मगर वे उससे निकलने वाले नहीं: और उनके लिए टिकी रहने वाली यातना है। (35–37)

और चोर, पुरुष हो या स्त्री, दोनों के हाथ काट दो, उनकी कमाई के बदले में—अल्लाह की ओर से शिक्षाप्रद सज़ा के तौर पर। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। फिर जो अपने ज़ुल्म के बाद तौबा कर ले और अपने-आप को सुधार ले, तो अल्लाह निश्चय ही उस पर दया-दृष्टि करेगा: निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। क्या तुम नहीं जानते कि आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है? वह जिसे चाहे यातना दे और जिसे चाहे माफ़ कर दे, और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। (38–40)

ऐ रसूल, वे लोग तुम्हें दुखी न करें जो इनकार में एक-दूसरे से आगे दौड़ते हैं, उनमें से जो अपने मुँह से कहते हैं, "हम ईमान लाए," हालाँकि उनके दिल ईमान नहीं लाए, और उनमें से जो यहूदी हैं—जो झूठ के लिए बड़े शौक़ से कान लगाते हैं और उन दूसरे लोगों के लिए कान लगाते हैं जो तुम्हारे पास नहीं आए। वे शब्दों को उनकी ठीक जगह से फेर देते हैं, और कहते हैं, "अगर तुम्हें यह हुक्म दिया जाए, तो मान लेना; और अगर

यह न दिया जाए, तो बचकर रहना।" और जिसे अल्लाह आज़माइश में डालना चाहे, तुम अल्लाह के मुक़ाबले में उसके लिए कुछ नहीं कर सकते। ये वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने पाक करना न चाहा: उनके लिए दुनिया में रुसवाई है, और आख़िरत में बड़ी यातना। वे झूठ के लिए बड़े शौक़ से कान लगाने वाले और हराम को हड़प करने वाले हैं। तो अगर वे तुम्हारे पास आएँ, तो चाहो तो उनके बीच फ़ैसला कर दो या उनसे मुँह फेर लो; और अगर तुम उनसे मुँह फेर लो, तो वे तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। और अगर फ़ैसला करो, तो उनके बीच न्याय के साथ फ़ैसला करो: निस्संदेह अल्लाह न्याय करने वालों को पसन्द करता है। और ये तुम्हारे पास फ़ैसले के लिए कैसे आते हैं जबकि इनके पास तौरात है, जिसमें अल्लाह का हुक्म मौजूद है, फिर उसके बाद भी मुँह मोड़ जाते हैं? और ऐसे लोग ईमान वाले हैं ही नहीं। हमने तौरात उतारी, जिसमें मार्गदर्शन और रौशनी थी। उसी के मुताबिक़ वे नबी जो अल्लाह के आज्ञाकारी थे यहूदियों के लिए फ़ैसले करते थे, और रब्बानी लोग और आलिम भी, उसके अनुसार जो अल्लाह की किताब में से उनकी निगरानी में दिया गया था, और वे उसके गवाह थे। तो तुम लोगों से न डरो, बल्कि मुझसे डरो, और मेरी आयतों को थोड़े-से दाम पर न बेचो। और जो उसके मुताबिक़ फ़ैसला न करें जो अल्लाह ने उतारा है—तो वही सत्य के इनकारी हैं। और हमने उसमें उनके लिए लिख दिया था: जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, नाक के बदले नाक, कान के बदले कान, दाँत के बदले दाँत, और ज़ख़्मों का भी बराबर का बदला। फिर जो उसे सदक़ा करके छोड़ दे, तो वह उसके लिए कफ़्फ़ारा हो जाएगा। और जो उसके मुताबिक़ फ़ैसला न करें जो अल्लाह ने उतारा है—तो वही ज़ालिम हैं। (41–45)

और उनके पदचिह्नों पर हमने मरयम के बेटे ईसा को भेजा, जो उस तौरात की पुष्टि करने वाला था जो उससे पहले आ चुकी थी। और हमने उसे इंजील दी, जिसमें मार्गदर्शन और रौशनी थी, और जो उस तौरात की पुष्टि करती थी जो उससे पहले आ चुकी थी, और जो अल्लाह के प्रति सचेत रहने वालों के लिए मार्गदर्शन और नसीहत थी। और इंजील वालों को चाहिए कि उसके मुताबिक़ फ़ैसला करें जो अल्लाह ने उसमें उतारा है। और जो उसके मुताबिक़ फ़ैसला न करें जो अल्लाह ने उतारा है—तो वही अवज्ञाकारी हैं। (46–47)

और ऐ नबी, हमने तुम्हारी ओर सत्य के साथ किताब उतारी है, जो उस किताब की पुष्टि करती है जो इससे पहले आ चुकी और उस पर निगहबान है। तो उनके बीच उसी के मुताबिक़ फ़ैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है, और उस सत्य को छोड़कर जो तुम्हारे पास आ चुका है उनकी इच्छाओं पर न चलो। तुममें से हर एक के लिए हमने एक शरीअत और एक राह ठहराई है। और अगर अल्लाह चाहता, तो तुम सब को एक ही समुदाय बना देता, मगर उसने ऐसा न चाहा ताकि जो कुछ उसने तुम्हें दिया है उसमें तुम्हें आज़माए; तो भलाइयों में एक-दूसरे से आगे बढ़ो। तुम सब को अल्लाह ही की ओर लौटना है, फिर वह तुम्हें वे बातें बता देगा जिनमें तुम मतभेद करते रहे। और यह कि उनके बीच उसी के मुताबिक़ फ़ैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है, और उनकी इच्छाओं पर न चलो; और उनसे होशियार रहो, कहीं वे तुम्हें उसके किसी हिस्से से बहका न दें जो अल्लाह ने तुम्हारी ओर उतारा है। फिर अगर वे मुँह मोड़ें, तो जान लो कि अल्लाह चाहता है कि उनके कुछ गुनाहों के कारण उन्हें मुसीबत में डाले; और निस्संदेह बहुत-से लोग अवज्ञाकारी हैं। तो क्या

वे जाहिलियत के दिनों का फ़ैसला चाहते हैं? और जो लोग पक्का विश्वास रखते हैं उनके लिए अल्लाह से बेहतर फ़ैसला करने वाला कौन है? (48–50)

ऐ ईमान लाने वालो, यहूदियों और ईसाइयों को अपना दोस्त और हिमायती न बनाओ: वे आपस में एक-दूसरे के दोस्त हैं। और तुममें से जो उनसे दोस्ती गाँठेगा वह उन्हीं में से है। निस्संदेह अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। तो तुम देखते हो कि जिनके दिलों में रोग है वे उन्हीं में दौड़-धूप करते हैं, कहते हैं, "हमें डर है कि कहीं हम पर ज़माने का कोई चक्कर न आ पड़े।" तो हो सकता है कि अल्लाह विजय ले आए, या अपने पास से कोई और बात, तो वे उस पर पछताएँगे जो वे अपने जी में छिपाए हुए थे। और ईमान वाले कहेंगे, "क्या ये वही लोग हैं जो अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाते थे कि वे तुम्हारे साथ हैं?" उनके कर्म अकारथ गए, और वे घाटे में पड़कर रह गए। (51–53)

ऐ ईमान लाने वालो, तुममें से जो कोई अपने दीन से फिरता है—तो अल्लाह जल्द ही ऐसे लोग ले आएगा जिनसे वह प्रेम करता होगा और जो उससे प्रेम करते होंगे, ईमान वालों के लिए नर्म, सत्य के इनकारियों पर कड़े, जो अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे और किसी निन्दा करने वाले की निन्दा से न डरेंगे। यह अल्लाह का अनुग्रह है, जिसे चाहता है देता है; और अल्लाह बड़ी समाई वाला, सब कुछ जानने वाला है। तुम्हारे दोस्त तो बस अल्लाह, उसका रसूल, और वे ईमान वाले हैं—जो नमाज़ क़ायम करते और ज़कात देते हैं और इबादत में झुकते हैं। और जो अल्लाह, उसके रसूल और ईमान वालों को अपना दोस्त बनाए—तो अल्लाह का गिरोह ही ग़ालिब रहने वाला है। (54–56)

ऐ ईमान लाने वालो, उन लोगों को अपना दोस्त न बनाओ जिन्होंने तुम्हारे दीन को हँसी और खेल बना लिया है, चाहे वे उनमें से हों जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई या सत्य के इनकारियों में से; और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, अगर तुम ईमान वाले हो। और जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो, तो वे उसे हँसी और खेल बना लेते हैं: यह इसलिए कि वे ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं। कह दो, "ऐ किताब वालो, क्या तुम हमसे बस इसी बात पर बिगड़ते हो कि हम अल्लाह पर और उस पर ईमान लाए जो हमारी ओर उतारा गया और उस पर जो पहले उतारा गया, और इस पर कि तुममें से अधिकतर अवज्ञाकारी हैं?" कह दो, "क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि अल्लाह के यहाँ बदले के लिहाज़ से इससे भी बुरा कौन है? वे जिन पर अल्लाह ने लानत की और जिन पर उसका प्रकोप हुआ, जिनमें से कुछ को उसने बन्दर और सूअर बना दिया, और जिन्होंने झूठे उपास्यों की बन्दगी की—वही दर्जे के लिहाज़ से ज़्यादा बुरे और सीधी राह से ज़्यादा भटके हुए हैं।" (57–60)

और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं, "हम ईमान लाए," हालाँकि वे इनकार लिए हुए आए थे और उसी को लिए हुए निकले; और अल्लाह उसे ख़ूब जानता है जो वे छिपाते हैं। और तुम उनमें से बहुतों को देखते हो कि गुनाह और ज़्यादती और हराम खाने में एक-दूसरे से आगे दौड़ते हैं। कितना बुरा है जो वे करते हैं। उनके रब्बानी लोग और आलिम उन्हें गुनाह की बात कहने और हराम खाने से क्यों नहीं रोकते? कितना बुरा है जो वे बना रहे हैं। और यहूदी कहते हैं, "अल्लाह का हाथ बँधा हुआ है।" बँधे तो उन्हीं के हाथ हैं, और

जो कुछ उन्होंने कहा उसके कारण उन पर लानत है। नहीं—बल्कि उसके दोनों हाथ खुले हुए हैं; वह जैसे चाहता है ख़र्च करता है। और जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है वह उनमें से बहुतों की सरकशी और इनकार को और बढ़ा देगा। और हमने क़ियामत के दिन तक के लिए उनके बीच दुश्मनी और बैर डाल दिया है। जब कभी वे लड़ाई की आग भड़काते हैं, अल्लाह उसे बुझा देता है। और वे ज़मीन में बिगाड़ फैलाने की दौड़-धूप करते हैं, और अल्लाह बिगाड़ फैलाने वालों को पसन्द नहीं करता। और अगर किताब वाले ईमान लाते और अल्लाह के प्रति सचेत रहते, तो हम उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर देते और उन्हें नेमतों भरे बाग़ों में दाख़िल करते। और अगर वे तौरात और इंजील को और उसे जो उनके रब की ओर से उनकी ओर उतारा गया क़ायम रखते, तो वे अपने ऊपर से भी खाते और अपने पाँवों के नीचे से भी। उनमें एक समुदाय बीच की राह पर चलने वाला भी है; मगर उनमें से बहुत-से—बुरा है जो वे करते हैं। (61–66)

ऐ रसूल, जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है उसे पहुँचा दो; और अगर तुमने ऐसा न किया, तो तुमने उसका सन्देश नहीं पहुँचाया। और अल्लाह तुम्हें लोगों से बचाएगा: निस्संदेह अल्लाह सत्य के इनकारियों को राह नहीं दिखाता। कह दो, "ऐ किताब वालो, तुम किसी बुनियाद पर नहीं हो जब तक तौरात और इंजील को और उसे जो तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है क़ायम न करो।" और ऐ नबी, जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है वह उनमें से बहुतों की सरकशी और इनकार को और बढ़ा देगा; तो तुम सत्य का इनकार करने वाली क़ौम पर अफ़सोस न करो। निस्संदेह जो ईमान लाए, और जो यहूदी हुए, और साबी और ईसाई—जो भी अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाया और अच्छा कर्म किया—उन्हें न कोई भय होगा, और न वे दुखी होंगे। (67–69)

हमने इसराईल की सन्तान से वचन लिया और उनकी ओर रसूल भेजे। जब कभी कोई रसूल उनके पास वह चीज़ लेकर आया जो उनके जी को न भाती थी, तो कुछ को उन्होंने झुठलाया और कुछ को क़त्ल कर डाला। और उन्होंने समझा कि कोई आज़माइश न होगी, तो वे अंधे और बहरे हो गए। फिर अल्लाह ने उन पर दया-दृष्टि की; फिर भी उनमें से बहुत-से अंधे और बहरे हो गए। और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसे देख रहा है। निश्चय ही उन लोगों ने सत्य का इनकार किया जिन्होंने कहा, "अल्लाह तो मरयम का बेटा मसीह ही है।" हालाँकि मसीह ने ख़ुद कहा था, "ऐ इसराईल की सन्तान, अल्लाह की इबादत करो, जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब।" निस्संदेह जो अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराएगा, अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी है, और उसका ठिकाना आग है; और ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा। (70–72)

निश्चय ही उन लोगों ने सत्य का इनकार किया जिन्होंने कहा, "अल्लाह तीन में का तीसरा है": हालाँकि एक इलाह के सिवा कोई इलाह नहीं। और अगर वे अपनी इन बातों से बाज़ न आए, तो उनमें से जो सत्य के इनकारी हैं उन्हें दुखद यातना आकर रहेगी। तो क्या वे अल्लाह की ओर पलटते नहीं और उससे क्षमा नहीं माँगते? और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। मरयम का बेटा मसीह बस एक रसूल ही था; उससे पहले भी रसूल गुज़र चुके थे। और उसकी माँ बड़ी सच्ची थी। वे दोनों खाना खाते थे। देखो, हम उनके लिए

निशानियाँ किस तरह खोलकर बयान करते हैं, फिर देखो वे किधर फेरे जा रहे हैं! कह दो, "क्या तुम अल्लाह को छोड़कर उसकी इबादत करते हो जो न तुम्हारे नुक़सान का अधिकार रखता है न फ़ायदे का, जबकि अल्लाह ही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है?" कह दो, "ऐ किताब वालो, अपने दीन में नाहक़ हद से आगे न बढ़ो, और उन लोगों की इच्छाओं पर न चलो जो पहले भटक चुके, जिन्होंने बहुतों को भटकाया और सीधी राह से भटक गए।" (73–77)

इसराईल की सन्तान में से जिन्होंने सत्य का इनकार किया उन पर दाऊद और मरयम के बेटे ईसा की ज़बान से लानत की गई, इसलिए कि उन्होंने नाफ़रमानी की और हद से बढ़ते रहे। वे एक-दूसरे को उस बुराई से न रोकते थे जो वे करते थे। कितना बुरा था जो वे करते थे। तुम उनमें से बहुतों को देखते हो कि सत्य के इनकारियों से दोस्ती गाँठते हैं। कितना बुरा है जो उनके जी ने उनके लिए आगे भेजा है, कि अल्लाह उन पर क्रुद्ध हुआ, और वे यातना में सदैव रहेंगे। और अगर वे अल्लाह पर और नबी पर और उस पर ईमान रखते जो उसकी ओर उतारा गया है, तो उन्हें दोस्त न बनाते; मगर उनमें से बहुत-से अवज्ञाकारी हैं। (78–81)

तुम ईमान वालों की दुश्मनी में सब लोगों से बढ़कर सख़्त यहूदियों को और उन्हें पाओगे जो अल्लाह के साथ साझी ठहराते हैं; और ईमान वालों से प्रेम में उनमें सबसे क़रीब तुम उन्हें पाओगे जो कहते हैं, "हम ईसाई हैं।" यह इसलिए कि उनमें पादरी और संन्यासी हैं, और इसलिए कि वे घमंड नहीं करते। और जब वे उसे सुनते हैं जो रसूल की ओर उतारा गया है, तो तुम देखते हो कि उनकी आँखें आँसुओं से छलक पड़ती हैं, उस सत्य के कारण जिसे उन्होंने पहचान लिया। वे कहते हैं, "ऐ हमारे रब, हम ईमान लाए, तो हमें गवाही देने वालों में लिख ले। और हम अल्लाह पर और उस सत्य पर जो हमारे पास आया है क्यों न ईमान लाएँ, जबकि हमें यह चाह है कि हमारा रब हमें नेक लोगों में शामिल कर ले?" तो उनके इस कहने के बदले अल्लाह ने उन्हें ऐसे बाग़ दिए जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जहाँ वे सदैव रहेंगे। और यही अच्छा करने वालों का बदला है; और जिन्होंने सत्य का इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया—वही दहकती आग वाले हैं। (82–86)

ऐ ईमान लाने वालो, उन पाक चीज़ों को हराम न ठहराओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं, और हद से न बढ़ो: निस्संदेह अल्लाह हद से बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता। और जो हलाल और पाक रोज़ी अल्लाह ने तुम्हें दी है उसमें से खाओ, और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, जिस पर तुम ईमान रखते हो। अल्लाह तुम्हारी उन क़समों पर तुम्हें न पकड़ेगा जो बेसोचे-समझे निकल जाएँ, मगर उन क़समों पर ज़रूर पकड़ेगा जिन्हें तुमने पक्का बाँधा हो। तो उसे तोड़ने का कफ़्फ़ारा दस मुहताजों को खाना खिलाना है, उस औसत दर्जे का जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो, या उन्हें कपड़ा पहनाना, या एक ग़ुलाम आज़ाद करना; फिर जिसे इसकी सामर्थ्य न हो, वह तीन दिन के रोज़े रखे। यह तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा है जब तुम क़सम खा बैठो। और अपनी क़समों की हिफ़ाज़त किया करो। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोलकर बयान करता है, ताकि तुम शुक्र करो। (87–89)

ऐ ईमान लाने वालो, नशे की चीज़ें, जुआ, थान और पाँसे के तीर शैतान के गन्दे कामों में से हैं; तो इनसे बचो, ताकि तुम सफल हो। शैतान तो बस यही चाहता है कि नशे और जुए के ज़रिये तुम्हारे बीच दुश्मनी और बैर डाल दे, और तुम्हें अल्लाह की याद से और नमाज़ से रोक दे। तो क्या तुम बाज़ आओगे? और अल्लाह की आज्ञा मानो और रसूल की आज्ञा मानो, और होशियार रहो। फिर अगर तुम मुँह मोड़ोगे, तो जान लो कि हमारे रसूल के ज़िम्मे बस साफ़-साफ़ सन्देश पहुँचा देना है। जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उन पर उस चीज़ का कोई गुनाह नहीं जो वे पहले खा-पी चुके, जबकि वे अल्लाह के प्रति सचेत रहें और ईमान रखें और अच्छे कर्म करें, फिर सचेत रहें और ईमान रखें, फिर सचेत रहें और अच्छा करें। और अल्लाह अच्छा करने वालों को पसन्द करता है। (90–93)

ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह तुम्हें ज़रूर उस शिकार के कुछ हिस्से से आज़माएगा जिस तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े पहुँच सकें, ताकि अल्लाह ज़ाहिर कर दे कि कौन बिन देखे उससे डरता है। फिर जो इसके बाद हद से बढ़ा उसके लिए दुखद यातना है। ऐ ईमान लाने वालो, जब तुम इहराम की हालत में हो तो शिकार न मारो। और तुममें से जो जान-बूझकर उसे मारे, तो उसका बदला चौपायों में से उसी जैसा एक जानवर है जो उसने मारा, जिसका फ़ैसला तुममें से दो न्यायप्रिय आदमी करें, वह काबा पहुँचने वाली क़ुरबानी के तौर पर भेजा जाए; या कफ़्फ़ारे के तौर पर मुहताजों को खाना खिलाना है, या उसके बराबर रोज़े, ताकि वह अपने किए का मज़ा चखे। जो पहले हो चुका उसे अल्लाह ने माफ़ कर दिया; मगर जो फिर ऐसा करेगा, अल्लाह उससे बदला लेगा। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, बदला लेने वाला है। तुम्हारे लिए समुद्र का शिकार और उसका खाना हलाल किया गया है, तुम्हारे और मुसाफ़िरों के फ़ायदे के लिए; मगर जब तक तुम इहराम की हालत में हो ख़ुश्की का शिकार तुम पर हराम है। और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, जिसके पास तुम इकट्ठे किए जाओगे। (94–96)

अल्लाह ने काबा को, उस प्रतिष्ठित घर को, लोगों के लिए क़ायम रहने का सहारा बनाया है, और इसी तरह प्रतिष्ठित महीने को, क़ुरबानी के जानवरों को और पट्टे वाले जानवरों को। यह इसलिए कि तुम जान लो कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और यह कि अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखता है। जान लो कि अल्लाह कठोर यातना देने वाला है, और यह कि अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। रसूल के ज़िम्मे बस सन्देश पहुँचा देना है; और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छिपाते हो। (97–99)

कह दो, “नापाक और पाक बराबर नहीं, चाहे नापाक की बहुतायत तुम्हें कितनी ही भली लगे। तो ऐ बुद्धि वालो, अल्लाह के प्रति सचेत रहो, ताकि तुम सफल हो।” ऐ ईमान लाने वालो, ऐसी चीज़ों के बारे में न पूछो जो अगर तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएँ तो तुम्हें बुरी लगें; और अगर तुम उनके बारे में उस समय पूछोगे जब क़ुरआन उतर रहा है, तो वे तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएँगी। अल्लाह ने तुम्हारा पिछला पूछना माफ़ कर दिया; और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सहनशील है। तुमसे पहले कुछ लोगों ने ऐसी ही बातें पूछी थीं, फिर वे उन्हीं के इनकारी हो गए। अल्लाह ने न कोई ‘बहीरा’ ठहराया है, न ‘साइबा’, न ‘वसीला’, न ‘हाम’; बल्कि जो

सत्य का इनकार करते हैं वे अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं, और उनमें से अधिकतर बुद्धि से काम नहीं लेते। और जब उनसे कहा जाता है, "आओ उसकी ओर जो अल्लाह ने उतारा है और रसूल की ओर," तो कहते हैं, "हमारे लिए वही काफ़ी है जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया।" क्या—चाहे उनके बाप-दादा कुछ न जानते हों और न राह पर रहे हों? ऐ ईमान लाने वालो, तुम पर अपनी जानों की ज़िम्मेदारी है; जो भटक गया वह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता अगर तुम राह पर हो। तुम सब को अल्लाह ही की ओर लौटना है, फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे। (100–105)

ऐ ईमान लाने वालो, जब तुममें से किसी के सामने मौत आ खड़ी हो और वह वसीयत कर रहा हो, तो तुम्हारे बीच गवाही हो—तुममें से दो न्यायप्रिय आदमी, या बाहर के दो दूसरे आदमी, अगर तुम ज़मीन में सफ़र कर रहे हो और मौत की मुसीबत तुम पर आ पड़े। उन दोनों को नमाज़ के बाद रोक लो, और अगर तुम्हें उन पर शक हो, तो वे अल्लाह की क़सम खाकर कहें, "हम इस क़सम को किसी दाम पर न बेचेंगे, चाहे कोई क़रीबी नातेदार ही क्यों न हो, और हम अल्लाह की गवाही को न छिपाएँगे, वरना हम निश्चय ही गुनाहगारों में होंगे।" फिर अगर पता चले कि वे दोनों गुनाह के दोषी हुए हैं, तो उनकी जगह दो और खड़े हों, उन लोगों में से जिनका हक़ पहले दोनों ने मारा है, और वे अल्लाह की क़सम खाकर कहें, "हमारी गवाही इन दोनों की गवाही से ज़्यादा सच्ची है, और हमने कोई ज़्यादती नहीं की, वरना हम निश्चय ही ज़ालिमों में होंगे।" इससे इसकी ज़्यादा उम्मीद है कि वे गवाही ठीक-ठीक वैसी ही दें जैसी वह थी, या इस बात से डरें कि उनकी क़समों के बाद दूसरी क़समें ली जाएँगी। और अल्लाह के प्रति सचेत रहो और सुनो: अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को राह नहीं दिखाता। (106–108)

जिस दिन अल्लाह रसूलों को इकट्ठा करेगा और पूछेगा, "तुम्हें क्या जवाब दिया गया था?" वे कहेंगे, "हमें कोई ज्ञान नहीं; निश्चय ही तू ही छिपी बातों का जानने वाला है।" तब अल्लाह कहेगा, "ऐ मरयम के बेटे ईसा, मेरे उस अनुग्रह को याद करो जो तुम पर और तुम्हारी माँ पर हुआ: जब मैंने पवित्र आत्मा के द्वारा तुम्हें शक्ति दी, कि तुम पालने में भी लोगों से बात करते थे और पकी उम्र में भी; और जब मैंने तुम्हें किताब और हिकमत, तौरात और इंजील सिखाई; और जब तुम मेरी अनुमति से मिट्टी से पक्षी जैसी सूरत बनाते, फिर उसमें फूँक मारते, तो वह मेरी अनुमति से पक्षी बन जाती; और जब तुम मेरी अनुमति से अंधे और कोढ़ी को अच्छा कर देते; और जब तुम मेरी अनुमति से मुर्दों को निकाल खड़ा करते; और जब मैंने इसराईल की सन्तान को तुमसे रोके रखा, जबकि तुम उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए और उनमें से जो सत्य के इनकारी थे उन्होंने कहा कि यह तो बस खुला जादू है।" और याद करो जब मैंने हवारियों के दिल में डाला, "मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ," तो उन्होंने कहा, "हम ईमान लाए; और गवाह रहो कि हम अल्लाह के आज्ञाकारी हैं।" (109–111)

और जब हवारियों ने कहा, "ऐ मरयम के बेटे ईसा, क्या तुम्हारा रब हम पर आसमान से खाने का भरा हुआ दस्तरख़्वान उतार सकता है?" उसने कहा, "अल्लाह के प्रति सचेत रहो, अगर तुम ईमान वाले हो।" उन्होंने कहा, "हम चाहते हैं कि उसमें से खाएँ, ताकि हमारे दिलों को इत्मीनान हो, और हम जान लें कि तुमने हमसे

सच कहा है, और हम उस पर गवाह हो जाएँ।" मरयम के बेटे ईसा ने कहा, "ऐ अल्लाह, हमारे रब, हम पर आसमान से एक भरा हुआ दस्तरख़्वान उतार, जो हमारे लिए ईद ठहरे—हमारे अगलों के लिए भी और हमारे पिछलों के लिए भी—और तेरी ओर से एक निशानी। और हमें रोज़ी दे, और तू सबसे अच्छा रोज़ी देने वाला है।" अल्लाह ने कहा, "मैं उसे तुम पर उतारूँगा; मगर इसके बाद तुममें से जो सत्य का इनकार करेगा, उसे मैं ऐसी यातना दूँगा जैसी सारे संसार में किसी और को न दूँगा।" (112–115)

और जब अल्लाह कहेगा, "ऐ मरयम के बेटे ईसा, क्या तुमने लोगों से कहा था: अल्लाह के सिवा मुझे और मेरी माँ को भी दो इलाह बना लो?" वह कहेगा, "तू पाक है! मेरा यह काम नहीं कि वह बात कहूँ जिसका मुझे कोई हक़ नहीं। अगर मैंने कही होती, तो तुझे ज़रूर मालूम होती। तू जानता है जो मेरे जी में है, और मैं नहीं जानता जो तेरे जी में है। निश्चय ही तू ही छिपी बातों का जानने वाला है। मैंने उनसे बस वही कहा जिसका तूने मुझे हुक्म दिया था: अल्लाह की इबादत करो, जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब। और जब तक मैं उनमें रहा, मैं उन पर गवाह रहा; फिर जब तूने मुझे उठा लिया, तो तू ही उन पर निगराँ था। और तू हर चीज़ का गवाह है। अगर तू उन्हें यातना दे, तो वे तेरे बन्दे हैं; और अगर तू उन्हें माफ़ कर दे, तो तू ही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है।" अल्लाह कहेगा, "यह वह दिन है जब सच्चों को उनकी सच्चाई लाभ देगी। उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जहाँ वे हमेशा-हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे उससे राज़ी हुए: यही सबसे बड़ी कामयाबी है।" आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनमें है सब की बादशाही अल्लाह ही की है, और वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। (116–120)

# 6. मवेशी (अल-अनआम)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और अँधेरों और उजाले को बनाया; फिर भी जो सत्य का इनकार करते हैं वे दूसरों को अपने रब के बराबर ठहराते हैं। वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर एक अवधि ठहराई—और एक अवधि उसके यहाँ ठहरी हुई है; फिर भी तुम सन्देह करते हो। और वही अल्लाह है आसमानों में भी और ज़मीन में भी। वह जानता है जो तुम छिपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो, और वह जानता है जो कुछ तुम कमाते हो। और उनके पास उनके रब की निशानियों में से कोई निशानी नहीं आती जिससे वे मुँह न मोड़ लेते हों। उन्होंने सत्य को झुठला दिया जब वह उनके पास आया; तो जल्द ही उनके पास उस चीज़ की ख़बरें आ जाएँगी जिसकी वे हँसी उड़ाते थे। (1–5)

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम उनसे पहले कितनी नस्लों को हलाक कर चुके हैं? उन्हें हमने ज़मीन में ऐसा जमाव दिया था जैसा तुम्हें नहीं दिया, और उन पर आसमान से मूसलाधार बारिश बरसाई, और उनके नीचे नहरें बहा दीं; फिर उनके गुनाहों के कारण हमने उन्हें हलाक कर दिया, और उनके बाद दूसरी नस्लें उठाईं। और ऐ नबी, अगर हम तुम पर काग़ज़ में लिखी हुई कोई किताब भी उतार देते, और वे उसे अपने हाथों से छू भी लेते, तब भी सत्य के इनकारी यही कहते, “यह तो बस खुला जादू है।” और वे कहते हैं, “इस पर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया?” और अगर हम फ़रिश्ता उतार देते, तो मामले का फ़ैसला ही हो जाता, फिर उन्हें मुहलत न दी जाती। और अगर हम उसे फ़रिश्ता बनाते, तो उसे भी आदमी ही की सूरत में बनाते, और उन्हें उसी उलझन में डाल देते जिसमें वे अब उलझ रहे हैं। (6–9)

तुमसे पहले भी रसूलों की हँसी उड़ाई जा चुकी है; तो जिन्होंने उनका मज़ाक़ उड़ाया उन्हें उसी चीज़ ने आ घेरा जिसकी वे हँसी उड़ाते थे। कह दो, “ज़मीन में चलो-फिरो और देखो कि झुठलाने वालों का क्या अंजाम हुआ।” कह दो, “आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वह किसका है?” कह दो, “अल्लाह का।” उसने दयालुता को अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है। वह तुम्हें क़ियामत के दिन के लिए ज़रूर इकट्ठा करेगा, जिसमें कोई सन्देह नहीं। जिन्होंने अपने-आप को घाटे में डाल लिया वे ईमान नहीं लाते। और उसी का है जो कुछ रात और दिन में बसता है, और वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। कह दो, “क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को अपना संरक्षक बनाऊँ, जो आसमानों और ज़मीन का रचयिता है, जो खिलाता है और उसे खिलाया नहीं जाता?” कह दो, “मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहले अल्लाह का आज्ञाकारी बनूँ, और कभी उसके साथ साझी ठहराने वालों में से न होऊँ।” कह दो, “अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ, तो मुझे एक बड़े दिन की यातना का डर है।” उस दिन जिससे वह टाल दी गई, उस पर उसने दया की; और यही खुली कामयाबी है। (10–16)

और अगर अल्लाह तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचाए, तो उसके सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं; और अगर वह तुम्हें कोई भलाई पहुँचाए—तो वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। और वह अपने बन्दों पर पूरा अधिकार रखता है, और वह हिकमत वाला, पूरी ख़बर रखने वाला है। कह दो, "सबसे बड़ी गवाही किसकी है?" कह दो, "अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह है। और यह क़ुरआन मेरी ओर वह्य किया गया है ताकि मैं इसके द्वारा तुम्हें सचेत करूँ, और उसे भी जिस तक यह पहुँचे। क्या तुम सचमुच गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे इलाह भी हैं?" कह दो, "मैं तो यह गवाही नहीं देता।" कह दो, "वह तो बस एक ही इलाह है, और मैं उससे बरी हूँ जो तुम साझी ठहराते हो।" जिन्हें हमने किताब दी है वे इसे ऐसे पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं; मगर जिन्होंने अपने-आप को घाटे में डाल लिया वे ईमान नहीं लाते। और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या उसकी आयतों को झुठलाए? निश्चय ही ज़ालिम सफल नहीं होते। और जिस दिन हम उन सब को इकट्ठा करेंगे, फिर साझी ठहराने वालों से कहेंगे, "कहाँ हैं तुम्हारे वे साझी जिनका तुम दावा करते थे?" फिर उनके पास इसके सिवा कोई बहाना न रहेगा कि कहें, "अल्लाह की क़सम, हमारे रब, हम साझी ठहराने वाले न थे।" देखो, वे अपने ही ख़िलाफ़ कैसा झूठ बोले, और जो कुछ वे गढ़ा करते थे वह सब उनसे गुम हो गया। (17–24)

और उनमें कुछ ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं; मगर हमने उनके दिलों पर परदे डाल दिए हैं, कि वे उसे न समझें, और उनके कानों में बहरापन। और अगर वे हर निशानी भी देख लें, तब भी उस पर ईमान न लाएँगे—यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास तुमसे झगड़ने आते हैं, तो सत्य के इनकारी कहते हैं, "यह तो बस अगलों की कहानियाँ हैं।" और वे दूसरों को इससे रोकते हैं और ख़ुद भी इससे दूर रहते हैं; मगर वे अपने सिवा किसी को हलाक नहीं करते, और उन्हें इसका एहसास नहीं। और काश तुम देखते जब वे आग के सामने खड़े किए जाएँगे और कहेंगे, "काश हम लौटा दिए जाएँ! फिर हम अपने रब की आयतों को न झुठलाएँ, और ईमान वालों में से हो जाएँ।" नहीं—बल्कि जो कुछ वे पहले छिपाते थे वह उन पर ज़ाहिर हो गया; और अगर वे लौटा भी दिए जाएँ, तो फिर वही करेंगे जिससे उन्हें रोका गया था: और निश्चय ही वे झूठे हैं। और वे कहते हैं, "जो कुछ है बस यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है, और हम दोबारा उठाए जाने वाले नहीं।" और काश तुम देखते जब वे अपने रब के सामने खड़े किए जाएँगे! वह कहेगा, "क्या यह सत्य नहीं?" वे कहेंगे, "क्यों नहीं, हमारे रब की क़सम।" वह कहेगा, "तो अब यातना चखो, इसलिए कि तुम सत्य का इनकार करते थे।" घाटे में पड़ गए वे लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया, यहाँ तक कि जब वह घड़ी उन पर अचानक आ जाएगी, तो कहेंगे, "हाय अफ़सोस, उस कोताही पर जो हमने इसके बारे में की!" और वे अपने बोझ अपनी पीठों पर लादे होंगे—कितना बुरा है वह बोझ जो वे उठाएँगे! और दुनिया की ज़िन्दगी तो बस खेल और तमाशा है; और आख़िरत का घर उनके लिए बेहतर है जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? (25–32)

ऐ नबी, हम ख़ूब जानते हैं कि जो कुछ वे कहते हैं वह तुम्हें दुखी करता है। तो वे तुम्हें नहीं झुठलाते; बल्कि ये ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इनकार करते हैं। और तुमसे पहले भी रसूल झुठलाए गए, तो उन्होंने

झुठलाए जाने और सताए जाने पर धैर्य रखा यहाँ तक कि हमारी मदद उन तक आ पहुँची। और अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं, और रसूलों की कुछ ख़बरें तुम तक पहुँच ही चुकी हैं। और अगर उनका मुँह मोड़ना तुम पर भारी है, तो अगर तुमसे हो सके कि ज़मीन में कोई सुरंग या आसमान में कोई सीढ़ी ढूँढ निकालो और उनके पास कोई निशानी ले आओ—तो ऐसा कर देखो। और अगर अल्लाह चाहता, तो उन सब को मार्गदर्शन पर इकट्ठा कर देता; तो तुम हरगिज़ नादानों में से न होना। जवाब तो वही देते हैं जो सुनते हैं; रहे मुर्दे, तो अल्लाह उन्हें उठाएगा, फिर वे उसी की ओर लौटाए जाएँगे। (33–36)

और वे कहते हैं, "इस पर इसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई?" कह दो, "अल्लाह इसकी सामर्थ्य रखता है कि कोई निशानी उतारे," मगर उनमें से अधिकतर नहीं जानते। ज़मीन में चलने वाला कोई जानवर और अपने दोनों परों से उड़ने वाला कोई पक्षी ऐसा नहीं जो तुम्हारी ही तरह के समुदाय न हों। हमने किताब में कोई चीज़ नहीं छोड़ी; फिर वे सब अपने रब की ओर इकट्ठे किए जाएँगे। और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया वे बहरे और गूँगे हैं, तह-पर-तह अँधेरों में। अल्लाह जिसे चाहता है भटकने देता है; और जिसे चाहता है सीधे मार्ग पर लगा देता है। कह दो, "ज़रा बताओ तो: अगर तुम पर अल्लाह की यातना आ जाए, या तुम पर वह घड़ी आ जाए, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे—अगर तुम सच्चे हो?" नहीं—बल्कि उसी को पुकारोगे, फिर अगर वह चाहेगा तो उस चीज़ को दूर कर देगा जिसके लिए तुमने उसे पुकारा, और तुम उन्हें भूल जाओगे जिन्हें उसके साथ साझी ठहराते हो। (37–41)

और हमने तुमसे पहले के समुदायों की ओर रसूल भेजे, फिर उन्हें तंगी और तकलीफ़ में पकड़ा, ताकि वे गिड़गिड़ाएँ। तो जब उन पर हमारी सख़्ती आई तब वे क्यों न गिड़गिड़ाए! मगर उनके दिल सख़्त हो गए, और शैतान ने उनके लिए उसे लुभावना बना दिया जो वे कर रहे थे। फिर जब वे उसे भूल गए जिसकी उन्हें नसीहत की गई थी, तो हमने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए, यहाँ तक कि जब वे उस पर इतरा रहे थे जो उन्हें दिया गया था, हमने उन्हें अचानक पकड़ लिया, तो वे निराश होकर रह गए। फिर उस क़ौम की जड़ काट दी गई जिसने ज़ुल्म किया था। और सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो सारे संसारों का रब है। (42–45)

कह दो, "ज़रा बताओ तो: अगर अल्लाह तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे, तो अल्लाह के सिवा कौन-सा इलाह है जो यह तुम्हें लौटा दे?" देखो, हम किस तरह तरह-तरह से निशानियाँ बयान करते हैं; फिर भी वे कतरा जाते हैं। कह दो, "ज़रा बताओ तो: अगर तुम पर अल्लाह की यातना अचानक या खुल्लम-खुल्ला आ जाए, तो क्या ज़ालिम लोगों के सिवा कोई और हलाक होगा?" और हम रसूलों को बस शुभ-सूचना देने वाले और सचेत करने वाले बनाकर ही भेजते हैं। फिर जो ईमान लाया और सुधर गया—उन्हें न कोई भय होगा, और न वे दुखी होंगे; और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया—उनकी अवज्ञा के कारण उन्हें यातना आ पकड़ेगी। कह दो, "मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, न मैं परोक्ष जानता हूँ, और न मैं तुमसे यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ। मैं तो बस उसी पर

चलता हूँ जो मेरी ओर वह्य किया जाता है।" कह दो, "क्या अंधा और आँखों वाला बराबर हो सकते हैं? तो क्या तुम सोचते नहीं?" (46–50)

और इसके द्वारा उन लोगों को सचेत करो जो डरते हैं कि वे अपने रब के पास इस हाल में इकट्ठे किए जाएँगे कि उसके सिवा उनका न कोई संरक्षक होगा न सिफ़ारिशी, ताकि वे अल्लाह के प्रति सचेत हो जाएँ। और उन लोगों को न धुत्कारो जो सुबह-शाम अपने रब को पुकारते हैं, उसकी प्रसन्नता चाहते हुए। उनके हिसाब में से कुछ भी तुम्हारे ज़िम्मे नहीं, और न तुम्हारे हिसाब में से कुछ उनके ज़िम्मे है, कि तुम उन्हें धुत्कार दो और ज़ालिमों में से हो जाओ। और इसी तरह हमने उनमें से कुछ को कुछ के द्वारा आज़माया है, ताकि वे कहें, "क्या यही हैं वे लोग जिन पर हमारे बीच अल्लाह ने अनुग्रह किया?" क्या अल्लाह शुक्र करने वालों को ख़ूब नहीं जानता? (51–53)

और जब तुम्हारे पास वे लोग आएँ जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं, तो कहो, "तुम पर सलाम हो। तुम्हारे रब ने दयालुता को अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है: कि तुममें से जो कोई नादानी में बुराई कर बैठे, फिर उसके बाद तौबा कर ले और सुधर जाए—तो वह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है।" और इसी तरह हम आयतें खोल-खोलकर बयान करते हैं, ताकि अपराधियों की राह साफ़ ज़ाहिर हो जाए। कह दो, "मुझे इससे रोका गया है कि मैं उनकी इबादत करूँ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो।" कह दो, "मैं तुम्हारी इच्छाओं पर नहीं चलूँगा, वरना मैं भटक गया और राह पाने वालों में से न रहा।" कह दो, "मैं अपने रब की ओर से एक खुले प्रमाण पर हूँ, और तुमने उसे झुठला दिया है। जिस चीज़ के लिए तुम जल्दी मचा रहे हो वह मेरे पास नहीं; फ़ैसला तो बस अल्लाह ही का है। वही सत्य बयान करता है, और वही सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है।" कह दो, "अगर वह चीज़ मेरे पास होती जिसके लिए तुम जल्दी मचा रहे हो, तो मेरे और तुम्हारे बीच मामला निपट चुका होता; और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है।" (54–58)

और उसी के पास परोक्ष की कुंजियाँ हैं; उन्हें उसके सिवा कोई नहीं जानता। और वह जानता है जो कुछ ख़ुश्की में है और जो कुछ समुद्र में है। और कोई पत्ता नहीं गिरता मगर वह उसे जानता है; और न ज़मीन के अँधेरों में कोई दाना है, और न कोई तर या ख़ुश्क चीज़, मगर वह एक खुली किताब में है।[9] (59)

और वही है जो रात को तुम्हारी जानें अपने क़ब्ज़े में ले लेता है और जानता है जो कुछ तुमने दिन में कमाया; फिर वह तुम्हें उसमें उठा खड़ा करता है, ताकि ठहराई हुई अवधि पूरी हो। फिर उसी की ओर तुम्हें लौटना है, फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे। और वह अपने बन्दों पर पूरा अधिकार रखता है। (60)

और वह तुम पर निगहबान भेजता है, यहाँ तक कि जब तुममें से किसी की मौत आ जाती है, तो हमारे भेजे हुए उसकी जान ले लेते हैं, और वे कोई कोताही नहीं करते। फिर वे अल्लाह की ओर लौटाए जाते हैं, जो उनका सच्चा मालिक है। सुन लो, फ़ैसला उसी का है, और वह सबसे जल्द हिसाब लेने वाला है। (61–62)

[9] ऑकेज़नलिज़्म (अवसरवाद का दर्शन) – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस

कह दो, "कौन है जो तुम्हें ख़ुश्की और समुद्र के अँधेरों से बचाता है, जब तुम उसे गिड़गिड़ाकर और चुपके-चुपके पुकारते हो: अगर उसने हमें इससे बचा लिया, तो हम ज़रूर शुक्रगुज़ारों में से होंगे?" कह दो, "अल्लाह ही तुम्हें इससे और हर बेचैनी से बचाता है; फिर भी तुम उसके साथ साझी ठहराते हो।" कह दो, "वह इसकी सामर्थ्य रखता है कि तुम पर तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पाँवों के नीचे से कोई यातना भेज दे, या तुम्हें गिरोह-गिरोह करके आपस में भिड़ा दे और तुम्हें एक-दूसरे की मार का मज़ा चखा दे।" देखो, हम किस तरह तरह-तरह से निशानियाँ बयान करते हैं, ताकि वे समझें। और तुम्हारी क़ौम ने उसे झुठला दिया, हालाँकि वह सत्य है। कह दो, "मैं तुम पर कोई दारोग़ा नहीं हूँ। हर ख़बर का एक ठहरा हुआ समय है, और जल्द ही तुम जान लोगे।" (63–67)

और जब तुम उन लोगों को देखो जो हमारी आयतों के बारे में बेहूदा बातों में लगे हुए हैं, तो उनसे मुँह फेर लो यहाँ तक कि वे किसी और बात में लग जाएँ। और अगर शैतान तुम्हें भुला दे, तो याद आ जाने के बाद ज़ालिम लोगों के साथ न बैठो। और जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं उन पर उनके हिसाब में से किसी चीज़ की ज़िम्मेदारी नहीं; हाँ, नसीहत कर देना उनका काम है, ताकि वे भी अल्लाह के प्रति सचेत हो जाएँ। और उन लोगों को छोड़ दो जिन्होंने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया है और जिन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोखे में डाल रखा है; मगर इसके द्वारा नसीहत करते रहो, कहीं कोई जान अपनी कमाई के बदले तबाही के हवाले न कर दी जाए। अल्लाह के सिवा उसका न कोई संरक्षक होगा न सिफ़ारिशी, और अगर वह हर तरह का फ़िदया भी देना चाहे, तो उससे क़बूल न किया जाएगा। यही वे लोग हैं जो अपनी कमाई के बदले तबाही के हवाले कर दिए गए: उनके लिए खौलता हुआ पानी पीने को है और दुखद यातना, इसलिए कि वे सत्य का इनकार करते थे। (68–70)

कह दो, "क्या हम अल्लाह के सिवा उसे पुकारें जो न हमें फ़ायदा दे सकता है न नुक़सान, और अल्लाह के हमें राह दिखा देने के बाद उलटे पाँव फिर जाएँ—उस आदमी की तरह जिसे शैतानों ने ज़मीन में भटका दिया हो, वह हैरान फिर रहा हो, जबकि उसके साथी उसे सीधी राह की ओर पुकार रहे हों: हमारे पास आ जा?" कह दो, "अल्लाह का मार्गदर्शन ही असल मार्गदर्शन है, और हमें हुक्म मिला है कि हम सारे संसारों के रब के आगे समर्पित हो जाएँ, और यह कि नमाज़ क़ायम करो और उसके प्रति सचेत रहो। और वही है जिसके पास तुम इकट्ठे किए जाओगे।" और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को सत्य के साथ पैदा किया। और जिस दिन वह कहेगा, "हो जा," तो वह हो जाएगा। उसकी बात ही सत्य है, और उसी की बादशाही होगी जिस दिन सूर फूँका जाएगा। वह परोक्ष और प्रत्यक्ष का जानने वाला है, और वह हिकमत वाला, पूरी ख़बर रखने वाला है। (71–73)

और जब इबराहीम ने अपने बाप आज़र से कहा, "क्या तुम बुतों को इलाह बनाते हो? मैं तो तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में देखता हूँ।" और इसी तरह हम इबराहीम को आसमानों और ज़मीन का राज्य दिखाते रहे, ताकि वह विश्वास करने वालों में से हो जाए। फिर जब रात उस पर छा गई, तो उसने एक तारा देखा। उसने कहा, "यह मेरा रब है।" फिर जब वह डूब गया, तो उसने कहा, "मैं डूब जाने वालों को पसन्द

नहीं करता।" फिर जब उसने चाँद को चमकता हुआ निकलते देखा, तो कहा, "यह मेरा रब है।" फिर जब वह भी डूब गया, तो उसने कहा, "अगर मेरा रब मुझे राह न दिखाए, तो मैं ज़रूर भटके हुए लोगों में से हो जाऊँगा।" फिर जब उसने सूरज को चमकता हुआ निकलते देखा, तो कहा, "यह मेरा रब है; यह सबसे बड़ा है।" फिर जब वह भी डूब गया, तो उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, मैं उन सबसे बरी हूँ जिन्हें तुम अल्लाह के साथ साझी ठहराते हो। मैंने तो एकनिष्ठ होकर अपना रुख़ उसकी ओर कर लिया जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और मैं अल्लाह के साथ साझी ठहराने वालों में से नहीं हूँ।" (74–79)

और उसकी क़ौम उससे झगड़ने लगी। उसने कहा, "क्या तुम मुझसे अल्लाह के बारे में झगड़ते हो, हालाँकि उसने मुझे राह दिखा दी है? और मैं उनसे नहीं डरता जिन्हें तुम उसके साथ साझी ठहराते हो, सिवाय इसके कि मेरा रब ही कुछ चाहे। मेरा रब अपने ज्ञान से हर चीज़ को घेरे हुए है। तो क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते? और मैं उनसे कैसे डरूँ जिन्हें तुम साझी ठहराते हो, जबकि तुम इससे नहीं डरते कि तुमने अल्लाह के साथ उसे साझी ठहराया है जिसके लिए उसने तुम पर कोई प्रमाण नहीं उतारा? तो दोनों गिरोहों में से कौन अमन का ज़्यादा हक़दार है, अगर तुम जानते हो?" जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान में ज़ुल्म की मिलावट न की—अमन उन्हीं के लिए है, और वही सही राह पर हैं। यह थी हमारी वह दलील, जो हमने इबराहीम को उसकी क़ौम के मुक़ाबले में दी। हम जिसे चाहते हैं दर्जों में ऊँचा करते हैं; निस्संदेह तुम्हारा रब हिकमत वाला, सब कुछ जानने वाला है। (80–83)

और हमने उसे इसहाक़ और याक़ूब दिए, हर एक को हमने राह दिखाई; और नूह को हमने इससे पहले राह दिखाई थी, और उसकी सन्तान में से दाऊद, सुलैमान, अय्यूब, यूसुफ़, मूसा और हारून को—और इसी तरह हम अच्छा करने वालों को बदला देते हैं—और ज़करिया, यह्या, ईसा और इलयास को—इनमें से हर एक नेक लोगों में से था—और इसमाईल, अल-यसअ, यूनुस और लूत को—इनमें से हर एक को हमने सारे संसार वालों पर श्रेष्ठता दी—और उनके बाप-दादा, उनकी सन्तान और उनके भाइयों में से भी कुछ को। हमने उन्हें चुन लिया और उन्हें सीधे मार्ग की राह दिखाई। यह अल्लाह का मार्गदर्शन है, जिसके द्वारा वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है राह दिखाता है। और अगर वे उसके साथ साझी ठहराते, तो जो कुछ उन्होंने किया था सब अकारथ हो जाता। यही वे लोग हैं जिन्हें हमने किताब, हुक्म और नुबुव्वत दी। फिर अगर ये लोग इनका इनकार करें, तो हमने इन्हें ऐसे लोगों के सुपुर्द कर दिया है जो इनका इनकार करने वाले नहीं। यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने राह दिखाई, तो तुम उन्हीं की राह पर चलो। कह दो, "मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता: यह तो बस सारे संसारों के लिए एक याददिहानी है।" (84–90)

और उन्होंने अल्लाह की वैसी क़द्र न की जैसी उसकी क़द्र का हक़ था, जब उन्होंने कहा, "अल्लाह ने किसी इनसान पर कुछ भी नहीं उतारा।" कह दो, "फिर वह किताब किसने उतारी थी जो मूसा लेकर आया था, लोगों के लिए रौशनी और मार्गदर्शन बनाकर, जिसे तुम अलग-अलग पन्नों में रखते हो, कुछ दिखाते हो और बहुत कुछ छिपा जाते हो, हालाँकि तुम्हें वह सिखाया गया जो न तुम जानते थे न तुम्हारे बाप-दादा?" कह दो, "अल्लाह ने उतारी।" फिर उन्हें छोड़ दो कि अपनी बेहूदा बातों में खेलते रहें। और यह एक किताब है जो

हमने उतारी है, बरकत वाली, जो उसकी पुष्टि करती है जो इससे पहले आ चुका, और ताकि तुम बस्तियों की माँ और उसके आस-पास वालों को सचेत करो। और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं वे इस पर ईमान रखते हैं, और वे अपनी नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं। और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े, या कहे, "मेरी ओर वह्य की गई है," हालाँकि उसकी ओर कुछ भी वह्य नहीं किया गया, या जो कहे, "मैं भी वैसा ही उतार दूँगा जैसा अल्लाह ने उतारा है"? और काश तुम देखते जब ज़ालिम मौत की सख़्तियों में होंगे और फ़रिश्ते अपने हाथ बढ़ा रहे होंगे: "निकालो अपनी जानें! आज तुम्हें अपमान की यातना बदले में दी जाएगी, इसलिए कि तुम अल्लाह के बारे में नाहक़ बातें कहते थे, और उसकी आयतों के मुक़ाबले में घमंड करते थे। और अब तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ गए, जैसे हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, और जो कुछ हमने तुम्हें दिया था वह सब अपने पीछे छोड़ आए। और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को नहीं देखते, जिनके बारे में तुम्हारा दावा था कि तुम्हारे मामलों में वे अल्लाह के साझी हैं। तुम्हारे आपस के नाते कट गए, और जो कुछ तुम दावा किया करते थे वह सब तुमसे गुम हो गया।" (91–94)

निस्संदेह अल्लाह ही दाने और गुठली को फाड़ता है। वह बेजान से जानदार को निकालता है, और वही जानदार से बेजान को निकालने वाला है। यही अल्लाह है—फिर तुम किधर फेरे जाते हो? वही सुबह की पौ फाड़ने वाला है; उसने रात को आराम के लिए बनाया, और सूरज और चाँद को हिसाब के लिए। यह उसका ठहराया हुआ है जो प्रभुत्वशाली, सब कुछ जानने वाला है। और वही है जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाए, ताकि तुम उनसे ख़ुश्की और समुद्र के अँधेरों में राह पाओ। हमने निशानियाँ उन लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान कर दी हैं जो जानते हैं। और वही है जिसने तुम्हें एक ही जान से पैदा किया, फिर तुम्हारे लिए एक ठहरने की जगह है और एक सौंपे जाने की जगह। हमने निशानियाँ उन लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान कर दी हैं जो समझते हैं। और वही है जिसने आसमान से पानी उतारा, फिर उसके द्वारा हमने हर तरह की उगने वाली चीज़ निकाली: फिर उससे हमने हरी-भरी कोंपलें निकालीं, जिनसे हम तह-पर-तह चढ़े हुए दाने निकालते हैं; और खजूर के पेड़ से, उसके गाभे से, झुके हुए गुच्छे; और अंगूरों के बाग़, और ज़ैतून और अनार, एक-दूसरे से मिलते-जुलते भी और अलग-अलग भी। उसके फल को देखो जब वह फलता है, और उसके पकने को: निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान रखते हैं। फिर भी उन्होंने जिन्नों को अल्लाह का साझी ठहरा दिया, हालाँकि उसी ने उन्हें पैदा किया; और बिना जाने-बूझे उसके लिए बेटे और बेटियाँ गढ़ लीं। वह पाक है! और वह उन बातों से बहुत ऊँचा है जो वे बयान करते हैं। वह आसमानों और ज़मीन का आविष्कारक है—उसका बेटा कैसे हो सकता है, जबकि उसकी कोई पत्नी नहीं? उसी ने हर चीज़ पैदा की, और वह हर चीज़ का ज्ञान रखता है। यही अल्लाह है, तुम्हारा रब: उसके सिवा कोई इलाह नहीं, हर चीज़ का पैदा करने वाला, तो उसी की इबादत करो। और वह हर चीज़ का निगहबान है। निगाहें उसे नहीं पा सकतीं, मगर वह निगाहों को पा लेता है; और वह सूक्ष्मदर्शी, पूरी ख़बर रखने वाला है। (95–103)

"तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से आँखें खोल देने वाली दलीलें आ चुकी हैं। तो जो देखेगा, अपने ही भले के लिए; और जो अंधा बनेगा, अपना ही नुक़सान करेगा। और मैं तुम पर कोई निगहबान नहीं हूँ।" और इसी तरह हम तरह-तरह से आयतें बयान करते हैं, और ताकि वे कहें, "तुमने पढ़ लिया है," और ताकि हम इसे उन लोगों के लिए स्पष्ट कर दें जो जानते हैं। उस पर चलो जो तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर वह्य किया गया है—उसके सिवा कोई इलाह नहीं—और साझी ठहराने वालों से मुँह फेर लो। और अगर अल्लाह चाहता, तो वे साझी न ठहराते। और हमने तुम्हें उन पर निगहबान नहीं बनाया, और न तुम उनके ज़िम्मेदार हो। (104–107)

और उन्हें बुरा-भला न कहो जिन्हें ये अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, कहीं ऐसा न हो कि ये दुश्मनी और नादानी में अल्लाह को बुरा-भला कहने लगें। इसी तरह हमने हर समुदाय के लिए उसके कर्म लुभावने बना दिए हैं; फिर उन्हें अपने रब ही की ओर लौटना है, तो वह उन्हें बता देगा जो कुछ वे करते रहे। और वे अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाते हैं कि अगर उनके पास कोई निशानी आ जाए तो वे उस पर ज़रूर ईमान ले आएँगे। कह दो, "निशानियाँ तो बस अल्लाह ही के अधिकार में हैं।" और तुम्हें क्या ख़बर कि जब वह आ भी जाए, तब भी वे ईमान न लाएँगे? और हम उनके दिलों और उनकी निगाहों को फेर देंगे, जैसे वे इस पर पहली बार ईमान न लाए, और हम उन्हें उनकी सरकशी में अंधों की तरह भटकने के लिए छोड़ देंगे। और अगर हम उनकी ओर फ़रिश्ते भी उतार देते, और मुर्दे उनसे बातें करने लगते, और हम हर चीज़ को उनके सामने ला इकट्ठा करते, तब भी वे ईमान लाने वाले न थे सिवाय इसके कि अल्लाह चाहे; मगर उनमें से अधिकतर नादानी करते हैं। और इसी तरह हमने हर नबी के लिए दुश्मन बनाए हैं: इनसानों और जिन्नों में के शैतान, जो धोखा देने के लिए एक-दूसरे के कान में चिकनी-चुपड़ी बातें डालते हैं। और अगर तुम्हारा रब चाहता, तो वे ऐसा न करते; तो उन्हें और उनके गढ़े हुए झूठ को छोड़ दो। और यह इसलिए कि उन लोगों के दिल उसकी ओर झुकें जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और वे उसे पसन्द करें, और ताकि जो कमाई वे कर रहे हैं करते रहें। (108–113)

कह दो, "तो क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और फ़ैसला करने वाला ढूँढ़ूँ, जबकि उसी ने तुम्हारी ओर यह किताब उतारी है, खोल-खोलकर बयान की हुई?" और जिन्हें हमने किताब दी है वे जानते हैं कि यह तुम्हारे रब की ओर से सत्य के साथ उतारी गई है; तो तुम हरगिज़ सन्देह करने वालों में से न होना। और तुम्हारे रब की बात सच्चाई और न्याय के साथ पूरी हो चुकी; उसकी बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। और अगर तुम ज़मीन में बसने वाले अधिकतर लोगों की बात मानोगे, तो वे तुम्हें अल्लाह की राह से भटका देंगे। वे तो बस अटकल के पीछे चलते हैं; और वे बस अनुमान ही लगाते हैं।[10] निस्संदेह तुम्हारा रब उसे ख़ूब जानता है जो उसकी राह से भटकता है, और वह उन्हें भी ख़ूब जानता है जो राह पर हैं। (114–117)

[10] **नास्तिकता की बुनियाद अटकल (ज़न्न) पर है: एक वैज्ञानिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या**

तो उसमें से खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो, अगर तुम उसकी आयतों पर ईमान रखते हो। और तुम्हें क्या हुआ है कि उसमें से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो, जबकि उसने तुम्हें खोलकर बता दिया है जो कुछ उसने तुम पर हराम किया है, सिवाय उसके जिसके लिए तुम मजबूर हो जाओ? और बहुत-से लोग बिना ज्ञान के अपनी इच्छाओं से दूसरों को भटकाते हैं। निस्संदेह तुम्हारा रब हद से बढ़ने वालों को ख़ूब जानता है। और खुला गुनाह भी छोड़ दो और छिपा भी: जो लोग गुनाह कमाते हैं उन्हें उसका बदला दिया जाएगा जो वे करते रहे। और उसमें से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, क्योंकि यह अवज्ञा है। और शैतान अपने दोस्तों के दिलों में डालते हैं कि वे तुमसे झगड़ें; और अगर तुमने उनकी बात मानी, तो तुम भी निश्चय ही साझी ठहराने वालों में से होगे। क्या वह जो मुर्दा था फिर हमने उसे जीवन दिया, और उसके लिए एक रौशनी कर दी जिसे लिए वह लोगों के बीच चलता है, उस जैसा हो सकता है जो तह-पर-तह अँधेरों में पड़ा हो जिनसे निकल नहीं पाता? इसी तरह सत्य के इनकारियों के लिए वह लुभावना बना दिया गया है जो वे करते रहे। और इसी तरह हमने हर बस्ती में उसके बड़े-बड़े अपराधी रखे, ताकि वे उसमें चालें चलें; हालाँकि वे अपनी चालें अपने ही ख़िलाफ़ चलते हैं, और उन्हें इसका एहसास नहीं। और जब उनके पास कोई निशानी आती है, तो कहते हैं, "हम हरगिज़ न मानेंगे जब तक हमें वैसा ही न दिया जाए जैसा अल्लाह के रसूलों को दिया गया।" अल्लाह ख़ूब जानता है कि अपना सन्देश कहाँ रखे। जल्द ही अपराधियों को अल्लाह के यहाँ ज़िल्लत और कठोर यातना पहुँचेगी, उन चालों के बदले जो वे चलते थे। तो अल्लाह जिसे राह दिखाना चाहता है, उसका सीना अपने आगे समर्पण के लिए खोल देता है; और जिसे भटकने देना चाहता है, उसका सीना तंग और घुटा हुआ कर देता है, मानो वह आसमान में चढ़ रहा हो। इसी तरह अल्लाह उन लोगों पर गन्दगी डाल देता है जो ईमान नहीं लाते। (118–125)

और यह तुम्हारे रब की राह है, सीधी। हमने आयतें उन लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान कर दी हैं जो नसीहत पकड़ते हैं। उनके लिए उनके रब के पास सलामती का घर है, और वही उनका संरक्षक है, उन कामों के कारण जो वे करते थे। (126–127)

और जिस दिन वह उन सब को इकट्ठा करेगा: "ऐ जिन्नों के गिरोह, तुमने तो इनसानों में से बहुतों को अपने बस में कर लिया।" और इनसानों में से उनके दोस्त कहेंगे, "ऐ हमारे रब, हमने एक-दूसरे से फ़ायदा उठाया, और अब हम अपनी उस अवधि को पहुँच गए जो तूने हमारे लिए ठहराई थी।" वह कहेगा, "आग तुम्हारा ठिकाना है, उसमें सदैव रहोगे—सिवाय इसके कि अल्लाह ही कुछ चाहे।" निस्संदेह तुम्हारा रब हिकमत वाला, सब कुछ जानने वाला है। और इसी तरह हम ज़ालिमों को एक-दूसरे पर हावी कर देते हैं, उस कमाई के कारण जो वे करते थे। "ऐ जिन्नों और इनसानों के गिरोह, क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे, जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाते और तुम्हें तुम्हारे इस दिन के मिलने से सचेत करते थे?" वे कहेंगे, "हम अपने ही ख़िलाफ़ गवाही देते हैं।" दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोखे में डाले रखा, और वे अपने ही ख़िलाफ़ गवाही देंगे कि वे सत्य के इनकारी थे। यह इसलिए कि तुम्हारा रब बस्तियों को ज़ुल्म के साथ इस हाल में हलाक करने वाला नहीं कि उनके रहने वाले बेख़बर हों। और हर एक के लिए उनके कर्मों के मुताबिक़ दर्जे हैं; और

तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं जो वे करते हैं। और तुम्हारा रब निस्पृह, दयालुता वाला है। अगर वह चाहे, तो तुम्हें हटा दे और तुम्हारी जगह जिसे चाहे ले आए, जैसे उसने तुम्हें दूसरे लोगों की नस्ल से उठाया। जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जा रहा है वह निश्चय ही आकर रहेगी, और तुम उससे बच निकलने वाले नहीं। कह दो, "ऐ मेरी क़ौम, तुम अपनी जगह काम किए जाओ; मैं भी काम कर रहा हूँ। जल्द ही तुम जान लोगे कि आख़िरी घर किसके लिए है। निश्चय ही ज़ालिम सफल नहीं होते।" (128–135)

और अल्लाह ने जो खेती और चौपाए पैदा किए हैं, उनमें से ये लोग उसका एक हिस्सा ठहराते हैं, और कहते हैं, "यह अल्लाह के लिए है"—अपने दावे के मुताबिक़—"और यह हमारे साझियों के लिए।" फिर जो उनके साझियों का है वह तो अल्लाह तक नहीं पहुँचता, मगर जो अल्लाह का है वह उनके साझियों तक पहुँच जाता है। कैसा बुरा फ़ैसला है जो वे करते हैं! और इसी तरह अल्लाह के साथ साझी ठहराने वालों में से बहुतों के लिए उनके साझियों ने अपनी औलाद के क़त्ल को लुभावना बना दिया है, ताकि उन्हें तबाह कर दें और उनके दीन को उन पर गड्ड-मड्ड कर दें। अगर अल्लाह चाहता, तो वे ऐसा न करते; तो उन्हें और उनके गढ़े हुए झूठ को छोड़ दो। और वे कहते हैं, "ये चौपाए और खेती वर्जित हैं; इन्हें बस वही खा सकता है जिसे हम चाहें"—अपने दावे के मुताबिक़—"और कुछ चौपाए हैं जिनकी पीठें हराम कर दी गई हैं, और कुछ चौपाए हैं जिन पर वे अल्लाह का नाम नहीं लेते"—उस पर झूठ गढ़ते हुए। वह उन्हें उनके गढ़े हुए झूठ का बदला देगा। और वे कहते हैं, "जो कुछ इन चौपायों के पेट में है वह ख़ास हमारे मर्दों के लिए है और हमारी पत्नियों पर हराम है; और अगर वह मुर्दा पैदा हो, तो उसमें सब शरीक हैं।" वह उन्हें उनके इस बयान का बदला देगा। वह हिकमत वाला, सब कुछ जानने वाला है। निश्चय ही घाटे में रहे वे लोग जिन्होंने नादानी से, बिना ज्ञान के, अपनी औलाद को क़त्ल किया और जो रोज़ी अल्लाह ने उन्हें दी थी उसे हराम ठहरा लिया, अल्लाह पर झूठ गढ़ते हुए। वे भटक गए और राह पाने वाले न हुए। (136–140)

और वही है जिसने बाग़ पैदा किए, टट्टियों पर चढ़ाए हुए भी और बिना चढ़ाए हुए भी, और खजूर के पेड़, और खेती जिसकी उपज तरह-तरह की होती है, और ज़ैतून और अनार, एक-दूसरे से मिलते-जुलते भी और अलग-अलग भी। उनके फल खाओ जब वे फलें, और कटाई के दिन उसका हक़ अदा करो; और फ़ुज़ूलख़र्ची न करो: वह फ़ुज़ूलख़र्ची करने वालों को पसन्द नहीं करता। और चौपायों में से कुछ बोझ उठाने वाले हैं और कुछ ज़बह के लिए। अल्लाह ने जो रोज़ी तुम्हें दी है उसमें से खाओ, और शैतान के क़दमों पर न चलो: वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। आठ जोड़े: भेड़ में से दो और बकरी में से दो। कह दो, "क्या उसने दोनों नर हराम किए हैं, या दोनों मादा, या वह जो दोनों मादाओं के पेट में है? मुझे ज्ञान के साथ बताओ, अगर तुम सच्चे हो।" और ऊँट में से दो और गाय में से दो। कह दो, "क्या उसने दोनों नर हराम किए हैं, या दोनों मादा, या वह जो दोनों मादाओं के पेट में है? या तुम उस समय मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया था?" फिर उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े, ताकि बिना ज्ञान के लोगों को भटकाए? अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। (141–144)

कह दो, "जो कुछ मेरी ओर वह्य किया गया है उसमें मैं किसी खाने वाले पर कोई चीज़ हराम नहीं पाता, सिवाय इसके कि वह मुर्दार हो, या बहता हुआ ख़ून, या सूअर का गोश्त—कि वह नापाक है—या गुनाह का वह चढ़ावा जो अल्लाह के सिवा किसी और के नाम किया गया हो। फिर जो कोई मजबूर हो जाए, न उसकी चाह रखता हो न ज़रूरत से आगे बढ़े—तो तुम्हारा रब बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है।" और जो लोग यहूदी हुए उन पर हमने हर नाख़ून वाला जानवर हराम किया; और गाय और भेड़-बकरी में से हमने उन पर उनकी चर्बी हराम की, सिवाय उसके जो उनकी पीठ या आँतों पर लगी हो, या जो हड्डी से मिली हुई हो। यह हमने उन्हें उनकी सरकशी का बदला दिया; और हम निश्चय ही सच्चे हैं। फिर अगर वे तुम्हें झुठलाएँ, तो कह दो, "तुम्हारा रब बड़ी समाई वाली दयालुता का मालिक है, मगर उसकी यातना अपराधी लोगों से फेरी नहीं जाएगी।" अल्लाह के साथ साझी ठहराने वाले कहेंगे, "अगर अल्लाह चाहता, तो न हम साझी ठहराते, न हमारे बाप-दादा, और न हम किसी चीज़ को हराम ठहराते।" इसी तरह उनसे पहले के लोगों ने भी झुठलाया, यहाँ तक कि उन्होंने हमारी यातना का मज़ा चखा। कह दो, "क्या तुम्हारे पास कोई ज्ञान है जिसे तुम हमारे सामने निकालकर रखो? तुम तो बस अटकल के पीछे चलते हो; और तुम बस अनुमान ही लगाते हो।" कह दो, "निर्णायक दलील तो अल्लाह ही की है। अगर वह चाहता, तो तुम सबको ज़रूर राह दिखा देता।" कह दो, "अपने वे गवाह लाओ जो गवाही दें कि अल्लाह ने इसे हराम किया है।" फिर अगर वे गवाही दें, तो तुम उनके साथ गवाही न देना, और उन लोगों की इच्छाओं पर न चलना जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं, जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और जो अपने रब के बराबर दूसरों को ठहराते हैं। (145–150)

कह दो, "आओ, मैं तुम्हें सुनाऊँ कि तुम्हारे रब ने तुम पर क्या हराम किया है: उसके साथ किसी चीज़ को साझी न ठहराओ; माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो; ग़रीबी के कारण अपनी औलाद को क़त्ल न करो—हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी; अश्लील कामों के पास न जाओ, चाहे वे खुले हों या छिपे; और किसी जान को, जिसे अल्लाह ने आदरणीय ठहराया है, क़त्ल न करो, मगर हक़ के साथ। इसका उसने तुम्हें हुक्म दिया है, ताकि तुम बुद्धि से काम लो। और यतीम के माल के पास न जाओ, मगर उस ढंग से जो सबसे अच्छा हो, यहाँ तक कि वह अपनी पुख़्ता उम्र को पहुँच जाए। और नाप और तौल न्याय के साथ पूरा करो—हम किसी जान पर उसकी सामर्थ्य से बढ़कर बोझ नहीं डालते। और जब बात कहो तो न्याय की कहो, चाहे मामला किसी रिश्तेदार ही का हो। और अल्लाह के अह्द को पूरा करो। इसका उसने तुम्हें हुक्म दिया है, ताकि तुम नसीहत पकड़ो। और यह कि यही मेरी राह है, सीधी, तो इसी पर चलो; और दूसरी राहों पर न चलो, कि वे तुम्हें उसकी राह से हटाकर तितर-बितर कर देंगी। इसका उसने तुम्हें हुक्म दिया है, ताकि तुम अल्लाह के प्रति सचेत हो जाओ।" (151–153)

फिर हमने मूसा को किताब दी, अच्छा करने वाले पर अपनी नेमत पूरी करते हुए, हर चीज़ को खोल-खोलकर बयान करते हुए, मार्गदर्शन और दयालुता बनाकर, ताकि वे अपने रब से मिलने पर ईमान लाएँ। और यह एक किताब है जो हमने उतारी है, बरकत वाली; तो इसकी पैरवी करो और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, ताकि तुम पर दया की जाए, कहीं तुम यह न कहो, "किताब तो बस हमसे पहले के दो गिरोहों पर उतारी

गई थी, और हम तो उनके पढ़ने-पढ़ाने से बेख़बर थे," या यह न कहो, "अगर हम पर किताब उतारी जाती, तो हम उनसे बढ़कर राह पर होते।" तो अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से खुला प्रमाण, और मार्गदर्शन और दयालुता आ चुकी है। फिर उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को झुठलाए और उनसे मुँह मोड़े? जो लोग हमारी आयतों से मुँह मोड़ते हैं, हम उन्हें उनके मुँह मोड़ने के बदले बुरी यातना देंगे। क्या वे इसी की राह देख रहे हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आएँ, या तुम्हारा रब आए, या तुम्हारे रब की कुछ निशानियाँ आएँ? जिस दिन तुम्हारे रब की कुछ निशानियाँ आ जाएँगी, किसी जान को उसका ईमान फ़ायदा न देगा अगर वह पहले ईमान न लाई थी, या उसने अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई थी। कह दो, "तो इन्तिज़ार करो; हम भी इन्तिज़ार कर रहे हैं।" (154–158)

जिन लोगों ने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और गिरोह-गिरोह बन गए, तुम्हारा उनसे कोई वास्ता नहीं; उनका मामला अल्लाह के हवाले है, फिर वह उन्हें बता देगा जो कुछ वे करते रहे। जो कोई एक नेकी लेकर आएगा उसके लिए उस जैसी दस हैं; और जो कोई एक बुराई लेकर आएगा उसे बस उसी के बराबर बदला दिया जाएगा, और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। कह दो, "मेरे रब ने मुझे सीधे मार्ग की राह दिखा दी है, एक सीधा-सच्चा दीन, इबराहीम का पंथ, जो एकनिष्ठ था; और वह अल्लाह के साथ साझी ठहराने वालों में से न था।" कह दो, "मेरी नमाज़, मेरी इबादतें, मेरा जीना और मेरा मरना, सब अल्लाह के लिए है, जो सारे संसारों का रब है; उसका कोई साझी नहीं। इसी का मुझे हुक्म दिया गया है, और मैं अल्लाह के आगे समर्पण करने वालों में सबसे पहला हूँ।" कह दो, "क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब ढूँढ़ूँ, जबकि वही हर चीज़ का रब है? हर जान जो कुछ कमाती है उसका बोझ उसी पर है, और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। फिर तुम्हें अपने रब ही की ओर लौटना है, और वह तुम्हें बता देगा जिन बातों में तुम मतभेद करते थे।" और वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में जानशीन बनाया, और तुममें से कुछ को कुछ पर दर्जों में ऊँचा किया, ताकि जो कुछ उसने तुम्हें दिया है उसमें तुम्हें आज़माए। निस्संदेह तुम्हारा रब जल्द सज़ा देने वाला है, और वह निश्चय ही बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (159–165)

# 7. ऊँचाइयाँ (अल-आराफ़)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

अलिफ़ लाम मीम साद। (1)

यह एक किताब है जो ऐ नबी, तुम्हारी ओर उतारी गई है—तो इसके कारण तुम्हारे सीने में कोई तंगी न हो—ताकि तुम इसके द्वारा सचेत करो, और यह ईमान वालों के लिए याददिहानी है। उस पर चलो जो तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है, और उसके सिवा दूसरे संरक्षकों के पीछे न चलो। तुम कितनी कम नसीहत पकड़ते हो! (2–3)

और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया! हमारी यातना उन पर रात को आई, या उस समय जब वे दोपहर को आराम कर रहे थे। फिर जब हमारी यातना उन पर आई, तो उनकी पुकार बस यही थी, "निश्चय ही हम ज़ालिम थे।" तो हम उनसे ज़रूर पूछेंगे जिनकी ओर रसूल भेजे गए, और हम रसूलों से भी ज़रूर पूछेंगे। फिर हम ज्ञान के साथ उन्हें सब कुछ सुना देंगे, क्योंकि हम कभी ग़ायब न थे। और उस दिन तौल बिलकुल ठीक होगी। फिर जिनके पलड़े भारी होंगे—वही सफल होने वाले हैं; और जिनके पलड़े हलके होंगे—वही हैं जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला, इसलिए कि वे हमारी आयतों के साथ ज़ुल्म करते थे। (4–9)

और हमने तुम्हें ज़मीन में जमाव दिया और उसमें तुम्हारे लिए जीविका के साधन रखे। तुम कितना कम शुक्र अदा करते हो! और हमने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हारा रूप बनाया, फिर फ़रिश्तों से कहा, "आदम के आगे सजदा करो।" तो उन्होंने सजदा किया—सिवाय इबलीस के; वह सजदा करने वालों में से न हुआ। उसने कहा, "तुझे किस चीज़ ने सजदा करने से रोका, जबकि मैंने तुझे हुक्म दिया था?" वह बोला, "मैं उससे बेहतर हूँ: तूने मुझे आग से पैदा किया, और उसे मिट्टी से।" उसने कहा, "उतर जा यहाँ से! तुझे यह हक़ नहीं कि यहाँ घमंड करे। निकल जा: तू ज़लीलों में से है।" वह बोला, "मुझे उस दिन तक मुहलत दे जब वे उठाए जाएँगे।" उसने कहा, "तू मुहलत पाने वालों में से है।" वह बोला, "चूँकि तूने मुझे गुमराह किया है, मैं भी तेरे सीधे मार्ग पर उनकी घात में ज़रूर बैठूँगा। फिर मैं उन पर उनके आगे से और उनके पीछे से, उनके दाएँ से और उनके बाएँ से आऊँगा, और तू उनमें से अधिकतर को शुक्रगुज़ार न पाएगा।" उसने कहा, "निकल जा यहाँ से, धिक्कारा हुआ, ठुकराया हुआ! उनमें से जो कोई तेरे पीछे चलेगा, मैं तुम सबसे जहन्नम को ज़रूर भर दूँगा। और ऐ आदम, तुम और तुम्हारी पत्नी जन्नत में रहो, और जहाँ से चाहो खाओ; मगर इस पेड़ के पास न जाना, वरना तुम दोनों ज़ालिमों में से हो जाओगे।" (10–19)

फिर शैतान ने उन दोनों के मन में वसवसा डाला, ताकि उनकी वह शर्मगाहें जो उनसे छिपाई गई थीं उन पर खोल दे। उसने कहा, "तुम्हारे रब ने तुम्हें इस पेड़ से बस इसलिए रोका है कि कहीं तुम फ़रिश्ते न बन जाओ, या अमर न हो जाओ।" और उसने उन दोनों से क़सम खाकर कहा, "मैं निश्चय ही तुम्हारे सच्चे

ख़ैरख़्वाहों में से हूँ।" इस तरह उसने धोखे से उन्हें नीचे उतार लिया। फिर जब उन्होंने उस पेड़ को चखा, तो उनकी शर्मगाहें उन पर खुल गईं, और वे अपने ऊपर जन्नत के पत्ते जोड़-जोड़कर रखने लगे। और उनके रब ने उन्हें पुकारा, "क्या मैंने तुम्हें उस पेड़ से रोका न था, और तुमसे कहा न था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है?" दोनों बोले, "ऐ हमारे रब, हमने अपने ऊपर ज़ुल्म किया। अगर तू हमें क्षमा न करे और हम पर दया न करे, तो हम ज़रूर घाटा उठाने वालों में से हो जाएँगे।" उसने कहा, "उतर जाओ, तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो! और ज़मीन में तुम्हारे लिए एक समय तक ठिकाना और जीवन-सामग्री है।" उसने कहा, "वहीं तुम जियोगे, वहीं तुम मरोगे, और वहीं से तुम निकाले जाओगे।" (20–25)

ऐ आदम की सन्तान, हमने तुम पर लिबास उतारा है जो तुम्हारी शर्मगाहों को ढाँके, और शोभा भी हो; मगर अल्लाह के प्रति सचेतता का लिबास—वही सबसे अच्छा है। यह अल्लाह की निशानियों में से है, ताकि वे नसीहत पकड़ें। ऐ आदम की सन्तान, कहीं शैतान तुम्हें बहका न दे, जैसे उसने तुम्हारे माँ-बाप को जन्नत से निकलवाया, उनके लिबास उनसे उतरवाकर, ताकि उन्हें उनकी शर्मगाहें दिखा दे। वह और उसका क़बीला तुम्हें वहाँ से देखते हैं जहाँ से तुम उन्हें नहीं देखते। हमने शैतानों को उन लोगों का दोस्त बना दिया है जो ईमान नहीं लाते। (26–27)

और जब वे कोई अश्लील काम करते हैं, तो कहते हैं, "हमने अपने बाप-दादा को यही करते पाया है, और अल्लाह ने हमें इसी का हुक्म दिया है।" कह दो, "अल्लाह अश्लीलता का हुक्म नहीं देता। क्या तुम अल्लाह के बारे में वह बात कहते हो जो तुम नहीं जानते?" कह दो, "मेरे रब ने न्याय का हुक्म दिया है। और हर इबादत की जगह पर अपना रुख़ उसी की ओर सीधा रखो, और दीन को उसी के लिए ख़ालिस करके उसे पुकारो। जैसे उसने तुम्हें पहले पैदा किया, वैसे ही तुम लौटोगे।" एक गिरोह को उसने राह दिखाई, और एक गिरोह पर गुमराही साबित हो चुकी: उन्होंने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को दोस्त बना लिया, और समझते हैं कि वे राह पर हैं। ऐ आदम की सन्तान, हर इबादत की जगह पर अपना अच्छा लिबास पहन लिया करो; और खाओ और पियो, मगर फ़ुज़ूलख़र्ची न करो: वह फ़ुज़ूलख़र्ची करने वालों को पसन्द नहीं करता। कह दो, "अल्लाह की उस शोभा को किसने हराम किया है जो उसने अपने बन्दों के लिए निकाली है, और रोज़ी की अच्छी चीज़ों को?" कह दो, "ये दुनिया की ज़िन्दगी में ईमान वालों के लिए हैं, और क़ियामत के दिन ख़ास उन्हीं की होंगी।" इसी तरह हम आयतें उन लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान करते हैं जो जानते हैं। (28–32)

कह दो, "मेरे रब ने तो बस अश्लील कामों को हराम किया है, चाहे वे खुले हों या छिपे, और गुनाह को, और नाहक़ ज़्यादती को, और इसको कि तुम अल्लाह के साथ उसे साझी ठहराओ जिसके लिए उसने कोई प्रमाण नहीं उतारा, और इसको कि तुम अल्लाह के बारे में वह बात कहो जो तुम नहीं जानते।" और हर समुदाय के लिए एक ठहराई हुई अवधि है। फिर जब उनकी अवधि आ जाती है, तो वे न एक घड़ी पीछे हट सकते हैं, न आगे बढ़ सकते हैं। (33–34)

ऐ आदम की सन्तान, जब कभी तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आएँ, जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाएँ—तो जो कोई अल्लाह के प्रति सचेत रहा और अपना सुधार कर लिया, उन पर न कोई भय होगा, न वे दुखी होंगे; मगर जो हमारी आयतों को झुठलाएँ और उनके मुक़ाबले में घमंड करें—वही आग वाले हैं, और वे उसमें सदैव रहेंगे। फिर उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या उसकी आयतों को झुठलाए? ऐसे लोगों को किताब में से उनका हिस्सा पहुँचता रहेगा; यहाँ तक कि जब हमारे भेजे हुए उनकी जान लेने उनके पास आएँगे, तो कहेंगे, "कहाँ हैं वे जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे?" वे कहेंगे, "वे हमसे खो गए," और वे अपने ही ख़िलाफ़ गवाही देंगे कि वे सत्य के इनकारी थे। वह कहेगा, "दाख़िल हो जाओ आग में, जिन्नों और इनसानों के उन समुदायों के साथ जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं।" जब भी कोई समुदाय दाख़िल होगा, अपनी बहन पर लानत करेगा; यहाँ तक कि जब सब एक-दूसरे के पीछे उसमें जमा हो जाएँगे, तो उनमें के पिछले अपने पहलों के बारे में कहेंगे, "ऐ हमारे रब, इन्होंने ही हमें भटकाया था, तो इन्हें आग की दोहरी यातना दे।" वह कहेगा, "हर एक के लिए दोहरी है, मगर तुम जानते नहीं।" और उनमें के पहले अपने पिछलों से कहेंगे, "तुम हमसे कुछ बेहतर न थे; तो अपनी कमाई के बदले यातना का मज़ा चखो।" (35–39)

जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनके मुक़ाबले में घमंड किया—उनके लिए आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जाएँगे, और न वे जन्नत में दाख़िल होंगे जब तक ऊँट सूई के नाके में से न गुज़र जाए। और इसी तरह हम अपराधियों को बदला देते हैं। जहन्नम उनका बिछौना होगा, और उनके ऊपर आग के ओढ़ने। और इसी तरह हम ज़ालिमों को बदला देते हैं। मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए—हम किसी जान पर उसकी सामर्थ्य से बढ़कर बोझ नहीं डालते—वही जन्नत वाले हैं, और वे उसमें सदैव रहेंगे। और उनके सीनों में जो भी कीना होगा हम निकाल देंगे। उनके नीचे नहरें बह रही होंगी, और वे कहेंगे, "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने हमें इसकी राह दिखाई। हम कभी राह न पा सकते थे अगर अल्लाह हमें राह न दिखाता। निश्चय ही हमारे रब के रसूल सत्य लेकर आए थे।" और उन्हें पुकारकर कहा जाएगा, "यह है वह जन्नत जिसके तुम वारिस बनाए गए हो, उन कामों के बदले जो तुम करते थे।" और जन्नत वाले आग वालों को पुकारेंगे, "हमसे हमारे रब ने जो वादा किया था उसे हमने सच्चा पाया। क्या तुमने भी उसे सच्चा पाया जो तुम्हारे रब ने वादा किया था?" वे कहेंगे, "हाँ।" फिर एक पुकारने वाला उनके बीच पुकारेगा, "अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर, जो दूसरों को अल्लाह की राह से रोकते और उसे टेढ़ा करना चाहते हैं, और जो आख़िरत का इनकार करते हैं।" (40–45)

और दोनों के बीच एक ओट होगी, और ऊँचाइयों पर कुछ लोग होंगे जो हर गिरोह को उनकी निशानियों से पहचानते होंगे। वे जन्नत वालों को पुकारकर कहेंगे, "तुम पर सलाम हो।" वे अभी उसमें दाख़िल न हुए होंगे, हालाँकि उसकी आस लगाए होंगे। और जब उनकी निगाहें आग वालों की ओर फेरी जाएँगी, तो कहेंगे, "ऐ हमारे रब, हमें ज़ालिम लोगों के साथ न करना।" और ऊँचाइयों वाले कुछ ऐसे लोगों को पुकारेंगे जिन्हें वे उनकी निशानियों से पहचानते होंगे, "तुम्हारा जमा किया हुआ और तुम्हारा घमंड तुम्हारे कुछ काम न आया।

क्या ये वही हैं जिनके बारे में तुम क़समें खाते थे कि अल्लाह इन पर कभी दया न करेगा?" उनसे तो कहा जाएगा, "जन्नत में दाख़िल हो जाओ: तुम पर न कोई भय होगा, न तुम दुखी होगे।" (46–49)

और आग वाले जन्नत वालों को पुकारेंगे, "हम पर कुछ पानी उँडेल दो, या उसमें से कुछ जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है।" वे कहेंगे, "अल्लाह ने ये दोनों चीज़ें सत्य के इनकारियों पर हराम कर दी हैं, जिन्होंने अपने दीन को तमाशा और खेल बना लिया था, और जिन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोखे में डाले रखा।" तो आज हम उन्हें भुला देंगे, जैसे वे अपने इस दिन के मिलने को भूले रहे, और जैसे वे हमारी आयतों का इनकार करते रहे। (50–51)

और हम उनके पास एक ऐसी किताब ले आए हैं जिसे हमने ज्ञान के साथ खोल-खोलकर बयान किया है, उन लोगों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता बनाकर जो ईमान रखते हैं। क्या वे बस इसके अंजाम के सामने आने की राह देख रहे हैं? जिस दिन इसका अंजाम सामने आ जाएगा, वे लोग जो इसे पहले भूले हुए थे कहेंगे, "निश्चय ही हमारे रब के रसूल सत्य लेकर आए थे। तो क्या अब हमारे कोई सिफ़ारिशी हैं जो हमारी सिफ़ारिश करें? या हमें वापस भेज दिया जाए, कि हम उससे अलग काम करें जो हम करते थे?" उन्होंने अपने आप को घाटे में डाल दिया, और जो कुछ वे गढ़ा करते थे वह सब उनसे गुम हो गया। (52–53)

निस्संदेह तुम्हारा रब अल्लाह है, जिसने आसमानों और ज़मीन को छह युगों में पैदा किया, फिर अर्श पर विराजमान हुआ। वह रात को दिन पर परदे की तरह ढाँक देता है, जो तेज़ी से उसके पीछे लगी चली आती है; और सूरज, चाँद और तारे उसके हुक्म से काम में लगे हुए हैं। सुन लो, पैदा करना भी उसी का है और हुक्म भी उसी का। बड़ी बरकत वाला है अल्लाह, सारे संसारों का रब! अपने रब को गिड़गिड़ाकर और चुपके-चुपके पुकारो: वह हद से बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता। और ज़मीन में उसके सुधार के बाद बिगाड़ न फैलाओ, और उसे भय और आशा के साथ पुकारो: निश्चय ही अल्लाह की दयालुता अच्छा करने वालों के क़रीब है। और वही है जो हवाओं को अपनी दयालुता के आगे-आगे शुभ-सूचना बनाकर भेजता है; यहाँ तक कि जब वे भारी बादल उठा लेती हैं, तो हम उन्हें किसी मुर्दा ज़मीन की ओर हाँक देते हैं, फिर उनसे पानी बरसाते हैं, फिर उससे हर तरह के फल निकालते हैं। इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे, ताकि तुम नसीहत पकड़ो। और अच्छी ज़मीन अपने रब के हुक्म से अपनी उपज निकालती है; मगर जो ज़मीन ख़राब है उससे बहुत थोड़े के सिवा कुछ नहीं निकलता। इसी तरह हम निशानियाँ तरह-तरह से उन लोगों के लिए बयान करते हैं जो शुक्र अदा करते हैं। (54–58)

हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा, तो उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो; उसके सिवा तुम्हारा कोई इलाह नहीं। मुझे तुम पर एक बड़े दिन की यातना का डर है।" उसकी क़ौम के सरदारों ने कहा, "हम तो तुम्हें खुली गुमराही में देखते हैं।" उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, मुझमें कोई गुमराही नहीं; बल्कि मैं सारे संसारों के रब की ओर से एक रसूल हूँ। मैं तुम्हें अपने रब के सन्देश पहुँचाता हूँ और तुम्हारा भला चाहता हूँ, और मैं अल्लाह की ओर से वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य है

कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से, तुम्हीं में के एक आदमी के द्वारा, याददिहानी आई, ताकि वह तुम्हें सचेत करे, और ताकि तुम अल्लाह के प्रति सचेत हो जाओ और तुम पर दया की जाए?" मगर उन्होंने उसे झुठला दिया; तो हमने उसे और उन लोगों को जो उसके साथ नौका में थे बचा लिया, और उन्हें डुबो दिया जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था। निश्चय ही वे अंधे लोग थे। (59–64)

और आद की ओर हमने उनके भाई हूद को भेजा। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो; उसके सिवा तुम्हारा कोई इलाह नहीं। तो क्या तुम उसके प्रति सचेत न होगे?" उसकी क़ौम के सरदारों ने, जो सत्य के इनकारी थे, कहा, "हम तो तुम्हें मूर्खता में पड़ा देखते हैं, और हम तुम्हें झूठों में से समझते हैं।" उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, मुझमें कोई मूर्खता नहीं; बल्कि मैं सारे संसारों के रब की ओर से एक रसूल हूँ। मैं तुम्हें अपने रब के सन्देश पहुँचाता हूँ, और मैं तुम्हारा भरोसेमन्द ख़ैरख़्वाह हूँ। क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य है कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से, तुम्हीं में के एक आदमी के द्वारा, याददिहानी आई, ताकि वह तुम्हें सचेत करे? और याद करो जब उसने तुम्हें नूह की क़ौम के बाद जानशीन बनाया और डील-डौल में तुम्हें ख़ूब बढ़ाया। तो अल्लाह की नेमतों को याद करो, ताकि तुम सफल हो।" वे बोले, "क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम अकेले अल्लाह की इबादत करें और उन्हें छोड़ दें जिनकी इबादत हमारे बाप-दादा करते थे? तो ले आओ हम पर वह चीज़ जिसकी तुम हमें धमकी देते हो, अगर तुम सच्चे हो।" उसने कहा, "तुम्हारे रब की ओर से तुम पर यातना और ग़ज़ब आ ही पड़ा है। क्या तुम मुझसे उन नामों पर झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने गढ़ लिए हैं, जिनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा? तो इन्तिज़ार करो; मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ।" फिर हमने उसे और उसके साथ वालों को अपनी दयालुता से बचा लिया, और उन लोगों की जड़ काट दी जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था और ईमान लाने वाले न थे। (65–72)

और समूद की ओर हमने उनके भाई सालेह को भेजा। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो; उसके सिवा तुम्हारा कोई इलाह नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक खुला प्रमाण आ चुका है: यह अल्लाह की ऊँटनी है, तुम्हारे लिए एक निशानी। तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में चरती फिरे, और इसे कोई तकलीफ़ न पहुँचाना, वरना तुम्हें एक दुखद यातना आ पकड़ेगी। और याद करो जब उसने तुम्हें आद के बाद जानशीन बनाया और तुम्हें ज़मीन में बसाया: तुम उसके मैदानों में महल बनाते हो और पहाड़ों को तराशकर घर बनाते हो। तो अल्लाह की नेमतों को याद करो, और ज़मीन में बिगाड़ फैलाते न फिरो।" उसकी क़ौम के सरदारों ने, जो घमंड करते थे, उन लोगों से जो कमज़ोर समझे जाते थे—उनमें से जो ईमान लाए थे—कहा, "क्या तुम जानते हो कि सालेह अपने रब की ओर से भेजा हुआ है?" उन्होंने कहा, "जिस चीज़ के साथ वह भेजा गया है हम उस पर ईमान रखते हैं।" घमंड करने वालों ने कहा, "जिस पर तुम ईमान लाए हो हम उसके इनकारी हैं।" फिर उन्होंने ऊँटनी की कूँचें काट डालीं और अपने रब के हुक्म से सरकशी की, और बोले, "ऐ सालेह, ले आओ हम पर वह चीज़ जिसकी तुम हमें धमकी देते हो, अगर तुम रसूलों में से हो।" तो उन्हें भूकम्प ने आ पकड़ा, और सुबह हुई तो वे अपने घरों में औंधे पड़े थे। फिर वह उनसे मुँह

फेरकर चला और कहा, "ऐ मेरी क़ौम, मैंने तुम्हें अपने रब का सन्देश पहुँचा दिया और तुम्हारा भला चाहा, मगर तुम भला चाहने वालों को पसन्द नहीं करते।" (73–79)

और लूत को भी, जब उसने अपनी क़ौम से कहा, "क्या तुम वह अश्लील काम करते हो जो तुमसे पहले सारे संसार में किसी ने नहीं किया? तुम औरतों को छोड़कर मर्दों के पास वासना से जाते हो। बल्कि तुम हर हद से गुज़र जाने वाले लोग हो।" उसकी क़ौम का जवाब बस यही था कि वे बोले, "इन्हें अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो: ये बड़े पाक-साफ़ बनने वाले लोग हैं।" फिर हमने उसे और उसके घर वालों को बचा लिया—सिवाय उसकी पत्नी के, जो पीछे रह जाने वालों में से थी—और हमने उन पर पत्थरों की बारिश बरसाई। तो देखो, अपराधियों का अंजाम कैसा हुआ! (80–84)

और मदयन की ओर हमने उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो; उसके सिवा तुम्हारा कोई इलाह नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक खुला प्रमाण आ चुका है। तो नाप और तौल पूरी करो, लोगों को उनकी चीज़ें घटाकर न दो, और ज़मीन में उसके सुधार के बाद बिगाड़ न फैलाओ। यही तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम ईमान वाले हो। और हर रास्ते पर घात लगाकर न बैठो कि धमकाओ और अल्लाह की राह से उन्हें रोको जो उस पर ईमान लाए हैं, और उसे टेढ़ा करना चाहो। और याद करो जब तुम थोड़े थे, फिर उसने तुम्हें बढ़ा दिया; और देखो, बिगाड़ फैलाने वालों का अंजाम कैसा हुआ। और अगर तुममें से एक गिरोह उस पर ईमान लाया है जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ, और एक गिरोह ईमान नहीं लाया, तो सब्र करो यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच फ़ैसला कर दे: वह सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है।" (85–87)

उसकी क़ौम के सरदारों ने, जो घमंड करते थे, कहा, "ऐ शुऐब, हम तुम्हें और उन लोगों को जो तुम्हारे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से ज़रूर निकाल देंगे, वरना तुम्हें हमारे पंथ में लौट आना होगा।" उसने कहा, "क्या उस हाल में भी जब हमें वह नापसन्द हो? हम तो अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे अगर तुम्हारे पंथ में लौट आएँ, इसके बाद कि अल्लाह ने हमें उससे छुटकारा दे दिया है। हमारे लिए यह सम्भव नहीं कि उसमें लौटें, सिवाय इसके कि अल्लाह, हमारा रब, ही चाहे। हमारा रब अपने ज्ञान से हर चीज़ को घेरे हुए है; अल्लाह ही पर हमने भरोसा किया। ऐ हमारे रब, हमारे और हमारी क़ौम के बीच सत्य के साथ फ़ैसला कर दे, और तू सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है।" और उसकी क़ौम के सरदारों ने, जो सत्य के इनकारी थे, कहा, "अगर तुम शुऐब के पीछे चले, तो निश्चय ही घाटे में पड़ोगे।" तो उन्हें भूकम्प ने आ पकड़ा, और सुबह हुई तो वे अपने घरों में औंधे पड़े थे। जिन्होंने शुऐब को झुठलाया—मानो वे वहाँ कभी बसे ही न थे। जिन्होंने शुऐब को झुठलाया—घाटे में वही रहे। फिर वह उनसे मुँह फेरकर चला और कहा, "ऐ मेरी क़ौम, मैंने तुम्हें अपने रब के सन्देश पहुँचा दिए और तुम्हारा भला चाहा। तो अब मैं उन लोगों पर कैसे दुख करूँ जो सत्य का इनकार करते हैं?" (88–93)

और हमने जिस बस्ती में भी कोई नबी भेजा, उसके लोगों को तंगी और तकलीफ़ में ज़रूर पकड़ा, ताकि वे गिड़गिड़ाएँ। फिर हमने बदहाली की जगह ख़ुशहाली दे दी, यहाँ तक कि वे ख़ूब बढ़े और कहने लगे, "हमारे बाप-दादा को भी तकलीफ़ और राहत पहुँचती रही है।" तो हमने उन्हें अचानक पकड़ लिया, और उन्हें ख़बर तक न थी। और अगर बस्तियों के लोग ईमान लाते और अल्लाह के प्रति सचेत रहते, तो हम उन पर आसमान और ज़मीन की बरकतें खोल देते; मगर उन्होंने झुठलाया, तो हमने उन्हें उनकी कमाई के बदले पकड़ लिया। (94–96)

तो क्या बस्तियों के लोग इससे निश्चिन्त हैं कि हमारी यातना उन पर रात को आ जाए, जबकि वे सो रहे हों? या क्या बस्तियों के लोग इससे निश्चिन्त हैं कि हमारी यातना उन पर दिन चढ़े आ जाए, जबकि वे खेल में लगे हों? क्या वे अल्लाह की तदबीर से निश्चिन्त हैं? अल्लाह की तदबीर से तो बस वही लोग निश्चिन्त होते हैं जो घाटे में पड़ने वाले हैं। क्या उन लोगों को, जो ज़मीन के पहले बसने वालों के बाद उसके वारिस होते हैं, इस बात ने राह नहीं दिखाई कि अगर हम चाहें तो उन्हें उनके गुनाहों पर पकड़ लें और उनके दिलों पर मुहर लगा दें, फिर वे कुछ न सुनें? ये वे बस्तियाँ हैं जिनके कुछ हाल हम तुम्हें सुनाते हैं। उनके रसूल उनके पास खुले प्रमाण लेकर आए, मगर वे उस चीज़ पर ईमान लाने वाले न थे जिसे पहले झुठला चुके थे। इसी तरह अल्लाह सत्य के इनकारियों के दिलों पर मुहर लगा देता है। और हमने उनमें से अधिकतर में अह्द का निबाह न पाया; और हमने उनमें से अधिकतर को अवज्ञाकारी ही पाया। (97–102)

फिर उनके बाद हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा, मगर उन्होंने उनके साथ ज़ुल्म किया। तो देखो, बिगाड़ फैलाने वालों का अंजाम कैसा हुआ! मूसा ने कहा, "ऐ फ़िरऔन, मैं सारे संसारों के रब की ओर से एक रसूल हूँ, इसका पाबन्द कि अल्लाह के बारे में सत्य के सिवा कुछ न कहूँ। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक खुला प्रमाण लेकर आया हूँ, तो इसराईल की सन्तान को मेरे साथ जाने दो।" वह बोला, "अगर तुम कोई निशानी लेकर आए हो, तो उसे पेश करो, अगर तुम सच्चे हो।" तो उसने अपनी लाठी डाल दी, और वह एकाएक एक साफ़ दिखता अजगर थी; और उसने अपना हाथ निकाला, और वह एकाएक देखने वालों के लिए सफ़ेद चमक रहा था। फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने कहा, "यह तो निश्चय ही एक माहिर जादूगर है, जो चाहता है कि तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से निकाल दे। तो अब तुम क्या राय देते हो?" वे बोले, "इसे और इसके भाई को अभी टाल दो, और शहरों में इकट्ठा करने वाले भेज दो कि हर माहिर जादूगर को तुम्हारे पास ले आएँ।" (103–112)

और जादूगर फ़िरऔन के पास आए और बोले, "हमें बदला तो ज़रूर मिलेगा, अगर हम ही ग़ालिब रहे?" उसने कहा, "हाँ, और तुम मेरे क़रीबी लोगों में से होगे।" वे बोले, "ऐ मूसा, या तो तुम डालो, या हम ही डालने वाले बनें?" उसने कहा, "तुम्हीं डालो।" फिर जब उन्होंने डाला, तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन पर दहशत बिठा दी, और बड़ा भारी जादू ले आए। और हमने मूसा की ओर वह्य की, "अपनी लाठी डाल दो," तो वह एकाएक उस स्वाँग को निगलने लगी जो उन्होंने रचा था। यूँ सत्य साबित हो गया, और जो कुछ वे कर रहे थे वह सब मिट गया। तो वे वहीं मात खा गए, और ज़लील होकर पलटे। और जादूगर सजदे में

गिर पड़े। वे बोले, "हम ईमान लाए सारे संसारों के रब पर, मूसा और हारून के रब पर।" फ़िरऔन ने कहा, "तुम इस पर ईमान ले आए इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ? निश्चय ही यह एक चाल है जो तुमने शहर में चली है, ताकि उसके रहने वालों को उससे निकाल दो। तो जल्द ही तुम जान लोगे। मैं तुम्हारे हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं से ज़रूर कटवाऊँगा, फिर तुम सबको सूली पर चढ़ाऊँगा।" वे बोले, "हमें तो अपने रब ही की ओर लौटना है। और तू हमसे बस इसी बात का बदला ले रहा है कि हम अपने रब की निशानियों पर ईमान ले आए जब वे हमारे पास आईं। ऐ हमारे रब, हम पर सब्र उँडेल दे, और हमें इस हाल में मौत दे कि हम तेरे आगे समर्पित हों।" (113–126)

फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने कहा, "क्या तू मूसा और उसकी क़ौम को छोड़ देगा कि वे ज़मीन में बिगाड़ फैलाएँ और तुझे और तेरे इलाहों को छोड़ दें?" उसने कहा, "हम उनके बेटों को क़त्ल करेंगे और उनकी औरतों को ज़िन्दा रहने देंगे; हमें उन पर पूरा क़ाबू हासिल है।" मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, "अल्लाह से मदद माँगो और सब्र करो। ज़मीन अल्लाह की है; वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उसका वारिस बनाता है, और आख़िरी अंजाम उन्हीं का है जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं।" वे बोले, "हम तुम्हारे आने से पहले भी सताए गए, और तुम्हारे आने के बाद भी।" उसने कहा, "हो सकता है तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और तुम्हें ज़मीन में जानशीन बनाए, फिर देखे कि तुम कैसे काम करते हो।" (127–129)

और हमने फ़िरऔन के लोगों को सूखे के वर्षों और फलों की कमी में पकड़ा, ताकि वे नसीहत पकड़ें। मगर जब उन्हें भलाई पहुँचती, तो कहते, "यह तो हमारा हक़ है"; और जब उन पर कोई बुराई आ पड़ती, तो उसे मूसा और उसके साथ वालों की नहूसत ठहराते। सुन लो, उनकी नहूसत तो अल्लाह ही के पास है, मगर उनमें से अधिकतर जानते नहीं। और वे बोले, "तुम हम पर जादू करने के लिए चाहे कोई भी निशानी ले आओ, हम तुम्हारी बात मानने वाले नहीं।" तो हमने उन पर तूफ़ान, टिड्डियाँ, जुएँ, मेंढक और ख़ून भेजे—अलग-अलग निशानियाँ; मगर उन्होंने घमंड किया, और वे अपराधी लोग थे। और जब भी उन पर कोई आफ़त आ पड़ती, तो कहते, "ऐ मूसा, अपने रब से हमारे लिए उस अह्द के वास्ते से दुआ करो जो उसने तुमसे कर रखा है। अगर तुमने हमसे यह आफ़त हटा दी, तो हम ज़रूर तुम्हारी बात मान लेंगे और इसराईल की सन्तान को तुम्हारे साथ जाने देंगे।" मगर जब हम उनसे वह आफ़त एक ऐसी अवधि तक के लिए हटा देते जिस तक उन्हें पहुँचना ही था, तो वे तुरन्त अपनी बात तोड़ देते। तो हमने उनसे बदला लिया और उन्हें समुद्र में डुबो दिया, इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे बेपरवाह रहे। और जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे उन्हें हमने उस ज़मीन के पूरब और पश्चिम का वारिस बना दिया जिसमें हमने बरकत रखी थी। और इसराईल की सन्तान के हक़ में तुम्हारे रब की भली बात उनके सब्र के कारण पूरी हुई, और हमने वह सब मिटा दिया जो फ़िरऔन और उसकी क़ौम बनाती थी और जो कुछ वे ऊँचा उठाते थे। (130–137)

और हमने इसराईल की सन्तान को समुद्र के पार उतार दिया, तो वे ऐसे लोगों के पास पहुँचे जो अपने कुछ बुतों से लगे बैठे थे। वे बोले, "ऐ मूसा, हमारे लिए भी एक इलाह बना दो, जैसे इनके इलाह हैं।" उसने कहा,

“तुम बड़े नादान लोग हो। ये लोग जिस काम में लगे हैं वह बरबाद होने वाला है, और जो कुछ ये कर रहे हैं वह सरासर बातिल है।” उसने कहा, “क्या मैं अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए कोई और इलाह ढूँढूँ, हालाँकि उसी ने तुम्हें सारे संसार वालों पर श्रेष्ठता दी है?” और याद करो जब हमने तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुटकारा दिया, जो तुम्हें बदतरीन यातना देते थे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल करते और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा रहने देते थे—और इसमें तुम्हारे रब की ओर से बड़ी आज़माइश थी। (138–141)

और हमने मूसा से तीस रातों का वादा ठहराया, और दस और से उन्हें पूरा किया, तो उसके रब की ठहराई हुई मुद्दत चालीस रातें पूरी हुई। और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, “मेरी क़ौम में मेरी जगह सँभालो; ठीक काम करना, और बिगाड़ फैलाने वालों की राह पर न चलना।” और जब मूसा हमारे ठहराए हुए समय पर आया और उसके रब ने उससे बात की, तो उसने कहा, “ऐ मेरे रब, मुझे अपना दीदार करा, कि मैं तुझे देखूँ।” उसने कहा, “तुम मुझे हरगिज़ न देख सकोगे; मगर पहाड़ की ओर देखो: अगर वह अपनी जगह ठहरा रहा, तो तुम मुझे देख लोगे।” फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर अपना जलवा डाला, तो उसे चूर-चूर कर दिया, और मूसा बेहोश होकर गिर पड़ा। फिर जब होश में आया, तो बोला, “तू पाक है! मैं तेरे आगे तौबा करता हूँ, और मैं सबसे पहला ईमान लाने वाला हूँ।” उसने कहा, “ऐ मूसा, मैंने अपने सन्देशों और अपने कलाम के द्वारा तुम्हें सब लोगों पर चुन लिया है। तो जो कुछ मैंने तुम्हें दिया है उसे लो, और शुक्रगुज़ारों में से हो जाओ।” (142–144)

और हमने उसके लिए तख़्तियों पर हर चीज़ के बारे में नसीहत, और हर चीज़ का खुला बयान लिख दिया: “इन्हें मज़बूती से थामो, और अपनी क़ौम को हुक्म दो कि इनकी सबसे अच्छी बातों को थामे रहें। जल्द ही मैं तुम्हें अवज्ञाकारियों का घर दिखाऊँगा।” मैं अपनी निशानियों से उन लोगों को फेर दूँगा जो ज़मीन में नाहक़ घमंड करते हैं। और अगर वे हर निशानी देख लें, तब भी उस पर ईमान न लाएँगे; और अगर सही राह देखें, तो उसे अपनी राह न बनाएँगे; मगर अगर गुमराही की राह देखें, तो उसे अपनी राह बना लेंगे। यह इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे बेपरवाह रहे। और जिन लोगों ने हमारी आयतों को और आख़िरत के मिलने को झुठलाया—उनके कर्म अकारथ गए। क्या उन्हें उसके सिवा किसी और चीज़ का बदला मिलेगा जो वे करते थे? (145–147)

और मूसा की क़ौम ने उसके पीछे अपने ज़ेवरों से एक बछड़ा बना लिया—महज़ एक धड़, जिसमें से गाय की-सी आवाज़ निकलती थी। क्या उन्होंने न देखा कि वह न उनसे बात कर सकता है न उन्हें कोई राह दिखा सकता है? उन्होंने उसे पूज्य बना लिया, और वे ज़ालिम थे। और जब वे पछताए, और देखा कि वे भटक गए हैं, तो बोले, “अगर हमारे रब ने हम पर दया न की और हमें क्षमा न किया, तो हम ज़रूर घाटा उठाने वालों में से हो जाएँगे।” और जब मूसा ग़ुस्से और रंज में भरा हुआ अपनी क़ौम की ओर लौटा, तो उसने कहा, “मेरे जाने के बाद तुमने मेरी जगह बहुत बुरा किया! क्या तुमने अपने रब के हुक्म के लिए जल्दी मचा दी?” और उसने तख़्तियाँ डाल दीं और अपने भाई का सिर पकड़कर उसे अपनी ओर खींचने लगा। हारून ने कहा, “ऐ मेरी माँ के बेटे, इन लोगों ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझे मार डालते। तो मेरे दुश्मनों को

मुझ पर हँसने का मौक़ा न दो, और मुझे ज़ालिम लोगों में न गिनो।" उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मुझे और मेरे भाई को क्षमा कर दे, और हमें अपनी दयालुता में दाख़िल कर ले, और तू दया करने वालों में सबसे बढ़कर दयावान है।" जिन लोगों ने बछड़े को पूज्य बनाया—उन्हें उनके रब का ग़ज़ब आ पकड़ेगा, और दुनिया की ज़िन्दगी में ज़िल्लत। और इसी तरह हम झूठ गढ़ने वालों को बदला देते हैं। और जिन्होंने बुरे काम किए, फिर उसके बाद तौबा कर ली और ईमान ले आए—निश्चय ही उसके बाद तुम्हारा रब बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (148–153)

और जब मूसा का ग़ुस्सा ठंडा हुआ, तो उसने तख़्तियाँ उठा लीं, जिनकी लिखावट में उन लोगों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता थी जो अपने रब से डरते हैं। और मूसा ने हमारे ठहराए हुए समय के लिए अपनी क़ौम के सत्तर आदमी चुने; फिर जब उन्हें सख़्त भूकम्प ने आ पकड़ा, तो उसने कहा, "ऐ मेरे रब, अगर तू चाहता, तो इन्हें पहले ही हलाक कर देता, और मुझे भी। क्या तू हमें उस काम पर हलाक करेगा जो हममें के नादानों ने किया? यह तो बस तेरी आज़माइश है, जिसके द्वारा तू जिसे चाहता है भटकने देता है और जिसे चाहता है राह दिखाता है। तू ही हमारा संरक्षक है, तो हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर: तू सबसे अच्छा क्षमा करने वाला है। और हमारे लिए इस दुनिया में भी भलाई लिख दे और आख़िरत में भी: हम तेरी ही ओर पलट आए हैं।" उसने कहा, "मेरी यातना—उसे मैं जिस पर चाहता हूँ डालता हूँ; मगर मेरी दयालुता हर चीज़ पर छाई हुई है। तो मैं उसे उन लोगों के लिए लिख दूँगा जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं और ज़कात देते हैं, और जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं—जो उस रसूल, उस उम्मी नबी की पैरवी करते हैं, जिसका उल्लेख वे अपने पास तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं। वह उन्हें भलाई का हुक्म देता है और बुराई से रोकता है; वह उनके लिए अच्छी चीज़ें हलाल करता है और गन्दी चीज़ें उन पर हराम करता है; और उन पर से उनके बोझ और वे बेड़ियाँ उतारता है जो उन पर थीं। तो जो लोग उस पर ईमान लाए, उसका आदर किया, उसकी मदद की, और उस रौशनी के पीछे चले जो उसके साथ उतारी गई है—वही सफल होने वाले हैं।" कह दो, "ऐ लोगो, मैं तुम सबकी ओर अल्लाह का रसूल हूँ—उसका जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है। उसके सिवा कोई इलाह नहीं; वही ज़िन्दगी देता है और वही मौत देता है। तो ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल, उस उम्मी नबी पर, जो अल्लाह और उसकी बातों पर ईमान रखता है, और उसकी पैरवी करो, ताकि तुम राह पा जाओ।" (154–158)

और मूसा की क़ौम में एक समुदाय ऐसा भी है जो सत्य के साथ राह दिखाता है और उसी के अनुसार न्याय करता है। और हमने उन्हें बारह घरानों में बाँटकर अलग-अलग समुदाय बना दिया। और जब उसकी क़ौम ने उससे पानी माँगा, तो हमने मूसा की ओर वह्य की, "अपनी लाठी चट्टान पर मारो," तो उससे बारह सोते फूट निकले; हर गिरोह ने अपना घाट जान लिया। और हमने उन पर बादल की छाया की, और उन पर मन्न और सलवा उतारा: "खाओ उन अच्छी चीज़ों में से जो हमने तुम्हें दी हैं।" और उन्होंने हम पर कोई ज़ुल्म नहीं किया; बल्कि वे अपने ही ऊपर ज़ुल्म करते रहे। और जब उनसे कहा गया, "इस बस्ती में बस जाओ, और इसमें जहाँ से चाहो खाओ, और कहो, हमारे बोझ हमसे उतार दे, और दरवाज़े में झुके हुए दाख़िल हो: हम

तुम्हारी ख़ताएँ क्षमा कर देंगे, और अच्छा करने वालों को हम और ज़्यादा देंगे"—मगर उनमें से जो ज़ालिम थे उन्होंने उस बात को, जो उनसे कही गई थी, दूसरी बात से बदल डाला; तो हमने उनके ज़ुल्म के कारण उन पर आसमान से एक आफ़त भेजी। (159–162)

और उनसे उस बस्ती का हाल पूछो जो समुद्र के किनारे थी, जब वे सब्त के मामले में हद से बढ़ते थे: उनके सब्त के दिन उनकी मछलियाँ खुलकर उनके सामने आतीं, मगर जिस दिन उनका सब्त न होता वे न आतीं। इस तरह हम उन्हें उनकी अवज्ञा के कारण आज़माते थे। और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा, "तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है या कठोर यातना देने वाला है?" तो उन्होंने कहा, "तुम्हारे रब के सामने अपनी ज़िम्मेदारी से बरी होने के लिए, और इसलिए कि शायद वे अल्लाह के प्रति सचेत हो जाएँ।" फिर जब वे उसे भूल गए जिसकी उन्हें याद दिलाई गई थी, तो हमने उन्हें बचा लिया जो बुराई से रोकते थे, और ज़ुल्म करने वालों को उनकी अवज्ञा के बदले बुरी यातना में पकड़ लिया। फिर जब वे उस काम में सरकशी करने लगे जिससे उन्हें रोका गया था, तो हमने उनसे कहा, "हो जाओ बन्दर, धिक्कारे हुए!" और याद करो जब तुम्हारे रब ने एलान कर दिया कि वह क़ियामत के दिन तक उन पर ऐसे लोगों को ज़रूर भेजता रहेगा जो उन्हें बुरी तकलीफ़ देंगे। निस्संदेह तुम्हारा रब जल्द सज़ा देने वाला है, और वह निश्चय ही बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (163–167)

और हमने उन्हें ज़मीन में अलग-अलग समुदाय बनाकर बिखेर दिया, उनमें कुछ नेक हैं और कुछ इससे भिन्न, और हमने उन्हें अच्छी और बुरी हालतों से आज़माया, ताकि वे पलट आएँ। फिर उनके बाद ऐसे लोग उनके जानशीन हुए जो किताब के वारिस बने: वे इस तुच्छ दुनिया का क्षणिक माल ले लेते हैं और कहते हैं, "हमें क्षमा कर दिया जाएगा"; और अगर वैसा ही माल फिर उनके सामने आए, तो उसे भी ले लेंगे। क्या उनसे किताब का यह अह्द नहीं लिया गया था कि वे अल्लाह के बारे में सत्य के सिवा कुछ न कहेंगे? और जो कुछ उसमें है उसे उन्होंने पढ़ भी लिया है। और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? और जो लोग किताब को मज़बूती से थामे रहते हैं और नमाज़ क़ायम रखते हैं—हम सुधार करने वालों का बदला अकारथ नहीं करते। और जब हमने पहाड़ को उनके ऊपर इस तरह उठाया मानो वह कोई छत्र हो, और उन्होंने समझा कि वह उन पर गिरने ही वाला है: "जो कुछ हमने तुम्हें दिया है उसे मज़बूती से थामो, और जो कुछ उसमें है उसे याद रखो, ताकि तुम अल्लाह के प्रति सचेत हो जाओ।" (168–171)

और जब तुम्हारे रब ने आदम की सन्तान से, उनकी पीठों से, उनकी नस्ल निकाली, और उन्हें ख़ुद उन्हीं पर गवाह बनाया: "क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ?" वे बोले, "क्यों नहीं, हम गवाही देते हैं।" यह इसलिए कि कहीं तुम क़ियामत के दिन यह न कहो, "हम तो इससे बेख़बर थे," या यह न कहो, "साझी तो हमसे पहले हमारे बाप-दादा ने ठहराए थे, और हम तो उनके बाद उनकी नस्ल भर थे। तो क्या तू हमें उस काम पर हलाक करेगा जो बातिल पर चलने वालों ने किया?" और इसी तरह हम आयतें खोल-खोलकर बयान करते हैं, ताकि वे पलट आएँ। (172–174)

और उन्हें उस आदमी का हाल सुनाओ जिसे हमने अपनी आयतें दीं, मगर वह उनसे निकल भागा; तो शैतान उसके पीछे लग गया, और वह भटके हुए लोगों में से हो गया। और अगर हम चाहते, तो उन्हीं के द्वारा उसे ऊँचा उठा देते; मगर वह ज़मीन ही से चिमटा रहा और अपनी इच्छा के पीछे चला। तो उसकी मिसाल कुत्ते की-सी है: अगर तुम उसे धुत्कारो तब भी ज़बान लटकाए हाँफता है, और अगर उसे छोड़ दो तब भी ज़बान लटकाए हाँफता है। यही मिसाल है उन लोगों की जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं। तो तुम यह क़िस्सा सुनाओ, ताकि वे सोच-विचार करें। बुरी मिसाल है उन लोगों की जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं; और वे अपने ही ऊपर ज़ुल्म करते रहे। जिसे अल्लाह राह दिखाए वही राह पाने वाला है; और जिन्हें वह भटकने दे—वही घाटे में हैं। और हमने जहन्नम के लिए बहुत-से जिन्न और इनसान पैदा किए हैं: उनके पास दिल हैं जिनसे वे समझते नहीं, आँखें हैं जिनसे वे देखते नहीं, और कान हैं जिनसे वे सुनते नहीं। वे चौपायों की तरह हैं—बल्कि उनसे भी ज़्यादा भटके हुए। वही हैं जो बेपरवाह हैं। (175–179)

और सबसे अच्छे नाम अल्लाह ही के हैं, तो उसे उन्हीं से पुकारो, और उन लोगों को छोड़ दो जो उसके नामों की बेहुरमती करते हैं: जो कुछ वे करते रहे उसका बदला वे पाकर रहेंगे। और जिन्हें हमने पैदा किया उनमें एक समुदाय ऐसा है जो सत्य के साथ राह दिखाता है और उसी के अनुसार न्याय करता है। और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं, हम उन्हें धीरे-धीरे ऐसी जगह से ले चलेंगे जहाँ से उन्हें ख़बर तक न होगी। और मैं उन्हें मुहलत देता हूँ; मेरी तदबीर बड़ी मज़बूत है। क्या उन्होंने सोच-विचार नहीं किया? उनके साथी में कोई जुनून नहीं; वह तो बस एक खुला सचेत करने वाला है। क्या उन्होंने आसमानों और ज़मीन के राज्य पर, और उन सब चीज़ों पर जो अल्लाह ने पैदा की हैं, निगाह नहीं डाली, और इस पर कि हो सकता है उनकी अपनी अवधि क़रीब आ लगी हो? तो इसके बाद वे और किस बात पर ईमान लाएँगे? जिसे अल्लाह भटकने दे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं; और वह उन्हें उनकी सरकशी में अंधों की तरह भटकने के लिए छोड़ देता है। (180–186)

ऐ नबी, वे तुमसे उस घड़ी के बारे में पूछते हैं: “वह कब आकर ठहरेगी?” कह दो, “उसका ज्ञान तो बस मेरे रब ही के पास है; उसके समय पर उसे उसके सिवा कोई ज़ाहिर न करेगा। वह आसमानों और ज़मीन पर भारी है; वह तुम पर बस अचानक ही आएगी।” वे तुमसे इस तरह पूछते हैं मानो तुम उसकी खोज में लगे हुए हो। कह दो, “उसका ज्ञान तो बस अल्लाह ही के पास है, मगर अधिकतर लोग जानते नहीं।” कह दो, “मैं अपने लिए भी किसी फ़ायदे और नुक़सान का अधिकार नहीं रखता, सिवाय उसके जो अल्लाह चाहे। और अगर मैं परोक्ष का ज्ञान रखता, तो बहुत-सी भलाई समेट लेता, और मुझे कोई तकलीफ़ न छूती। मैं तो बस एक सचेत करने वाला और शुभ-सूचना देने वाला हूँ, उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।” (187–188)

वही है जिसने तुम्हें एक ही जान से पैदा किया, और उसी से उसका जोड़ा बनाया, ताकि वह उसके पास सुकून पाए। फिर जब मर्द ने औरत को ढाँक लिया, तो उसे एक हलका-सा बोझ रह गया और वह उसे लिए चलती-फिरती रही; फिर जब वह बोझल हो गई, तो दोनों ने अल्लाह, अपने रब, को पुकारा: “अगर तूने हमें भला-चंगा बच्चा दिया, तो हम ज़रूर शुक्रगुज़ारों में से होंगे।” मगर जब उसने उन्हें भला-चंगा बच्चा दिया,

तो जो कुछ उसने उन्हें दिया था उसमें वे उसके साझी ठहराने लगे। तो अल्लाह उससे बहुत ऊँचा है जो वे साझी ठहराते हैं! क्या वे उन्हें साझी ठहराते हैं जो कुछ भी पैदा नहीं करते, बल्कि ख़ुद पैदा किए जाते हैं, जो न उनकी कोई मदद कर सकते हैं, न अपनी ही मदद कर सकते हैं? (189–192)

और अगर तुम उन्हें मार्गदर्शन की ओर बुलाओ, तो वे तुम्हारे पीछे न चलेंगे। तुम्हारे लिए बराबर है, चाहे तुम उन्हें पुकारो या चुप रहो। जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वे तुम्हारी ही तरह बन्दे हैं। तो उन्हें पुकार देखो, फिर चाहिए कि वे तुम्हें जवाब दें, अगर तुम सच्चे हो। क्या उनके पाँव हैं जिनसे वे चलते हों, या हाथ हैं जिनसे वे पकड़ते हों, या आँखें हैं जिनसे वे देखते हों, या कान हैं जिनसे वे सुनते हों? कह दो, “अपने साझियों को बुला लो, फिर मेरे ख़िलाफ़ चाल चलो और मुझे मुहलत न दो। मेरा संरक्षक अल्लाह है, जिसने यह किताब उतारी; और वही नेक लोगों की सरपरस्ती करता है। और जिन्हें तुम उसके सिवा पुकारते हो वे न तुम्हारी मदद कर सकते हैं, न अपनी ही मदद कर सकते हैं।” और अगर तुम उन्हें मार्गदर्शन की ओर बुलाओ, तो वे सुनते नहीं। तुम उन्हें देखते हो कि तुम्हारी ओर ताक रहे हैं, मगर उन्हें कुछ सूझता नहीं। दरगुज़र से काम लो, भलाई का हुक्म दो, और नादानों से मुँह फेर लो। और अगर शैतान की ओर से कोई उकसाहट तुम्हें उकसाए, तो अल्लाह की पनाह माँगो: वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। जो लोग अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं, जब शैतान की ओर से कोई ख़याल उन्हें छू भी जाता है, तो वे उसे याद करते हैं, और तुरन्त उनकी आँखें खुल जाती हैं। मगर उनके भाई, शैतान, उन्हें गुमराही में और गहरा खींचते चले जाते हैं, और कोई कसर नहीं छोड़ते। (193–202)

और जब तुम उनके पास कोई निशानी नहीं लाते, तो कहते हैं, “तुमने ख़ुद कोई क्यों न चुन ली?” कह दो, “मैं तो बस उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरे रब की ओर से मेरी ओर वह्य किया जाता है। यह तुम्हारे रब की ओर से आँखें खोल देने वाली दलीलें हैं, और मार्गदर्शन और दयालुता उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।” और जब क़ुरआन पढ़ा जाए, तो उसे ध्यान से सुनो और चुप रहो, ताकि तुम पर दया की जाए। और अपने रब को अपने मन में, गिड़गिड़ाते और डरते हुए, बिना ऊँची आवाज़ के, सुबह और शाम याद करो; और बेपरवाह लोगों में से न होना। जो तुम्हारे रब के क़रीब हैं वे उसकी इबादत से घमंड नहीं करते: वे उसकी तसबीह करते हैं, और उसी के आगे सजदा करते हैं। (203–206)

# 8. जंग में हासिल माल (अल-अनफ़ाल)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ऐ नबी, वे तुमसे जंग में हासिल हुए माल के बारे में पूछते हैं। कह दो, "जंग में हासिल हुआ माल अल्लाह और रसूल का है। तो अल्लाह के प्रति सचेत रहो, अपने आपस के सम्बन्ध ठीक रखो, और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानो, अगर तुम ईमान वाले हो।" ईमान वाले तो बस वही हैं कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उनके दिल काँप उठें, और जब उसकी आयतें उन्हें सुनाई जाएँ तो उनका ईमान और मज़बूत हो जाए, और वे अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं; जो नमाज़ क़ायम रखते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। यही सच्चे ईमान वाले हैं। उनके लिए उनके रब के पास इज़्ज़त के दर्जे हैं, और क्षमा, और इज़्ज़त की रोज़ी। (1–4)

जैसे तुम्हारे रब ने तुम्हें तुम्हारे घर से सत्य के लिए निकाला, हालाँकि ईमान वालों का एक गिरोह इसे नापसन्द कर रहा था, वे तुमसे सत्य के बारे में झगड़ रहे थे इसके बाद कि वह स्पष्ट हो चुका था, मानो वे आँखों देखते मौत की ओर हाँके जा रहे हों। और याद करो जब अल्लाह तुमसे वादा कर रहा था कि दो गिरोहों में से एक तुम्हारा होगा, और तुम चाहते थे कि बिना हथियार वाला तुम्हारे हाथ लगे; मगर अल्लाह चाहता था कि अपनी बातों से सत्य को क़ायम कर दे और सत्य के इनकारियों की जड़ काट दे, ताकि वह सत्य को सत्य और बातिल को बातिल कर दिखाए, चाहे अपराधियों को कितना ही नागवार हो। जब तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे, तो उसने तुम्हारी सुन ली: "मैं एक हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करूँगा, जो लगातार आते रहेंगे।" और अल्लाह ने इसे बस शुभ-सूचना बनाया, और इसलिए कि तुम्हारे दिल इससे इत्मीनान पाएँ—वरना मदद तो बस अल्लाह ही के पास से आती है। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। याद करो जब वह अपनी ओर से तसल्ली के रूप में तुम पर ऊँघ तारी कर रहा था, और आसमान से तुम पर पानी उतार रहा था कि उसके द्वारा तुम्हें पाक करे, तुमसे शैतान की गन्दगी दूर करे, तुम्हारे दिलों को मज़बूत करे और तुम्हारे क़दम जमा दे। जब तुम्हारा रब फ़रिश्तों की ओर वह्य कर रहा था, "मैं तुम्हारे साथ हूँ: तो ईमान वालों को जमाए रखो। मैं सत्य के इनकारियों के दिलों में दहशत डाल दूँगा। तो उनकी गर्दनों के ऊपर मारो, और उनकी पोर-पोर पर चोट लगाओ।" यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया; और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करे—तो अल्लाह कठोर सज़ा देने वाला है। "यह है तुम्हारे लिए—तो इसका मज़ा चखो!" और सत्य के इनकारियों के लिए आग की यातना है।[11] (5–14)

ऐ ईमान लाने वालो, जब तुम्हारा सामना सत्य के इनकारियों से हो जो लश्कर बनकर बढ़ रहे हों, तो उन्हें पीठ न दिखाओ। और जो कोई उस दिन उन्हें पीठ दिखाएगा—सिवाय इसके कि दोबारा लड़ने के लिए

[11] ऑकेज़नलिज़्म (अवसरवाद का दर्शन) – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस

पैंतरा बदल रहा हो या किसी दूसरी टुकड़ी से जा मिलने के लिए हट रहा हो—वह अल्लाह का ग़ज़ब लेकर पलटा, और उसका ठिकाना जहन्नम है: और वह बहुत बुरी जगह है। (15-16)

तो तुमने उन्हें क़त्ल नहीं किया, बल्कि अल्लाह ने उन्हें क़त्ल किया; और ऐ नबी, जब तुमने इनकारियों की ओर रेत फेंकी, तो तुमने नहीं फेंकी, बल्कि अल्लाह ने फेंकी—ताकि वह ईमान वालों को अपनी ओर से एक अच्छी आज़माइश से नवाज़े। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।[12] (17)

यह तो हुआ; और यह भी कि अल्लाह सत्य के इनकारियों की चालों को कमज़ोर कर देने वाला है। ऐ सत्य के इनकारियो, अगर तुम फ़ैसला चाहते थे, तो फ़ैसला तुम्हारे सामने आ चुका। और अगर तुम बाज़ आ जाओ, तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है; और अगर तुम फिर वही करोगे, तो हम भी फिर वही करेंगे, और तुम्हारा जत्था, चाहे कितना ही बड़ा हो, तुम्हारे कुछ काम न आएगा। और अल्लाह ईमान वालों के साथ है। (18–19)

ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानो, और सुनते हुए उससे मुँह न मोड़ो। और उन लोगों की तरह न हो जाना जो कहते हैं, "हमने सुना," हालाँकि वे सुनते नहीं। अल्लाह की नज़र में सबसे बुरे जानवर वे बहरे-गूँगे हैं जो बुद्धि से काम नहीं लेते। और अगर अल्लाह उनमें कोई भलाई जानता, तो उन्हें ज़रूर सुना देता; और अगर वह उन्हें सुना भी देता, तब भी वे बेरुख़ी के साथ मुँह फेर जाते। ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह और रसूल की पुकार पर लब्बैक कहो जब वह तुम्हें उस चीज़ की ओर बुलाए जो तुम्हें ज़िन्दगी देने वाली है। (20–23)

और जान लो कि अल्लाह आदमी और उसके दिल के बीच आ जाता है, और यह कि उसी के पास तुम इकट्ठे किए जाओगे।[13] (24)

और उस फ़ितने से बचो जो ख़ास तुममें के ज़ालिमों ही पर न पड़ेगा; और जान लो कि अल्लाह कठोर सज़ा देने वाला है। (25)

और याद करो जब तुम थोड़े थे और ज़मीन में कमज़ोर समझे जाते थे, डरते थे कि लोग तुम्हें उचक ले जाएँगे; फिर उसने तुम्हें ठिकाना दिया, अपनी मदद से तुम्हें शक्ति दी, और तुम्हें अच्छी चीज़ें दीं, ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह और रसूल के साथ ख़यानत न करो, और न जानते-बूझते अपनी अमानतों में ख़यानत करो। और जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तो बस एक आज़माइश हैं, और यह कि अल्लाह ही के पास बड़ा बदला है। ऐ ईमान लाने वालो, अगर तुम अल्लाह के प्रति सचेत रहोगे तो वह तुम्हें सही और ग़लत में फ़र्क़ करने की एक कसौटी देगा, तुम्हारी बुराइयाँ तुमसे दूर कर देगा, और तुम्हें क्षमा कर देगा। और अल्लाह बड़े अनुग्रह का मालिक है। (26–29)

[12] ऑकेज़नलिज़्म (अवसरवाद का दर्शन) – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस
[13] ऑकेज़नलिज़्म (अवसरवाद का दर्शन) – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस

और याद करो जब सत्य के इनकारी तुम्हारे ख़िलाफ़ चालें चल रहे थे, कि तुम्हें क़ैद कर दें, या क़त्ल कर दें, या निकाल बाहर करें। वे अपनी चाल चल रहे थे, और अल्लाह अपनी तदबीर कर रहा था; और अल्लाह सबसे अच्छी तदबीर करने वाला है। और जब उन्हें हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो कहते हैं, "हमने सुन लिया। अगर हम चाहें, तो हम भी ऐसा ही कह दें—यह तो बस अगलों की कहानियाँ हैं।" और जब उन्होंने कहा, "ऐ अल्लाह, अगर यही तेरी ओर से सत्य है, तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे, या हम पर कोई दुखद यातना ले आ।" मगर अल्लाह ऐसा न था कि उन्हें यातना देता जबकि तुम उनके बीच मौजूद थे, और न अल्लाह ऐसा है कि उन्हें यातना दे जबकि वे क्षमा माँग रहे हों। फिर भी उनके पास क्या उज़्र है कि अल्लाह उन्हें यातना न दे, जबकि वे लोगों को मसजिदे-हराम से रोकते हैं, हालाँकि वे उसके मुतवल्ली नहीं? उसके मुतवल्ली तो बस वही हैं जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं—मगर उनमें से अधिकतर जानते नहीं। और उस घर के पास उनकी नमाज़ सीटियाँ बजाने और तालियाँ पीटने के सिवा कुछ नहीं। "तो अब यातना का मज़ा चखो, सत्य के अपने इनकार के बदले।" जो लोग सत्य का इनकार करते हैं वे अपने माल इसलिए ख़र्च करते हैं कि लोगों को अल्लाह की राह से रोकें। तो वे उसे ख़र्च करते रहेंगे, फिर वह उनके लिए पछतावे का कारण बनेगा, फिर वे मात खाएँगे; और सत्य के इनकारी जहन्नम की ओर इकट्ठे किए जाएँगे—ताकि अल्लाह गन्दे को अच्छे से अलग कर दे, और गन्दे को एक-दूसरे पर रखकर सबका ढेर लगा दे, फिर उसे जहन्नम में डाल दे। वही घाटे में हैं। सत्य के इनकारियों से कह दो कि अगर वे बाज़ आ जाएँ, तो जो कुछ हो चुका वह उन्हें क्षमा कर दिया जाएगा; और अगर वे फिर वही करेंगे, तो अगलों की रीत गुज़र ही चुकी है। और उनसे लड़ो यहाँ तक कि सताया जाना बाक़ी न रहे और दीन पूरा-का-पूरा अल्लाह के लिए हो जाए। फिर अगर वे बाज़ आ जाएँ, तो जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसे ख़ूब देख रहा है; और अगर वे मुँह मोड़ें, तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा संरक्षक है: क्या ही अच्छा संरक्षक, और क्या ही अच्छा मददगार! (30–40)

और जान लो कि जो कुछ तुम्हें जंग में हासिल हो, उसका पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह का है, और रसूल का, और क़रीबी रिश्तेदारों, यतीमों, मुहताजों और मुसाफ़िर का—अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो और उस पर जो हमने अपने बन्दे पर फ़ैसले के दिन उतारा, जिस दिन दोनों फ़ौजों की मुठभेड़ हुई। और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। याद करो जब तुम घाटी के इस किनारे पर थे और वे परले किनारे पर, और क़ाफ़िला तुमसे नीचे की ओर था। और अगर तुम आपस में मिलने का समय ठहराते, तो उस ठहराए हुए समय पर पहुँचने से ज़रूर रह जाते; मगर यह इसलिए हुआ कि अल्लाह उस काम को पूरा कर दे जो तय हो चुका था—ताकि जिसे हलाक होना है वह खुले प्रमाण पर हलाक हो, और जिसे जीना है वह खुले प्रमाण पर जिए। और निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। (41–42)

याद करो जब अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे ख़्वाब में तुम्हें थोड़ा करके दिखाया। और अगर वह उन्हें तुम्हें ज़्यादा करके दिखाता, तो तुम हिम्मत हार बैठते और इस मामले में झगड़ने लगते; मगर अल्लाह ने बचा लिया। वह सीनों तक की बात ख़ूब जानता है। और जब तुम्हारा आमना-सामना हुआ, तो उसने उन्हें तुम्हारी आँखों में

थोड़ा करके दिखाया और तुम्हें उनकी आँखों में थोड़ा कर दिया, ताकि अल्लाह उस काम को पूरा कर दे जो तय हो चुका था। और सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटाए जाते हैं। (43–44)

ऐ ईमान लाने वालो, जब किसी जत्थे से तुम्हारा सामना हो, तो जमे रहो और अल्लाह को बहुत याद करो, ताकि तुम सफल हो। और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानो, और आपस में न झगड़ो, वरना तुम हिम्मत हार बैठोगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी। और सब्र से काम लो: निश्चय ही अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। और उन लोगों की तरह न हो जाना जो अपने घरों से इतराते हुए, लोगों को दिखाते हुए और दूसरों को अल्लाह की राह से रोकते हुए निकले। और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसे घेरे हुए है। और याद करो जब शैतान ने उनके कर्म उनके लिए लुभावने बना दिए, और कहा, "आज लोगों में से कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता, और मैं तुम्हारे साथ हूँ।" मगर जब दोनों फ़ौजें आमने-सामने हुईं, तो वह उलटे पाँव फिर गया और बोला, "मेरा तुमसे कोई वास्ता नहीं। मैं वह देख रहा हूँ जो तुम नहीं देखते। मैं अल्लाह से डरता हूँ—और अल्लाह कठोर सज़ा देने वाला है।" (45–48)

जब मुनाफ़िक़ और वे लोग जिनके दिलों में रोग है कह रहे थे, "इन लोगों को इनके दीन ने धोखे में डाल रखा है।" हालाँकि जो कोई अल्लाह पर भरोसा करे—तो अल्लाह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। और काश तुम देखते जब फ़रिश्ते सत्य के इनकारियों की जानें निकालते हैं, उनके चेहरों और उनकी पीठों पर मारते हुए: "चखो जलने की यातना का मज़ा!" "यह उसका बदला है जो तुम्हारे अपने हाथों ने आगे भेजा—और अल्लाह अपने बन्दों पर कभी ज़ुल्म करने वाला नहीं।" इनका ढंग वही है जो फ़िरऔन के लोगों का और उनसे पहले वालों का था: उन्होंने अल्लाह की आयतों का इनकार किया, तो अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों पर पकड़ लिया। निस्संदेह अल्लाह शक्तिशाली, कठोर सज़ा देने वाला है। यह इसलिए कि अल्लाह किसी नेमत को, जो उसने किसी क़ौम को दी हो, कभी नहीं बदलता जब तक वे ख़ुद उसे न बदल डालें जो उनके अपने भीतर है; और यह कि अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। इनका ढंग वही है जो फ़िरऔन के लोगों का और उनसे पहले वालों का था: उन्होंने अपने रब की आयतों को झुठलाया, तो हमने उन्हें उनके गुनाहों के बदले हलाक कर दिया और फ़िरऔन के लोगों को डुबो दिया। और वे सब ज़ालिम थे। (49–54)

अल्लाह की नज़र में सबसे बुरे जानवर वे लोग हैं जिन्होंने सत्य का इनकार किया और ईमान नहीं लाते: वे जिनसे तुमने अह्द किया, फिर वे हर बार अपना अह्द तोड़ देते हैं, और अल्लाह के प्रति सचेत नहीं रहते। तो अगर तुम उन्हें जंग में पा जाओ, तो उनकी मिसाल से उन्हें तितर-बितर कर दो जो उनके पीछे हैं, ताकि वे नसीहत पकड़ें। और अगर तुम्हें किसी क़ौम से विश्वासघात का डर हो, तो बराबरी के साथ उनका अह्द उनकी ओर फेंक दो: निश्चय ही अल्लाह विश्वासघात करने वालों को पसन्द नहीं करता। और सत्य के इनकारी यह न समझें कि वे हमसे आगे निकल गए; वे अल्लाह को कभी बेबस नहीं कर सकते। और उनके मुक़ाबले के लिए जितनी शक्ति तुम जुटा सको तैयार रखो, और बँधे हुए घोड़े भी, कि इससे अल्लाह के दुश्मन और अपने दुश्मन पर धाक बिठाओ, और उनके अलावा दूसरों पर भी जिन्हें तुम नहीं जानते मगर

अल्लाह जानता है। और जो कुछ तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे वह तुम्हें पूरा-पूरा लौटा दिया जाएगा, और तुम पर ज़ुल्म न किया जाएगा। और अगर वे सुलह की ओर झुकें, तो तुम भी उसकी ओर झुक जाओ, और अल्लाह पर भरोसा रखो: वही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। और अगर वे तुम्हें धोखा देना चाहें, तो तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है। वही है जिसने अपनी मदद से और ईमान वालों के द्वारा तुम्हें शक्ति दी, और उनके दिल आपस में जोड़ दिए। अगर तुम ज़मीन में जो कुछ है सब ख़र्च कर डालते, तब भी उनके दिल न जोड़ सकते; मगर अल्लाह ने उन्हें जोड़ दिया। वह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। ऐ नबी, तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है, और उन ईमान वालों के लिए भी जो तुम्हारे पीछे चलते हैं। ऐ नबी, ईमान वालों को लड़ाई पर उभारो। अगर तुममें बीस जमे रहने वाले हों, तो वे दो सौ पर ग़ालिब आएँगे; और अगर तुममें सौ हों, तो वे सत्य के इनकारियों में से हज़ार पर ग़ालिब आएँगे, क्योंकि वे ऐसे लोग हैं जो समझ नहीं रखते। अब अल्लाह ने तुम्हारा बोझ हलका कर दिया, और उसने जान लिया कि तुममें कमज़ोरी है। तो अगर तुममें सौ जमे रहने वाले हों, तो वे दो सौ पर ग़ालिब आएँगे; और अगर तुममें हज़ार हों, तो वे अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार पर ग़ालिब आएँगे। और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। (55–66)

किसी नबी के लिए यह उचित नहीं कि उसके पास क़ैदी हों जब तक वह ज़मीन में अच्छी तरह ग़लबा न पा ले। तुम दुनिया का क्षणिक माल चाहते हो, जबकि अल्लाह तुम्हारे लिए आख़िरत चाहता है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। अगर अल्लाह की ओर से एक लिखा हुआ पहले न हो चुका होता, तो जो कुछ तुमने लिया उस पर तुम्हें बड़ी यातना आ छूती। तो जो कुछ तुम्हें जंग में हासिल हुआ है उसे हलाल और पाक समझकर खाओ, और अल्लाह के प्रति सचेत रहो: निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (67–69)

ऐ नबी, जो क़ैदी तुम्हारे हाथों में हैं उनसे कह दो, "अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई जानेगा, तो जो कुछ तुमसे लिया गया है उससे बेहतर तुम्हें देगा, और तुम्हें क्षमा कर देगा। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है।" और अगर वे तुमसे ख़यानत करना चाहें, तो वे इससे पहले अल्लाह से ख़यानत कर चुके हैं, तो उसने तुम्हें उन पर क़ाबू दे दिया। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। (70–71)

जो लोग ईमान लाए और हिजरत की और अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जान से जिहाद किया, और जिन लोगों ने ठिकाना दिया और मदद की—वे एक-दूसरे के संरक्षक हैं। और जो ईमान तो लाए मगर हिजरत नहीं की, उनकी सरपरस्ती तुम्हारे ज़िम्मे नहीं जब तक वे हिजरत न करें; मगर अगर वे दीन के मामले में तुमसे मदद माँगें, तो उनकी मदद करना तुम पर लाज़िम है, सिवाय उस क़ौम के मुक़ाबले में जिससे तुम्हारा समझौता हो। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। (72)

और जो लोग सत्य का इनकार करते हैं वे एक-दूसरे के संरक्षक हैं। अगर तुम भी ऐसा न करोगे, तो ज़मीन में फ़ितना होगा और बड़ा बिगाड़। और जो लोग ईमान लाए और हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया, और जिन लोगों ने ठिकाना दिया और मदद की—वही सच्चे ईमान वाले हैं। उनके लिए क्षमा है और

इज़्ज़त की रोज़ी। और जो लोग बाद में ईमान लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया—वे भी तुम्हीं में से हैं। मगर अल्लाह की किताब में ख़ून के रिश्तेदार एक-दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ का पूरा ज्ञान रखता है। (73–75)

# 9. तौबा (अत-तौबा)

अल्लाह और उसके रसूल की ओर से उस समझौते से बरी होने का एलान है जो तुमने अल्लाह के साथ साझी ठहराने वालों से किया था: “तो ज़मीन में चार महीने आज़ादी से चल-फिर लो, मगर जान लो कि तुम अल्लाह से बच नहीं सकते, और यह कि अल्लाह सत्य के इनकारियों को रुसवा करने वाला है।” और अल्लाह और उसके रसूल की ओर से बड़े हज के दिन लोगों के लिए मुनादी है: कि अल्लाह मुशरिकों की ज़िम्मेदारी से बरी है, और उसका रसूल भी। तो अगर तुम तौबा कर लो, तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है; और अगर मुँह मोड़ोगे, तो जान लो कि तुम अल्लाह से बच नहीं सकते। और सत्य के इनकारियों को दुखद यातना की ख़बर सुना दो—सिवाय उन मुशरिकों के जिनसे तुमने समझौता किया फिर उन्होंने तुम्हारे साथ किसी बात में कोई कमी नहीं की, और न तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की मदद की। तो उनके साथ उनका समझौता उसकी मुद्दत तक पूरा करो: निश्चय ही अल्लाह उन्हें पसन्द करता है जो उसके प्रति सचेत रहते हैं। (1–4)

फिर जब हुरमत वाले महीने गुज़र जाएँ, तो मुशरिकों को जहाँ पाओ क़त्ल करो; उन्हें पकड़ो, उन्हें घेरो, और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर अगर वे तौबा कर लें, नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें, तो उनकी राह छोड़ दो: निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। और अगर मुशरिकों में से कोई तुमसे पनाह माँगे, तो उसे पनाह दे दो, ताकि वह अल्लाह का कलाम सुन ले; फिर उसे उसकी अमन की जगह पहुँचा दो। यह इसलिए कि वे ऐसे लोग हैं जो जानते नहीं। मुशरिकों के लिए अल्लाह और उसके रसूल के यहाँ कोई समझौता कैसे हो सकता है—सिवाय उनके जिनसे तुमने मसजिदे-हराम के पास समझौता किया था? तो जब तक वे तुम्हारे साथ सीधे रहें, तुम भी उनके साथ सीधे रहो: निश्चय ही अल्लाह उन्हें पसन्द करता है जो उसके प्रति सचेत रहते हैं। कैसे हो सकता है, जबकि अगर वे तुम पर ग़लबा पा जाएँ, तो तुम्हारे बारे में न किसी रिश्ते का लिहाज़ करें न किसी अह्द का? वे अपने मुँह की बातों से तुम्हें राज़ी करते हैं जबकि उनके दिल इनकार करते हैं, और उनमें से अधिकतर अवज्ञाकारी हैं। उन्होंने अल्लाह की आयतों को थोड़े-से दाम पर बेच डाला और दूसरों को उसकी राह से रोका। निश्चय ही बहुत बुरा है जो वे करते रहे हैं। वे किसी ईमान वाले के बारे में न रिश्ते का लिहाज़ करते हैं न अह्द का। और वही हैं जो हद से बढ़ने वाले हैं। फिर अगर वे तौबा कर लें, नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें, तो वे दीन में तुम्हारे भाई हैं। और हम आयतें उन लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान करते हैं जो जानते हैं। और अगर वे अपने समझौते के बाद अपनी क़समें तोड़ दें और तुम्हारे दीन पर चोट करें, तो इनकार के सरग़नों से लड़ो—उनकी क़समों का कोई भरोसा नहीं—ताकि वे बाज़ आ जाएँ। क्या तुम ऐसे लोगों से न लड़ोगे जिन्होंने अपनी क़समें तोड़ दीं, जिन्होंने रसूल को निकाल देने की ठानी, और जिन्होंने तुम्हारे ख़िलाफ़ पहल की? क्या तुम उनसे डरते हो? अल्लाह इसका ज़्यादा हक़दार है कि तुम उससे डरो, अगर तुम ईमान वाले हो। उनसे लड़ो, अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें सज़ा देगा और उन्हें रुसवा करेगा, और उनके मुक़ाबले में तुम्हारी मदद करेगा, और ईमान वाले लोगों के सीनों को ठंडक देगा, और उनके दिलों का ग़ुस्सा दूर कर देगा। और अल्लाह जिस पर चाहता है दया-दृष्टि करता है: और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। या तुमने यह समझ रखा है कि तुम यूँ ही छोड़

दिए जाओगे, हालाँकि अल्लाह ने अभी उन्हें ज़ाहिर नहीं किया जो तुममें से जिहाद करते हैं और अल्लाह, उसके रसूल और ईमान वालों के सिवा किसी को जिगरी दोस्त नहीं बनाते? और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है। (5–16)

मुशरिकों का यह काम नहीं कि वे अल्लाह की मसजिदों को आबाद करें जबकि वे ख़ुद अपने ऊपर सत्य के इनकार की गवाही दे रहे हैं। उनके कर्म अकारथ गए, और आग में वे सदैव रहेंगे। अल्लाह की मसजिदों को तो बस वही आबाद करता है जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाए, नमाज़ क़ायम करे, ज़कात दे, और अल्लाह के सिवा किसी से न डरे। तो उम्मीद है कि यही लोग राह पाने वालों में से होंगे। क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाने और मसजिदे-हराम की देख-भाल को उस आदमी के काम के बराबर ठहरा लिया जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाया और अल्लाह की राह में जिहाद किया? अल्लाह के यहाँ ये बराबर नहीं। और अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। जो लोग ईमान लाए और हिजरत की और अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जान से जिहाद किया, अल्लाह के यहाँ उनका दर्जा कहीं ऊँचा है। और वही कामयाब होने वाले हैं। उनका रब उन्हें अपनी ओर से दयालुता, और रज़ामन्दी, और ऐसे बाग़ों की शुभ-सूचना देता है जिनमें उनके लिए हमेशा रहने वाली नेमत है, जहाँ वे सदा-सदा रहेंगे। निस्संदेह अल्लाह ही के पास बड़ा बदला है। (17–22)

ऐ ईमान लाने वालो, अपने बाप और अपने भाइयों को दोस्त न बनाओ अगर वे ईमान के मुक़ाबले में सत्य के इनकार को पसन्द करें। और तुममें से जो कोई उन्हें दोस्त बनाएगा—तो वही ज़ालिम हैं। कह दो, "अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई, तुम्हारी पत्नियाँ, तुम्हारे रिश्ते-नाते वाले, वह माल जो तुमने कमाया है, वह कारोबार जिसके मन्दा पड़ जाने का तुम्हें डर है, और वे घर जो तुम्हें भाते हैं, तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में जिहाद से ज़्यादा प्यारे हैं, तो इन्तिज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म ले आए।" और अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को राह नहीं दिखाता। अल्लाह बहुत-से मैदानों में तुम्हारी मदद कर चुका है, और हुनैन के दिन भी, जब तुम्हारी बड़ी संख्या ने तुम्हें इतरा दिया था मगर वह तुम्हारे कुछ काम न आई, और ज़मीन अपने फैलाव के बावजूद तुम पर तंग हो गई, फिर तुम पीठ फेरकर भाग निकले। फिर अल्लाह ने अपने रसूल पर और ईमान वालों पर अपनी सकीनत उतारी, और ऐसी फ़ौजें उतारीं जिन्हें तुमने नहीं देखा, और सत्य के इनकारियों को यातना दी: और यही इनकार करने वालों का बदला है। फिर इसके बाद भी अल्लाह जिस पर चाहता है दया-दृष्टि करता है: और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (23–27)

ऐ ईमान लाने वालो, मुशरिक तो बस नापाक हैं, तो वे अपने इस साल के बाद मसजिदे-हराम के पास न फटकने पाएँ। और अगर तुम्हें ग़रीबी का डर हो, तो अल्लाह चाहेगा तो तुम्हें अपने अनुग्रह से मालामाल कर देगा: निस्संदेह अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। किताब वालों में से उन लोगों से लड़ो जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं न अंतिम दिन पर, जो उसे हराम नहीं ठहराते जिसे अल्लाह और उसके रसूल ने हराम ठहराया है, और जो सत्य के दीन की पैरवी नहीं करते—यहाँ तक कि वे अपने हाथ से जिज़्या

दें, अधीन होकर। और यहूदी कहते हैं, "उज़ैर अल्लाह का बेटा है," और ईसाई कहते हैं, "मसीह अल्लाह का बेटा है।" ये उनके अपने मुँह की बातें हैं, उन लोगों की-सी बात दोहराते हुए जिन्होंने इनसे पहले सत्य का इनकार किया। अल्लाह इन्हें ग़ारत करे! ये किधर फेरे जाते हैं! उन्होंने अल्लाह के सिवा अपने आलिमों और अपने राहिबों को रब बना लिया, और मरयम के बेटे मसीह को भी; हालाँकि उन्हें बस यही हुक्म दिया गया था कि एक इलाह के सिवा किसी की इबादत न करें—उसके सिवा कोई इलाह नहीं। वह पाक है उससे जो वे साझी ठहराते हैं! वे चाहते हैं कि अल्लाह की रौशनी को अपने मुँह से बुझा दें, मगर अल्लाह को इसके सिवा कुछ मंज़ूर नहीं कि अपनी रौशनी को पूरा करके रहे, चाहे सत्य के इनकारियों को कितना ही नागवार हो। वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य के दीन के साथ भेजा, ताकि उसे हर दीन पर ग़ालिब कर दे, चाहे मुशरिकों को कितना ही नागवार हो। ऐ ईमान लाने वालो, बहुत-से आलिम और राहिब लोगों के माल नाहक़ खाते हैं और उन्हें अल्लाह की राह से रोकते हैं। और जो लोग सोना और चाँदी जमा कर-करके रखते हैं और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते—उन्हें दुखद यातना की ख़बर सुना दो, जिस दिन उसे जहन्नम की आग में तपाया जाएगा और उससे उनकी पेशानियाँ, उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जाएँगी: "यह है वह जो तुमने अपने लिए जमा किया था—तो अब चखो उसका मज़ा जो तुम जमा करते रहे!" (28–35)

निस्संदेह अल्लाह के यहाँ महीनों की गिनती बारह महीने है, अल्लाह की किताब में उस दिन से ठहरी हुई जिस दिन उसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया; उनमें से चार हुरमत वाले हैं। यही सीधा दीन है, तो इनमें अपने ऊपर ज़ुल्म न करो। और मुशरिकों से सब मिलकर लड़ो जैसे वे सब मिलकर तुमसे लड़ते हैं, और जान लो कि अल्लाह उनके साथ है जो उसके प्रति सचेत रहते हैं। हुरमत वाले महीने को आगे-पीछे करना तो बस इनकार में एक और बढ़ोतरी है, जिससे सत्य के इनकारी गुमराह किए जाते हैं: वे किसी साल उसे हलाल कर लेते हैं और किसी साल हराम, ताकि उन महीनों की गिनती पूरी कर लें जिन्हें अल्लाह ने हुरमत वाला ठहराया है, और यूँ उसे हलाल कर लें जिसे अल्लाह ने हराम किया है। उनके बुरे कर्म उनके लिए लुभावने बना दिए गए हैं। और अल्लाह सत्य का इनकार करने वाले लोगों को राह नहीं दिखाता। (36–37)

ऐ ईमान लाने वालो, तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है, "अल्लाह की राह में निकलो," तो तुम बोझल होकर ज़मीन से लग जाते हो? क्या तुम आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए? दुनिया की ज़िन्दगी का सामान तो आख़िरत के मुक़ाबले में बस थोड़ा-सा है। अगर तुम न निकलोगे, तो वह तुम्हें दुखद यातना देगा और तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम ले आएगा, और तुम उसका कुछ भी न बिगाड़ सकोगे। और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। अगर तुम उसकी मदद न करोगे, तो अल्लाह उसकी मदद कर ही चुका है: जब सत्य के इनकारियों ने उसे निकाल दिया था, दो में का दूसरा, जब वे दोनों ग़ार में थे, जब वह अपने साथी से कह रहा था, "ग़म न करो; अल्लाह हमारे साथ है।" तो अल्लाह ने उस पर अपनी सकीनत उतारी और ऐसी फ़ौजों से उसकी मदद की जिन्हें तुमने नहीं देखा, और सत्य के इनकारियों की बात नीची कर दी, जबकि अल्लाह की बात ही ऊँची है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है।

निकलो, हलके हो या बोझल, और अपने माल और अपनी जान से अल्लाह की राह में जिहाद करो। यही तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानो। अगर फ़ायदा क़रीब का होता और सफ़र हलका, तो वे ज़रूर तुम्हारे पीछे हो लेते; मगर उन्हें यह फ़ासला लम्बा मालूम हुआ। और वे अल्लाह की क़समें खाएँगे, "अगर हमारे बस में होता, तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकलते," वे अपने आप को हलाक कर रहे हैं; और अल्लाह जानता है कि वे झूठे हैं। (38–42)

ऐ नबी, अल्लाह तुम्हें माफ़ करे! तुमने उन्हें पीछे रह जाने की इजाज़त क्यों दे दी, इससे पहले कि तुम पर खुल जाता कि उनमें सच्चे कौन हैं और तुम झूठों को जान लेते? जो लोग अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हैं वे तुमसे इसकी इजाज़त नहीं माँगते कि अपने माल और अपनी जान से जिहाद न करें। और अल्लाह उन्हें ख़ूब जानता है जो उसके प्रति सचेत रहते हैं। तुमसे इजाज़त तो बस वही माँगते हैं जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान नहीं रखते, और जिनके दिल शक में पड़े हैं, तो वे अपने शक में डाँवाडोल हो रहे हैं। और अगर उनका निकलने का इरादा होता, तो वे उसके लिए कुछ तैयारी करते। मगर अल्लाह को उनका उठना पसन्द न था, तो उसने उन्हें रोक दिया, और कह दिया गया, "बैठ रहो बैठने वालों के साथ।" अगर वे तुम्हारे बीच निकलते, तो तुममें ख़राबी के सिवा कुछ न बढ़ाते, और तुम्हारे बीच फ़ितना खड़ा करने की धुन में दौड़-धूप करते; और तुममें कुछ ऐसे भी हैं जो उनकी सुन लेते। और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। उन्होंने इससे पहले भी फ़ितना खड़ा करना चाहा, और तुम्हारे लिए मामलों को उलट-पलट किया, यहाँ तक कि सत्य आ गया और अल्लाह का हुक्म ग़ालिब हुआ, हालाँकि उन्हें यह नागवार था। और उनमें कोई है जो कहता है, "मुझे इजाज़त दे दो, और मुझे आज़माइश में न डालो।" सुन लो, आज़माइश में तो वे पड़ ही चुके! और निश्चय ही जहन्नम सत्य के इनकारियों को घेरे हुए है। अगर तुम्हें कोई भलाई पहुँचती है, तो उन्हें बुरा लगता है; और अगर तुम पर कोई मुसीबत आती है, तो कहते हैं, "हमने तो पहले ही अपना बचाव कर लिया था," और ख़ुश होते हुए पलट जाते हैं। कह दो, "हमें हरगिज़ कुछ न पहुँचेगा सिवाय उसके जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया है। वही हमारा संरक्षक है; और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।" कह दो, "क्या तुम हमारे बारे में दो भलाइयों में से एक के सिवा किसी और चीज़ के इन्तिज़ार में हो? और हम तुम्हारे बारे में इसके इन्तिज़ार में हैं कि अल्लाह तुम्हें अपनी ओर से या हमारे हाथों कोई यातना दे। तो इन्तिज़ार करो—हम भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहे हैं।" कह दो, "ख़ुशी से ख़र्च करो या नाख़ुशी से, तुमसे हरगिज़ क़बूल न किया जाएगा, क्योंकि तुम अवज्ञाकारी लोग हो।" और उनके ख़र्च किए हुए के क़बूल होने में बस यही रुकावट है कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इनकार किया, नमाज़ के लिए आते हैं तो बस अलसाए हुए, और ख़र्च करते हैं तो बस बेदिली से। तो न उनके माल तुम्हें अचम्भे में डालें न उनकी औलाद। अल्लाह तो बस यह चाहता है कि इन्हीं के द्वारा उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में यातना दे, और उनकी जानें इस हाल में निकलें कि वे सत्य के इनकारी हों। (43–55)

और वे अल्लाह की क़समें खाते हैं कि वे तुम्हीं में से हैं, हालाँकि वे तुममें से नहीं; बल्कि वे डरे हुए लोग हैं। अगर वे कोई पनाह की जगह पा लें, या कोई ग़ार, या घुस बैठने का कोई सूराख़, तो मुँह उठाकर उसी की

ओर भाग निकलें। और उनमें कुछ ऐसे हैं जो सदक़ों के बारे में तुम पर नुक्ताचीनी करते हैं: अगर उन्हें उनमें से हिस्सा दे दिया जाए तो राज़ी रहते हैं, और अगर हिस्सा न दिया जाए, तो तुरन्त बिगड़ जाते हैं। काश वे उस पर राज़ी रहते जो अल्लाह और उसके रसूल ने उन्हें दिया और कहते, "हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है; अल्लाह हमें अपने अनुग्रह से देगा, और उसका रसूल भी; हम तो अल्लाह ही की ओर लौ लगाए हुए हैं।" सदक़े तो बस ग़रीबों और मुहताजों के लिए हैं, उन कर्मचारियों के लिए जो उनका प्रबन्ध करते हैं, उनके लिए जिनके दिल जोड़ने हों, ग़ुलामों को आज़ाद कराने के लिए, क़र्ज़ के बोझ तले दबे लोगों के लिए, अल्लाह की राह के लिए, और मुसाफ़िर के लिए—अल्लाह का ठहराया हुआ एक फ़र्ज़। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। (56–60)

और उनमें कुछ ऐसे हैं जो नबी को तकलीफ़ पहुँचाते हैं, और कहते हैं, "वह तो निरा कान है।" कह दो, "वह तुम्हारी भलाई के लिए कान है: वह अल्लाह पर ईमान रखता है और ईमान वालों की बात का यक़ीन करता है, और तुममें से जो ईमान लाए हैं उनके लिए दयालुता है।" और जो लोग अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ पहुँचाते हैं उनके लिए दुखद यातना है। वे तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाते हैं ताकि तुम्हें राज़ी करें; हालाँकि अल्लाह और उसका रसूल इसके ज़्यादा हक़दार हैं कि वे उसे राज़ी करें, अगर वे ईमान वाले हैं। क्या वे नहीं जानते कि जो कोई अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करता है उसके लिए जहन्नम की आग है, जिसमें वह सदैव रहेगा? यही बड़ी रुसवाई है। (61–63)

मुनाफ़िक़ डरते हैं कि कहीं उनके बारे में कोई ऐसी सूरत न उतार दी जाए जो उन्हें बता दे कि उनके दिलों में क्या है। कह दो, "मज़ाक़ उड़ाते रहो: अल्लाह उसे ज़रूर निकालकर रहेगा जिसका तुम्हें डर है।" और अगर तुम उनसे पूछो, तो कहेंगे, "हम तो बस यूँ ही गप-शप और हँसी-खेल कर रहे थे।" कह दो, "क्या तुम अल्लाह, उसकी आयतों और उसके रसूल ही का मज़ाक़ उड़ा रहे थे?" बहाने न बनाओ: तुमने ईमान लाने के बाद सत्य का इनकार किया। अगर हम तुममें से एक गिरोह को माफ़ भी कर दें, तो दूसरे गिरोह को यातना देंगे, इसलिए कि वे अपराधी थे। मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें, सब एक ही जैसे हैं: वे बुराई का हुक्म देते और भलाई से रोकते हैं, और अपने हाथ बन्द रखते हैं। वे अल्लाह को भूल गए, तो उसने भी उन्हें भुला दिया। निश्चय ही मुनाफ़िक़—वही अवज्ञाकारी हैं। अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और सत्य के इनकारियों से जहन्नम की आग का वादा किया है, जिसमें वे सदैव रहेंगे। वही उनके लिए काफ़ी है। अल्लाह ने उन पर लानत की, और उनके लिए हमेशा रहने वाली यातना है। तुम भी उन लोगों की तरह हो जो तुमसे पहले थे: वे तुमसे ज़्यादा ताक़तवर थे, और माल और औलाद में तुमसे बढ़े हुए। तो उन्होंने अपने हिस्से का मज़ा उठाया, और तुमने भी अपने हिस्से का मज़ा उठाया जैसे तुमसे पहले वालों ने अपने हिस्से का मज़ा उठाया था; और तुम भी बेहूदा बातों में पड़े जैसे वे पड़े थे। यही हैं जिनके कर्म दुनिया और आख़िरत में अकारथ गए, और यही घाटे में हैं। क्या इन तक उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो इनसे पहले थे—नूह की क़ौम, आद और समूद, इबराहीम की क़ौम, मदयन वाले और उलट दी गई बस्तियाँ?

उनके रसूल उनके पास खुले प्रमाण लेकर आए। तो अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता; बल्कि वे अपने ही ऊपर ज़ुल्म करते थे। (64–70)

और ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें एक-दूसरे के संरक्षक हैं: वे भलाई का हुक्म देते और बुराई से रोकते हैं, नमाज़ क़ायम रखते हैं, ज़कात देते हैं, और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानते हैं। यही हैं जिन पर अल्लाह दया करेगा। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। अल्लाह ने ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों से ऐसे बाग़ों का वादा किया है जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वे सदैव रहेंगे, और हमेशा रहने वाली नेमत के बाग़ों में उम्दा घरों का; और अल्लाह की रज़ामन्दी इन सबसे बढ़कर है। यही बड़ी कामयाबी है। (71–72)

ऐ नबी, सत्य के इनकारियों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करो, और उनके साथ सख़्ती से पेश आओ। उनका ठिकाना जहन्नम है—और वह बहुत बुरी जगह है। वे अल्लाह की क़समें खाते हैं कि उन्होंने कुछ नहीं कहा, हालाँकि उन्होंने इनकार की बात कही और अल्लाह के आगे समर्पण के बाद सत्य का इनकार किया; और उन्होंने उस चीज़ की ठानी जिसे वे पा न सके। और उन्हें बस इसी बात का बुरा लगा कि अल्लाह और उसके रसूल ने उन्हें अपने अनुग्रह से मालामाल कर दिया। तो अगर वे तौबा कर लें, तो यह उनके लिए बेहतर होगा; और अगर मुँह मोड़ें, तो अल्लाह उन्हें दुनिया और आख़िरत में दुखद यातना देगा, और ज़मीन में उनका न कोई संरक्षक होगा न मददगार। (73–74)

और उनमें कुछ ऐसे हैं जिन्होंने अल्लाह से अह्द किया था: “अगर उसने हमें अपने अनुग्रह से दिया, तो हम ज़रूर सदक़ा देंगे और नेक लोगों में से होंगे।” मगर जब उसने उन्हें अपने अनुग्रह से दिया, तो वे उसमें कंजूसी करने लगे और बेरुख़ी के साथ मुँह फेर गए। तो उसने इसके नतीजे में उनके दिलों में उस दिन तक के लिए निफ़ाक़ डाल दिया जब वे उससे मिलेंगे, इसलिए कि उन्होंने अल्लाह से किया हुआ वादा तोड़ा और इसलिए कि वे झूठ बोलते थे। क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह उनके भेद और उनकी कानाफूसियाँ जानता है, और यह कि अल्लाह सारे परोक्ष का जानने वाला है? जो लोग उन ईमान वालों पर नुक्ताचीनी करते हैं जो दिल खोलकर सदक़ा देते हैं, और उन पर भी जिनके पास अपनी मेहनत के सिवा देने को कुछ नहीं, और उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं—अल्लाह उनका मज़ाक़ उड़ाता है, और उनके लिए दुखद यातना है। तुम उनके लिए क्षमा माँगो या न माँगो: अगर तुम उनके लिए सत्तर बार भी क्षमा माँगोगे, तब भी अल्लाह उन्हें हरगिज़ क्षमा न करेगा। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इनकार किया; और अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को राह नहीं दिखाता। (75–80)

जो पीछे छोड़ दिए गए वे अल्लाह के रसूल के पीछे अपने घर बैठ रहने पर ख़ुश हुए, और उन्हें नागवार हुआ कि अपने माल और अपनी जान से अल्लाह की राह में जिहाद करें। और उन्होंने कहा, “इस गर्मी में न निकलो।” कह दो, “जहन्नम की आग इससे कहीं ज़्यादा गर्म है”—काश वे समझते। तो वे थोड़ा हँस लें; फिर बहुत रोएँगे, उसके बदले में जो वे कमाते रहे। फिर अगर अल्लाह तुम्हें उनके किसी गिरोह की ओर वापस

ले आए और वे तुमसे निकलने की इजाज़त माँगें, तो कह देना, "तुम मेरे साथ कभी न निकलोगे, और न मेरे साथ होकर किसी दुश्मन से लड़ोगे। तुम पहली बार बैठ रहने पर राज़ी हुए थे, तो अब भी पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो।" (81–83)

और उनमें से जो कोई मर जाए उस पर कभी नमाज़ न पढ़ना, और न उसकी क़ब्र पर खड़े होना: उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इनकार किया, और अवज्ञा ही की हालत में मरे। और न उनके माल तुम्हें अचम्भे में डालें न उनकी औलाद। अल्लाह तो बस यह चाहता है कि इन्हीं के द्वारा उन्हें दुनिया में यातना दे, और उनकी जानें इस हाल में निकलें कि वे सत्य के इनकारी हों। और जब कोई सूरत उतारी जाती है कि "अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ होकर जिहाद करो," तो उनमें के मालदार लोग तुमसे इजाज़त माँगते हैं, और कहते हैं, "हमें छोड़ दो कि हम बैठने वालों के साथ रहें।" वे इस पर राज़ी हो गए कि पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ रहें। और उनके दिलों पर मुहर लगा दी गई, तो वे समझते नहीं। मगर रसूल और वे लोग जो उसके साथ ईमान लाए, अपने माल और अपनी जान से जिहाद करते हैं। सारी भलाइयाँ उन्हीं के लिए हैं, और वही सफल होने वाले हैं। अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वे सदा-सदा रहेंगे। यही बड़ी कामयाबी है। (84–89)

और देहाती अरबों में से कुछ बहाना करने वाले आए, इजाज़त माँगते हुए, और वे लोग घर बैठे रहे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से झूठ बोला था। उनमें से जिन्होंने सत्य का इनकार किया उन्हें जल्द ही दुखद यातना पहुँचेगी। कमज़ोरों पर, बीमारों पर, और उन पर जिनके पास ख़र्च करने को कुछ नहीं, कोई दोष नहीं, बशर्ते कि वे अल्लाह और उसके रसूल के ख़ैरख़्वाह हों। अच्छा करने वालों पर इलज़ाम की कोई राह नहीं: और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। और न उन पर जो तुम्हारे पास आए कि तुम उन्हें सवारी दो, और जब तुमने कहा, "मेरे पास कुछ नहीं जिस पर तुम्हें सवार करूँ," तो वे इस हाल में लौटे कि उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे, इस ग़म में कि उनके पास ख़र्च करने को कुछ नहीं। इलज़ाम की राह तो बस उन पर है जो मालदार होते हुए भी तुमसे इजाज़त माँगते हैं। वे इस पर राज़ी हो गए कि पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ रहें। और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी, तो वे जानते नहीं। (90–93)

जब तुम उनके पास लौटोगे तो वे तुम्हारे सामने बहाने पेश करेंगे। कह दो, "बहाने न बनाओ; हम तुम्हारी बात हरगिज़ न मानेंगे। अल्लाह हमें तुम्हारे हालात बता चुका है। और अल्लाह तुम्हारे काम देखेगा, और उसका रसूल भी; फिर तुम उसकी ओर लौटाए जाओगे जो परोक्ष और प्रत्यक्ष का जानने वाला है, और वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे।" जब तुम उनके पास लौटोगे तो वे तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाएँगे, ताकि तुम उनसे दरगुज़र करो। तो उन्हें उनके हाल पर छोड़ दो: वे गन्दगी हैं, और उनका ठिकाना जहन्नम है, उसके बदले में जो वे कमाते रहे। वे तुम्हारे सामने क़समें खाएँगे ताकि तुम उनसे राज़ी हो जाओ; मगर तुम उनसे राज़ी हो भी जाओ, तो अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों से राज़ी नहीं होता। (94–96)

देहाती अरब इनकार और निफ़ाक़ में सबसे सख़्त हैं, और इसी लायक़ हैं कि उन हदों को न जानें जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारी हैं। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। और देहाती अरबों में कुछ ऐसे हैं जो अपने ख़र्च किए हुए को जुर्माना समझते हैं, और तुम पर ज़माने की गर्दिशें आने की राह देखते हैं। बुरी गर्दिश उन्हीं पर पड़े! और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। और देहाती अरबों में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हैं, और अपने ख़र्च किए हुए को अल्लाह के क़रीब होने और रसूल की दुआएँ पाने का ज़रिया समझते हैं। सुन लो, वह वाक़ई उनके लिए क़ुरबत का ज़रिया है: अल्लाह उन्हें अपनी दयालुता में दाख़िल करेगा। निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (97–99)

और मुहाजिरों और अनसार में से जो सबसे पहले आगे बढ़ने वाले हैं, और वे जो नेकी के साथ उनके पीछे चले: अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे उससे राज़ी हुए। और उसने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वे सदा-सदा रहेंगे। यही बड़ी कामयाबी है। (100)

और तुम्हारे आस-पास के देहाती अरबों में मुनाफ़िक़ हैं, और मदीना वालों में भी; वे निफ़ाक़ में पक्के हो चुके हैं। तुम उन्हें नहीं जानते; हम उन्हें जानते हैं। हम उन्हें दो बार यातना देंगे, फिर वे एक बड़ी यातना की ओर लौटाए जाएँगे। और कुछ दूसरे हैं जिन्होंने अपने गुनाहों का इक़रार कर लिया, उन्होंने एक अच्छे कर्म को दूसरे बुरे कर्म के साथ मिला दिया। हो सकता है अल्लाह उन पर दया-दृष्टि करे: निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। उनके माल में से सदक़ा लो ताकि उसके द्वारा उन्हें साफ़-सुथरा और पाक करो, और उनके लिए दुआ करो: निश्चय ही तुम्हारी दुआ उनके लिए तसकीन है। और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह ही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता और सदक़े लेता है, और यह कि अल्लाह ही बड़ा तौबा क़बूल करने वाला, सदा दयावान है? और कह दो, "काम किए जाओ! अल्लाह तुम्हारे काम देखेगा, और उसका रसूल और ईमान वाले भी। फिर तुम उसकी ओर लौटाए जाओगे जो परोक्ष और प्रत्यक्ष का जानने वाला है, और वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे।" और कुछ दूसरे हैं जिनका मामला अल्लाह के हुक्म के इन्तिज़ार में टला हुआ है: चाहे वह उन्हें यातना दे या उन पर दया-दृष्टि करे। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। (101–106)

और कुछ वे हैं जिन्होंने एक मसजिद बनाई नुक़सान पहुँचाने और इनकार के लिए, ईमान वालों में फूट डालने के लिए, और उस आदमी के लिए घात का ठिकाना बनाने को जो इससे पहले अल्लाह और उसके रसूल से लड़ चुका है। और वे ज़रूर क़समें खाएँगे, "हमने तो बस भलाई ही चाही थी"; मगर अल्लाह गवाही देता है कि वे झूठे हैं। तुम उसमें कभी नमाज़ के लिए खड़े न होना। वह मसजिद जिसकी बुनियाद पहले दिन से अल्लाह के प्रति सचेतता पर रखी गई है, इसकी ज़्यादा हक़दार है कि तुम उसमें खड़े हो। उसमें ऐसे लोग हैं जो पाक रहना पसन्द करते हैं; और अल्लाह पाक रहने वालों को पसन्द करता है। तो कौन बेहतर है: वह जिसने अपनी इमारत की बुनियाद अल्लाह के प्रति सचेतता और उसकी रज़ामन्दी पर रखी, या वह जिसने अपनी इमारत की बुनियाद एक खोखले, ढहते हुए कगार के किनारे पर रखी, तो वह उसे लेकर

जहन्नम की आग में जा गिरी? और अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। जो इमारत उन्होंने बनाई है वह उनके दिलों में हमेशा शक का काँटा बनी रहेगी, यहाँ तक कि उनके दिल ही टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। (107–110)

निस्संदेह अल्लाह ने ईमान वालों से उनकी जानें और उनके माल जन्नत के बदले ख़रीद लिए हैं: वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं, तो मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं—यह उसके ज़िम्मे एक सच्चा वादा है, तौरात, इंजील और क़ुरआन में। और अल्लाह से बढ़कर अपने अह्द को पूरा करने वाला कौन है? तो अपने उस सौदे पर ख़ुशियाँ मनाओ जो तुमने उससे किया है: और यही बड़ी कामयाबी है। वे तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले, हम्द करने वाले, उसकी राह में सफ़र करने वाले, रुकू करने वाले, सजदा करने वाले, भलाई का हुक्म देने वाले और बुराई से रोकने वाले, और अल्लाह की ठहराई हुई हदों की हिफ़ाज़त करने वाले। और ईमान वालों को शुभ-सूचना दे दो। (111–112)

नबी और ईमान वालों के लिए उचित नहीं कि वे मुशरिकों के लिए क्षमा माँगें, चाहे वे क़रीबी रिश्तेदार ही हों, इसके बाद कि उन पर खुल चुका कि वे दहकती आग वाले हैं। और इबराहीम का अपने बाप के लिए क्षमा माँगना बस एक वादे के कारण था जो उसने उससे किया था; फिर जब उस पर खुल गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है, तो वह उससे बेज़ार हो गया। निश्चय ही इबराहीम बड़ा नर्मदिल, सहनशील था। और अल्लाह ऐसा नहीं कि किसी क़ौम को राह दिखाने के बाद भटकने दे जब तक उन पर वह स्पष्ट न कर दे जिससे उन्हें बचना है। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ का पूरा ज्ञान रखता है। आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है; वही ज़िन्दगी देता है और वही मौत देता है। और अल्लाह के सिवा तुम्हारा न कोई संरक्षक है न मददगार। (113–116)

अल्लाह ने नबी पर दया-दृष्टि की, और उन मुहाजिरों और अनसार पर जिन्होंने तंगी की घड़ी में उसका साथ दिया, इसके बाद कि उनमें से एक गिरोह के दिल डगमगाने को थे। फिर उसने उन पर दया-दृष्टि की: निश्चय ही वह उन पर बड़ा मेहरबान, सदा दयावान है। और उन तीनों पर भी जो पीछे छोड़ दिए गए थे: यहाँ तक कि जब ज़मीन अपने फैलाव के बावजूद उन पर तंग हो गई, और उनकी अपनी जानें उन पर तंग हो गईं, और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से बचने की कोई पनाह नहीं सिवाय उसी के पास, तो उसने उन पर दया-दृष्टि की ताकि वे पलट आएँ। निस्संदेह अल्लाह ही बड़ा तौबा क़बूल करने वाला, सदा दयावान है। (117–118)

ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह के प्रति सचेत रहो, और सच्चों के साथ हो जाओ। मदीना वालों और उनके आस-पास के देहाती अरबों के लिए यह उचित न था कि अल्लाह के रसूल से पीछे रह जाएँ, और न यह कि अपनी जानों को उसकी जान से ज़्यादा प्यारा रखें। यह इसलिए कि उन्हें अल्लाह की राह में न कोई प्यास लगती है, न थकान, न भूख, न वे कोई ऐसा क़दम उठाते हैं जो सत्य के इनकारियों को ग़ुस्सा दिलाए, और न किसी दुश्मन से कुछ हासिल करते हैं, मगर इसके बदले उनके लिए एक नेक कर्म लिख दिया जाता है।

निश्चय ही अल्लाह अच्छा करने वालों का बदला अकारथ नहीं करता। और वे जो कुछ ख़र्च करते हैं, थोड़ा हो या बहुत, और जो घाटी भी पार करते हैं, वह उनके हक़ में लिख लिया जाता है, ताकि अल्लाह उन्हें उनके सबसे अच्छे कामों का बदला दे। (119–121)

और ईमान वालों के लिए यह उचित नहीं कि सब-के-सब निकल खड़े हों। तो ऐसा क्यों न हो कि उनके हर हिस्से में से एक गिरोह निकले ताकि दीन की गहरी समझ हासिल करे, और ताकि जब वे अपनी क़ौम की ओर लौटें तो उसे सचेत करें, ताकि वे चौकन्ने रहें? ऐ ईमान लाने वालो, सत्य के उन इनकारियों से लड़ो जो तुम्हारे क़रीब हैं, और चाहिए कि वे तुममें सख़्ती पाएँ। और जान लो कि अल्लाह उनके साथ है जो उसके प्रति सचेत रहते हैं। (122–123)

और जब कोई सूरत उतारी जाती है, तो उनमें से कुछ कहते हैं, “इसने तुममें से किसका ईमान बढ़ाया?” तो जो ईमान लाए हैं, उनका ईमान तो इसने बढ़ा दिया, और वे ख़ुशियाँ मनाते हैं। मगर जिनके दिलों में रोग है, उनकी गन्दगी पर इसने और गन्दगी बढ़ा दी, और वे सत्य के इनकार ही की हालत में मरे। क्या वे नहीं देखते कि वे हर साल एक या दो बार आज़माइश में डाले जाते हैं? फिर भी न तौबा करते हैं न नसीहत पकड़ते हैं। और जब कोई सूरत उतारी जाती है, तो वे एक-दूसरे की ओर देखते हैं: “कोई तुम्हें देख तो नहीं रहा?” फिर खिसक जाते हैं। अल्लाह ने उनके दिल फेर दिए हैं, इसलिए कि वे ऐसे लोग हैं जो समझ नहीं रखते। (124–127)

निश्चय ही तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आया है। तुम्हारा तकलीफ़ में पड़ना उस पर बहुत भारी है; वह तुम्हारी भलाई का बड़ा इच्छुक है, और ईमान वालों के लिए बड़ा मेहरबान, दयावान है। फिर अगर वे मुँह मोड़ें, तो कह दो, “मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है। उसके सिवा कोई इलाह नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया, और वही महान अर्श का रब है।” (128–129)

# 10. यूनुस (यूनुस)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

अलिफ़ लाम रा। ये हिकमत से भरी किताब की आयतें और निशानियाँ हैं। क्या लोगों के लिए यह अचम्भे की बात है कि हमने उन्हीं में के एक आदमी की ओर वह्य भेजी: "लोगों को सचेत करो, और ईमान लाने वालों को शुभ-सूचना दो कि उनके लिए उनके रब के पास सच्चा मर्तबा है"? सत्य के इनकारी कहते हैं, "यह तो खुला जादूगर है।" (1–2)

निस्संदेह तुम्हारा रब अल्लाह है, जिसने आसमानों और ज़मीन को छह युगों में पैदा किया, फिर अर्श पर विराजमान हुआ, वह हर काम का प्रबन्ध करता है। कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं मगर उसकी इजाज़त के बाद। यही अल्लाह है, तुम्हारा रब: तो उसी की इबादत करो। तो क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते? उसी की ओर तुम सबको लौटना है—अल्लाह का वादा सच्चा है। वही सृष्टि का आरम्भ करता है, फिर उसे दोहराएगा, ताकि जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उन्हें न्याय के साथ बदला दे। और जो लोग सत्य का इनकार करते हैं, उनके लिए खौलता हुआ पानी पीने को है और दुखद यातना, उनके इनकार के बदले। (3–4)

वही है जिसने सूरज को तेज़ चमक और चाँद को रौशनी बनाया, और उसके लिए मंज़िलें ठहरा दीं, ताकि तुम वर्षों की गिनती और समय का हिसाब जान लो। अल्लाह ने यह सब नहीं पैदा किया मगर सत्य के साथ। वह निशानियाँ उन लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान करता है जो जानते हैं। निश्चय ही रात और दिन के अदल-बदल में, और उन सब चीज़ों में जो अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में पैदा की हैं, उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो उसके प्रति सचेत रहते हैं। जो लोग हमसे मिलने की आस नहीं रखते, जो दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए और उसी में चैन पा लिया, और जो हमारी निशानियों से बेपरवाह हैं—उनका ठिकाना आग है, उसके बदले जो वे कमाते रहे। जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए—उनका रब उनके ईमान के कारण उन्हें राह दिखाएगा; नेमत भरे बाग़ों में उनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वहाँ उनकी पुकार होगी, "तू पाक है, ऐ अल्लाह!" और वहाँ उनका अभिवादन होगा, "सलाम!"; और उनकी पुकार का अन्त यह होगा, "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसारों का रब है।" (5–10)

और अगर अल्लाह लोगों के लिए बुराई में वैसी ही जल्दी करता जैसी वे भलाई के लिए जल्दी मचाते हैं, तो उनकी अवधि कब की पूरी कर दी गई होती। मगर हम उन लोगों को, जो हमसे मिलने की आस नहीं रखते, उनकी सरकशी में अंधों की तरह भटकने के लिए छोड़ देते हैं। और जब इनसान को कोई तकलीफ़ छूती है, तो वह हमें पुकारता है, लेटे हुए, या बैठे हुए, या खड़े हुए; मगर जब हम उसकी तकलीफ़ उससे दूर कर देते हैं, तो वह यूँ चल देता है मानो उसने कभी किसी तकलीफ़ पर, जो उसे छू गई थी, हमें पुकारा ही न था। इसी तरह हद से बढ़ने वालों के लिए उनके काम लुभावने बना दिए गए हैं। और हमने तुमसे पहले कितनी ही नस्लों को हलाक कर दिया जब उन्होंने ज़ुल्म किया: उनके रसूल उनके पास खुले प्रमाण लेकर आए,

मगर वे ईमान लाने वाले न थे। इसी तरह हम अपराधी लोगों को बदला देते हैं। फिर उनके बाद हमने तुम्हें ज़मीन में जानशीन बनाया, ताकि देखें कि तुम कैसे काम करते हो। (11–14)

और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं, तो वे लोग जो हमसे मिलने की आस नहीं रखते कहते हैं, "इसके सिवा कोई और क़ुरआन ले आओ, या इसे बदल दो।" कह दो, "मेरा यह काम नहीं कि मैं अपनी ओर से इसे बदल दूँ। मैं तो बस उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरी ओर वह्य किया जाता है। अगर मैं अपने रब की अवज्ञा करूँ, तो मुझे एक बड़े दिन की यातना का डर है।" कह दो, "अगर अल्लाह चाहता, तो मैं इसे तुम्हें न सुनाता, और न वह तुम्हें इसकी ख़बर देता। मैं इससे पहले तुम्हारे बीच एक उम्र गुज़ार चुका हूँ। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?" (15–16)

फिर उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या उसकी आयतों को झुठलाए? निश्चय ही अपराधी कभी सफल नहीं होते। और वे अल्लाह के सिवा उनकी इबादत करते हैं जो न उन्हें नुक़सान पहुँचा सकते हैं न फ़ायदा, और कहते हैं, "ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं।" कह दो, "क्या तुम अल्लाह को उस चीज़ की ख़बर देते हो जिसे वह न आसमानों में जानता है न ज़मीन में?" वह पाक है! और वह उन सबसे बहुत ऊँचा है जिन्हें वे उसके साथ साझी ठहराते हैं। और सारे लोग कभी एक ही समुदाय थे; फिर उन्होंने मतभेद किया। और अगर तुम्हारे रब की ओर से एक बात पहले न हो चुकी होती, तो जिन बातों में वे मतभेद कर रहे हैं उनका फ़ैसला उनके बीच कब का कर दिया गया होता। और वे कहते हैं, "इस पर इसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई?" कह दो, "परोक्ष तो बस अल्लाह ही के लिए है। तो इन्तिज़ार करो: मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूँ।" और जब हम लोगों को किसी तकलीफ़ के बाद, जो उन्हें छू गई हो, दयालुता का मज़ा चखाते हैं, तो वे तुरन्त हमारी आयतों के ख़िलाफ़ चालें चलने लगते हैं। कह दो, "अल्लाह अपनी चाल में कहीं ज़्यादा तेज़ है।" हमारे भेजे हुए वह सब लिख रहे हैं जो चालें तुम चलते हो। (17–21)

वही है जो तुम्हें ख़ुश्की और समुद्र में चलाता है, यहाँ तक कि जब तुम नौकाओं में होते हो और वे अनुकूल हवा के साथ उन्हें लेकर चलती हैं, और वे उस पर ख़ुश होते हैं, तो उन पर एक तेज़ आँधी आ जाती है, और हर ओर से लहरें उन पर चढ़ आती हैं, और वे समझ लेते हैं कि घिर गए। तब वे अल्लाह को पुकारते हैं, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए: "अगर तूने हमें इससे बचा लिया, तो हम ज़रूर शुक्रगुज़ारों में से होंगे।" मगर जब वह उन्हें बचा लेता है, तो वे तुरन्त ज़मीन में नाहक़ सरकशी करने लगते हैं। ऐ लोगो, तुम्हारी सरकशी तुम्हारे अपने ही ख़िलाफ़ है—दुनिया की ज़िन्दगी का थोड़ा-सा मज़ा; फिर हमारी ही ओर तुम्हें लौटना है, और हम तुम्हें बता देंगे जो कुछ तुम करते रहे। (22–23)

दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल तो बस ऐसी है: जैसे पानी जिसे हमने आसमान से उतारा, तो उससे ज़मीन की वह पैदावार, जिसे इनसान और चौपाए खाते हैं, घनी होकर निकली, यहाँ तक कि जब ज़मीन ने अपना सिंगार कर लिया और सज गई, और उसके लोगों ने समझा कि अब वे उस पर क़ाबू रखते हैं, तो रात को या

दिन को हमारा हुक्म उस पर आ गया, और हमने उसे कटी हुई खेती की तरह कर दिया, मानो कल वहाँ कुछ था ही नहीं। इसी तरह हम निशानियाँ उन लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान करते हैं जो सोच-विचार करते हैं। (24)

और अल्लाह सलामती के घर की ओर बुलाता है, और जिसे चाहता है सीधे मार्ग की राह दिखाता है। जिन्होंने अच्छा किया उनके लिए सबसे अच्छा बदला है, और उस पर और भी। उनके चेहरों पर न सियाही छाएगी न ज़िल्लत। वही जन्नत वाले हैं, और वे उसमें सदा-सदा रहेंगे। और जिन्होंने बुराइयाँ कमाईं, तो बुराई का बदला उसी जैसा है, और उन पर ज़िल्लत छाई होगी। अल्लाह से उन्हें बचाने वाला कोई न होगा: मानो उनके चेहरों पर अँधेरी रात के टुकड़े ओढ़ा दिए गए हों। वही आग वाले हैं, और वे उसमें सदा-सदा रहेंगे। (25–27)

और जिस दिन हम उन सब को इकट्ठा करेंगे, फिर अल्लाह के साथ साझी ठहराने वालों से कहेंगे, "अपनी जगह ठहरे रहो, तुम भी और तुम्हारे ठहराए हुए साझी भी।" फिर हम उन्हें अलग-अलग कर देंगे, और उनके साझी कहेंगे, "तुम हमारी इबादत तो नहीं करते थे।" "हमारे और तुम्हारे बीच गवाह के तौर पर अल्लाह काफ़ी है: हम तुम्हारी इबादत से बिलकुल बेख़बर थे।" वहाँ हर जान उसे परख लेगी जो उसने आगे भेजा था। और वे अल्लाह की ओर लौटाए जाएँगे, जो उनका सच्चा मालिक है, और जो कुछ वे गढ़ा करते थे वह सब उनसे गुम हो जाएगा। (28–30)

कह दो, "कौन तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है? कौन कानों और आँखों का मालिक है? कौन जानदार को बेजान से निकालता है और बेजान को जानदार से निकालता है? और कौन हर काम का प्रबन्ध करता है?" वे कहेंगे, "अल्लाह।" तो कहो, "फिर क्या तुम उसके प्रति सचेत न होगे?" तो यही अल्लाह है, तुम्हारा सच्चा रब। फिर सत्य के बाद गुमराही के सिवा और क्या है? तो तुम किधर फेरे जाते हो? इसी तरह तुम्हारे रब की बात अवज्ञाकारियों पर सच साबित हुई: कि वे ईमान नहीं लाएँगे। कह दो, "क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझियों में कोई है जो सृष्टि का आरम्भ करे फिर उसे दोहराए?" कह दो, "अल्लाह ही सृष्टि का आरम्भ करता है फिर उसे दोहराएगा। तो तुम किधर बहकाए जाते हो?" कह दो, "क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझियों में कोई है जो सत्य की राह दिखाए?" कह दो, "अल्लाह ही सत्य की राह दिखाता है। तो जो सत्य की राह दिखाता है वह पैरवी का ज़्यादा हक़दार है, या वह जो ख़ुद राह नहीं पाता जब तक उसे राह न दिखाई जाए? तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा फ़ैसला करते हो?" और उनमें से अधिकतर बस अटकल के पीछे चलते हैं; और अटकल सत्य के मुक़ाबले में कुछ भी काम नहीं आती। जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसे ख़ूब जानता है।[14] (31–36)

और यह क़ुरआन ऐसा नहीं कि अल्लाह के सिवा कोई और इसे गढ़ ले। बल्कि यह उसकी पुष्टि है जो इससे पहले आ चुका, और किताब का खुला बयान है, जिसमें कोई सन्देह नहीं, सारे संसारों के रब की ओर से। या

[14] **नास्तिकता की बुनियाद अटकल (ज़न्न) पर है: एक वैज्ञानिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या**

वे कहते हैं, "इसने इसे ख़ुद गढ़ लिया है"? कह दो, "तो इस जैसी एक सूरत ले आओ, और अल्लाह के सिवा जिसे बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो।" नहीं: बल्कि उन्होंने उस चीज़ को झुठला दिया जिसे वे अपने ज्ञान के घेरे में न ला सके, और जिसकी हक़ीक़त अभी उनके सामने नहीं आई। इसी तरह उनसे पहले के लोगों ने भी सत्य को झुठलाया; तो देखो, ज़ालिमों का अंजाम कैसा हुआ। (37–39)

और उनमें कुछ ऐसे हैं जो इस पर ईमान लाते हैं, और कुछ ऐसे जो ईमान नहीं लाते; और तुम्हारा रब बिगाड़ फैलाने वालों को ख़ूब जानता है। और अगर वे तुम्हें झुठलाएँ, तो कह दो, "मेरा काम मेरे लिए है और तुम्हारा काम तुम्हारे लिए। जो कुछ मैं करता हूँ उसके तुम ज़िम्मेदार नहीं, और जो कुछ तुम करते हो उसका मैं ज़िम्मेदार नहीं।" और उनमें कुछ ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं। तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे, चाहे वे समझते भी न हों? और उनमें कुछ ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर देखते हैं। तो क्या तुम अंधों को राह दिखाओगे, चाहे उन्हें कुछ सूझता भी न हो? निश्चय ही अल्लाह लोगों पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं करता; बल्कि लोग ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं। (40–44)

और जिस दिन वह उन्हें इकट्ठा करेगा, तो ऐसा लगेगा मानो वे दुनिया में दिन की एक घड़ी से ज़्यादा ठहरे ही न थे, वे एक-दूसरे को पहचानेंगे। निश्चय ही घाटे में रहे वे लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और राह पाने वाले न हुए। और चाहे हम तुम्हें उसका कुछ हिस्सा दिखा दें जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं, या उससे पहले तुम्हें अपने पास बुला लें, उन्हें लौटना तो हमारी ही ओर है; फिर जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उस पर गवाह है। और हर समुदाय के लिए एक रसूल है; फिर जब उनका रसूल आ जाता है, तो उनके बीच न्याय के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है, और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाता। और वे कहते हैं, "यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो?" कह दो, "मैं तो अपने लिए भी किसी नुक़सान और फ़ायदे का अधिकार नहीं रखता, सिवाय उसके जो अल्लाह चाहे। हर समुदाय के लिए एक अवधि है; जब उनकी अवधि आ जाती है, तो वे न एक घड़ी पीछे हट सकते हैं न आगे बढ़ सकते हैं।" कह दो, "भला बताओ: अगर उसकी यातना तुम पर रात को या दिन को आ जाए, तो अपराधी उसमें से किस चीज़ के लिए जल्दी मचा रहे हैं?" क्या फिर जब वह आ पड़ेगी, तब तुम उस पर ईमान लाओगे? "अब?—हालाँकि तुम तो इसी के लिए जल्दी मचाया करते थे!" फिर ज़ुल्म करने वालों से कहा जाएगा, "चखो हमेशा की यातना का मज़ा! तुम्हें उसी का तो बदला दिया जा रहा है जो तुम कमाते रहे।" (45–52)

और वे तुमसे पूछते हैं, "क्या यह सच है?" कह दो, "हाँ, मेरे रब की क़सम, यह बिलकुल सच है—और तुम उससे बच निकलने वाले नहीं।" और अगर हर उस जान के पास, जिसने ज़ुल्म किया, वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है, तो वह उसे फ़िदये में दे डाले। और जब वे यातना को देखेंगे तो अपनी शर्मिन्दगी छिपाएँगे; और उनके बीच न्याय के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा, और उन पर ज़ुल्म न होगा। सुन लो, जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है। सुन लो, अल्लाह का वादा सच्चा है—मगर उनमें से अधिकतर जानते नहीं। वही ज़िन्दगी देता है और वही मौत देता है, और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे। (53–56)

ऐ लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से नसीहत आ गई है, और उसके लिए शिफ़ा जो सीनों में है, और ईमान वालों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता। कह दो, "अल्लाह के अनुग्रह और उसकी दयालुता पर—बस इसी पर उन्हें ख़ुश होना चाहिए: यह उस सबसे बेहतर है जो वे समेटते हैं।" कह दो, "भला बताओ, अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो रोज़ी उतारी, फिर तुमने उसमें से कुछ को हराम और कुछ को हलाल ठहरा लिया?" कह दो, "क्या अल्लाह ने तुम्हें इसकी इजाज़त दी है, या तुम अल्लाह पर झूठ गढ़ते हो?" और जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं वे क़ियामत के दिन के बारे में क्या समझते हैं? निश्चय ही अल्लाह लोगों पर बड़ा अनुग्रह करने वाला है, मगर उनमें से अधिकतर शुक्र अदा नहीं करते। (57–60)

और तुम जिस हाल में भी होते हो, और क़ुरआन में से जो कुछ भी पढ़ते हो, और तुम लोग जो काम भी करते हो, हम तुम पर गवाह होते हैं जब तुम उसमें लगे होते हो। और तुम्हारे रब से ज़र्रे के बराबर भी कोई चीज़ न ज़मीन में छिपी है न आसमान में, और न उससे छोटी कोई चीज़ न बड़ी, मगर वह एक खुली किताब में है। सुन लो, अल्लाह के दोस्तों पर—न कोई भय होगा, न वे दुखी होंगे: वे जो ईमान लाए और अल्लाह के प्रति सचेत रहे। उनके लिए दुनिया की ज़िन्दगी में भी शुभ-सूचना है और आख़िरत में भी। अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं। यही बड़ी कामयाबी है। और उनकी बातें तुम्हें दुखी न करें। निश्चय ही सारी इज़्ज़त अल्लाह ही के लिए है: वही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। सुन लो, जो कोई आसमानों में है और जो कोई ज़मीन में है सब अल्लाह ही के हैं। और जो लोग अल्लाह के सिवा ठहराए हुए साझियों को पुकारते हैं वे किसी चीज़ के पीछे नहीं चल रहे; वे तो बस अटकल के पीछे चलते हैं, और वे बस अनुमान ही लगाते हैं। वही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई, ताकि तुम उसमें आराम करो, और दिन को दिखाने वाला बनाया। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सुनते हैं। (61–67)

वे कहते हैं, "अल्लाह ने बेटा बना लिया है।" वह पाक है! वह निस्पृह है; जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का है। तुम्हारे पास इसका कोई प्रमाण नहीं। क्या तुम अल्लाह के बारे में वह बात कहते हो जो तुम नहीं जानते? कह दो, "जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं वे सफल नहीं होंगे।" दुनिया में थोड़ा-सा मज़ा; फिर हमारी ही ओर उन्हें लौटना है; फिर हम उन्हें कठोर यातना का मज़ा चखाएँगे, सत्य के उनके इनकार के बदले। (68–70)

और उन्हें नूह का हाल सुनाओ, जब उसने अपनी क़ौम से कहा, "ऐ मेरी क़ौम, अगर मेरा रहना और अल्लाह की आयतों के द्वारा मेरा याद दिलाना तुम पर भारी है, तो मैंने अल्लाह ही पर भरोसा किया है। तो तुम अपना मामला पक्का कर लो, तुम भी और तुम्हारे ठहराए हुए साझी भी, फिर तुम्हारा मामला तुम पर ढका-छिपा न रहे; फिर मेरे साथ उसे कर गुज़रो, और मुझे मुहलत न दो। "फिर अगर तुम मुँह मोड़ो, तो मैंने तुमसे कोई बदला नहीं माँगा। मेरा बदला तो बस अल्लाह के ज़िम्मे है, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं उन लोगों में से रहूँ जो अल्लाह के आगे समर्पित हैं।" मगर उन्होंने उसे झुठला दिया; तो हमने उसे और उन लोगों को जो उसके साथ नौका में थे बचा लिया, और उन्हें जानशीन बनाया, और उन्हें डुबो दिया जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था। तो देखो, उन लोगों का अंजाम कैसा हुआ जिन्हें सचेत किया गया था! (71–73)

फिर उसके बाद हमने कई रसूल उनकी अपनी-अपनी क़ौम की ओर भेजे, और वे उनके पास खुले प्रमाण लेकर आए; मगर वे उस चीज़ पर ईमान लाने वाले न थे जिसे पहले झुठला चुके थे। इसी तरह हम हद से बढ़ने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं। फिर उनके बाद हमने मूसा और हारून को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा; मगर उन्होंने घमंड किया, और वे अपराधी लोग थे। फिर जब हमारी ओर से सत्य उनके पास आया, तो बोले, "यह तो खुला जादू है।" मूसा ने कहा, "क्या तुम सत्य के बारे में यह कहते हो जबकि वह तुम्हारे पास आ चुका? क्या यह जादू है? जबकि जादूगर कभी सफल नहीं होते।" वे बोले, "क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमें उस राह से फेर दो जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है, और ज़मीन में बड़ाई तुम दोनों की हो जाए? हम तुम दोनों की बात मानने वाले नहीं।" और फ़िरऔन ने कहा, "हर माहिर जादूगर को मेरे पास ले आओ।" फिर जब जादूगर आ गए, तो मूसा ने उनसे कहा, "डालो जो कुछ तुम्हें डालना है।" फिर जब उन्होंने डाला, तो मूसा ने कहा, "जो कुछ तुम लाए हो वह जादू है; अल्लाह उसे ज़रूर मिटाकर रहेगा। निश्चय ही अल्लाह बिगाड़ फैलाने वालों का काम नहीं सँवारता। "और अल्लाह अपनी बातों से सत्य को क़ायम कर देता है, चाहे अपराधियों को कितना ही नागवार हो।" फिर मूसा की बात उसकी क़ौम के कुछ नौजवानों के सिवा किसी ने न मानी, इस डर से कि फ़िरऔन और उनके सरदार उन्हें सताएँगे—और निश्चय ही फ़िरऔन ज़मीन में बड़ा सरकश था, और वह हर हद से गुज़र जाने वालों में से था। (74–83)

और मूसा ने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो, तो उसी पर भरोसा करो, अगर तुम उसके आगे समर्पित हो चुके हो।" वे बोले, "हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया। ऐ हमारे रब, हमें ज़ालिम लोगों के लिए आज़माइश न बना, और अपनी दयालुता से हमें सत्य का इनकार करने वाले लोगों से छुटकारा दे।" और हमने मूसा और उसके भाई की ओर वह्य की: "अपनी क़ौम के लिए मिस्र में घर ठहराओ, और अपने घरों को इबादत की जगह बना लो, और नमाज़ क़ायम रखो; और ईमान वालों को शुभ-सूचना दे दो।" और मूसा ने कहा, "ऐ हमारे रब, तूने फ़िरऔन और उसके सरदारों को दुनिया की ज़िन्दगी में शान-शौकत और माल दिए हैं, ऐ हमारे रब, इसलिए कि वे लोगों को तेरी राह से भटकाएँ। ऐ हमारे रब, उनके माल मिटा दे और उनके दिल सख़्त कर दे, कि वे ईमान न लाएँ जब तक दुखद यातना न देख लें।" उसने कहा, "तुम दोनों की दुआ क़बूल हो गई। तो तुम दोनों जमे रहो, और उन लोगों की राह पर न चलना जो जानते नहीं।" (84–89)

और हमने इसराईल की सन्तान को समुद्र के पार उतार दिया, और फ़िरऔन और उसकी फ़ौजों ने सरकशी और दुश्मनी से उनका पीछा किया, यहाँ तक कि जब डूबने ने उसे आ लिया, तो बोला, "मैं ईमान लाया कि उसके सिवा कोई इलाह नहीं जिस पर इसराईल की सन्तान ईमान लाई है, और मैं उन लोगों में से हूँ जो उसके आगे समर्पित हैं।" "अब? हालाँकि इससे पहले तू अवज्ञा करता रहा, और बिगाड़ फैलाने वालों में से था? "तो आज हम तेरे बदन को बचा लेंगे, ताकि तू अपने बाद वालों के लिए एक निशानी बने।" और निश्चय ही बहुत-से लोग हमारी निशानियों से बेपरवाह हैं। और हमने इसराईल की सन्तान को एक अच्छा ठिकाना

दिया और उन्हें अच्छी चीज़ों की रोज़ी दी। फिर उन्होंने मतभेद नहीं किया यहाँ तक कि उनके पास ज्ञान आ गया। निश्चय ही तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उनके बीच उस बात का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे मतभेद करते थे। (90–93)

तो अगर तुम्हें उसके बारे में कोई शक हो जो हमने तुम्हारी ओर उतारा है, तो उनसे पूछ लो जो तुमसे पहले से किताब पढ़ते आ रहे हैं। निश्चय ही तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य आ चुका है, तो तुम सन्देह करने वालों में से न होना। और उन लोगों में से न होना जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, वरना तुम घाटा उठाने वालों में से हो जाओगे। जिन लोगों पर तुम्हारे रब की बात सच साबित हो चुकी है वे ईमान नहीं लाएँगे, चाहे उनके पास हर निशानी आ जाए, जब तक वे दुखद यातना न देख लें। तो कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुई कि ईमान लाती और उसका ईमान उसे फ़ायदा देता—सिवाय यूनुस की क़ौम के: जब वे ईमान लाए, तो हमने दुनिया की ज़िन्दगी में उनसे रुसवाई की यातना हटा दी और उन्हें एक समय तक जीवन का सुख भोगने दिया। और अगर तुम्हारा रब चाहता, तो ज़मीन में जितने भी हैं सब-के-सब ईमान ले आते। तो क्या तुम लोगों को मजबूर करोगे कि वे ईमान वाले हो जाएँ? किसी जान के लिए सम्भव नहीं कि अल्लाह के हुक्म के बिना ईमान लाए; और वह उन लोगों पर गन्दगी डाल देता है जो बुद्धि से काम नहीं लेते। कह दो, "देखो तो, आसमानों और ज़मीन में क्या कुछ है।" मगर निशानियाँ और चेतावनियाँ उन लोगों के कुछ काम नहीं आतीं जो ईमान लाने वाले नहीं। तो क्या वे बस वैसे ही दिनों का इन्तिज़ार कर रहे हैं जैसे उन लोगों पर आए जो इनसे पहले गुज़र चुके? कह दो, "तो इन्तिज़ार करो—मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूँ।" फिर हम अपने रसूलों को और उन्हें जो ईमान लाए बचा लेते हैं। इसी तरह हमारे ज़िम्मे है: हम ईमान वालों को बचा लेते हैं। (94–103)

कह दो, "ऐ लोगो, अगर तुम मेरे दीन के बारे में किसी शक में हो, तो जान लो कि मैं उनकी इबादत नहीं करता जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो; बल्कि मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूँ जो तुम्हारी जानें क़ब्ज़ करता है, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं ईमान वालों में से रहूँ, और यह कि एकनिष्ठ होकर अपना रुख़ इसी दीन की ओर रखो, और हरगिज़ अल्लाह के साथ साझी ठहराने वालों में से न होना।" और अल्लाह के सिवा उसे न पुकारो जो न तुम्हें फ़ायदा दे सकता है न नुक़सान; अगर तुमने ऐसा किया, तो तुम उस समय ज़ालिमों में से होगे। और अगर अल्लाह तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचाए, तो उसके सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं; और अगर वह तुम्हारे लिए किसी भलाई का इरादा करे, तो उसके अनुग्रह को कोई फेरने वाला नहीं। वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उसे पहुँचाता है। और वही बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। कह दो, "ऐ लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य आ चुका है। तो जो राह पर आएगा वह अपने ही भले के लिए राह पर आएगा, और जो भटकेगा वह अपने ही नुक़सान के लिए भटकेगा। और मैं तुम पर कोई दारोग़ा नहीं हूँ।" और उस पर चलो जो तुम्हारी ओर वह्य किया जाता है, और सब्र करो यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे: और वह सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है। (104–109)

# 11. हूद (हूद)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

अलिफ़ लाम रा। यह एक किताब है जिसकी आयतें और निशानियाँ पक्की की गईं फिर खोल-खोलकर बयान की गईं, उसकी ओर से जो हिकमत वाला, पूरी ख़बर रखने वाला है: कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। कह दो, "मैं उसकी ओर से तुम्हारे लिए सचेत करने वाला और शुभ-सूचना देने वाला हूँ; और यह कि तुम अपने रब से क्षमा माँगो फिर उसकी ओर पलट आओ। वह तुम्हें एक ठहराई हुई अवधि तक अच्छी जीवन-सामग्री देगा, और हर अनुग्रह के पात्र को अपना अनुग्रह देगा। और अगर तुम मुँह मोड़ोगे, तो मुझे तुम पर एक बड़े दिन की यातना का डर है। अल्लाह ही की ओर तुम्हें लौटना है, और वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है।" (1–4)

देखो, ये अपने सीने कैसे मोड़ते हैं ताकि उससे छिप जाएँ! सुन लो, जब ये अपने कपड़े ओढ़-लपेट रहे होते हैं, तब भी वह जानता है जो कुछ ये छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं। निश्चय ही वह सीनों तक की बात ख़ूब जानता है। और ज़मीन पर चलने वाला कोई जानदार ऐसा नहीं जिसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे न हो; वह उसके ठहरने की जगह भी जानता है और उसके सौंपे जाने की जगह भी। सब कुछ एक खुली किताब में दर्ज है। और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छह युगों में पैदा किया—और उसका अर्श पानी पर था—ताकि तुम्हें आज़माए कि तुममें कौन कर्म में सबसे अच्छा है। और अगर तुम कहो, "तुम मौत के बाद उठाए जाओगे," तो सत्य के इनकारी ज़रूर कहेंगे, "यह तो बस खुला जादू है।" और अगर हम एक गिनी हुई मुद्दत तक उनसे यातना को टाले रखें, तो वे ज़रूर कहेंगे, "किस चीज़ ने उसे रोक रखा है?" सुन लो, जिस दिन वह उन पर आ जाएगी, तो उनसे फेरी न जाएगी, और वही चीज़ उन्हें हर ओर से घेर लेगी जिसका वे मज़ाक़ उड़ाया करते थे। और अगर हम इनसान को अपनी ओर से दयालुता का मज़ा चखाएँ फिर उसे उससे छीन लें, तो वह बिलकुल निराश और नाशुक्रा हो जाता है। और अगर किसी तकलीफ़ के बाद, जो उसे छू गई हो, हम उसे नेमत का मज़ा चखाएँ, तो वह ज़रूर कहेगा, "बुराइयाँ मुझसे दूर हो गईं," और वह इतराने वाला, शेख़ी बघारने वाला हो जाता है—सिवाय उन लोगों के जो सब्र करते और अच्छे कर्म करते हैं: उनके लिए क्षमा है और बड़ा बदला। (5–11)

तो ऐ नबी, कहीं ऐसा न हो कि तुम उसका कुछ हिस्सा छोड़ बैठो जो तुम्हारी ओर वह्य किया जाता है, और उससे तुम्हारा सीना तंग हो, इसलिए कि वे कहते हैं, "इस पर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतारा गया, या इसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया?" तुम तो बस सचेत करने वाले हो, और अल्लाह हर चीज़ का निगहबान है। या वे कहते हैं, "इसने इसे ख़ुद गढ़ लिया है"? कह दो, "तो इस जैसी दस गढ़ी हुई सूरतें ले आओ, और अल्लाह के सिवा जिसे बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो।" फिर अगर वे तुम्हारी बात का जवाब न दें, तो जान लो कि यह अल्लाह के ज्ञान के साथ उतारा गया है, और यह कि उसके सिवा कोई इलाह नहीं। तो क्या अब तुम उसके आगे समर्पण करते हो? जो कोई दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी शोभा चाहता है, हम

उन्हें उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला यहीं दे देते हैं, और इसमें उनके साथ कोई कमी नहीं की जाती। यही वे लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में आग के सिवा कुछ नहीं: जो कुछ उन्होंने यहाँ बनाया वह सब अकारथ गया, और जो कुछ वे करते रहे वह सब बातिल है। तो क्या ऐसा आदमी उसके बराबर हो सकता है जो अपने रब की ओर से एक खुले प्रमाण पर हो, जिसे उसकी ओर से एक गवाह पढ़कर सुनाता हो, और उससे पहले मूसा की किताब मार्गदर्शक और दयालुता के रूप में मौजूद हो? ऐसे ही लोग इस पर ईमान रखते हैं; और गिरोहों में से जो कोई इसका इनकार करे, तो आग ही उसके वादे की जगह है। तो तुम इसके बारे में किसी शक में न पड़ना: यह तुम्हारे रब की ओर से सत्य है, मगर अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते। (12–17)

और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े? ऐसे लोग अपने रब के सामने पेश किए जाएँगे, और गवाह कहेंगे, "यही हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ बोला था।" सुन लो, अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर, जो दूसरों को अल्लाह की राह से रोकते और उसे टेढ़ा करना चाहते हैं, और जो आख़िरत का इनकार करते हैं। वे ज़मीन में अल्लाह को कभी बेबस करने वाले न थे, और न अल्लाह के सिवा उनके कोई संरक्षक हैं। उनकी यातना दोहरी कर दी जाएगी: वे न सुनने की ताब रखते थे, और न देखते थे। यही हैं जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला, और जो कुछ वे गढ़ा करते थे वह सब उनसे गुम हो गया। निश्चय ही आख़िरत में वही सबसे ज़्यादा घाटा उठाने वाले होंगे। मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए और अपने रब के आगे झुक गए—वही जन्नत वाले हैं, और वे उसमें सदा-सदा रहेंगे। दोनों गिरोहों की मिसाल ऐसी है जैसे एक ओर अंधा और बहरा हो और दूसरी ओर देखने और सुनने वाला: क्या ये दोनों मिसाल में बराबर हो सकते हैं? तो क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते? (18–24)

और हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा, तो उसने कहा, "मैं तुम्हारे लिए खुला सचेत करने वाला हूँ: कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। मुझे तुम पर एक दुखद दिन की यातना का डर है।" उसकी क़ौम के सरदारों ने, जो सत्य के इनकारी थे, कहा, "हम तो तुम्हें बस अपने ही जैसा एक इनसान देखते हैं, और हम देखते हैं कि तुम्हारे पीछे बस वही लोग चले हैं जो हममें सबसे नीचे दर्जे के हैं, और वह भी बिना सोचे-समझे। और हम अपने मुक़ाबले में तुममें कोई बड़ाई नहीं देखते; बल्कि हम तो तुम्हें झूठा समझते हैं।" उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, भला सोचो तो: अगर मैं अपने रब की ओर से एक खुले प्रमाण पर हूँ, और उसने मुझे अपने पास से एक दयालुता दी है जो तुम्हारी निगाहों से ओझल रखी गई है, तो क्या हम उसे तुम्हारे सिर मढ़ दें जबकि तुम उसे नापसन्द करते हो? और ऐ मेरी क़ौम, मैं इस पर तुमसे कोई माल नहीं माँगता: मेरा बदला तो बस अल्लाह के ज़िम्मे है। और मैं उन लोगों को धुत्कारने वाला नहीं जो ईमान लाए हैं—उन्हें अपने रब से मिलना है—मगर मैं देखता हूँ कि तुम लोग नादानी कर रहे हो। और ऐ मेरी क़ौम, अगर मैं उन्हें धुत्कार दूँ तो अल्लाह के मुक़ाबले में कौन मेरी मदद करेगा? तो क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते? और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, और न यह कि मैं परोक्ष जानता हूँ, और न मैं यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ; और न मैं उन लोगों के बारे में, जिन्हें तुम्हारी आँखें तुच्छ समझती हैं, यह कहता हूँ कि अल्लाह उन्हें कभी कोई भलाई न देगा—जो कुछ उनके मन में है अल्लाह ही उसे ख़ूब जानता

है। अगर मैं ऐसा कहूँ, तो निश्चय ही मैं ज़ालिमों में से हो जाऊँगा।" वे बोले, "ऐ नूह, तुम हमसे झगड़ चुके और बहुत झगड़ चुके। तो अब ले आओ हम पर वह चीज़ जिसकी तुम हमें धमकी देते हो, अगर तुम सच्चे हो।" उसने कहा, "उसे तो बस अल्लाह ही तुम पर लाएगा, अगर वह चाहेगा, और तुम उसे बेबस न कर सकोगे। और मेरा भला चाहना तुम्हें कोई फ़ायदा न देगा, चाहे मैं तुम्हारा कितना ही भला चाहूँ, अगर अल्लाह ही तुम्हें भटकने देना चाहता हो। वही तुम्हारा रब है, और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे।" (25–34)

या वे कहते हैं, "इसने इसे ख़ुद गढ़ लिया है"? कह दो, "अगर मैंने इसे गढ़ा है, तो मेरा अपराध मुझ पर है; और जो अपराध तुम करते हो उनसे मैं बरी हूँ।" (35)

और नूह की ओर वह्य की गई: "तुम्हारी क़ौम में से अब कोई ईमान न लाएगा सिवाय उनके जो ईमान ला चुके, तो जो कुछ वे करते रहे हैं उस पर दुखी न हो। और हमारी आँखों के सामने और हमारी वह्य के अनुसार नौका बनाओ, और जिन्होंने ज़ुल्म किया है उनके बारे में मुझसे कुछ न कहना: वे डूबकर रहेंगे।" तो वह नौका बनाने लगा, और जब भी उसकी क़ौम के सरदार उसके पास से गुज़रते तो उसका मज़ाक़ उड़ाते। उसने कहा, "अगर तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो, तो हम भी तुम्हारा उसी तरह मज़ाक़ उड़ाएँगे जैसे तुम उड़ाते हो, और जल्द ही तुम जान लोगे कि किस पर वह यातना आती है जो उसे रुसवा कर देगी, और किस पर हमेशा रहने वाली यातना उतरती है।" यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म आ गया और तन्नूर उबल पड़ा, तो हमने कहा, "इसमें हर क़िस्म में से एक जोड़ा, दो-दो, चढ़ा लो, और अपने घर वालों को भी—सिवाय उनके जिनके बारे में बात पहले हो चुकी है—और उन्हें भी जो ईमान लाए हैं।" मगर उसके साथ बस थोड़े ही लोग ईमान लाए थे। और उसने कहा, "इसमें सवार हो जाओ! अल्लाह ही के नाम से है इसका चलना भी और इसका ठहरना भी। निश्चय ही मेरा रब बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है।" और वह उन्हें लिए हुए पहाड़ों जैसी लहरों के बीच चलने लगी। और नूह ने अपने बेटे को पुकारा, जो अलग-थलग था, "ऐ मेरे बेटे, हमारे साथ सवार हो जा, और सत्य के इनकारियों के साथ न रह!" वह बोला, "मैं किसी पहाड़ की पनाह ले लूँगा जो मुझे पानी से बचा लेगा।" नूह ने कहा, "आज अल्लाह के हुक्म से कोई बचाने वाला नहीं, सिवाय उसके जिस पर वही दया करे।" और दोनों के बीच लहर आ गई, और वह डूबने वालों में से हो गया। और कहा गया, "ऐ ज़मीन, अपना पानी निगल जा! और ऐ आसमान, थम जा!" और पानी उतर गया, और मामला निपटा दिया गया, और नौका जूदी पर जा टिकी। और कह दिया गया, "दूर हों ज़ालिम लोग!" और नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा, "ऐ मेरे रब, मेरा बेटा मेरे घर वालों में से है, और निश्चय ही तेरा वादा सच्चा है, और तू सब फ़ैसला करने वालों से बढ़कर न्याय करने वाला है।" उसने कहा, "ऐ नूह, वह तुम्हारे घर वालों में से नहीं: उसका काम नेक न था। तो मुझसे उस चीज़ का सवाल न करो जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं। मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ, कि कहीं तुम नादानों में से न हो जाओ।" उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इससे कि तुझसे उस चीज़ का सवाल करूँ जिसका मुझे ज्ञान नहीं। और अगर तूने मुझे क्षमा न किया और मुझ पर दया न की, तो मैं घाटा उठाने वालों में से हो जाऊँगा।" कहा गया, "ऐ नूह, उतर जाओ, हमारी ओर से सलामती के साथ, और बरकतों के साथ तुम पर और उन समुदायों पर जो तुम्हारे साथ वालों से निकलेंगे।

और कुछ समुदाय ऐसे भी होंगे जिन्हें हम कुछ समय सुख भोगने देंगे, फिर उन्हें हमारी ओर से दुखद यातना आ छुएगी।" ऐ नबी, ये परोक्ष की ख़बरें हैं जो हम तुम्हारी ओर वह्य करते हैं: इससे पहले न तुम इन्हें जानते थे न तुम्हारी क़ौम। तो सब्र करो: आख़िरी अंजाम उन्हीं का है जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं। (36–49)

और आद की ओर हमने उनके भाई हूद को भेजा। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो; उसके सिवा तुम्हारा कोई इलाह नहीं। तुम तो बस झूठ गढ़ने वाले हो। ऐ मेरी क़ौम, मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता: मेरा बदला तो बस उसके ज़िम्मे है जिसने मुझे पैदा किया। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? और ऐ मेरी क़ौम, अपने रब से क्षमा माँगो, फिर उसकी ओर पलट आओ: वह तुम पर आसमान से मूसलाधार बारिश भेजेगा, और तुम्हारी शक्ति में और शक्ति बढ़ाएगा। और अपराधी बनकर मुँह न मोड़ो।" वे बोले, "ऐ हूद, तुम हमारे पास कोई खुला प्रमाण नहीं लाए। और हम तुम्हारे कहने से अपने इलाहों को छोड़ने वाले नहीं, और न हम तुम्हारी बात मानने वाले हैं। हम तो बस यही कहते हैं कि हमारे इलाहों में से किसी ने तुम पर कोई बुरी मार डाल दी है।" उसने कहा, "मैं अल्लाह को गवाह ठहराता हूँ—और तुम भी गवाह रहो—कि मैं उनसे बरी हूँ जिन्हें तुम उसके सिवा उसके साथ साझी ठहराते हो। तो तुम सब मिलकर मेरे ख़िलाफ़ चाल चलो, और मुझे मुहलत न दो। मैंने अल्लाह पर भरोसा किया है, जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब। कोई चलने वाला जानदार ऐसा नहीं जिसकी पेशानी के बाल उसके हाथ में न हों। निश्चय ही मेरा रब सीधे मार्ग पर है। फिर अगर तुम मुँह मोड़ो, तो मैंने तुम्हें वह पहुँचा दिया जिसके साथ मैं तुम्हारी ओर भेजा गया था; और मेरा रब तुम्हारी जगह तुम्हारे सिवा किसी और क़ौम को ले आएगा, और तुम उसका कुछ भी न बिगाड़ सकोगे। निश्चय ही मेरा रब हर चीज़ का निगहबान है।" और जब हमारा हुक्म आ गया, तो हमने हूद को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे अपनी ओर की दयालुता से बचा लिया, और उन्हें एक सख़्त यातना से छुटकारा दिया। ये थे आद: उन्होंने अपने रब की आयतों का इनकार किया, उसके रसूलों की अवज्ञा की, और हर हठी सरकश के हुक्म पर चले। और इस दुनिया में भी लानत उनके पीछे लगा दी गई और क़ियामत के दिन भी। सुन लो, आद ने अपने रब का इनकार किया: तो दूर हों आद, हूद की क़ौम! (50–60)

और समूद की ओर हमने उनके भाई सालेह को भेजा। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो; उसके सिवा तुम्हारा कोई इलाह नहीं। उसी ने तुम्हें ज़मीन से उठाया और उसमें तुम्हें बसाया, तो उससे क्षमा माँगो फिर उसकी ओर पलट आओ। निश्चय ही मेरा रब क़रीब है, और दुआ क़बूल करने वाला है।" वे बोले, "ऐ सालेह, इससे पहले तो तुम हमारे बीच ऐसे थे जिससे उम्मीदें बाँधी जाती थीं। क्या तुम हमें उनकी इबादत से रोकते हो जिनकी इबादत हमारे बाप-दादा करते थे? और जिस चीज़ की ओर तुम हमें बुलाते हो उसके बारे में हम गहरे शक में हैं।" उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, भला सोचो तो: अगर मैं अपने रब की ओर से एक खुले प्रमाण पर हूँ, और उसने मुझे अपने पास से दयालुता दी है, तो अल्लाह के मुक़ाबले में कौन मेरी मदद करेगा अगर मैं उसकी अवज्ञा करूँ? तुम तो बस मेरी तबाही ही बढ़ाओगे। और ऐ मेरी क़ौम, यह अल्लाह की ऊँटनी है, तुम्हारे लिए एक निशानी। तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में चरती फिरे, और इसे

कोई तकलीफ़ न पहुँचाना, वरना तुम्हें एक क़रीबी यातना आ पकड़ेगी।" मगर उन्होंने उसकी कूँचें काट डालीं। तो उसने कहा, "अपने घरों में तीन दिन और मज़े कर लो: यह ऐसा वादा है जो झूठा न होगा।" फिर जब हमारा हुक्म आ गया, तो हमने सालेह को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे अपनी ओर की दयालुता से बचा लिया, और उस दिन की रुसवाई से भी। निश्चय ही तुम्हारा रब ही शक्तिशाली, प्रभुत्वशाली है। और जिन्होंने ज़ुल्म किया था उन्हें एक कड़क ने आ पकड़ा, और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए, मानो वे वहाँ कभी बसे ही न थे। सुन लो, समूद ने अपने रब का इनकार किया: तो दूर हों समूद! (61–68)

और हमारे भेजे हुए इबराहीम के पास शुभ-सूचना लेकर आए। उन्होंने कहा, "सलाम।" उसने कहा, "सलाम," और देर न की कि एक भुना हुआ बछड़ा ले आया। मगर जब उसने देखा कि उनके हाथ उसकी ओर नहीं बढ़ते, तो उन्हें अजनबी-सा पाया और उनसे मन में डर महसूस किया। वे बोले, "डरो नहीं: हम लूत की क़ौम की ओर भेजे गए हैं।" और उसकी पत्नी खड़ी थी, तो वह हँस पड़ी। फिर हमने उसे इसहाक़ की, और इसहाक़ के बाद याक़ूब की शुभ-सूचना दी। वह बोली, "हाय मेरी कमबख़्ती! क्या मैं बच्चा जनूँगी, जबकि मैं बुढ़िया हूँ और ये मेरे पति भी बूढ़े हैं? यह तो वाक़ई बड़ी अजीब बात है!" वे बोले, "क्या तुम अल्लाह के हुक्म पर आश्चर्य करती हो? अल्लाह की दयालुता और उसकी बरकतें हों तुम पर, ऐ इस घर के लोगो! निश्चय ही वह प्रशंसा के योग्य, बड़ी शान वाला है।" फिर जब इबराहीम का डर दूर हुआ और उसे शुभ-सूचना मिल गई, तो वह लूत की क़ौम के बारे में हमसे झगड़ने लगा। निश्चय ही इबराहीम बड़ा सहनशील, नर्मदिल, अल्लाह की ओर पलटने वाला था। "ऐ इबराहीम, इसे छोड़ दो! तुम्हारे रब का हुक्म आ चुका है, और उन पर ऐसी यातना आने वाली है जो फेरी नहीं जा सकती।" (69–76)

और जब हमारे भेजे हुए लूत के पास पहुँचे, तो वह उनके कारण परेशान हुआ और उन्हें बचाने में अपने को बेबस पाया, और बोला, "यह बड़ी मुसीबत का दिन है।" और उसकी क़ौम के लोग दौड़ते हुए उसके पास आए, और वे पहले से घिनौने काम करते आ रहे थे। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, ये मेरी बेटियाँ हैं: ये तुम्हारे लिए ज़्यादा पाक हैं। तो अल्लाह के प्रति सचेत रहो, और मेरे मेहमानों के सामने मुझे रुसवा न करो। क्या तुममें एक भी भला आदमी नहीं?" वे बोले, "तुम ख़ूब जानते हो कि तुम्हारी बेटियों पर हमारा कोई हक़ नहीं, और तुम यह भी ख़ूब जानते हो कि हम क्या चाहते हैं।" उसने कहा, "काश मुझमें तुम्हारे मुक़ाबले की ताक़त होती, या मैं किसी मज़बूत सहारे की पनाह ले सकता!" उन्होंने कहा, "ऐ लूत, हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं: ये तुम तक हरगिज़ न पहुँच सकेंगे। तो तुम रात के किसी हिस्से में अपने घर वालों को लेकर निकल जाओ, और तुममें से कोई पीछे मुड़कर न देखे—सिवाय तुम्हारी पत्नी के: जो कुछ इन पर बीतेगा वही उस पर भी बीतेगा। इनके लिए ठहराया हुआ समय सुबह का है। क्या सुबह क़रीब नहीं?" फिर जब हमारा हुक्म आ गया, तो हमने उस बस्ती को तले-ऊपर कर दिया और उस पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर, तह-पर-तह, बरसाए, जो तुम्हारे रब के यहाँ से निशान लगे हुए थे। और वह ज़ालिमों से कुछ दूर नहीं। (77–83)

और मदयन की ओर हमने उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो; उसके सिवा तुम्हारा कोई इलाह नहीं। और नाप और तौल में कमी न करो। मैं तुम्हें ख़ुशहाल देखता हूँ, मगर मुझे तुम पर एक घेर लेने वाले दिन की यातना का डर है। और ऐ मेरी क़ौम, नाप और तौल न्याय के साथ पूरी करो; लोगों को उनकी चीज़ें घटाकर न दो, और ज़मीन में बिगाड़ फैलाते न फिरो। जो कुछ अल्लाह के पास बचा रहे वही तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम ईमान वाले हो। और मैं तुम पर कोई निगहबान नहीं हूँ।" वे बोले, "ऐ शुऐब, क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें यह हुक्म देती है कि हम उन्हें छोड़ दें जिनकी इबादत हमारे बाप-दादा करते थे, या यह कि हम अपने माल में अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ न करें? बस तुम्हीं तो एक सहनशील, भले आदमी रह गए हो!" उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, भला सोचो तो: अगर मैं अपने रब की ओर से एक खुले प्रमाण पर हूँ, और उसने मुझे अपने पास से अच्छी रोज़ी दी है—तो मैं यह नहीं चाहता कि तुम्हारी पीठ पीछे वही काम करूँ जिससे मैं तुम्हें रोकता हूँ। मैं तो बस सुधार चाहता हूँ, जहाँ तक मेरा बस चले, और मुझे तौफ़ीक़ मिलना बस अल्लाह ही की मदद से है। उसी पर मैंने भरोसा किया, और उसी की ओर मैं पलटता हूँ। और ऐ मेरी क़ौम, मेरी दुश्मनी कहीं तुम पर वैसी ही चीज़ न ले आए जैसी नूह की क़ौम पर, या हूद की क़ौम पर, या सालेह की क़ौम पर आई—और लूत की क़ौम तो तुमसे कुछ दूर भी नहीं। और अपने रब से क्षमा माँगो, फिर उसकी ओर पलट आओ। निश्चय ही मेरा रब सदा दयावान, बड़ा प्रेम करने वाला है।" (84–90)

वे बोले, "ऐ शुऐब, तुम जो कुछ कहते हो उसमें से बहुत कुछ हमारी समझ में नहीं आता, और हम देखते हैं कि तुम हमारे बीच कमज़ोर हो। और अगर तुम्हारा क़बीला न होता, तो हम तुम्हें पत्थर मार-मारकर हलाक कर देते; और तुम हम पर कोई ज़ोर नहीं रखते।" उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, क्या मेरा क़बीला तुम्हारे नज़दीक अल्लाह से ज़्यादा भारी है, कि तुमने उसे अपनी पीठ पीछे डाल दिया? निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो मेरा रब उसे घेरे हुए है। और ऐ मेरी क़ौम, तुम अपनी जगह काम किए जाओ; मैं भी काम कर रहा हूँ। जल्द ही तुम जान लोगे कि किस पर वह यातना आती है जो उसे रुसवा कर देगी, और कौन झूठा है। तो ताक में रहो; मैं भी तुम्हारे साथ ताक में हूँ।" और जब हमारा हुक्म आ गया, तो हमने शुऐब को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे अपनी ओर की दयालुता से बचा लिया, और जिन्होंने ज़ुल्म किया था उन्हें एक कड़क ने आ पकड़ा, और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए, मानो वे वहाँ कभी बसे ही न थे। सुन लो, दूर हों मदयन वाले, जैसे समूद दूर हुए! (91–95)

और हमने मूसा को अपनी निशानियों और एक खुले प्रमाण के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा; मगर वे फ़िरऔन के हुक्म पर चले, और फ़िरऔन का हुक्म सही राह का न था। क़ियामत के दिन वह अपनी क़ौम के आगे-आगे होगा और उन्हें आग में ला उतारेगा—और कैसा बुरा घाट है जिस पर वे उतारे जाएँगे! और इस दुनिया में भी लानत उनके पीछे लगा दी गई और क़ियामत के दिन भी: कैसा बुरा इनाम है जो उन्हें दिया गया! (96–99)

ऐ नबी, ये बस्तियों के कुछ हाल हैं जो हम तुम्हें सुना रहे हैं: उनमें से कुछ अभी खड़ी हैं, और कुछ कट चुकी हैं। और हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया; बल्कि उन्होंने ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया। तो जब तुम्हारे रब का हुक्म आ गया तो उनके वे इलाह, जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारते थे, उनके कुछ भी काम न आए; और उन्होंने उनकी बरबादी के सिवा कुछ न बढ़ाया। और तुम्हारे रब की पकड़ ऐसी ही होती है जब वह बस्तियों को उनके ज़ुल्म की हालत में पकड़ता है: निश्चय ही उसकी पकड़ दुखद और सख़्त है। निश्चय ही इसमें उसके लिए निशानी है जो आख़िरत की यातना से डरता है। वह ऐसा दिन है जिसमें सारे लोग इकट्ठे किए जाएँगे; और वह ऐसा दिन है जिसमें सबकी हाज़िरी होगी। और हम उसे बस एक गिनी हुई अवधि तक के लिए टाल रहे हैं। जिस दिन वह आएगा, कोई जान उसकी इजाज़त के बिना बात न कर सकेगी; फिर उनमें कोई बदबख़्त होगा और कोई ख़ुशनसीब। तो जो बदबख़्त होंगे, वे आग में होंगे, जहाँ उनके हिस्से में चीख़ना और सिसकना होगा, वे उसमें रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम हैं, सिवाय इसके कि तुम्हारा रब कुछ और चाहे: निश्चय ही तुम्हारा रब जो चाहता है कर गुज़रता है। और जो ख़ुशनसीब होंगे, वे जन्नत में होंगे, उसमें रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम हैं, सिवाय इसके कि तुम्हारा रब कुछ और चाहे—ऐसी देन जो कभी न टूटेगी। (100–108)

तो ये लोग जिनकी इबादत करते हैं उनके बारे में तुम किसी शक में न रहना: ये बस उसी तरह इबादत करते हैं जैसे इनसे पहले इनके बाप-दादा करते थे। और हम इन्हें इनका हिस्सा पूरा-पूरा देंगे, बिना किसी कमी के। और हमने मूसा को किताब दी, तो उसमें मतभेद किया गया; और अगर तुम्हारे रब की ओर से एक बात पहले न हो चुकी होती, तो उनके बीच फ़ैसला कर दिया गया होता। और वे इसके बारे में गहरे शक में हैं। और निश्चय ही तुम्हारा रब इनमें से हर एक को उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला देगा: वह उनके सब कामों की ख़बर रखता है। तो तुम जमे रहो, जैसा तुम्हें हुक्म दिया गया है, और वे भी जो तुम्हारे साथ अल्लाह की ओर पलटे हैं, और हद से न बढ़ो। जो कुछ तुम करते हो वह उसे देख रहा है। और उन लोगों की ओर न झुकना जिन्होंने ज़ुल्म किया, वरना आग तुम्हें भी आ छुएगी; और अल्लाह के सिवा तुम्हारे कोई संरक्षक नहीं, फिर तुम्हारी मदद न की जाएगी। (109–113)

और दिन के दोनों सिरों पर और रात की शुरुआती घड़ियों में नमाज़ क़ायम करो। निश्चय ही नेकियाँ बुराइयों को दूर कर देती हैं: यह याद रखने वालों के लिए याददिहानी है। और सब्र करो, क्योंकि अल्लाह अच्छा करने वालों का बदला अकारथ नहीं करता। तो तुमसे पहले की नस्लों में ऐसे समझ-बूझ वाले लोग क्यों न हुए जो ज़मीन में बिगाड़ से रोकते—सिवाय थोड़े-से लोगों के, जिन्हें हमने बचा लिया। और जिन्होंने ज़ुल्म किया वे उसी ऐश के पीछे पड़े रहे जो उन्हें दिया गया था, और वे अपराधी थे। और तुम्हारा रब ऐसा नहीं कि बस्तियों को नाहक़ हलाक कर दे जबकि उनके लोग सुधार करने वाले हों। और अगर तुम्हारा रब चाहता, तो सारे लोगों को एक ही समुदाय बना देता; मगर वे मतभेद करते ही रहेंगे, सिवाय उनके जिन पर तुम्हारा रब दया करे—और इसी के लिए उसने उन्हें पैदा किया। और तुम्हारे रब की बात पूरी हो गई: “मैं जहन्नम को जिन्नों और इनसानों सबसे ज़रूर भर दूँगा।” (114–119)

और रसूलों की ख़बरों में से जो कुछ भी हम तुम्हें सुनाते हैं वह इसलिए है कि उससे तुम्हारे दिल को जमाए रखें। और इनमें तुम्हारे पास सत्य आ गया है, और ईमान वालों के लिए नसीहत और याददिहानी। और जो ईमान नहीं लाते उनसे कह दो, "तुम अपनी जगह काम किए जाओ; हम भी काम कर रहे हैं। और इन्तिज़ार करो; हम भी इन्तिज़ार कर रहे हैं।" और आसमानों और ज़मीन का परोक्ष अल्लाह ही के लिए है, और सारा मामला उसी की ओर लौटता है। तो उसी की इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो: और तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (120–123)

# 12. यूसुफ़ (यूसुफ़)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

अलिफ़ लाम रा। ये उस किताब की आयतें और निशानियाँ हैं जो हर बात स्पष्ट कर देती है। हमने इसे अरबी क़ुरआन बनाकर उतारा है, ताकि तुम समझो। (1–2)

ऐ नबी, हम इस क़ुरआन के द्वारा, जो हमने तुम्हारी ओर वह्य किया है, तुम्हें सबसे अच्छा क़िस्सा सुनाते हैं, हालाँकि इससे पहले तुम इससे बेख़बर लोगों में से थे। जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा, "अब्बा जान, मैंने ग्यारह तारे, और सूरज और चाँद देखे: मैंने देखा कि वे मेरे आगे सजदा कर रहे हैं," तो उसने कहा, "ऐ मेरे बेटे, अपना यह ख़्वाब अपने भाइयों को न सुनाना, वरना वे तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई चाल चलेंगे। निश्चय ही शैतान इनसान का खुला दुश्मन है। और इसी तरह तुम्हारा रब तुम्हें चुन लेगा, और तुम्हें बातों की तह तक पहुँचना सिखाएगा, और तुम पर और याक़ूब के घराने पर अपनी नेमत पूरी करेगा, जैसे उसने इससे पहले तुम्हारे दोनों बाप-दादा, इबराहीम और इसहाक़, पर उसे पूरा किया। निश्चय ही तुम्हारा रब सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है।" (3–6)

निश्चय ही यूसुफ़ और उसके भाइयों में पूछने वालों के लिए निशानियाँ हैं। जब उन्होंने कहा, "यूसुफ़ और उसका भाई हमारे बाप को हमसे ज़्यादा प्यारे हैं, हालाँकि हम एक पूरा जत्था हैं। निश्चय ही हमारे बाप खुली ग़लती पर हैं। यूसुफ़ को क़त्ल कर दो, या उसे किसी ज़मीन में फेंक आओ, ताकि तुम्हारे बाप की तवज्जोह बस तुम्हारी ही ओर हो जाए; और उसके बाद तुम नेक लोग बन जाना।" उनमें से एक कहने वाले ने कहा, "यूसुफ़ को क़त्ल न करो; बल्कि अगर तुम्हें कुछ करना ही है, तो उसे कुएँ की तह में डाल दो, कोई क़ाफ़िला उसे उठा ले जाएगा।" (7–10)

उन्होंने कहा, "अब्बा जान, क्या बात है कि आप यूसुफ़ के मामले में हम पर भरोसा नहीं करते? हम तो सचमुच उसके ख़ैरख़्वाह हैं। कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए कि घूमे-फिरे और खेले-कूदे, और हम उसकी पूरी हिफ़ाज़त करेंगे।" उसने कहा, "मुझे यह बात दुखी करती है कि तुम उसे ले जाओ, और मुझे डर है कि कहीं उसे भेड़िया न खा जाए जबकि तुम उससे ग़ाफ़िल हो।" वे बोले, "अगर हमारे इतने लोगों के होते हुए उसे भेड़िया खा गया, तब तो हम बिलकुल ही घाटे में रहे!" (11–14)

फिर जब वे उसे ले गए और सबने तय कर लिया कि उसे कुएँ की तह में डाल दें, तो हमने उसकी ओर वह्य की, "तुम एक दिन ज़रूर उन्हें उनकी यह करतूत बताओगे, और उन्हें ख़बर तक न होगी कि तुम कौन हो।" और रात हुए वे अपने बाप के पास रोते हुए आए। बोले, "अब्बा जान, हम एक-दूसरे से दौड़ में आगे निकलने लगे और यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ गए, तो उसे भेड़िया खा गया। मगर आप हमारी बात का यक़ीन न करेंगे, चाहे हम सच्चे ही हों।" और वे उसके कुर्ते पर झूठ-मूठ का ख़ून लगा लाए। उसने कहा,

“नहीं; बल्कि तुम्हारे मन ने तुम्हारे लिए एक बात बना दी है। तो अब—सब्र ही सबसे अच्छा है; और जो कुछ तुम बयान करते हो उस पर अल्लाह ही से मदद माँगी जाती है।” (15–18)

और एक क़ाफ़िला आया, तो उन्होंने अपने पानी भरने वाले को भेजा, और उसने अपना डोल डाला। वह बोला, “ख़ुशख़बरी हो! यह तो एक लड़का है!” और उन्होंने उसे पूँजी समझकर छिपा लिया—हालाँकि जो कुछ वे कर रहे थे अल्लाह उसे ख़ूब जानता था। और उन्होंने उसे थोड़े-से दाम पर, गिनती के चन्द दिरहमों में, बेच डाला, क्योंकि वे उसकी कुछ क़द्र न करते थे। (19–20)

और मिस्र के जिस आदमी ने उसे ख़रीदा, उसने अपनी पत्नी से कहा, “इसे इज़्ज़त से रखना; हो सकता है यह हमारे काम आए, या हम इसे बेटा बना लें।” इस तरह हमने यूसुफ़ को उस ज़मीन में जमा दिया, और इसलिए भी कि हम उसे बातों की तह तक पहुँचना सिखाएँ। और अल्लाह अपने काम पर हमेशा ग़ालिब रहता है, मगर अधिकतर लोग जानते नहीं। (21)

और जब वह अपनी पूरी जवानी को पहुँचा, तो हमने उसे फ़ैसले की शक्ति और ज्ञान दिया: और इसी तरह हम अच्छा करने वालों को बदला देते हैं। और जिस औरत के घर में वह रहता था उसने उसे फुसलाना चाहा। उसने दरवाज़े बन्द कर लिए और बोली, “आ जाओ!” उसने कहा, “अल्लाह की पनाह! वह मेरा मालिक है, उसने मुझे अच्छा ठिकाना दिया है। निश्चय ही ज़ालिम कभी फलते-फूलते नहीं।” और उस औरत ने उसका इरादा कर लिया; और वह भी उसका इरादा कर लेता, अगर उसने अपने रब की दलील न देख ली होती। ऐसा इसलिए हुआ, ताकि हम उससे बुराई और अश्लीलता को फेर दें: निश्चय ही वह हमारे चुने हुए बन्दों में से था। और दोनों दरवाज़े की ओर दौड़े, और उस औरत ने पीछे से उसका कुर्ता फाड़ डाला; और दरवाज़े पर दोनों ने उसके स्वामी को पाया। वह बोली, “जो तुम्हारी पत्नी के साथ बुराई का इरादा करे उसकी सज़ा इसके सिवा क्या है कि उसे क़ैद किया जाए या दुखद यातना दी जाए?” उसने कहा, “इसी ने मुझे फुसलाना चाहा था।” और उस औरत के अपने घर वालों में से एक गवाह ने गवाही दी: “अगर इसका कुर्ता आगे से फटा है, तो यह सच्ची है और वह झूठा; और अगर इसका कुर्ता पीछे से फटा है, तो यह झूठी है और वह सच्चा।” फिर जब उसने देखा कि उसका कुर्ता पीछे से फटा है, तो बोला, “यह तुम औरतों की चाल है; निश्चय ही तुम्हारी चालें बड़ी भारी होती हैं। यूसुफ़, इस बात को जाने दो। और ऐ बीवी, तू अपने गुनाह की क्षमा माँग: निश्चय ही ख़ता तेरी ही थी।” (22–29)

और शहर की कुछ औरतों ने कहा, “अज़ीज़ की पत्नी अपने नौजवान ग़ुलाम को फुसलाने में लगी है! उसकी मुहब्बत उसके दिल में घर कर गई है। हम तो उसे खुली ग़लती पर देखती हैं।” फिर जब उसने उनकी ये चाल भरी बातें सुनीं, तो उन्हें बुलवा भेजा और उनके लिए एक दावत सजाई, और उनमें से हर एक को एक छुरी दी। फिर बोली, “इनके सामने निकल आओ!” फिर जब उन्होंने उसे देखा तो दंग रह गईं, और अपने हाथ काट बैठीं, और बोलीं, “अल्लाह की पनाह! यह इनसान नहीं; यह तो बस कोई बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है!” वह बोली, “यही है वह जिसके बारे में तुम मुझे मलामत करती थीं। हाँ, मैंने ही इसे फुसलाना चाहा था, मगर यह

बचा रहा। और अगर इसने वह न किया जो मैं इसे हुक्म देती हूँ, तो यह ज़रूर क़ैद किया जाएगा और ज़लीलों में से होगा।" उसने कहा, "ऐ मेरे रब, क़ैद मुझे उससे ज़्यादा प्यारी है जिसकी ओर ये मुझे बुलाती हैं; और अगर तूने इनकी चाल मुझसे न फेरी, तो मैं इनकी ओर झुक जाऊँगा और नादानों में से हो जाऊँगा।" तो उसके रब ने उसकी दुआ क़बूल की और उनकी चाल उससे फेर दी। निश्चय ही वही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। (30–34)

फिर निशानियाँ देख लेने के बाद भी उन्हें यही ठीक लगा कि उसे कुछ समय के लिए क़ैद कर दें। और उसके साथ दो नौजवान भी क़ैदख़ाने में दाख़िल हुए। उनमें से एक ने कहा, "मैंने अपने को देखा कि शराब निचोड़ रहा हूँ।" दूसरे ने कहा, "मैंने अपने को देखा कि सिर पर रोटियाँ उठाए हुए हूँ, जिनमें से परिन्दे खा रहे हैं।" दोनों बोले, "हमें इसकी ताबीर बताओ; हम तुम्हें अच्छा करने वालों में से देखते हैं।" (35–36)

उसने कहा, "जो खाना तुम्हें मिला करता है वह तुम्हारे पास आने न पाएगा कि मैं उसके पहुँचने से पहले ही तुम्हें उसकी ताबीर बता दूँगा। यह उसमें से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है। मैंने उन लोगों का पंथ छोड़ दिया जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते और जो आख़िरत के इनकारी हैं, और मैं अपने बाप-दादा इबराहीम, इसहाक़ और याक़ूब के पंथ पर चलता हूँ। हमारे लिए उचित नहीं कि हम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को साझी ठहराएँ: यह हम पर और सारे लोगों पर अल्लाह का अनुग्रह है, मगर अधिकतर लोग शुक्र अदा नहीं करते। ऐ मेरे क़ैदख़ाने के दोनों साथियो, क्या अलग-अलग बहुत-से रब बेहतर हैं, या अल्लाह, जो अकेला है, सब पर ग़ालिब? उसके सिवा जिनकी तुम इबादत करते हो वे बस कुछ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं: अल्लाह ने उनके लिए कोई प्रमाण नहीं उतारा। फ़ैसला तो बस अल्लाह ही का है। उसने हुक्म दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो। यही सीधा दीन है, मगर अधिकतर लोग जानते नहीं। ऐ मेरे क़ैदख़ाने के दोनों साथियो: तुममें से एक तो अपने मालिक को शराब पिलाएगा; और रहा दूसरा, तो उसे सूली दी जाएगी, और परिन्दे उसके सिर में से खाएँगे। जिस मामले में तुम मुझसे पूछ रहे थे उसका फ़ैसला हो चुका।" और उन दोनों में से जिसके बारे में उसने समझा कि वह बच जाएगा उससे कहा, "अपने मालिक के सामने मेरा ज़िक्र करना।" मगर शैतान ने उसे अपने मालिक से उसका ज़िक्र करना भुला दिया, तो यूसुफ़ कई वर्ष क़ैदख़ाने में पड़ा रहा। (37–42)

और बादशाह ने कहा, "मैंने देखा कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं, और सात हरी बालियाँ हैं और दूसरी सूखी हुई। ऐ सरदारो, मुझे मेरे ख़्वाब के बारे में अपनी राय दो, अगर तुम ख़्वाबों की ताबीर दे सकते हो।" वे बोले, "ये तो उलझे हुए ख़्वाब हैं! और हम ख़्वाबों की ताबीर के जानकार नहीं।" और उन दोनों में से जो बच निकला था, और जिसे एक मुद्दत के बाद याद आया, वह बोला, "मैं तुम्हें इसकी ताबीर बताऊँगा; तो मुझे भेज दो।" (43–45)

"यूसुफ़, ऐ सच्चे इनसान! हमें इसके बारे में बताओ कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं, और सात हरी बालियाँ हैं और दूसरी सूखी हुई, ताकि मैं लोगों के पास लौट जाऊँ और वे जान लें।" उसने

कहा, "तुम सात वर्ष हमेशा की तरह खेती करोगे; तो जो फ़सल काटो, उसे उसकी बालियों ही में रहने दो, सिवाय थोड़े-से हिस्से के जिसमें से तुम खाओ। फिर उसके बाद सात कड़े वर्ष आएँगे जो वह सब खा जाएँगे जो तुमने उनके लिए जमा कर रखा होगा, सिवाय थोड़े-से हिस्से के जिसे तुम बचा रखोगे। फिर उसके बाद एक ऐसा वर्ष आएगा जिसमें लोगों पर बारिश होगी और उनकी फ़रियाद सुनी जाएगी, और जिसमें वे अंगूर और ज़ैतून निचोड़ेंगे।" (46–49)

और बादशाह ने कहा, "उसे मेरे पास ले आओ।" मगर जब भेजा हुआ आदमी उसके पास पहुँचा, तो यूसुफ़ ने कहा, "अपने मालिक के पास वापस जाओ और उससे पूछो कि उन औरतों का क्या मामला था जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे। निश्चय ही मेरा रब उनकी चाल से ख़ूब वाक़िफ़ है।" उसने औरतों से पूछा, "तुम्हारा क्या मामला था जब तुमने यूसुफ़ को फुसलाना चाहा था?" वे बोलीं, "अल्लाह की पनाह! हमने उसमें कोई बुराई नहीं पाई।" अज़ीज़ की पत्नी बोली, "अब सच खुलकर सामने आ गया। मैंने ही उसे फुसलाना चाहा था, और निश्चय ही वह सच्चों में से है।" यूसुफ़ ने कहा, "यह इसलिए कि वह जान ले कि मैंने उसकी पीठ पीछे उससे ख़यानत नहीं की, और यह कि अल्लाह ख़यानत करने वालों की चाल को राह नहीं देता। और मैं अपने आप को बरी नहीं ठहराता: निश्चय ही मन तो बुराई ही का हुक्म देता रहता है, सिवाय उसके जिस पर मेरा रब दया करे। निश्चय ही मेरा रब बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है।" (50–53)

और बादशाह ने कहा, "उसे मेरे पास ले आओ; मैं उसे ख़ास अपने लिए रखूँगा।" फिर जब उसने उससे बातचीत की, तो कहा, "आज तुम हमारे यहाँ प्रतिष्ठित और भरोसेमन्द हो।" उसने कहा, "मुझे इस ज़मीन के ख़ज़ानों पर नियुक्त कर दीजिए: मैं हिफ़ाज़त करने वाला भी हूँ, और जानकार भी।" इस तरह हमने यूसुफ़ को उस ज़मीन में जमा दिया, कि वह उसमें जहाँ चाहे ठहरे। हम अपनी दयालुता जिसे चाहते हैं पहुँचाते हैं, और हम अच्छा करने वालों का बदला अकारथ नहीं करते। और आख़िरत का बदला निश्चय ही उन लोगों के लिए कहीं बेहतर है जो ईमान लाए और अल्लाह के प्रति सचेत रहे। (54–57)

और यूसुफ़ के भाई आए और उसके सामने हाज़िर हुए। उसने उन्हें पहचान लिया, मगर वे उसे न पहचान सके। फिर जब उसने उनका सामान तैयार करा दिया, तो कहा, "अपने बाप की ओर से जो तुम्हारा एक भाई है उसे मेरे पास लाना। क्या तुम नहीं देखते कि मैं नाप पूरी देता हूँ, और मैं सबसे अच्छा मेज़बान हूँ? फिर अगर तुम उसे मेरे पास न लाए, तो मेरे यहाँ तुम्हारे लिए कोई नाप नहीं, और तुम मेरे पास न फटकना।" वे बोले, "हम उसके बारे में उसके बाप को राज़ी करने की कोशिश करेंगे; और हम यह ज़रूर करेंगे।" और उसने अपने नौकरों से कहा, "इनकी पूँजी इनके कजावों में रख दो, ताकि जब ये अपने घर वालों के पास लौटें तो उसे पहचान लें—शायद ये फिर आएँ।" (58–62)

फिर जब वे अपने बाप के पास लौटे, तो बोले, "अब्बा जान, हमसे नाप रोक दी गई है। तो हमारे भाई को हमारे साथ भेज दीजिए, कि हम नाप ला सकें; और हम उसकी पूरी हिफ़ाज़त करेंगे।" उसने कहा, "क्या मैं उसके बारे में तुम पर वैसा ही भरोसा करूँ जैसा इससे पहले उसके भाई के बारे में तुम पर किया था? तो

अल्लाह ही सबसे अच्छा हिफ़ाज़त करने वाला है, और वह दया करने वालों में सबसे बढ़कर दयावान है।" और जब उन्होंने अपना सामान खोला, तो देखा कि उनकी पूँजी उन्हें लौटा दी गई है। बोले, "अब्बा जान, हमें और क्या चाहिए? यह हमारी पूँजी है, जो हमें लौटा दी गई। हम अपने घर वालों के लिए रसद लाएँगे, और अपने भाई की हिफ़ाज़त करेंगे, और एक ऊँट का बोझ और ज़्यादा लाएँगे: यह नाप तो आसानी से मिल जाएगी।" उसने कहा, "मैं उसे तुम्हारे साथ हरगिज़ न भेजूँगा जब तक तुम मुझे अल्लाह के नाम का पक्का वचन न दो कि उसे मेरे पास ज़रूर वापस लाओगे, सिवाय इसके कि तुम ही घेर लिए जाओ।" फिर जब उन्होंने उसे अपना वचन दे दिया, तो उसने कहा, "जो कुछ हम कह रहे हैं उस पर अल्लाह निगहबान है।" और उसने कहा, "ऐ मेरे बेटो, एक ही दरवाज़े से दाख़िल न होना, बल्कि अलग-अलग दरवाज़ों से दाख़िल होना। और मैं अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकता: फ़ैसला तो बस अल्लाह ही का है। उसी पर मैंने भरोसा किया, और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए।" और जब वे उसी तरह दाख़िल हुए जिस तरह उनके बाप ने उनसे कहा था, तो यह अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ भी काम न आया; यह तो बस याक़ूब के जी की एक ख़्वाहिश थी जो उसने पूरी कर ली। और निश्चय ही वह ज्ञान वाला था, इसलिए कि हमने उसे सिखाया था; मगर अधिकतर लोग जानते नहीं। (63–68)

और जब वे यूसुफ़ के सामने हाज़िर हुए, तो उसने अपने भाई को अपने पास जगह दी और कहा, "मैं तुम्हारा भाई हूँ; तो जो कुछ ये करते रहे हैं उस पर दुखी न हो।" फिर जब उसने उनका सामान तैयार करा दिया, तो पानी पीने का प्याला अपने भाई के कजावे में रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा, "ऐ क़ाफ़िले वालो, तुम तो चोर हो!" वे उनकी ओर पलटकर बोले, "तुम्हारी क्या चीज़ खो गई है?" उन्होंने कहा, "हमें बादशाह का प्याला नहीं मिल रहा। और जो उसे ले आएगा उसके लिए एक ऊँट का बोझ है, और मैं इसका ज़िम्मेदार हूँ।" वे बोले, "अल्लाह की क़सम, तुम ख़ूब जानते हो कि हम इस ज़मीन में बिगाड़ फैलाने नहीं आए, और न हम चोर हैं।" उन्होंने कहा, "तो इसकी क्या सज़ा है, अगर तुम झूठे निकले?" वे बोले, "इसकी सज़ा यह है: जिसके कजावे में वह पाया जाए, वही ख़ुद उसका बदला है। हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं।" तो उसने अपने भाई के थैले से पहले उनके थैलों से शुरू किया, फिर उसे अपने भाई के थैले से निकाल लिया। इस तरह हमने यूसुफ़ के लिए तदबीर की: बादशाह के क़ानून में वह अपने भाई को नहीं ले सकता था, सिवाय इसके कि अल्लाह ही चाहे। हम जिसे चाहते हैं दर्जों में ऊँचा करते हैं; और हर ज्ञान वाले के ऊपर एक ज़्यादा जानने वाला है। (69–76)

वे बोले, "अगर इसने चोरी की है, तो इससे पहले इसका एक भाई भी चोरी कर चुका है।" मगर यूसुफ़ ने इस बात को अपने जी में छिपाए रखा और उन पर ज़ाहिर न किया। उसने अपने जी में कहा, "तुम कहीं ज़्यादा बुरी जगह पर हो; और जो कुछ तुम बयान कर रहे हो अल्लाह उसे ख़ूब जानता है।" वे बोले, "ऐ अज़ीज़, इसका बाप बहुत बूढ़ा आदमी है; तो इसकी जगह हममें से किसी को रख लीजिए। हम आपको अच्छा करने वालों में से देखते हैं।" उसने कहा, "अल्लाह की पनाह इससे कि हम उसके सिवा किसी और को पकड़ें जिसके पास हमने अपना माल पाया है: तब तो हम निश्चय ही ज़ालिम होंगे।" फिर जब वे उससे निराश हो

गए, तो अलग होकर आपस में मशविरा करने लगे। उनमें के सबसे बड़े ने कहा, "क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बाप ने तुमसे अल्लाह के नाम का पक्का वचन लिया है, और इससे पहले यूसुफ़ के मामले में तुम कैसी कोताही कर चुके हो? तो मैं इस ज़मीन से हरगिज़ न टलूँगा जब तक मेरे बाप मुझे इजाज़त न दें, या अल्लाह मेरे हक़ में फ़ैसला न कर दे: और वह सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है। तुम अपने बाप के पास लौट जाओ और कहो, 'अब्बा जान, आपके बेटे ने चोरी की है। और हमने बस उसी की गवाही दी जो हमें मालूम हुआ, और परोक्ष की निगहबानी हम न कर सकते थे। और उस बस्ती से पूछ लीजिए जहाँ हम थे, और उस क़ाफ़िले से जिसके साथ हम आए हैं: और हम बिलकुल सच कह रहे हैं।'" (77–82)

उसने कहा, "नहीं; बल्कि तुम्हारे मन ने तुम्हारे लिए एक बात बना दी है। तो अब—सब्र ही सबसे अच्छा है। हो सकता है अल्लाह उन सबको मेरे पास ले आए। निश्चय ही वही सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है।" और वह उनसे मुँह फेरकर बोला, "हाय, यूसुफ़ का ग़म!" और उस ग़म से, जिसे वह पीता रहा, उसकी आँखें सफ़ेद पड़ गईं। वे बोले, "अल्लाह की क़सम, आप यूसुफ़ ही को याद करते रहेंगे यहाँ तक कि घुल जाएँगे, या हलाक होने वालों में से हो जाएँगे!" उसने कहा, "मैं अपनी बेचैनी और अपने ग़म की फ़रियाद बस अल्लाह ही से करता हूँ, और मैं अल्लाह की ओर से वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। ऐ मेरे बेटो, जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की खोज लगाओ, और अल्लाह की राहत से निराश न हो: अल्लाह की राहत से तो बस वही लोग निराश होते हैं जो सत्य के इनकारी हैं।" (83–87)

फिर जब वे उसके सामने हाज़िर हुए तो बोले, "ऐ अज़ीज़, हम पर और हमारे घर वालों पर सख़्ती आ पड़ी है, और हम थोड़ी-सी नाचीज़ पूँजी लेकर आए हैं। तो हमें पूरी नाप दीजिए और हम पर सदक़ा कीजिए: निश्चय ही अल्लाह सदक़ा करने वालों को बदला देता है।" उसने कहा, "क्या तुम्हें मालूम है कि तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया था जब तुम नादान थे?" वे बोले, "क्या सचमुच तुम ही यूसुफ़ हो?" उसने कहा, "मैं यूसुफ़ हूँ, और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर एहसान किया है। निश्चय ही जो कोई अल्लाह के प्रति सचेत रहे और सब्र करे—तो अल्लाह अच्छा करने वालों का बदला अकारथ नहीं करता।" वे बोले, "अल्लाह की क़सम, अल्लाह ने तुम्हें हम पर श्रेष्ठता दी है, और निश्चय ही ख़ता हमारी ही थी।" उसने कहा, "आज तुम पर कोई मलामत नहीं। अल्लाह तुम्हें क्षमा करे: और वह दया करने वालों में सबसे बढ़कर दयावान है। मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसे मेरे बाप के चेहरे पर डाल दो; उनकी आँखों की रौशनी लौट आएगी। फिर अपने सारे घर वालों को मेरे पास ले आओ।" (88–93)

और जब क़ाफ़िला रवाना हुआ, तो उनके बाप ने कहा, "मुझे तो यूसुफ़ की ख़ुशबू आ रही है, चाहे तुम मुझे सठियाया हुआ ही समझो।" वे बोले, "अल्लाह की क़सम, आप अब तक अपनी उसी पुरानी ग़लती में पड़े हैं!" फिर जब शुभ-सूचना लाने वाला आया, तो उसने वह कुर्ता उसके चेहरे पर डाल दिया और उसकी आँखों की रौशनी लौट आई। उसने कहा, "क्या मैंने तुमसे कहा न था कि मैं अल्लाह की ओर से वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते?" वे बोले, "अब्बा जान, हमारे गुनाहों की क्षमा माँगिए; निश्चय ही ख़ता हमारी ही थी।"

उसने कहा, "मैं अपने रब से तुम्हारे लिए क्षमा माँगूँगा। निश्चय ही वही बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है।" (94–98)

फिर जब वे यूसुफ़ के सामने हाज़िर हुए, तो उसने अपने माँ-बाप को अपने पास जगह दी और कहा, "मिस्र में दाख़िल हो जाइए, अल्लाह ने चाहा तो अमन के साथ।" और उसने अपने माँ-बाप को तख़्त पर ऊँचा बिठाया, और सब उसके आगे सजदे में गिर पड़े। उसने कहा, "अब्बा जान, यह मेरे उस बहुत पहले के ख़्वाब की ताबीर है: मेरे रब ने उसे सच कर दिखाया। और उसने मुझ पर एहसान किया जब मुझे क़ैदख़ाने से निकाला, और आप लोगों को रेगिस्तान से यहाँ ले आया, इसके बाद कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के बीच फूट डाल दी थी। निश्चय ही मेरा रब जो चाहता है उसकी बारीक तदबीर करता है: वही सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। ऐ मेरे रब, तूने मुझे कुछ बादशाही दी और मुझे बातों की तह तक पहुँचना कुछ सिखाया। ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरा संरक्षक है। मुझे इस हाल में मौत दे कि मैं तेरे आगे समर्पित हूँ, और मुझे नेक लोगों के साथ मिला दे।" (99–101)

ऐ नबी, यह परोक्ष की ख़बरों में से है जो हम तुम्हारी ओर वह्य कर रहे हैं। और तुम उनके पास न थे जब उन्होंने अपनी बात पक्की की और वे चाल चल रहे थे। और अधिकतर लोग, चाहे तुम कितना ही चाहो, ईमान लाने वाले नहीं। और तुम इस पर उनसे कोई बदला नहीं माँगते: यह तो बस सारे संसारों के लिए एक याददिहानी है। और आसमानों और ज़मीन में कितनी ही निशानियाँ हैं जिन पर से वे गुज़र जाते हैं, उनसे मुँह फेरे हुए! और उनमें से अधिकतर अल्लाह पर ईमान नहीं लाते मगर इस तरह कि उसके साथ साझी भी ठहराते हैं। तो क्या वे इससे निश्चिन्त हैं कि अल्लाह की ओर से कोई छा जाने वाली यातना उन पर आ पड़े, या वह घड़ी उन पर अचानक आ जाए और उन्हें ख़बर तक न हो? कह दो, "यह मेरी राह है: मैं पूरी बसीरत के साथ अल्लाह की ओर बुलाता हूँ, मैं भी और वे भी जो मेरे पीछे चले। और अल्लाह पाक है! और मैं उसके साथ साझी ठहराने वालों में से नहीं हूँ।" (102–108)

और हमने तुमसे पहले भी बस मर्द ही भेजे, जिनकी ओर हम वह्य करते थे, बस्तियों के रहने वालों में से। तो क्या ये ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते कि इनसे पहले के लोगों का अंजाम कैसा हुआ? और निश्चय ही आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? यहाँ तक कि जब रसूल निराश हो गए और समझे कि उन्हें झूठा समझ लिया गया, तो हमारी मदद उनके पास आ पहुँची, फिर जिसे हमने चाहा वह बचा लिया गया; और हमारी सख़्ती अपराधी लोगों से कभी फेरी नहीं जाती। निश्चय ही उनके क़िस्सों में समझ-बूझ वालों के लिए सबक़ है। यह कोई गढ़ी हुई बात नहीं, बल्कि उसकी पुष्टि है जो इससे पहले आ चुका, हर चीज़ का खुला बयान है, और उन लोगों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता है जो ईमान रखते हैं। (109–111)

# 13. बादल की गरज (अर-रअद)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

अलिफ़ लाम मीम रा। ये किताब की आयतें और निशानियाँ हैं; और जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है वह सत्य है, मगर अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते। अल्लाह ही है जिसने आसमानों को ऐसे खम्भों के बिना ऊँचा किया जो तुम्हें दिखाई दें, फिर अर्श पर विराजमान हुआ। और उसने सूरज और चाँद को काम में लगा दिया, हर एक एक ठहराई हुई अवधि तक के लिए चल रहा है। वही सारे मामले का प्रबन्ध करता है, और निशानियाँ खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि तुम अपने रब से मिलने का यक़ीन करो।[15] और वही है जिसने ज़मीन को फैलाया और उसमें जमे हुए पहाड़ और नदियाँ रखीं; और हर तरह के फलों में से उसने उसमें दो-दो, जोड़े बनाए। वह रात को दिन पर परदे की तरह ढाँक देता है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार करते हैं। और ज़मीन में पास-पास लगे हुए टुकड़े हैं, और अंगूरों के बाग़, और खेतियाँ, और खजूर के पेड़, गुच्छेदार भी और अकेले भी, सब एक ही पानी से सींचे जाते हैं; फिर भी हम उनमें से कुछ को कुछ पर स्वाद में बढ़ा देते हैं। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं। (1–4)

और अगर तुम्हें आश्चर्य हो, तो आश्चर्य के लायक़ तो उनका यह कहना है, "क्या? जब हम मिट्टी हो जाएँगे, तो क्या हम सचमुच नए सिरे से पैदा किए जाएँगे?" यही हैं जिन्होंने अपने रब का इनकार किया; यही हैं जिनकी गर्दनों में तौक़ होंगे; और यही आग वाले हैं, और वे उसमें सदैव रहेंगे। और वे तुमसे भलाई से पहले बुराई के लिए जल्दी मचाते हैं, हालाँकि इनसे पहले इबरत भरी सज़ाएँ गुज़र चुकी हैं। और निश्चय ही तुम्हारा रब लोगों के ज़ुल्म के बावजूद उनके लिए बड़ी क्षमा वाला है, और निश्चय ही तुम्हारा रब कठोर सज़ा देने वाला भी है। और सत्य के इनकारी कहते हैं, "इस पर इसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई?" तुम तो बस एक सचेत करने वाले हो; और हर क़ौम के लिए एक राह दिखाने वाला हुआ है। (5–7)

अल्लाह जानता है जो कुछ हर मादा पेट में लिए होती है, और जो कुछ रहमों में घटता और बढ़ता है: और उसके यहाँ हर चीज़ का एक अन्दाज़ा ठहरा हुआ है। वह परोक्ष और प्रत्यक्ष का जानने वाला है, बड़ा, सबसे ऊँचा। तुममें से कोई चुपके से बात कहे या पुकारकर, और कोई रात में छिपा हो या दिन में चल-फिर रहा हो, सब बराबर है: हर आदमी के लिए, उसके आगे और उसके पीछे, बारी-बारी आने वाले निगहबान हैं, जो अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं। निश्चय ही अल्लाह किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता जब

[15] इस आयत में और सूरा लुक़मान की एक आयत (31:10) में अल्लाह गुरुत्वाकर्षण को, जिससे हमारा ब्रह्मांड चल रहा है, अपनी रचनात्मकता की निशानी और अपने गुणों अल-ख़ालिक़, अल-बारी और अल-मुसव्विर के ज़ुहूर के रूप में पेश करता है। यहाँ अल्लाह इसे हमारी आख़िरत की भी निशानी कहता है, क्योंकि बहुत-सी जगहों पर अल्लाह हमारे ब्रह्मांड की पहली रचना को आख़िरत में आने वाली चीज़ों के नमूने और सबूत के तौर पर पेश करता है, जैसे सूरा या सीन के आख़िर में।

तक वे ख़ुद उसे न बदल डालें जो उनके अपने भीतर है। और जब अल्लाह किसी क़ौम के लिए बुराई का इरादा कर ले, तो उसे कोई टाल नहीं सकता, और न उसके सिवा उनका कोई संरक्षक है। (8–11)

वही है जो तुम्हें बिजली दिखाता है, जो डर भी पैदा करती है और आस भी, और वही भारी बादल उठाता है। और गरज उसकी हम्द के साथ उसकी तसबीह करती है, और फ़रिश्ते भी उसके भय से। और वह कड़कती बिजलियाँ भेजता है और जिस पर चाहता है उन्हें गिरा देता है—फिर भी ये लोग अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, हालाँकि वह बड़ी ज़बरदस्त शक्ति वाला है। सच्ची पुकार उसी के लिए है। और जिन्हें ये उसके सिवा पुकारते हैं वे उनकी पुकार का कुछ भी जवाब नहीं देते, बस ऐसे ही जैसे कोई अपने दोनों हाथ पानी की ओर फैलाए कि वह उसके मुँह तक आ पहुँचे: हालाँकि वह उस तक कभी पहुँचने वाला नहीं। और सत्य के इनकारियों की पुकार बस भटकते फिरना है। और अल्लाह ही को सजदा करते हैं वे सब जो आसमानों और ज़मीन में हैं, ख़ुशी से या मजबूरी से, और उनकी परछाइयाँ भी सुबह और शाम। (12–15)

कह दो, “आसमानों और ज़मीन का रब कौन है?” कह दो, “अल्लाह।” कह दो, “फिर क्या तुमने उसके सिवा ऐसे संरक्षक बना लिए हैं जो ख़ुद अपने लिए भी किसी फ़ायदे और नुक़सान का अधिकार नहीं रखते?” कह दो, “क्या अंधा और देखने वाला बराबर हो सकते हैं? या क्या घुप अँधेरे और रौशनी बराबर हो सकते हैं?” या इन्होंने अल्लाह के ऐसे साझी ठहरा लिए हैं जिन्होंने उसी की तरह कुछ पैदा किया हो, जिससे पैदा करना इन्हें एक-सा दिखाई पड़ा? कह दो, “अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है, और वही अकेला है, सब पर ग़ालिब।” (16)

उसने आसमान से पानी उतारा, तो नदी-नाले अपनी-अपनी समाई के अनुसार बह निकले, फिर बाढ़ ने उभरा हुआ झाग उठा लिया; और जिन चीज़ों को लोग ज़ेवर या बर्तन-औज़ार बनाने के लिए आग में तपाते हैं, उनसे भी वैसा ही झाग उठता है। इसी तरह अल्लाह सत्य और बातिल की मिसाल बयान करता है: तो जो झाग है, वह सूखकर जाता रहता है; और जो चीज़ लोगों को फ़ायदा पहुँचाती है, वह ज़मीन में ठहर जाती है।[16] (17)

इसी तरह अल्लाह मिसालें बयान करता है। जिन लोगों ने अपने रब की पुकार क़बूल की उनके लिए सबसे अच्छा बदला है। और जिन्होंने उसकी पुकार क़बूल न की—अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है और उसके साथ उतना ही और भी, तो वे अपने छुटकारे के लिए उसे दे डालें। उनका हिसाब बुरा होगा; और उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह क्या ही बुरा बिछौना है! (18)

तो क्या वह जो जानता है कि जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है वह सत्य है, उस जैसा हो सकता है जो अंधा है? नसीहत तो बस समझ-बूझ वाले ही पकड़ते हैं: वे जो अल्लाह के अह्द को पूरा करते हैं और पक्के वचन को नहीं तोड़ते; जो उसे जोड़ते हैं जिसे जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया है,

[16] **नास्तिकता की बुनियाद अटकल (ज़न्न) पर है: एक वैज्ञानिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या**

जो अपने रब से डरते हैं और बुरे हिसाब का भय रखते हैं; जो अपने रब की रज़ा चाहते हुए सब्र करते हैं, जो नमाज़ क़ायम रखते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से छिपे और खुले ख़र्च करते हैं, और जो बुराई को भलाई से दूर करते हैं। उन्हीं के लिए आख़िरत का घर है: हमेशा रहने वाली नेमत के बाग़, जिनमें वे दाख़िल होंगे, और उनके बाप-दादा, उनके जोड़ों और उनकी सन्तान में से जो नेक होंगे वे भी; और फ़रिश्ते हर दरवाज़े से उनके पास आएँगे: "तुम पर सलाम हो, उसके बदले जो तुमने सब्र से झेला! तो क्या ही अच्छा है आख़िरत का घर!" और जो लोग अल्लाह के अह्द को मज़बूत बाँधने के बाद तोड़ देते हैं, जो उसे काटते हैं जिसे जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया है, और जो ज़मीन में बिगाड़ फैलाते हैं—उन्हीं पर लानत है, और उन्हीं के लिए बुरा घर है। अल्लाह जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और नपी-तुली भी देता है। और ये लोग दुनिया की ज़िन्दगी पर मगन हैं, हालाँकि दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में बस थोड़ा-सा क्षणिक सामान है। (19–26)

और सत्य के इनकारी कहते हैं, "इस पर इसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई?" कह दो, "अल्लाह जिसे चाहता है भटकने देता है, और अपनी ओर उसी को राह दिखाता है जो उसकी ओर पलटे: वे जो ईमान लाए, और जिनके दिल अल्लाह की याद से सुकून पाते हैं—सुन लो, अल्लाह की याद ही से दिलों को सुकून मिलता है—वे जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए: उनके लिए ख़ुशहाली है, और लौटने की सुन्दर जगह।" इसी तरह हमने तुम्हें एक ऐसे समुदाय में भेजा है जिससे पहले बहुत-से समुदाय गुज़र चुके हैं, ताकि तुम उन्हें वह सुनाओ जो हमने तुम्हारी ओर वह्य किया है; फिर भी वे रहमान का इनकार करते हैं। कह दो, "वही मेरा रब है; उसके सिवा कोई इलाह नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया, और उसी की ओर मुझे लौटना है।" और अगर कोई ऐसा क़ुरआन होता जिससे पहाड़ चला दिए जाते, या ज़मीन टुकड़े-टुकड़े कर दी जाती, या मुर्दों से बात करा दी जाती—तो वह यही होता। नहीं; बल्कि सारा मामला अल्लाह ही के अधिकार में है। तो क्या ईमान वालों को मालूम नहीं कि अगर अल्लाह चाहता, तो सारे लोगों को राह दिखा देता? और सत्य के इनकारियों पर, उनकी करतूतों के कारण, कोई न कोई आफ़त आती ही रहेगी, या उनके घरों के क़रीब उतरती रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ पहुँचे। निश्चय ही अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (27–31)

और तुमसे पहले भी रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया, तो मैंने सत्य के इनकारियों को मुहलत दी; फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया—तो कैसी रही मेरी सज़ा! तो क्या वह जो हर जान पर निगहबान है, और जानता है जो कुछ उसने कमाया, किसी और जैसा हो सकता है? फिर भी इन्होंने अल्लाह के साझी ठहरा लिए। कह दो, "ज़रा उनके नाम तो लो! या तुम उसे ज़मीन की किसी ऐसी चीज़ की ख़बर देते हो जिसे वह नहीं जानता? या यह बस ऊपरी बात है?" नहीं; बल्कि सत्य के इनकारियों के लिए उनकी चाल लुभावनी बना दी गई है, और वे राह से रोक दिए गए हैं। और जिसे अल्लाह भटकने दे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं। उनके लिए दुनिया की ज़िन्दगी में भी यातना है, और आख़िरत की यातना तो कहीं ज़्यादा सख़्त है; और अल्लाह से उन्हें बचाने वाला कोई न होगा। (32–34)

उस जन्नत की मिसाल, जिसका वादा अल्लाह के प्रति सचेत रहने वालों से किया गया है, यह है: उसके नीचे नहरें बहती हैं; उसके फल सदा रहने वाले हैं, और उसकी छाया भी। यह अंजाम है उन लोगों का जो अल्लाह के प्रति सचेत रहे, जबकि सत्य के इनकारियों का अंजाम आग है। और जिन्हें हमने किताब दी है वे उस पर ख़ुश होते हैं जो तुम्हारी ओर उतारा गया है; मगर गिरोहों में कुछ ऐसे भी हैं जो उसके कुछ हिस्से का इनकार करते हैं। कह दो, "मुझे तो बस यही हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ और उसके साथ किसी को साझी न ठहराऊँ। उसी की ओर मैं बुलाता हूँ, और उसी की ओर मुझे लौटना है।" और इसी तरह हमने इसे अरबी में एक निर्णायक फ़रमान बनाकर उतारा है। और अगर तुम उस ज्ञान के बाद, जो तुम्हारे पास आ चुका है, उनकी इच्छाओं पर चले, तो अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारा न कोई संरक्षक होगा, न कोई बचाने वाला। और हमने तुमसे पहले भी रसूल भेजे और उन्हें पत्नियाँ और औलाद दी; और किसी रसूल के बस में न था कि अल्लाह की इजाज़त के बिना कोई निशानी ले आए। हर अवधि के लिए एक लिखा हुआ है। अल्लाह जो चाहता है मिटा देता है और जो चाहता है क़ायम रखता है, और असल किताब उसी के पास है। और चाहे हम तुम्हें उसका कुछ हिस्सा दिखा दें जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं, या उससे पहले तुम्हें अपने पास बुला लें, तुम्हारे ज़िम्मे तो बस सन्देश पहुँचा देना है, और हिसाब लेना हमारा काम है। क्या वे नहीं देखते कि हम ज़मीन की ओर बढ़े चले आ रहे हैं, उसे उसके किनारों से घटाते हुए? और अल्लाह फ़ैसला करता है, उसके फ़ैसले को कोई पलटने वाला नहीं; और वह जल्द हिसाब लेने वाला है। और इनसे पहले के लोग भी चालें चल चुके हैं, मगर सारी तदबीर अल्लाह ही के हाथ में है: वह जानता है जो कुछ हर जान कमाती है। और सत्य के इनकारी जल्द ही जान लेंगे कि आख़िरत का घर किसके लिए है। और सत्य के इनकारी कहते हैं, "तुम भेजे हुए नहीं हो।" कह दो, "मेरे और तुम्हारे बीच गवाह के तौर पर अल्लाह काफ़ी है, और वह भी जिसके पास किताब का ज्ञान है।" (35–43)

# 14. इबराहीम (इबराहीम)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

अलिफ़ लाम रा। यह एक किताब है जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है ताकि तुम लोगों को, उनके रब के हुक्म से, घुप अँधेरों से निकालकर रौशनी में ले आओ, उसकी राह की ओर जो प्रभुत्वशाली, प्रशंसा के योग्य है— अल्लाह, जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है। और सत्य के इनकारियों के लिए एक कठोर यातना के कारण बड़ी तबाही है: वे जो दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत से ज़्यादा प्यारा रखते हैं, जो दूसरों को अल्लाह की राह से रोकते और उसे टेढ़ा करना चाहते हैं। वे भटककर बहुत दूर जा पड़े हैं। और हमने जो भी रसूल भेजा उसकी अपनी क़ौम की भाषा ही में भेजा, ताकि वह उनके लिए बात खोलकर बयान करे। फिर अल्लाह जिसे चाहता है भटकने देता है और जिसे चाहता है राह दिखाता है; और वही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। (1–4)

और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा: "अपनी क़ौम को घुप अँधेरों से निकालकर रौशनी में ले आओ, और उन्हें अल्लाह के दिन याद दिलाओ।" निश्चय ही इसमें हर उस आदमी के लिए निशानियाँ हैं जो सब्र करने वाला, शुक्र करने वाला हो। और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, "अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो, जब उसने तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुटकारा दिया, जो तुम्हें बुरी यातना देते थे, तुम्हारे बेटों को ज़बह करते और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा रहने देते थे। और इसमें तुम्हारे रब की ओर से बड़ी आज़माइश थी। और जब तुम्हारे रब ने एलान कर दिया: 'अगर तुम शुक्र करोगे, तो मैं तुम्हें ज़रूर और ज़्यादा दूँगा; और अगर नाशुक्री करोगे, तो निश्चय ही मेरी यातना बड़ी सख़्त है।'" और मूसा ने कहा, "अगर तुम नाशुक्री करो, तुम भी और ज़मीन में जो भी हैं सब-के-सब, तब भी अल्लाह निस्पृह, प्रशंसा के योग्य है।" (5–8)

क्या तुम तक उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो तुमसे पहले थे—नूह की क़ौम, आद और समूद, और वे जो उनके बाद हुए, जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता? उनके रसूल उनके पास खुले प्रमाण लेकर आए, मगर उन्होंने अपने हाथ अपने मुँह में दबा लिए और बोले, "जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गए हो हम उसका इनकार करते हैं, और जिस चीज़ की ओर तुम हमें बुलाते हो उसके बारे में हम गहरे शक में हैं।" उनके रसूलों ने कहा, "क्या अल्लाह के बारे में शक है, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है? वह तुम्हें बुलाता है ताकि तुम्हारे गुनाह क्षमा कर दे और तुम्हें एक ठहराई हुई अवधि तक मुहलत दे।" वे बोले, "तुम तो बस हमारे ही जैसे इनसान हो। तुम चाहते हो कि हमें उनसे रोक दो जिनकी इबादत हमारे बाप-दादा करते थे। तो हमारे पास कोई खुला प्रमाण ले आओ।" उनके रसूलों ने उनसे कहा, "हम वाक़ई तुम्हारे ही जैसे इनसान हैं, मगर अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है एहसान करता है। और हमारे बस में नहीं कि अल्लाह की इजाज़त के बिना तुम्हारे पास कोई प्रमाण ले आएँ; और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। और हम अल्लाह पर भरोसा क्यों न करें, जबकि उसी ने हमें हमारी राहें दिखाई हैं?

और जो तकलीफ़ तुम हमें दे रहे हो उस पर हम ज़रूर सब्र करेंगे; और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।" (9–12)

और सत्य के इनकारियों ने अपने रसूलों से कहा, "हम तुम्हें अपनी ज़मीन से ज़रूर निकाल देंगे, वरना तुम्हें हमारे पंथ में लौट आना होगा।" तब उनके रब ने उनकी ओर वह्य की: "हम इन ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे, और इनके बाद तुम्हें इस ज़मीन में ज़रूर बसाएँगे। यह उसके लिए है जो मेरे सामने खड़े होने से डरे और मेरी चेतावनी से डरे।" और उन्होंने फ़ैसला चाहा, और हर हठी सरकश नाकाम हुआ। उसके आगे जहन्नम है, और उसे पीप-लहू का पानी पिलाया जाएगा, जिसे वह घूँट-घूँट पिएगा मगर गले से उतार न सकेगा। और मौत हर ओर से उस पर आएगी, फिर भी वह मरेगा नहीं; और उसके आगे एक सख़्त यातना है। जिन लोगों ने अपने रब का इनकार किया उनकी मिसाल यह है: उनके कर्म उस राख की तरह हैं जिस पर आँधी के दिन तेज़ हवा चल जाए। जो कुछ उन्होंने कमाया उसमें से किसी चीज़ पर उनका बस न चलेगा। यही परले दर्जे की गुमराही है। (13–18)

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को सत्य के साथ पैदा किया है? अगर वह चाहे, तो तुम्हें हटा दे और एक नई सृष्टि ले आए: और यह अल्लाह के लिए कुछ मुश्किल नहीं। और वे सब अल्लाह के सामने निकल खड़े होंगे; तब कमज़ोर लोग उनसे कहेंगे जो घमंड करते थे, "हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे। तो क्या अब तुम अल्लाह की यातना में से कुछ हमसे टाल सकते हो?" वे कहेंगे, "अगर अल्लाह हमें राह दिखाता, तो हम भी तुम्हें राह दिखा देते। अब हमारे लिए बराबर है कि हम बेक़रार हों या सब्र करें: हमारे लिए बच निकलने की कोई जगह नहीं।" और जब मामले का फ़ैसला हो चुकेगा, तो शैतान कहेगा, "अल्लाह ने तुमसे सच्चा वादा किया था; और मैंने भी तुमसे वादा किया था, मगर मैंने तुमसे वादाख़िलाफ़ी की। और मेरा तुम पर कोई ज़ोर न था, सिवाय इसके कि मैंने तुम्हें बुलाया और तुमने मेरी बात मान ली। तो मुझे मलामत न करो, बल्कि अपने आप को मलामत करो। न मैं तुम्हारी फ़रियाद को पहुँच सकता हूँ, न तुम मेरी फ़रियाद को पहुँच सकते हो। इससे पहले जो तुमने मुझे अल्लाह का साझी ठहराया था मैं उससे बरी हूँ।" निश्चय ही ज़ालिमों के लिए दुखद यातना है। और जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए वे ऐसे बाग़ों में दाख़िल किए जाएँगे जिनके नीचे नहरें बहती हैं, वे अपने रब के हुक्म से उनमें सदैव रहेंगे; वहाँ उनका अभिवादन होगा, "सलाम!" (19–23)

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह कैसी मिसाल बयान करता है? अच्छी बात एक अच्छे पेड़ की तरह है: उसकी जड़ जमी हुई है और उसकी शाख़ें आसमान तक पहुँची हुई हैं; वह अपने रब के हुक्म से हर मौसम में अपना फल देता है। और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, ताकि वे नसीहत पकड़ें। और बुरी बात की मिसाल एक बुरे पेड़ की-सी है, जो ज़मीन के ऊपर ही से उखाड़ फेंका गया हो, उसके लिए कोई ठहराव नहीं। अल्लाह ईमान लाने वालों को पक्की बात के द्वारा जमाए रखता है, दुनिया की ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी; और अल्लाह ज़ालिमों को भटकने देता है। और अल्लाह जो चाहता है करता है। (24–27)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत को नाशुक्री से बदल डाला, और अपनी क़ौम को तबाही के घर में जा उतारा—जहन्नम, जिसमें वे जलने को दाख़िल होंगे? और वह क्या ही बुरा ठिकाना है! और उन्होंने अल्लाह के बराबर वाले ठहरा लिए, ताकि दूसरों को उसकी राह से भटकाएँ। कह दो, "मज़े कर लो; तुम्हारे सफ़र का अन्त आग ही है।" मेरे उन बन्दों से जो ईमान लाए हैं कह दो कि वे नमाज़ क़ायम रखें, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से छिपे और खुले ख़र्च करें, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न कोई सौदेबाज़ी होगी न कोई दोस्ती। (28–31)

अल्लाह ही है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और आसमान से पानी उतारा, फिर उसके द्वारा तुम्हारी रोज़ी के लिए फल निकाले; और उसने नौकाओं को तुम्हारे काम में लगा दिया, कि उसके हुक्म से समुद्र में चलें, और उसने नदियों को तुम्हारे काम में लगा दिया। और उसने सूरज और चाँद को तुम्हारे काम में लगा दिया, जो बराबर अपनी चाल पर चल रहे हैं, और उसने रात और दिन को तुम्हारे काम में लगा दिया। और जो कुछ तुमने उससे माँगा उस सबमें से उसने तुम्हें कुछ न कुछ दिया। और अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो, तो उन्हें कभी गिन न सकोगे। निश्चय ही इनसान बड़ा बेइनसाफ़, बड़ा नाशुक्रा है। (32–34)

और जब इबराहीम ने कहा, "ऐ मेरे रब, इस बस्ती को अमन वाली बना दे, और मुझे और मेरी औलाद को इससे दूर रख कि हम बुतों की इबादत करें। ऐ मेरे रब, इन्होंने बहुत-से लोगों को भटका दिया है। तो जो मेरे पीछे चले वह मेरा है; और जो मेरी अवज्ञा करे—तो निश्चय ही तू बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। ऐ हमारे रब, मैंने अपनी कुछ औलाद को एक ऐसी घाटी में, जहाँ खेती नहीं, तेरे आदरणीय घर के पास ला बसाया है—ऐ हमारे रब, ताकि वे नमाज़ क़ायम रखें। तो कुछ लोगों के दिल इनकी ओर झुका दे, और इन्हें फलों की रोज़ी दे, ताकि ये शुक्र अदा करें। ऐ हमारे रब, तू जानता है जो कुछ हम छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं; और अल्लाह से कोई चीज़ छिपी नहीं, न ज़मीन में न आसमान में। सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने मुझे बुढ़ापे में इसमाईल और इसहाक़ दिए। निश्चय ही मेरा रब दुआ सुनने वाला है। ऐ मेरे रब, मुझे नमाज़ क़ायम रखने वाला बना, और मेरी औलाद में से भी। ऐ हमारे रब, मेरी दुआ क़बूल कर। ऐ हमारे रब, मुझे और मेरे माँ-बाप को और ईमान वालों को उस दिन क्षमा कर देना जिस दिन हिसाब क़ायम होगा।"[17] (35–41)

और यह न समझना कि अल्लाह उससे बेख़बर है जो ज़ालिम कर रहे हैं। वह तो उन्हें बस उस दिन तक के लिए मुहलत दे रहा है जिसमें आँखें फटी-की-फटी रह जाएँगी, वे सिर उठाए दौड़े चले जा रहे होंगे, उनकी निगाह उनकी ओर पलटकर न आएगी, और उनके दिल बिलकुल ख़ाली होंगे। और लोगों को उस दिन से सचेत करो जब उन पर यातना आ जाएगी, और ज़ुल्म करने वाले कहेंगे, "ऐ हमारे रब, हमें थोड़ी-सी मुद्दत

[17] **"ऐ मेरे रब, इस शहर को अमन वाला बना दे": क़ुरआन 14:35–41 की ऐतिहासिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या, इबराहीम से लेकर 2026 के मक्का रक्षा गठबन्धन तक मक्का की सुरक्षा के सदी-दर-सदी इतिहास के साथ**
**जिद्दा की घेराबन्दी, 1517: पुर्तगाल, लाल सागर और पवित्र शहरों की रक्षा**

के लिए मुहलत दे दे: हम तेरी पुकार क़बूल करेंगे और रसूलों के पीछे चलेंगे।" "क्या तुम इससे पहले क़समें न खाया करते थे कि तुम्हारे लिए कोई ज़वाल ही नहीं? और तुम उन्हीं लोगों की बस्तियों में बसे थे जिन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया था, और तुम पर खुल चुका था कि हमने उनके साथ क्या किया, और हमने तुम्हारे लिए मिसालें भी बयान कर दी थीं।" और उन्होंने अपनी चाल चली, मगर उनकी चाल अल्लाह के सामने थी—चाहे उनकी चाल ऐसी ही क्यों न हो कि उससे पहाड़ टल जाएँ। (42–46)

तो यह हरगिज़ न समझना कि अल्लाह अपने रसूलों से किया हुआ अपना वादा तोड़ेगा। निश्चय ही अल्लाह प्रभुत्वशाली, बदला लेने वाला है। जिस दिन यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जाएगी, और आसमान भी, और वे सब अल्लाह के सामने निकल खड़े होंगे, जो अकेला है, सब पर ग़ालिब, और तुम उस दिन अपराधियों को ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ देखोगे, उनके लिबास तारकोल के होंगे, और आग उनके चेहरों पर छाई होगी, ताकि अल्लाह हर जान को उसकी कमाई का बदला दे। निश्चय ही अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (47–51)

यह लोगों के लिए एक सन्देश है, और ताकि वे इसके द्वारा सचेत किए जाएँ, और ताकि वे जान लें कि वही एक इलाह है, और ताकि समझ-बूझ वाले नसीहत पकड़ें। (52)

# 15. अल-हिज्र (अल-हिज्र)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

अलिफ़ लाम रा। ये किताब की, और एक ऐसे क़ुरआन की आयतें और निशानियाँ हैं जो हर बात स्पष्ट कर देता है। हो सकता है कि सत्य के इनकारी किसी दिन आरज़ू करें कि काश वे अल्लाह के आगे समर्पित हो गए होते। उन्हें छोड़ दो कि खाएँ और मज़े करें, और आस उन्हें भुलावे में डाले रखे: जल्द ही वे जान लेंगे। और हमने जिस बस्ती को भी हलाक किया उसके लिए एक जाना-बूझा लिखा हुआ था, और कोई समुदाय न अपनी अवधि से आगे बढ़ सकता है, न पीछे रह सकता है। और वे कहते हैं, "ऐ वह जिस पर यह याददिहानी उतारी गई है—तू तो निश्चय ही दीवाना है! अगर तू सच्चों में से है तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आता?" हम फ़रिश्तों को नहीं उतारते मगर सत्य के साथ, और तब उन्हें मुहलत न दी जाती। निश्चय ही यह याददिहानी हमने ही उतारी है, और हम ही इसके निगहबान हैं। और हमने तुमसे पहले अगले गिरोहों में भी रसूल भेजे, और उनके पास जो भी रसूल आया वे उसका मज़ाक़ ही उड़ाते रहे। इसी तरह हम इसे अपराधियों के दिलों में उतार देते हैं: वे इस पर ईमान नहीं लाते, हालाँकि अगलों की मिसाल गुज़र चुकी है। और अगर हम उन पर आसमान का कोई दरवाज़ा खोल देते, और वे उसमें चढ़ते चले जाते, तब भी यही कहते, "हमारी आँखें बस चौंधिया दी गई हैं; नहीं, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है।" (1–15)

और हमने आसमान में बुर्ज बनाए, और देखने वालों के लिए उसे सजा दिया, और हर धुत्कारे हुए शैतान से उसे सुरक्षित रखा—सिवाय उसके जो चोरी-छिपे कुछ सुन ले, तो एक चमकता शोला उसके पीछे लग जाता है। और ज़मीन—हमने उसे फैलाया, और उसमें जमे हुए पहाड़ डाल दिए, और उसमें हर चीज़ नपे-तुले अन्दाज़ से उगाई; और हमने उसमें तुम्हारे लिए जीविका के साधन रखे, और उनके लिए भी जिन्हें तुम रोज़ी नहीं देते। और कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके ख़ज़ाने हमारे पास न हों, और हम उसे बस एक जाने-बूझे अन्दाज़े से ही उतारते हैं। और हम बोझल करने वाली हवाएँ भेजते हैं, फिर आसमान से पानी उतारते हैं और वह तुम्हें पिलाते हैं; और उसे जमा कर रखने वाले तुम नहीं हो। और निश्चय ही हम ही ज़िन्दगी देते और मौत देते हैं, और हम ही वारिस हैं। और हम उन्हें भी ख़ूब जानते हैं जो तुममें से आगे जा चुके, और उन्हें भी ख़ूब जानते हैं जो पीछे आने वाले हैं। और निश्चय ही तुम्हारा रब ही उन्हें इकट्ठा करेगा: वह हिकमत वाला, सब कुछ जानने वाला है।[18] (16–25)

और हमने इनसान को खनखनाती मिट्टी से, सड़े हुए काले गारे से जिसे साँचे में ढाला गया था, पैदा किया, और जिन्नों को हमने उससे पहले झुलसा देने वाली लू की आग से पैदा किया। और जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा, "मैं खनखनाती मिट्टी से, सड़े हुए काले गारे से जिसे साँचे में ढाला गया है, एक इनसान पैदा करने

[18] **क़ुरआन 15:16–25 की एक वैज्ञानिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या**
**क़ुरआन एक सूरा का नाम तारामंडलों पर क्यों रखता है?**

वाला हूँ। तो जब मैं उसे ठीक-ठीक बना लूँ और उसमें अपनी रूह में से फूँक दूँ, तो तुम उसके आगे सजदे में गिर जाना," तो फ़रिश्तों ने सजदा किया, सब-के-सब ने—सिवाय इबलीस के: उसने सजदा करने वालों के साथ होने से इनकार कर दिया। उसने कहा, "ऐ इबलीस, तुझे क्या हुआ, कि तू सजदा करने वालों के साथ न हुआ?" वह बोला, "मैं ऐसा नहीं कि एक इनसान को सजदा करूँ जिसे तूने खनखनाती मिट्टी से, सड़े हुए काले गारे से जिसे साँचे में ढाला गया है, पैदा किया।" उसने कहा, "तो निकल जा यहाँ से, क्योंकि तू धुत्कारा हुआ है, और निश्चय ही बदले के दिन तक तुझ पर लानत है।" वह बोला, "ऐ मेरे रब, तो मुझे उस दिन तक मुहलत दे जब वे उठाए जाएँगे।" उसने कहा, "तू उनमें से है जिन्हें मुहलत दी गई, उस दिन तक जिसका समय ठहरा हुआ है।" वह बोला, "ऐ मेरे रब, चूँकि तूने मुझे गुमराह किया है, मैं ज़मीन में उनके लिए बुराई को ज़रूर लुभावना बनाऊँगा, और उन सबको ज़रूर भटकाऊँगा—सिवाय उनमें से तेरे उन बन्दों के, जो ख़ालिस कर लिए गए हैं।" उसने कहा, "यह एक राह है जो सीधी मुझ तक पहुँचती है: निश्चय ही मेरे बन्दों पर तेरा कोई ज़ोर न चलेगा, सिवाय उन बहके हुओं के जो तेरे पीछे चलें; और निश्चय ही जहन्नम उन सबके वादे की जगह है। उसके सात दरवाज़े हैं, और हर दरवाज़े के लिए उनमें से एक हिस्सा बँटा हुआ है।" निश्चय ही जो अल्लाह के प्रति सचेत रहे वे बाग़ों और सोतों में होंगे। "इनमें सलामती और अमन के साथ दाख़िल हो जाओ!" और उनके सीनों में जो भी कीना होगा हम निकाल देंगे; वे भाई-भाई बनकर तख़्तों पर आमने-सामने बैठे होंगे। वहाँ उन्हें न कोई थकान छुएगी, और न वे वहाँ से कभी निकाले जाएँगे। मेरे बन्दों को बता दो कि मैं ही बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान हूँ, और यह कि मेरी यातना ही दुखद यातना है। (26–50)

और उन्हें इबराहीम के मेहमानों का हाल सुनाओ, जब वे उसके पास आए और कहा, "सलाम।" उसने कहा, "हमें तो तुमसे डर लग रहा है।" वे बोले, "डरो नहीं: हम तुम्हें एक ज्ञान वाले लड़के की शुभ-सूचना देते हैं।" उसने कहा, "क्या तुम मुझे शुभ-सूचना देते हो हालाँकि मुझ पर बुढ़ापा आ चुका? तो यह कैसी शुभ-सूचना दे रहे हो?" वे बोले, "हम तुम्हें सच्ची शुभ-सूचना दे रहे हैं; तो तुम निराश होने वालों में से न हो।" उसने कहा, "और अपने रब की दयालुता से भटके हुओं के सिवा कौन निराश होता है?" उसने कहा, "तो ऐ भेजे हुओ, तुम्हारी मुहिम क्या है?" वे बोले, "हम एक अपराधी क़ौम की ओर भेजे गए हैं—सिवाय लूत के घर वालों के: उन सबको हम ज़रूर बचा लेंगे, सिवाय उसकी पत्नी के; हमने ठहरा दिया है कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी।" (51–60)

फिर जब वे भेजे हुए लूत के घर वालों के पास पहुँचे, तो उसने कहा, "तुम लोग तो अनजाने-से हो।" वे बोले, "नहीं; बल्कि हम तुम्हारे पास वही चीज़ लेकर आए हैं जिसमें ये लोग शक करते रहे हैं। और हम तुम्हारे पास सत्य लेकर आए हैं, और हम बिलकुल सच्चे हैं। तो तुम रात के किसी हिस्से में अपने घर वालों को लेकर निकल जाओ, और ख़ुद उनके पीछे-पीछे चलो; और तुममें से कोई पीछे मुड़कर न देखे, और वहाँ चले जाओ जहाँ का तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है।" और हमने उसे यह फ़ैसला पहुँचा दिया: कि सुबह होते-होते इन लोगों की जड़ कट जाएगी। और शहर के लोग ख़ुशियाँ मनाते हुए आ पहुँचे। उसने कहा, "ये मेरे मेहमान हैं, तो मुझे शर्मिन्दा न करो। और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, और मुझे रुसवा न करो।" वे बोले, "क्या हमने तुम्हें

दुनिया भर के लोगों को ठहराने से रोका न था?" उसने कहा, "ये मेरी बेटियाँ हैं, अगर तुम्हें कुछ करना ही है।" तुम्हारी जान की क़सम, वे अपने नशे में अंधों की तरह भटक रहे थे—और सूरज निकलते-निकलते उन्हें एक कड़क ने आ पकड़ा। फिर हमने उस शहर को तले-ऊपर कर दिया, और उन पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाए। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो निशान पढ़ लेते हैं। और वह एक ऐसी राह पर है जो अब भी चलती है: निश्चय ही इसमें ईमान वालों के लिए निशानी है। (61–77)

और घने बन के रहने वाले भी ज़ालिम थे, तो हमने उनसे बदला लिया; और ये दोनों एक खुली शाहराह पर हैं। और हिज्र वालों ने भी रसूलों को झुठलाया। और हमने उन्हें अपनी निशानियाँ दीं, मगर वे उनसे मुँह मोड़ते रहे। और वे पहाड़ों को तराशकर घर बनाते थे, बेख़ौफ़ होकर; मगर सुबह होते उन्हें एक कड़क ने आ पकड़ा, और जो कुछ वे कमाते रहे थे वह उनके कुछ काम न आया। (78–84)

और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के बीच है नहीं पैदा किया मगर सत्य के साथ। और वह घड़ी निश्चय ही आने वाली है, तो तुम भले ढंग से दरगुज़र करो। निश्चय ही तुम्हारा रब ही सब कुछ पैदा करने वाला, सब कुछ जानने वाला है। और हमने तुम्हें बार-बार दोहराई जाने वाली आयतों और निशानियों में से सात दी हैं, और अज़मत वाला क़ुरआन। तुम अपनी आँखें उस चीज़ की ओर न पसारो जो हमने उनमें से कुछ गिरोहों को बरतने के लिए दी है, और न उन पर दुखी हो; और ईमान वालों के लिए अपना बाज़ू झुकाए रखो, और कह दो, "मैं तो बस खुला सचेत करने वाला हूँ," जैसे हमने उन पर उतारा था जिन्होंने किताब के हिस्से-बखरे कर लिए, जिन्होंने क़ुरआन को टुकड़े-टुकड़े कर डाला। तो तुम्हारे रब की क़सम, हम उन सबसे ज़रूर पूछेंगे कि वे क्या करते रहे। तो जिस चीज़ का तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है उसे खोलकर सुना दो, और अल्लाह के साथ साझी ठहराने वालों से मुँह फेर लो। मज़ाक़ उड़ाने वालों के मुक़ाबले में तुम्हारे लिए हम ही काफ़ी हैं, जो अल्लाह के साथ दूसरा इलाह ठहराते हैं: तो जल्द ही वे जान लेंगे। और हम ख़ूब जानते हैं कि जो कुछ वे कहते हैं उससे तुम्हारा सीना तंग होता है। तो अपने रब की हम्द के साथ तसबीह करो, और सजदा करने वालों में से रहो, और अपने रब की इबादत करते रहो यहाँ तक कि तुम्हारे पास यक़ीनी चीज़ आ जाए। (85–99)

# 16. शहद की मक्खी (अन-नह्ल)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा, तो उसके लिए जल्दी न मचाओ। वह पाक है! और वह उससे बहुत ऊँचा है जो वे साझी ठहराते हैं। वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है फ़रिश्तों को अपने हुक्म की रूह के साथ उतारता है: "सचेत कर दो कि मेरे सिवा कोई इलाह नहीं, तो मेरे ही प्रति सचेत रहो।" उसने आसमानों और ज़मीन को सत्य के साथ पैदा किया; वह उससे बहुत ऊँचा है जो वे साझी ठहराते हैं। उसने इनसान को एक बूँद से पैदा किया—और देखो, वह खुला झगड़ालू बन बैठा! और चौपाए उसने तुम्हारे लिए पैदा किए: उनमें गर्माहट का सामान है और दूसरे फ़ायदे भी, और उन्हीं में से तुम खाते भी हो। और उनमें तुम्हारे लिए शोभा भी है जब तुम शाम को उन्हें वापस लाते हो और जब उन्हें चराने ले जाते हो। और वे तुम्हारे बोझ ऐसे इलाक़ों तक उठा ले जाते हैं जहाँ तुम जान को हलकान किए बिना पहुँच न सकते थे। निश्चय ही तुम्हारा रब बड़ा मेहरबान, सदा दयावान है। और घोड़े, ख़च्चर और गधे भी, कि तुम उन पर सवार हो और वे शोभा भी हों। और वह ऐसी चीज़ें पैदा करता है जिन्हें तुम नहीं जानते। और सीधी राह बताना अल्लाह ही के ज़िम्मे है, जबकि राहों में कुछ टेढ़ी भी हैं। और अगर वह चाहता, तो तुम सबको राह दिखा देता। (1–9)

वही है जो तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारता है: उसी में से पीने को मिलता है, और उसी से वे पेड़-पौधे उगते हैं जिनमें तुम अपने जानवर चराते हो। उसी से वह तुम्हारे लिए खेती, ज़ैतून, खजूर, अंगूर, और हर तरह के फल उगाता है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो सोच-विचार करते हैं। और उसने रात और दिन को तुम्हारे काम में लगा दिया, और सूरज और चाँद को भी; और तारे भी उसी के हुक्म से काम में लगे हुए हैं। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं। और वह सब जो उसने तुम्हारे लिए ज़मीन में रंग-बिरंगा फैला दिया है: निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो नसीहत पकड़ते हैं। और वही है जिसने समुद्र को काम में लगा दिया, ताकि तुम उसमें से ताज़ा गोश्त खाओ और उसमें से पहनने के ज़ेवर निकालो; और तुम नौकाओं को देखते हो कि उसमें पानी को चीरती हुई चलती हैं, और ताकि तुम उसका अनुग्रह ढूँढो, और शायद शुक्र अदा करो। और उसने ज़मीन में जमे हुए पहाड़ डाल दिए कि वह तुम्हें लेकर डगमगाए नहीं, और नदियाँ और रास्ते, ताकि तुम राह पा सको, और पहचान की निशानियाँ भी; और तारों से भी लोग राह पाते हैं। तो क्या वह जो पैदा करता है, उस जैसा हो सकता है जो पैदा नहीं कर सकता? तो क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते? (10–17)

और अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो उन्हें कभी गिन न सकोगे। निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो। और जिन्हें ये अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे कुछ भी पैदा नहीं करते; बल्कि वे ख़ुद पैदा किए गए हैं: मुर्दा हैं, ज़िन्दा नहीं, और उन्हें ख़बर नहीं कि वे कब उठाए जाएँगे। तुम्हारा इलाह एक ही इलाह है। तो जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते—उनके दिल इनकार में पड़े हैं, और वे घमंड कर रहे हैं। इसमें कोई शक

नहीं कि अल्लाह जानता है जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं: वह घमंड करने वालों को पसन्द नहीं करता। (18–23)

और जब उनसे पूछा जाता है, "तुम्हारे रब ने क्या उतारा है?" तो कहते हैं, "अगलों की कहानियाँ"—ताकि क़ियामत के दिन वे अपने बोझ पूरे-के-पूरे उठाएँ, और उनके बोझों में से भी कुछ जिन्हें वे बिना ज्ञान के भटकाते हैं। सुन लो, कैसा बुरा बोझ है जो वे उठाएँगे! इनसे पहले के लोग भी चालें चल चुके हैं; तो अल्लाह उनकी इमारत पर बुनियादों की ओर से आया, फिर छत ऊपर से उन पर आ गिरी, और यातना उन पर वहाँ से आई जहाँ से उन्हें गुमान तक न था। फिर क़ियामत के दिन वह उन्हें रुसवा करेगा और कहेगा, "कहाँ हैं मेरे वे साझी, जिनके बारे में तुम झगड़ा करते थे?" जिन्हें ज्ञान दिया गया था वे कहेंगे, "आज रुसवाई और बदहाली सत्य के इनकारियों पर है—" वे जिनकी जानें फ़रिश्ते इस हाल में निकालते हैं कि वे अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे होते हैं। तब वे हथियार डाल देंगे: "हम तो कोई बुराई नहीं करते थे।" क्यों नहीं! जो कुछ तुम करते थे अल्लाह उसे ख़ूब जानता है। तो जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, उसमें सदैव रहने के लिए। तो क्या ही बुरा ठिकाना है घमंड करने वालों का! (24–29)

और जब उन लोगों से जो अल्लाह के प्रति सचेत रहे पूछा जाता है, "तुम्हारे रब ने क्या उतारा है?" तो कहते हैं, "भलाई।" जिन लोगों ने इस दुनिया में अच्छा किया उनके लिए भलाई है, और आख़िरत का घर तो कहीं बेहतर है। और क्या ही अच्छा है उन लोगों का घर जो अल्लाह के प्रति सचेत रहे: हमेशा रहने वाली नेमत के बाग़ जिनमें वे दाख़िल होंगे, जिनके नीचे नहरें बहती हैं; वहाँ उनके लिए वह सब होगा जो वे चाहेंगे। इसी तरह अल्लाह उन्हें बदला देता है जो उसके प्रति सचेत रहते हैं, वे जिनकी जानें फ़रिश्ते इस हाल में निकालते हैं कि वे पाक-साफ़ होते हैं, वे कहते हैं, "तुम पर सलाम हो। जन्नत में दाख़िल हो जाओ, उन कामों के बदले जो तुम करते थे।" क्या ये लोग बस इसी की राह देख रहे हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आएँ, या तुम्हारे रब का हुक्म आ जाए? इनसे पहले के लोगों ने भी ऐसा ही किया। और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया; बल्कि वे ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे। तो उनके कर्मों की बुराइयाँ उन पर आ पड़ीं, और वही चीज़ उन्हें घेर बैठी जिसका वे मज़ाक़ उड़ाया करते थे। (30–34)

और अल्लाह के साथ साझी ठहराने वाले कहते हैं, "अगर अल्लाह चाहता, तो हम उसके सिवा किसी चीज़ की इबादत न करते, न हम न हमारे बाप-दादा, और न उसके बिना किसी चीज़ को हराम ठहराते।" इनसे पहले के लोगों ने भी ऐसा ही किया। तो क्या रसूलों पर साफ़-साफ़ सन्देश पहुँचा देने के सिवा और कोई ज़िम्मेदारी है? और हमने हर समुदाय में एक रसूल उठाया कि "अल्लाह की इबादत करो और झूठे इलाहों से बचो।" फिर उनमें से कुछ को अल्लाह ने राह दिखाई, और कुछ पर गुमराही साबित होकर रही। तो ज़मीन में चलो-फिरो और देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम कैसा हुआ। तुम उनके राह पर आ जाने के कितने ही इच्छुक हो, अल्लाह उन्हें राह नहीं दिखाता जिन्हें वह भटकने देता है, और उनका कोई मददगार न होगा। और वे अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाते हैं कि जो मर जाता है अल्लाह उसे न उठाएगा। क्यों नहीं—यह उसके ज़िम्मे एक सच्चा वादा है, मगर अधिकतर लोग जानते नहीं—ताकि वह उनके सामने वह

बात खोल दे जिसमें वे मतभेद करते हैं, और ताकि सत्य के इनकारी जान लें कि वे झूठे थे। जब हम किसी चीज़ का इरादा करते हैं तो उससे हमारा कहना बस यही होता है, "हो जा," और वह हो जाती है। और जिन लोगों ने ज़ुल्म सहने के बाद अल्लाह के लिए हिजरत की—हम उन्हें दुनिया में ज़रूर अच्छा ठिकाना देंगे, और आख़िरत का बदला तो कहीं बड़ा है, काश वे जानते—वे जो सब्र करते हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (35–42)

ऐ नबी, हमने तुमसे पहले भी बस मर्द ही भेजे जिनकी ओर हम वह्य करते थे—तो याददिहानी वालों से पूछ लो अगर तुम नहीं जानते—खुले प्रमाणों और किताबों के साथ। और हमने तुम्हारी ओर यह याददिहानी उतारी है, ताकि तुम लोगों के सामने वह खोलकर बयान कर दो जो उनके लिए उतारा गया है, और ताकि वे सोच-विचार करें। (43–44)

तो क्या वे लोग जो बुरी चालें चलते हैं इससे निश्चिन्त हैं कि अल्लाह उन्हें ज़मीन में धँसा दे, या उन पर वहाँ से यातना आ जाए जहाँ से उन्हें गुमान तक न हो, या वह उन्हें चलते-फिरते पकड़ ले, फिर वे बच न सकें, या वह उन्हें धीरे-धीरे घटाते हुए पकड़ ले? निश्चय ही तुम्हारा रब बड़ा मेहरबान, सदा दयावान है। क्या उन्होंने अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ों को नहीं देखा, कि उनकी परछाइयाँ दाएँ और बाएँ ढलती हैं, पूरी विनम्रता के साथ अल्लाह के आगे सजदा करती हुई? और अल्लाह ही के आगे सजदा करती है हर वह चीज़ जो आसमानों में है और हर वह जानदार जो ज़मीन में है, और फ़रिश्ते भी, और वे घमंड नहीं करते: वे अपने ऊपर अपने रब से डरते हैं, और वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म दिया जाता है। (45–50)

और अल्लाह ने कहा है, "दो इलाह न बनाओ: वह तो बस एक ही इलाह है। तो मुझी से डरो, बस मुझी से।" और जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब उसी का है, और आज्ञापालन हमेशा उसी का हक़ है। तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और के प्रति सचेत रहोगे? और तुम्हारे पास जो भी नेमत है वह अल्लाह ही की ओर से है। फिर जब तुम्हें कोई तकलीफ़ छूती है, तो उसी से फ़रियाद करते हो; फिर जब वह तुमसे तकलीफ़ दूर कर देता है, तो तुममें से एक गिरोह तुरन्त अपने रब के साथ साझी ठहराने लगता है, उसकी नाशुक्री करते हुए जो हमने उन्हें दिया है। तो मज़े कर लो—जल्द ही तुम जान लोगे। (51–55)

और वे उन चीज़ों के लिए, जिन्हें वे जानते तक नहीं, उसमें से एक हिस्सा ठहराते हैं जो हमने उन्हें दिया है। अल्लाह की क़सम, तुमसे उसके बारे में ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम गढ़ते थे। और वे अल्लाह के लिए बेटियाँ ठहराते हैं—वह पाक है!—और अपने लिए वह जो उनका जी चाहे। और जब उनमें से किसी को बेटी की ख़बर दी जाती है, तो उसका चेहरा सियाह पड़ जाता है और वह ग़म को घोंटकर रह जाता है; उस बुरी ख़बर के कारण जो उसे दी गई वह लोगों से छिपता फिरता है: उसे ज़िल्लत के साथ रखे, या मिट्टी में दबा दे? सुन लो, कैसा बुरा फ़ैसला है जो वे करते हैं! जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उन्हीं के लिए बुरी मिसाल है, और अल्लाह के लिए सबसे ऊँची मिसाल है: और वही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। और अगर अल्लाह लोगों को उनके ज़ुल्म पर पकड़ता, तो ज़मीन पर एक भी जानदार न छोड़ता; मगर वह उन्हें एक ठहराई

हुई अवधि तक मुहलत देता है, फिर जब उनकी अवधि आ जाती है तो वे न एक घड़ी पीछे हट सकते हैं, न आगे बढ़ सकते हैं। और वे अल्लाह के लिए वह ठहराते हैं जो ख़ुद उन्हें नापसन्द है, और उनकी ज़बानें यह झूठ बयान करती हैं कि भलाई उन्हीं के लिए है। इसमें कोई शक नहीं कि उनके लिए आग है, और वे उसमें सबसे पहले धकेले जाएँगे। (56–62)

अल्लाह की क़सम, हमने तुमसे पहले भी कितने ही समुदायों की ओर रसूल भेजे, मगर शैतान ने उनके कर्म उनके लिए लुभावने बना दिए; तो आज वही उनका सरपरस्त है, और उनके लिए दुखद यातना है। और हमने तुम पर यह किताब बस इसलिए उतारी है कि तुम उनके सामने वह बात खोल दो जिसमें वे मतभेद करते हैं, और यह उन लोगों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता है जो ईमान रखते हैं। (63–64)

और अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा और उसके द्वारा ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा कर दिया। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो सुनते हैं। और निश्चय ही तुम्हारे लिए चौपायों में भी एक सबक़ है: हम तुम्हें उसमें से जो उनके पेट में है—गोबर और ख़ून के बीच से—ख़ालिस दूध पिलाते हैं, जो पीने वालों के लिए ख़ुशगवार है। और खजूर और अंगूर के फलों से भी तुम नशे की चीज़ और अच्छी रोज़ी बनाते हो। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो बुद्धि से काम लेते हैं। और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी के जी में डाला: “पहाड़ों में, और पेड़ों में, और उन चीज़ों में जो लोग बनाते हैं, अपने लिए घर बना; फिर हर तरह के फलों में से खा, और अपने रब की उन राहों पर चल जो तेरे लिए आसान कर दी गई हैं।” उनके पेट से एक पीने की चीज़ निकलती है जिसके रंग अलग-अलग होते हैं, जिसमें लोगों के लिए शिफ़ा है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो सोच-विचार करते हैं। (65–69)

और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया; फिर वह तुम्हें मौत देगा। और तुममें से कोई उम्र के सबसे निकम्मे हिस्से की ओर लौटा दिया जाता है, ताकि सब कुछ जानने के बाद कुछ भी न जाने। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जानने वाला, सामर्थ्य वाला है। और अल्लाह ने तुममें से कुछ को कुछ पर रोज़ी में बढ़ा दिया है; फिर जिन्हें बढ़ाया गया है वे अपनी रोज़ी अपने ग़ुलामों की ओर फेर देने वाले नहीं, कि वे उसमें बराबर हो जाएँ। तो क्या वे अल्लाह की नेमत का इनकार करते हैं? और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हीं में से जोड़े बनाए, और तुम्हारे जोड़ों से तुम्हें बेटे और पोते दिए, और तुम्हें अच्छी चीज़ों की रोज़ी दी। तो क्या वे बातिल पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमत का इनकार करते हैं? और क्या वे अल्लाह के सिवा उनकी इबादत करते हैं जो उन्हें आसमानों और ज़मीन से कुछ भी रोज़ी देने का अधिकार नहीं रखते, और न कभी रख सकते हैं? तो अल्लाह के लिए मिसालें न गढ़ो। निश्चय ही अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (70–74)

अल्लाह एक मिसाल बयान करता है: एक ग़ुलाम है जो दूसरे की मिल्कियत में है, किसी चीज़ पर बस नहीं रखता, और एक वह आदमी जिसे हमने अपनी ओर से अच्छी रोज़ी दी है, और वह उसमें से छिपे और खुले ख़र्च करता है। क्या ये दोनों बराबर हैं? सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है—मगर उनमें से अधिकतर जानते नहीं। और अल्लाह दो आदमियों की एक और मिसाल बयान करता है, उनमें से एक गूँगा है, किसी चीज़ पर

बस नहीं रखता, और अपने मालिक पर बोझ है—वह उसे जहाँ भी भेजे, कोई भलाई लेकर नहीं आता। क्या वह उसके बराबर है जो न्याय का हुक्म देता है और ख़ुद सीधे मार्ग पर है? और आसमानों और ज़मीन का परोक्ष अल्लाह ही के लिए है। और उस घड़ी का मामला बस ऐसा है जैसे पलक का झपकना, या उससे भी क़रीब: निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेट से इस हाल में निकाला कि तुम कुछ न जानते थे, और तुम्हें कान और आँखें और दिल दिए, ताकि तुम शुक्र अदा करो। क्या उन्होंने परिन्दों को नहीं देखा कि आसमान की फ़िज़ा में थमे हुए हैं? उन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं थामे हुए। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान रखते हैं। और अल्लाह ने तुम्हारे घरों को तुम्हारे लिए सुकून की जगह बनाया, और चौपायों की खालों से तुम्हारे लिए ऐसे ख़ेमे बनाए जिन्हें तुम अपने कूच के दिन और अपने पड़ाव के दिन हलका पाते हो; और उनकी ऊन और रोएँ और बालों से घर का सामान और एक समय तक बरतने की चीज़ें। और अल्लाह ने अपनी पैदा की हुई चीज़ों से तुम्हारे लिए छाया बनाई; और पहाड़ों में तुम्हारे लिए पनाहगाहें बनाईं; और तुम्हारे लिए ऐसे कुर्ते बनाए जो तुम्हें गर्मी से बचाते हैं, और ऐसी ज़िरहें जो तुम्हारी लड़ाइयों में तुम्हें बचाती हैं। इसी तरह वह तुम पर अपनी नेमत पूरी करता है, ताकि तुम उसके आगे समर्पित हो जाओ। फिर अगर वे मुँह मोड़ें, तो ऐ नबी, तुम्हारे ज़िम्मे तो बस साफ़-साफ़ सन्देश पहुँचा देना है। वे अल्लाह की नेमत को पहचानते हैं, फिर उसका इनकार करते हैं: और उनमें से अधिकतर नाशुक्रे हैं। (75–83)

और जिस दिन हम हर समुदाय में से एक गवाह उठाएँगे, फिर सत्य के इनकारियों को न उज़्र पेश करने की इजाज़त दी जाएगी, और न उनसे मनाने की माँग की जाएगी। और जब ज़ुल्म करने वाले यातना को देख लेंगे, तो न वह उनसे हलकी की जाएगी, और न उन्हें मुहलत दी जाएगी। और जब अल्लाह के साथ साझी ठहराने वाले अपने ठहराए हुए साझियों को देखेंगे, तो कहेंगे, "ऐ हमारे रब, ये हैं हमारे वे साझी, जिन्हें हम तेरे सिवा पुकारा करते थे।" मगर वे यह बात उन्हीं पर दे मारेंगे, "तुम बिलकुल झूठे हो!" और उस दिन वे अल्लाह के आगे हथियार डाल देंगे, और जो कुछ वे गढ़ा करते थे वह सब उनसे गुम हो जाएगा। जिन लोगों ने सत्य का इनकार किया और दूसरों को अल्लाह की राह से रोका—हम उनकी यातना पर और यातना बढ़ा देंगे, उस बिगाड़ के बदले जो वे फैलाते थे। (84–88)

और जिस दिन हम हर समुदाय में ख़ुद उन्हीं में से उन पर एक गवाह उठाएँगे, और ऐ नबी, तुम्हें इन लोगों पर गवाह बनाकर लाएँगे। और हमने तुम पर यह किताब उतारी है, हर चीज़ का खुला बयान, और उन लोगों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता और शुभ-सूचना जो अल्लाह के आगे समर्पित हैं। (89)

निश्चय ही अल्लाह न्याय का, भलाई करने का, और रिश्तेदारों को देने का हुक्म देता है; और अश्लीलता, बुराई और ज़्यादती से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम नसीहत पकड़ो। और अल्लाह के अह्द को पूरा करो जब तुम अह्द कर लो, और क़समों को पक्का करने के बाद न तोड़ो जबकि तुम अल्लाह को अपने ऊपर ज़ामिन बना चुके हो: निश्चय ही अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। और उस औरत की तरह न हो जाना जिसने अपना सूत मज़बूत कातने के बाद उधेड़कर तार-तार कर डाला, कि तुम अपनी

क़समों को आपस में धोखे का ज़रिया बनाने लगो, इसलिए कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ा हुआ है। अल्लाह तो बस इसके द्वारा तुम्हें आज़मा रहा है; और क़ियामत के दिन वह तुम्हारे सामने वह बात ज़रूर खोल देगा जिसमें तुम मतभेद करते थे। (90–92)

और अगर अल्लाह चाहता, तो तुम्हें एक ही समुदाय बना देता; मगर वह जिसे चाहता है भटकने देता है, और जिसे चाहता है राह दिखाता है; और तुमसे उसके बारे में ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम करते थे। और अपनी क़समों को आपस में धोखे का ज़रिया न बनाओ, कि कोई क़दम जम जाने के बाद फिसल जाए, और तुम इस कारण बुराई का मज़ा चखो कि तुमने दूसरों को अल्लाह की राह से रोका, और तुम्हारे लिए बड़ी यातना हो। और अल्लाह के अह्द को थोड़े-से दाम पर न बेचो: जो कुछ अल्लाह के पास है वही तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानो। जो कुछ तुम्हारे पास है वह ख़त्म हो जाएगा, और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बाक़ी रहने वाला है। और जिन्होंने सब्र किया हम उन्हें उनका बदला उनके सबसे अच्छे कामों के अनुसार ज़रूर देंगे। जो कोई अच्छा कर्म करे, मर्द हो या औरत, और वह ईमान वाला हो—हम उसे ज़रूर अच्छी ज़िन्दगी देंगे, और हम उन्हें उनका बदला उनके सबसे अच्छे कामों के अनुसार ज़रूर देंगे। (93–97)

तो जब तुम क़ुरआन पढ़ो, तो धुत्कारे हुए शैतान से अल्लाह की पनाह माँग लिया करो: उसका उन लोगों पर कोई ज़ोर नहीं जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं; उसका ज़ोर तो बस उन्हीं पर है जो उसे अपना सरपरस्त बनाते हैं और जो अल्लाह के साथ साझी ठहराते हैं। और जब हम एक आयत की जगह दूसरी आयत बदलकर लाते हैं—और अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ वह उतारता है—तो वे कहते हैं, "तुम तो बस गढ़ने वाले हो!" नहीं: बल्कि उनमें से अधिकतर जानते नहीं। कह दो, "इसे रूहुल-क़ुदुस ने तुम्हारे रब की ओर से सत्य के साथ उतारा है, ताकि ईमान लाने वालों को जमाए रखे, और यह अल्लाह के आगे समर्पित लोगों के लिए मार्गदर्शन और शुभ-सूचना है।" और हम ख़ूब जानते हैं कि वे कहते हैं, "इसे तो बस एक इनसान सिखाता है।" जिसकी ओर वे इशारा करते हैं उसकी ज़बान अजमी है, जबकि यह साफ़ अरबी ज़बान है। जो लोग अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते—अल्लाह उन्हें राह नहीं दिखाता, और उनके लिए दुखद यातना है। झूठ तो बस वही लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते; और वही झूठे हैं। जो कोई ईमान लाने के बाद अल्लाह का इनकार करे—सिवाय उसके जिसे मजबूर किया गया हो, जबकि उसका दिल ईमान पर जमा हुआ हो—मगर जो कोई इनकार के लिए अपना सीना खोल दे, तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़ज़ब है, और उनके लिए बड़ी यातना है। यह इसलिए कि उन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत के मुक़ाबले में पसन्द किया, और इसलिए कि अल्लाह सत्य का इनकार करने वाले लोगों को राह नहीं दिखाता। यही हैं जिनके दिलों, कानों और आँखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी; और यही बेपरवाह हैं। इसमें कोई शक नहीं कि आख़िरत में यही घाटे में होंगे। फिर जिन लोगों ने सताए जाने के बाद हिजरत की, फिर जिहाद किया और सब्र से काम लिया—तो तुम्हारा रब, इस सबके बाद, निश्चय ही बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। जिस दिन हर जान अपनी ही ओर से झगड़ती हुई आएगी, और हर जान को उसके किए का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा, और उन पर ज़ुल्म न होगा। और अल्लाह एक मिसाल बयान करता है:

एक बस्ती थी जो अमन और इत्मीनान से थी, उसकी रोज़ी हर ओर से भरपूर चली आती थी; फिर उसने अल्लाह की नेमतों की नाशुक्री की, तो अल्लाह ने उनकी करतूतों के कारण उसे भूख और डर का लिबास चखाया। और उनके पास उन्हीं में से एक रसूल आया, मगर उन्होंने उसे झुठला दिया, तो यातना ने उन्हें इस हाल में आ पकड़ा कि वे ज़ुल्म कर रहे थे। (98–113)

तो जो हलाल और पाक चीज़ें अल्लाह ने तुम्हें दी हैं उनमें से खाओ, और अल्लाह की नेमत का शुक्र अदा करो, अगर तुम उसी की इबादत करते हो। उसने तो तुम पर बस मुर्दार, ख़ून, सूअर का गोश्त, और वह चीज़ हराम की है जो अल्लाह के सिवा किसी और के नाम की गई हो। फिर जो कोई मजबूर हो जाए, न चाह रखता हो न हद से बढ़े—तो अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। और अपनी ज़बानों के बयान किए हुए झूठ की ख़ातिर यह न कहो, "यह हलाल है और यह हराम," कि अल्लाह पर झूठ गढ़ो: जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं वे फलते-फूलते नहीं—थोड़ा-सा मज़ा है, और फिर उनके लिए दुखद यातना। और जो लोग यहूदी हुए उन पर हमने वही चीज़ें हराम कीं जो हम तुम्हें इससे पहले बता चुके हैं। और हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया; बल्कि वे ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे। फिर जिन लोगों ने नादानी में बुराई की और उसके बाद तौबा कर ली और सुधर गए—तो तुम्हारा रब, इस सबके बाद, निश्चय ही बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (114–119)

निश्चय ही इबराहीम अपने आप में एक पूरा समुदाय था, अल्लाह का आज्ञाकारी, एकनिष्ठ, और वह अल्लाह के साथ साझी ठहराने वालों में से न था: उसकी नेमतों का शुक्र अदा करने वाला। अल्लाह ने उसे चुन लिया और उसे सीधे मार्ग की राह दिखाई। और हमने उसे दुनिया में भलाई दी, और आख़िरत में वह निश्चय ही नेक लोगों में से होगा। फिर ऐ नबी, हमने तुम्हारी ओर वह्य की, "इबराहीम के पंथ पर चलो, जो एकनिष्ठ था; और वह अल्लाह के साथ साझी ठहराने वालों में से न था।" सब्त तो बस उन्हीं लोगों पर ठहराया गया था जिन्होंने उसके बारे में मतभेद किया; और तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उनके बीच उस बात का ज़रूर फ़ैसला कर देगा जिसमें वे मतभेद करते थे। (120–124)

अपने रब की राह की ओर हिकमत और अच्छी नसीहत के साथ बुलाओ, और उनसे उस ढंग से बहस करो जो सबसे अच्छा हो। तुम्हारा रब उसे ख़ूब जानता है जो उसकी राह से भटक गया, और वह उन्हें भी ख़ूब जानता है जो राह पर हैं। और अगर तुम बदला लो, तो बस उतना ही लो जितनी तुम्हें तकलीफ़ पहुँचाई गई; मगर अगर तुम सब्र करो, तो निश्चय ही सब्र करने वालों के लिए यही सबसे अच्छा है। और सब्र करो—और तुम्हारा सब्र अल्लाह ही की मदद से है—और उन पर दुखी न हो, और न उनकी चालों से तंगदिल हो: निश्चय ही अल्लाह उनके साथ है जो उसके प्रति सचेत रहते हैं और जो अच्छा करने वाले हैं। (125–128)

# 17. रात का सफ़र (अल-इसरा)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

पाक है वह जो अपने बन्दे को रातों-रात मसजिदे-हराम से उस दूर की मसजिद तक ले गया, जिसके आस-पास को हमने बरकत दी है, ताकि उसे अपनी कुछ निशानियाँ दिखाए। निश्चय ही वही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है। और हमने मूसा को किताब दी और उसे इसराईल की सन्तान के लिए मार्गदर्शन बनाया: "मेरे सिवा किसी को कारसाज़ न बनाना, ऐ उन लोगों की औलाद जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था! निश्चय ही वह एक शुक्रगुज़ार बन्दा था।" (1–3)

और हमने किताब में इसराईल की सन्तान के लिए यह फ़ैसला सुना दिया था: "तुम ज़मीन में दो बार बिगाड़ फैलाओगे, और बड़ी सरकशी दिखाओगे।" फिर जब उन दोनों में से पहले वादे का समय आया, तो हमने तुम पर अपने ऐसे बन्दे भेजे जो बड़े ज़ोरावर थे, तो वे तुम्हारे घरों में घुसकर फैल गए; और यह एक वादा था जो पूरा होकर रहा। फिर हमने उनके मुक़ाबले में तुम्हारी बारी लौटा दी, और माल और बेटों से तुम्हारी मदद की, और तुम्हें गिनती में बढ़ा दिया। हमने कहा, "अगर तुम भलाई करोगे, तो अपने ही लिए भलाई करोगे; और अगर बुराई करोगे, तो वह भी अपने ही लिए।" फिर जब दूसरे वादे का समय आया, तो हमने दूसरों को भेजा कि वे तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें, और उस इबादतगाह में घुस जाएँ जैसे वे पहली बार उसमें घुसे थे, और जिस चीज़ पर उनका हाथ पड़े उसे पूरी तरह तबाह कर डालें। हो सकता है कि तुम्हारा रब तुम पर दया करे; मगर अगर तुम फिर वही करोगे, तो हम भी फिर वही करेंगे। और हमने जहन्नम को सत्य के इनकारियों के लिए क़ैदख़ाना बना दिया है। (4–8)

निश्चय ही यह क़ुरआन उस राह की ओर ले जाता है जो सबसे सीधी है, और उन ईमान वालों को जो अच्छे कर्म करते हैं शुभ-सूचना देता है कि उनके लिए बड़ा बदला है, और यह कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके लिए हमने दुखद यातना तैयार कर रखी है। और इनसान बुराई की दुआ उसी तरह माँगता है जिस तरह भलाई की दुआ माँगता है: और इनसान बड़ा ही जल्दबाज़ है। और हमने रात और दिन को दो निशानियाँ बनाया। फिर हमने रात की निशानी को धुँधला कर दिया और दिन की निशानी को रौशन बनाया, ताकि तुम अपने रब का अनुग्रह ढूँढो, और ताकि वर्षों की गिनती और समय का हिसाब जान लो। और हर चीज़ हमने खोल-खोलकर बयान कर दी है। और हर इनसान का नसीब हमने उसकी अपनी गर्दन में बाँध दिया है, और क़ियामत के दिन हम उसके लिए एक लिखा हुआ निकालेंगे जिसे वह खुला हुआ पाएगा: "पढ़ ले अपना आमालनामा। आज अपना हिसाब लेने के लिए तू ख़ुद ही काफ़ी है।" (9–14)

जो राह पर आया वह अपने ही भले के लिए राह पर आया, और जो भटका वह अपने ही नुक़सान के लिए भटका। और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, और हम कभी यातना नहीं देते जब तक एक रसूल न भेज दें। और जब हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं, तो उसके ऐश में पड़े

हुए लोगों को हुक्म देते हैं, फिर वे उसमें नाफ़रमानियाँ करते हैं; तब उस पर बात साबित हो जाती है, और हम उसे पूरी तरह तबाह कर डालते हैं। और नूह के बाद हमने कितनी ही नस्लें हलाक कर दीं! और तुम्हारा रब अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने और उन्हें देखने के लिए काफ़ी है। जो कोई इस जल्द मिलने वाली दुनिया को चाहता है—हम उसे इसी में जल्द दे देते हैं जो कुछ हम चाहें, जिसके लिए चाहें; फिर हम उसके लिए जहन्नम ठहरा देते हैं, जिसमें वह जलेगा, बुरे हाल में, ठुकराया हुआ। और जो कोई आख़िरत चाहे और उसके लिए वैसी कोशिश करे जैसी उसके लिए करनी चाहिए, और वह ईमान वाला हो—तो ऐसे ही लोग हैं जिनकी कोशिश की क़द्र की जाएगी। हर एक को—इनको भी और उनको भी—हम तुम्हारे रब की देन में से मदद पहुँचाते हैं, और तुम्हारे रब की देन किसी से रोकी हुई नहीं। देखो, हमने उनमें से कुछ को कुछ पर कैसे बढ़ा रखा है; और आख़िरत तो दर्जों में भी कहीं बड़ी है और श्रेष्ठता में भी कहीं बड़ी। (15–21)

अल्लाह के साथ कोई दूसरा इलाह न ठहराओ, वरना बुरे हाल में, बेसहारा होकर बैठे रह जाओगे। और तुम्हारे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो, और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो। अगर उनमें से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएँ, तो उन्हें "उफ़" तक न कहो, और न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे आदर की बात कहो, और उनके आगे दयालुता के साथ विनम्रता का बाज़ू झुकाए रखो, और कहो, "ऐ मेरे रब, इन दोनों पर दया कर, जैसे इन्होंने मुझे बचपन में पाला था।" जो कुछ तुम्हारे दिलों में है तुम्हारा रब उसे ख़ूब जानता है। अगर तुम नेक बनकर रहो, तो वह निश्चय ही उन लोगों के लिए बड़ा क्षमाशील है जो बार-बार उसकी ओर पलटते हैं। और रिश्तेदार को उसका हक़ दो, और मुहताज को, और मुसाफ़िर को, और फ़ुज़ूल न उड़ाओ: निश्चय ही फ़ुज़ूल उड़ाने वाले शैतानों के भाई हैं, और शैतान अपने रब का बड़ा ही नाशुक्रा है। और अगर तुम्हें उनसे मुँह फेरना ही पड़े, अपने रब की उस दयालुता की खोज में जिसकी तुम्हें आस हो, तो उनसे नर्म बात कह दो। और न अपना हाथ गर्दन से बाँध रखो, और न उसे पूरा-का-पूरा खोल दो, कि मलामत का मारा, ख़ाली हाथ बैठ रहो। निश्चय ही तुम्हारा रब जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और नपी-तुली भी देता है; निश्चय ही वह अपने बन्दों की ख़बर रखता और उन्हें देखता है। (22–30)

और ग़रीबी के डर से अपनी औलाद को क़त्ल न करो: हम उन्हें भी रोज़ी देते हैं और तुम्हें भी। निश्चय ही उनका क़त्ल बहुत बड़ा गुनाह है। और ज़िना के क़रीब न फटको: निश्चय ही वह अश्लीलता है, और बुरी राह। और किसी जान को, जिसे अल्लाह ने आदरणीय ठहराया है, क़त्ल न करो मगर हक़ के साथ। और जो कोई नाहक़ मारा जाए, तो हमने उसके वारिस को अधिकार दिया है; मगर वह क़त्ल में हद से न बढ़े, क्योंकि उसकी मदद की जा चुकी है। और यतीम के माल के पास न जाओ, मगर उस ढंग से जो सबसे अच्छा हो, यहाँ तक कि वह अपनी पुख़्ता उम्र को पहुँच जाए। और अह्द को पूरा करो: निश्चय ही अह्द के बारे में पूछा जाएगा। और जब नापो तो नाप पूरी भरो, और सीधी तराज़ू से तौलो: यही बेहतर है, और अंजाम के लिहाज़ से भी सबसे अच्छा। और उस चीज़ के पीछे न पड़ो जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं: निश्चय ही कान, आँख और दिल—इनमें से हर एक के बारे में पूछा जाएगा। और ज़मीन में अकड़कर न चलो: तुम न ज़मीन को फाड़

सकते हो, न पहाड़ों की ऊँचाई को पहुँच सकते हो। इन सबकी बुराई तुम्हारे रब के नज़दीक नापसन्द है। (31–38)

ऐ नबी, यह उस हिकमत में से है जो तुम्हारे रब ने तुम्हारी ओर वह्य की है। और अल्लाह के साथ कोई दूसरा इलाह न ठहराओ, वरना मलामत का मारा, ठुकराया हुआ जहन्नम में डाल दिए जाओगे। तो क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें तो बेटों के लिए चुन लिया और अपने लिए फ़रिश्तों में से बेटियाँ बना लीं? निश्चय ही तुम बड़ी भारी बात कहते हो! (39–40)

और हमने इस क़ुरआन में तरह-तरह से बात बयान की है ताकि वे नसीहत पकड़ें, मगर इससे उनकी बेज़ारी ही बढ़ती है। कह दो, ⸢ऐ नबी,⸣ "अगर उसके साथ और भी इलाह होते—जैसा कि ये कहते हैं—तो वे अर्श के मालिक ⸢को चुनौती देने⸣ की कोई राह ज़रूर ढूँढ निकालते।" वह पाक है! और वह उन बातों से बहुत ऊँचा है जो ये कहते हैं—बेहद ऊँचा! सातों आसमान और ज़मीन और जो कोई उनमें है सब उसकी तसबीह करते हैं। और कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी हम्द के साथ उसकी तसबीह न करती हो, मगर तुम उनकी तसबीह को समझते नहीं। निश्चय ही वह सहनशील, बड़ा क्षमाशील है।[19] (41–44)

और जब तुम क़ुरआन पढ़ते हो, तो हम तुम्हारे और उन लोगों के बीच जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते एक छिपा हुआ परदा डाल देते हैं, और हम उनके दिलों पर ग़िलाफ़ चढ़ा देते हैं, कि वे उसे न समझें, और उनके कानों में बोझ। और जब तुम क़ुरआन में अकेले अपने रब का ज़िक्र करते हो, तो वे नफ़रत से पीठ फेरकर चल देते हैं। हम ख़ूब जानते हैं कि जब वे तुम्हारी ओर कान लगाते हैं तो किस ग़रज़ से सुनते हैं, और जब वे कानाफूसी करते हैं, जब ये ज़ालिम कहते हैं, "तुम तो बस एक जादू के मारे हुए आदमी के पीछे चल रहे हो।" देखो, वे तुम्हारे लिए कैसी-कैसी मिसालें गढ़ते हैं! तो वे भटक गए और कोई राह नहीं पा सकते। और वे कहते हैं, "क्या जब हम हड्डियाँ और चूरा हो जाएँगे, तो क्या हम सचमुच नए सिरे से पैदा करके उठाए जाएँगे?" कह दो, "तुम पत्थर हो जाओ या लोहा, या कोई और पैदा की हुई चीज़ जो तुम्हारे ख़याल में इससे भी ज़्यादा कठिन हो।" फिर वे कहेंगे, "हमें कौन लौटाएगा?" कह दो, "वही जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया।" फिर वे तुम्हारे आगे सिर हिला-हिलाकर कहेंगे, "यह कब होगा?" कह दो, "हो सकता है कि वह क़रीब ही हो—जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तो तुम उसकी हम्द करते हुए उसकी पुकार पर चले आओगे, और समझोगे कि तुम बस थोड़ी ही देर ठहरे थे।" (45–52)

और मेरे बन्दों से कह दो कि वही बात कहें जो सबसे अच्छी हो। निश्चय ही शैतान उनके बीच फूट डालता है; निश्चय ही शैतान इनसान का खुला दुश्मन है। तुम्हारा रब तुम्हें ख़ूब जानता है। अगर वह चाहे तो तुम पर

[19] हमारे ब्रह्मांड की व्यवस्था एकेश्वरवाद की, यानी केवल एक ईश्वरीय इरादे की, गवाही देती है।
ईश्वरीय एकता की बनावट: क़ुरआनी एकेश्वरवाद की एक वैज्ञानिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस
ईश्वरीय एकता, ब्रह्मांडीय व्यवस्था और सृष्टि का व्याकरण: क़ुरआन 21:22, 23:91 और 17:41–44 की एक वैज्ञानिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस

दया करे, और अगर चाहे तो तुम्हें यातना दे। और ऐ नबी, हमने तुम्हें उन पर ज़िम्मेदार बनाकर नहीं भेजा। और तुम्हारा रब उन सबको ख़ूब जानता है जो आसमानों और ज़मीन में हैं। और हमने कुछ नबियों को कुछ पर श्रेष्ठता दी, और हमने दाऊद को ज़बूर दी। कह दो, "पुकार देखो उन्हें जिन्हें तुम उसके सिवा इलाह समझते हो: वे न तुमसे तकलीफ़ दूर करने का अधिकार रखते हैं, न उसे बदलने का।" जिन्हें ये पुकारते हैं वे तो ख़ुद अपने रब तक पहुँचने का ज़रिया ढूँढते हैं—कि उनमें कौन सबसे क़रीब हो—और उसकी दयालुता की आस रखते हैं और उसकी यातना से डरते हैं। निश्चय ही तुम्हारे रब की यातना डरने ही की चीज़ है। और कोई बस्ती ऐसी नहीं जिसे हम क़ियामत के दिन से पहले हलाक न कर दें, या कठोर यातना न दें; यह किताब में लिखा हुआ है। (53–58)

और हमें निशानियाँ भेजने से बस इसी बात ने रोका कि अगले लोग उन्हें झुठला चुके हैं। और हमने समूद को ऊँटनी आँखें खोल देने वाली निशानी के रूप में दी, तो उन्होंने उसके साथ ज़ुल्म किया। और हम निशानियाँ बस डराने ही के लिए भेजते हैं। और ऐ नबी, जब हमने तुमसे कहा कि तुम्हारा रब सब लोगों को घेरे हुए है। और जो दृश्य हमने तुम्हें दिखाया उसे हमने लोगों के लिए बस एक आज़माइश बनाया, और उस पेड़ को भी जिस पर क़ुरआन में लानत की गई है। और हम उन्हें डराते हैं, मगर इससे उनकी बड़ी भारी सरकशी ही बढ़ती है। (59–60)

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा, "आदम के आगे सजदा करो," तो उन्होंने सजदा किया—सिवाय इबलीस के। वह बोला, "क्या मैं उसे सजदा करूँ जिसे तूने मिट्टी से पैदा किया?" उसने कहा, "भला देख तो, यह जिसे तूने मुझ पर इज़्ज़त दी है? अगर तूने मुझे क़ियामत के दिन तक मुहलत दे दी, तो मैं उसकी औलाद को ज़रूर अपने क़ाबू में कर लूँगा, थोड़े-से लोगों के सिवा।" उसने कहा, "जा! उनमें से जो कोई तेरे पीछे चलेगा—तो जहन्नम तुम सबका बदला है, भरपूर बदला। और उनमें से जिस पर तेरा बस चले उसे अपनी आवाज़ से बहका ले, उन पर अपने सवार और अपने प्यादे चढ़ा ला, माल और औलाद में उनका साझी बन जा, और उनसे वादे कर"—और शैतान उनसे धोखे के सिवा कोई वादा नहीं करता। "रहे मेरे बन्दे, तो उन पर तेरा कोई ज़ोर न चलेगा; और तुम्हारा रब कारसाज़ के तौर पर काफ़ी है।" (61–65)

तुम्हारा रब वह है जो तुम्हारे लिए समुद्र में नौकाएँ चलाता है, ताकि तुम उसका अनुग्रह ढूँढो। निश्चय ही वह तुम पर सदा दयावान है। और जब समुद्र में तुम्हें तकलीफ़ छूती है, तो वे सब गुम हो जाते हैं जिन्हें तुम पुकारते हो, सिवाय उसके; फिर जब वह तुम्हें बचाकर ख़ुश्की पर ले आता है, तो तुम मुँह फेर लेते हो। और इनसान बड़ा ही नाशुक्रा है। तो क्या तुम इससे निश्चिन्त हो कि वह तुम्हें ख़ुश्की ही की ओर धँसा दे, या तुम पर पत्थर बरसाने वाली आँधी भेज दे? फिर तुम अपने लिए कोई कारसाज़ न पाओगे। या तुम इससे निश्चिन्त हो कि वह तुम्हें दोबारा समुद्र में ले जाए, और तुम पर तोड़-फोड़ कर देने वाली आँधी भेज दे और तुम्हारी नाशुक्री के बदले तुम्हें डुबो दे? फिर तुम अपने लिए कोई ऐसा न पाओगे जो इस पर हमसे पूछ-ताछ करे। और निश्चय ही हमने आदम की सन्तान को इज़्ज़त दी; और उन्हें ख़ुश्की और समुद्र में सवार किया, और उन्हें अच्छी चीज़ों की रोज़ी दी, और अपनी बहुत-सी मख़लूक़ पर उन्हें बड़ी श्रेष्ठता दी। (66–70)

जिस दिन हम हर गिरोह को उसके पेशवा के साथ बुलाएँगे, तो जिसे उसका आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दिया गया—ऐसे लोग अपना आमालनामा पढ़ेंगे, और उन पर खजूर की गुठली के धागे के बराबर भी ज़ुल्म न होगा। और जो इस ज़िन्दगी में अंधा रहा वह आख़िरत में भी अंधा होगा, और राह से और ज़्यादा भटका हुआ। और वे क़रीब थे कि तुम्हें बहकाकर उस चीज़ से हटा दें जो हमने तुम्हारी ओर वह्य की है, ताकि तुम हम पर उसके सिवा कुछ और गढ़ लो; और तब वे तुम्हें ज़रूर दोस्त बना लेते। और अगर हमने तुम्हें जमाए न रखा होता, तो तुम उनकी ओर कुछ थोड़ा-सा झुक ही जाते; तब हम तुम्हें ज़िन्दगी में भी दोहरी यातना चखाते और मौत में भी दोहरी, फिर तुम हमारे मुक़ाबले में अपना कोई मददगार न पाते। और वे क़रीब थे कि तुम्हें इस ज़मीन से उखाड़ दें, ताकि तुम्हें यहाँ से निकाल बाहर करें; मगर तब वे भी तुम्हारे बाद थोड़ी ही देर ठहर पाते—यही हमारी रीत रही है उन रसूलों के बारे में जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा। और तुम हमारी रीत में कोई बदलाव न पाओगे। (71–77)

सूरज के ढलने से रात के अँधेरे तक नमाज़ क़ायम रखो, और फ़ज्र का क़ुरआन पढ़ना भी: निश्चय ही फ़ज्र का क़ुरआन पढ़ना हाज़िरी का समय है। और रात के कुछ हिस्से में इसके साथ नींद से उठो, यह तुम्हारे लिए एक अतिरिक्त भेंट है; हो सकता है कि तुम्हारा रब तुम्हें एक प्रशंसित मक़ाम पर खड़ा करे। और कहो, "ऐ मेरे रब, मुझे सच्चाई के साथ दाख़िल कर और सच्चाई के साथ निकाल, और अपने पास से मुझे एक मददगार शक्ति दे।" और कह दो, "सत्य आ गया और बातिल मिट गया: निश्चय ही बातिल तो मिटने ही वाला है।" (78–81)

और हम क़ुरआन में वह उतारते हैं जो ईमान वालों के लिए शिफ़ा और दयालुता है, मगर ज़ालिमों के लिए यह घाटे के सिवा कुछ नहीं बढ़ाता। और जब हम इनसान पर नेमत करते हैं, तो वह मुँह फेर लेता और पहलू बचाकर दूर हो जाता है; और जब उसे बुराई छूती है, तो निराश हो जाता है। कह दो, "हर एक अपने ढंग पर काम कर रहा है, और तुम्हारा रब उसे ख़ूब जानता है जो सबसे सीधी राह पर है।" (82–84)

ऐ नबी, वे तुमसे रूह के बारे में पूछते हैं। कह दो, "रूह मेरे रब के हुक्म से है, और तुम्हें तो बस थोड़ा-सा ज्ञान दिया गया है।" और अगर हम चाहें, तो वह सब ज़रूर छीन लें जो हमने तुम्हारी ओर वह्य किया है; फिर तुम हमारे मुक़ाबले में अपने लिए कोई हिमायती न पाओ—सिवाय इसके कि तुम्हारे रब की दयालुता हो। निश्चय ही तुम पर उसका अनुग्रह बहुत बड़ा है। कह दो, "अगर सारे इनसान और जिन्न इस बात पर इकट्ठे हो जाएँ कि इस क़ुरआन जैसा ले आएँ, तो इस जैसा न ला सकेंगे, चाहे वे एक-दूसरे के मददगार ही क्यों न हों।" और हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर तरह की मिसाल तरह-तरह से बयान की है, फिर भी अधिकतर लोग इनकार के सिवा हर चीज़ से इनकार ही करते रहे। और वे कहते हैं, "हम तुम्हारी बात हरगिज़ न मानेंगे जब तक तुम हमारे लिए ज़मीन से एक सोता न जारी कर दो, या तुम्हारे पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, और तुम उसके बीच ख़ूब नहरें बहा दो, या आसमान को टुकड़े-टुकड़े करके हम पर गिरा दो, जैसा कि तुम्हारा दावा है, या अल्लाह और फ़रिश्तों को हमारे रू-ब-रू ले आओ, या तुम्हारे लिए सोने का एक घर हो, या तुम आसमान में चढ़ जाओ—और हम तुम्हारे चढ़ने को भी न मानेंगे जब तक

तुम हम पर एक किताब न उतार लाओ जिसे हम पढ़ें।" कह दो, "पाक है मेरा रब! क्या मैं एक इनसान, एक रसूल के सिवा कुछ और हूँ?" और जब लोगों के पास मार्गदर्शन आया तो उन्हें ईमान लाने से बस इसी बात ने रोका कि उन्होंने कहा, "क्या अल्लाह ने एक इनसान को रसूल बनाकर भेजा है?" कह दो, "अगर ज़मीन में फ़रिश्ते इत्मीनान से चलते-फिरते होते, तो हम उन पर आसमान से किसी फ़रिश्ते ही को रसूल बनाकर उतारते।" कह दो, "मेरे और तुम्हारे बीच गवाह के तौर पर अल्लाह काफ़ी है: निश्चय ही वह अपने बन्दों की ख़बर रखता और उन्हें देखता है।" (85–96)

और जिसे अल्लाह राह दिखाए वही राह पाने वाला है, और जिसे वह भटकने दे—तो तुम उसके सिवा उनके लिए कोई संरक्षक न पाओगे। और हम उन्हें क़ियामत के दिन उनके मुँह के बल इकट्ठा करेंगे, अंधे, गूँगे और बहरे। उनका ठिकाना जहन्नम है: जब भी वह धीमी पड़ने लगेगी, हम उनके लिए उसे और भड़का देंगे। यह उनका बदला है, इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया और कहा, "क्या जब हम हड्डियाँ और चूरा हो जाएँगे, तो क्या हम सचमुच नए सिरे से पैदा करके उठाए जाएँगे?" क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह, जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, इसकी सामर्थ्य रखता है कि उन जैसे पैदा कर दे? और उसने उनके लिए एक अवधि ठहरा रखी है जिसमें कोई सन्देह नहीं, फिर भी ज़ालिम इनकार के सिवा हर चीज़ से इनकार ही करते रहे। कह दो, "अगर मेरे रब की दयालुता के ख़ज़ाने तुम्हारे हाथ में होते, तो तुम ख़र्च हो जाने के डर से उन्हें रोक रखते; और इनसान बड़ा ही तंगदिल है।" (97–100)

और हमने मूसा को नौ खुली निशानियाँ दीं—तो इसराईल की सन्तान से पूछ लो। जब वह उनके पास आया, तो फ़िरऔन ने उससे कहा, "ऐ मूसा, मैं तो तुम्हें जादू का मारा हुआ समझता हूँ!" उसने कहा, "तू ख़ूब जानता है कि इन्हें आसमानों और ज़मीन के रब के सिवा किसी ने नहीं उतारा, आँखें खोल देने वाली दलीलें बनाकर; और ऐ फ़िरऔन, मैं तो तुझे हलाक होने वाला समझता हूँ।" फिर उसने चाहा कि उन्हें उस ज़मीन से उखाड़ फेंके, मगर हमने उसे और जो उसके साथ थे सबको डुबो दिया। और उसके बाद हमने इसराईल की सन्तान से कहा, "इस ज़मीन में बसो; फिर जब आख़िरत का वादा आ जाएगा, तो हम तुम सबको समेटकर ले आएँगे।" (101–104)

और सत्य ही के साथ हमने इसे उतारा, और सत्य ही के साथ यह उतरा। और हमने तुम्हें बस शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा है। और यह क़ुरआन है जिसे हमने हिस्सों में बाँटा है, ताकि तुम इसे लोगों को ठहर-ठहरकर सुनाओ; और हमने इसे थोड़ा-थोड़ा करके उतारा है। कह दो, "तुम इस पर ईमान लाओ या न लाओ।" जिन्हें इससे पहले ज्ञान दिया गया था, जब यह उन्हें सुनाया जाता है तो वे ठोड़ियों के बल सजदे में गिर पड़ते हैं, और कहते हैं, "पाक है हमारा रब! निश्चय ही हमारे रब का वादा पूरा होकर रहा।" और वे रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं, और यह उनकी आजिज़ी और बढ़ा देता है। कह दो, "अल्लाह कहकर पुकारो, या रहमान कहकर पुकारो: जिस नाम से भी पुकारो, सबसे अच्छे नाम उसी के हैं।" और अपनी नमाज़ में न आवाज़ बहुत ऊँची करो, न बिलकुल धीमी, बल्कि इनके बीच की राह अपनाओ। और कहो, "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने न कोई बेटा बनाया, न बादशाही में उसका

कोई साझी है, और न कमज़ोरी के कारण उसे किसी मददगार की ज़रूरत है।" और उसकी बड़ाई बयान करो, ख़ूब बड़ाई। (105–111)

# 18. गुफा (अल-कह्फ़)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने अपने बन्दे पर यह किताब उतारी और इसमें कोई टेढ़ न रखी—बिलकुल सीधी, ताकि वह अपनी ओर की कठोर यातना से सचेत करे, और उन ईमान वालों को जो अच्छे कर्म करते हैं शुभ-सूचना दे कि उनके लिए अच्छा बदला है, जिसमें वे सदा-सदा रहेंगे; और ताकि उन लोगों को सचेत करे जो कहते हैं, "अल्लाह ने बेटा बना लिया है।" इसका न उन्हें कोई ज्ञान है, न उनके बाप-दादा को था। बड़ी भारी बात है जो उनके मुँह से निकलती है: वे निरा झूठ बकते हैं। तो ऐ नबी, शायद तुम उनके पीछे ग़म के मारे अपनी जान ही दे दोगे, अगर वे इस बात पर ईमान न लाए। (1–6)

जो कुछ ज़मीन पर है उसे हमने उसकी शोभा बनाया है, ताकि हम उन्हें आज़माएँ कि उनमें कौन कर्म में सबसे अच्छा है; और जो कुछ उस पर है हम उसे ज़रूर चटियल मैदान बना देने वाले हैं। क्या तुम समझते हो कि ग़ार वाले और शिलालेख वाले हमारी निशानियों में कोई अचम्भे की चीज़ थे? जब उन नौजवानों ने ग़ार में पनाह ली, तो कहा, "ऐ हमारे रब, हमें अपने पास से दयालुता दे, और हमारे मामले में हमारे लिए सही राह का सामान कर दे।" तो हमने ग़ार में गिनती के कई वर्षों तक उनके कानों पर थपकी दे दी; फिर हमने उन्हें उठाया, ताकि जान लें कि दोनों गिरोहों में से कौन उस मुद्दत को ज़्यादा ठीक गिन सकता है जो वे ठहरे रहे। (7–12)

हम तुम्हें उनका क़िस्सा ठीक-ठीक सुनाते हैं। वे कुछ नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए थे, और हमने उन्हें मार्गदर्शन में और बढ़ा दिया। और हमने उनके दिल मज़बूत कर दिए जब वे उठ खड़े हुए और बोले, "हमारा रब वही है जो आसमानों और ज़मीन का रब है। हम उसके सिवा किसी इलाह को हरगिज़ न पुकारेंगे: अगर हमने ऐसा किया, तो बड़ी बेजा बात कही। ये हमारी क़ौम के लोग हैं जिन्होंने उसके सिवा दूसरे इलाह बना लिए हैं। ये उनके हक़ में कोई खुला प्रमाण क्यों नहीं लाते? फिर उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े? और अब जबकि तुम इनसे और उनसे जिनकी ये अल्लाह के सिवा इबादत करते हैं अलग हो गए हो, तो ग़ार में पनाह ले लो: तुम्हारा रब तुम पर अपनी दयालुता फैला देगा, और तुम्हारे मामले में तुम्हारे लिए आसानी का सामान कर देगा।" (13–16)

और तुम सूरज को देखते कि जब निकलता है, तो उनके ग़ार से दाहिनी ओर बचकर निकल जाता है, और जब डूबता है, तो बाईं ओर उनसे कतरा जाता है, और वे उसके भीतर एक खुली जगह में पड़े थे। यह अल्लाह की निशानियों में से है। जिसे अल्लाह राह दिखाए वही राह पाने वाला है, और जिसे वह भटकने दे—तो तुम उसके लिए कोई राह दिखाने वाला संरक्षक न पाओगे। और तुम उन्हें जागता हुआ समझते, हालाँकि वे सो रहे थे। और हम उन्हें दाएँ और बाएँ करवट दिलाते रहते थे, और उनका कुत्ता दहलीज़ पर अपने दोनों हाथ

फैलाए बैठा था। अगर तुम उन्हें झाँककर देख लेते, तो उनसे पीठ फेरकर भाग खड़े होते, और तुम्हारे भीतर उनकी दहशत बैठ जाती। (17–18)

और इसी तरह हमने उन्हें उठाया, ताकि वे आपस में पूछ-ताछ करें। उनमें से एक बोला, "तुम कितनी देर ठहरे रहे?" वे बोले, "हम एक दिन, या दिन का कुछ हिस्सा ठहरे होंगे।" फिर बोले, "तुम्हारा रब ही ख़ूब जानता है कि तुम कितनी देर ठहरे। अब अपने में से किसी को अपना यह चाँदी का सिक्का देकर शहर भेजो, और वह देखे कि कौन-सा खाना सबसे पाकीज़ा है और उसमें से तुम्हारे लिए कुछ खाने को ले आए; और वह होशियारी से काम ले, और किसी को तुम्हारी भनक न लगने दे। क्योंकि अगर उन्हें तुम्हारी ख़बर लग गई, तो वे तुम्हें पत्थर मार-मारकर हलाक कर देंगे या ज़बरदस्ती अपने दीन में लौटा ले जाएँगे, और तब तुम कभी सफल न हो सकोगे।" और इसी तरह हमने लोगों को उनकी ख़बर कर दी, ताकि वे जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और यह कि उस घड़ी में कोई सन्देह नहीं। जब वे आपस में उनके मामले पर झगड़ रहे थे, तो कुछ ने कहा, "इन पर एक इमारत बना दो: इनका रब ही इन्हें ख़ूब जानता है।" जो लोग उनके मामले में ग़ालिब रहे उन्होंने कहा, "हम तो इन पर ज़रूर एक इबादतगाह बनाएँगे।" कुछ कहेंगे, "वे तीन थे, चौथा उनका कुत्ता था"; और कुछ कहेंगे, "पाँच थे, छठा उनका कुत्ता था"—बिन देखे अटकल के तीर चलाते हुए; और कुछ कहेंगे, "सात थे, और आठवाँ उनका कुत्ता था।" कह दो, "मेरा रब ही उनकी गिनती ख़ूब जानता है; उन्हें थोड़े ही लोग जानते हैं।" तो उनके बारे में सरसरी बात के सिवा बहस न करो, और न उनके बारे में इनमें से किसी से कुछ पूछो। और किसी चीज़ के बारे में कभी यह न कहो, "मैं इसे कल कर दूँगा," बिना यह जोड़े कि "अगर अल्लाह चाहे।" और जब भूल जाओ तो अपने रब को याद करो, और कहो, "उम्मीद है कि मेरा रब मुझे इससे भी ज़्यादा सही राह के क़रीब की बात दिखा दे।" और वे अपने ग़ार में तीन सौ वर्ष रहे, और नौ और बढ़ा लो। कह दो, "अल्लाह ही ख़ूब जानता है कि वे कितनी मुद्दत ठहरे। आसमानों और ज़मीन का परोक्ष उसी के लिए है: क्या ख़ूब है उसका देखना, और क्या ख़ूब है उसका सुनना! उसके सिवा उनका कोई संरक्षक नहीं, और वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता।" (19–26)

और अपने रब की किताब में से जो कुछ तुम्हारी ओर वह्य किया गया है उसे पढ़कर सुनाओ: उसकी बातों को कोई बदलने वाला नहीं, और तुम उसके सिवा कोई पनाह की जगह न पाओगे। और अपने आप को उन लोगों के साथ जमाए रखो जो सुबह और शाम अपने रब को पुकारते हैं, उसकी रज़ा चाहते हुए। और दुनिया की ज़िन्दगी की शोभा की चाह में तुम्हारी आँखें उनसे हटकर आगे न बढ़ें; और उसकी बात न मानना जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया है, जो अपनी इच्छा के पीछे चलता है, और जिसका मामला हर हद से गुज़र चुका है। और कह दो, "सत्य तुम्हारे रब की ओर से है: तो जो चाहे ईमान लाए, और जो चाहे इनकार करे।" हमने ज़ालिमों के लिए एक ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसकी क़नातें उन्हें घेर लेंगी। और अगर वे फ़रियाद करेंगे, तो उनकी फ़रियाद ऐसे पानी से पूरी की जाएगी जो पिघली हुई धात जैसा होगा और चेहरों को भून डालेगा। क्या ही बुरा पीना है, और क्या ही बुरी आरामगाह! और जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए—हम उसका बदला अकारथ नहीं करते जिसने अच्छा काम किया। उन्हीं के लिए हमेशा

रहने वाली नेमत के बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बहती हैं; वहाँ उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएँगे, और वे बारीक रेशम और दबीज़ रेशम के हरे कपड़े पहनेंगे, वहाँ ऊँचे तख़्तों पर तकिया लगाए हुए। क्या ही अच्छा बदला है, और क्या ही अच्छी आरामगाह! (27–31)

और उनके सामने दो आदमियों की मिसाल बयान करो: उनमें से एक के लिए हमने अंगूरों के दो बाग़ बनाए, उन्हें खजूर के पेड़ों से घेर दिया, और दोनों के बीच खेती रखी। दोनों बाग़ों ने अपनी उपज दी और उसमें कुछ कमी न की, और दोनों के बीच हमने एक नहर जारी कर दी। और उसके पास फल बहुत था, तो उसने अपने साथी से, उससे बातें करते हुए, कहा, "मैं तुमसे माल में ज़्यादा हूँ, और जत्थे में भी ज़्यादा ज़ोरावर।" और वह अपने ऊपर ज़ुल्म करता हुआ अपने बाग़ में दाख़िल हुआ, और बोला, "मैं नहीं समझता कि यह कभी बरबाद होगा, और न मैं समझता हूँ कि वह घड़ी कभी आएगी; और अगर मैं अपने रब की ओर लौटाया भी गया, तो बदले में ज़रूर इससे बेहतर जगह पाऊँगा।" उसके साथी ने, उससे बातें करते हुए, कहा, "क्या तुम उसका इनकार करते हो जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर एक बूँद से, फिर तुम्हें पूरा आदमी बना दिया? मगर मेरा मामला यह है कि वही अल्लाह मेरा रब है, और मैं अपने रब के साथ किसी को साझी नहीं ठहराता। और जब तुम अपने बाग़ में दाख़िल हुए तो तुमने यह क्यों न कहा: जो अल्लाह चाहे! अल्लाह के बिना कोई शक्ति नहीं। अगर तुम मुझे माल और औलाद में अपने से कम देखते हो, तो हो सकता है मेरा रब मुझे तुम्हारे बाग़ से बेहतर दे, और इस पर आसमान से कोई आफ़त भेज दे, कि यह साफ़ चिकना मैदान होकर रह जाए, या इसका पानी ज़मीन में गहरा उतर जाए, फिर तुम उसे कभी ढूँढकर न ला सको।" और उसका फल तबाही के घेरे में आ गया, और वह उस पर जो कुछ उसने उसमें ख़र्च किया था हाथ मलता रह गया, जबकि वह अपनी टट्टियों पर गिरा पड़ा था, और कहने लगा, "काश मैंने अपने रब के साथ किसी को साझी न ठहराया होता!" और अल्लाह के सिवा उसका कोई जत्था न था जो उसकी मदद करता, और न वह ख़ुद अपनी मदद कर सका। ऐसे मौक़े पर सरपरस्ती बस अल्लाह ही की है, जो सच्चा है। वही बदले में सबसे अच्छा है, और अंजाम में भी सबसे अच्छा। (32–44)

और उनके सामने दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल बयान करो: वह उस पानी की तरह है जिसे हमने आसमान से उतारा; फिर ज़मीन की पैदावार उससे घुल-मिलकर घनी हो गई, फिर वह चूरा-चूरा भूसा हो गई जिसे हवाएँ उड़ाए फिरती हैं। और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। माल और औलाद दुनिया की ज़िन्दगी की शोभा हैं; मगर बाक़ी रहने वाली नेकियाँ तुम्हारे रब के यहाँ बदले में भी बेहतर हैं, और उम्मीद के लिहाज़ से भी बेहतर। और जिस दिन हम पहाड़ों को चला देंगे और तुम ज़मीन को खुला मैदान देखोगे, और हम उन सबको इकट्ठा करेंगे और उनमें से किसी एक को भी न छोड़ेंगे। और वे तुम्हारे रब के सामने क़तार-दर-क़तार पेश किए जाएँगे: "अब तुम हमारे पास वैसे ही आ गए जैसे हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, हालाँकि तुम्हारा दावा था कि हम तुम्हारे लिए मिलने का कोई समय ठहराएँगे ही नहीं।" और आमालनामा सामने रख दिया जाएगा, तो तुम अपराधियों को देखोगे कि जो कुछ उसमें है उससे डर रहे हैं। और वे कहेंगे, "हाय हमारी कमबख़्ती! यह कैसी किताब है, कि न कोई छोटी बात छोड़ती है न बड़ी, बल्कि सबको गिन

रखा है?" और जो कुछ उन्होंने किया था वह सब वे सामने मौजूद पाएँगे; और तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म नहीं करता। (45–49)

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा, "आदम के आगे सजदा करो," तो उन्होंने सजदा किया—सिवाय इबलीस के। वह जिन्नों में से था, तो उसने अपने रब के हुक्म की अवज्ञा की। तो क्या तुम मुझे छोड़कर उसे और उसकी औलाद को संरक्षक बनाते हो, हालाँकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं? ज़ालिमों के लिए क्या ही बुरा बदल है! मैंने न उन्हें आसमानों और ज़मीन के पैदा करने का गवाह बनाया, न ख़ुद उनके अपने पैदा किए जाने का; और मैं ऐसा नहीं कि भटकाने वालों को अपना मददगार बनाऊँ। और जिस दिन वह कहेगा, "पुकारो उन्हें जिन्हें तुम मेरा साझी समझते थे," तो वे उन्हें पुकारेंगे, मगर वे उन्हें कोई जवाब न देंगे; और हम उनके बीच हलाकत की एक जगह रख देंगे। और अपराधी आग को देखेंगे और समझ लेंगे कि वे उसमें गिरने ही वाले हैं, और वे उससे बच निकलने की कोई राह न पाएँगे। (50–53)

और हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर तरह की मिसाल तरह-तरह से बयान की है, मगर इनसान सब चीज़ों से बढ़कर झगड़ालू है। और जब लोगों के पास मार्गदर्शन आ गया तो उन्हें ईमान लाने और अपने रब से क्षमा माँगने से बस इसी बात ने रोका कि वे इसका इन्तिज़ार करें कि अगलों की-सी रीत उन पर भी आ जाए, या यातना उनके सामने आ खड़ी हो। और हम रसूलों को बस शुभ-सूचना देने वाले और सचेत करने वाले बनाकर ही भेजते हैं; मगर सत्य के इनकारी बातिल के सहारे झगड़ते हैं ताकि उससे सत्य को पछाड़ दें, और उन्होंने मेरी आयतों को और उन चेतावनियों को जो उन्हें दी गईं मज़ाक़ बना लिया है। और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के द्वारा याद दिलाया जाए, तो वह उनसे मुँह फेर ले और उसे भूल जाए जो उसके अपने हाथों ने आगे भेजा है? हमने उनके दिलों पर ग़िलाफ़ चढ़ा दिए हैं, कि वे इसे न समझें, और उनके कानों में बोझ; और अगर तुम उन्हें मार्गदर्शन की ओर बुलाओ, तब भी वे कभी राह पर न आएँगे। और तुम्हारा रब बड़ा क्षमाशील, दयालुता वाला है। अगर वह उन्हें उनकी कमाई पर पकड़ता, तो उनके लिए जल्द ही यातना भेज देता; मगर उनके लिए एक ठहराया हुआ समय है जिससे बच निकलने की वे कोई जगह न पाएँगे। और ये हैं वे बस्तियाँ—हमने उन्हें हलाक कर दिया जब उन्होंने ज़ुल्म किया, और उनकी हलाकत के लिए हमने एक समय ठहरा रखा था। (54–59)

और जब मूसा ने अपने नौजवान ख़ादिम से कहा, "मैं चलता ही रहूँगा यहाँ तक कि दोनों समुद्रों के संगम पर पहुँच जाऊँ, चाहे मुझे बरसों चलना पड़े।" फिर जब वे दोनों उनके संगम पर पहुँचे, तो अपनी मछली भूल गए, और उसने समुद्र में सुरंग की तरह अपनी राह बना ली। फिर जब वे आगे बढ़ गए, तो उसने अपने ख़ादिम से कहा, "हमारा सुबह का खाना लाओ; अपने इस सफ़र से हमें बड़ी थकान हो गई है।" वह बोला, "आपने देखा? जब हम उस चट्टान के पास ठहरे थे, तो मैं मछली को भूल गया—और शैतान ही ने मुझे भुला दिया कि मैं उसका ज़िक्र करूँ—और उसने अजीब ढंग से समुद्र में अपनी राह ली!" उसने कहा, "यही तो वह चीज़ है जिसकी हमें तलाश थी।" तो वे दोनों अपने क़दमों के निशान देखते हुए उलटे लौटे, और उन्होंने हमारे बन्दों में से एक बन्दे को पाया जिसे हमने अपनी ओर से दयालुता दी थी, और जिसे अपने पास से एक

ज्ञान सिखाया था। मूसा ने उससे कहा, "क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ, ताकि आप मुझे उस सही राह के ज्ञान में से कुछ सिखा दें जो आपको सिखाया गया है?" उसने कहा, "तुम मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकोगे। और तुम उस चीज़ पर सब्र कर भी कैसे सकते हो जो तुम्हारी समझ के घेरे में नहीं?" उसने कहा, "अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सब्र करने वाला पाएँगे, और मैं किसी बात में आपकी अवज्ञा न करूँगा।" उसने कहा, "अच्छा, अगर तुम मेरे साथ चलते हो, तो मुझसे किसी चीज़ के बारे में न पूछना जब तक मैं ख़ुद तुमसे उसका ज़िक्र न करूँ।" (60–70)

तो दोनों चल पड़े, यहाँ तक कि जब वे एक नाव में सवार हुए, तो उसने उसमें छेद कर दिया। मूसा ने कहा, "क्या आपने इसमें इसलिए छेद किया है कि इसके सवारों को डुबो दें? आपने तो बड़ा ही बुरा काम किया!" उसने कहा, "क्या मैंने कहा न था कि तुम मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकोगे?" मूसा ने कहा, "मेरी भूल पर मुझे न पकड़िए, और मेरे मामले में मुझ पर सख़्ती न कीजिए।" फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब वे एक लड़के से मिले, तो उसने उसे क़त्ल कर दिया। मूसा ने कहा, "क्या आपने एक बेगुनाह जान को मार डाला, जिसने किसी की जान न ली थी? आपने तो बहुत ही बुरा काम किया!" उसने कहा, "क्या मैंने तुमसे कहा न था कि तुम मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकोगे?" मूसा ने कहा, "इसके बाद अगर मैं आपसे किसी चीज़ के बारे में पूछूँ, तो मुझे अपने साथ न रखिएगा: मेरी ओर से आपको पूरा उज़्र मिल चुका।" फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब वे एक बस्ती के लोगों के पास पहुँचे, तो उन्होंने वहाँ के लोगों से खाना माँगा, मगर उन्होंने उनकी मेहमानदारी से इनकार कर दिया। फिर उन्होंने वहाँ एक दीवार पाई जो गिरने ही वाली थी, तो उसने उसे सीधा कर दिया। मूसा ने कहा, "अगर आप चाहते, तो इस पर कुछ मज़दूरी ले सकते थे।" उसने कहा, "यह मेरे और तुम्हारे बीच जुदाई है। अब मैं तुम्हें उन बातों की हक़ीक़त बताता हूँ जिन पर तुम सब्र न कर सके। रही वह नाव, तो वह कुछ ग़रीब लोगों की थी जो समुद्र में मेहनत-मज़दूरी करते थे; मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूँ, क्योंकि उनके आगे एक बादशाह था जो हर नाव को ज़बरदस्ती छीन रहा था। और रहा वह लड़का, तो उसके माँ-बाप ईमान वाले थे, और हमें डर हुआ कि वह सरकशी और इनकार से उन्हें तंग करेगा; तो हमने चाहा कि उनका रब उसके बदले उन्हें ऐसी औलाद दे जो पाकीज़गी में उससे बेहतर और मुहब्बत में ज़्यादा क़रीब हो। और रही वह दीवार, तो वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी, और उसके नीचे उनका एक ख़ज़ाना था। और उनका बाप एक नेक आदमी था, तो तुम्हारे रब ने चाहा कि वे दोनों अपनी पुख़्ता उम्र को पहुँचें और अपना ख़ज़ाना निकाल लें, तुम्हारे रब की दयालुता के तौर पर। और मैंने यह अपनी मर्ज़ी से नहीं किया। यह है हक़ीक़त उन बातों की जिन पर तुम सब्र न कर सके।" (71–82)

ऐ नबी, वे तुमसे ज़ुल-क़रनैन के बारे में पूछते हैं। कह दो, "मैं तुम्हें उसका कुछ हाल सुनाता हूँ।" हमने उसे ज़मीन में जमाव दिया और उसे हर चीज़ की राह दी। तो वह एक राह पर चला, यहाँ तक कि जब वह सूरज के डूबने की जगह पहुँचा, तो उसे एक मटमैले सोते में डूबता पाया, और उसके पास एक क़ौम पाई। हमने कहा, "ऐ ज़ुल-क़रनैन, चाहे तुम इन्हें सज़ा दो या इनके साथ अच्छा बरताव करो।" उसने कहा, "जो ज़ुल्म करेगा, उसे तो हम सज़ा देंगे; फिर वह अपने रब की ओर लौटाया जाएगा, और वह उसे बुरी यातना देगा।

और जो ईमान लाए और अच्छा काम करे, उसके लिए सबसे अच्छा बदला है, और हम अपने हुक्म में उससे नर्म बात कहेंगे।" फिर वह एक और राह पर चला, यहाँ तक कि जब वह सूरज के निकलने की जगह पहुँचा, तो उसे एक ऐसी क़ौम पर निकलता पाया जिसके लिए हमने उससे बचाव की कोई ओट न रखी थी। ऐसा ही था; और जो कुछ उसके पास था उसे हमने अपने ज्ञान के घेरे में ले रखा था। (83–91)

फिर वह एक और राह पर चला, यहाँ तक कि जब वह दो पहाड़ी दीवारों के बीच पहुँचा, तो उसने उनके इस ओर एक ऐसी क़ौम पाई जो कोई बात मुश्किल ही से समझती थी। वे बोले, "ऐ ज़ुल-क़रनैन, याजूज और माजूज इस ज़मीन में बिगाड़ फैलाते हैं। तो क्या हम आपको कुछ ख़िराज दें, इस शर्त पर कि आप हमारे और उनके बीच एक रोक बना दें?" उसने कहा, "जिस चीज़ में मेरे रब ने मुझे जमाव दिया है वही बेहतर है। तो तुम अपनी ताक़त से मेरी मदद करो, मैं तुम्हारे और उनके बीच एक मज़बूत आड़ बना दूँगा। मुझे लोहे के टुकड़े ला दो।" फिर जब उसने दोनों पहाड़ों के बीच की दरार को पाट दिया, तो कहा, "धौंको!" फिर जब उसने उसे आग की तरह दहका दिया, तो कहा, "अब मुझे पिघला हुआ ताँबा ला दो कि इस पर उँडेल दूँ।" तो वे न उस पर चढ़ सके और न उसमें सेंध लगा सके। उसने कहा, "यह मेरे रब की दयालुता है। फिर जब मेरे रब का वादा आएगा, तो वह इसे ढाकर बराबर कर देगा; और मेरे रब का वादा हमेशा सच्चा है।" और उस दिन हम उन्हें छोड़ देंगे कि लहरों की तरह एक-दूसरे पर चढ़े चले आएँ; और सूर फूँका जाएगा, तो हम उन सबको इकट्ठा कर लेंगे। और उस दिन हम जहन्नम को सत्य के इनकारियों के सामने खोलकर रख देंगे, जिनकी आँखों पर मेरी याद से परदा पड़ा हुआ था, और जो सुनने की ताब न रखते थे। तो क्या सत्य के इनकारी यह समझते हैं कि वे मुझे छोड़कर मेरे बन्दों को संरक्षक बना लें? हमने सत्य के इनकारियों की मेहमानी के लिए जहन्नम तैयार कर रखी है। (92–102)

कह दो, "क्या हम तुम्हें बताएँ कि अपने कर्मों में सबसे ज़्यादा घाटे में कौन हैं? वे जिनकी सारी दौड़-धूप दुनिया की ज़िन्दगी में अकारथ गई, जबकि वे समझते रहे कि वे अच्छा काम कर रहे हैं।" यही हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों का और उससे मिलने का इनकार किया; तो उनके कर्म अकारथ गए, और क़ियामत के दिन हम उन्हें कोई वज़न न देंगे। यह है उनका बदला—जहन्नम—इसलिए कि उन्होंने सत्य का इनकार किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया। और जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उनकी मेहमानी के लिए फ़िरदौस के बाग़ होंगे, जिनमें वे सदा-सदा रहेंगे, वहाँ से कहीं और जाना न चाहेंगे। (103–108)

कह दो, "अगर समुद्र मेरे रब की बातें लिखने के लिए रौशनाई बन जाए, तो समुद्र ख़त्म हो जाए इससे पहले कि मेरे रब की बातें ख़त्म हों, चाहे हम उसकी मदद को वैसा ही एक और ले आएँ।"[20] (109)

[20] इस बुनियादी आयत को सबसे अच्छी तरह उन सब लिंकों से समझाया जा सकता है जिन्हें मैं समय के साथ, इंशाअल्लाह, टिप्पणियों के रूप में जोड़ता जाऊँगा, ताकि एक व्यापक वैज्ञानिक और दार्शनिक व्याख्या पेश हो सके। तब तक कृपया मेरे ब्लॉग के सभी चुनिन्दा लेख देखिए: चुनिन्दा लेख – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस।

कह दो, “मैं तो बस तुम्हारे ही जैसा एक इनसान हूँ। मेरी ओर वह्य की जाती है कि तुम्हारा इलाह बस एक ही इलाह है। तो जो कोई अपने रब से मिलने की आस रखता हो, उसे चाहिए कि अच्छे कर्म करे, और अपने रब की इबादत में किसी को साझी न ठहराए।” (110)

# 19. मरयम (मरयम)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

काफ़ हा या ऐन साद। (1)

यह तुम्हारे रब की उस दयालुता का बयान है जो उसने अपने बन्दे ज़करिया पर की, जब उसने अपने रब को चुपके-चुपके पुकारा। उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मेरी हड्डियाँ कमज़ोर पड़ गईं, और सिर बुढ़ापे की सफ़ेदी से भड़क उठा; और ऐ मेरे रब, मैं तुझसे दुआ माँगकर कभी नामुराद नहीं रहा। और मुझे अपने बाद अपने भाई-बन्दों का डर है, और मेरी पत्नी बाँझ है; तो तू अपने पास से मुझे एक वारिस दे, जो मेरा भी वारिस हो और याक़ूब के घराने का भी वारिस हो; और ऐ मेरे रब, उसे पसन्दीदा बना।" "ऐ ज़करिया, हम तुम्हें एक लड़के की शुभ-सूचना देते हैं जिसका नाम यह्या होगा; इससे पहले हमने किसी को यह नाम नहीं दिया।" उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा, जबकि मेरी पत्नी बाँझ है और मैं बुढ़ापे की आख़िरी हद को पहुँच चुका हूँ?" उसने कहा, "ऐसा ही होगा।" तुम्हारा रब कहता है, "यह मेरे लिए आसान है: इससे पहले मैं तुम्हें पैदा कर चुका हूँ, जबकि तुम कुछ भी न थे।" (2–9)

उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मेरे लिए कोई निशानी ठहरा दे।" उसने कहा, "तुम्हारी निशानी यह है कि तुम भले-चंगे होते हुए भी तीन रात लोगों से बात न कर सकोगे।" तो वह इबादत के कमरे से निकलकर अपनी क़ौम के सामने आया और उन्हें इशारे से कहा कि सुबह और शाम अल्लाह की तसबीह करो। (10–11)

"ऐ यह्या, किताब को मज़बूती से थाम लो।" और हमने उसे बचपन ही में हिकमत दी, और अपने पास से नर्मदिली, और पाकीज़गी; और वह अल्लाह के प्रति सचेत रहने वाला था, और अपने माँ-बाप का फ़रमाँबरदार; और वह न सरकश था न नाफ़रमान। सलाम है उस पर जिस दिन वह पैदा हुआ, जिस दिन वह मरेगा, और जिस दिन वह ज़िन्दा करके उठाया जाएगा। (12–15)

और इस किताब में मरयम का ज़िक्र करो, जब वह अपने घर वालों से अलग होकर एक पूरबी जगह चली गई, और उनकी ओर से एक परदा डाल लिया। तब हमने उसके पास अपनी रूह को भेजा, जो उसके सामने एक भले-चंगे आदमी के रूप में ज़ाहिर हुई। वह बोली, "मैं तुमसे रहमान की पनाह माँगती हूँ—अगर तुम अल्लाह के प्रति सचेत रहने वाले हो!" उसने कहा, "मैं तो बस तुम्हारे रब का भेजा हुआ हूँ, ताकि तुम्हें एक पाकीज़ा लड़का दूँ।" वह बोली, "मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा, जबकि मुझे किसी मर्द ने छुआ तक नहीं, और न मैं बदचलन हूँ?" उसने कहा, "ऐसा ही होगा।" तुम्हारा रब कहता है, "यह मेरे लिए आसान है; और इसलिए कि हम उसे लोगों के लिए एक निशानी और अपनी ओर से दयालुता बनाएँ। और यह एक तय हो चुका मामला है।" तो उसे उसका गर्भ रह गया, और वह उसे लिए हुए एक दूर की जगह चली गई। फिर प्रसव की पीड़ा उसे खजूर के एक तने तक ले आई। वह बोली, "काश मैं इससे पहले मर गई होती, और भूली-बिसरी हो गई होती!" तब एक पुकारने वाले ने उसके नीचे से उसे पुकारा: "दुखी न हो। तुम्हारे रब ने

तुम्हारे नीचे एक सोता जारी कर दिया है; और खजूर के तने को अपनी ओर हिलाओ: वह तुम पर ताज़ा पकी हुई खजूरें टपका देगा। तो खाओ और पियो और आँखें ठंडी करो। फिर अगर किसी इनसान को देखो, तो कह देना: मैंने रहमान के लिए रोज़े की मन्नत मानी है, तो आज मैं किसी से बात न करूँगी।" (16–26)

फिर वह उसे उठाए हुए अपनी क़ौम के पास आई। वे बोले, "ऐ मरयम, तूने तो बड़ा ही अनोखा काम कर डाला! ऐ हारून की बहन, न तेरा बाप कोई बुरा आदमी था, न तेरी माँ बदचलन थी।" तो उसने उसकी ओर इशारा कर दिया। वे बोले, "हम उससे कैसे बात करें जो पालने में पड़ा हुआ बच्चा है?" वह बोल उठा, "मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने मुझे किताब दी और मुझे नबी बनाया; और मैं जहाँ भी रहूँ उसने मुझे बरकत वाला बनाया, और जब तक मैं ज़िन्दा रहूँ मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद की, और मुझे अपनी माँ का फ़रमाँबरदार बनाया; और उसने मुझे न सरकश बनाया न बदबख़्त। और सलाम है मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुआ, जिस दिन मैं मरूँगा, और जिस दिन मैं ज़िन्दा करके उठाया जाऊँगा।" यह है मरयम का बेटा ईसा: सच्ची बात, जिसमें ये लोग शक कर रहे हैं। अल्लाह के लिए यह उचित नहीं कि वह कोई बेटा बनाए— वह पाक है! जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है, तो उससे बस यही कहता है, "हो जा," और वह हो जाता है। ईसा ने कहा, "अल्लाह मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब, तो उसी की इबादत करो: यही सीधा मार्ग है।" मगर गिरोहों ने आपस में मतभेद किया; तो सत्य के इनकारियों के लिए एक बड़े दिन की हाज़िरी के कारण बड़ी तबाही है! जिस दिन वे हमारे पास आएँगे उस दिन वे क्या ख़ूब सुनेंगे और देखेंगे! मगर आज ये ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। और उन्हें पछतावे के दिन से सचेत करो, जब मामले का फ़ैसला कर दिया जाएगा, जबकि वे बेपरवाही में पड़े हैं और ईमान नहीं लाते। ज़मीन के और जो कोई उस पर है सबके वारिस हम ही होंगे, और हमारी ही ओर वे लौटाए जाएँगे। (27–40)

और इस किताब में इबराहीम का ज़िक्र करो: निश्चय ही वह एक सच्चा इनसान, एक नबी था। जब उसने अपने बाप से कहा, "अब्बा जान, आप उसकी इबादत क्यों करते हैं जो न सुनता है न देखता है, और न आपके कुछ काम आ सकता है? अब्बा जान, मेरे पास वह ज्ञान आया है जो आपके पास नहीं आया; तो आप मेरे पीछे चलिए, मैं आपको सीधी राह दिखाऊँगा। अब्बा जान, शैतान की इबादत न कीजिए: निश्चय ही शैतान रहमान का नाफ़रमान है। अब्बा जान, मुझे डर है कि कहीं रहमान की ओर से कोई यातना आपको आ छुए, और आप शैतान के साथी होकर रह जाएँ।" वह बोला, "ऐ इबराहीम, क्या तू मेरे इलाहों से फिरा हुआ है? अगर तू बाज़ न आया, तो मैं तुझे ज़रूर पत्थर मार-मारकर हलाक कर दूँगा। और तू एक लम्बी मुद्दत के लिए मुझसे दूर हो जा!" उसने कहा, "आप पर सलाम हो। मैं अपने रब से आपके लिए क्षमा माँगूँगा; निश्चय ही वह मुझ पर बड़ा मेहरबान है। और मैं आप लोगों से और उनसे जिन्हें आप लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं अलग होता हूँ, और मैं अपने रब ही को पुकारूँगा; उम्मीद है कि मैं अपने रब को पुकारकर नामुराद न रहूँगा।" फिर जब वह उनसे और उनसे जिनकी वे अल्लाह के सिवा इबादत करते थे अलग हो गया, तो हमने उसे इसहाक़ और याक़ूब दिए, और हर एक को हमने नबी बनाया। और हमने उन्हें अपनी दयालुता में से हिस्सा दिया, और उन्हें ऊँची और सच्ची नेकनामी दी। (41–50)

और इस किताब में मूसा का ज़िक्र करो: निश्चय ही वह चुना हुआ था, और वह एक रसूल, एक नबी था। और हमने उसे तूर के दाहिने किनारे से पुकारा, और राज़ की बातें करने के लिए उसे क़रीब किया। और अपनी दयालुता से हमने उसके भाई हारून को नबी बनाकर उसे दिया। और इस किताब में इसमाईल का ज़िक्र करो: निश्चय ही वह वादे का सच्चा था, और वह एक रसूल, एक नबी था। वह अपने लोगों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता था, और अपने रब के नज़दीक पसन्दीदा था। और इस किताब में इदरीस का ज़िक्र करो: निश्चय ही वह एक सच्चा इनसान, एक नबी था, और हमने उसे ऊँचे मक़ाम पर उठाया। (51–57)

ये हैं वे लोग जिन पर अल्लाह ने नबियों में से अनुग्रह किया: आदम की औलाद में से, और उनमें से जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया, और इबराहीम और इसराईल की औलाद में से, और उनमें से जिन्हें हमने राह दिखाई और चुन लिया। जब उन्हें रहमान की आयतें सुनाई जातीं, तो वे रोते हुए सजदे में गिर पड़ते थे। फिर उनके बाद ऐसे नालायक़ जानशीन आए जिन्होंने नमाज़ को गँवा दिया और अपनी इच्छाओं के पीछे चले; तो वे जल्द ही तबाही से दो-चार होंगे—सिवाय उनके जो तौबा कर लें और ईमान लाएँ और अच्छा काम करें: ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, और उन पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा—हमेशा रहने वाली नेमत के बाग़, जिनका रहमान ने अपने बन्दों से बिन देखे वादा किया है: निश्चय ही उसका वादा पूरा होकर रहेगा। वहाँ वे कोई बेहूदा बात न सुनेंगे, बस "सलाम" ही सुनेंगे; और वहाँ उन्हें सुबह और शाम उनकी रोज़ी मिलती रहेगी। यह है वह जन्नत जिसका वारिस हम अपने बन्दों में से उसे बनाएँगे जो अल्लाह के प्रति सचेत रहा। (58–63)

फ़रिश्ते कहते हैं, "हम बस तुम्हारे रब के हुक्म ही से उतरते हैं। उसी का है जो कुछ हमारे आगे है और जो कुछ हमारे पीछे है और जो कुछ इसके बीच है; और तुम्हारा रब कभी भूलने वाला नहीं—वह आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उन दोनों के बीच है सबका रब है। तो उसी की इबादत करो, और उसकी इबादत पर जमे रहो। क्या तुम्हारे ज्ञान में कोई है जो उसका हमनाम हो?" (64–65)

और इनसान कहता है, "क्या जब मैं मर जाऊँगा, तो सचमुच ज़िन्दा करके निकाला जाऊँगा?" क्या इनसान को याद नहीं कि हम उसे इससे पहले पैदा कर चुके हैं, जबकि वह कुछ भी न था? तो तुम्हारे रब की क़सम, हम उन्हें और शैतानों को ज़रूर इकट्ठा करेंगे; फिर हम उन्हें जहन्नम के गिर्द घुटनों के बल गिरे हुए ला हाज़िर करेंगे; फिर हर गिरोह में से उन्हें खींच निकालेंगे जो रहमान के मुक़ाबले में सबसे ज़्यादा सरकश थे; फिर हम उन्हें ख़ूब जानते हैं जो उसमें जलने के सबसे ज़्यादा हक़दार हैं। और तुममें से कोई नहीं जो उस पर से न गुज़रे: यह तुम्हारे रब का एक तय किया हुआ, अटल फ़ैसला है। फिर हम उन्हें बचा लेंगे जो अल्लाह के प्रति सचेत रहे, और ज़ालिमों को उसी में घुटनों के बल गिरा हुआ छोड़ देंगे। (66–72)

और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं, तो सत्य के इनकारी ईमान वालों से कहते हैं, "दोनों गिरोहों में से किसका मर्तबा बेहतर है और किसकी मजलिस ज़्यादा शानदार?" और हम इनसे पहले कितनी ही नस्लें हलाक कर चुके हैं, जो साज़-सामान और ज़ाहिरी शान में इनसे कहीं बेहतर थीं! कह दो, "जो कोई गुमराही में पड़ा हो, रहमान उसकी ढील और लम्बी करे, यहाँ तक कि जब वे वह चीज़ देख लेंगे जिसका

उनसे वादा किया जा रहा है—या तो यातना या वह घड़ी—तब वे जान लेंगे कि किसका मर्तबा बदतर है और किसका जत्था ज़्यादा कमज़ोर।" और जो लोग राह पर हैं अल्लाह उन्हें मार्गदर्शन में और बढ़ाता है; और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ तुम्हारे रब के यहाँ बदले में भी बेहतर हैं, और अंजाम में भी बेहतर। फिर क्या तुमने उसे देखा जिसने हमारी आयतों का इनकार किया और कहता है, "मुझे तो माल और औलाद ज़रूर दी जाएगी"? क्या उसने परोक्ष में झाँक लिया है, या रहमान से कोई अह्द ले रखा है? हरगिज़ नहीं! जो कुछ वह कहता है हम उसे लिख लेंगे, और उसके लिए यातना बढ़ाते चले जाएँगे; और जिन चीज़ों की वह बात करता है उनके वारिस हम होंगे, और वह हमारे पास अकेला आएगा। (73–80)

और उन्होंने अल्लाह के सिवा दूसरे इलाह बना लिए हैं, ताकि वे उनके लिए ताक़त का ज़रिया बनें। हरगिज़ नहीं! वे उनकी इबादत का इनकार कर देंगे, और उलटे उनके विरोधी बन जाएँगे। क्या तुम नहीं देखते कि हमने सत्य के इनकारियों पर शैतानों को छोड़ रखा है, जो उन्हें ख़ूब उकसाते रहते हैं? तो तुम उनके बारे में जल्दी न करो: हम तो बस उनके दिन गिन रहे हैं। जिस दिन हम अल्लाह के प्रति सचेत रहने वालों को रहमान के सामने सम्मानित मेहमानों की तरह इकट्ठा करेंगे, और अपराधियों को प्यासे रेवड़ की तरह जहन्नम की ओर हाँकेंगे, किसी को सिफ़ारिश का अधिकार न होगा, सिवाय उसके जिसने रहमान से कोई अह्द ले लिया हो। और वे कहते हैं, "रहमान ने बेटा बना लिया है।" निश्चय ही तुम बड़ी भारी बात गढ़ लाए हो: क़रीब है कि इससे आसमान फट पड़ें, ज़मीन शक़ हो जाए, और पहाड़ टूटकर गिर पड़ें, इस पर कि उन्होंने रहमान के लिए बेटा ठहराया। और रहमान की शान के लायक़ नहीं कि वह कोई बेटा बनाए: आसमानों और ज़मीन में जो कोई भी है वह रहमान के सामने बन्दा बनकर ही आने वाला है। उसने उन्हें गिन रखा है और उनकी ठीक-ठीक गिनती कर रखी है, और उनमें से हर एक क़ियामत के दिन उसके पास अकेला आएगा। (81–95)

निश्चय ही जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, रहमान उनके लिए मुहब्बत पैदा कर देगा। तो ऐ नबी, हमने इसे तुम्हारी ज़बान में बस इसलिए आसान किया है कि तुम इसके द्वारा अल्लाह के प्रति सचेत रहने वालों को शुभ-सूचना दो, और इसके द्वारा झगड़ालू लोगों को सचेत करो। और हम इनसे पहले कितनी ही नस्लें हलाक कर चुके हैं! क्या तुम उनमें से किसी एक की भी आहट पाते हो, या उनकी कोई भनक तक सुनते हो? (96–98)

# 20. ता हा (ता हा)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ता हा। (1)

ऐ नबी, हमने तुम पर यह क़ुरआन इसलिए नहीं उतारा कि तुम मशक़्क़त में पड़ जाओ, बल्कि बस उसकी याददिहानी के लिए जो अल्लाह से डरता है: यह उसकी ओर से उतारा गया है जिसने ज़मीन और ऊँचे आसमान पैदा किए, वह रहमान, जो अर्श पर विराजमान है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और जो कुछ इन दोनों के बीच है, और जो कुछ मिट्टी के नीचे है। और तुम चाहे बात पुकारकर कहो या नहीं, वह तो भेद को भी जानता है और उसे भी जो उससे ज़्यादा छिपा हुआ है। अल्लाह—उसके सिवा कोई इलाह नहीं; सबसे अच्छे नाम उसी के हैं। (2–8)

और क्या तुम तक मूसा की ख़बर पहुँची है? जब उसने एक आग देखी, तो अपने घर वालों से कहा, "यहीं ठहरो। मुझे एक आग दिखाई दी है; शायद मैं उसमें से तुम्हारे लिए कोई अंगारा ले आऊँ, या उस आग के पास कोई राह पा लूँ।" फिर जब वह उसके पास पहुँचा, तो पुकारा गया: "ऐ मूसा! मैं ही तुम्हारा रब हूँ। अपनी जूतियाँ उतार दो: तुम तुवा की पाक घाटी में हो। और मैंने तुम्हें चुन लिया है, तो जो कुछ वह्य किया जाता है उसे सुनो। निश्चय ही मैं ही अल्लाह हूँ; मेरे सिवा कोई इलाह नहीं। तो मेरी ही इबादत करो, और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम करो। वह घड़ी निश्चय ही आने वाली है—मैं उसे क़रीब-क़रीब छिपाए ही रखता हूँ—ताकि हर जान को उसकी कोशिश का बदला दिया जाए। तो जो उस पर ईमान नहीं रखता और अपनी इच्छा के पीछे चलता है वह तुम्हें उससे रोक न दे, वरना तुम हलाक हो जाओगे। (9–16)

और ऐ मूसा, यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है?" उसने कहा, "यह मेरी लाठी है। मैं इस पर टेक लगाता हूँ, और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ, और इसमें मेरे और भी काम हैं।" उसने कहा, "ऐ मूसा, इसे डाल दो।" तो उसने उसे डाल दिया—और वह एकाएक एक साँप थी, जो दौड़ रहा था। उसने कहा, "इसे पकड़ लो और डरो नहीं: हम इसे इसकी पहली हालत पर लौटा देंगे। और अपना हाथ अपनी बग़ल में दबाओ: वह बिना किसी ऐब के सफ़ेद चमकता हुआ निकलेगा—यह दूसरी निशानी है, ताकि हम तुम्हें अपनी बड़ी-बड़ी निशानियों में से कुछ दिखाएँ। फ़िरऔन के पास जाओ: वह हर हद से गुज़र गया है।" उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मेरे लिए मेरा सीना खोल दे, और मेरा काम मेरे लिए आसान कर दे, और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे, ताकि वे मेरी बात समझ सकें; और मेरे लिए मेरे घर वालों में से एक मददगार ठहरा दे—हारून को, जो मेरा भाई है। उसके द्वारा मेरी कमर मज़बूत कर दे, और उसे मेरे काम में शरीक कर दे, ताकि हम तेरी ख़ूब तसबीह करें और तुझे ख़ूब याद करें: निश्चय ही तू हमें बराबर देख रहा है।" (17–35)

उसने कहा, "ऐ मूसा, तुम्हारी माँग तुम्हें दे दी गई। और हम तुम पर एक बार और भी एहसान कर चुके हैं, जब हमने तुम्हारी माँ के जी में वह बात डाली जो डाली जानी थी: इसे सन्दूक़ में रख दो, फिर उसे दरिया में

डाल दो; दरिया उसे किनारे पर ला डालेगा, और उसे वह उठा लेगा जो मेरा भी दुश्मन है और उसका भी दुश्मन। और मैंने अपनी ओर से तुम पर मुहब्बत डाल दी, और इसलिए कि तुम मेरी आँखों के सामने पाले जाओ। जब तुम्हारी बहन चलती हुई आई और बोली: क्या मैं तुम्हें उसका पता बताऊँ जो इसकी परवरिश करे? इस तरह हमने तुम्हें तुम्हारी माँ के पास लौटा दिया, ताकि उसकी आँख ठंडी रहे और वह दुखी न हो। और तुमने एक आदमी को मार डाला था, तो हमने तुम्हें उस ग़म से छुटकारा दिया, और तुम्हें तरह-तरह की आज़माइशों से आज़माया। फिर तुम कई वर्ष मदयन वालों में ठहरे रहे; फिर ऐ मूसा, तुम ठहराए हुए अन्दाज़े के मुताबिक़ यहाँ आ गए। और मैंने तुम्हें अपने लिए चुन लिया है। जाओ, तुम और तुम्हारा भाई, मेरी निशानियों के साथ, और मेरी याद में सुस्ती न करना। तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ: वह हर हद से गुज़र गया है। और उससे नर्म बात कहना, शायद वह नसीहत पकड़े या डर जाए।" (36–44)

दोनों ने कहा, "ऐ हमारे रब, हमें डर है कि वह हम पर ज़्यादती में जल्दी करेगा, या हर हद से गुज़र जाएगा।" उसने कहा, "डरो नहीं। मैं तुम दोनों के साथ हूँ: सुनता भी हूँ और देखता भी हूँ। तो उसके पास जाओ और कहो: हम दोनों तेरे रब के भेजे हुए हैं, तो इसराईल की सन्तान को हमारे साथ भेज दे और उन्हें यातना न दे। हम तेरे पास तेरे रब की ओर से एक निशानी लेकर आए हैं, और सलामती है उसके लिए जो मार्गदर्शन की पैरवी करे। हमारी ओर वह्य की गई है कि यातना उस पर है जो झुठलाए और मुँह मोड़े।" (45–48)

वह बोला, "तो ऐ मूसा, तुम दोनों का रब कौन है?" उसने कहा, "हमारा रब वह है जिसने हर चीज़ को उसकी बनावट दी फिर उसे राह दिखाई।" वह बोला, "तो फिर अगली नस्लों का क्या हाल है?" उसने कहा, "उनका ज्ञान मेरे रब के पास एक किताब में है: मेरा रब न चूकता है न भूलता है। वही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया, उसमें तुम्हारे लिए रास्ते निकाले, और आसमान से पानी उतारा।" फिर उससे हमने तरह-तरह की पैदावार के जोड़े निकाले: खाओ, और अपने चौपायों को चराओ। निश्चय ही इसमें बुद्धि वालों के लिए निशानियाँ हैं। इसी से हमने तुम्हें पैदा किया, और इसी में हम तुम्हें लौटाएँगे, और इसी से तुम्हें एक बार फिर निकालेंगे। (49–55)

और हमने उसे अपनी सारी निशानियाँ दिखाईं, मगर उसने झुठलाया और इनकार किया। वह बोला, "ऐ मूसा, क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि अपने जादू से हमें हमारी ज़मीन से निकाल दो? तो हम भी तुम्हारे मुक़ाबले में वैसा ही जादू ज़रूर लाएँगे। तो हमारे और अपने बीच एक वादा ठहरा लो, जिसके ख़िलाफ़ न हम करें न तुम, एक बीच की जगह पर।" उसने कहा, "तुम्हारा वादा मेले का दिन है, और यह कि लोग दिन चढ़े इकट्ठे कर लिए जाएँ।" (56–59)

तो फ़िरऔन पलटा, अपनी सारी चालें समेटीं, फिर आ गया। मूसा ने उनसे कहा, "तुम्हारी कमबख़्ती! अल्लाह पर झूठ न गढ़ो, वरना वह किसी यातना से तुम्हारा सफ़ाया कर देगा। और जिसने झूठ गढ़ा वह नाकाम हुआ।" तो वे अपने मामले में आपस में झगड़ने लगे, और चुपके-चुपके मशविरा किया। वे बोले, "ये दोनों निश्चय ही जादूगर हैं, जो चाहते हैं कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से निकाल दें, और तुम्हारे

मिसाली तौर-तरीक़े को मिटा दें। तो अपनी चाल पक्की कर लो, फिर क़तार बाँधकर आओ: आज जो ग़ालिब रहा वही सफल हुआ।" वे बोले, "ऐ मूसा, या तो तुम डालो, या हम ही पहले डालने वाले बनें।" उसने कहा, "नहीं, तुम्हीं डालो।" फिर एकाएक उनकी रस्सियाँ और लाठियाँ उनके जादू के कारण उसे ऐसी लगने लगीं कि दौड़ रही हैं। तो मूसा ने अपने जी में डर महसूस किया। हमने कहा, "डरो नहीं: तुम्हीं ग़ालिब रहोगे। और जो तुम्हारे दाहिने हाथ में है उसे डाल दो: वह उस सबको निगल जाएगा जो इन्होंने बनाया है। इन्होंने जो कुछ बनाया है वह बस जादूगर का फ़रेब है, और जादूगर कहीं भी जाए सफल नहीं होता।" (60–69)

तो जादूगर सजदे में गिरा दिए गए, और बोले, "हम हारून और मूसा के रब पर ईमान लाए।" वह बोला, "तुम इस पर ईमान ले आए इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ? ज़रूर यही तुम्हारा बड़ा है, जिसने तुम्हें जादू सिखाया। तो मैं तुम्हारे हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं से ज़रूर कटवाऊँगा, और तुम्हें खजूर के तनों पर सूली दूँगा, और तुम ज़रूर जान लोगे कि हममें से किसकी यातना ज़्यादा सख़्त और ज़्यादा देर रहने वाली है!" वे बोले, "हम तुझे हरगिज़ उन खुले प्रमाणों पर तरजीह न देंगे जो हमारे पास आ चुके हैं, और न उस पर जिसने हमें पैदा किया। तो तू जो फ़ैसला करना चाहता है कर डाल: तू बस इसी दुनिया की ज़िन्दगी का फ़ैसला कर सकता है। हम तो अपने रब पर ईमान ले आए, ताकि वह हमारी ख़ताएँ क्षमा कर दे और वह जादू भी जिस पर तूने हमें मजबूर किया। और अल्लाह ही बेहतर है, और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला।" (70–73)

निश्चय ही जो कोई अपने रब के पास अपराधी बनकर आएगा—उसके लिए जहन्नम है, जिसमें वह न मरेगा न जिएगा; और जो कोई उसके पास ईमान वाला बनकर आएगा, जिसने अच्छे कर्म किए होंगे—तो ऐसे लोगों के लिए ऊँचे दर्जे हैं: हमेशा रहने वाली नेमत के बाग़, जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वे सदा-सदा रहेंगे। और यह बदला है उसका जो पाकीज़गी अपनाए। (74–76)

और हमने मूसा की ओर वह्य की: "मेरे बन्दों को रातों-रात ले चलो, और उनके लिए समुद्र में एक सूखी राह निकाल लो; न तुम्हें पकड़े जाने का कोई ख़ौफ़ हो, और न कोई डर।" फिर फ़िरऔन ने अपनी फ़ौजों के साथ उनका पीछा किया, तो समुद्र ने उन्हें पूरी तरह ढाँप लिया। और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया, और उन्हें राह न दिखाई। (77–79)

ऐ इसराईल की सन्तान, हमने तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से छुटकारा दिया, और तूर के दाहिने किनारे पर तुमसे वादा ठहराया, और तुम पर मन्न और सलवा उतारा: "खाओ उन अच्छी चीज़ों में से जो हमने तुम्हें दी हैं, मगर इसमें हद से न बढ़ो, वरना तुम पर मेरा ग़ज़ब उतरेगा; और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा वह निश्चय ही बरबाद हुआ। और निश्चय ही मैं उसके लिए बड़ा क्षमाशील हूँ जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे, फिर सीधी राह पर जमा रहे।" (80–82)

"और ऐ मूसा, किस चीज़ ने तुम्हें अपनी क़ौम से आगे जल्दी ले आने पर उभारा?" उसने कहा, "वे मेरे पीछे-पीछे ही हैं, और ऐ मेरे रब, मैं तेरी ओर जल्दी चला आया, ताकि तू राज़ी हो जाए।" उसने कहा, "तो हमने

तुम्हारे पीछे तुम्हारी क़ौम को आज़माइश में डाल दिया, और सामिरी ने उन्हें भटका दिया।" तो मूसा ग़ुस्से और रंज में भरा हुआ अपनी क़ौम की ओर लौटा। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, क्या तुम्हारे रब ने तुमसे एक अच्छा वादा नहीं किया था? तो क्या तुम पर मुद्दत बहुत लम्बी हो गई, या तुमने चाहा कि तुम पर तुम्हारे रब का ग़ज़ब उतरे, कि तुमने मुझसे किया हुआ वादा तोड़ दिया?" वे बोले, "हमने आपसे किया हुआ वादा अपने बस से नहीं तोड़ा; बल्कि हम पर लोगों के ज़ेवरों के बोझ लाद दिए गए थे, तो हमने उन्हें आग में फेंक दिया, और इसी तरह सामिरी ने भी डाला।" फिर उसने उनके लिए एक बछड़ा निकाल खड़ा किया, एक धड़ जिसमें से गाय की-सी आवाज़ निकलती थी; तो वे बोले, "यही तुम्हारा इलाह है और मूसा का भी इलाह, मगर वह भूल गया।" क्या वे न देखते थे कि वह न उनकी किसी बात का जवाब देता है, और न उनके किसी नुक़सान या फ़ायदे का अधिकार रखता है? और हारून उनसे पहले ही कह चुका था, "ऐ मेरी क़ौम, तुम तो बस इसके द्वारा आज़माइश में डाले गए हो। और निश्चय ही तुम्हारा रब रहमान है, तो मेरे पीछे चलो और मेरा हुक्म मानो।" वे बोले, "हम तो इसी से लगे बैठे रहेंगे यहाँ तक कि मूसा हमारे पास लौट आए।" (83–91)

मूसा ने कहा, "ऐ हारून, जब तुमने देखा कि ये भटक गए हैं, तो तुम्हें किस चीज़ ने रोका कि मेरे पीछे चले आते? क्या तुमने मेरे हुक्म की अवज्ञा की?" वह बोला, "ऐ मेरी माँ के बेटे, मेरी दाढ़ी और मेरा सिर न पकड़ो! मुझे डर हुआ कि तुम कहोगे: तुमने इसराईल की सन्तान में फूट डाल दी, और मेरी बात का पास न रखा।" मूसा ने कहा, "और ऐ सामिरी, तेरा क्या मामला है?" वह बोला, "मैंने वह चीज़ देखी जो इन्होंने नहीं देखी: तो मैंने रसूल के नक़्शे-क़दम से एक मुट्ठी मिट्टी उठा ली और उसे डाल दिया। और मेरे मन ने मुझे यही सुझाया।" मूसा ने कहा, "दूर हो! अब ज़िन्दगी भर तेरा यही कहना होगा: मुझे न छूना। और तेरे लिए एक वादा है जो तुझसे टलेगा नहीं। और अब अपने उस इलाह को देख, जिससे तू लगा बैठा रहा: हम उसे ज़रूर जला डालेंगे, फिर उसे राख करके समुद्र में बिखेर देंगे। तुम्हारा इलाह तो बस अल्लाह ही है, जिसके सिवा कोई इलाह नहीं; वह अपने ज्ञान से हर चीज़ को घेरे हुए है।" (92–98)

ऐ नबी, इसी तरह हम तुम्हें उन बातों की कुछ ख़बरें सुनाते हैं जो गुज़र चुकी हैं; और हमने तुम्हें अपने पास से एक याददिहानी दी है। जो कोई इससे मुँह मोड़ेगा वह क़ियामत के दिन एक बोझ उठाएगा, वे उसी के नीचे सदैव रहेंगे—और क़ियामत के दिन उनके लिए यह क्या ही बुरा बोझ होगा, जिस दिन सूर फूँका जाएगा, और हम अपराधियों को इस हाल में इकट्ठा करेंगे कि उनकी आँखें पथराई हुई होंगी, वे आपस में चुपके-चुपके कहते होंगे, "तुम बस दस दिन ठहरे।" हम ख़ूब जानते हैं जो कुछ वे कहेंगे, जब उनमें सबसे अच्छी राह वाला कहेगा, "तुम बस एक दिन ठहरे।" (99–104)

और वे तुमसे पहाड़ों के बारे में पूछते हैं। कह दो, "मेरा रब उन्हें धूल बनाकर उड़ा देगा, और ज़मीन को चटियल मैदान करके छोड़ेगा, जिसमें तुम न कोई टेढ़ देखोगे न ऊँच-नीच।" उस दिन वे पुकारने वाले के पीछे चले आएँगे, जिससे कोई इधर-उधर न हो सकेगा; और रहमान के आगे आवाज़ें दब जाएँगी, तो तुम एक हलकी-सी आहट के सिवा कुछ न सुनोगे। उस दिन सिफ़ारिश कुछ काम न आएगी, सिवाय उसके जिसे रहमान इजाज़त दे, और जिसकी बात उसे पसन्द हो। वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो

कुछ उनके पीछे है, और वे अपने ज्ञान से उसे घेर नहीं सकते। और चेहरे उस सदा जीवित, सबको थामने वाले के आगे झुक जाएँगे; और जो ज़ुल्म का बोझ उठाए हुए होगा वह नाकाम हुआ। और जो कोई अच्छे कर्म करे, और वह ईमान वाला हो, उसे न किसी बेइनसाफ़ी का डर होगा न हक़ मारे जाने का। और इसी तरह हमने इसे अरबी क़ुरआन बनाकर उतारा है, और इसमें तरह-तरह से चेतावनियाँ बयान की हैं, ताकि वे अल्लाह के प्रति सचेत हो जाएँ, या यह उनमें याद जगा दे। तो बहुत ऊँचा है अल्लाह, सच्चा बादशाह! और क़ुरआन के साथ जल्दी न करो इससे पहले कि तुम्हारी ओर उसकी वह्य पूरी कर दी जाए, और कहो, "ऐ मेरे रब, मुझे ज्ञान में और बढ़ा।" और हमने इससे पहले आदम से एक अह्द लिया था, मगर वह भूल गया; और हमने उसमें पक्का इरादा न पाया। और जब हमने फ़रिश्तों से कहा, "आदम के आगे सजदा करो," तो उन्होंने सजदा किया—सिवाय इबलीस के, उसने इनकार किया। तो हमने कहा, "ऐ आदम, यह तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का दुश्मन है। तो कहीं यह तुम दोनों को जन्नत से निकलवा न दे, कि तुम मशक़्क़त में पड़ जाओ। यहाँ तुम्हें यह हासिल है कि न भूखे रहो न नंगे, और न यहाँ तुम्हें प्यास लगे, न धूप सताए।" मगर शैतान ने उसके मन में वसवसा डाला, कहा, "ऐ आदम, क्या मैं तुम्हें हमेशगी का पेड़ बताऊँ, और वह बादशाही जो कभी पुरानी न हो?" तो दोनों ने उसमें से खा लिया, और उनकी शर्मगाहें उन पर खुल गईं, और वे अपने ऊपर जन्नत के पत्ते जोड़-जोड़कर रखने लगे। और आदम ने अपने रब की अवज्ञा की, तो राह से हट गया। फिर उसके रब ने उसे चुन लिया, उस पर दया-दृष्टि की, और उसे राह दिखाई। उसने कहा, "तुम दोनों इकट्ठे यहाँ से उतर जाओ, तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो। फिर जब मेरी ओर से तुम्हारे पास मार्गदर्शन आए, तो जो मेरे मार्गदर्शन की पैरवी करेगा वह न भटकेगा, न बदबख़्ती में पड़ेगा; और जो मेरी याद से मुँह मोड़ेगा उसकी ज़िन्दगी तंग होगी, और क़ियामत के दिन हम उसे अंधा उठाएँगे।" वह कहेगा, "ऐ मेरे रब, तूने मुझे अंधा क्यों उठाया, जबकि मैं तो आँखों वाला था?" वह कहेगा, "ऐसा ही है। हमारी आयतें तेरे पास आई थीं तो तूने उन्हें भुला दिया; और उसी तरह आज तू भुला दिया जाएगा।" और इसी तरह हम उसे बदला देते हैं जो हद से गुज़र जाए और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए: और आख़िरत की यातना तो निश्चय ही कहीं ज़्यादा सख़्त और ज़्यादा देर रहने वाली है। तो क्या उन्हें इस बात ने राह नहीं दिखाई कि हम उनसे पहले कितनी ही नस्लें हलाक कर चुके हैं, जिनकी बस्तियों में ये चलते-फिरते हैं? निश्चय ही इसमें बुद्धि वालों के लिए निशानियाँ हैं। (105–128)

और अगर तुम्हारे रब की ओर से एक बात पहले न हो चुकी होती, और एक ठहराई हुई अवधि न होती, तो यातना आ चिमटती। तो जो कुछ वे कहते हैं उस पर सब्र करो, और सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले अपने रब की हम्द के साथ तसबीह करो; और रात की घड़ियों में भी तसबीह करो और दिन के किनारों पर भी, ताकि तुम राज़ी हो जाओ। और अपनी आँखें उस चीज़ की ओर न पसारो जो हमने उनमें से कुछ गिरोहों को बरतने के लिए दी है, दुनिया की ज़िन्दगी की रौनक़, ताकि हम उसमें उन्हें आज़माएँ: और तुम्हारे रब की दी हुई रोज़ी बेहतर है और ज़्यादा बाक़ी रहने वाली। और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो, और ख़ुद भी उस पर जमे रहो। हम तुमसे कोई रोज़ी नहीं माँगते; रोज़ी तो हम ही तुम्हें देते हैं। और अच्छा अंजाम अल्लाह के प्रति सचेतता ही के लिए है। (129–132)

और वे कहते हैं, “यह अपने रब की ओर से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाता?” क्या उनके पास उसका खुला प्रमाण नहीं आ चुका जो अगले सहीफ़ों में है? और अगर हम इससे पहले उन्हें किसी यातना से हलाक कर देते, तो वे कहते, “ऐ हमारे रब, तूने हमारी ओर कोई रसूल क्यों न भेजा, कि हम ज़लील और रुसवा होने से पहले तेरी आयतों की पैरवी कर लेते?” कह दो, “हर एक इन्तिज़ार में है, तो तुम भी इन्तिज़ार करो: जल्द ही तुम जान लोगे कि सीधी राह वाले कौन हैं, और कौन राह पर है।” (133–135)

# 21. नबी (अल-अंबिया)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

लोगों के हिसाब का समय क़रीब आ लगा है, फिर भी वे बेपरवाही में मुँह फेरे हुए हैं। उनके पास उनके रब की ओर से जो भी नई याददिहानी आती है वे उसे खेलते हुए ही सुनते हैं, उनके दिल कहीं और लगे होते हैं। और ये ज़ालिम चुपके-चुपके कानाफूसी करते हैं: "यह तो बस तुम्हारे ही जैसा एक इनसान है। तो क्या तुम आँखों देखते जादू के पास जाओगे?" उसने कहा, "मेरा रब हर बात को जानता है जो आसमान और ज़मीन में कही जाए: और वही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।" बल्कि वे कहते हैं, "ये तो उलझे हुए ख़्वाब हैं!" बल्कि—"इसने इसे गढ़ लिया है!" बल्कि—"यह तो एक कवि है! तो यह हमारे पास कोई निशानी लाए, जैसे अगले रसूल निशानी के साथ भेजे गए थे।" इनसे पहले कोई बस्ती भी, जिसे हमने हलाक किया, ईमान न लाई; तो क्या ये ईमान लाएँगे? और ऐ नबी, हमने तुमसे पहले भी बस मर्द ही भेजे जिनकी ओर हम वह्य करते थे—तो याददिहानी वालों से पूछ लो अगर तुम नहीं जानते—और हमने उन्हें ऐसे शरीर नहीं दिए थे कि खाना न खाते हों, और न वे सदा रहने वाले थे। फिर हमने उनसे किया हुआ वादा सच्चा कर दिखाया: तो हमने उन्हें और जिसे हमने चाहा बचा लिया, और हद से गुज़र जाने वालों को हलाक कर दिया। (1–9)

निश्चय ही हमने तुम्हारी ओर एक ऐसी किताब उतारी है जिसमें तुम्हारी ही याददिहानी है। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? और कितनी ही बस्तियाँ, जो ज़ालिम थीं, हमने तोड़कर रख दीं, और उनके बाद दूसरे लोग उठा खड़े किए! फिर जब उन्होंने हमारी यातना की आहट पाई, तो वे एकाएक वहाँ से भागने लगे। "भागो मत! लौट चलो अपने उसी ऐश की ओर जिसमें तुम पड़े थे और अपने घरों की ओर; शायद तुमसे कुछ पूछा जाए।" वे बोले, "हाय हमारी कमबख़्ती! निश्चय ही हम ज़ालिम थे।" फिर उनकी यही पुकार चलती रही यहाँ तक कि हमने उन्हें कटी हुई खेती, बुझी हुई राख कर दिया। (10–15)

और हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के बीच है खेल के तौर पर नहीं पैदा किया। अगर हम कोई खेल-तमाशा बनाना चाहते, तो उसे अपने ही पास से बना लेते—अगर हमें ऐसा करना ही होता। बल्कि हम सत्य को बातिल पर दे मारते हैं, तो वह उसका सिर कुचल देता है, और वह एकाएक मिट जाता है। और तुम्हारे लिए तबाही है उन बातों के कारण जो तुम अल्लाह के बारे में बनाते हो! और जो कोई आसमानों और ज़मीन में है सब उसी का है। और जो उसके पास हैं वे उसकी इबादत से न घमंड करते हैं, न थकते हैं; वे रात-दिन उसकी तसबीह करते हैं, और दम नहीं लेते। (16–20)

या इन्होंने ज़मीन में से ऐसे इलाह बना लिए हैं जो मुर्दों को उठा खड़ा करते हों? अगर आसमानों या ज़मीन में अल्लाह के सिवा और भी इलाह होते, तो ये दोनों ⌜जहान⌝ ज़रूर बिगड़ जाते। तो पाक है अल्लाह, अर्श का रब, उन बातों से बहुत ऊँचा जो ये बनाते हैं।[21] जो कुछ वह करता है उसके बारे में उससे पूछा नहीं

[21] हमारे ब्रह्मांड की व्यवस्था एकेश्वरवाद की, यानी केवल एक ईश्वरीय इरादे की, गवाही देती है।

जाता, मगर इनसे पूछा जाएगा। या इन्होंने उसके सिवा दूसरे इलाह बना लिए हैं? कह दो, “अपनी दलील लाओ। यह उनकी याददिहानी है जो मेरे साथ हैं और उनकी याददिहानी जो मुझसे पहले थे।” मगर उनमें से अधिकतर सत्य को नहीं जानते, इसलिए मुँह फेरे हुए हैं। और हमने तुमसे पहले जो भी रसूल भेजा उसकी ओर यही वह्य की: “मेरे सिवा कोई इलाह नहीं, तो मेरी ही इबादत करो।” और वे कहते हैं, “रहमान ने बेटा बना लिया है।” वह पाक है! बल्कि वे तो इज़्ज़त वाले बन्दे हैं; वे बात में उससे आगे नहीं बढ़ते, और उसी के हुक्म पर काम करते हैं। वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है; और वे बस उसी के लिए सिफ़ारिश करते हैं जिससे वह राज़ी हो, और वे उसके भय से काँपते रहते हैं। और उनमें से जो कोई यह कहे, “मैं उसके सिवा एक इलाह हूँ,” तो उसे हम जहन्नम का बदला देंगे: हम ज़ालिमों को ऐसा ही बदला देते हैं। (21–29)

क्या सत्य के इनकारियों ने नहीं देखा कि आसमान और ज़मीन कभी आपस में जुड़े हुए एक ही पिंड थे, फिर हमने उन्हें अलग-अलग कर दिया, और हमने पानी से हर ज़िन्दा चीज़ बनाई? तो क्या फिर भी वे ईमान नहीं लाते?[22] और हमने ज़मीन में जमे हुए पहाड़ रख दिए कि वह उन्हें लेकर डगमगाए नहीं, और उसमें रास्तों के तौर पर खुले दर्रे बनाए, ताकि वे राह पा सकें। और हमने आसमान को एक सुरक्षित छत बनाया—फिर भी वे उसकी निशानियों से मुँह फेरे हुए हैं।[23] और वही है जिसने रात और दिन, और सूरज और चाँद पैदा किए, हर एक एक मदार में तैर रहा है।[24] (30–33)

और ऐ नबी, हमने तुमसे पहले भी किसी इनसान को हमेशगी नहीं दी: तो अगर तुम मर गए, तो क्या ये हमेशा जीते रहेंगे? हर जान को मौत का मज़ा चखना है। और हम तुम्हें बुराई और भलाई से आज़माइश के तौर पर जाँचते हैं, और हमारी ही ओर तुम लौटाए जाओगे। और जब सत्य के इनकारी तुम्हें देखते हैं, तो बस तुम्हारा मज़ाक़ ही बनाते हैं: “क्या यही है वह जो तुम्हारे इलाहों का ज़िक्र करता है?”—जबकि वे ख़ुद रहमान के ज़िक्र के इनकारी हैं। (34–36)

इनसान जल्दबाज़ी से बना है। मैं जल्द ही तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाऊँगा, तो मुझसे जल्दी न मचाओ। और वे कहते हैं, “यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो?” काश सत्य के इनकारी उस समय को जानते जब वे न अपने चेहरों से आग को रोक सकेंगे न अपनी पीठों से, और न उन्हें कोई मदद मिलेगी! बल्कि वह

---

ईश्वरीय एकता की बनावट: क़ुरआनी एकेश्वरवाद की एक वैज्ञानिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस
ईश्वरीय एकता, ब्रह्मांडीय व्यवस्था और सृष्टि का व्याकरण: क़ुरआन 21:22, 23:91 और 17:41–44 की एक वैज्ञानिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस

[22] नबी मुहम्मद इस गहरी वैज्ञानिक हक़ीक़त को संयोग से नहीं जान सकते थे। बहुत-सी दूसरी आयतों की तरह यह आयत भी एक सब कुछ जानने वाले स्रोत का पता देती है। यही बात 24:45 और 25:54 में भी आई है।

[23] **शानदार क़ुरआन: ‘हमने आसमान को एक सुरक्षित छत बनाया’**

[24] **शानदार क़ुरआन 21:30–33 – वैज्ञानिक और धर्मशास्त्रीय अन्तर्दृष्टियाँ – 5 मिनट में**
**क़ुरआन में आसमानी निशानियाँ: एक रूहानी और वैज्ञानिक चिन्तन**

उन पर अचानक आएगी और उन्हें हक्का-बक्का कर देगी; फिर न वे उसे फेर सकेंगे, और न उन्हें मुहलत दी जाएगी। (37–40)

और तुमसे पहले भी रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया, तो उनमें से जिन्होंने हँसी उड़ाई थी उन्हें उसी चीज़ ने आ घेरा जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे। कह दो, "कौन है जो रात और दिन में रहमान से तुम्हारी हिफ़ाज़त करता है?" बल्कि वे अपने रब की याद से मुँह फेरे हुए हैं। या उनके कुछ ऐसे इलाह हैं जो हमारे मुक़ाबले में उन्हें बचा लें? वे तो ख़ुद अपनी मदद नहीं कर सकते, और न हमारे मुक़ाबले में उनका कोई साथ दे सकता है। बल्कि हमने इन्हें और इनके बाप-दादा को जीवन का सुख भोगने दिया यहाँ तक कि उन पर लम्बी मुद्दत गुज़र गई। तो क्या वे नहीं देखते कि हम ज़मीन की ओर बढ़े चले आ रहे हैं, उसे उसके किनारों से घटाते हुए? तो क्या फिर यही ग़ालिब रहेंगे? कह दो, "मैं तो तुम्हें बस वह्य के द्वारा सचेत करता हूँ"—मगर बहरे पुकार नहीं सुनते जब उन्हें सचेत किया जाए। और अगर उन्हें तुम्हारे रब की यातना का एक झोंका भी छू जाए, तो ज़रूर कह उठेंगे, "हाय हमारी कमबख़्ती! निश्चय ही हम ज़ालिम थे।" और क़ियामत के दिन हम इनसाफ़ की तराज़ुएँ रख देंगे, फिर किसी जान पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा। और अगर राई के दाने के बराबर भी कोई चीज़ होगी, तो हम उसे ला हाज़िर करेंगे; और हिसाब लेने के लिए हम काफ़ी हैं। (41–47)

और हमने मूसा और हारून को फ़ुरक़ान दिया, एक रौशनी और याददिहानी उन लोगों के लिए जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं, जो बिन देखे अपने रब से डरते हैं, और जो उस घड़ी के ख़याल से काँपते हैं। और यह एक बरकत वाली याददिहानी है जो हमने उतारी है। तो क्या तुम इसका इनकार करते हो? और इससे बहुत पहले हमने इबराहीम को उसकी सूझ-बूझ दी थी, और हम उसे ख़ूब जानते थे। जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा, "ये कैसी मूर्तियाँ हैं जिनसे तुम लगे बैठे हो?" वे बोले, "हमने अपने बाप-दादा को इन्हीं की इबादत करते पाया है।" उसने कहा, "तब तो तुम भी और तुम्हारे बाप-दादा भी खुली गुमराही में पड़े रहे।" वे बोले, "क्या तुम हमारे पास सच्ची बात लाए हो, या यूँ ही खेल कर रहे हो?" उसने कहा, "नहीं—बल्कि तुम्हारा रब वही है जो आसमानों और ज़मीन का रब है, जिसने उन्हें पैदा किया, और मैं इस पर गवाही देने वालों में से हूँ। और अल्लाह की क़सम, जब तुम पीठ फेरकर चले जाओगे तो मैं तुम्हारे बुतों के साथ ज़रूर एक चाल चलूँगा।" फिर उसने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर डाला, सिवाय उनके सबसे बड़े के, ताकि वे उसकी ओर पलटें। वे बोले, "हमारे इलाहों के साथ यह किसने किया? निश्चय ही वह बड़ा ज़ालिम है।" कुछ बोले, "हमने एक नौजवान को इनका ज़िक्र करते सुना है; उसे इबराहीम कहा जाता है।" वे बोले, "तो उसे लोगों की आँखों के सामने ले आओ, ताकि वे गवाह रहें।" उन्होंने कहा, "ऐ इबराहीम, क्या तुम्हीं ने हमारे इलाहों के साथ यह किया है?" उसने कहा, "नहीं—बल्कि इनके इस सबसे बड़े ने यह किया है। इन्हीं से पूछ लो, अगर ये बोलते हों!" तो वे अपने जी की ओर पलटे और बोले, "असल में ज़ालिम तो तुम्हीं हो।" फिर वे औंधे होकर अपनी पुरानी चाल पर आ गए: "तुम ख़ूब जानते हो कि ये बोलते नहीं।" उसने कहा, "तो क्या तुम अल्लाह को छोड़कर उसकी इबादत करते हो जो न तुम्हें कुछ फ़ायदा दे सकता है न नुक़सान? तुफ़ है तुम पर और उन पर जिनकी तुम अल्लाह को छोड़कर इबादत करते हो! तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?"

वे बोले, "इसे जला डालो, और अपने इलाहों की हिमायत करो, अगर तुम्हें कुछ करना है!" हमने कहा, "ऐ आग, इबराहीम पर ठंडक और सलामती बन जा।" और उन्होंने उसके साथ बुराई का इरादा किया, मगर हमने उन्हीं को सबसे ज़्यादा घाटे में रहने वाला कर दिया। और हम उसे और लूत को बचाकर उस ज़मीन की ओर ले गए जिसमें हमने सारे संसार वालों के लिए बरकत रखी है। और हमने उसे इसहाक़ दिया, और याक़ूब उस पर और इनाम के तौर पर, और हर एक को हमने नेक बनाया। और हमने उन्हें पेशवा बनाया जो हमारे हुक्म से राह दिखाते थे, और हमने उनकी ओर नेक काम करने, नमाज़ क़ायम रखने और ज़कात देने की वह्य की; और वे हमारी ही इबादत करने वाले थे। और लूत को हमने फ़ैसले की शक्ति और ज्ञान दिया, और उसे उस बस्ती से छुटकारा दिया जो गन्दे काम करती थी; निश्चय ही वे बुरे लोग थे, अवज्ञाकारी। और हमने उसे अपनी दयालुता में दाख़िल किया; निश्चय ही वह नेक लोगों में से था। (48–75)

और नूह को भी: इससे बहुत पहले, जब उसने पुकारा, तो हमने उसकी सुन ली, और उसे और उसके घर वालों को बड़ी बेचैनी से छुटकारा दिया। और उन लोगों के मुक़ाबले में हमने उसकी मदद की जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था; निश्चय ही वे बुरे लोग थे, तो हमने उन सबको डुबो दिया। (76–77)

और दाऊद और सुलैमान को भी, जब वे उस खेत के बारे में फ़ैसला कर रहे थे जिसमें रात के समय कुछ लोगों की बकरियाँ जा पड़ी थीं—और हम उनके फ़ैसले को देख रहे थे। तो हमने सुलैमान को वह मामला समझा दिया, और हर एक को हमने फ़ैसले की शक्ति और ज्ञान दिया था। और हमने पहाड़ों और परिन्दों को दाऊद के साथ काम में लगा दिया कि वे तसबीह करें: और यह सब करने वाले हम ही थे। और हमने उसे तुम्हारे लिए ज़िरह बनाने की कारीगरी सिखाई, ताकि वह तुम्हें तुम्हारी लड़ाइयों में बचाए। तो क्या तुम शुक्र अदा करते हो? और सुलैमान के लिए हमने तेज़ हवा को वश में कर दिया, जो उसके हुक्म से उस ज़मीन की ओर चलती थी जिसमें हमने बरकत रखी है—और हम हर चीज़ का ज्ञान रखते हैं—और कुछ शैतानों को भी, जो उसके लिए ग़ोते लगाते थे और इसके सिवा दूसरे काम भी करते थे; और उनकी निगरानी करने वाले हम ही थे। (78–82)

और अय्यूब को भी, जब उसने अपने रब को पुकारा, "मुझे तकलीफ़ आ लगी है, और तू दया करने वालों में सबसे बढ़कर दयावान है।" तो हमने उसकी सुन ली और जो तकलीफ़ उसे थी वह दूर कर दी, और हमने उसे उसके घर वाले लौटा दिए और उनके साथ उतने ही और भी, अपनी ओर से दयालुता के तौर पर और इबादत करने वालों के लिए याददिहानी। और इसमाईल, इदरीस और ज़ुल-किफ़्ल को भी: हर एक सब्र करने वालों में से था। और हमने उन्हें अपनी दयालुता में दाख़िल किया; निश्चय ही वे नेक लोगों में से थे। और मछली वाले को भी, जब वह ग़ुस्से में भरा हुआ चल दिया, और समझा कि हम उस पर तंगी न करेंगे; फिर उसने घुप अँधेरों में पुकारा, "तेरे सिवा कोई इलाह नहीं; तू पाक है! निश्चय ही मैं ज़ालिमों में से था।" तो हमने उसकी सुन ली और उसे ग़म से छुटकारा दिया: और इसी तरह हम ईमान वालों को बचा लेते हैं। और ज़करिया को भी, जब उसने अपने रब को पुकारा, "ऐ मेरे रब, मुझे बे-वारिस न छोड़, और तू सबसे अच्छा वारिस है।" तो हमने उसकी सुन ली, और उसे यह्या दिया, और उसकी पत्नी को उसके लिए बच्चा जनने के

लायक़ कर दिया। निश्चय ही ये सब नेक कामों में दौड़-धूप करते थे; और हमें आस और डर के साथ पुकारते थे, और हमारे आगे झुके रहते थे। और उस औरत को भी जिसने अपनी पाकदामनी की हिफ़ाज़त की: तो हमने उसमें अपनी रूह में से फूँक दिया, और उसे और उसके बेटे को सारे संसारों के लिए एक निशानी बनाया। (83–91)

निश्चय ही तुम्हारा यह समुदाय एक ही समुदाय है, और मैं तुम्हारा रब हूँ, तो मेरी ही इबादत करो। मगर उन्होंने अपने मामले को आपस में टुकड़े-टुकड़े कर डाला; सब हमारी ही ओर लौटने वाले हैं। तो जो कोई अच्छे कर्म करे और वह ईमान वाला हो, उसकी कोशिश की नाक़द्री न होगी: और हम उसे उसके लिए लिख रहे हैं। और जिस बस्ती को हमने हलाक कर दिया उस पर पाबन्दी है: कि उसके लोग लौटकर न आएँगे, यहाँ तक कि जब याजूज और माजूज खोल दिए जाएँगे और वे हर ऊँचाई से उमड़े चले आएँगे, और सच्चा वादा क़रीब आ लगेगा—तब एकाएक सत्य के इनकारियों की आँखें फटी-की-फटी रह जाएँगी: "हाय हमारी कमबख़्ती! हम इससे बेपरवाह रहे; बल्कि हम ज़ालिम थे।" निश्चय ही तुम और वे जिनकी तुम अल्लाह को छोड़कर इबादत करते हो जहन्नम का ईंधन हो: तुम्हें उसी में उतरना है। अगर ये इलाह होते, तो उसमें न उतरते; और सब उसमें सदा-सदा रहेंगे। वहाँ वे चीख़ेंगे-चिल्लाएँगे, और वहाँ वे कुछ न सुनेंगे। (92–100)

मगर जिनके लिए हमारी ओर से सबसे अच्छा बदला पहले ही ठहर चुका है वे उससे दूर रखे जाएँगे; वे उसकी आहट तक न सुनेंगे, और वे अपनी मनचाही चीज़ों में सदा-सदा रहेंगे। वह सबसे बड़ी घबराहट उन्हें दुखी न करेगी, और फ़रिश्ते उनका स्वागत करेंगे: "यही है तुम्हारा वह दिन, जिसका तुमसे वादा किया जाता था।" जिस दिन हम आसमान को यूँ लपेट देंगे जैसे लिखे हुए पन्नों का तूमार लपेटा जाता है। जैसे हमने पहली सृष्टि का आरम्भ किया था, वैसे ही हम उसे दोहराएँगे: यह हमारे ज़िम्मे एक वादा है। निश्चय ही हम यह करके रहेंगे। (101–104)

और हमने याददिहानी के बाद ज़बूर में लिख दिया था कि ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे। निश्चय ही इसमें इबादत करने वाले लोगों के लिए एक सन्देश है। और ऐ नबी, हमने तुम्हें सारे संसारों के लिए बस दयालुता बनाकर भेजा है। कह दो, "मेरी ओर तो बस यही वह्य की जाती है कि तुम्हारा इलाह एक ही इलाह है। तो क्या तुम उसके आगे समर्पण करते हो?" फिर अगर वे मुँह मोड़ें, तो कह दो, "मैंने तुम सबको बराबर ख़बर कर दी है; और मैं नहीं जानता कि जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है वह क़रीब है या दूर। निश्चय ही वह पुकारकर कही हुई बात को भी जानता है, और उसे भी जानता है जो तुम छिपाते हो। और मैं नहीं जानता—शायद यह तुम्हारे लिए एक आज़माइश हो, और एक समय तक का सुख।" उसने कहा, "ऐ मेरे रब, सत्य के साथ फ़ैसला कर दे। और हमारा रब रहमान है, जिससे उन बातों के मुक़ाबले में मदद माँगी जाती है जो तुम बनाते हो।" (105–112)

# 22. हज (अल-हज)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ऐ लोगो, अपने रब के प्रति सचेत रहो: निश्चय ही उस घड़ी का भूकम्प बड़ी भारी चीज़ है। जिस दिन तुम उसे देखोगे, हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी, और हर गर्भवती अपना गर्भ गिरा देगी, और तुम लोगों को नशे में देखोगे, हालाँकि वे नशे में न होंगे—बल्कि अल्लाह की यातना ही बड़ी सख़्त है। और लोगों में कुछ ऐसे हैं जो बिना ज्ञान के अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, और हर सरकश शैतान के पीछे हो लेते हैं, जिसके बारे में लिख दिया गया है कि जो कोई उसे दोस्त बनाएगा, वह उसे गुमराह करके रहेगा और उसे दहकती आग की यातना की राह दिखाएगा। (1–4)

ऐ लोगो, अगर तुम्हें दोबारा उठाए जाने में कोई शक है, तो सोचो कि हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर एक बूँद से, फिर एक चिमटने वाले रूप से, फिर मांस की एक बोटी से, शक्ल वाली भी और बिना शक्ल की भी, ताकि हम तुम पर बात खोल दें। और हम जिसे चाहते हैं एक ठहराई हुई अवधि तक रहमों में ठहराए रखते हैं; फिर तुम्हें बच्चा बनाकर निकालते हैं; फिर तुम्हें बढ़ने देते हैं ताकि तुम अपनी पूरी जवानी को पहुँचो। और तुममें से कोई पहले ही उठा लिया जाता है, और कोई उम्र के सबसे निकम्मे हिस्से तक लौटा दिया जाता है, ताकि सब कुछ जानने के बाद कुछ भी न जाने। और तुम ज़मीन को सूखी पड़ी देखते हो; फिर जब हम उस पर पानी उतारते हैं, तो वह लहलहा उठती है और उभरती है और हर तरह की ख़ुशनुमा पैदावार उगाती है। यह इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है: और वही मुर्दों को ज़िन्दा करता है, और वही हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है; और इसलिए कि वह घड़ी आने वाली है, जिसमें कोई सन्देह नहीं, और अल्लाह उन्हें उठाएगा जो क़ब्रों में हैं। और लोगों में कोई ऐसा भी है जो बिना ज्ञान के, बिना मार्गदर्शन के, और बिना किसी रौशन किताब के अल्लाह के बारे में झगड़ता है, घमंड से पहलू मोड़े हुए, ताकि दूसरों को अल्लाह की राह से भटकाए। उसके लिए दुनिया में रुसवाई है, और क़ियामत के दिन हम उसे जलने की यातना चखाएँगे: “यह उसका बदला है जो तेरे अपने हाथों ने आगे भेजा; और अल्लाह अपने बन्दों पर कभी ज़ुल्म करने वाला नहीं।” (5–10)

और लोगों में कोई ऐसा भी है जो बिलकुल किनारे पर रहकर अल्लाह की इबादत करता है: अगर उसे भलाई पहुँची, तो उससे मुतमइन हो गया, और अगर कोई आज़माइश आ पड़ी, तो उलटा अपनी पुरानी चाल पर फिर गया। उसने दुनिया भी खोई और आख़िरत भी—यही खुला घाटा है। वह अल्लाह को छोड़कर उसे पुकारता है जो न उसे नुक़सान पहुँचा सकता है न फ़ायदा—यही परले दर्जे की गुमराही है। वह उसे पुकारता है जिसका नुक़सान उसके फ़ायदे से ज़्यादा क़रीब है: क्या ही बुरा सरपरस्त है, और क्या ही बुरा साथी! निश्चय ही अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं। निश्चय ही अल्लाह जो चाहता है करता है। जो कोई यह समझता हो कि अल्लाह दुनिया और आख़िरत में नबी की मदद न करेगा, उसे चाहिए कि आसमान तक एक रस्सी ताने, फिर अपने आप

को काट ले, और देखे कि क्या उसकी यह तदबीर उस चीज़ को दूर कर देती है जो उसे ग़ुस्सा दिलाती है। और इसी तरह हमने इसे खुली-खुली निशानियाँ बनाकर उतारा है; और यह कि अल्लाह जिसे चाहता है राह दिखाता है। (11–16)

निश्चय ही जो लोग ईमान लाए, और यहूदी, साबी, ईसाई, मजूसी, और वे जिन्होंने अल्लाह के साथ साझी ठहराए—अल्लाह क़ियामत के दिन उनके बीच फ़ैसला कर देगा। निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है। क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ही के आगे सजदा करते हैं वे सब जो आसमानों में हैं और वे सब जो ज़मीन में हैं—सूरज, चाँद, तारे, पहाड़, पेड़, जानदार, और बहुत-से इनसान? और बहुत-से ऐसे हैं जिन पर यातना साबित हो चुकी। और जिसे अल्लाह ज़लील करे, उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं। निश्चय ही अल्लाह जो चाहता है करता है। ये दो फ़रीक़ हैं जो अपने रब के बारे में झगड़े। तो जिन्होंने सत्य का इनकार किया, उनके लिए आग के कपड़े काटे जाएँगे; उनके सिरों के ऊपर से खौलता हुआ पानी उँडेला जाएगा, जिससे जो कुछ उनके पेटों में है वह भी गल जाएगा, और उनकी खालें भी; और उनके लिए लोहे के गुर्ज़ हैं। जब भी वे घबराकर उसमें से निकलना चाहेंगे, उसी में लौटा दिए जाएँगे: "चखो जलने की यातना का मज़ा!" मगर अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं; वहाँ उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे, और वहाँ उनका लिबास रेशम होगा। उन्हें पाकीज़ा बात की राह दिखाई गई, और उन्हें उसकी राह दिखाई गई जो हर प्रशंसा के योग्य है। (17–24)

निश्चय ही जो लोग सत्य का इनकार करते हैं और दूसरों को अल्लाह की राह से और मसजिदे-हराम से रोकते हैं—जिसे हमने सब लोगों के लिए बराबर ठहराया है, वहाँ के रहने वाले हों या बाहर से आने वाले—और जो कोई उसमें ज़ुल्म के साथ बेहुरमती का इरादा करेगा: हम उसे दुखद यातना चखाएँगे। और याद करो जब हमने इबराहीम के लिए उस घर की जगह ठहरा दी: "मेरे साथ किसी चीज़ को साझी न ठहराना, और मेरे घर को तवाफ़ करने वालों, खड़े होने वालों, और रुकू और सजदा करने वालों के लिए पाक रखना। और लोगों में हज का एलान कर दो: वे तुम्हारे पास पैदल भी आएँगे और हर दुबली ऊँटनी पर भी, जो हर दूर के दर्रे से चली आती होंगी, ताकि वे अपने फ़ायदों के लिए हाज़िर हों, और ठहराए हुए दिनों में उन चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें दिए हैं।[25] तो उनमें से ख़ुद भी खाओ, और ग़रीब मुहताज को भी खिलाओ। फिर चाहिए कि वे अपना मैल-कुचैल दूर करें, अपनी मन्नतें पूरी करें, और उस पुराने घर का तवाफ़ करें।" यह तो हुआ। और जो कोई अल्लाह की ठहराई हुई हुरमतों का आदर करे, तो यह उसके रब के यहाँ उसके लिए बेहतर है। और चौपाए तुम्हारे लिए हलाल कर दिए गए हैं, सिवाय उनके जो तुम्हें पढ़कर सुनाए जाते हैं; तो बुतों की गन्दगी से बचो, और झूठी बात से बचो, एकनिष्ठ होकर अल्लाह ही के होकर रहो, उसके साथ किसी को साझी न ठहराते हुए। और जो कोई अल्लाह के साथ साझी ठहराए वह ऐसा है मानो आसमान से गिर पड़ा, फिर परिन्दे उसे उचक ले गए, या हवा ने उसे किसी दूर-दराज़ जगह ले जा फेंका।

[25] हर साल होने वाले हज, यानी मक्का की ज़ियारत, की कामयाबी की ख़बर इबराहीम को ईसा के ज़माने से 1800 साल पहले दे दी गई थी।

यह तो हुआ। और जो कोई अल्लाह की निशानियों का आदर करे—तो यह दिलों की उस सचेतता से है जो अल्लाह के प्रति होती है। क़ुरबानी के जानवरों में तुम्हारे लिए एक ठहराए हुए समय तक फ़ायदे हैं; फिर उनके क़ुरबान होने की जगह उस पुराने घर के पास है। और हर समुदाय के लिए हमने क़ुरबानी का एक तरीक़ा ठहराया, ताकि वे उन चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें दिए हैं। तो तुम्हारा इलाह एक ही इलाह है, तो उसी के आगे समर्पित हो जाओ; और आजिज़ी करने वालों को शुभ-सूचना दे दो, जिनके दिल अल्लाह के ज़िक्र पर काँप उठते हैं, जो अपने ऊपर आ पड़ने वाली हर चीज़ पर सब्र करते हैं, जो नमाज़ क़ायम रखते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। (25–35)

और क़ुरबानी के ऊँटों को हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानियों में ठहराया है; उनमें तुम्हारे लिए भलाई है। तो जब वे क़तार में खड़े हों तो उन पर अल्लाह का नाम लो; फिर जब वे अपने पहलू के बल गिर पड़ें, तो उनमें से ख़ुद भी खाओ, और सब्र से बैठे रहने वाले को भी और माँगने वाले को भी खिलाओ। इसी तरह हमने उन्हें तुम्हारे वश में कर दिया है, ताकि तुम शुक्र अदा करो। अल्लाह तक न उनका गोश्त पहुँचता है न उनका ख़ून; बल्कि उस तक तुम्हारी सचेतता पहुँचती है। इसी तरह उसने उन्हें तुम्हारे वश में कर दिया है, ताकि तुम इस पर अल्लाह की बड़ाई बयान करो कि उसने तुम्हें राह दिखाई।[26] और अच्छा करने वालों को शुभ-सूचना दे दो। निश्चय ही अल्लाह उन लोगों की ओर से बचाव करता है जो ईमान लाए; निश्चय ही अल्लाह किसी विश्वासघाती नाशुक्रे को पसन्द नहीं करता। जिनसे लड़ाई की जा रही है उन्हें लड़ने की इजाज़त दे दी गई, इसलिए कि उन पर ज़ुल्म हुआ—और निश्चय ही अल्लाह उनकी मदद की पूरी सामर्थ्य रखता है—वे जो अपने घरों से नाहक़ निकाले गए, बस इस बात पर कि वे कहते हैं, "हमारा रब अल्लाह है।" और अगर अल्लाह कुछ लोगों को दूसरों के द्वारा हटाता न रहता, तो ख़ानक़ाहें, गिरजे, यहूदी इबादतख़ाने और मसजिदें, जिनमें अल्लाह का नाम बहुत लिया जाता है, ज़रूर ढा दी जातीं। और अल्लाह ज़रूर उनकी मदद करेगा जो उसकी मदद करेंगे: निश्चय ही अल्लाह शक्तिशाली, प्रभुत्वशाली है। ये वे लोग हैं कि अगर हम उन्हें ज़मीन में जमाव दें, तो वे नमाज़ क़ायम रखेंगे, ज़कात देंगे, भलाई का हुक्म देंगे और बुराई से रोकेंगे। और सारे मामलों का अंजाम अल्लाह ही के हाथ में है। (36–41)

और ऐ नबी, अगर ये तुम्हें झुठलाते हैं, तो इनसे पहले नूह की क़ौम, आद और समूद, और इबराहीम की क़ौम, और लूत की क़ौम, और मदयन वाले भी झुठला चुके हैं; और मूसा को भी झुठलाया गया। तो मैंने झुठलाने वालों को मुहलत दी, फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया—तो कैसा भयानक रहा मेरा उन्हें ठुकराना! तो कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें हमने इस हाल में हलाक किया कि वे ज़ालिम थीं, तो अब वे अपनी छतों पर गिरी पड़ी हैं! और कितने ही कुएँ बेकार पड़े हैं, और कितने ही ऊँचे महल! तो क्या ये ज़मीन में चले-फिरे नहीं, कि इनके दिल होते जिनसे ये समझते, या कान होते जिनसे ये सुनते? बात यह है कि आँखें अंधी नहीं होतीं, बल्कि वे दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं। (42–46)

[26] इसे छोटी सूरा 'आम बरतने की चीज़ें (अल-माऊन)' की कुछ आयतों के साथ पढ़ा जाए।

और वे तुमसे यातना के लिए जल्दी मचाते हैं, मगर अल्लाह हरगिज़ अपना वादा न तोड़ेगा। और तुम्हारे रब के यहाँ का एक दिन तुम्हारी गिनती के हज़ार वर्ष की तरह है।[27] और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें मैंने मुहलत दी जबकि वे ज़ालिम थीं, फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया! और आख़िरकार लौटना मेरी ही ओर है। (47–48)

कह दो, "ऐ लोगो, मैं तो तुम्हारे लिए बस एक खुला सचेत करने वाला हूँ।" तो जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उनके लिए क्षमा है और इज़्ज़त की रोज़ी, और जो हमारी आयतों के ख़िलाफ़ दौड़-धूप करते रहे, उन्हें नीचा दिखाने की धुन में, वही दहकती आग वाले होंगे। और हमने तुमसे पहले जो भी रसूल या नबी भेजा, जब भी उसने पढ़ा, तो शैतान उसके पढ़ने में कुछ मिला देता है। फिर अल्लाह उसे मिटा देता है जो शैतान मिलाता है, फिर अल्लाह अपनी आयतों को पक्का कर देता है—और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है—ताकि वह शैतान की मिलाई हुई चीज़ को उन लोगों के लिए आज़माइश बना दे जिनके दिलों में रोग है और जिनके दिल सख़्त हैं—और निश्चय ही ज़ालिम गहरी मुख़ालफ़त में पड़े हैं—और ताकि वे लोग जिन्हें ज्ञान दिया गया है जान लें कि यह तुम्हारे रब की ओर से सत्य है, फिर इस पर ईमान लाएँ, और उनके दिल उसके आगे झुक जाएँ। और निश्चय ही अल्लाह ईमान लाने वालों को सीधे मार्ग की राह दिखाने वाला है। और सत्य के इनकारी इसके बारे में बराबर शक में पड़े रहेंगे यहाँ तक कि वह घड़ी उन पर अचानक आ जाए, या उन पर एक ऐसे दिन की यातना आ जाए जो हर उम्मीद से ख़ाली है। उस दिन बादशाही अल्लाह ही की होगी; वही उनके बीच फ़ैसला करेगा। तो जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए वे नेमत भरे बाग़ों में होंगे, और जिन्होंने सत्य का इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया उनके लिए अपमानजनक यातना है। (49–57)

और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में हिजरत की फिर मारे गए या मर गए, अल्लाह उन्हें ज़रूर अच्छी रोज़ी देगा: और निश्चय ही अल्लाह ही सबसे अच्छा रोज़ी देने वाला है। वह उन्हें ज़रूर ऐसी जगह दाख़िल करेगा जिससे वे ख़ुश हो जाएँगे। और निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जानने वाला, सहनशील है। यह तो हुआ। और जो कोई वैसा ही बदला ले जैसी तकलीफ़ उसे पहुँचाई गई, फिर उस पर दोबारा ज़्यादती की जाए, तो अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा। निश्चय ही अल्लाह माफ़ करने वाला, बड़ा क्षमाशील है। यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है, और इसलिए कि अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है। यह इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है, और जिन्हें वे उसके सिवा पुकारते हैं वे बातिल हैं, और इसलिए कि अल्लाह ही सर्वोच्च, महान है। (58–62)

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह आसमान से पानी उतारता है, तो ज़मीन हरी-भरी हो जाती है? निश्चय ही अल्लाह सूक्ष्मदर्शी, पूरी ख़बर रखने वाला है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है; और निश्चय ही अल्लाह ही निस्पृह, हर प्रशंसा के योग्य है। क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने वह सब जो

[27] यह और इस जैसी आयतें हमें समय की सापेक्षता की धारणा देती हैं, जिसे वैज्ञानिक भाषा में अल्बर्ट आइंस्टाइन के सापेक्षता के सिद्धान्त पेश करते हैं।

ज़मीन में है तुम्हारे वश में कर दिया है, और नौकाओं को भी जो उसके हुक्म से समुद्र में चलती हैं? और वही आसमान को थामे हुए है कि ज़मीन पर न गिर पड़े, सिवाय इसके कि उसकी इजाज़त हो।[28] निश्चय ही अल्लाह लोगों पर बड़ा मेहरबान, दयावान है। और वही है जिसने तुम्हें ज़िन्दगी दी, फिर तुम्हें मौत देगा, फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा। निश्चय ही इनसान बड़ा नाशुक्रा है। (63–66)

हर समुदाय के लिए हमने इबादत का एक तरीक़ा ठहराया है जिस पर वे चलते हैं; तो वे इस मामले में तुमसे झगड़ा न करें। और अपने रब की ओर बुलाओ: निश्चय ही तुम सीधे मार्गदर्शन पर हो। और अगर वे तुमसे झगड़ें, तो कह दो, "जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे ख़ूब जानता है। अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे बीच उन बातों का फ़ैसला कर देगा जिनमें तुम मतभेद करते थे।" क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह वह सब जानता है जो आसमान और ज़मीन में है? यह सब एक किताब में दर्ज है; निश्चय ही यह अल्लाह के लिए आसान है। (67–70)

और वे अल्लाह को छोड़कर उनकी इबादत करते हैं जिनके लिए उसने कोई प्रमाण नहीं उतारा, और जिनके बारे में उन्हें कोई ज्ञान नहीं। और ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा। और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं, तो तुम सत्य के इनकारियों के चेहरों पर इनकार साफ़ देख सकते हो: क़रीब होता है कि वे उन पर टूट पड़ें जो उन्हें हमारी आयतें सुनाते हैं। कह दो, "तो क्या मैं तुम्हें इससे भी बुरी चीज़ बताऊँ? आग, जिसका अल्लाह ने सत्य के इनकारियों से वादा किया है—और वह बहुत बुरी जगह है!" ऐ लोगो, एक मिसाल बयान की जाती है, तो उसे ध्यान से सुनो: जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, चाहे वे सब इसके लिए इकट्ठे हो जाएँ; और अगर मक्खी उनसे कोई चीज़ छीन ले जाए, तो वे उसे उससे छुड़ा भी नहीं सकते। कमज़ोर है माँगने वाला भी और वह भी जिससे माँगा गया! उन्होंने अल्लाह की वैसी क़द्र न की जैसी उसकी क़द्र का हक़ है। निश्चय ही अल्लाह शक्तिशाली, प्रभुत्वशाली है। (71–74)

अल्लाह फ़रिश्तों में से भी सन्देश पहुँचाने वाले चुनता है और इनसानों में से भी। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है। वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है; और सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटाए जाते हैं। ऐ ईमान लाने वालो, रुकू करो और सजदा करो, अपने रब की इबादत करो, और भलाई करो, ताकि तुम सफल हो। और अल्लाह की राह में जिहाद करो जैसा उसके लिए जिहाद का हक़ है। उसने तुम्हें चुन लिया है और दीन में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी—तुम्हारे बाप इबराहीम का पंथ। उसी ने तुम्हारा नाम "अल्लाह के आगे समर्पण करने वाले" रखा, इससे पहले भी और इस वह्य में भी, ताकि रसूल तुम पर गवाह हो, और तुम लोगों पर गवाह हो। तो नमाज़ क़ायम रखो, ज़कात दो, और अल्लाह को मज़बूती से थाम लो: वही तुम्हारा संरक्षक है—तो क्या ही अच्छा संरक्षक, और क्या ही अच्छा मददगार! (75–78)

[28] अल्लाह ने हमारे ग्रह पर उल्काओं की टक्करों को कम से कम रखने की व्यवस्था कर रखी है।

# 23. ईमान वाले (अल-मोमिनून)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

निश्चय ही ईमान वाले सफल हो गए: वे जो अपनी नमाज़ में आजिज़ी करते हैं, जो बेहूदा बातों से मुँह फेरे रहते हैं, जो ज़कात अदा करने में सरगर्म रहते हैं, जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं, सिवाय अपनी पत्नियों या अपनी लौंडियों के, कि उन पर कोई मलामत नहीं—मगर जो इसके आगे कुछ चाहे, तो वही हद से बढ़ने वाले हैं—जो अपनी अमानतों और अपने अह्द का पास रखते हैं, और जो अपनी नमाज़ों की निगहबानी करते हैं। यही वारिस हैं, जो फ़िरदौस के वारिस होंगे, और वे उसमें सदा-सदा रहेंगे। (1–11)

और हमने इनसान को मिट्टी के निचोड़ से पैदा किया; फिर उसे एक सुरक्षित ठिकाने में बूँद बनाकर रखा; फिर उस बूँद को चिमटने वाला रूप बनाया, फिर उस चिमटने वाले रूप को मांस की बोटी बनाया, फिर उस बोटी से हड्डियाँ बनाईं, फिर हड्डियों पर गोश्त चढ़ाया; फिर उसे एक दूसरी ही सृष्टि बनाकर खड़ा किया। तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह, सबसे अच्छा पैदा करने वाला! फिर इसके बाद तुम्हें ज़रूर मरना है, फिर क़ियामत के दिन तुम ज़रूर उठाए जाओगे। (12–16)

और हमने तुम्हारे ऊपर सात राहें बनाईं, और हम सृष्टि से कभी ग़ाफ़िल नहीं। और हमने आसमान से ठीक अन्दाज़े के साथ पानी उतारा, फिर उसे ज़मीन में ठहरा दिया—और हम उसे ले जाने की भी पूरी सामर्थ्य रखते हैं। फिर उसके द्वारा हमने तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ उगाए, जिनमें तुम्हारे लिए बहुत-से फल हैं, और जिनमें से तुम खाते हो, और वह पेड़ भी जो तूरे-सीना से निकलता है, जो तेल लिए हुए उगता है और खाने वालों के लिए सालन। और निश्चय ही तुम्हारे लिए चौपायों में भी एक सबक़ है: हम तुम्हें उनके थनों से पीने को देते हैं, और तुम्हारे लिए उनमें और भी बहुत-से फ़ायदे हैं, और उन्हीं में से तुम खाते हो; और उन पर, और नौकाओं पर भी, तुम सवार किए जाते हो। (17–22)

और हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा, तो उसने कहा, “ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो; उसके सिवा तुम्हारा कोई इलाह नहीं। तो क्या तुम उसके प्रति सचेत न होगे?” मगर उसकी क़ौम के सरदारों ने, जो सत्य के इनकारी थे, कहा, “यह तो बस तुम्हारे ही जैसा एक इनसान है, जो चाहता है कि तुम पर बड़ाई हासिल करे। और अगर अल्लाह चाहता, तो फ़रिश्ते उतार देता। हमने अपने अगले बाप-दादा में तो ऐसी बात कभी सुनी नहीं। यह तो बस एक आदमी है जिसे जुनून हो गया है; तो कुछ समय इसकी राह देखो।” उसने कहा, “ऐ मेरे रब, मेरी मदद कर, क्योंकि इन्होंने मुझे झुठला दिया।” तो हमने उसकी ओर वह्य की: “हमारी आँखों के सामने और हमारी वह्य के अनुसार नौका बनाओ। फिर जब हमारा हुक्म आ जाए और तन्नूर उबल पड़े, तो उसमें हर क़िस्म का एक-एक जोड़ा रख लो, और अपने घर वालों को भी—सिवाय उनके जिनके बारे में बात पहले हो चुकी है—और जिन्होंने ज़ुल्म किया है उनके बारे में मुझसे कुछ न कहना: वे डूबकर रहेंगे। फिर जब तुम और तुम्हारे साथ वाले नौका पर ठीक से बैठ जाओ, तो कहना, ‘सारी प्रशंसा

अल्लाह के लिए है, जिसने हमें ज़ालिम लोगों से छुटकारा दिया।' और कहना, 'ऐ मेरे रब, मुझे बरकत वाली जगह उतार: और तू सबसे अच्छा उतारने वाला है।'" निश्चय ही इसमें निशानियाँ हैं; और हम तो आज़माइश करके ही रहते हैं। (23–30)

फिर उनके बाद हमने एक दूसरी नस्ल उठाई, और उनमें उन्हीं में का एक रसूल भेजा: "अल्लाह की इबादत करो; उसके सिवा तुम्हारा कोई इलाह नहीं। तो क्या तुम उसके प्रति सचेत न होगे?" मगर उसकी क़ौम के सरदारों ने, जिन्होंने सत्य का इनकार किया और आख़िरत के मिलने को झुठलाया, और जिन्हें हमने दुनिया की ज़िन्दगी में ख़ुशहाल कर रखा था, कहा, "यह तो बस तुम्हारे ही जैसा एक इनसान है: वही खाता है जो तुम खाते हो और वही पीता है जो तुम पीते हो। और अगर तुमने अपने ही जैसे एक इनसान की बात मान ली, तो तुम निश्चय ही घाटे में रहोगे। क्या यह तुमसे वादा करता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाओगे, तो तुम फिर निकाले जाओगे? दूर की बात है, बहुत दूर की बात है जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है! ज़िन्दगी तो बस यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है: हम मरते हैं और जीते हैं, और हम उठाए जाने वाले नहीं। यह तो बस एक आदमी है जिसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है, और हम इसकी बात मानने वाले नहीं।" उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मेरी मदद कर, क्योंकि इन्होंने मुझे झुठला दिया।" उसने कहा, "थोड़ी ही देर में ये ज़रूर पछताते रह जाएँगे।" फिर एक कड़क ने उन्हें हक़ के साथ आ पकड़ा, और हमने उन्हें कूड़ा-करकट कर दिया जो बह जाता है। तो दूर हों ज़ालिम लोग! फिर उनके बाद हमने दूसरी नस्लें उठाईं। कोई समुदाय न अपनी ठहराई हुई अवधि से आगे बढ़ सकता है, न पीछे रह सकता है। फिर हमने अपने रसूल लगातार भेजे। जब भी किसी समुदाय के पास उसका रसूल आया तो उन्होंने उसे झुठला दिया; तो हमने भी उन्हें एक के बाद एक हलाकत के पीछे लगा दिया, और उन्हें कहानियाँ बनाकर छोड़ा। तो दूर हों वे लोग जो ईमान नहीं लाते! (31–44)

फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को अपनी निशानियों और खुले प्रमाण के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा, मगर उन्होंने घमंड किया; और वे बड़े सरकश लोग थे। वे बोले, "क्या हम अपने ही जैसे दो इनसानों पर ईमान ले आएँ, जबकि उनकी क़ौम हमारी ग़ुलाम है?" तो उन्होंने दोनों को झुठला दिया, और वे हलाक होने वालों में से हो गए। और हमने मूसा को किताब दी, ताकि वे लोग राह पाएँ। और हमने मरयम के बेटे और उसकी माँ को एक निशानी बनाया, और उन्हें एक ऊँची जगह पर ठिकाना दिया, जो ठहरने के लायक़ थी और जहाँ सोते बहते थे। (45–50)

"ऐ रसूलो, अच्छी चीज़ों में से खाओ और अच्छे कर्म करो: जो कुछ तुम करते हो मैं उसे ख़ूब जानता हूँ। और निश्चय ही तुम्हारा यह समुदाय एक ही समुदाय है, और मैं तुम्हारा रब हूँ, तो मेरे ही प्रति सचेत रहो।" मगर उन्होंने अपने मामले को आपस में टुकड़े-टुकड़े करके अलग-अलग गिरोह बना लिए, हर गिरोह उसी पर मगन है जो उसके पास है। तो उन्हें एक समय तक उनकी मदहोशी में पड़ा रहने दो। क्या वे समझते हैं कि हम जो माल और बेटों से उनकी मदद किए जा रहे हैं, तो उनके लिए भलाइयों में जल्दी कर रहे हैं? नहीं— बल्कि उन्हें एहसास नहीं। निश्चय ही जो लोग अपने रब के भय से काँपते रहते हैं, जो अपने रब की आयतों

पर ईमान रखते हैं, जो अपने रब के साथ किसी को साझी नहीं ठहराते, और जो कुछ भी देते हैं इस हाल में देते हैं कि उनके दिल इस ख़याल से काँपते हैं कि उन्हें अपने रब की ओर लौटना है—यही लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं, और यही उनकी ओर सबसे आगे बढ़ने वाले हैं। और हम किसी जान पर उसकी सामर्थ्य से बढ़कर बोझ नहीं डालते। और हमारे पास एक किताब है जो ठीक-ठीक बोलती है, और उन पर ज़ुल्म न होगा। बल्कि उनके दिल इस ओर से मदहोशी में पड़े हैं, और इसके सिवा उनके और भी काम हैं, जिन्हें वे करते ही रहेंगे—यहाँ तक कि जब हम उनके ऐश में पड़े हुए लोगों को यातना में पकड़ लेंगे, तो वे एकाएक फ़रियाद करने लगेंगे। "आज फ़रियाद न करो! हमारी ओर से तुम्हें कोई मदद न मिलेगी। मेरी आयतें तुम्हें सुनाई जाती थीं, तो तुम उलटे पाँव फिर जाते थे, घमंड करते हुए, रात को क़िस्से कहते हुए, और इसके बारे में बकवास करते हुए।" (51–67)

तो क्या उन्होंने इस बात पर ग़ौर नहीं किया? या उनके पास वह चीज़ आई है जो उनके अगले बाप-दादा के पास नहीं आई थी? या उन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं, इसलिए उसका इनकार कर रहे हैं? या वे कहते हैं, "इसे जुनून है"? नहीं—बल्कि वह उनके पास सत्य लेकर आया है, मगर उनमें से अधिकतर को सत्य नागवार है। और अगर सत्य उनकी इच्छाओं के पीछे चलता, तो आसमान और ज़मीन और जो कोई उनमें है सब बिगड़कर रह जाते। नहीं—बल्कि हम उनके पास उन्हीं की याददिहानी लाए हैं, मगर वे अपनी याददिहानी से मुँह फेरे हुए हैं। या तुम उनसे कुछ मुआवज़ा माँगते हो? तो तुम्हारे रब का दिया हुआ ही बेहतर है; और वही सबसे अच्छा रोज़ी देने वाला है। और निश्चय ही तुम उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुला रहे हो, मगर जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वे राह से हटे हुए हैं। और अगर हम उन पर दया करें और वह तकलीफ़ दूर कर दें जो उन्हें पहुँची है, तब भी वे अपनी सरकशी पर अड़े रहेंगे, अंधों की तरह भटकते हुए। और हमने उन्हें यातना में पकड़ा भी, फिर भी वे अपने रब के आगे न झुके, और न वे गिड़गिड़ाते हैं—यहाँ तक कि जब हम उन पर कठोर यातना का दरवाज़ा खोल देंगे, तो वे एकाएक उसमें निराश होकर रह जाएँगे। (68–77)

और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान, आँखें और दिल बनाए—तुम कितना कम शुक्र अदा करते हो! और वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया, और उसी के पास तुम इकट्ठे किए जाओगे। और वही है जो ज़िन्दगी देता और मौत देता है, और रात और दिन का अदल-बदल उसी के अधिकार में है। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? बल्कि उन्होंने वही बात कही जो अगलों ने कही थी। वे बोले, "क्या! जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएँगे, तो क्या हम सचमुच उठाए जाएँगे? हमसे और हमारे बाप-दादा से इससे पहले भी इसका वादा किया जाता रहा है; यह तो बस अगलों की कहानियाँ हैं।" कह दो, "यह ज़मीन और जो कोई इसमें है किसके हैं, अगर तुम जानते हो?" वे कहेंगे, "अल्लाह के।" कह दो, "तो क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते?" कह दो, "सातों आसमानों का रब और महान अर्श का रब कौन है?" वे कहेंगे, "ये सब अल्लाह ही के हैं।" कह दो, "तो क्या तुम उसके प्रति सचेत न होगे?" कह दो, "कौन है जिसके हाथ में हर चीज़ का अधिकार है—और वह पनाह देता है, जबकि उसके मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता—अगर तुम

जानते हो?" वे कहेंगे, "यह अल्लाह ही का है।" कह दो, "तो फिर तुम पर कैसा जादू चल जाता है?" नहीं—बल्कि हम उनके पास सत्य लाए हैं, और वे निश्चय ही झूठे हैं। अल्लाह ने ⌜कोई⌝ औलाद नहीं बनाई, और न उसके साथ कोई और इलाह है। वरना हर इलाह अपनी पैदा की हुई चीज़ को लेकर अलग हो जाता, और वे एक-दूसरे पर चढ़ाई करते। पाक है अल्लाह उन बातों से जो ये बनाते हैं![29] (78–91)

वह परोक्ष और प्रत्यक्ष का जानने वाला है: तो वह उससे बहुत ऊँचा है जो वे साझी ठहराते हैं। कह दो, "ऐ मेरे रब, अगर तू मुझे वह दिखा दे जिसका इनसे वादा किया जा रहा है, तो ऐ मेरे रब, मुझे इन ज़ालिम लोगों में शामिल न करना।" और निश्चय ही हम इसकी सामर्थ्य रखते हैं कि जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं वह तुम्हें दिखा दें। बुराई को उस ढंग से दूर करो जो सबसे अच्छा हो। जो बातें वे बनाते हैं हम उन्हें ख़ूब जानते हैं। और कहो, "ऐ मेरे रब, मैं शैतानों की उकसाहटों से तेरी पनाह माँगता हूँ, और ऐ मेरे रब, मैं इससे भी तेरी पनाह माँगता हूँ कि वे मेरे पास आएँ।" (92–98)

वे इसी हाल में रहते हैं यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मौत आ जाती है, तो कहता है, "ऐ मेरे रब, मुझे वापस भेज दे, ताकि जो कुछ मैं छोड़ आया हूँ उसमें नेक काम करूँ।" हरगिज़ नहीं! यह तो बस एक बात है जो वह कह रहा है। और उनके पीछे उस दिन तक एक आड़ है जब वे उठाए जाएँगे। फिर जब सूर फूँका जाएगा, तो उस दिन उनके बीच कोई रिश्ते-नाते न रहेंगे, और न वे एक-दूसरे को पूछेंगे। तो जिनके पलड़े भारी होंगे—वही सफल होने वाले हैं, और जिनके पलड़े हलके होंगे—वही हैं जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला; वे जहन्नम में लम्बी मुद्दत तक रहेंगे। आग उनके चेहरों को झुलसा देगी, और वे उसमें मुँह बिगाड़े हुए होंगे। "क्या मेरी आयतें तुम्हें सुनाई न जाती थीं, और तुम उन्हें झुठलाते न थे?" वे कहेंगे, "ऐ हमारे रब, हमारी बदबख़्ती हम पर छा गई थी, और हम भटके हुए लोग थे। ऐ हमारे रब, हमें इससे निकाल ले; फिर अगर हम दोबारा बुराई करें, तो निश्चय ही हम ज़ालिम होंगे।" वह कहेगा, "इसी में फिटकारे हुए पड़े रहो! और मुझसे बात न करो। मेरे बन्दों में एक गिरोह था जो कहता था, 'ऐ हमारे रब, हम ईमान लाए, तो हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर: और तू दया करने वालों में सबसे बढ़कर दयावान है,' मगर तुमने उन्हें हँसी का निशाना बना लिया, यहाँ तक कि उन्होंने तुम्हें मेरी याद भुला दी, और तुम उन पर हँसते रहे। आज मैंने उन्हें उनके सब्र का बदला दिया है: वही कामयाब हैं।" वह कहेगा, "तुम ज़मीन में गिनती के कितने वर्ष रहे?" वे कहेंगे, "हम एक दिन, या दिन का कुछ हिस्सा रहे; गिनने वालों से पूछ ले।" वह कहेगा, "तुम बस थोड़ी ही देर रहे, काश तुमने जाना होता। तो क्या तुमने यह समझ रखा था कि हमने तुम्हें यूँ ही बेकार पैदा किया है, और यह कि तुम हमारी ओर लौटाए न जाओगे?" (99–115)

[29] हमारे ब्रह्मांड की व्यवस्था एकेश्वरवाद की, यानी केवल एक ईश्वरीय इरादे की, गवाही देती है।
ईश्वरीय एकता की बनावट: क़ुरआनी एकेश्वरवाद की एक वैज्ञानिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस
ईश्वरीय एकता, ब्रह्मांडीय व्यवस्था और सृष्टि का व्याकरण: क़ुरआन 21:22, 23:91 और 17:41–44 की एक वैज्ञानिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस

तो बहुत ऊँचा है अल्लाह, सच्चा बादशाह! उसके सिवा कोई इलाह नहीं, वह इज़्ज़त वाले अर्श का रब है। और जो कोई अल्लाह के साथ किसी दूसरे इलाह को पुकारे—जिसके लिए उसके पास कोई दलील नहीं—तो उसका हिसाब बस उसके रब के पास है। निश्चय ही सत्य के इनकारी सफल न होंगे। और कहो, "ऐ मेरे रब, क्षमा कर और दया कर: और तू दया करने वालों में सबसे बढ़कर दयावान है।" (116–118)

# 24. नूर (अन-नूर)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

यह एक सूरत है जिसे हमने उतारा और जिसे हमने फ़र्ज़ किया; और इसमें हमने आयतें उतारीं, खुली-खुली निशानियाँ, ताकि तुम याद रखो और नसीहत पकड़ो। (1)

ज़िना करने वाली औरत और ज़िना करने वाला मर्द: दोनों में से हर एक को सौ कोड़े मारो, और अल्लाह के क़ानून के मामले में तुम्हें उन पर तरस न आने पाए, अगर तुम अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हो; और उनकी सज़ा के समय ईमान वालों का एक गिरोह मौजूद रहे। ज़िना करने वाला मर्द किसी ज़िना करने वाली या मुशरिक औरत ही से निकाह करता है, और ज़िना करने वाली औरत से कोई ज़िना करने वाला या मुशरिक मर्द ही निकाह करता है; और यह चीज़ ईमान वालों पर हराम कर दी गई है। और जो लोग पाकदामन औरतों पर तोहमत लगाएँ फिर चार गवाह न लाएँ: उन्हें अस्सी कोड़े मारो, और उनकी गवाही फिर कभी क़बूल न करो। और वही हैं जो अल्लाह की अवज्ञा करने वाले हैं—सिवाय उनके जो इसके बाद तौबा कर लें और अपना सुधार कर लें, तो निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (2–5)

और जो लोग अपनी ही पत्नियों पर तोहमत लगाएँ और उनके पास ख़ुद अपने सिवा कोई गवाह न हो, तो ऐसे आदमी की गवाही यह है कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खाकर कहे कि वह सच्चा है, और पाँचवीं बार यह कि अगर वह झूठा हो तो उस पर अल्लाह की लानत हो। और उस औरत से सज़ा यूँ टलती है कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खाकर कहे कि वह झूठा है, और पाँचवीं बार यह कि अगर वह सच्चा हो तो उस पर अल्लाह का ग़ज़ब हो। (6–9)

और अगर तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और उसकी दयालुता न होती, और यह कि अल्लाह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला, हिकमत वाला है, तो तुम इसका ख़मियाज़ा भुगतते। जो लोग यह बोहतान गढ़ लाए वे तुम्हीं में का एक जत्था हैं। इसे अपने लिए बुरा न समझो; नहीं, बल्कि यह तुम्हारे लिए बेहतर है। उनमें से हर आदमी के लिए गुनाह का उतना हिस्सा है जितना उसने कमाया, और जिसने उसमें सबसे बड़ा हिस्सा लिया उसके लिए बड़ी यातना है। जब तुमने इसे सुना था, तो ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों ने अपने लोगों के बारे में अच्छा गुमान क्यों न किया और क्यों न कह दिया, "यह तो खुला बोहतान है"? वे इस पर चार गवाह क्यों न लाए? तो जब वे गवाह नहीं लाए, तो अल्लाह के नज़दीक वही झूठे हैं। और अगर दुनिया और आख़िरत में तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और उसकी दयालुता न होती, तो जिस बात में तुम पड़ गए थे उस पर तुम्हें बड़ी यातना आ छूती, जब तुम उसे अपनी ज़बानों पर एक-दूसरे से लेते जा रहे थे, और अपने मुँह से वह बात कह रहे थे जिसका तुम्हें कोई ज्ञान न था, और उसे मामूली बात समझ रहे थे, हालाँकि अल्लाह के नज़दीक वह बहुत बड़ी बात थी। और जब तुमने इसे सुना था, तो क्यों न कह दिया, "हमें शोभा नहीं देता कि ऐसी बात ज़बान पर लाएँ। अल्लाह की पनाह!—यह तो बहुत बड़ा बोहतान है"? अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है कि

फिर कभी ऐसा न करना, अगर तुम ईमान वाले हो। और अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें खोलकर बयान करता है: और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। जो लोग चाहते हैं कि ईमान वालों में अश्लीलता फैले उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दुखद यातना है। और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। और अगर तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और उसकी दयालुता न होती, और यह कि अल्लाह बड़ा मेहरबान, दयावान है, तो तुम तबाह हो चुके होते। ऐ ईमान लाने वालो, शैतान के क़दमों पर न चलो; और जो कोई शैतान के क़दमों पर चलेगा उसे जान लेना चाहिए कि वह अश्लीलता और बुराई ही का हुक्म देता है। और अगर तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और उसकी दयालुता न होती, तो तुममें से कोई एक भी कभी पाक न हो पाता; मगर अल्लाह जिसे चाहता है पाक कर देता है। और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। (10–21)

और तुममें से जो लोग अनुग्रह और गुंजाइश वाले हैं वे इस बात की क़सम न खा बैठें कि अपने रिश्तेदारों, मुहताजों, और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को कुछ न देंगे; उन्हें चाहिए कि माफ़ कर दें और दरगुज़र करें। क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा करे? और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (22)

जो लोग पाकदामन, भोली-भाली, ईमान वाली औरतों पर तोहमत लगाते हैं उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत है, और उनके लिए बड़ी यातना है, जिस दिन ख़ुद उनकी ज़बानें, उनके हाथ और उनके पाँव उनके ख़िलाफ़ उन कामों की गवाही देंगे जो वे करते थे। उस दिन अल्लाह उन्हें उनका ठीक-ठीक बदला पूरा-पूरा देगा, और वे जान लेंगे कि अल्लाह ही सत्य है, खुला हुआ। गन्दी औरतें गन्दे मर्दों के लिए हैं, और गन्दे मर्द गन्दी औरतों के लिए; और पाकीज़ा औरतें पाकीज़ा मर्दों के लिए हैं, और पाकीज़ा मर्द पाकीज़ा औरतों के लिए। ये लोग उन बातों से बरी हैं जो तोहमत लगाने वाले कहते हैं; इनके लिए क्षमा है और इज़्ज़त की रोज़ी। (23–26)

ऐ ईमान लाने वालो, अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में दाख़िल न हो जब तक इजाज़त न ले लो और वहाँ के रहने वालों को सलाम न कर लो। यही तुम्हारे लिए बेहतर है, ताकि तुम नसीहत पकड़ो। फिर अगर वहाँ किसी को न पाओ, तो दाख़िल न हो जब तक तुम्हें इजाज़त न दे दी जाए; और अगर तुमसे कहा जाए, "लौट जाओ," तो लौट जाओ—यह तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़ा है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे ख़ूब जानता है। तुम पर इसमें कोई गुनाह नहीं कि ऐसे घरों में दाख़िल हो जिनमें कोई रहता न हो, और जिनमें तुम्हारे काम की कोई चीज़ हो। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छिपाते हो। ईमान वाले मर्दों से कह दो कि अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें: यह उनके लिए ज़्यादा पाकीज़ा है। निश्चय ही जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है। और ईमान वाली औरतों से कह दो कि अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें, और अपना सिंगार ज़ाहिर न करें सिवाय उसके जो आम तौर पर उसमें से ज़ाहिर हो ही जाता है; और अपनी ओढ़नियाँ अपने सीनों और गिरेबानों पर डाले रहें; और अपना सिंगार ज़ाहिर न करें मगर अपने पतियों पर,

या अपने बाप पर, या अपने पतियों के बाप पर, या अपने बेटों पर, या अपने पतियों के बेटों पर, या अपने भाइयों पर, या अपने भतीजों पर, या अपने भानजों पर, या अपनी औरतों पर, या अपने ग़ुलामों पर, या उन ख़िदमतगार मर्दों पर जिन्हें औरतों की कोई ख़्वाहिश नहीं, या उन बच्चों पर जो अभी औरतों की छिपी बातों से वाक़िफ़ नहीं; और अपने पाँव ज़मीन पर इस तरह न मारें कि उनके छिपे हुए सिंगार की ओर ध्यान जाए। और ऐ ईमान वालो, तुम सब मिलकर अल्लाह के आगे तौबा करो, ताकि तुम सफल हो। (27–31)

और तुममें से जो बे-निकाह हों उनके निकाह कर दो, और अपने ग़ुलामों और लौंडियों में से जो नेक हों उनके भी। अगर वे ग़रीब होंगे, तो अल्लाह उन्हें अपने अनुग्रह से मालामाल कर देगा: और अल्लाह बड़ी समाई वाला, सब कुछ जानने वाला है। और जो लोग निकाह का सामान न पाएँ उन्हें चाहिए कि पाकदामन रहें यहाँ तक कि अल्लाह उन्हें अपने अनुग्रह से मालामाल कर दे। और तुम्हारे ग़ुलामों में से जो आज़ादी का लिखित मुआहदा चाहें, तो उनसे मुआहदा कर लो अगर तुम उनमें भलाई जानो, और उन्हें अल्लाह के उस माल में से दो जो उसने तुम्हें दिया है। और अपनी लौंडियों को, जबकि वे पाकदामन रहना चाहती हों, बदकारी पर मजबूर न करो, इसलिए कि दुनिया की ज़िन्दगी का क्षणिक माल हासिल करो; और जो कोई उन्हें मजबूर करेगा, तो उनके मजबूर किए जाने के बाद अल्लाह उनके लिए बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (32–33)

और हमने तुम्हारी ओर खोल-खोलकर बताने वाली आयतें उतारी हैं, और उन लोगों की मिसाल जो तुमसे पहले गुज़र चुके, और उन लोगों के लिए नसीहत जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं। (34)

अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर है। उसके नूर की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक़ हो जिसमें एक चिराग़ है; चिराग़ एक फ़ानूस में है; फ़ानूस ऐसा है मानो चमकता हुआ तारा हो, वह एक बरकत वाले पेड़ से रौशन किया जाता है, ज़ैतून के, जो न पूरब का है न पश्चिम का, जिसका तेल क़रीब है कि आप ही भड़क उठे चाहे उसे आग न भी छुए। नूर पर नूर! अल्लाह जिसे चाहता है अपने नूर की राह दिखाता है। और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, और अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखता है। ऐसी रौशनी उन घरों में है जिन्हें ऊँचा किए जाने की अल्लाह ने इजाज़त दी है, और जिनमें उसका नाम याद किया जाता है; उनमें सुबह और शाम उसकी तसबीह वे लोग करते हैं जिन्हें न कोई कारोबार और न कोई ख़रीद-फ़रोख़्त अल्लाह की याद से, नमाज़ क़ायम रखने से और ज़कात देने से ग़ाफ़िल करती है; वे उस दिन से डरते हैं जिसमें दिल और आँखें उलट जाएँगी, ताकि अल्लाह उन्हें उनके सबसे अच्छे कामों का बदला दे, और अपने अनुग्रह से उन्हें और ज़्यादा दे। और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है। (35–38)

और जिन लोगों ने सत्य का इनकार किया, उनके कर्म ऐसे हैं जैसे चटियल मैदान में सराब, जिसे प्यासा पानी समझता है, यहाँ तक कि जब वह उसके पास पहुँचता है, तो उसे कुछ भी नहीं पाता; मगर वहाँ अल्लाह को पाता है, जो उसका हिसाब पूरा-पूरा चुका देता है। और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। या जैसे किसी गहरे समुद्र में तह-पर-तह अँधेरे हों जिसे लहर पर लहर ढाँके हुए हो, और उसके ऊपर बादल हों—अँधेरे

पर अँधेरा। अगर वह अपना हाथ निकाले, तो उसे भी मुश्किल ही से देख पाए। और जिसे अल्लाह ही नूर न दे उसके लिए कोई नूर नहीं। (39–40)

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह की तसबीह करते हैं वे सब जो आसमानों और ज़मीन में हैं, और पर फैलाए हुए परिन्दे भी? हर एक अपनी नमाज़ और अपनी तसबीह जानता है; और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसे ख़ूब जानता है। और आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है, और अल्लाह ही की ओर लौटना है। क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह बादलों को हाँकता है, फिर उन्हें आपस में जोड़ता है, फिर उन्हें तह-पर-तह ढेर कर देता है, फिर तुम देखते हो कि उनके बीच से बारिश टपकती चली आती है? और वह आसमान से, बादलों के पहाड़ जैसे ढेरों से, जिनमें ओले होते हैं, बरसाता है, फिर जिस पर चाहता है उसे गिराता है और जिससे चाहता है उसे फेर देता है। उसकी बिजली की चमक क़रीब है कि आँखों की रौशनी ले जाए। अल्लाह रात और दिन को उलटता-पलटता है। निश्चय ही इसमें आँख वालों के लिए एक सबक़ है। और अल्लाह ने हर जानदार को पानी से पैदा किया।[30] फिर उनमें कोई अपने पेट के बल चलता है, कोई दो पाँवों पर चलता है, और कोई चार पर। अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है: निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। (41–45)

हमने खोल-खोलकर बताने वाली आयतें उतार दी हैं; और अल्लाह जिसे चाहता है सीधे मार्ग की राह दिखाता है। और वे कहते हैं, "हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए, और हमने आज्ञा मानी"; फिर उसके बाद उनमें से एक गिरोह मुँह मोड़ जाता है। और ऐसे लोग ईमान वाले नहीं। और जब उन्हें अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाया जाता है, ताकि वह उनके बीच फ़ैसला करे, तो उनमें से एक गिरोह कतरा जाता है; मगर अगर हक़ उन्हीं के पक्ष में हो, तो फ़रमाँबरदार बने उसके पास चले आते हैं। क्या उनके दिलों में रोग है? या वे शक में पड़े हैं? या उन्हें यह डर है कि अल्लाह और उसका रसूल उनके साथ बेइनसाफ़ी करेंगे? नहीं—बल्कि वही ज़ालिम हैं। ईमान वालों की बात तो बस यही होती है, जब उन्हें अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाया जाए ताकि वह उनके बीच फ़ैसला करे, कि वे कहें, "हमने सुना और हमने आज्ञा मानी।" और यही सफल होने वाले हैं। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा माने, और अल्लाह से डरे और उसके प्रति सचेत रहे—तो यही कामयाब होने वाले हैं। और वे अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाते हैं कि अगर तुम उन्हें हुक्म दो, तो वे ज़रूर निकल खड़े होंगे। कह दो, "क़समें न खाओ; दरकार तो जानी-पहचानी फ़रमाँबरदारी है। निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है।" कह दो, "अल्लाह की आज्ञा मानो और रसूल की आज्ञा मानो।" फिर अगर तुम मुँह मोड़ो, तो उस पर बस वही ज़िम्मेदारी है जो उस पर डाली गई है, और तुम पर वह जो तुम पर डाली गई है। और अगर तुम उसकी आज्ञा मानोगे, तो राह पा जाओगे। और रसूल के ज़िम्मे तो बस साफ़-साफ़ सन्देश पहुँचा देना है। (46–54)

[30] नबी मुहम्मद इस गहरी वैज्ञानिक हक़ीक़त को संयोग से नहीं जान सकते थे। बहुत-सी दूसरी आयतों की तरह यह आयत भी एक सब कुछ जानने वाले स्रोत का पता देती है। यही बात 21:30 और 25:54 में भी आई है।

अल्लाह ने तुममें से उन लोगों से जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए वादा किया है कि वह उन्हें ज़मीन में ज़रूर जानशीन बनाएगा, जैसे उसने उनसे पहले के लोगों को जानशीन बनाया था; और उनके लिए उनके उस दीन को ज़रूर जमा देगा जिसे उसने उनके लिए पसन्द किया है; और उनके डर को ज़रूर अमन से बदल देगा: "वे मेरी इबादत करते हैं और मेरे साथ किसी चीज़ को साझी नहीं ठहराते।" और जो कोई इसके बाद सत्य का इनकार करे—तो वही अवज्ञाकारी हैं। और नमाज़ क़ायम रखो, ज़कात दो, और रसूल की आज्ञा मानो, ताकि तुम पर दया की जाए। यह न समझना कि सत्य के इनकारी ज़मीन में अल्लाह को बेबस कर सकते हैं। उनका ठिकाना आग है—और वह निश्चय ही बहुत बुरी जगह है! (55–57)

ऐ ईमान लाने वालो, तुम्हारे ग़ुलाम, और तुममें के वे जो अभी बालिग़ नहीं हुए, तीन वक़्तों में दाख़िल होने से पहले तुमसे इजाज़त ले लिया करें: फ़ज्र की नमाज़ से पहले, और जब तुम दोपहर को अपने कपड़े उतार रखते हो, और इशा की नमाज़ के बाद—ये तुम्हारे लिए परदे के तीन वक़्त हैं। इन वक़्तों के सिवा न तुम पर कोई गुनाह है न उन पर: वे तुम्हारे पास आते-जाते रहते हैं, तुममें से कुछ कुछ के पास। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें खोलकर बयान करता है: और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। और जब तुम्हारे बच्चे बालिग़ हो जाएँ, तो वे भी उसी तरह इजाज़त लिया करें जिस तरह उनसे पहले के लोग इजाज़त लेते रहे हैं। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोलकर बयान करता है: और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। और जो औरतें बच्चे जनने की उम्र से गुज़र चुकी हों और जिन्हें निकाह की उम्मीद न हो, उन पर कोई गुनाह नहीं अगर वे अपनी ऊपर की चादरें उतार रखें, बशर्ते कि अपने सिंगार की नुमाइश न करें; मगर इससे भी बचें तो यह उनके लिए बेहतर है। और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। (58–60)

न अंधे पर कोई पाबन्दी है, न लँगड़े पर, न बीमार पर, और न ख़ुद तुम पर, कि तुम अपने घरों से खाओ, या अपने बाप के घरों से, या अपनी माँओं के, या अपने भाइयों के, या अपनी बहनों के, या अपने चचाओं के, या अपनी फूफियों के, या अपने मामुओं के, या अपनी ख़ालाओं के घरों से, या उन घरों से जिनकी कुंजियाँ तुम्हारे अधिकार में हों, या अपने दोस्तों के यहाँ से। तुम पर कोई गुनाह नहीं चाहे मिलकर खाओ या अलग-अलग। फिर जब घरों में दाख़िल हो, तो अपने लोगों को सलाम किया करो, अल्लाह की ओर से ठहराया हुआ अभिवादन, बरकत वाला और पाकीज़ा। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें खोलकर बयान करता है, ताकि तुम बुद्धि से काम लो। (61)

सच्चे ईमान वाले तो बस वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए, और जब वे किसी सामूहिक काम के मौक़े पर उसके साथ होते हैं, तो चले नहीं जाते जब तक उससे इजाज़त न ले लें। निश्चय ही जो लोग तुमसे इजाज़त लेते हैं वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं। तो जब वे अपने किसी काम के लिए तुमसे इजाज़त माँगें, तो उनमें से जिसे चाहो इजाज़त दे दो, और उनके लिए अल्लाह से क्षमा माँगो: निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। रसूल के बुलाने को अपने बीच ऐसा न समझ लो जैसा तुममें से एक का दूसरे को बुलाना। अल्लाह तुममें से उन लोगों को जानता है जो एक-दूसरे की आड़ लेकर

खिसक जाते हैं। तो जो लोग उसके हुक्म के ख़िलाफ़ चलते हैं उन्हें डरना चाहिए कि कहीं उन पर कोई आज़माइश न आ पड़े, या कोई दुखद यातना। (62–63)

सुन लो, जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है। जिस हाल में तुम हो वह उसे ख़ूब जानता है; और जिस दिन वे उसकी ओर लौटाए जाएँगे, वह उन्हें बता देगा जो कुछ उन्होंने किया। और अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखता है। (64)

# 25. फ़ुरक़ान (अल-फ़ुरक़ान)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

बड़ी बरकत वाला है वह जिसने अपने बन्दे पर फ़ुरक़ान उतारा, ताकि वह सारे संसारों के लिए सचेत करने वाला हो—वह जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है, जिसने न कोई बेटा बनाया और न बादशाही में उसका कोई साझी है, जिसने हर चीज़ पैदा की और उसका ठीक-ठीक अन्दाज़ा ठहराया। फिर भी उन्होंने उसके सिवा ऐसे इलाह बना लिए जो कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि ख़ुद पैदा किए जाते हैं, जो ख़ुद अपने लिए भी किसी नुक़सान या फ़ायदे का अधिकार नहीं रखते, और जिनके बस में न मौत है, न ज़िन्दगी, न दोबारा उठाया जाना। (1–3)

और सत्य के इनकारी कहते हैं, "यह तो बस एक झूठ है जो इसने गढ़ लिया है, और कुछ दूसरे लोगों ने इसमें इसकी मदद की है।" तो वे सरासर ज़ुल्म और झूठ पर उतर आए। और वे कहते हैं, "ये अगलों की कहानियाँ हैं, जिन्हें इसने लिखवा लिया है; और ये सुबह और शाम इसे लिखवाई जाती हैं।" कह दो, "इसे उसने उतारा है जो आसमानों और ज़मीन का भेद जानता है। निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है।"[31] (4-6)

और वे कहते हैं, "यह कैसा रसूल है, जो खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है? इस पर कोई फ़रिश्ता क्यों न उतारा गया, कि इसके साथ रहकर सचेत करने वाला होता? या इसकी ओर कोई ख़ज़ाना क्यों न डाल दिया गया, या इसके पास कोई बाग़ क्यों न हुआ जिसमें से यह खाता?" और ये ज़ालिम कहते हैं, "तुम तो बस एक जादू के मारे हुए आदमी के पीछे चल रहे हो।" देखो, वे तुम्हारे लिए कैसी-कैसी मिसालें गढ़ते हैं! तो वे भटक गए, और कोई राह नहीं पा सकते। बड़ी बरकत वाला है वह जो, अगर चाहे, तो तुम्हें इससे बेहतर दे दे: ऐसे बाग़ जिनके नीचे नहरें बहती हैं, और महल भी। (7–10)

असल बात यह है कि वे उस घड़ी के आने ही को झुठलाते हैं।[32] और जो उस घड़ी को झुठलाए उसके लिए हमने दहकती आग तैयार कर रखी है। जब वह उन्हें दूर से देखेगी, तो वे उसके बिफरने और दहाड़ने की आवाज़ें सुनेंगे। और जब वे ज़ंजीरों में जकड़े हुए उसकी किसी तंग जगह में फेंके जाएँगे, तो वहाँ मौत को पुकारेंगे। "आज एक मौत को न पुकारो; बहुत-सी मौतों को पुकारो!" कह दो, "क्या यह बेहतर है, या हमेशगी की वह जन्नत जिसका वादा अल्लाह के प्रति सचेत रहने वालों से किया गया है, जो उनका बदला और उनके लौटने की जगह होगी? वहाँ उनके लिए वह सब होगा जो वे चाहेंगे, और वे सदा-सदा रहेंगे—यह एक वादा

[31] ये क़ुरआन की बुनियादी आयतें हैं। अतीत के ईसाई धर्म-समर्थक और आज के नास्तिक आलोचक क़ुरआन पर बेबुनियाद आपत्तियाँ करते हैं, और अल्लाह एक बहुत सुसंगत जवाब पेश करता है। अगर यह क़ुरआन आसमानों और ज़मीन के ऐसे भेद खोलता है जिन्हें मुहम्मद नहीं जान सकते थे, तो इससे यही नतीजा निकलता है कि क़ुरआन सब कुछ जानने वाले का कलाम है। टीकाकार आधुनिक विज्ञान के साथ जो तालमेल दिखाते हैं वह इसी तर्क की एक कड़ी है। इस अनुवाद की कई टिप्पणियाँ क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान के इसी तालमेल के बारे में हैं। उदाहरण के लिए, 21:30-33 और 51:47-49।

[32] ख़ुदा का इनकार, यानी नास्तिकता, और आख़िरत या जवाबदेही का इनकार साथ-साथ चलते हैं। क़ुरआन में इसका ज़िक्र कई बार आया है। सूरा 41, हा मीम सजदा, की आख़िरी आयत भी देखिए।

है जिसे पूरा करना तुम्हारे रब ने अपने ज़िम्मे ले रखा है।" और जिस दिन वह उन्हें और उन्हें भी जिनकी वे अल्लाह को छोड़कर इबादत करते हैं इकट्ठा करेगा, तो कहेगा, "क्या तुमने मेरे इन बन्दों को भटकाया था, या ये ख़ुद ही राह से भटक गए थे?" वे कहेंगे, "तू पाक है! हमें शोभा न देता था कि तेरे सिवा किसी को संरक्षक बनाएँ; मगर तूने इन्हें और इनके बाप-दादा को जीवन का सुख भोगने दिया यहाँ तक कि ये याददिहानी को भूल गए और तबाह होने वाले लोग बन गए।" अल्लाह कहेगा, "तो इन्होंने तुम्हारी बातों में तुम्हें झुठला दिया; अब तुम न यातना को टाल सकते हो न कोई मदद पा सकते हो।" और तुममें से जो कोई ज़ुल्म करेगा, हम उसे बड़ी यातना चखाएँगे। (11–19)

और ऐ नबी, हमने तुमसे पहले जो भी रसूल भेजे वे सब खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते-फिरते थे। और हमने तुममें से कुछ को कुछ के लिए आज़माइश बनाया है: क्या तुम सब्र करोगे? और तुम्हारा रब सब कुछ देख रहा है। और जो लोग हमसे मिलने की आस नहीं रखते वे कहते हैं, "हम पर फ़रिश्ते क्यों न उतारे गए? या हम अपने रब को क्यों नहीं देखते?" वे अपने जी में बड़े घमंड में पड़े हैं, और बड़ी भारी सरकशी पर उतर आए हैं। जिस दिन वे फ़रिश्तों को देखेंगे उस दिन अपराधियों के लिए कोई शुभ-सूचना न होगी, और फ़रिश्ते कहेंगे, "तुम्हारे और ख़ुशी के बीच एक मज़बूत, वर्जित आड़ है!" और जो भी कर्म उन्होंने किए होंगे हम उनकी ओर बढ़ेंगे और उन्हें उड़ती हुई धूल बना देंगे। उस दिन जन्नत वालों का ठिकाना बेहतर होगा और आरामगाह भी ज़्यादा अच्छी। और जिस दिन आसमान बादलों के साथ फट जाएगा, और फ़रिश्ते शान के साथ उतारे जाएँगे, उस दिन सच्ची बादशाही रहमान ही की होगी; और वह दिन सत्य के इनकारियों पर बड़ा कठिन होगा। और उस दिन ज़ालिम अपने हाथ चबाएगा और कहेगा, "काश मैंने रसूल के साथ राह अपनाई होती! हाय मेरी कमबख़्ती! काश मैंने फ़लाँ को दोस्त न बनाया होता! उसने मुझे याददिहानी से बहका दिया इसके बाद कि वह मेरे पास आ चुकी थी।" और शैतान तो आख़िरकार इनसान को बेसहारा छोड़ ही देता है। (20–29)

और रसूल कहेगा, "ऐ मेरे रब, मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को छोड़ी हुई चीज़ बना लिया था।" और इसी तरह हमने हर नबी के लिए अपराधियों में से दुश्मन बनाए; और तुम्हारा रब राह दिखाने वाले और मददगार के तौर पर काफ़ी है। (30–31)

और सत्य के इनकारी कहते हैं, "इस पर क़ुरआन एक ही बार में पूरा क्यों न उतार दिया गया?" ऐसा इसलिए है, कि हम इसके द्वारा तुम्हारे दिल को मज़बूत रखें; और हमने इसे ठहर-ठहरकर, अलग-अलग हिस्सों में तुम्हें सुनाया है। और वे तुम्हारे पास जो भी एतराज़ लाते हैं हम उसके जवाब में तुम्हें सत्य ला देते हैं, और उससे बेहतर व्याख्या।[33] (32–33)

[33] इतिहास के मैदान में वह्य: क़ुरआन 25:32–33 की एक ऐतिहासिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस

जो लोग अपने मुँह के बल जहन्नम की ओर इकट्ठे किए जाएँगे—वही सबसे बुरी जगह में हैं, और राह से सबसे ज़्यादा भटके हुए। (33–34)

और हमने मूसा को किताब दी, और उसके साथ उसके भाई हारून को मददगार बनाया। फिर हमने कहा, "तुम दोनों उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया है।" फिर हमने उन्हें पूरी तरह तबाह कर दिया। और नूह की क़ौम को भी: जब उन्होंने रसूलों को झुठलाया, तो हमने उन्हें डुबो दिया और लोगों के लिए निशानी बना दिया। और हमने ज़ालिमों के लिए दुखद यातना तैयार कर रखी है। और आद, और समूद, और रस्स वालों को भी, और इनके बीच की बहुत-सी नस्लों को: हर एक के लिए हमने चेतावनी की मिसालें बयान कीं, और हर एक को हमने तबाह करके छोड़ा। और ये लोग उस बस्ती पर से गुज़र चुके हैं जिस पर बुरी बारिश बरसाई गई थी। तो क्या ये उसे देखते नहीं रहे? नहीं—बल्कि इन्हें दोबारा उठाए जाने की कोई आस ही नहीं। और जब ये तुम्हें देखते हैं, तो बस तुम्हारा मज़ाक़ ही बनाते हैं: "क्या यही है जिसे अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है? यह तो हमें हमारे इलाहों से बहका ही देता, अगर हम उन पर जमे न रहते।" और जब वे यातना देखेंगे तब जान लेंगे कि कौन राह से ज़्यादा भटका हुआ है। क्या तुमने उसे देखा जिसने अपनी इच्छा ही को अपना इलाह बना लिया है? तो क्या तुम उसके ज़िम्मेदार बनोगे? या तुम समझते हो कि उनमें से अधिकतर सुनते या बुद्धि से काम लेते हैं? वे तो बस चौपायों की तरह हैं—बल्कि राह से उनसे भी ज़्यादा भटके हुए। (35–44)

क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारा रब छाया को कैसे फैला देता है? और अगर वह चाहता, तो उसे ठहरी हुई कर देता। फिर हमने सूरज को उसका राह बताने वाला बनाया, फिर हम उसे धीरे-धीरे अपनी ओर समेट लेते हैं। और वही है जिसने रात को तुम्हारे लिए लिबास, और नींद को आराम बनाया, और दिन को जी उठने का समय बनाया। और वही है जो हवाओं को अपनी दयालुता के आगे-आगे शुभ-सूचना बनाकर भेजता है; और हम आसमान से पाक पानी उतारते हैं, ताकि उससे किसी मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दगी दें, और अपनी पैदा की हुई मख़लूक़ में से बहुत-से चौपायों और इनसानों को उसमें से पिलाएँ। और हमने इसे लोगों के बीच बार-बार दोहराया है, ताकि वे नसीहत पकड़ें; मगर अधिकतर लोग नाशुक्री के सिवा हर चीज़ से इनकार ही करते रहे। और अगर हम चाहते, तो हर बस्ती में एक सचेत करने वाला उठा खड़ा करते। तो तुम सत्य के इनकारियों की बात न मानो, बल्कि इस क़ुरआन के द्वारा उनसे बड़ा ज़बरदस्त जिहाद करो। (45–52)

और वही है जिसने दो दरियाओं को मिलाकर छोड़ा, एक मीठा, प्यास बुझाने वाला, और दूसरा खारा, कड़वा, और दोनों के बीच एक परदा रख दिया, एक मज़बूत, वर्जित आड़। और वही है जिसने पानी से इनसान को पैदा किया, फिर उसे नसब और ससुराल के रिश्ते वाला बनाया।[34] और तुम्हारा रब बड़ी सामर्थ्य वाला है। फिर भी वे अल्लाह को छोड़कर उनकी इबादत करते हैं जो न उन्हें फ़ायदा दे सकते हैं न नुक़सान। और

[34] नबी मुहम्मद इस गहरी वैज्ञानिक हक़ीक़त को संयोग से नहीं जान सकते थे। बहुत-सी दूसरी आयतों की तरह यह आयत भी एक सब कुछ जानने वाले स्रोत का पता देती है। यही बात 21:30 और 24:45 में भी आई है।

सत्य का इनकारी तो अपने रब के ख़िलाफ़ हमेशा मददगार बना रहता है। और हमने तुम्हें बस शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा है। कह दो, "मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, सिवाय इसके कि जो चाहे अपने रब की ओर राह अपना ले।" और उस ज़िन्दा पर भरोसा रखो जो कभी मरने वाला नहीं, और उसकी हम्द के साथ तसबीह करो। और अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने के लिए वही काफ़ी है—वह जिसने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के बीच है छह युगों में पैदा किया, फिर अर्श पर विराजमान हुआ: वह रहमान है। तो उसके बारे में किसी जानने वाले से पूछो। और जब उनसे कहा जाता है, "रहमान के आगे सजदा करो," तो कहते हैं, "और रहमान क्या है? क्या हम उसे सजदा करें जिसका तुम हमें हुक्म दो?" और इससे उनकी बेज़ारी और बढ़ जाती है। बड़ी बरकत वाला है वह जिसने आसमान में बुर्ज बनाए, और उसमें एक चिराग़ और एक रौशन चाँद रखा। और वही है जिसने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने वाला बनाया, उसके लिए जो नसीहत पकड़ना चाहे या शुक्र अदा करना चाहे।[35] (53–62)

और रहमान के बन्दे वे हैं जो ज़मीन पर विनम्रता से चलते हैं, और जब नादान उनसे उलझते हैं, तो कह देते हैं, "सलाम"; जो अपने रब के आगे सजदे और क़ियाम में रातें गुज़ारते हैं; जो कहते हैं, "ऐ हमारे रब, जहन्नम की यातना को हमसे फेर दे, क्योंकि उसकी यातना तो चिमटकर रह जाने वाली है; निश्चय ही वह बुरा ठिकाना और बुरी जगह है"; जो जब ख़र्च करते हैं, तो न फ़ुज़ूलख़र्ची करते हैं न कंजूसी, बल्कि इन दोनों के बीच ठीक-ठीक तवाज़ुन रखते हैं; जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे इलाह को नहीं पुकारते, और न उस जान को जिसे अल्लाह ने आदरणीय ठहराया है क़त्ल करते हैं, मगर हक़ के साथ, और न ज़िना करते हैं—और जो कोई ये काम करेगा वह गुनाह का वबाल भुगतेगा: क़ियामत के दिन उसकी यातना दोहरी कर दी जाएगी, और वह उसमें ज़लील होकर सदा-सदा रहेगा—सिवाय उनके जो तौबा कर लें, ईमान लाएँ और अच्छे कर्म करें: तो ऐसे लोगों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों से बदल देगा। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। और जो कोई तौबा करे और अच्छा काम करे वह सचमुच अल्लाह की ओर पलट आता है। और वे वे हैं जो झूठी गवाही नहीं देते, और जब किसी बेहूदा बात के पास से गुज़रते हैं, तो वक़ार के साथ गुज़र जाते हैं; जिन्हें जब उनके रब की आयतों के द्वारा याद दिलाया जाता है, तो वे उन पर बहरे और अंधे होकर नहीं गिरते; और जो कहते हैं, "ऐ हमारे रब, हमें हमारे जोड़ों और हमारी औलाद की ओर से आँखों की ठंडक दे, और हमें उन लोगों के लिए नमूना बना जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं।" यही हैं जिन्हें उनके सब्र के बदले जन्नत का सबसे ऊँचा बालाख़ाना दिया जाएगा, और वहाँ उनका स्वागत दुआ और सलाम से होगा, वे उसमें सदा-सदा रहेंगे—क्या ही अच्छा ठिकाना और क्या ही अच्छी जगह है! कह दो, "मेरे रब को तुम्हारी क्या परवाह अगर तुम्हारी दुआ न हो। मगर तुमने तो सत्य को झुठला दिया, तो अब यातना चिमटकर रहेगी।" (63–77)

[35] **क़ुरआन एक सूरा का नाम तारामंडलों पर क्यों रखता है?**

# 26. शायर (अश-शुअरा)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ता सीन मीम। ये स्पष्ट किताब की आयतें हैं। (1–2)

ऐ नबी, शायद तुम इस ग़म में अपनी जान ही खपा दोगे कि वे ईमान नहीं लाते। अगर हम चाहें, तो उन पर आसमान से एक ऐसी निशानी उतार दें जिसके आगे उनकी गर्दनें झुकी रह जाएँ। और रहमान की ओर से उनके पास जो भी नई याददिहानी आती है वे उससे मुँह ही फेर लेते हैं। तो उन्होंने झुठला दिया है, तो जल्द ही उनके पास उस चीज़ की ख़बरें आ जाएँगी जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे। क्या उन्होंने ज़मीन को नहीं देखा—कि हमने उसमें हर उम्दा क़िस्म की कितनी ही चीज़ें उगाई हैं?[36] निश्चय ही इसमें एक निशानी है, फिर भी उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं। और निश्चय ही तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली, सदा दयावान है।[37] (3–9)

और जब तुम्हारे रब ने मूसा को पुकारा: "ज़ालिम लोगों के पास जाओ, फ़िरऔन की क़ौम के पास। क्या वे अल्लाह के प्रति सचेत न होंगे?" उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मुझे डर है कि वे मुझे झुठला देंगे, और मेरा सीना तंग होता है और मेरी ज़बान नहीं चलती; तो हारून की ओर भी सन्देश भेज। और उनका मुझ पर एक अपराध का दावा भी है, तो मुझे डर है कि वे मुझे क़त्ल कर देंगे।" उसने कहा, "हरगिज़ नहीं! तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ; हम तुम्हारे साथ हैं, सब कुछ सुन रहे हैं। तो फ़िरऔन के पास जाओ और कहो: हम सारे संसारों के रब के भेजे हुए हैं—कि इसराईल की सन्तान को हमारे साथ भेज दे।" (10–17)

फ़िरऔन ने कहा, "क्या हमने तुम्हें बचपन में अपने यहाँ पाला न था, और तुमने अपनी उम्र के कई वर्ष हमारे बीच न गुज़ारे थे? और फिर तुमने अपनी वह करतूत की जो की—और तुम नाशुक्रों में से हो।" उसने कहा, "मैंने वह काम उस समय किया था, जब मैं राह से भटके हुओं में था। फिर जब मुझे तुमसे डर हुआ तो मैं तुम्हारे यहाँ से भाग गया; फिर मेरे रब ने मुझे फ़ैसले की शक्ति दी और मुझे रसूलों में से बनाया। और क्या यही वह एहसान है जो तू मुझ पर जताता है—कि तूने इसराईल की सन्तान को ग़ुलाम बना रखा है?" (18–22)

फ़िरऔन ने कहा, "और सारे संसारों का रब क्या है?" उसने कहा, "आसमानों और ज़मीन का रब और उस सबका जो इन दोनों के बीच है, अगर तुम यक़ीन करने वाले हो।" उसने अपने आस-पास वालों से कहा, "क्या तुम सुनते नहीं?" उसने कहा, "तुम्हारा भी रब, और तुम्हारे अगले बाप-दादा का भी रब।" वह बोला,

---

[36] **"क्या वे ज़मीन को नहीं देखते?" — क़ुरआन 26:7 की एक व्याख्या**

[37] **वनस्पति जगत: क़ुरआन के अनुसार अल्लाह के ख़ुदा होने का एक सबूत**
**अल्लाह, पैदा करने वाला, बनाने वाला और सूरत देने वाला: वनस्पतियों का जगत**

"तुम्हारा यह रसूल जो तुम्हारी ओर भेजा गया है निश्चय ही दीवाना है।" उसने कहा, "पूरब और पश्चिम का रब और उस सबका जो इन दोनों के बीच है, अगर तुम बुद्धि से काम लो।" वह बोला, "अगर तुमने मेरे सिवा किसी और को इलाह बनाया, तो मैं तुम्हें ज़रूर क़ैदियों में शामिल कर दूँगा।" उसने कहा, "क्या उस हाल में भी कि मैं तुम्हारे पास एक साफ़-खुली चीज़ ले आऊँ?" वह बोला, "तो ले आओ, अगर तुम सच्चे हो।" तो उसने अपनी लाठी डाल दी, और वह एकाएक एक साफ़ दिखता अजगर थी; और उसने अपना हाथ निकाला, और वह एकाएक देखने वालों के लिए सफ़ेद चमक रहा था। उसने अपने आस-पास के सरदारों से कहा, "यह तो निश्चय ही एक माहिर जादूगर है, जो चाहता है कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से निकाल दे। तो अब तुम क्या राय देते हो?" वे बोले, "इसे और इसके भाई को अभी टाल दीजिए, और शहरों में इकट्ठा करने वाले भेज दीजिए कि हर माहिर जादूगर को आपके पास ले आएँ।" तो जादूगर एक जाने-बूझे दिन के ठहराए हुए समय पर इकट्ठे कर लिए गए, और लोगों से कहा गया, "क्या तुम भी इकट्ठे होगे, ताकि हम जादूगरों ही के पीछे चलें, अगर वही ग़ालिब रहें?" (23–40)

फिर जब जादूगर आए, तो उन्होंने फ़िरऔन से कहा, "क्या हमें कोई बदला भी मिलेगा अगर हम ही ग़ालिब रहे?" उसने कहा, "हाँ, और तब तुम मेरे क़रीबी लोगों में से होगे।" मूसा ने उनसे कहा, "डालो जो कुछ तुम्हें डालना है।" तो उन्होंने अपनी रस्सियाँ और अपनी लाठियाँ डाल दीं, और बोले, "फ़िरऔन के इक़बाल की क़सम, हम ही ग़ालिब रहेंगे।" फिर मूसा ने अपनी लाठी डाली, तो वह एकाएक उस स्वाँग को निगलने लगी जो उन्होंने रचा था। तो जादूगर सजदे में गिर पड़े। वे बोले, "हम ईमान लाए सारे संसारों के रब पर, मूसा और हारून के रब पर।" वह बोला, "तुम इस पर ईमान ले आए इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ! ज़रूर यही तुम्हारा बड़ा है, जिसने तुम्हें जादू सिखाया—तो जल्द ही तुम जान लोगे। मैं तुम्हारे हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं से कटवाऊँगा, और तुम सबको सूली पर चढ़ाऊँगा।" वे बोले, "कुछ हर्ज नहीं: हमें अपने रब ही की ओर लौटना है। हमें उम्मीद है कि हमारा रब हमारी ख़ताएँ क्षमा कर देगा, इसलिए कि हम सबसे पहले ईमान लाने वाले हैं।" (41–51)

और हमने मूसा की ओर वह्य की: "मेरे बन्दों को रातों-रात ले चलो, क्योंकि तुम्हारा पीछा किया जाएगा।" तो फ़िरऔन ने शहरों में इकट्ठा करने वाले भेजे: "ये लोग बस एक छोटा-सा जत्था हैं, और इन्होंने हमें ग़ुस्सा दिलाया है, मगर हम एक बड़ा दल हैं, सब चौकन्ने।" इस तरह हमने उन्हें बाग़ों और सोतों से, और ख़ज़ानों और शानदार ठिकाने से निकाल बाहर किया—ऐसा ही हुआ; और हमने इसराईल की सन्तान को इनका वारिस बना दिया। तो उन्होंने सूरज निकलते उनका पीछा किया, और जब दोनों गिरोहों ने एक-दूसरे को देख लिया, तो मूसा के साथियों ने कहा, "हम तो पकड़े गए!" उसने कहा, "हरगिज़ नहीं! मेरा रब मेरे साथ है; वह मुझे राह दिखाएगा।" तब हमने मूसा की ओर वह्य की: "अपनी लाठी समुद्र पर मारो।" तो वह फट गया, और हर टुकड़ा एक बड़े पहाड़ की तरह हो गया। और हम दूसरों को भी उस जगह के क़रीब ले आए, और हमने मूसा को और जो उसके साथ थे सबको बचा लिया; फिर दूसरों को डुबो दिया। निश्चय ही इसमें एक

निशानी है, फिर भी उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं। और निश्चय ही तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली, सदा दयावान है। (52–68)

और उन्हें इबराहीम का क़िस्सा सुनाओ, जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा, "तुम किस चीज़ की इबादत करते हो?" वे बोले, "हम बुतों की इबादत करते हैं, और उन्हीं से लगे बैठे रहते हैं।" उसने कहा, "क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारते हो, या तुम्हें कुछ फ़ायदा या नुक़सान पहुँचाते हैं?" वे बोले, "नहीं, बल्कि हमने अपने बाप-दादा को ऐसा ही करते पाया है।" उसने कहा, "क्या तुमने कभी सोचा कि तुम किनकी इबादत करते रहे हो, तुम भी और तुम्हारे अगले बाप-दादा भी? ये सब मेरे दुश्मन हैं—सिवाय सारे संसारों के रब के, जिसने मुझे पैदा किया, तो वही मुझे राह दिखाता है; जो मुझे खिलाता और पिलाता है; और जब मैं बीमार होता हूँ, तो वही मुझे शिफ़ा देता है; जो मुझे मौत देगा, फिर मुझे ज़िन्दा करेगा; और जिससे मुझे उम्मीद है कि बदले के दिन मेरी ख़ताएँ क्षमा कर देगा। ऐ मेरे रब, मुझे फ़ैसले की शक्ति दे और मुझे नेक लोगों के साथ मिला दे; और बाद में आने वालों में मुझे सच्ची नेकनामी दे; और मुझे नेमत भरी जन्नत के वारिसों में से बना; और मेरे बाप को क्षमा कर दे, कि वह भटके हुओं में से है; और जिस दिन लोग उठाए जाएँगे उस दिन मुझे रुसवा न करना, जिस दिन न माल कुछ काम आएगा न बेटे, सिवाय उसके जो अल्लाह के पास भला-चंगा दिल लेकर आए।" (69–89)

और जन्नत अल्लाह के प्रति सचेत रहने वालों के क़रीब ले आई जाएगी, और दहकती आग भटके हुओं के सामने खोल दी जाएगी, और उनसे पूछा जाएगा, "कहाँ हैं वे जिनकी तुम अल्लाह को छोड़कर इबादत करते थे? क्या वे तुम्हारी मदद कर सकते हैं, या अपनी ही मदद कर सकते हैं?" फिर वे उसमें औंधे मुँह झोंक दिए जाएँगे, वे भी और वे भटके हुए भी, और इबलीस के लश्कर भी, सब-के-सब। वहाँ वे आपस में झगड़ते हुए कहेंगे, "अल्लाह की क़सम, हम तो खुली गुमराही में थे जब हम तुम्हें सारे संसारों के रब के बराबर ठहराते थे। और हमें तो बस इन अपराधियों ही ने भटकाया, तो अब न हमारा कोई सिफ़ारिशी है, और न कोई जिगरी दोस्त। काश हमें एक बार और लौटना मिल जाता, तो हम ईमान वालों में से होते!" निश्चय ही इसमें एक निशानी है, फिर भी उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं। और निश्चय ही तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली, सदा दयावान है। (90–104)

नूह की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया, जब उनके भाई नूह ने उनसे कहा, "क्या तुम अल्लाह के प्रति सचेत न होगे? मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ, तो अल्लाह के प्रति सचेत रहो और मेरी आज्ञा मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता; मेरा बदला तो बस सारे संसारों के रब के ज़िम्मे है। तो अल्लाह के प्रति सचेत रहो और मेरी आज्ञा मानो।" वे बोले, "क्या हम तुम्हारी बात मान लें, जबकि तुम्हारे पीछे तो सबसे नीचे दर्जे के लोग चले हैं?" उसने कहा, "मुझे क्या मालूम कि वे क्या करते रहे हैं? उनका हिसाब तो बस मेरे रब के ज़िम्मे है, काश तुम समझते। और मैं ईमान वालों को धुत्कारने वाला नहीं; मैं तो बस एक खुला सचेत करने वाला हूँ।" वे बोले, "ऐ नूह, अगर तुम बाज़ न आए, तो ज़रूर पत्थर मार-मारकर हलाक कर दिए जाओगे।" उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मेरी क़ौम ने मुझे झुठला दिया, तो मेरे और उनके बीच दो-टूक फ़ैसला

कर दे, और मुझे और मेरे साथ के ईमान वालों को बचा ले।" तो हमने उसे और उन लोगों को जो उसके साथ भरी हुई नौका में थे बचा लिया, फिर उसके बाद बाक़ी लोगों को डुबो दिया। निश्चय ही इसमें एक निशानी है, फिर भी उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं। और निश्चय ही तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली, सदा दयावान है। (105–122)

आद ने रसूलों को झुठलाया, जब उनके भाई हूद ने उनसे कहा, "क्या तुम अल्लाह के प्रति सचेत न होगे? मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ, तो अल्लाह के प्रति सचेत रहो और मेरी आज्ञा मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता; मेरा बदला तो बस सारे संसारों के रब के ज़िम्मे है। क्या तुम हर ऊँची जगह पर बस दिल-बहलावे के लिए एक यादगार बनाते हो, और मज़बूत क़िले खड़े करते हो मानो तुम्हें सदा रहना है? और जब किसी पर हाथ डालते हो, तो ज़ालिम बनकर हाथ डालते हो? तो अल्लाह के प्रति सचेत रहो और मेरी आज्ञा मानो। और उसके प्रति सचेत रहो जिसने उन चीज़ों से तुम्हारी मदद की जिन्हें तुम जानते हो: उसने चौपायों और बेटों से तुम्हारी मदद की, और बाग़ों और सोतों से। मुझे तुम पर एक बड़े दिन की यातना का डर है।" वे बोले, "हमारे लिए बराबर है कि तुम नसीहत करो या नसीहत करने वालों में से न हो। यह तो बस अगलों की रीत है, और हम यातना पाने वाले नहीं।" तो उन्होंने उसे झुठला दिया, और हमने उन्हें हलाक कर दिया। निश्चय ही इसमें एक निशानी है, फिर भी उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं। और निश्चय ही तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली, सदा दयावान है। (123–140)

समूद ने रसूलों को झुठलाया, जब उनके भाई सालेह ने उनसे कहा, "क्या तुम अल्लाह के प्रति सचेत न होगे? मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ, तो अल्लाह के प्रति सचेत रहो और मेरी आज्ञा मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता; मेरा बदला तो बस सारे संसारों के रब के ज़िम्मे है। क्या तुम उन चीज़ों में जो यहाँ हैं यूँ ही अमन से छोड़ दिए जाओगे—बाग़ों और सोतों में, और खेतों में, और खजूर के उन पेड़ों में जिनके गाभे नर्म-नाज़ुक हैं? और तुम बड़ी महारत से पहाड़ों को तराशकर घर बनाते हो। तो अल्लाह के प्रति सचेत रहो और मेरी आज्ञा मानो, और उन लोगों का हुक्म न मानो जो हर हद से गुज़र जाते हैं, जो ज़मीन में बिगाड़ फैलाते हैं और सुधार नहीं करते।" वे बोले, "तुम तो बस जादू के मारे हुओं में से हो। तुम तो बस हमारे ही जैसे एक इनसान हो। तो कोई निशानी ले आओ, अगर तुम सच्चे हो।" उसने कहा, "यह एक ऊँटनी है: पानी पीने की एक बारी इसकी है, और एक जाने-बूझे दिन की बारी तुम्हारी। और इसे बुराई के साथ हाथ न लगाना, वरना एक बड़े दिन की यातना तुम्हें आ पकड़ेगी।" मगर उन्होंने उसकी कूँचें काट डालीं, फिर पछताते रह गए, क्योंकि यातना ने उन्हें आ पकड़ा। निश्चय ही इसमें एक निशानी है, फिर भी उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं। और निश्चय ही तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली, सदा दयावान है। (141–159)

लूत की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया, जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा, "क्या तुम अल्लाह के प्रति सचेत न होगे? मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ, तो अल्लाह के प्रति सचेत रहो और मेरी आज्ञा मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता; मेरा बदला तो बस सारे संसारों के रब के ज़िम्मे है। क्या तुम सारे संसार वालों में से मर्दों ही के पास जाते हो, और अपनी उन पत्नियों को छोड़ देते हो जिन्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारे

लिए पैदा किया है? नहीं—बल्कि तुम हद से बढ़ जाने वाले लोग हो।" वे बोले, "ऐ लूत, अगर तुम बाज़ न आए, तो ज़रूर निकाल बाहर किए जाओगे।" उसने कहा, "मैं तुम्हारे इस काम से सख़्त बेज़ार हूँ। ऐ मेरे रब, मुझे और मेरे घर वालों को इनकी करतूतों से छुटकारा दे।" तो हमने उसे और उसके घर वालों को, सबको, बचा लिया, सिवाय एक बुढ़िया के जो पीछे रह जाने वालों में थी। फिर हमने बाक़ी लोगों को तबाह कर दिया, और उन पर एक बारिश बरसाई—तो कैसी बुरी थी बारिश उन लोगों की जिन्हें सचेत किया गया था! निश्चय ही इसमें एक निशानी है, फिर भी उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं। और निश्चय ही तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली, सदा दयावान है। (160–175)

घने बन के रहने वालों ने रसूलों को झुठलाया, जब शुऐब ने उनसे कहा, "क्या तुम अल्लाह के प्रति सचेत न होगे? मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ, तो अल्लाह के प्रति सचेत रहो और मेरी आज्ञा मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता; मेरा बदला तो बस सारे संसारों के रब के ज़िम्मे है। नाप पूरी भरो, और घाटा देने वालों में से न हो; सीधी तराज़ू से तौलो; लोगों को उनकी चीज़ें घटाकर न दो, और ज़मीन में बिगाड़ फैलाते न फिरो। और उसके प्रति सचेत रहो जिसने तुम्हें और अगली नस्लों को पैदा किया।" वे बोले, "तुम तो बस जादू के मारे हुओं में से हो। और तुम तो बस हमारे ही जैसे एक इनसान हो, और हम तो तुम्हें झूठों में से समझते हैं। तो हम पर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दो, अगर तुम सच्चे हो।" उसने कहा, "जो कुछ तुम करते हो मेरा रब उसे ख़ूब जानता है।" तो उन्होंने उसे झुठला दिया, फिर छाया वाले दिन की यातना ने उन्हें आ पकड़ा; निश्चय ही वह एक बड़े दिन की यातना थी। निश्चय ही इसमें एक निशानी है, फिर भी उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं। और निश्चय ही तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली, सदा दयावान है। (176–191)

और निश्चय ही यह सारे संसारों के रब का उतारा हुआ है: ऐ नबी, इसे अमानतदार रूह लेकर तुम्हारे दिल पर उतरी है, ताकि तुम सचेत करने वालों में से हो, साफ़ अरबी ज़बान में। और निश्चय ही यह अगले लोगों के सहीफ़ों में भी है। क्या यह उनके लिए कोई निशानी नहीं कि इसे इसराईल की सन्तान के आलिम जानते हैं? और अगर हम इसे किसी ग़ैर-अरब पर उतार देते, और वह इसे उन्हें पढ़कर सुनाता, तब भी वे इस पर ईमान न लाते। इसी तरह हमने इसे अपराधियों के दिलों में से गुज़ार दिया है: वे इस पर ईमान न लाएँगे जब तक दुखद यातना न देख लें, फिर वह उन पर अचानक आ जाएगी, और उन्हें ख़बर तक न होगी, तब वे कहेंगे, "क्या हमें कुछ मुहलत मिलेगी?" तो क्या ये हमारी यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं? भला देखो तो—अगर हम इन्हें बरसों जीवन का सुख भोगने दें, फिर इन पर वह चीज़ आ जाए जिसका इनसे वादा किया जा रहा था, तो जो कुछ इन्हें बरतने को दिया गया था वह इनके किस काम आएगा? और हमने किसी बस्ती को हलाक नहीं किया मगर उसके लिए सचेत करने वाले थे, याददिहानी के लिए; और हम कभी ज़ुल्म करने वाले नहीं। (192–209)

और इसे शैतान लेकर नहीं उतरे: न यह उनके लायक़ है, और न उनके बस की बात। वे तो इसके सुनने से भी दूर रखे गए हैं। तो अल्लाह के साथ किसी दूसरे इलाह को न पुकारो, वरना तुम भी यातना पाने वालों में

से हो जाओगे। और अपने सबसे क़रीबी रिश्तेदारों को सचेत करो, और उन ईमान वालों के लिए अपना बाज़ू झुकाए रखो जो तुम्हारे पीछे चलें। फिर अगर वे तुम्हारी अवज्ञा करें, तो कह दो, "जो कुछ तुम करते हो मैं उससे बरी हूँ।" और उस प्रभुत्वशाली, सदा दयावान पर भरोसा रखो, जो तुम्हें देखता है जब तुम नमाज़ में खड़े होते हो, और सजदा करने वालों के बीच तुम्हारी हरकतों को भी। निश्चय ही वही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं? वे हर झूठ गढ़ने वाले गुनहगार पर उतरते हैं: वे सुनी-सुनाई बात डाल देते हैं, और उनमें से अधिकतर झूठे हैं। और रहे कवि, तो उनके पीछे तो बहके हुए लोग ही चलते हैं। क्या तुम नहीं देखते कि वे हर वादी में भटकते फिरते हैं, और यह कि वे वह कहते हैं जो करते नहीं? सिवाय उनके जो ईमान लाए, और अच्छे कर्म किए, और अल्लाह को बहुत याद किया, और ज़ुल्म सहने के बाद अपना बचाव किया। और ज़ुल्म करने वाले जल्द ही जान लेंगे कि वे किस करवट उलटाए जाते हैं। (210–227)

# 27. चींटियाँ (अन-नम्ल)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ता सीन। ये क़ुरआन की, एक स्पष्ट किताब की आयतें हैं, ईमान वालों के लिए मार्गदर्शन और शुभ-सूचना, जो नमाज़ क़ायम रखते हैं और ज़कात देते हैं, और जो आख़िरत पर पक्का यक़ीन रखते हैं। रहे वे जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, तो हमने उनके कर्म उनके लिए लुभावने बना दिए हैं, तो वे अंधों की तरह भटकते फिरते हैं। यही हैं जिनके लिए बुरी यातना है, और आख़िरत में यही सबसे ज़्यादा घाटे में होंगे। और ऐ नबी, निश्चय ही तुम यह क़ुरआन उसकी ओर से पा रहे हो जो हिकमत वाला, सब कुछ जानने वाला है। (1–6)

जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा, "मुझे एक आग दिखाई दी है। मैं अभी वहाँ से तुम्हारे पास कोई ख़बर लाता हूँ, या कोई दहकता अंगारा ले आता हूँ, ताकि तुम ताप सको।" फिर जब वह उसके पास पहुँचा, तो आवाज़ आई: "बरकत वाला है वह जो इस आग में है और वह जो इसके आस-पास है! और पाक है अल्लाह, सारे संसारों का रब! ऐ मूसा, यह मैं हूँ, अल्लाह, प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला। और अपनी लाठी डाल दो।" मगर जब उसने उसे साँप की तरह बल खाते देखा, तो पीठ फेरकर भागा और पलटकर न देखा। "ऐ मूसा, डरो नहीं: मेरे सामने रसूल डरा नहीं करते, सिवाय उसके जिसने ज़ुल्म किया हो फिर बुराई के बाद उसे भलाई से बदल दिया हो—तो मैं बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान हूँ। और अपना हाथ अपने गिरेबान में डालो: वह बिना किसी ऐब के सफ़ेद चमकता हुआ निकलेगा—ये फ़िरऔन और उसकी क़ौम के लिए नौ निशानियों में से हैं। निश्चय ही वे अवज्ञाकारी लोग हैं।" (7–12)

मगर जब हमारी निशानियाँ आँखें खोल देने वाली बनकर उनके पास आईं, तो वे बोले, "यह तो खुला जादू है।" और उन्होंने ज़ुल्म और घमंड से उनका इनकार किया, हालाँकि उनके जी उनका यक़ीन कर चुके थे। तो देखो, बिगाड़ फैलाने वालों का अंजाम कैसा हुआ। (13–14)

और हमने दाऊद और सुलैमान को ज्ञान दिया, और दोनों ने कहा, "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने हमें अपने बहुत-से ईमान वाले बन्दों पर श्रेष्ठता दी।" और सुलैमान दाऊद का वारिस हुआ, और उसने कहा, "ऐ लोगो, हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई है, और हमें हर चीज़ में से दिया गया है। निश्चय ही यह खुला अनुग्रह है।" और सुलैमान के लिए जिन्नों, इनसानों और परिन्दों में से उसके लश्कर इकट्ठे किए गए, और वे क़तारों में बाँधकर रखे जाते थे, यहाँ तक कि जब वे चींटियों की घाटी पर पहुँचे, तो एक चींटी ने कहा, "ऐ चींटियो, अपने घरों में घुस जाओ, कहीं सुलैमान और उसके लश्कर तुम्हें बेख़बरी में कुचल न डालें।" तो वह उसकी बात पर हँसते हुए मुस्कुरा उठा, और बोला, "ऐ मेरे रब, मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी उस नेमत का शुक्र अदा करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर की है, और ऐसे नेक काम करूँ जो तुझे पसन्द हों, और अपनी दयालुता से मुझे अपने नेक बन्दों में दाख़िल कर।" (15–19)

और सुलैमान ने परिन्दों का जायज़ा लिया तो कहा, "क्या बात है कि मुझे हुदहुद दिखाई नहीं देता? या वह ग़ायब रहने वालों में से है? मैं उसे ज़रूर सख़्त सज़ा दूँगा, या उसे ज़बह कर डालूँगा, वरना वह मेरे सामने कोई खुली वजह पेश करे।" मगर हुदहुद ज़्यादा देर ग़ायब न रहा। उसने आकर कहा, "मैंने वह बात मालूम की है जो आपको मालूम नहीं। और मैं सबा से आपके पास एक पक्की ख़बर लेकर आया हूँ। मैंने वहाँ एक औरत को उन पर राज करते पाया, जिसे हर चीज़ में से दिया गया है, और जिसका एक शानदार तख़्त है। मैंने उसे और उसकी क़ौम को अल्लाह को छोड़कर सूरज के आगे सजदा करते पाया। और शैतान ने उनके कर्म उनके लिए लुभावने बना दिए हैं और उन्हें राह से रोक दिया है, तो वे राह नहीं पाते—कि वे उस अल्लाह को सजदा न करें, जो आसमानों और ज़मीन की छिपी चीज़ों को निकालता है, और जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो। अल्लाह—उसके सिवा कोई इलाह नहीं, वह महान अर्श का रब है।" सुलैमान ने कहा, "हम अभी देख लेते हैं कि तूने सच कहा या तू झूठों में से है। मेरा यह ख़त ले जा और इसे उनकी ओर डाल दे, फिर उनसे हट जा और देख कि वे क्या जवाब लौटाते हैं।" (20–28)

मलिका ने कहा, "ऐ सरदारो, मेरी ओर एक इज़्ज़त वाला ख़त डाला गया है। वह सुलैमान की ओर से है, और उसमें लिखा है: अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है। मेरे मुक़ाबले में सरकशी न करो, बल्कि अल्लाह के आगे समर्पित होकर मेरे पास चले आओ।" उसने कहा, "ऐ सरदारो, मेरे इस मामले में मुझे राय दो: मैं किसी मामले का फ़ैसला नहीं करती जब तक तुम मेरे पास मौजूद न हो।" वे बोले, "हम ताक़त वाले और बड़े लड़ाका लोग हैं, मगर हुक्म आपके हाथ में है; तो देख लीजिए कि आप क्या हुक्म देती हैं।" उसने कहा, "बादशाह जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे उजाड़ देते हैं, और वहाँ के सबसे इज़्ज़त वालों को सबसे ज़लील कर डालते हैं। और वे ऐसा ही किया करते हैं। और मैं उनकी ओर एक तोहफ़ा भेजती हूँ, फिर देखती हूँ कि भेजे हुए लोग क्या लेकर लौटते हैं।" (29–35)

फिर जब उसका भेजा हुआ सुलैमान के पास पहुँचा, तो उसने कहा, "क्या तुम माल से मेरी मदद करना चाहते हो? जो कुछ अल्लाह ने मुझे दिया है वह उससे बेहतर है जो उसने तुम्हें दिया है। नहीं—बल्कि तुम्हीं अपने तोहफ़े पर फूले नहीं समाते। उनके पास वापस जाओ: हम उन पर ऐसे लश्कर लेकर ज़रूर चढ़ आएँगे जिनका वे मुक़ाबला न कर सकेंगे, और हम उन्हें वहाँ से ज़लील और पस्त करके निकाल देंगे।" उसने कहा, "ऐ सरदारो, तुममें से कौन उसका तख़्त मेरे पास ले आएगा इससे पहले कि वे अल्लाह के आगे समर्पित होकर मेरे पास आएँ?" जिन्नों में से एक ज़ोरावर ने कहा, "मैं उसे आपके पास ले आऊँगा इससे पहले कि आप अपनी जगह से उठें; और मैं इसकी ताक़त रखता हूँ, और अमानतदार हूँ।" जिसके पास किताब का ज्ञान था उसने कहा, "मैं उसे आपके पास ले आऊँगा इससे पहले कि आपकी निगाह आपकी ओर पलटे।" फिर जब उसने उसे अपने सामने रखा हुआ देखा, तो कहा, "यह मेरे रब का अनुग्रह है, ताकि वह मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्री। और जो कोई शुक्र करता है वह अपने ही भले के लिए शुक्र करता है, और जो कोई नाशुक्री करे—तो मेरा रब निस्पृह, बड़ा उदार है।" उसने कहा, "उसके लिए उसके तख़्त का रूप बदल दो; हम देखें कि वह राह पाती है या उन लोगों में से है जो राह नहीं पाते।" फिर जब वह

आई, तो उससे पूछा गया, "क्या तुम्हारा तख़्त ऐसा ही है?" वह बोली, "यह तो मानो वही है।" सुलैमान ने कहा, "हमें इससे पहले ही ज्ञान दिया जा चुका था, और हम अल्लाह के आगे समर्पित हो चुके थे।" और उसे उन चीज़ों ने रोक रखा था जिनकी वह अल्लाह के सिवा इबादत करती थी, क्योंकि वह सत्य का इनकार करने वाली क़ौम में से थी। उससे कहा गया, "महल में दाख़िल हो जाओ।" फिर जब उसने उसे देखा तो उसे गहरा पानी समझा और अपनी पिंडलियाँ खोल दीं। उसने कहा, "यह तो शीशों से जड़ा हुआ चिकना महल है।" वह बोली, "ऐ मेरे रब, मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया; और मैं सुलैमान के साथ अल्लाह के आगे समर्पित होती हूँ, जो सारे संसारों का रब है।" (36–44)

और समूद की ओर हमने उनके भाई सालेह को भेजा: "अल्लाह की इबादत करो!" तो वे एकाएक दो गिरोह होकर आपस में झगड़ने लगे। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी मचाते हो? तुम अल्लाह से क्षमा क्यों नहीं माँगते, ताकि तुम पर दया की जाए?" वे बोले, "हम तो तुमसे और तुम्हारे साथ वालों से बुरा शगुन लेते हैं।" उसने कहा, "तुम्हारा शगुन तो अल्लाह के पास है। नहीं—बल्कि तुम ऐसे लोग हो जो आज़माइश में डाले जा रहे हो।" और उस शहर में नौ आदमी थे जो ज़मीन में बिगाड़ फैलाते थे और सुधार न करते थे। वे बोले, "आपस में अल्लाह की क़सम खाओ कि हम रात को उस पर और उसके घर वालों पर छापा मारेंगे, फिर उसके वारिस से कह देंगे: हम उसके घर वालों की हलाकत के मौक़े पर मौजूद ही न थे, और हम बिलकुल सच्चे हैं।" और उन्होंने एक चाल चली, और हमने भी एक चाल चली, और उन्हें ख़बर तक न हुई। तो देखो, उनकी चाल का अंजाम कैसा हुआ: हमने उन्हें और उनकी क़ौम को, सबको, तबाह कर दिया। तो ये हैं उनके घर, जो उनके ज़ुल्म के कारण उजड़े पड़े हैं। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो जानते हैं। और हमने उन्हें बचा लिया जो ईमान लाए और अल्लाह के प्रति सचेत रहते थे। (45–53)

और लूत को भी, जब उसने अपनी क़ौम से कहा, "क्या तुम आँखों देखते वह अश्लील काम करते हो? क्या तुम औरतों को छोड़कर वासना के साथ मर्दों के पास जाते हो? नहीं—बल्कि तुम नादानी करने वाले लोग हो।" तो उसकी क़ौम का जवाब बस यही था कि वे बोले, "लूत के घर वालों को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो: ये बड़े पाक-साफ़ बनने वाले लोग हैं!" तो हमने उसे और उसके घर वालों को बचा लिया, सिवाय उसकी पत्नी के: हमने ठहरा दिया था कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी। और हमने उन पर एक बारिश बरसाई—तो कैसी बुरी थी बारिश उन लोगों की जिन्हें सचेत किया गया था! (54–58)

ऐ नबी, कह दो, "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, और सलाम है उसके उन बन्दों पर जिन्हें उसने चुन लिया।" क्या अल्लाह बेहतर है, या वे जिन्हें ये उसके साथ साझी ठहराते हैं? भला वह कौन है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारा, फिर उसके द्वारा हमने रौनक़ भरे बाग़ उगाए, जिनके पेड़ उगाना तुम्हारे बस में न था? क्या अल्लाह के साथ कोई और इलाह है? नहीं—बल्कि ये ऐसे लोग हैं जो सत्य से कतराते हैं। भला वह कौन है जिसने ज़मीन को ठहरने की जगह बनाया, और उसके बीच नदियाँ बहाईं, और उस पर जमे हुए पहाड़ रखे, और दो समुद्रों के बीच एक आड़ रख दी? क्या अल्लाह

के साथ कोई और इलाह है? नहीं—बल्कि उनमें से अधिकतर जानते नहीं। भला वह कौन है जो बेक़रार की पुकार सुनता है जब वह उसे पुकारे, और तकलीफ़ दूर कर देता है, और तुम्हें ज़मीन में जानशीन बनाता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और इलाह है? तुम कितना कम सोच-विचार करते हो! भला वह कौन है जो ख़ुश्की और समुद्र के अँधेरों में तुम्हें राह दिखाता है, और जो हवाओं को अपनी दयालुता के आगे-आगे शुभ-सूचना बनाकर भेजता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और इलाह है? अल्लाह उससे बहुत ऊँचा है जो वे साझी ठहराते हैं। भला वह कौन है जो सृष्टि का आरम्भ करता है फिर उसे दोहराएगा, और जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और इलाह है? कह दो, "अपनी दलील लाओ, अगर तुम सच्चे हो।" (59–64)

कह दो, "आसमानों और ज़मीन में अल्लाह के सिवा कोई परोक्ष नहीं जानता; और उन्हें यह भी ख़बर नहीं कि वे कब उठाए जाएँगे।" नहीं—बल्कि आख़िरत के बारे में उनका ज्ञान थककर रह गया; नहीं—बल्कि वे उसके बारे में शक में हैं; नहीं—बल्कि वे उससे अंधे हैं। और सत्य के इनकारी कहते हैं, "क्या जब हम और हमारे बाप-दादा मिट्टी हो जाएँगे, तो क्या हम सचमुच निकाले जाएँगे? इसका वादा तो इससे पहले भी हमसे और हमारे बाप-दादा से किया जाता रहा है: यह तो बस अगलों की कहानियाँ हैं।" कह दो, "ज़मीन में चलो-फिरो और देखो कि अपराधियों का अंजाम कैसा हुआ।" और उन पर दुखी न हो, और न उनकी चालों से तंगदिल हो। और वे कहते हैं, "यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो?" कह दो, "हो सकता है कि जिस चीज़ के लिए तुम जल्दी मचा रहे हो उसका कुछ हिस्सा तुम्हारे पीछे ही आ लगा हो।" और निश्चय ही तुम्हारा रब लोगों पर बड़ा अनुग्रह करने वाला है, मगर उनमें से अधिकतर शुक्र अदा नहीं करते। और निश्चय ही तुम्हारा रब जानता है जो कुछ उनके सीने छिपाते हैं और जो कुछ वे ज़ाहिर करते हैं। और आसमान और ज़मीन में कोई छिपी चीज़ ऐसी नहीं जो एक खुली किताब में दर्ज न हो। (65–75)

निश्चय ही यह क़ुरआन इसराईल की सन्तान को उन बातों में से अधिकतर सुना देता है जिनमें वे मतभेद करते हैं। और निश्चय ही यह ईमान वालों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता है। निश्चय ही तुम्हारा रब अपने हुक्म से उनके बीच फ़ैसला कर देगा; और वही प्रभुत्वशाली, सब कुछ जानने वाला है। तो अल्लाह पर भरोसा रखो: निश्चय ही तुम खुले सत्य पर हो। तुम न मुर्दों को सुना सकते हो, और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो जब वे पीठ फेरकर चल दें; और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से निकालकर राह दिखा सकते हो। तुम तो बस उन्हीं को सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, फिर वे समर्पित हो जाते हैं। और जब उन पर बात पूरी होने का समय आ जाएगा, तो हम उनके लिए ज़मीन से एक जानवर निकालेंगे, जो उनसे बातें करेगा: कि लोग हमारी आयतों पर यक़ीन नहीं करते थे। और जिस दिन हम हर समुदाय में से उन लोगों की एक फ़ौज इकट्ठा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाते थे, फिर वे क़तारों में रोके जाएँगे—यहाँ तक कि जब वे आ जाएँगे, तो वह कहेगा, "क्या तुमने मेरी आयतों को झुठला दिया था, हालाँकि तुमने उन्हें अपने ज्ञान के घेरे में लिया ही न था? या फिर तुम क्या करते रहे थे?" और उनके ज़ुल्म के कारण उन पर बात पूरी हो जाएगी, तो वे कुछ बोल न सकेंगे। (76–85)

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने रात बनाई ताकि वे उसमें आराम करें, और दिन को दिखाने वाला बनाया? निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान रखते हैं। और जिस दिन सूर फूँका जाएगा, तो वे सब जो आसमानों में हैं और वे सब जो ज़मीन में हैं घबरा उठेंगे, सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह चाहे; और सब उसके पास दबे हुए हाज़िर होंगे। और तुम पहाड़ों को देखते हो, जिन्हें तुम जमा हुआ समझते हो, हालाँकि वे बादलों की चाल चल रहे होंगे: यह अल्लाह की कारीगरी है, जिसने हर चीज़ को पुख़्ता बनाया। निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो वह उसकी पूरी ख़बर रखता है। जो कोई नेकी लेकर आएगा उसके लिए उससे बेहतर है, और वे उस दिन की घबराहट से अमन में होंगे। और जो कोई बुराई लेकर आएगा—तो ऐसे लोग औंधे मुँह आग में झोंक दिए जाएँगे: "तुम्हें उसी का तो बदला दिया जा रहा है जो तुम करते थे।" "मुझे तो बस यही हुक्म दिया गया है कि मैं इस शहर के रब की इबादत करूँ, जिसने इसे हुरमत वाला ठहराया है, और हर चीज़ उसी की है; और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं उन लोगों में से रहूँ जो अल्लाह के आगे समर्पित हैं, और यह कि क़ुरआन पढ़कर सुनाऊँ।" तो जो कोई राह पर आएगा वह अपने ही भले के लिए राह पर आएगा; और जो भटके उससे कह दो, "मैं तो बस सचेत करने वालों में से हूँ।" और कह दो, "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है। वह जल्द ही तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाएगा, तो तुम उन्हें पहचान लोगे। और तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो।" (86–93)

# 28. क़िस्सा (अल-क़सस)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ता सीन मीम। ये स्पष्ट किताब की आयतें हैं। ऐ नबी, हम तुम्हें मूसा और फ़िरऔन का कुछ हाल ठीक-ठीक सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। निश्चय ही फ़िरऔन ने ज़मीन में सरकशी की और उसके रहने वालों को गिरोहों में बाँट दिया, उनमें से एक गिरोह को वह दबाकर रखता था, उनके बेटों को ज़बह करता और उनकी औरतों को ज़िन्दा रहने देता था। निश्चय ही वह बिगाड़ फैलाने वालों में से था। और हम चाहते थे कि उन लोगों पर एहसान करें जो ज़मीन में दबाकर रखे गए थे, और उन्हें पेशवा बनाएँ, और उन्हीं को वारिस बनाएँ, और उन्हें ज़मीन में जमाव दें, और फ़िरऔन और हामान और उनके लश्करों को, उन्हीं के हाथों, वही चीज़ दिखा दें जिससे वे डरते थे। (1–6)

और हमने मूसा की माँ के जी में डाला: "इसे दूध पिलाती रहो; फिर जब तुम्हें इसके बारे में डर हो, तो इसे दरिया में डाल देना, और न डरना न दुखी होना: हम इसे तुम्हारे पास लौटा देंगे और इसे रसूलों में से बनाएँगे।" फिर फ़िरऔन के घर वालों ने उसे उठा लिया, ताकि वह उनके लिए दुश्मन और ग़म का कारण बने। निश्चय ही फ़िरऔन और हामान और उनके लश्कर ख़ताकार थे। और फ़िरऔन की पत्नी ने कहा, "यह मेरी और तुम्हारी आँखों की ठंडक है! इसे क़त्ल न करो; हो सकता है यह हमारे काम आए, या हम इसे बेटा बना लें।" और उन्हें कुछ ख़बर न थी। और मूसा की माँ का दिल हर चीज़ से ख़ाली हो गया; वह तो क़रीब थी कि उसका भेद खोल देती, अगर हमने उसके दिल को मज़बूत न किया होता, ताकि वह ईमान वालों में से रहे। और उसने उसकी बहन से कहा, "इसके पीछे-पीछे जाओ।" तो वह उसे दूर से देखती रही, और उन्हें ख़बर न हुई। और हमने पहले ही से उस पर दूध पिलाने वालियों का दूध हराम कर रखा था, तो उसने कहा, "क्या मैं तुम्हें ऐसे घर वालों का पता बताऊँ जो तुम्हारे लिए इसकी परवरिश करें और इसके ख़ैरख़्वाह हों?" इस तरह हमने उसे उसकी माँ के पास लौटा दिया, ताकि उसकी आँख ठंडी रहे और वह दुखी न हो, और ताकि वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है; मगर उनमें से अधिकतर जानते नहीं। (7–13)

और जब वह अपनी पूरी जवानी को पहुँचा और पुख़्ता हो गया, तो हमने उसे फ़ैसले की शक्ति और ज्ञान दिया: और इसी तरह हम अच्छा करने वालों को बदला देते हैं। और वह शहर में ऐसे समय दाख़िल हुआ जब वहाँ के लोग बेख़बर थे, तो उसने वहाँ दो आदमियों को लड़ते पाया, एक उसकी अपनी क़ौम का था और दूसरा उसके दुश्मनों में से। तो जो उसकी क़ौम का था उसने उसके मुक़ाबले में जो उसके दुश्मनों में से था उससे मदद माँगी, तो मूसा ने उसे घूँसा मारा और उसका काम तमाम कर दिया। उसने कहा, "यह शैतान का काम है; निश्चय ही वह खुला गुमराह करने वाला दुश्मन है।" उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, तो मुझे क्षमा कर दे," तो उसने उसे क्षमा कर दिया: निश्चय ही वही बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। उसने कहा, "ऐ मेरे रब, चूँकि तूने मुझ पर एहसान किया है, मैं कभी अपराधियों का मददगार न बनूँगा।" (14–17)

फिर अगली सुबह वह शहर में था, डरता हुआ और चौकन्ना, कि अचानक वही आदमी जिसने कल उससे मदद माँगी थी फिर उसे पुकारने लगा। मूसा ने उससे कहा, "तू तो खुला बहका हुआ आदमी है।" फिर जब उसने चाहा कि उसे पकड़े जो उन दोनों का दुश्मन था, तो वह बोला, "ऐ मूसा, क्या तुम मुझे भी क़त्ल करना चाहते हो जैसे तुमने कल एक आदमी को क़त्ल किया था? तुम तो बस ज़मीन में ज़ालिम बनकर रहना चाहते हो; और यह नहीं चाहते कि सुधार करने वालों में से हो।" और शहर के परले सिरे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया और बोला, "ऐ मूसा, सरदार तुम्हारे बारे में मशविरा कर रहे हैं कि तुम्हें क़त्ल कर दें, तो निकल जाओ: मैं तुम्हारा ख़ैरख़्वाह हूँ।" तो वह वहाँ से निकल खड़ा हुआ, डरता हुआ और चौकन्ना, उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मुझे ज़ालिम लोगों से छुटकारा दे।" (18–21)

और जब उसने मदयन की ओर रुख़ किया, तो कहा, "उम्मीद है कि मेरा रब मुझे सीधी राह दिखाएगा।" और जब वह मदयन के पानी पर पहुँचा, तो वहाँ लोगों की एक भीड़ को पाया जो अपने जानवरों को पानी पिला रही थी, और उनसे अलग दो औरतों को पाया जो अपने जानवरों को रोके खड़ी थीं। उसने कहा, "तुम दोनों का क्या मामला है?" वे बोलीं, "हम पानी नहीं पिला सकतीं जब तक चरवाहे अपने जानवर हटा न ले जाएँ, और हमारे बाप बहुत बूढ़े हैं।" तो उसने उनके जानवरों को पानी पिला दिया, फिर छाया की ओर हट गया और बोला, "ऐ मेरे रब, जो भलाई भी तू मेरी ओर उतार दे मैं उसका मुहताज हूँ।" फिर उन दोनों में से एक लजाती हुई चलती उसके पास आई, और बोली, "मेरे बाप आपको बुलाते हैं, ताकि आपने जो हमारे लिए पानी पिलाया उसका बदला आपको दें।" फिर जब वह उसके पास पहुँचा और उसे सारा क़िस्सा सुनाया, तो उसने कहा, "डरो नहीं: तुम ज़ालिम लोगों से बच निकले।" उन दोनों में से एक ने कहा, "अब्बा जान, इन्हें मज़दूरी पर रख लीजिए: सबसे अच्छा आदमी जिसे आप मज़दूरी पर रखें वही है जो ताक़तवर और अमानतदार हो।" उसने कहा, "मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दो बेटियों में से एक का निकाह तुमसे कर दूँ, इस शर्त पर कि तुम आठ वर्ष मेरे यहाँ काम करो; और अगर दस पूरे कर दो, तो यह तुम्हारी अपनी ओर से होगा। और मैं तुम पर सख़्ती नहीं करना चाहता; अल्लाह ने चाहा तो तुम मुझे नेक लोगों में से पाओगे।" उसने कहा, "यह बात मेरे और आपके बीच तय हो गई: इन दोनों मुद्दतों में से जो भी मैं पूरी कर दूँ, मुझ पर कोई ज़्यादती न हो। और जो कुछ हम कह रहे हैं अल्लाह उस पर गवाह है।" (22–28)

फिर जब मूसा ने वह मुद्दत पूरी कर ली और अपने घर वालों को लेकर चला, तो उसे तूर की ओर एक आग दिखाई दी। उसने अपने घर वालों से कहा, "यहीं ठहरो: मुझे एक आग दिखाई दी है। शायद मैं वहाँ से तुम्हारे पास कोई ख़बर ले आऊँ, या आग का कोई अंगारा, ताकि तुम ताप सको।" फिर जब वह उसके पास पहुँचा, तो घाटी के दाहिने किनारे से, उस बरकत वाली जगह में, पेड़ से आवाज़ आई: "ऐ मूसा, यह मैं हूँ, अल्लाह, सारे संसारों का रब। और अपनी लाठी डाल दो।" मगर जब उसने उसे साँप की तरह बल खाते देखा, तो पीठ फेरकर भागा और पलटकर न देखा। "ऐ मूसा, आगे आओ और डरो नहीं: तुम अमन में हो। अपना हाथ अपने गिरेबान में डालो: वह बिना किसी ऐब के सफ़ेद चमकता हुआ निकलेगा। और डर से बचने के लिए अपना बाज़ू अपनी ओर समेट लो। ये तुम्हारे रब की ओर से फ़िरऔन और उसके सरदारों के लिए दो

दलीलें हैं: निश्चय ही वे अवज्ञाकारी लोग हैं।" उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मैंने उनका एक आदमी मार डाला था, तो मुझे डर है कि वे मुझे क़त्ल कर देंगे। और मेरा भाई हारून बात करने में मुझसे ज़्यादा साफ़ ज़बान वाला है, तो उसे मेरे साथ मददगार बनाकर भेज कि वह मेरी पुष्टि करे; मुझे डर है कि वे मुझे झुठला देंगे।" उसने कहा, "हम तुम्हारे भाई के द्वारा तुम्हारा बाज़ू मज़बूत करेंगे, और तुम दोनों को ऐसा ग़लबा देंगे कि वे तुम तक पहुँच न सकेंगे। हमारी निशानियों के साथ, तुम दोनों और वे जो तुम्हारे पीछे चलेंगे वही ग़ालिब रहेंगे।" (29–35)

फिर जब मूसा उनके पास हमारी खुली-खुली निशानियाँ लेकर आया, तो वे बोले, "यह तो बस गढ़ा हुआ जादू है; और हमने अपने अगले बाप-दादा में तो ऐसी बात कभी सुनी नहीं।" मूसा ने कहा, "मेरा रब उसे ख़ूब जानता है जो उसके पास से मार्गदर्शन लेकर आया है, और उसे भी जिसके लिए आख़िरत का घर होगा। निश्चय ही ज़ालिम फलते-फूलते नहीं।" और फ़िरऔन ने कहा, "ऐ सरदारो, मैं तो अपने सिवा तुम्हारे किसी इलाह को नहीं जानता। तो ऐ हामान, मेरे लिए गारे पर आग जलाकर ईंटें पका और मेरे लिए एक ऊँचा बुर्ज बना, ताकि मैं चढ़कर मूसा के इलाह को झाँक आऊँ—हालाँकि मैं तो उसे झूठों में से समझता हूँ।" (36–38)

और उसने और उसके लश्करों ने ज़मीन में नाहक़ घमंड किया, और समझे कि वे हमारी ओर लौटाए न जाएँगे। तो हमने उसे और उसके लश्करों को पकड़ लिया और उन्हें समुद्र में फेंक दिया। तो देखो, ज़ालिमों का अंजाम कैसा हुआ। और हमने उन्हें ऐसे पेशवा बनाया जो आग की ओर बुलाते हैं, और क़ियामत के दिन उनकी मदद न की जाएगी। और हमने इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी, और क़ियामत के दिन वे बदहाल लोगों में से होंगे। और हमने मूसा को किताब दी, इसके बाद कि हम अगली नस्लों को हलाक कर चुके थे, लोगों के लिए आँखें खोल देने वाली दलीलें बनाकर, और मार्गदर्शन और दयालुता, ताकि वे नसीहत पकड़ें। (39–43)

और ऐ मुहम्मद, तुम पश्चिमी किनारे पर न थे जब हमने मूसा को वह हुक्म सौंपा, और न तुम गवाहों में से थे; बल्कि हमने बहुत-सी नस्लें उठाईं, और उन पर लम्बी मुद्दत गुज़र गई। और न तुम मदयन वालों में रहते थे, कि उन्हें हमारी आयतें सुनाते; बल्कि रसूल भेजने वाले हम ही हैं। और न तुम तूर के किनारे पर थे जब हमने पुकारा था; बल्कि यह तुम्हारे रब की दयालुता है, ताकि तुम ऐसे लोगों को सचेत करो जिनके पास तुमसे पहले कोई सचेत करने वाला नहीं आया, ताकि वे नसीहत पकड़ें, और ताकि ऐसा न हो कि—जब उनके अपने हाथों की आगे भेजी हुई करतूतों के कारण उन पर कोई मुसीबत आ पड़े—तो वे कहें, "ऐ हमारे रब, तूने हमारी ओर कोई रसूल क्यों न भेजा, कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और ईमान वालों में से होते?" मगर अब जबकि हमारी ओर से सत्य उनके पास आ गया, तो कहते हैं, "इसे वैसा ही क्यों न दिया गया जैसा मूसा को दिया गया था?" क्या उन्होंने उसका इनकार नहीं किया जो इससे पहले मूसा को दिया गया था? वे कहते हैं, "ये दोनों जादू हैं, एक-दूसरे के मददगार," और कहते हैं, "हम दोनों ही के इनकारी हैं।" कह दो, "तो अल्लाह के पास से कोई ऐसी किताब ले आओ जो इन दोनों से बढ़कर राह दिखाने वाली हो, मैं उसी के पीछे चलूँगा, अगर तुम सच्चे हो।" फिर अगर वे तुम्हारी बात का जवाब न दें, तो जान लो कि वे बस अपनी

इच्छाओं के पीछे चलते हैं; और उससे बढ़कर भटका हुआ कौन होगा जो अल्लाह के मार्गदर्शन के बिना अपनी इच्छा के पीछे चले? निश्चय ही अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। (44–50)

और हमने यह बात उन तक लगातार पहुँचाई है, ताकि वे नसीहत पकड़ें। जिन्हें हमने इससे पहले किताब दी थी वे इस पर ईमान लाते हैं, और जब यह उन्हें सुनाया जाता है तो कहते हैं, "हम इस पर ईमान लाए: निश्चय ही यह हमारे रब की ओर से सत्य है। हम तो इससे पहले ही अल्लाह के आगे समर्पित थे।" यही हैं जिन्हें उनका बदला दो बार दिया जाएगा, इसलिए कि उन्होंने सब्र किया, और वे बुराई को भलाई से दूर करते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं; और जब कोई बेहूदा बात सुनते हैं तो उससे मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं, "हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म। तुम पर सलाम हो: हम नादानों को नहीं चाहते।" (51–55)

ऐ नबी, तुम जिसे चाहो उसे राह नहीं दिखा सकते; बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है राह दिखाता है, और वह राह पाने वालों को ख़ूब जानता है। और वे कहते हैं, "अगर हम तुम्हारे साथ इस मार्गदर्शन पर चलें, तो अपनी ज़मीन से उचक लिए जाएँगे।" क्या हमने उन्हें अमन वाले हरम में जगह नहीं दी, जिसकी ओर हर तरह के फल खिंचे चले आते हैं, हमारी ओर से रोज़ी के तौर पर? मगर उनमें से अधिकतर जानते नहीं। और कितनी ही बस्तियाँ हमने हलाक कर दीं जो अपनी रोज़ी पर इतराती थीं! तो ये हैं उनके घर, जो उनके बाद बहुत कम ही आबाद हुए; और हम ही वारिस रहे। और तुम्हारा रब बस्तियों को हलाक करने वाला नहीं जब तक उनकी केन्द्रीय बस्ती में एक रसूल न भेज दे जो उन्हें हमारी आयतें सुनाए; और न हम बस्तियों को हलाक करने वाले हैं सिवाय इसके कि उनके लोग ज़ालिम हों। और जो कुछ भी तुम्हें दिया गया है वह बस दुनिया की ज़िन्दगी का सामान और उसकी शोभा है; और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बेहतर है और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? (56–60)

तो क्या वह आदमी जिससे हमने अच्छा वादा किया है, जिसे वह पाकर रहेगा, उस जैसा हो सकता है जिसे हमने दुनिया की ज़िन्दगी का सामान दे रखा है, फिर क़ियामत के दिन वह उन लोगों में होगा जो पकड़कर हाज़िर किए जाएँगे? और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा और कहेगा, "कहाँ हैं मेरे वे साझी जिनका तुम दावा किया करते थे?" तो वे जिन पर बात पूरी हो चुकी होगी कहेंगे, "ऐ हमारे रब, ये हैं वे लोग जिन्हें हमने भटकाया था; हमने इन्हें वैसे ही भटकाया जैसे हम ख़ुद भटके थे। हम तेरे सामने इनसे बरी होते हैं: ये हमारी इबादत तो नहीं करते थे।" और कहा जाएगा, "पुकारो अपने ठहराए हुए साझियों को!" तो वे उन्हें पुकारेंगे, मगर वे उन्हें कोई जवाब न देंगे; और वे यातना देख लेंगे—काश वे राह पर होते! और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा और कहेगा, "तुमने रसूलों को क्या जवाब दिया था?" तो उस दिन उन पर सारी ख़बरें अँधेरी हो जाएँगी, और वे आपस में पूछ भी न सकेंगे। रहा वह जिसने तौबा कर ली और ईमान लाया और अच्छे कर्म किए, तो उम्मीद है कि वह सफल होने वालों में से होगा। और तुम्हारा रब जो चाहता है पैदा करता है, और चुन लेता है: चुनना उनके अधिकार में नहीं। पाक है अल्लाह, और उससे बहुत ऊँचा जो वे साझी ठहराते हैं! और तुम्हारा रब जानता है जो कुछ उनके सीने छिपाते हैं और जो कुछ वे ज़ाहिर करते हैं। और वही अल्लाह है:

उसके सिवा कोई इलाह नहीं। उसी के लिए प्रशंसा है दुनिया में भी और आख़िरत में भी; और फ़ैसला उसी का है, और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे। (61–70)

ऐ नबी, कह दो, "भला सोचो तो: अगर अल्लाह क़ियामत के दिन तक तुम पर हमेशा के लिए रात ही कर दे, तो अल्लाह के सिवा कौन इलाह है जो तुम्हें रौशनी ला दे? तो क्या तुम सुनते नहीं?" कह दो, "भला सोचो तो: अगर अल्लाह क़ियामत के दिन तक तुम पर हमेशा के लिए दिन ही कर दे, तो अल्लाह के सिवा कौन इलाह है जो तुम्हें वह रात ला दे जिसमें तुम आराम करो? तो क्या तुम देखते नहीं?" और यह उसकी दयालुता है कि उसने तुम्हारे लिए रात और दिन बनाए, ताकि तुम एक में आराम करो और दूसरे में उसका अनुग्रह ढूँढो, और ताकि तुम शुक्र अदा करो। और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा और कहेगा, "कहाँ हैं मेरे वे साझी जिनका तुम दावा किया करते थे?" और हम हर समुदाय में से एक गवाह खींच निकालेंगे, फिर कहेंगे, "अपनी दलील लाओ," तब वे जान लेंगे कि सत्य अल्लाह ही का है, और जो कुछ वे गढ़ा करते थे वह सब उनसे गुम हो जाएगा। (71–75)

निश्चय ही क़ारून मूसा की क़ौम में से था, मगर उसने उन पर ज़्यादती की। और हमने उसे इतने ख़ज़ाने दे रखे थे कि उनकी कुंजियाँ ही ताक़तवर लोगों के एक जत्थे को थका देती थीं। जब उसकी क़ौम ने उससे कहा, "इतराओ मत: निश्चय ही अल्लाह इतराने वालों को पसन्द नहीं करता। और जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें दिया है उससे आख़िरत का घर तलाश करो; मगर दुनिया में से अपना हिस्सा भी न भूलो। और भलाई करो, जैसे अल्लाह ने तुम्हारे साथ भलाई की है, और ज़मीन में बिगाड़ न चाहो: निश्चय ही अल्लाह बिगाड़ फैलाने वालों को पसन्द नहीं करता।" वह बोला, "यह तो मुझे बस उस ज्ञान के कारण दिया गया है जो मेरे पास है।" क्या उसे मालूम न था कि अल्लाह उससे पहले ऐसी कितनी ही नस्लें हलाक कर चुका है जो उससे ज़्यादा ताक़तवर और जमा-जत्थे में उससे बढ़ी हुई थीं? और अपराधियों से उनके गुनाहों के बारे में पूछा नहीं जाता। फिर वह अपनी पूरी ठाठ-बाट में अपनी क़ौम के सामने निकला। जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी के इच्छुक थे वे बोले, "काश हमारे पास भी वैसा ही होता जैसा क़ारून को दिया गया है! वह तो सचमुच बड़े नसीब वाला है।" मगर जिन्हें ज्ञान दिया गया था वे बोले, "तुम्हारी कमबख़्ती! अल्लाह का बदला उसके लिए बेहतर है जो ईमान लाए और अच्छे कर्म करे—और यह बस सब्र करने वालों ही को मिलता है।" फिर हमने उसे और उसके घर को ज़मीन में धँसा दिया। तो अल्लाह के मुक़ाबले में उसका कोई जत्था न था जो उसकी मदद करता, और न वह ख़ुद अपना बचाव करने वालों में से था। और जो लोग कल तक उसकी जगह होने की आरज़ू कर रहे थे वे कहने लगे, "अरे! अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और नपी-तुली भी देता है। अगर अल्लाह ने हम पर एहसान न किया होता, तो हमें भी धँसा देता। अरे! सत्य के इनकारी सफल नहीं होते।" (76–82)

आख़िरत का वह घर हम उन लोगों के लिए रखते हैं जो न ज़मीन में अपनी बड़ाई चाहते हैं, न बिगाड़। और आख़िरी अंजाम उन्हीं का है जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं। जो कोई नेकी लेकर आएगा उसके लिए उससे बेहतर है; और जो कोई बुराई लेकर आएगा—तो बुरे काम करने वालों को बस उसी का बदला मिलेगा

जो वे करते थे। निश्चय ही जिसने तुम पर यह क़ुरआन फ़र्ज़ किया है वह तुम्हें ज़रूर लौटने की जगह पर वापस लाएगा। कह दो, "मेरा रब उसे ख़ूब जानता है जो मार्गदर्शन लेकर आया, और उसे भी जो खुली गुमराही में है।" और तुम्हें यह उम्मीद न थी कि तुम्हारी ओर किताब डाली जाएगी; यह तो बस तुम्हारे रब की दयालुता है। तो तुम हरगिज़ सत्य के इनकारियों के मददगार न बनना, और वे तुम्हें अल्लाह की आयतों से हरगिज़ रोकने न पाएँ, इसके बाद कि वे तुम्हारी ओर उतारी जा चुकी हैं। और अपने रब की ओर बुलाओ, और उसके साथ साझी ठहराने वालों में से हरगिज़ न होना। और अल्लाह के साथ किसी दूसरे इलाह को न पुकारो: उसके सिवा कोई इलाह नहीं। हर चीज़ मिटने वाली है सिवाय उसके चेहरे के। फ़ैसला उसी का है, और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे। (83–88)

# 29. मकड़ी (अल-अनकबूत)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

अलिफ़ लाम मीम। क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे बस इतना कहने पर छोड़ दिए जाएँगे कि "हम ईमान लाए," और उन्हें आज़माया न जाएगा? हालाँकि हम उन्हें आज़मा चुके हैं जो इनसे पहले थे: तो अल्लाह उन्हें ज़रूर ज़ाहिर करके रहेगा जो सच्चे हैं, और झूठों को भी ज़रूर ज़ाहिर करके रहेगा। या जो लोग बुरे काम करते हैं उन्होंने यह समझ रखा है कि वे हमसे आगे निकल जाएँगे? कैसा बुरा फ़ैसला है जो वे करते हैं! जो कोई अल्लाह से मिलने की आस रखता हो—तो अल्लाह का ठहराया हुआ समय ज़रूर आने वाला है; और वही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। और जो कोई मेहनत करता है, वह अपने ही भले के लिए मेहनत करता है: निश्चय ही अल्लाह सारे संसार वालों से निस्पृह है। और जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, हम उनकी बुराइयाँ उनसे ज़रूर दूर कर देंगे, और उन्हें उनके सबसे अच्छे कामों के अनुसार बदला देंगे। और हमने इनसान को अपने माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की है; मगर अगर वे तुझ पर ज़ोर डालें कि तू मेरे साथ उसे साझी ठहराए जिसका तुझे कोई ज्ञान नहीं, तो उनकी बात न मान। मेरी ही ओर तुम सबको लौटना है, फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ तुम करते रहे। और जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए—हम उन्हें ज़रूर नेक लोगों में दाख़िल करेंगे। (1–9)

और लोगों में कुछ ऐसे हैं जो कहते हैं, "हम अल्लाह पर ईमान लाए," मगर जब उन्हें अल्लाह की राह में तकलीफ़ दी जाती है तो लोगों के सताने को ऐसा समझ लेते हैं मानो वह अल्लाह की यातना हो; और अगर तुम्हारे रब की ओर से मदद आ जाए तो ज़रूर कहेंगे, "हम तो शुरू ही से तुम्हारे साथ थे।" क्या अल्लाह उसे ख़ूब नहीं जानता जो सारे संसार वालों के सीनों में है? और अल्लाह उन्हें ज़रूर ज़ाहिर करके रहेगा जो ईमान लाए, और मुनाफ़िक़ों को भी ज़रूर ज़ाहिर करके रहेगा। और सत्य के इनकारी ईमान वालों से कहते हैं, "हमारी राह पर चलो, और तुम्हारे गुनाह हम उठा लेंगे।" हालाँकि वे उनके गुनाहों में से कुछ भी उठाने वाले नहीं: निश्चय ही वे झूठे हैं। और वे अपने बोझ ज़रूर उठाएँगे, और अपने बोझों के साथ दूसरे बोझ भी; और क़ियामत के दिन उनसे उन बातों के बारे में ज़रूर पूछा जाएगा जो वे गढ़ा करते थे। (10–13)

और हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा, तो वह उनके बीच पचास कम एक हज़ार वर्ष रहा; फिर तूफ़ान ने उन्हें इस हाल में आ पकड़ा कि वे ज़ुल्म पर अड़े हुए थे। मगर हमने उसे और नौका वालों को बचा लिया, और उसे सारे संसारों के लिए एक निशानी बना दिया। (14–15)

और इबराहीम को भी, जब उसने अपनी क़ौम से कहा, "अल्लाह की इबादत करो और उसके प्रति सचेत रहो। यही तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानो। तुम अल्लाह को छोड़कर बस बुतों की इबादत करते हो, और एक झूठ गढ़ते हो। निश्चय ही जिनकी तुम अल्लाह को छोड़कर इबादत करते हो वे तुम्हें रोज़ी देने का कोई अधिकार नहीं रखते; तो अल्लाह ही के पास रोज़ी ढूँढो, और उसी की इबादत करो, और उसी का शुक्र

अदा करो: उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे। और अगर तुम झुठलाते हो, तो तुमसे पहले के समुदाय भी झुठला चुके हैं; और रसूल के ज़िम्मे तो बस साफ़-साफ़ पहुँचा देना है।" (16–18)

क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह किस तरह सृष्टि का आरम्भ करता है, फिर उसे दोहराता है? निश्चय ही यह अल्लाह के लिए आसान है। कह दो, "ज़मीन में चलो-फिरो और देखो कि उसने किस तरह सृष्टि का आरम्भ किया; फिर अल्लाह ही बाद की उठान भी उठाएगा। निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। वह जिसे चाहता है यातना देता है और जिस पर चाहता है दया करता है; और उसी की ओर तुम पलटाए जाओगे। और तुम न ज़मीन में उससे बच निकल सकते हो न आसमान में, और अल्लाह के सिवा तुम्हारा न कोई संरक्षक है न मददगार।" और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का और उससे मिलने का इनकार किया—वही मेरी दयालुता से निराश हुए, और उन्हीं के लिए दुखद यातना है। (19–23)

तो उसकी क़ौम का जवाब बस यही था कि वे बोले, "इसे क़त्ल कर दो, या इसे जला डालो!" मगर अल्लाह ने उसे आग से बचा लिया। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान रखते हैं। और उसने कहा, "तुमने अल्लाह को छोड़कर बुतों को बस दुनिया की ज़िन्दगी में आपस की मुहब्बत के कारण अपना लिया है; फिर क़ियामत के दिन तुम एक-दूसरे का इनकार करोगे और एक-दूसरे पर लानत करोगे, और तुम्हारा ठिकाना आग होगी, और तुम्हारा कोई मददगार न होगा।" तो लूत ने उसकी बात मानी, और उसने कहा, "मैं अपने रब की ओर हिजरत करता हूँ: निश्चय ही वही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है।" और हमने उसे इसहाक़ और याक़ूब दिए, और उसकी औलाद में नुबुव्वत और किताब रख दी; और हमने उसे दुनिया में उसका बदला दिया, और आख़िरत में वह निश्चय ही नेक लोगों में से होगा। (24–27)

और लूत को भी, जब उसने अपनी क़ौम से कहा, "तुम वह अश्लील काम करते हो जो तुमसे पहले सारे संसार में किसी ने नहीं किया। क्या तुम मर्दों के पास जाते हो, और राह काटते हो, और अपनी मजलिसों में घिनौने काम करते हो?" तो उसकी क़ौम का जवाब बस यही था कि वे बोले, "ले आओ हम पर अल्लाह की यातना, अगर तुम सच्चे हो।" उसने कहा, "ऐ मेरे रब, बिगाड़ फैलाने वाले इन लोगों के मुक़ाबले में मेरी मदद कर।" और जब हमारे भेजे हुए इबराहीम के पास शुभ-सूचना लेकर आए, तो उन्होंने कहा, "हम उस बस्ती के लोगों को हलाक करने वाले हैं: निश्चय ही उसके लोग ज़ालिम हैं।" उसने कहा, "मगर उसमें तो लूत है।" वे बोले, "हम ख़ूब जानते हैं कि उसमें कौन है। हम उसे और उसके घर वालों को ज़रूर बचा लेंगे, सिवाय उसकी पत्नी के: वह पीछे रह जाने वालों में से होगी।" और जब हमारे भेजे हुए लूत के पास पहुँचे, तो वह उनके कारण परेशान हुआ और उन्हें बचाने में अपने को बेबस पाया। वे बोले, "न डरो, और न दुखी हो: हम तुम्हें और तुम्हारे घर वालों को बचा लेंगे, सिवाय तुम्हारी पत्नी के; वह पीछे रह जाने वालों में से होगी। हम इस बस्ती के लोगों पर आसमान से एक आफ़त उतारने वाले हैं, उनकी अवज्ञा के कारण।" और हमने उसमें से एक खुली निशानी उन लोगों के लिए छोड़ दी है जो बुद्धि से काम लेते हैं। (28–35)

और मदयन की ओर हमने उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो, और अंतिम दिन की आस रखो, और ज़मीन में बिगाड़ फैलाते न फिरो।" मगर उन्होंने उसे झुठला दिया, तो उन्हें भूकम्प ने आ पकड़ा, और सुबह हुई तो वे अपने घरों में औंधे पड़े थे। और आद और समूद को भी—और यह तुम पर उनके घरों से खुल चुका है। और शैतान ने उनके कर्म उनके लिए लुभावने बना दिए और उन्हें राह से रोक दिया, हालाँकि वे सूझ-बूझ वाले लोग थे। और क़ारून, फ़िरऔन और हामान को भी: मूसा उनके पास खुले प्रमाण लेकर आया, मगर उन्होंने ज़मीन में घमंड किया, हालाँकि वे हमसे आगे निकल जाने वाले न थे। तो हर एक को हमने उसके गुनाह पर पकड़ा: उनमें कोई था जिस पर हमने पत्थर बरसाने वाली आँधी भेजी; कोई था जिसे कड़क ने आ पकड़ा; कोई था जिसे हमने ज़मीन में धँसा दिया; और कोई था जिसे हमने डुबो दिया। और अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता; बल्कि वे ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे। जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे संरक्षक बना लिए उनकी मिसाल मकड़ी की-सी है जो अपना एक घर बनाती है—और निश्चय ही सब घरों से कमज़ोर घर मकड़ी का घर है, काश वे जानते। निश्चय ही अल्लाह जानता है जिस चीज़ को भी वे उसके सिवा पुकारते हैं। और वही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। और ये मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं, मगर इन्हें बस ज्ञान वाले ही समझते हैं। अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को सत्य के साथ पैदा किया। निश्चय ही इसमें ईमान वालों के लिए निशानी है। (36–44)

ऐ नबी, किताब में से जो कुछ तुम्हारी ओर वह्य किया गया है उसे पढ़कर सुनाओ, और नमाज़ क़ायम रखो: निश्चय ही नमाज़ अश्लीलता और बुराई से रोकती है। और अल्लाह की याद तो सबसे बड़ी चीज़ है; और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। और किताब वालों से बहस न करो मगर उस ढंग से जो सबसे अच्छा हो—सिवाय उनके जो उनमें से ज़ुल्म करें—और कहो, "हम उस पर ईमान लाए जो हमारी ओर उतारा गया और जो तुम्हारी ओर उतारा गया; और हमारा इलाह और तुम्हारा इलाह एक ही है, और हम उसी के आगे समर्पित हैं।" और इसी तरह हमने तुम्हारी ओर किताब उतारी है। तो जिन्हें हमने किताब दी है वे इस पर ईमान लाते हैं, और इन लोगों में से भी कुछ ऐसे हैं जो इस पर ईमान लाते हैं; और हमारी आयतों का इनकार बस वही करते हैं जो सत्य के इनकारी हैं। (45–47)

और तुम इससे पहले न कोई किताब पढ़ते थे, और न अपने दाहिने हाथ से उसे लिखते थे; वरना बातिल पर चलने वालों को शक करने का मौक़ा मिल जाता। नहीं—बल्कि ये खुली-खुली निशानियाँ हैं उन लोगों के सीनों में जिन्हें ज्ञान दिया गया है; और हमारी आयतों का इनकार बस ज़ालिम ही करते हैं। और वे कहते हैं, "इस पर इसके रब की ओर से निशानियाँ क्यों न उतारी गईं?" कह दो, "निशानियाँ तो बस अल्लाह ही के पास हैं, और मैं तो बस एक खुला सचेत करने वाला हूँ।" क्या उनके लिए यह काफ़ी नहीं कि हमने तुम पर यह किताब उतारी, जो उन्हें पढ़कर सुनाई जाती है? निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए दयालुता और याददिहानी है जो ईमान रखते हैं। कह दो, "मेरे और तुम्हारे बीच गवाह के तौर पर अल्लाह काफ़ी है: वह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। और जो लोग बातिल पर ईमान लाए और अल्लाह का इनकार किया—वही घाटे में हैं।" (48–52)

और वे तुमसे यातना के लिए जल्दी मचाते हैं। और अगर एक अवधि ठहराई न गई होती, तो यातना उन पर आ चुकी होती; और वह उन पर ज़रूर अचानक आएगी, और उन्हें ख़बर तक न होगी। वे तुमसे यातना के लिए जल्दी मचाते हैं—हालाँकि जहन्नम सत्य के इनकारियों को घेरकर रहेगी, जिस दिन यातना उन्हें उनके ऊपर से और उनके पाँवों के नीचे से ढाँप लेगी, और वह कहेगा, "चखो उसका मज़ा जो तुम करते थे!" (53–55)

ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो, मेरी ज़मीन बहुत कुशादा है: तो बस मेरी ही इबादत करो। हर जान को मौत का मज़ा चखना है; फिर हमारी ही ओर तुम लौटाए जाओगे। और जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए—हम उन्हें जन्नत के ऊँचे बालाख़ानों में ज़रूर जगह देंगे, जिनके नीचे नहरें बहती हैं, वे उनमें सदा-सदा रहेंगे। क्या ही अच्छा बदला है काम करने वालों का, जो सब्र करते हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं! और कितने ही जानदार हैं जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते! अल्लाह ही उन्हें भी रोज़ी देता है और तुम्हें भी। और वही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया और सूरज और चाँद को किसने काम में लगाया, तो वे ज़रूर कहेंगे, "अल्लाह ने।" तो फिर वे किधर फेरे जाते हैं? अल्लाह अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और उसके लिए नपी-तुली भी कर देता है: निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखता है। और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमान से पानी किसने उतारा और उसके द्वारा ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा किया, तो वे ज़रूर कहेंगे, "अल्लाह ने।" कह दो, "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है!" मगर उनमें से अधिकतर बुद्धि से काम नहीं लेते। (56–63)

और यह दुनिया की ज़िन्दगी तो बस दिल-बहलावा और खेल है; और आख़िरत का घर—असल ज़िन्दगी तो वही है, काश वे जानते। फिर जब वे नौका में सवार होते हैं तो अल्लाह को पुकारते हैं, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए; मगर ज्यों ही वह उन्हें बचाकर ख़ुश्की पर ले आता है, वे साझी ठहराने लगते हैं, उसकी नाशुक्री करते हुए जो हमने उन्हें दिया है, और कुछ समय मज़े करते हुए। तो जल्द ही वे जान लेंगे। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने एक अमन वाला हरम बनाया, जबकि उनके आस-पास से लोग उचक लिए जाते हैं? तो क्या वे बातिल पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमत का इनकार करते हैं? और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े, या सत्य को झुठलाए जब वह उसके पास आए? क्या सत्य के इनकारियों का ठिकाना जहन्नम में नहीं? और जो लोग हमारी ख़ातिर मेहनत करते हैं—हम उन्हें अपनी राहें ज़रूर दिखाएँगे। और निश्चय ही अल्लाह अच्छा करने वालों के साथ है। (64–69)

# 30. रूमी (अर-रूम)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

अलिफ़ लाम मीम। रूमी क़रीब की ज़मीन में हार गए हैं; मगर अपनी हार के बाद वे कुछ ही वर्षों में ग़ालिब आ जाएँगे। फ़ैसला अल्लाह ही का है, पहले भी और बाद में भी; और उस दिन ईमान वाले अल्लाह की मदद पर ख़ुशियाँ मनाएँगे। वह जिसकी चाहता है मदद करता है; और वही प्रभुत्वशाली, सदा दयावान है। यह अल्लाह का वादा है: अल्लाह अपना वादा नहीं तोड़ता, मगर अधिकतर लोग जानते नहीं। वे दुनिया की ज़िन्दगी का बस ऊपरी पहलू जानते हैं, और आख़िरत से वे बेपरवाह हैं। क्या उन्होंने अपने जी में सोच-विचार नहीं किया? अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के बीच है नहीं पैदा किया मगर सत्य के साथ और एक ठहराई हुई अवधि के लिए; फिर भी बहुत-से लोग अपने रब से मिलने के इनकारी हैं। (1–8)

क्या ये ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते कि इनसे पहले के लोगों का अंजाम कैसा हुआ? वे इनसे ज़्यादा ताक़तवर थे, और उन्होंने ज़मीन को जोता-बोया और उसे उससे ज़्यादा आबाद किया जितना इन्होंने आबाद किया है; और उनके रसूल उनके पास खुले प्रमाण लेकर आए। तो अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता; बल्कि वे ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे। फिर जिन्होंने बुराई की उनका अंजाम बुरा ही हुआ, इसलिए कि उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया और उनका मज़ाक़ उड़ाते रहे। अल्लाह ही सृष्टि का आरम्भ करता है, फिर वही उसे दोहराएगा; फिर उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे। (9–11)

और जिस दिन वह घड़ी आ खड़ी होगी, अपराधी निराशा से गुमसुम रह जाएँगे, और उनके ठहराए हुए साझियों में से कोई उनका सिफ़ारिशी न होगा; और वे अपने साझियों का इनकार कर देंगे। और जिस दिन वह घड़ी आ खड़ी होगी—उस दिन वे अलग-अलग हो जाएँगे: तो जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए वे एक बाग़ में मगन रखे जाएँगे; और जिन्होंने सत्य का इनकार किया और हमारी आयतों को और आख़िरत के मिलने को झुठलाया—वे यातना में हाज़िर रखे जाएँगे। (12–16)

तो अल्लाह की तसबीह करो जब तुम शाम करते हो और जब सुबह करते हो—और आसमानों और ज़मीन में प्रशंसा उसी के लिए है—और तीसरे पहर और जब तुम दोपहर करते हो। वह जानदार को बेजान से निकालता है और बेजान को जानदार से निकालता है, और ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा करता है: और इसी तरह तुम भी निकाले जाओगे। और उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया; फिर देखो, तुम इनसान हो जो हर ओर फैलते जा रहे हो। और उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हीं में से जोड़े पैदा किए, ताकि तुम उनके पास सुकून पाओ, और तुम्हारे बीच मुहब्बत और दयालुता रख दी। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार करते हैं। और उसकी निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना, और तुम्हारी ज़बानों और तुम्हारे रंगों का अलग-

अलग होना। निश्चय ही इसमें जानने वालों के लिए निशानियाँ हैं। और उसकी निशानियों में से है रात और दिन में तुम्हारा सोना, और तुम्हारा उसका अनुग्रह ढूँढना। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सुनते हैं। और उसकी निशानियों में से है कि वह तुम्हें बिजली दिखाता है, डर के लिए भी और आस के लिए भी, और आसमान से पानी उतारता है, फिर उसके द्वारा ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा करता है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं। (17–24)

और उसकी निशानियों में से है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम हैं।[38] (25)

फिर जब वह तुम्हें ज़मीन से एक ही पुकार पुकारेगा, तो देखो, तुम एकाएक निकल पड़ोगे। और जो कोई आसमानों और ज़मीन में है सब उसी का है: सब उसी के फ़रमाँबरदार हैं। और वही है जो सृष्टि का आरम्भ करता है फिर उसे दोहराएगा—और यह उसके लिए और भी आसान है। आसमानों और ज़मीन में उसकी शान हर मिसाल से ऊँची है; और वही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। (26–27)

वह तुम्हारे लिए ख़ुद तुम्हारे अपने ही हाल से एक मिसाल बयान करता है: क्या तुम्हारे ग़ुलामों में से कोई उस रोज़ी में तुम्हारा साझी है जो हमने तुम्हें दी है, कि तुम उसमें बराबर हो, और तुम उनसे वैसे ही डरते हो जैसे एक-दूसरे से डरते हो? इसी तरह हम आयतें उन लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान करते हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं। नहीं—बल्कि ये ज़ालिम बिना ज्ञान के अपनी इच्छाओं के पीछे चल पड़े हैं। तो उसे कौन राह दिखा सकता है जिसे अल्लाह ने भटकने दिया? और उनका कोई मददगार न होगा। तो तुम एकनिष्ठ होकर अपना रुख़ इस दीन की ओर जमा दो: अल्लाह की बनाई हुई वह फ़ितरत जिस पर उसने इनसानों को पैदा किया है—अल्लाह की सृष्टि में कोई बदलाव नहीं। यही सीधा दीन है, मगर अधिकतर लोग जानते नहीं। उसी की ओर पलटते हुए, उसके प्रति सचेत रहो, नमाज़ क़ायम रखो, और अल्लाह के साथ साझी ठहराने वालों में से न हो, उनमें से जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और गिरोह-गिरोह बन गए, हर गिरोह उसी पर मगन है जो उसके पास है। और जब लोगों को कोई तकलीफ़ छूती है, तो वे अपने रब को उसी की ओर पलटते हुए पुकारते हैं; फिर जब वह उन्हें अपनी ओर से दयालुता का मज़ा चखा देता है, तो उनमें से एक गिरोह तुरन्त अपने रब के साथ साझी ठहराने लगता है, उसकी नाशुक्री करते हुए जो हमने उन्हें दिया है। तो मज़े कर लो—जल्द ही तुम जान लोगे। या हमने उन पर कोई ऐसा प्रमाण उतारा है जो उसकी बात करता हो जिसे वे उसके साथ साझी ठहराते हैं? (28–35)

और जब हम लोगों को दयालुता का मज़ा चखाते हैं, तो वे उस पर इतराने लगते हैं; और अगर उनके अपने हाथों की आगे भेजी हुई करतूतों के कारण उन पर कोई बुराई आ पड़े, तो एकाएक निराश हो जाते हैं। क्या

---

[38] ऑकेज़नलिज़्म (अवसरवाद का दर्शन) – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस
निरन्तर सृष्टि का तत्त्वमीमांसा: क़ुरआन 30:25 और 35:41 की एक वैज्ञानिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या
वीडियो: अल्लाह आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है, कहीं वे मिट न जाएँ
क़ुरआन 35:41 और 6:59 में थामना और दर्ज करना: भौतिक सूचना सिद्धान्त और सिमुलेशन परिकल्पना से संवाद
वजूद में थामा हुआ ब्रह्मांड: क़ुरआन 30:25 और 35:41 की एक व्याख्या

उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली? निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान रखते हैं। तो क़रीबी रिश्तेदार को उसका हक़ दो, और मुहताज को, और मुसाफ़िर को: यह उन लोगों के लिए सबसे अच्छा है जो अल्लाह की रज़ा चाहते हैं, और वही सफल होने वाले हैं। और जो कुछ तुम सूद पर देते हो, ताकि वह लोगों के माल में मिलकर बढ़े, वह अल्लाह के यहाँ नहीं बढ़ता; और जो कुछ तुम ज़कात के तौर पर देते हो, अल्लाह की रज़ा चाहते हुए—तो ऐसे ही लोग कई-कई गुना बढ़ाने वाले हैं। अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हें रोज़ी दी, फिर तुम्हें मौत देगा, फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा। क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझियों में कोई है जो इनमें से कुछ भी कर सके? वह पाक है, और उससे बहुत ऊँचा जो वे साझी ठहराते हैं! ख़ुश्की और समुद्र में बिगाड़ फैल गया है उसके कारण जो लोगों के हाथों ने कमाया, ताकि वह उन्हें उनके कुछ कामों का मज़ा चखाए, और ताकि वे पलट आएँ। कह दो, "ज़मीन में चलो-फिरो और देखो कि तुमसे पहले के लोगों का अंजाम कैसा हुआ: उनमें से अधिकतर अल्लाह के साथ साझी ठहराने वाले थे।" तो तुम अपना रुख़ इस सीधे दीन की ओर जमा दो इससे पहले कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाए जो टल नहीं सकता। उस दिन वे अलग-अलग बँट जाएँगे: जिसने सत्य का इनकार किया, उसके इनकार का वबाल उसी पर है; और जिन्होंने अच्छे कर्म किए वे अपने ही लिए जगह सँवार रहे हैं, ताकि वह अपने अनुग्रह से उन लोगों को बदला दे जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए। निश्चय ही वह सत्य के इनकारियों को पसन्द नहीं करता। (36–45)

और उसकी निशानियों में से है कि वह हवाओं को शुभ-सूचना देने वाली बनाकर भेजता है, ताकि तुम्हें अपनी दयालुता का कुछ मज़ा चखाए, और ताकि नौकाएँ उसके हुक्म से चलें, और ताकि तुम उसका अनुग्रह ढूँढो, और ताकि तुम शुक्र अदा करो। और हमने तुमसे पहले भी रसूल उनकी अपनी-अपनी क़ौम की ओर भेजे, तो वे उनके पास खुले प्रमाण लेकर आए; फिर हमने उन लोगों से बदला लिया जिन्होंने अपराध किया। और ईमान वालों की मदद करना हमेशा हमारे ज़िम्मे रहा है। अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है, तो वे बादल उठाती हैं; फिर वह उन्हें आसमान में जैसे चाहता है फैला देता है, और उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर देता है, फिर तुम देखते हो कि उनके बीच से बारिश निकलती चली आती है। फिर जब वह अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है उसे बरसा देता है, तो वे एकाएक ख़ुशियाँ मनाने लगते हैं, हालाँकि इससे पहले कि वह उन पर उतारी जाती वे निराश हो चुके थे। तो अल्लाह की दयालुता के निशान देखो—कि वह ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद किस तरह ज़िन्दा करता है। निश्चय ही वही मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है: और वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। और अगर हम कोई ऐसी हवा भेज दें जिससे वे अपनी खेती को पीली पड़ी देखें, तो उसके बाद भी वे नाशुक्री ही करते रहेंगे। तो ऐ नबी, तुम न मुर्दों को सुना सकते हो, और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो, जब वे पीठ फेरकर चल दें; और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से निकालकर राह दिखा सकते हो। तुम तो बस उन्हीं को सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, फिर वे समर्पित हो जाते हैं। अल्लाह ही है जिसने तुम्हें कमज़ोरी की हालत से पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद शक्ति दी, फिर शक्ति के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया। वह जो चाहता है पैदा करता है; और वही सब कुछ जानने वाला, सामर्थ्य वाला है। (46–54)

और जिस दिन वह घड़ी आ खड़ी होगी, अपराधी क़समें खाएँगे कि वे एक घड़ी से ज़्यादा नहीं ठहरे: इसी तरह वे बहकाए जाते रहे। मगर जिन्हें ज्ञान और ईमान दिया गया था वे कहेंगे, “तुम तो अल्लाह के लिखे के मुताबिक़ उठाए जाने के दिन तक ठहरे रहे—तो यह वही उठाए जाने का दिन है, मगर तुम जानते न थे।” तो उस दिन ज़ालिमों को उनका उज़्र कुछ फ़ायदा न देगा, और न उनसे मनाने की माँग की जाएगी। (55–57)

और हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर तरह की मिसाल बयान कर दी है; और अगर तुम उनके पास कोई निशानी ले आओ, तो सत्य के इनकारी ज़रूर कहेंगे, “तुम तो बस बातिल पर चलने वाले हो।” इसी तरह अल्लाह उन लोगों के दिलों पर मुहर लगा देता है जो जानते नहीं। तो सब्र करो: निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है। और वे लोग जो यक़ीन नहीं रखते तुम्हें हलका न पाएँ। (58–60)

# 31. लुक़मान (लुक़मान)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

अलिफ़ लाम मीम। ये हिकमत भरी किताब की आयतें और निशानियाँ हैं, मार्गदर्शन, और दयालुता उन लोगों के लिए जो अच्छा करते हैं, जो नमाज़ क़ायम रखते हैं और ज़कात देते हैं, और जो आख़िरत पर पक्का यक़ीन रखते हैं। यही हैं जो अपने रब की ओर से मार्गदर्शन पर हैं, और यही सफल होने वाले हैं। और लोगों में कोई ऐसा भी है जो ग़ाफ़िल कर देने वाली बातें ख़रीदता है, ताकि बिना ज्ञान के दूसरों को अल्लाह की राह से भटकाए, और उसका मज़ाक़ बनाए। ऐसे ही लोगों के लिए अपमानजनक यातना है। और जब उसे हमारी आयतें सुनाई जाती हैं, तो वह घमंड करता हुआ मुँह फेर लेता है, मानो उसने उन्हें सुना ही नहीं, मानो उसके कानों में बोझ है। तो उसे दुखद यातना की ख़बर सुना दो। निश्चय ही जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उनके लिए नेमत भरे बाग़ हैं, जिनमें वे सदा-सदा रहेंगे: यह अल्लाह का सच्चा वादा है, और वही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। उसने आसमानों को ऐसे खम्भों के बिना पैदा किया जो तुम्हें दिखाई दें, और ज़मीन में जमे हुए पहाड़ डाल दिए कि वह तुम्हें लेकर डगमगाए नहीं, और उसमें हर तरह के जानदार फैला दिए। और हमने आसमान से पानी उतारा और उसमें हर उम्दा क़िस्म की चीज़ें उगाईं।[39] यह है अल्लाह की सृष्टि। अब मुझे दिखाओ कि उसके सिवा जो हैं उन्होंने क्या पैदा किया है? नहीं—बल्कि ये ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। (1–11)

और हमने लुक़मान को हिकमत दी: "अल्लाह का शुक्र अदा करो।" और जो कोई शुक्र करता है वह अपने ही भले के लिए शुक्र करता है; और जो कोई नाशुक्री करे—तो अल्लाह निस्पृह, हर प्रशंसा के योग्य है। और जब लुक़मान ने अपने बेटे से, उसे नसीहत करते हुए, कहा, "ऐ मेरे प्यारे बेटे! अल्लाह के सिवा किसी चीज़ को ख़ुदाई में शरीक न ठहराना: क्योंकि, देखो, इस तरह झूठ-मूठ ख़ुदाई में शरीक ठहराना निश्चय ही बहुत बड़ा ज़ुल्म है।" (12–13)

और हमने इनसान को उसके माँ-बाप के बारे में ताकीद की है: उसकी माँ ने कमज़ोरी पर कमज़ोरी झेलकर उसे पेट में रखा, और दो वर्ष में उसका दूध छूटता है। कि मेरा शुक्र अदा करो और अपने माँ-बाप का भी: मेरी ही ओर लौटना है। मगर अगर वे तुझ पर ज़ोर डालें कि तू मेरे साथ उसे साझी ठहराए जिसका तुझे कोई ज्ञान नहीं, तो उनकी बात न मान; फिर भी दुनिया में उनके साथ भले ढंग से रह, और उसकी राह पर चल जो मेरी ओर पलटा। फिर मेरी ही ओर तुम सबको लौटना है, और मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ तुम करते रहे। (14–15)

---

[39] इस आयत में और सूरा अर-रअद की एक आयत (13:2) में अल्लाह गुरुत्वाकर्षण को, जिससे हमारा ब्रह्मांड चल रहा है, अपनी रचनात्मकता की निशानी और अपने गुणों अल-ख़ालिक़, अल-बारी और अल-मुसव्विर के ज़ुहूर के रूप में पेश करता है।

और लुक़मान ने कहा, "ऐ मेरे बेटे, अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर भी हो, और वह किसी चट्टान के भीतर हो, या आसमानों में या ज़मीन में, तो अल्लाह उसे निकाल लाएगा। निश्चय ही अल्लाह सूक्ष्मदर्शी, पूरी ख़बर रखने वाला है।[40] (16)

ऐ मेरे बेटे, नमाज़ क़ायम रखो, भलाई का हुक्म दो और बुराई से रोको, और जो कुछ तुम पर आ पड़े उस पर सब्र करो: निश्चय ही यह हिम्मत के कामों में से है। और घमंड या हिक़ारत से लोगों की ओर से अपना चेहरा न फेरो और ज़मीन में अकड़कर न चलो: क्योंकि, देखो, अल्लाह घमंडी और शेख़ी बघारने वाले लोगों को पसन्द नहीं करता। और अपनी चाल में बीच की राह अपनाओ, और अपनी आवाज़ धीमी रखो: निश्चय ही सब आवाज़ों में सबसे बुरी आवाज़ गधे का रेंकना है।" (17–19)

ऐ लोगो, क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने वह सब जो आसमानों में है और वह सब जो ज़मीन में है तुम्हारे काम में लगा दिया है, और तुम पर अपनी खुली और छिपी नेमतें भरपूर कर दी हैं? फिर भी लोगों में कुछ ऐसे हैं जो बिना ज्ञान के, बिना मार्गदर्शन के, और बिना किसी रौशन किताब के अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं। और जब उनसे कहा जाता है, "उस पर चलो जो अल्लाह ने उतारा है," तो कहते हैं, "नहीं, हम तो उसी पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है"—क्या उस हाल में भी जबकि शैतान उन्हें दहकती आग की यातना की ओर बुला रहा हो? और जो कोई अपना चेहरा अल्लाह के आगे झुका दे और वह अच्छा करने वाला हो उसने सबसे मज़बूत सहारा थाम लिया: और सारे मामलों का अंजाम अल्लाह ही के हाथ में है। और जो कोई सत्य का इनकार करे, उसका इनकार तुम्हें दुखी न करे। हमारी ही ओर उन्हें लौटना है, फिर हम उन्हें बता देंगे जो कुछ उन्होंने किया: निश्चय ही अल्लाह सबके सीनों तक की बात ख़ूब जानता है। हम उन्हें थोड़ी देर मज़े करने देते हैं; फिर उन्हें एक सख़्त यातना की ओर हाँक ले जाएँगे। और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया, तो वे ज़रूर कहेंगे, "अल्लाह ने।" कह दो, "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है!" मगर उनमें से अधिकतर जानते नहीं। जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है: निश्चय ही अल्लाह ही निस्पृह, हर प्रशंसा के योग्य है। (20–26)

और अगर ज़मीन में जितने पेड़ हैं सब क़लम बन जाएँ, और समुद्र रौशनाई हो, और उसके बाद सात समुद्र और उसकी मदद को आ जाएँ, तब भी अल्लाह की बातें ख़त्म न हों: निश्चय ही अल्लाह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है।[41] (27)

तुम सबका पैदा करना और तुम सबका दोबारा उठाना बस ऐसा ही है जैसे एक जान का: निश्चय ही अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है। (28)

---

[40] ऑकेज़नलिज़्म (अवसरवाद का दर्शन) – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस

[41] इस बुनियादी आयत को सबसे अच्छी तरह उन सब लिंकों से समझाया जा सकता है जिन्हें मैं समय के साथ, इंशाअल्लाह, टिप्पणियों के रूप में जोड़ता जाऊँगा, ताकि एक व्यापक वैज्ञानिक और दार्शनिक व्याख्या पेश हो सके। तब तक कृपया मेरे ब्लॉग के सभी चुनिन्दा लेख देखिए: चुनिन्दा लेख – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस।

ऐ नबी, क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है, और उसने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है, हर एक एक ठहराई हुई अवधि तक के लिए चल रहा है, और यह कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है? यह इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है, और जिस चीज़ को भी वे उसके सिवा पुकारते हैं वह बातिल है, और इसलिए कि अल्लाह ही सर्वोच्च, महान है। क्या तुम नहीं देखते कि नौकाएँ अल्लाह के अनुग्रह से समुद्र में चलती हैं, ताकि वह तुम्हें अपनी कुछ निशानियाँ दिखाए? निश्चय ही इसमें हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए निशानियाँ हैं। और जब पहाड़-सी लहरें उन्हें मौत के सायों की तरह ढाँप लेती हैं, तो वे अल्लाह को पुकारते हैं, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए; फिर जब वह उन्हें बचाकर ख़ुश्की पर ले आता है, तो उनमें से कुछ डाँवाडोल रहते हैं। और हमारी निशानियों का इनकार बस वही करता है जो विश्वासघाती, नाशुक्रा हो। ऐ लोगो, अपने रब के प्रति सचेत रहो, और उस दिन से डरो जब न कोई बाप अपने बेटे के कुछ काम आएगा, और न कोई बेटा अपने बाप के कुछ भी काम आने वाला होगा। निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है, तो दुनिया की ज़िन्दगी तुम्हें धोखे में न डाले, और न वह बड़ा धोखेबाज़ अल्लाह के बारे में तुम्हें धोखे में डाले। निश्चय ही उस घड़ी का ज्ञान अल्लाह ही के पास है; वही बारिश उतारता है; और वही जानता है जो कुछ रहमों में है। और कोई जान नहीं जानती कि वह कल क्या कमाएगी, और कोई जान नहीं जानती कि वह किस ज़मीन में मरेगी। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जानने वाला, पूरी ख़बर रखने वाला है। (29–34)

# 32. सजदा (अस-सजदा)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

अलिफ़ लाम मीम। इस किताब का उतारा जाना, जिसमें कोई सन्देह नहीं, सारे संसारों के रब की ओर से है। या वे कहते हैं, "इसने इसे ख़ुद गढ़ लिया है"? नहीं—बल्कि यह तुम्हारे रब की ओर से सत्य है, ताकि तुम ऐसे लोगों को सचेत करो जिनके पास तुमसे पहले कोई सचेत करने वाला नहीं आया, ताकि वे राह पाएँ। अल्लाह ही है जिसने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के बीच है छह युगों में पैदा किया, फिर अर्श पर विराजमान हुआ। उसके सिवा तुम्हारा न कोई संरक्षक है न कोई सिफ़ारिशी। तो क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते? वह आसमान से ज़मीन तक हर काम का प्रबन्ध करता है; फिर वह उसकी ओर एक ऐसे दिन में चढ़ता है जिसकी मिक़दार तुम्हारी गिनती से एक हज़ार वर्ष है। वही है परोक्ष और प्रत्यक्ष का जानने वाला, प्रभुत्वशाली, सदा दयावान, जिसने जो चीज़ भी पैदा की ख़ूब ही बनाई। और उसने इनसान की सृष्टि का आरम्भ मिट्टी से किया; फिर उसकी नस्ल एक तुच्छ पानी के निचोड़ से चलाई; फिर उसे ठीक-ठीक बनाया, और उसमें अपनी रूह में से फूँका; और तुम्हें कान और आँखें और दिल दिए। तुम कितना कम शुक्र अदा करते हो! और वे कहते हैं, "क्या जब हम ज़मीन में रल-मिलकर खो जाएँगे, तो क्या हम सचमुच नए सिरे से पैदा किए जाएँगे?" नहीं—बल्कि वे अपने रब से मिलने के इनकारी हैं। कह दो, "मौत का फ़रिश्ता, जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है, तुम्हारी जान क़ब्ज़ करेगा; फिर तुम अपने रब की ओर लौटाए जाओगे।" (1–11)

ऐ नबी, काश तुम देखते जब अपराधी अपने रब के सामने सिर झुकाए खड़े होंगे: "ऐ हमारे रब, हमने देख लिया और सुन लिया, तो हमें वापस भेज दे कि हम अच्छा काम करें: अब हमें यक़ीन आ गया।" और अगर हम चाहते, तो हर जान को उसका मार्गदर्शन दे देते; मगर मेरी बात पूरी होकर रही: कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इनसानों सबसे ज़रूर भर दूँगा। "तो अब यातना का मज़ा चखो, इसलिए कि तुमने अपने इस दिन के मिलने को भुला दिया था। हमने भी तुम्हें भुला दिया। और जो कुछ तुम करते थे उसके बदले हमेशा की यातना का मज़ा चखो।" (12–14)

हमारी आयतों पर तो बस वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उन्हें उनके द्वारा याद दिलाया जाता है, तो सजदे में गिर पड़ते हैं और अपने रब की हम्द के साथ तसबीह करते हैं, और घमंड नहीं करते। उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं, वे अपने रब को डर और आस के साथ पुकारते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। तो कोई जान नहीं जानती कि उनके लिए आँखों की कैसी ठंडक छिपाकर रखी गई है, उन कामों के बदले में जो वे करते थे। तो क्या वह जो ईमान वाला है उस जैसा हो सकता है जो अवज्ञाकारी है? वे बराबर नहीं हो सकते। जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, उनकी मेहमानी के लिए ठिकाने के बाग़ हैं, उन कामों के बदले जो वे करते थे। और जिन्होंने अवज्ञा की, उनका ठिकाना आग है। जब भी वे उसमें से निकलना चाहेंगे उसी में लौटा दिए जाएँगे, और उनसे कहा जाएगा, "चखो आग की वह यातना जिसे तुम

झुठलाया करते थे।" और हम उन्हें बड़ी यातना से पहले क़रीब की यातना का मज़ा ज़रूर चखाएँगे, ताकि वे पलट आएँ। और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के द्वारा याद दिलाया जाए, फिर वह उनसे मुँह फेर ले? निश्चय ही हम अपराधियों से बदला लेकर रहेंगे। (15–22)

और हमने मूसा को किताब दी—तो तुम उससे मिलने के बारे में किसी शक में न रहना—और हमने उसे इसराईल की सन्तान के लिए मार्गदर्शन बनाया। और हमने उनमें से ऐसे पेशवा बनाए जो हमारे हुक्म से राह दिखाते थे, जब उन्होंने सब्र किया और वे हमारी आयतों पर यक़ीन रखते थे। निश्चय ही तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उनके बीच उन बातों का फ़ैसला कर देगा जिनमें वे मतभेद करते थे। (23–25)

क्या उन्हें इस बात ने राह नहीं दिखाई कि हम उनसे पहले कितनी ही नस्लें हलाक कर चुके हैं, जिनकी बस्तियों में ये चलते-फिरते हैं? निश्चय ही इसमें निशानियाँ हैं। तो क्या वे सुनते नहीं? क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम पानी को बंजर ज़मीन की ओर हाँक ले जाते हैं, फिर उसके द्वारा खेती निकालते हैं जिसमें से उनके चौपाए भी खाते हैं और वे ख़ुद भी? तो क्या वे देखते नहीं? और वे कहते हैं, "यह फ़ैसला कब होगा, अगर तुम सच्चे हो?" कह दो, "फ़ैसले के दिन सत्य के इनकारियों को उनका ईमान लाना कुछ फ़ायदा न देगा, और न उन्हें मुहलत दी जाएगी।" तो उनसे मुँह फेर लो और इन्तिज़ार करो: वे भी इन्तिज़ार कर रहे हैं। (26–30)

# 33. संयुक्त दल (अल-अहज़ाब)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ऐ नबी, अल्लाह के प्रति सचेत रहो, और सत्य के इनकारियों और मुनाफ़िक़ों की बात न मानो। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। और उस पर चलो जो तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर वह्य किया जाता है; निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है। और अल्लाह पर भरोसा रखो: और कारसाज़ के तौर पर अल्लाह काफ़ी है। अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं रखे; और न उसने तुम्हारी उन पत्नियों को जिन्हें तुम अपनी माँओं की पीठ जैसा कह बैठते हो सचमुच तुम्हारी माँएँ बनाया; और न उसने तुम्हारे मुँह-बोले बेटों को सचमुच तुम्हारे बेटे बनाया। यह तो बस तुम्हारी अपनी बात है, तुम्हारे मुँह का कहा हुआ—और अल्लाह सच्ची बात कहता है, और वही राह दिखाता है। (1–4)

उन्हें उनके बापों के नाम से पुकारो: यह अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इनसाफ़ की बात है। और अगर तुम उनके बापों को न जानते हो, तो वे दीन में तुम्हारे भाई और तुम्हारे साथी हैं। और जो बात तुमसे भूल-चूक में हो जाए उसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं, मगर उसमें है जिसका तुम्हारे दिल जान-बूझकर इरादा करें। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। नबी का ईमान वालों पर उससे ज़्यादा हक़ है जितना उनका ख़ुद अपने ऊपर है, और उसकी पत्नियाँ उनकी माँएँ हैं। और अल्लाह की किताब में ख़ून के रिश्तेदार दूसरे ईमान वालों और मुहाजिरों के मुक़ाबले में एक-दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं, सिवाय इसके कि तुम अपने दोस्तों के साथ कोई भलाई करना चाहो। यह किताब में लिखा हुआ है। (5–6)

और याद करो जब हमने नबियों से उनका वचन लिया—तुमसे भी, और नूह, इबराहीम, मूसा, और मरयम के बेटे ईसा से भी: और हमने उनसे पक्का वचन लिया, ताकि वह सच्चों से उनकी सच्चाई के बारे में पूछे। और सत्य के इनकारियों के लिए उसने दुखद यातना तैयार कर रखी है। (7–8)

ऐ ईमान लाने वालो, अपने ऊपर अल्लाह की उस नेमत को याद करो जब तुम पर लश्कर चढ़ आए थे, तो हमने उन पर एक आँधी भेजी और ऐसे लश्कर जिन्हें तुमने नहीं देखा। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। जब वे तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे से तुम पर चढ़ आए, जब आँखें पथरा गईं और कलेजे मुँह को आ गए, और तुम अल्लाह के बारे में तरह-तरह के गुमान करने लगे—उस जगह ईमान वाले आज़माए गए, और बुरी तरह झँझोड़ डाले गए। और जब मुनाफ़िक़ और वे लोग जिनके दिलों में रोग है कह रहे थे, “अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे जो वादा किया था वह बस धोखा था”; और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा, “ऐ यसरिब वालो, यहाँ तुम्हारे ठहरने की कोई जगह नहीं, तो लौट चलो,” और उनमें का एक गिरोह नबी से इजाज़त माँग रहा था, कह रहा था, “हमारे घर खुले पड़े हैं”—हालाँकि वे खुले न थे; वे तो बस भागना चाहते थे। और अगर शहर के हर ओर से उन पर चढ़ाई हो जाती, फिर उनसे फ़ितने की माँग की जाती, तो वे उसे कर गुज़रते, और इसमें बस थोड़ी ही देर लगाते। हालाँकि वे इससे पहले अल्लाह से अह्द

कर चुके थे कि पीठ न फेरेंगे; और अल्लाह से किए हुए अह्द की पूछ होकर रहेगी। कह दो, "भागना तुम्हें कुछ फ़ायदा न देगा अगर तुम मौत से या मारे जाने से भागो; और तब भी तुम्हें बस थोड़ी ही देर जीवन का सुख भोगने दिया जाएगा।" कह दो, "कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सके अगर वह तुम्हारे साथ बुराई का इरादा करे, या वह तुम पर दया का इरादा करे?" और वे अल्लाह के सिवा अपने लिए न कोई संरक्षक पाएँगे न मददगार। (9–17)

अल्लाह तुममें से उन लोगों को ख़ूब जानता है जो दूसरों को रोकते हैं, और जो अपने भाइयों से कहते हैं, "हमारी ओर आ जाओ," और जो लड़ाई में बस नाम को आते हैं, तुम्हारे साथ कंजूसी बरतते हुए। फिर जब डर का समय आता है, तो तुम उन्हें देखते हो कि तुम्हारी ओर ताक रहे हैं, उनकी आँखें यूँ घूमती हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी छा रही हो; फिर जब डर जाता रहता है, तो वे तेज़ ज़बानों से तुम पर चोटें करते हैं, माल के लोभ में। ये लोग ईमान लाए ही नहीं, तो अल्लाह ने उनके कर्म अकारथ कर दिए; और यह अल्लाह के लिए आसान है। वे समझते हैं कि संयुक्त दल अभी गए नहीं; और अगर संयुक्त दल फिर आ जाएँ, तो वे चाहेंगे कि काश वे रेगिस्तान में बद्दुओं के बीच जा रहें, और वहीं से तुम्हारी ख़बरें पूछते रहें। और अगर वे तुम्हारे बीच होते भी, तो बस नाम को ही लड़ते। निश्चय ही तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में एक सुन्दर नमूना है, हर उस आदमी के लिए जो अल्लाह और अंतिम दिन की आस रखता हो, और अल्लाह को बहुत याद करता हो। (18–21)

और जब ईमान वालों ने संयुक्त दलों को देखा, तो बोले, "यह वही है जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था; और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा था।" और इसने उनके ईमान और समर्पण ही को बढ़ाया। ईमान वालों में कुछ ऐसे मर्द हैं जिन्होंने वह अह्द सच कर दिखाया जो उन्होंने अल्लाह से किया था: तो उनमें कोई अपनी मन्नत पूरी कर चुका, और कोई इन्तिज़ार में है; और उन्होंने ज़रा भी बदलाव न किया—ताकि अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे और मुनाफ़िक़ों को चाहे तो यातना दे, या उन पर दया-दृष्टि करे। निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। और अल्लाह ने सत्य के इनकारियों को उनके ग़ुस्से समेत लौटा दिया; वे कोई भलाई हासिल न कर सके। और लड़ाई में ईमान वालों की ओर से अल्लाह ही काफ़ी हो गया: और अल्लाह शक्तिशाली, प्रभुत्वशाली है। और किताब वालों में से जिन्होंने उनका साथ दिया था उन्हें वह उनकी गढ़ियों से उतार लाया, और उनके दिलों में दहशत डाल दी: कुछ को तुम क़त्ल करने लगे, और कुछ को क़ैद। और उसने तुम्हें उनकी ज़मीन, उनके घरों और उनके माल का वारिस बना दिया, और उस ज़मीन का भी जिस पर तुमने अभी क़दम नहीं रखा था। और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। (22–27)

ऐ नबी, अपनी पत्नियों से कह दो, "अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी शोभा चाहती हो, तो आओ, मैं तुम्हें कुछ दे-दिलाकर भले ढंग से रुख़सत कर दूँ। और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत के घर को चाहती हो, तो अल्लाह ने तुममें से अच्छा करने वालियों के लिए बड़ा बदला तैयार कर रखा है।" ऐ नबी की पत्नियो, तुममें से जो कोई खुली अश्लीलता करेगी, उसके लिए यातना दोहरी कर दी जाएगी; और

यह अल्लाह के लिए आसान है। और तुममें से जो अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदार रहेगी और अच्छा काम करेगी, हम उसे उसका बदला दोहरा देंगे, और हमने उसके लिए इज़्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है। ऐ नबी की पत्नियो, तुम आम औरतों की तरह नहीं हो। अगर तुम अल्लाह के प्रति सचेत रहती हो, तो बात में लोच न पैदा करो, कि जिसके दिल में रोग है वह कोई लालच कर बैठे; बल्कि मुनासिब ढंग से बात करो। और अपने घरों में टिककर रहो, और पिछली जाहिलियत के दिनों की-सी सज-धज न दिखाती फिरो। और नमाज़ क़ायम रखो, ज़कात दो, और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानो। ऐ घर वालो, अल्लाह तो बस यह चाहता है कि तुमसे हर गन्दगी दूर कर दे, और तुम्हें पूरी तरह पाक कर दे। और अल्लाह की आयतों और हिकमत में से जो कुछ तुम्हारे घरों में सुनाया जाता है उसे याद रखो। निश्चय ही अल्लाह सूक्ष्मदर्शी, पूरी ख़बर रखने वाला है। (28–34)

निश्चय ही अल्लाह के आगे समर्पित मर्द और समर्पित औरतें, ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें, फ़रमाँबरदार मर्द और फ़रमाँबरदार औरतें, सच्चे मर्द और सच्ची औरतें, सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें, आजिज़ी करने वाले मर्द और आजिज़ी करने वाली औरतें, सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें, रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें, अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें, अल्लाह को बहुत याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें—इन सबके लिए अल्लाह ने क्षमा और बड़ा बदला तैयार कर रखा है। (35)

और किसी ईमान वाले मर्द और किसी ईमान वाली औरत के लिए यह उचित नहीं कि, जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मामले का फ़ैसला कर दें, तो फिर उस मामले में उनका अपना कोई अधिकार बाक़ी रहे। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करे वह खुली गुमराही में जा पड़ा। और याद करो जब तुम उस आदमी से, जिस पर अल्लाह ने एहसान किया था और जिस पर तुमने भी एहसान किया था, कह रहे थे, “अपनी पत्नी को अपने पास रोके रखो और अल्लाह के प्रति सचेत रहो,” और तुम अपने जी में वह बात छिपा रहे थे जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था; और तुम लोगों से डर रहे थे, हालाँकि अल्लाह इसका ज़्यादा हक़दार है कि तुम उससे डरो। फिर जब ज़ैद ने उससे अपना नाता ख़त्म कर लिया, तो हमने उसका निकाह तुमसे कर दिया, ताकि ईमान वालों पर अपने मुँह-बोले बेटों की पत्नियों के बारे में कोई तंगी न रहे जब वे उनसे अपना नाता ख़त्म कर चुके हों। और अल्लाह का हुक्म तो पूरा होकर ही रहता है। नबी पर उस काम में कोई तंगी नहीं जो अल्लाह ने उसके लिए ठहरा दिया हो। यही अल्लाह की रीत उन लोगों के बारे में भी रही है जो पहले गुज़र चुके—और अल्लाह का हुक्म एक तय किया हुआ फ़ैसला होता है—वे जो अल्लाह के सन्देश पहुँचाते थे और उसी से डरते थे, और अल्लाह के सिवा किसी से न डरते थे। और हिसाब लेने के लिए अल्लाह काफ़ी है। मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी का बाप नहीं है, बल्कि वह अल्लाह का रसूल है और नबियों की मुहर है। और अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखता है। ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करो, और सुबह और शाम उसकी तसबीह करते रहो। वही है जो तुम पर रहमत भेजता है, और उसके फ़रिश्ते भी, ताकि तुम्हें घुप अँधेरों से निकालकर रौशनी में ले आए; और वह ईमान

वालों पर सदा दयावान है। जिस दिन वे उससे मिलेंगे उनका अभिवादन होगा, "सलाम"; और उसने उनके लिए इज़्ज़त का बदला तैयार कर रखा है। (36–44)

ऐ नबी, हमने तुम्हें गवाह, शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा है, और अल्लाह के हुक्म से उसकी ओर बुलाने वाला, और एक रौशन चिराग़। और ईमान वालों को शुभ-सूचना दे दो कि उनके लिए अल्लाह की ओर से बड़ा अनुग्रह है। और सत्य के इनकारियों और मुनाफ़िक़ों की बात न मानो; उनकी दी हुई तकलीफ़ की परवाह न करो, और अल्लाह पर भरोसा रखो। और कारसाज़ के तौर पर अल्लाह काफ़ी है। (45–48)

ऐ ईमान लाने वालो, जब तुम ईमान वाली औरतों से निकाह करो फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो, तो उन पर तुम्हारे लिए कोई इद्दत नहीं जिसे तुम गिनो। तो उन्हें कुछ दे-दिलाकर भले ढंग से रुख़सत कर दो। ऐ नबी, हमने तुम्हारे लिए तुम्हारी वे पत्नियाँ हलाल की हैं जिनके मह्र तुम दे चुके हो, और वे लौंडियाँ जो अल्लाह ने तुम्हें ग़नीमत में दीं, और तुम्हारे चचा की बेटियाँ और तुम्हारी फूफियों की बेटियाँ और तुम्हारे मामू की बेटियाँ और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियाँ जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत की, और कोई ईमान वाली औरत जो बिना मह्र के अपने आप को नबी के लिए पेश कर दे, अगर नबी उससे निकाह करना चाहे—यह ख़ास तुम्हारे लिए है, दूसरे ईमान वालों के लिए नहीं। हम ख़ूब जानते हैं जो कुछ हमने उन पर उनकी पत्नियों और लौंडियों के बारे में ठहराया है—ताकि तुम पर कोई तंगी न रहे। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। तुम उनमें से जिसे चाहो पीछे रखो और जिसे चाहो अपने पास जगह दो; और जिन्हें तुमने अलग रखा था उनमें से किसी को फिर चाहो, तो तुम पर कोई गुनाह नहीं। इससे ज़्यादा उम्मीद है कि उनकी आँखें ठंडी रहें, और वे दुखी न हों, और जो कुछ तुम उन्हें दो उस पर सब-की-सब राज़ी रहें। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है: और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, सहनशील है। इसके बाद तुम्हारे लिए दूसरी औरतें हलाल नहीं, और न यह कि तुम इनकी जगह दूसरी पत्नियाँ ले आओ, चाहे उनकी ख़ूबसूरती तुम्हें कितनी ही भाए—सिवाय उनके जो तुम्हारी मिल्कियत में हों। और अल्लाह हर चीज़ पर निगहबान है। (49–52)

ऐ ईमान लाने वालो, नबी के घरों में खाने के लिए दाख़िल न हुआ करो मगर यह कि तुम्हें इजाज़त दी जाए, और न इस तरह कि उसके तैयार होने की राह देखते बैठे रहो; बल्कि जब तुम्हें बुलाया जाए, तो दाख़िल हो, और जब खा चुको, तो उठकर चले जाओ, और बातों में जी लगाकर बैठे न रहो। यह बात नबी को तकलीफ़ देती है, और वह तुमसे कहते हुए शरमाता है; मगर अल्लाह सच्ची बात कहने से नहीं शरमाता। और जब तुम उसकी पत्नियों से कोई चीज़ माँगो, तो परदे के पीछे से माँगो; यह तुम्हारे दिलों के लिए भी ज़्यादा पाकीज़ा है और उनके दिलों के लिए भी। और तुम्हारे लिए उचित नहीं कि अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ दो, और न यह कि उसके बाद कभी उसकी पत्नियों से निकाह करो: निश्चय ही यह अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ी बात है। तुम कोई चीज़ ज़ाहिर करो या उसे छिपाओ, अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखता है। उन पर अपने बापों, अपने बेटों, अपने भाइयों, अपने भतीजों, अपने भानजों, अपनी औरतों, या अपने ग़ुलामों के बारे में कोई

गुनाह नहीं। और ऐ नबी की पत्नियो, अल्लाह के प्रति सचेत रहो: निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है। निश्चय ही अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। ऐ ईमान लाने वालो, तुम भी उस पर रहमत की दुआ भेजो और ख़ूब सलाम भेजो। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को तकलीफ़ देते हैं—अल्लाह ने दुनिया और आख़िरत में उन पर लानत की है, और उनके लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है। और जो लोग ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को, बिना इसके कि उन्होंने कुछ किया हो, तकलीफ़ देते हैं उन्होंने बोहतान और खुले गुनाह का बोझ अपने सिर ले लिया। (53–58)

ऐ नबी, अपनी पत्नियों और अपनी बेटियों और ईमान वालों की औरतों से कह दो कि अपने ऊपर अपनी चादरें अच्छी तरह लपेट लिया करें। इससे ज़्यादा उम्मीद है कि वे पहचान ली जाएँ और उन्हें सताया न जाए। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। अगर मुनाफ़िक़, और वे जिनके दिलों में रोग है, और वे जो शहर में घबराहट फैलाने वाली अफ़वाहें उड़ाते हैं बाज़ न आए, तो हम तुम्हें ज़रूर उनके ख़िलाफ़ उठा खड़ा करेंगे, फिर वे वहाँ तुम्हारे पड़ोस में बस थोड़ी ही देर रह पाएँगे—फिटकारे हुए; जहाँ कहीं पाए जाएँगे पकड़े जाएँगे और बुरी तरह क़त्ल किए जाएँगे। यही अल्लाह की रीत उन लोगों के बारे में रही है जो पहले गुज़र चुके; और तुम अल्लाह की रीत में कोई बदलाव न पाओगे। (59–62)

लोग तुमसे उस घड़ी के बारे में पूछते हैं। कह दो, "उसका ज्ञान तो बस अल्लाह ही के पास है।" और तुम्हें क्या ख़बर? हो सकता है कि वह घड़ी क़रीब ही हो। निश्चय ही अल्लाह ने सत्य के इनकारियों पर लानत की है और उनके लिए दहकती आग तैयार कर रखी है, जिसमें वे सदा-सदा रहेंगे; वे न कोई संरक्षक पाएँगे न मददगार। जिस दिन उनके चेहरे आग में उलट-पलट किए जाएँगे, वे कहेंगे, "काश हमने अल्लाह की आज्ञा मानी होती और रसूल की आज्ञा मानी होती!" और वे कहेंगे, "ऐ हमारे रब, हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों की बात मानी, तो उन्होंने हमें राह से भटका दिया। ऐ हमारे रब, उन्हें दोहरी यातना दे, और उन पर बड़ी लानत कर।" (63–68)

ऐ ईमान लाने वालो, उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने मूसा को तकलीफ़ दी; फिर अल्लाह ने उसे उनकी कही हुई बात से बरी कर दिया, और वह अल्लाह के नज़दीक इज़्ज़त वाला था। ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह के प्रति सचेत रहो, और सीधी-सच्ची बात कहो, वह तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिए सँवार देगा और तुम्हारे गुनाह क्षमा कर देगा। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा माने उसने बड़ी कामयाबी हासिल कर ली। हमने यह अमानत आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश की, मगर उन्होंने उसे उठाने से इनकार कर दिया और उससे डर गए; और इनसान ने उसे उठा लिया। निश्चय ही वह बड़ा बेइनसाफ़ और नादान निकला—ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को, और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को यातना दे, और ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों पर दया-दृष्टि करे। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (69–73)

# 34. सबा (सबा)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है; और आख़िरत में भी सारी प्रशंसा उसी के लिए है। और वही हिकमत वाला, पूरी ख़बर रखने वाला है। वह जानता है जो कुछ ज़मीन में दाख़िल होता है और जो कुछ उससे निकलता है, जो कुछ आसमान से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है। और वही सदा दयावान, बड़ा क्षमाशील है। और सत्य के इनकारी कहते हैं, "हम पर वह घड़ी कभी न आएगी।" कह दो, "क्यों नहीं, मेरे रब की क़सम, वह तुम पर ज़रूर आकर रहेगी—उसकी क़सम जो परोक्ष का जानने वाला है। उससे ज़र्रे के बराबर भी कोई चीज़ न आसमानों में छिपी है न ज़मीन में, और न उससे छोटी कोई चीज़ न बड़ी, मगर वह एक खुली किताब में है—ताकि वह उन लोगों को बदला दे जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए। उन्हीं के लिए क्षमा है और इज़्ज़त की रोज़ी।" और जो हमारी आयतों के ख़िलाफ़ दौड़-धूप करते रहे, उन्हें नीचा दिखाने की धुन में—उनके लिए दुखद सज़ा की यातना है। (1–5)

और जिन्हें ज्ञान दिया गया है वे देखते हैं कि जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है वही सत्य है, और वह उसकी राह दिखाता है जो प्रभुत्वशाली, प्रशंसा के योग्य है। और सत्य के इनकारी कहते हैं, "क्या हम तुम्हें एक ऐसा आदमी बताएँ जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम बिलकुल चूर-चूर हो जाओगे तो नए सिरे से पैदा किए जाओगे? क्या उसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है, या उसे जुनून है?" नहीं—बल्कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वे यातना में और दूर की गुमराही में हैं। क्या उन्होंने आसमान और ज़मीन को नहीं देखा जो उनके आगे भी है और पीछे भी? अगर हम चाहें, तो उन्हें ज़मीन में धँसा दें, या उन पर आसमान के टुकड़े गिरा दें। निश्चय ही इसमें हर उस बन्दे के लिए निशानी है जो अल्लाह की ओर पलटता है। (6–9)

और हमने दाऊद को अपने पास से अनुग्रह दिया: "ऐ पहाड़ो, उसके साथ तसबीह दोहराओ, और ऐ परिन्दो तुम भी!" और हमने उसके लिए लोहे को नर्म कर दिया: "पूरी-पूरी ज़िरहें बनाओ, और कड़ियाँ ठीक अन्दाज़े से जोड़ो।" और तुम सब अच्छे कर्म करो: जो कुछ तुम करते हो मैं उसे ख़ूब देख रहा हूँ। और सुलैमान के लिए हमने हवा को वश में कर दिया: उसका सुबह का चलना एक महीने की राह था, और उसका शाम का चलना एक महीने की राह। और हमने उसके लिए पिघले हुए ताँबे का सोता बहा दिया, और जिन्नों में से कुछ उसके रब के हुक्म से उसके सामने काम करते थे; और उनमें से जो कोई हमारे हुक्म से फिरता, हम उसे दहकती आग की यातना चखाते। वे उसके लिए जो कुछ वह चाहता बनाते थे: ऊँची इमारतें, मूर्तियाँ, हौज़ जैसे बड़े लगन, और जमी रहने वाली देगें। "ऐ दाऊद के घर वालो, शुक्र के तौर पर काम करो!" और मेरे बन्दों में सचमुच शुक्र करने वाले थोड़े ही हैं। फिर जब हमने उस पर मौत का फ़ैसला लागू किया, तो उन्हें उसकी मौत का पता बस ज़मीन के उस कीड़े ने दिया जो उसकी लाठी को खा रहा था; फिर जब वह गिर

पड़ा, तो जिन्नों पर खुल गया कि अगर वे परोक्ष जानते होते, तो इस ज़िल्लत की मशक़्क़त में न पड़े रहते। (10–14)

सबा के लिए उनके अपने बसने की जगह में एक निशानी थी: दो बाग़, दाएँ और बाएँ। "अपने रब की दी हुई रोज़ी खाओ और उसका शुक्र अदा करो—पाकीज़ा ज़मीन, और क्षमा करने वाला रब!" मगर उन्होंने मुँह मोड़ा, तो हमने उन पर बाँध का सैलाब भेज दिया, और उनके दोनों बाग़ों को ऐसे दो बाग़ों से बदल दिया जिनमें कड़वे-कसैले फल, झाऊ, और कुछ थोड़ी-सी बेरियाँ थीं। यह हमने उन्हें उनकी नाशुक्री का बदला दिया; और ऐसा बदला हम नाशुक्रों के सिवा किसे देते हैं? और हमने उनके और उन बस्तियों के बीच जिनमें हमने बरकत रखी थी ऐसी बस्तियाँ बसाई थीं जो एक-दूसरे से दिखाई देती थीं, और उनके बीच सफ़र की मंज़िलें आसान कर दी थीं: "इनमें रातों और दिनों में अमन से चलो-फिरो।" मगर वे बोले, "ऐ हमारे रब, हमारे सफ़रों की मंज़िलें लम्बी कर दे," और उन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया। तो हमने उन्हें गुज़री हुई कहानियाँ बना दिया, और उन्हें बिलकुल तितर-बितर कर डाला। निश्चय ही इसमें हर उस आदमी के लिए निशानियाँ हैं जो सब्र करने वाला, शुक्र करने वाला हो। और इबलीस ने उनके बारे में अपना गुमान सच्चा पाया, क्योंकि वे उसके पीछे चले—सिवाय ईमान वालों के एक गिरोह के। हालाँकि उसका उन पर कोई ज़ोर न था, मगर यह इसलिए कि हम उन्हें जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं उनसे अलग पहचान लें जो उसके बारे में शक में हैं। और तुम्हारा रब हर चीज़ पर निगहबान है। (15–21)

कह दो, "पुकारो उन्हें जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा इलाह समझते हो। वे न आसमानों में ज़र्रे के बराबर किसी चीज़ के मालिक हैं न ज़मीन में; न इन दोनों में उनका कोई हिस्सा है, और न उनमें से कोई उसका मददगार है।" और उसके यहाँ सिफ़ारिश कुछ काम नहीं आती सिवाय उसके लिए जिसे वह इजाज़त दे। यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाएगी, तो वे पूछेंगे, "तुम्हारे रब ने क्या कहा?" वे कहेंगे, "सत्य; और वही सर्वोच्च, महान है।" कह दो, "कौन तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी देता है?" कह दो, "अल्लाह। और हम या तुम, दोनों में से एक ही मार्गदर्शन पर है या खुली गुमराही में।" कह दो, "जो अपराध हमने किए उनके बारे में तुमसे न पूछा जाएगा, और न जो कुछ तुम करते हो उसके बारे में हमसे पूछा जाएगा।" कह दो, "हमारा रब हम सबको इकट्ठा करेगा, फिर हमारे बीच सत्य के साथ फ़ैसला कर देगा। और वही फ़ैसला करने वाला, सब कुछ जानने वाला है।" कह दो, "मुझे दिखाओ तो वे जिन्हें तुमने साझी बनाकर उसके साथ जोड़ रखा है। हरगिज़ नहीं! बल्कि वही अल्लाह है, प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला।" और हमने तुम्हें सारे इनसानों के लिए बस शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा है, मगर अधिकतर लोग जानते नहीं। और वे कहते हैं, "यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो?" कह दो, "तुम्हारे लिए एक ऐसे दिन का वादा है जिससे तुम न एक घड़ी पीछे हट सकते हो न आगे बढ़ सकते हो।" (22–30)

और सत्य के इनकारी कहते हैं, "हम न इस क़ुरआन पर हरगिज़ ईमान लाएँगे, और न उस पर जो इससे पहले आया।" और काश तुम देखते जब ये ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े किए जाएँगे, एक-दूसरे पर बात डालते हुए! जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे वे उनसे कहेंगे जो घमंड करते थे, "अगर तुम न होते, तो हम

ज़रूर ईमान वाले होते।" घमंड करने वाले उनसे कहेंगे जो कमज़ोर समझे जाते थे, "क्या हमने तुम्हें मार्गदर्शन से रोका था इसके बाद कि वह तुम्हारे पास आ चुका था? नहीं—बल्कि तुम ख़ुद ही अपराधी थे।" और जो कमज़ोर समझे जाते थे वे घमंड करने वालों से कहेंगे, "नहीं—बल्कि यह तुम्हारी रात-दिन की चाल थी, जब तुम हमें हुक्म देते थे कि हम अल्लाह का इनकार करें और उसके बराबर वाले ठहराएँ।" और जब वे यातना को देखेंगे तो अपनी शर्मिन्दगी छिपाएँगे, और हम सत्य के इनकारियों की गर्दनों में तौक़ डाल देंगे। क्या उन्हें उसके सिवा किसी और चीज़ का बदला मिलेगा जो वे करते थे? और हमने जिस बस्ती में भी कोई सचेत करने वाला भेजा उसके ऐश में पड़े हुए लोगों ने यही कहा, "जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गए हो हम उसका इनकार करते हैं।" और उन्होंने कहा, "हम माल और औलाद में ज़्यादा हैं, और हम यातना पाने वाले नहीं।" कह दो, "मेरा रब जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली, मगर अधिकतर लोग जानते नहीं।" और न तुम्हारे माल ऐसे हैं न तुम्हारी औलाद कि तुम्हें हमारे क़रीब कर दें, मगर हाँ जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए—तो ऐसे ही लोगों के लिए उनके किए का दोहरा बदला है, और वे ऊँचे बालाख़ानों में अमन से रहेंगे। और जो हमारी आयतों के ख़िलाफ़ दौड़-धूप करते हैं, उन्हें नीचा दिखाने की धुन में—वे यातना में हाज़िर किए जाएँगे। कह दो, "मेरा रब अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और उसके लिए जैसे चाहता है नपी-तुली कर देता है। और जो कुछ भी तुम ख़र्च करोगे, वह उसकी जगह और देगा; और वही सबसे अच्छा रोज़ी देने वाला है।" (31–39)

और जिस दिन वह उन सबको इकट्ठा करेगा, फिर फ़रिश्तों से कहेगा, "क्या ये लोग तुम्हारी ही इबादत किया करते थे?" वे कहेंगे, "तू पाक है! हमारा संरक्षक तू है, न कि ये। नहीं—बल्कि ये जिन्नों की इबादत करते थे; इनमें से अधिकतर उन्हीं पर ईमान रखते थे।" "तो आज तुममें से कोई किसी के न फ़ायदे का अधिकार रखता है न नुक़सान का।" और हम ज़ुल्म करने वालों से कहेंगे, "चखो उस आग की यातना जिसे तुम झुठलाया करते थे।" और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं, तो कहते हैं, "यह तो बस एक आदमी है जो चाहता है कि तुम्हें उनसे रोक दे जिनकी इबादत तुम्हारे बाप-दादा करते थे।" और कहते हैं, "यह तो बस एक गढ़ा हुआ झूठ है।" और सत्य के इनकारी सत्य के बारे में, जब वह उनके पास आया, कहते हैं, "यह तो बस खुला जादू है।" हालाँकि हमने उन्हें कोई किताबें नहीं दी थीं जिन्हें वे पढ़ते हों, और न तुमसे पहले उनकी ओर कोई सचेत करने वाला भेजा था। और इनसे पहले के लोगों ने भी झुठलाया, और ये तो उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचे जो हमने उन्हें दिया था; फिर भी उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया—तो कैसा भयानक रहा मेरा उन्हें ठुकराना! (40–45)

कह दो, "मैं तुम्हें बस एक बात की नसीहत करता हूँ: कि तुम अल्लाह के लिए, दो-दो और अकेले-अकेले, खड़े हो जाओ, फिर सोच-विचार करो। तुम्हारे साथी में कोई जुनून नहीं। वह तो बस एक कठोर यातना से पहले तुम्हें सचेत करने वाला है।" कह दो, "मैंने तुमसे जो बदला भी माँगा हो वह तुम्हारा ही है। मेरा बदला तो बस अल्लाह के ज़िम्मे है; और वह हर चीज़ पर गवाह है।" कह दो, "मेरा रब सत्य को दे मारता है; वह हर छिपी बात का जानने वाला है।" कह दो, "सत्य आ गया, और बातिल न किसी चीज़ का आरम्भ कर सकता

है न उसे लौटा सकता है।" कह दो, "अगर मैं भटकूँ, तो अपने ही नुक़सान के लिए भटकता हूँ; और अगर मैं राह पर हूँ, तो उसके कारण जो मेरा रब मेरी ओर वह्य करता है। निश्चय ही वह सब कुछ सुनने वाला, बहुत क़रीब है।" (46–50)

और काश तुम उन्हें देखते जब वे घबराए हुए होंगे, बच निकलने की कोई राह न होगी, और वे क़रीब ही की जगह से पकड़ लिए जाएँगे! और वे कहेंगे, "अब हम इस पर ईमान लाए।" मगर इतनी दूर की जगह से वे उसे कहाँ पा सकते हैं, जबकि वे इससे पहले उसका इनकार कर चुके थे, और दूर की जगह से बिन देखे अटकल के तीर चलाते रहे थे? और उनके और उनकी मनचाही चीज़ों के बीच आड़ कर दी जाएगी, जैसा इनसे पहले इन्हीं जैसों के साथ किया गया; निश्चय ही वे बेचैन कर देने वाले शक में पड़े थे। (51–54)

# 35. पैदा करने वाला (फ़ातिर)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, जो फ़रिश्तों को सन्देश लाने वाला बनाता है, जिनके दो-दो, तीन-तीन और चार-चार पर हैं। वह सृष्टि में जो चाहता है बढ़ा देता है: निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। अल्लाह लोगों के लिए जो दयालुता खोल दे, उसे कोई रोकने वाला नहीं; और जिसे वह रोक ले, उसके बाद उसे कोई खोलने वाला नहीं। और वही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। ऐ लोगो, अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो। क्या अल्लाह के सिवा कोई और पैदा करने वाला है, जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता हो? उसके सिवा कोई इलाह नहीं। तो तुम किधर फेरे जाते हो? (1–3)

और ऐ नबी, अगर ये तुम्हें झुठलाते हैं, तो तुमसे पहले भी रसूल झुठलाए जा चुके हैं; और सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटाए जाते हैं। ऐ लोगो, अल्लाह का वादा सच्चा है, तो दुनिया की ज़िन्दगी तुम्हें धोखे में न डाले, और न वह बड़ा धोखेबाज़ अल्लाह के बारे में तुम्हें धोखे में डाले। निश्चय ही शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तो तुम उसे दुश्मन ही समझो। वह अपने गिरोह को बस इसलिए बुलाता है कि वे दहकती आग वालों में से हो जाएँ। जिन लोगों ने सत्य का इनकार किया उनके लिए कठोर यातना है; और जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उनके लिए क्षमा है और बड़ा बदला। तो क्या वह जिसका बुरा काम उसके लिए लुभावना बना दिया गया हो, तो वह उसे अच्छा समझने लगे? तो अल्लाह जिसे चाहता है भटकने देता है और जिसे चाहता है राह दिखाता है; तो उन पर अफ़सोस कर-करके तुम्हारी जान न घुले। जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसे ख़ूब जानता है। (4–8)

और अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है, तो वे बादल उठाती हैं; फिर हम उन्हें एक मुर्दा ज़मीन की ओर हाँक ले जाते हैं और उनके द्वारा ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा कर देते हैं। इसी तरह दोबारा उठाया जाना होगा। जो कोई इज़्ज़त चाहता हो—तो सारी इज़्ज़त अल्लाह ही के लिए है। उसी की ओर पाकीज़ा बात चढ़ती है, और नेक कर्म को वह ऊँचा उठाता है। और जो लोग बुरी चालें चलते हैं उनके लिए कठोर यातना है, और उनकी चाल ही मिटकर रहेगी। और अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर एक बूँद से; फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े बनाया। और कोई मादा न गर्भवती होती है न बच्चा जनती है मगर उसके ज्ञान से; और न किसी उम्र वाले को लम्बी उम्र दी जाती है न उसकी उम्र में कमी की जाती है मगर यह सब एक किताब में दर्ज है। निश्चय ही यह अल्लाह के लिए आसान है। (9–11)

और दोनों समुद्र बराबर नहीं: यह मीठा, प्यास बुझाने वाला, पीने में ख़ुशगवार है, और वह खारा, कड़वा। फिर भी हर एक में से तुम ताज़ा गोश्त खाते हो और पहनने के ज़ेवर निकालते हो, और तुम उसमें नौकाओं को देखते हो कि पानी को चीरती हुई चलती हैं ताकि तुम उसका अनुग्रह ढूँढो, और ताकि तुम शुक्र अदा

करो। वह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है, और उसने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है, हर एक एक ठहराई हुई अवधि के लिए चल रहा है। यही अल्लाह है, तुम्हारा रब; बादशाही उसी की है। और जिन्हें तुम उसके सिवा पुकारते हो वे खजूर की गुठली के छिलके के भी मालिक नहीं। अगर तुम उन्हें पुकारो, तो वे तुम्हारी पुकार नहीं सुनते; और अगर सुन भी लें, तो तुम्हें जवाब नहीं दे सकते। और क़ियामत के दिन वे तुम्हारे साझी ठहराने का इनकार कर देंगे। और तुम्हें उस जैसा कोई नहीं बता सकता जो पूरी ख़बर रखने वाला है। (12–14)

ऐ लोगो, तुम्हीं अल्लाह के मुहताज हो; और अल्लाह ही निस्पृह, प्रशंसा के योग्य है। अगर वह चाहे, तो तुम्हें हटा दे और एक नई सृष्टि ले आए; और यह अल्लाह के लिए कुछ मुश्किल नहीं। और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा; और अगर कोई बोझ से लदा हुआ अपना बोझ उठाने के लिए पुकारे, तो उसमें से कुछ भी न उठाया जाएगा, चाहे वह क़रीबी रिश्तेदार ही क्यों न हो। तुम तो बस उन्हीं को सचेत कर सकते हो जो बिन देखे अपने रब से डरते हैं और नमाज़ क़ायम रखते हैं। और जो कोई पाकीज़गी अपनाता है वह अपने ही भले के लिए अपनाता है; और अल्लाह ही की ओर लौटना है। और अंधा और देखने वाला बराबर नहीं, और न घुप अँधेरे और रौशनी, और न छाया और तपती लू; और न ज़िन्दे और मुर्दे बराबर हैं। निश्चय ही अल्लाह जिसे चाहता है सुना देता है, मगर तुम उन्हें नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में हैं। तुम तो बस एक सचेत करने वाले हो। निश्चय ही हमने तुम्हें सत्य के साथ शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा है; और कोई समुदाय ऐसा नहीं जिसमें कोई सचेत करने वाला न गुज़रा हो। और अगर ये तुम्हें झुठलाते हैं, तो इनसे पहले के लोग भी अपने रसूलों को झुठला चुके हैं: उनके रसूल उनके पास खुले प्रमाण, सहीफ़े, और रौशन किताब लेकर आए थे। फिर मैंने सत्य के इनकारियों को पकड़ लिया—तो कैसा भयानक रहा मेरा उन्हें ठुकराना! (15–26)

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह आसमान से पानी उतारता है, फिर उसके द्वारा हम तरह-तरह के रंगों वाले फल निकालते हैं? और पहाड़ों में भी धारियाँ हैं, सफ़ेद और लाल, जिनके रंग अलग-अलग हैं, और कुछ गहरी काली; और इसी तरह इनसानों और जानवरों और चौपायों के रंग भी अलग-अलग हैं। अल्लाह से उसके बन्दों में बस वही डरते हैं जो ज्ञान रखते हैं। निश्चय ही अल्लाह प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है। जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं, नमाज़ क़ायम रखते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से छिपे और खुले ख़र्च करते हैं, वे एक ऐसे कारोबार की आस रखते हैं जिसमें कभी घाटा न होगा, ताकि वह उन्हें उनका बदला पूरा-पूरा दे और अपने अनुग्रह से उन्हें और ज़्यादा दे। निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील, गुणग्राहक है। (27–30)

और जो किताब हमने तुम्हारी ओर वह्य की है वही सत्य है, उसकी पुष्टि करती हुई जो इससे पहले आ चुका। निश्चय ही अल्लाह अपने बन्दों की पूरी ख़बर रखने वाला, सब कुछ देखने वाला है। फिर हमने इस किताब का वारिस उन लोगों को बनाया जिन्हें हमने अपने बन्दों में से चुन लिया। तो उनमें कोई अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाला है, कोई बीच की राह चलने वाला, और कोई अल्लाह के हुक्म से नेकियों में सबसे आगे बढ़ जाने

वाला। यही बड़ा अनुग्रह है: अदन के बाग़ जिनमें वे दाख़िल होंगे, वहाँ उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे, और वहाँ उनका लिबास रेशम होगा। और वे कहेंगे, "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने हमसे हर ग़म दूर कर दिया। निश्चय ही हमारा रब बड़ा क्षमाशील, गुणग्राहक है: जिसने अपने अनुग्रह से हमें हमेशा ठहरने के घर में उतारा, जहाँ हमें न कोई मशक़्क़त छूती है, और न कोई थकान छूती है।" और जिन लोगों ने सत्य का इनकार किया उनके लिए जहन्नम की आग है: न उनका काम तमाम किया जाएगा कि वे मर जाएँ, और न उसकी यातना उनसे हलकी की जाएगी। इसी तरह हम हर नाशुक्रे को बदला देते हैं। और वे वहाँ चीख़-चीख़कर कहेंगे, "ऐ हमारे रब, हमें निकाल ले, हम अच्छे काम करेंगे, वे नहीं जो हम करते थे!" "क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र न दी थी कि जो नसीहत पकड़ना चाहता वह उसमें नसीहत पकड़ लेता? और तुम्हारे पास सचेत करने वाला भी आया था। तो अब मज़ा चखो: ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।" (31–37)

निश्चय ही अल्लाह आसमानों और ज़मीन के परोक्ष का जानने वाला है; वह सीनों तक की बात ख़ूब जानता है। वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में जानशीन बनाया। तो जो कोई सत्य का इनकार करे, उसके इनकार का वबाल उसी पर है; और इनकार करने वालों का इनकार उनके रब के यहाँ बस उनसे बेज़ारी ही बढ़ाता है, और उनका इनकार उनके घाटे ही में बढ़ोतरी करता है। कह दो, "भला तुमने अपने उन ठहराए हुए साझियों को देखा भी जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो? मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में से क्या पैदा किया है। या आसमानों में उनका कोई साझा है? या हमने उन्हें कोई किताब दी है, कि वे उसके किसी खुले प्रमाण पर हैं?" नहीं—बल्कि ये ज़ालिम एक-दूसरे से बस धोखे के वादे करते हैं। (38–40)

निश्चय ही अल्लाह आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है कि वे टल न जाएँ; और अगर वे टल जाएँ, तो उसके बाद कोई उन्हें थाम नहीं सकता। निश्चय ही वह बड़ा सहनशील, बड़ा क्षमाशील है।[42] (41)

और उन्होंने अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाई थीं कि अगर उनके पास कोई सचेत करने वाला आया, तो वे हर समुदाय से बढ़कर राह पर होंगे; मगर जब उनके पास सचेत करने वाला आ गया, तो इससे उनकी बेज़ारी ही बढ़ी, ज़मीन में घमंड और बुरी चालों के कारण। और बुरी चाल तो अपने चलने वालों ही को घेरती है। तो क्या वे बस उसी रीत की राह देख रहे हैं जो अल्लाह ने अगलों के साथ बरती? तो तुम अल्लाह की रीत में कोई बदलाव न पाओगे; और तुम अल्लाह की रीत को कभी टलता हुआ न पाओगे। क्या ये ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते कि इनसे पहले के लोगों का अंजाम कैसा हुआ, हालाँकि वे ताक़त में इनसे कहीं बढ़े हुए थे? और अल्लाह ऐसा नहीं कि आसमानों या ज़मीन में कोई चीज़ उसे बेबस कर दे: निश्चय ही वह सब कुछ जानने वाला, सामर्थ्य वाला है। और अगर अल्लाह लोगों को उनकी कमाई पर पकड़ता, तो ज़मीन की

[42] ऑकेज़नलिज़्म (अवसरवाद का दर्शन) – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस
निरन्तर सृष्टि का तत्त्वमीमांसा: क़ुरआन 30:25 और 35:41 की एक वैज्ञानिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या
वीडियो: अल्लाह आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है, कहीं वे मिट न जाएँ
क़ुरआन 35:41 और 6:59 में थामना और दर्ज करना: भौतिक सूचना सिद्धान्त और सिमुलेशन परिकल्पना से संवाद
वजूद में थामा हुआ ब्रह्मांड: क़ुरआन 30:25 और 35:41 की एक व्याख्या

पीठ पर एक भी जानदार न छोड़ता। मगर वह उन्हें एक ठहराई हुई अवधि तक मुहलत देता है; फिर जब उनकी अवधि आ जाएगी—तो अल्लाह अपने बन्दों को बराबर देख रहा है। (42–45)

# 36. या सीन (या सीन)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

या सीन। (1)

हिकमत भरे क़ुरआन की क़सम, तुम निश्चय ही रसूलों में से हो, सीधे मार्ग पर—यह उसका उतारा हुआ है जो प्रभुत्वशाली, सदा दयावान है, ताकि तुम ऐसे लोगों को सचेत करो जिनके बाप-दादा सचेत नहीं किए गए थे, तो वे बेपरवाही में पड़े हैं। उनमें से अधिकतर पर बात पूरी हो चुकी है, तो वे ईमान नहीं लाते। हमने उनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिए हैं, जो ठोड़ियों तक हैं, तो उनके सिर ऊपर को उठे रह गए हैं; और हमने एक आड़ उनके आगे कर दी और एक आड़ उनके पीछे, और उन्हें ऊपर से ढाँक दिया, तो उन्हें कुछ सूझता नहीं। और उनके लिए बराबर है कि तुम उन्हें सचेत करो या न करो: वे ईमान नहीं लाएँगे। तुम तो बस उसी को सचेत कर सकते हो जो याददिहानी की पैरवी करे और बिन देखे रहमान से डरे। तो ऐसे आदमी को क्षमा और इज़्ज़त के बदले की शुभ-सूचना दे दो। निश्चय ही हम ही मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं, और हम लिखते जा रहे हैं जो कुछ उन्होंने आगे भेजा और जो निशान वे पीछे छोड़ गए; और हर चीज़ हमने एक खुली किताब में गिन रखी है। (2–12)

और उनके सामने एक मिसाल बयान करो: उस बस्ती वालों की, जब वहाँ रसूल आए। जब हमने उनकी ओर दो भेजे, तो उन्होंने दोनों को झुठला दिया; फिर हमने एक तीसरे से उन्हें मज़बूत किया, और उन्होंने कहा, “हम तुम्हारी ओर भेजे गए हैं।” वे बोले, “तुम तो बस हमारे ही जैसे इनसान हो; और रहमान ने कुछ भी नहीं उतारा। तुम बस झूठ बोल रहे हो।” उन्होंने कहा, “हमारा रब जानता है कि हम तुम्हारी ओर भेजे गए हैं, और हमारे ज़िम्मे तो बस साफ़-साफ़ सन्देश पहुँचा देना है।” वे बोले, “हम तो तुमसे बुरा शगुन लेते हैं। अगर तुम बाज़ न आए, तो हम तुम्हें ज़रूर पत्थर मार-मारकर हलाक कर देंगे, और हमारी ओर से तुम्हें दुखद यातना पहुँचेगी।” उन्होंने कहा, “तुम्हारा बुरा शगुन तो तुम्हारे अपने साथ है। क्या इसलिए कि तुम्हें याद दिलाया गया? नहीं—बल्कि तुम हर हद से गुज़र जाने वाले लोग हो।” और शहर के परले सिरे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया। उसने कहा, “ऐ मेरी क़ौम, रसूलों के पीछे चलो! उनके पीछे चलो जो तुमसे कोई बदला नहीं माँगते, और जो सही राह पर हैं। और मैं उसकी इबादत क्यों न करूँ जिसने मुझे पैदा किया, और जिसकी ओर तुम लौटाए जाओगे? क्या मैं उसके सिवा दूसरे इलाह बना लूँ? अगर रहमान मेरे साथ बुराई का इरादा करे, तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आएगी, और न वे मुझे छुड़ा सकेंगे। तब तो मैं निश्चय ही खुली गुमराही में हूँगा। मैं तो तुम्हारे रब पर ईमान ले आया, तो मेरी बात सुन लो।” (13–25)

कहा गया, “जन्नत में दाख़िल हो जा।” उसने कहा, “काश मेरी क़ौम जान लेती कि मेरे रब ने मुझे किस तरह क्षमा कर दिया और मुझे इज़्ज़त वालों में से बनाया।” और उसके बाद हमने उसकी क़ौम पर आसमान से

कोई लश्कर नहीं उतारा, और न हमें उतारने की ज़रूरत थी: वह बस एक ही कड़क थी, और वे एकाएक बुझकर रह गए। (26–29)

अफ़सोस है बन्दों पर! उनके पास जो भी रसूल आया वे उसका मज़ाक़ ही उड़ाते रहे। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम उनसे पहले कितनी ही नस्लें हलाक कर चुके हैं, और यह कि वे उनकी ओर लौटकर नहीं आते? और सब-के-सब इकट्ठे हमारे सामने हाज़िर किए जाएँगे। और उनके लिए एक निशानी मुर्दा ज़मीन है: हमने उसे ज़िन्दा किया और उससे अनाज निकाला, तो उसी में से वे खाते हैं। और हमने उसमें खजूरों और अंगूरों के बाग़ बनाए, और उसमें सोते जारी किए, ताकि वे उसके फल खाएँ—हालाँकि इसे उनके हाथों ने नहीं बनाया। तो क्या वे शुक्र अदा नहीं करते? पाक है वह जिसने सारे जोड़े पैदा किए: उन चीज़ों में से भी जो ज़मीन उगाती है, और ख़ुद उनमें से भी, और उन चीज़ों में से भी जिन्हें वे नहीं जानते। और उनके लिए एक निशानी रात है: हम उस पर से दिन को खींच लेते हैं, तो वे एकाएक अँधेरे में रह जाते हैं। और सूरज अपने लिए ठहराए हुए ठिकाने की ओर चला जा रहा है: यह उसका ठहराया हुआ है जो प्रभुत्वशाली, सब कुछ जानने वाला है। और चाँद—हमने उसके लिए मंज़िलें ठहरा दी हैं, यहाँ तक कि वह फिर खजूर की पुरानी, सूखी टहनी जैसा रह जाता है। न सूरज के बस में है कि चाँद को जा पकड़े, और न रात दिन से आगे निकल सकती है: और हर एक एक मदार में तैर रहा है। (30–40)

और उनके लिए एक निशानी यह भी है कि हमने उनकी नस्ल को भरी हुई नौका में सवार किया, और हमने उनके लिए उसी जैसी और चीज़ें पैदा कीं, जिन पर वे सवार होते हैं। और अगर हम चाहें, तो उन्हें डुबो दें: फिर न कोई उनकी फ़रियाद सुनने वाला हो, और न वे बचाए जाएँ—सिवाय इसके कि हमारी ओर से दयालुता हो, और एक समय तक का सुख। और जब उनसे कहा जाता है, "उससे बचो जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है, ताकि तुम पर दया की जाए," तो वे मुँह फेर लेते हैं। और उनके रब की निशानियों में से जो भी निशानी उनके पास आती है वे उससे मुँह ही फेर लेते हैं। और जब उनसे कहा जाता है, "जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें दिया है उसमें से ख़र्च करो," तो सत्य के इनकारी ईमान वालों से कहते हैं, "क्या हम उसे खिलाएँ जिसे अगर अल्लाह चाहता तो ख़ुद खिला देता? तुम तो बस खुली गुमराही में हो।" (41–47)

और वे कहते हैं, "यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो?" वे बस एक ही कड़क की राह देख रहे हैं, जो उन्हें इस हाल में आ पकड़ेगी कि वे झगड़ रहे होंगे, फिर न वे कोई वसीयत कर सकेंगे, और न अपने घर वालों की ओर लौट सकेंगे। (48–50)

और सूर फूँका जाएगा, तो वे एकाएक क़ब्रों से निकलकर अपने रब की ओर दौड़ पड़ेंगे। वे कहेंगे, "हाय हमारी कमबख़्ती! हमें हमारी सोने की जगह से किसने उठा दिया?" "यह वही है जिसका रहमान ने वादा किया था; और रसूलों ने सच कहा था।" वह बस एक ही कड़क होगी, और वे एकाएक सब-के-सब हमारे सामने हाज़िर कर दिए जाएँगे। "तो आज किसी जान पर कुछ भी ज़ुल्म न होगा, और तुम्हें बस उसी का बदला दिया जाएगा जो तुम करते थे। निश्चय ही जन्नत वाले आज मज़े के शुग़ल में हैं; वे और उनके जोड़े

सायों में तख़्तों पर तकिया लगाए बैठे हैं। वहाँ उनके लिए फल हैं, और वह सब जो वे माँगें। 'सलाम!'—यह सदा दयावान रब की ओर से कहा हुआ होगा। और ऐ अपराधियो, आज तुम अलग हो जाओ! ऐ आदम की सन्तान, क्या मैंने तुम्हें ताकीद न की थी, कि शैतान की बन्दगी न करना, क्योंकि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है, और यह कि मेरी ही इबादत करना? यही सीधा मार्ग है। फिर भी उसने तुममें से एक बड़ी ख़िल्क़त को भटका दिया। तो क्या तुम बुद्धि से काम न लेते थे? यह है वह जहन्नम जिसका तुमसे वादा किया जाता था। आज इसमें जलो, इसलिए कि तुम सत्य का इनकार करते थे।" (51–64)

आज हम उनके मुँह पर मुहर लगा देंगे, और उनके हाथ हमसे बात करेंगे, और उनके पाँव गवाही देंगे उसकी जो वे कमाते थे। और अगर हम चाहते, तो उनकी आँखें मिटा देते; फिर वे राह की ओर लपकते—मगर उन्हें कहाँ सूझता? और अगर हम चाहते, तो उन्हें उनकी जगह पर ही मस्ख़ कर देते, फिर न वे आगे चल सकते और न पीछे पलट सकते। और जिसे हम लम्बी उम्र देते हैं, उसे बनावट में उलट देते हैं। तो क्या वे बुद्धि से काम नहीं लेते? (65–68)

और हमने उसे शेर कहना नहीं सिखाया, और न यह उसे शोभा देता है। यह तो बस एक याददिहानी और साफ़ क़ुरआन है, ताकि वह हर उस आदमी को सचेत करे जो ज़िन्दा हो, और ताकि सत्य के इनकारियों पर बात पूरी हो जाए। (69–70)

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने अपने हाथों की बनाई हुई चीज़ों में से उनके लिए चौपाए पैदा किए, तो वे उनके मालिक हैं? और हमने उन्हें उनके बस में कर दिया, तो उनमें कुछ उनकी सवारियाँ हैं और कुछ को वे खाते हैं; और उनके लिए उनमें और भी फ़ायदे हैं, और पीने की चीज़ें। तो क्या वे शुक्र अदा नहीं करते? और उन्होंने अल्लाह के सिवा दूसरे इलाह बना लिए हैं, इस उम्मीद पर कि उनकी मदद की जाएगी। वे उनकी मदद नहीं कर सकते, हालाँकि ये उनके लिए हाज़िर-बाश लश्कर बने हुए हैं। तो उनकी बात तुम्हें दुखी न करे। हम जानते हैं जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं। (71–76)

क्या इनसान ने नहीं देखा कि हमने उसे एक बूँद से पैदा किया? फिर देखो, वह खुला झगड़ालू बन बैठा! और वह हमारे लिए मिसाल गढ़ता है और अपना पैदा किया जाना भूल जाता है। वह कहता है, "हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा जबकि वे गल-सड़ चुकी हों?" कह दो, "उन्हें वही ज़िन्दा करेगा जिसने उन्हें पहली बार पैदा किया; और वह हर तरह का पैदा करना ख़ूब जानता है—वही जिसने तुम्हारे लिए हरे पेड़ से आग पैदा कर दी, तो तुम उससे आग सुलगाते हो।" क्या वह जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया इसकी सामर्थ्य नहीं रखता कि उन जैसे पैदा कर दे? क्यों नहीं! और वही बड़ा पैदा करने वाला, सब कुछ जानने वाला है। उसका मामला तो बस यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है, तो उससे कहता है, "हो जा," और वह हो जाती है। तो पाक है वह जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाही है; और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे। (77–83)

# 37. सफ़ बाँधने वाले (अस-साफ़्फ़ात)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क़सम है क़तार-दर-क़तार सफ़ बाँधने वालों की, फिर डाँटकर हाँकने वालों की, फिर याददिहानी सुनाने वालों की: निश्चय ही तुम्हारा इलाह एक ही है, आसमानों और ज़मीन का रब और उस सबका जो इन दोनों के बीच है, और सूरज निकलने की सब जगहों का रब। निश्चय ही हमने सबसे क़रीब के आसमान को तारों की शोभा से सजाया है, और हर सरकश शैतान से हिफ़ाज़त के लिए। वे ऊँची मजलिस की बातें नहीं सुन सकते, और हर ओर से उन पर मार पड़ती है, धुत्कारने के लिए; और उनके लिए हमेशा रहने वाली यातना है—सिवाय उसके जो कुछ उचक ले, तो एक दहकता शोला उसके पीछे लग जाता है। (1–10)

तो उनसे पूछो: क्या इनका पैदा करना ज़्यादा कठिन है, या उनका जिन्हें हमने पैदा किया? हमने इन्हें चिपचिपे गारे से पैदा किया। बल्कि तुम तो आश्चर्य करते हो, और ये हँसी उड़ाते हैं, और जब इन्हें याद दिलाया जाता है तो नसीहत नहीं पकड़ते, और जब कोई निशानी देखते हैं तो उसका मज़ाक़ बनाते हैं, और कहते हैं, "यह तो बस खुला जादू है। क्या! जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएँगे, तो क्या हम सचमुच उठाए जाएँगे—और हमारे अगले बाप-दादा भी?" कह दो, "हाँ—और तुम ज़लील भी होगे।" वह बस एक ही डाँट होगी, और वे एकाएक देखने लगेंगे। और कहेंगे, "हाय हमारी कमबख़्ती! यह तो बदले का दिन है।" "यह वही फ़ैसले का दिन है, जिसे तुम झुठलाया करते थे।" "इकट्ठा करो उन्हें जिन्होंने ज़ुल्म किया, और उनके जोड़ीदारों को और उन्हें जिनकी वे अल्लाह के सिवा इबादत करते थे, फिर उन सबको दहकती आग की राह दिखाओ; और इन्हें ज़रा ठहराओ, इनसे पूछ होनी है: तुम्हें क्या हो गया, कि एक-दूसरे की मदद नहीं करते?" नहीं—बल्कि उस दिन वे पूरी तरह हथियार डाले हुए होंगे। और वे एक-दूसरे की ओर रुख़ करके पूछ-ताछ करेंगे। कहेंगे, "तुम्हीं हमारे पास दाहिनी ओर से आया करते थे।" वे कहेंगे, "नहीं—बल्कि तुम ख़ुद ही ईमान वाले न थे। और हमारा तुम पर कोई ज़ोर न था; बल्कि तुम ख़ुद हर हद से गुज़र जाने वाले लोग थे। तो हम पर हमारे रब की बात पूरी होकर रही: हम ज़रूर यातना का मज़ा चखेंगे। तो हमने तुम्हें भटकाया, क्योंकि हम ख़ुद भटके हुए थे।" तो उस दिन वे सब यातना में साझी होंगे। हम अपराधियों के साथ ऐसा ही किया करते हैं। जब उनसे कहा जाता था, "अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं," तो वे घमंड करते थे, और कहते थे, "क्या हम एक दीवाने कवि के कहने से अपने इलाहों को छोड़ दें?" नहीं—बल्कि वह सत्य लेकर आया है, और उसने रसूलों की पुष्टि की है। निश्चय ही तुम दुखद यातना का मज़ा चखकर रहोगे, और तुम्हें बस उसी का बदला दिया जाएगा जो तुम करते थे— (11–39)

सिवाय अल्लाह के चुने हुए बन्दों के। उनके लिए जानी-बूझी रोज़ी है: फल; और वे नेमत भरे बाग़ों में इज़्ज़त के साथ होंगे, तख़्तों पर, आमने-सामने। उनके बीच बहते सोते का जाम फिराया जाएगा, सफ़ेद, पीने वालों के लिए लज़ीज़, जिसमें न कोई नुक़सान होगा, और न उससे उनकी अक़्ल बहकेगी। और उनके पास निगाहें नीची रखने वाली, सुन्दर आँखों वाली साथिनें होंगी, मानो वे छिपाकर रखे हुए अंडे हों। (40–49)

फिर वे एक-दूसरे की ओर रुख़ करके हाल पूछेंगे। उनमें से एक कहेगा, "मेरा एक साथी था जो कहा करता था, 'क्या तुम भी सचमुच उन लोगों में से हो जो मानते हैं कि जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएँगे तो क्या हमें बदला दिया जाएगा?'" वह कहेगा, "क्या तुम झाँककर देखोगे?" फिर वह झाँकेगा तो उसे दहकती आग के बीचोंबीच देखेगा। कहेगा, "अल्लाह की क़सम, तू तो मुझे तबाह ही कर देने को था! और अगर मेरे रब का अनुग्रह न होता, तो मैं भी उन लोगों में होता जो पकड़कर हाज़िर किए गए हैं। तो क्या अब हमें मरना नहीं, सिवाय अपनी उस पहली मौत के, और हमें यातना नहीं दी जाएगी? निश्चय ही यही बड़ी कामयाबी है!" ऐसी ही चीज़ के लिए काम करने वालों को काम करना चाहिए। क्या यह मेहमानी बेहतर है, या ज़क़्क़ूम का पेड़? हमने उसे ज़ालिमों के लिए आज़माइश बनाया है। वह एक पेड़ है जो दहकती आग की तह से निकलता है; उसके गुच्छे ऐसे हैं मानो शैतानों के सिर हों। तो वे उसी में से खाएँगे और उसी से पेट भरेंगे; फिर उसके ऊपर से उन्हें खौलते पानी का घोल मिलेगा; फिर उनका लौटना दहकती आग ही की ओर होगा। उन्होंने अपने बाप-दादा को भटका हुआ पाया, तो वे उन्हीं के नक़्शे-क़दम पर दौड़े चले जा रहे हैं। और इनसे पहले अगलों में से अधिकतर भटक चुके हैं, हालाँकि हमने उनमें सचेत करने वाले भेजे थे। तो देखो, उन लोगों का अंजाम कैसा हुआ जिन्हें सचेत किया गया था—सिवाय अल्लाह के चुने हुए बन्दों के। (50–74)

और नूह ने हमें पुकारा, तो हम क्या ही अच्छे सुनने वाले हैं! और हमने उसे और उसके घर वालों को बड़ी बेचैनी से छुटकारा दिया, और उसी की नस्ल को बाक़ी रहने वाला बनाया, और बाद में आने वालों में उसके लिए नेकनामी छोड़ी: "सलाम है नूह पर सारे संसार वालों में!" हम अच्छा करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं: निश्चय ही वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से था। फिर हमने दूसरों को डुबो दिया। (75–82)

और उसी के गिरोह में से इबराहीम था, जब वह अपने रब के पास भला-चंगा दिल लेकर आया, जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा, "तुम किस चीज़ की इबादत करते हो? क्या अल्लाह को छोड़कर झूठ-मूठ गढ़े हुए इलाह चाहते हो? तो सारे संसारों के रब के बारे में तुम्हारा क्या गुमान है?" फिर उसने एक निगाह तारों पर डाली और कहा, "मैं बीमार हूँ।" तो वे उससे पीठ फेरकर चले गए। फिर वह चुपके से उनके इलाहों की ओर गया और बोला, "क्या तुम खाते नहीं? तुम्हें क्या हुआ, कि बोलते नहीं?" फिर वह उन पर पिल पड़ा, दाहिने हाथ से चोटें लगाता हुआ। तो वे दौड़ते हुए उसके पास आए। उसने कहा, "क्या तुम उनकी इबादत करते हो जिन्हें ख़ुद तराशते हो, हालाँकि अल्लाह ने तुम्हें भी पैदा किया और उसे भी जो तुम बनाते हो?" वे बोले, "इसके लिए एक इमारत बनाओ, फिर इसे दहकती आग में डाल दो।" तो उन्होंने उसके ख़िलाफ़ एक चाल चलनी चाही, मगर हमने उन्हीं को नीचा कर दिया। (83–98)

और उसने कहा, "मैं अपने रब की ओर जाता हूँ; वही मुझे राह दिखाएगा। ऐ मेरे रब, मुझे नेक लोगों में से एक बेटा दे।" तो हमने उसे एक सहनशील लड़के की शुभ-सूचना दी। फिर जब वह उसके साथ दौड़-धूप करने की उम्र को पहुँचा, तो उसने कहा, "ऐ मेरे बेटे, मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि तुम्हें ज़बह कर रहा हूँ। तो देखो, तुम्हारी क्या राय है।" उसने कहा, "अब्बा जान, जो हुक्म आपको दिया जा रहा है कर गुज़रिए; अल्लाह

ने चाहा तो आप मुझे सब्र करने वालों में से पाएँगे।" फिर जब दोनों अल्लाह के आगे समर्पित हो गए, और उसने उसे माथे के बल लिटा दिया, तो हमने उसे पुकारा, "ऐ इबराहीम! तुमने ख़्वाब सच कर दिखाया।" हम अच्छा करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। निश्चय ही यह एक खुली आज़माइश थी। और हमने एक बड़ी क़ुरबानी फ़िदये में देकर उसे छुड़ा लिया, और बाद में आने वालों में उसके लिए नेकनामी छोड़ी: "सलाम है इबराहीम पर!" हम अच्छा करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं: निश्चय ही वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से था। (99–111)

और हमने उसे इसहाक़ की शुभ-सूचना दी, एक नबी, नेक लोगों में से। और हमने उस पर और इसहाक़ पर बरकतें उतारीं; और उन दोनों की नस्ल में कोई अच्छा करने वाला है और कोई अपने ऊपर खुला ज़ुल्म करने वाला। और हमने मूसा और हारून पर एहसान किया, और उन्हें और उनकी क़ौम को बड़ी बेचैनी से छुटकारा दिया; और हमने उनकी मदद की, तो वही ग़ालिब रहे; और हमने उन्हें वह किताब दी जो हर बात स्पष्ट कर देती है, और उन्हें सीधे मार्ग की राह दिखाई; और बाद में आने वालों में उनके लिए नेकनामी छोड़ी: "सलाम है मूसा और हारून पर!" हम अच्छा करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं: निश्चय ही वे हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे। (112–122)

और इलयास भी निश्चय ही रसूलों में से था, जब उसने अपनी क़ौम से कहा, "क्या तुम अल्लाह के प्रति सचेत न होगे? क्या तुम बअल को पुकारते हो, और सबसे अच्छे पैदा करने वाले को छोड़ देते हो—अल्लाह को, जो तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे अगले बाप-दादा का भी रब?" मगर उन्होंने उसे झुठला दिया, तो वे ज़रूर यातना में हाज़िर किए जाएँगे—सिवाय अल्लाह के चुने हुए बन्दों के। और हमने बाद में आने वालों में उसके लिए नेकनामी छोड़ी: "सलाम है इलयास पर!" हम अच्छा करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं: निश्चय ही वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से था। (123–132)

और लूत भी निश्चय ही रसूलों में से था। हमने उसे और उसके घर वालों को, सबको, बचा लिया, सिवाय एक बुढ़िया के जो पीछे रह जाने वालों में थी; फिर हमने दूसरों को तबाह कर दिया। और तुम उन पर से सुबह को भी गुज़रते हो और रात को भी। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? और यूनुस भी निश्चय ही रसूलों में से था। जब वह भागकर भरी हुई नौका पर पहुँचा, फिर पर्ची डाली, तो हारने वालों में से हुआ; फिर मछली ने उसे निगल लिया, और वह मलामत के लायक़ था। तो अगर वह अल्लाह की तसबीह करने वालों में से न होता, तो उस दिन तक उसी के पेट में रहता जब लोग उठाए जाएँगे। फिर हमने उसे चटियल किनारे पर डाल दिया, और वह बीमार था, और हमने उस पर एक बेलदार पौधा उगा दिया। और हमने उसे एक लाख, या उससे ज़्यादा लोगों की ओर भेजा; तो वे ईमान लाए, तो हमने उन्हें एक समय तक जीवन का सुख भोगने दिया। (133–148)

तो उनसे पूछो: क्या तुम्हारे रब के लिए बेटियाँ हैं, और उनके लिए बेटे? या हमने फ़रिश्तों को औरतें बनाया और वे देख रहे थे? सुन लो, वे अपने गढ़े हुए झूठ ही से कहते हैं, "अल्लाह के औलाद है।" और वे निश्चय ही

झूठे हैं। क्या उसने बेटों के मुक़ाबले में बेटियाँ पसन्द कीं? तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा फ़ैसला करते हो? तो क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते? या तुम्हारे पास कोई खुला प्रमाण है? तो अपनी किताब लाओ, अगर तुम सच्चे हो। और उन्होंने उसके और जिन्नों के बीच रिश्ता ठहरा दिया है, हालाँकि जिन्न ख़ूब जानते हैं कि वे पकड़कर हाज़िर किए जाएँगे। पाक है अल्लाह, उन बातों से बहुत ऊँचा जो ये बयान करते हैं!—सिवाय अल्लाह के चुने हुए बन्दों के। तो तुम और वे जिनकी तुम इबादत करते हो किसी को उससे बहका नहीं सकते, सिवाय उसके जो दहकती आग में जलने वाला है। "और हममें से कोई नहीं जिसका एक जाना-बूझा मक़ाम न हो; और हम ही सफ़ बाँधे खड़े रहने वाले हैं; और हम ही उसकी तसबीह करने वाले हैं।" (149–166)

और ये लोग कहा करते थे, "अगर हमारे पास अगलों की कोई याददिहानी होती, तो हम अल्लाह के चुने हुए बन्दे होते।" मगर अब इन्होंने इसका इनकार कर दिया। तो जल्द ही ये जान लेंगे। और हमारी बात हमारे उन बन्दों के हक़ में पहले ही हो चुकी है जो रसूल हैं: कि उन्हीं की मदद की जाएगी, और हमारा लश्कर—वही ग़ालिब रहेगा। तो कुछ समय तक उनसे मुँह फेरे रहो, और उन्हें देखते रहो; जल्द ही वे भी देख लेंगे। क्या वे हमारी यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं? तो जब वह उनके आँगन में उतरेगी, तो उन लोगों की सुबह बहुत बुरी होगी जिन्हें सचेत किया गया था। और कुछ समय तक उनसे मुँह फेरे रहो, और देखते रहो; जल्द ही वे भी देख लेंगे। पाक है तुम्हारा रब, इज़्ज़त का मालिक, उन बातों से बहुत ऊँचा जो ये बयान करते हैं! और सलाम है रसूलों पर, और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसारों का रब है। (167–182)

# 38. साद (साद)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

साद। क़सम है याददिहानी से भरे क़ुरआन की! बल्कि सत्य के इनकारी घमंड और ज़िद में पड़े हैं। हम इनसे पहले कितनी ही नस्लें हलाक कर चुके हैं! तो उन्होंने पुकार मचाई, मगर वह बच निकलने का समय न रहा था। और इन्हें इस पर आश्चर्य हुआ कि इनके पास इन्हीं में से एक सचेत करने वाला आया, और सत्य के इनकारी बोले, "यह जादूगर है, बड़ा झूठा। क्या इसने सारे इलाहों को एक ही इलाह कर डाला? यह तो निश्चय ही बड़ी अजीब बात है!" और उनके सरदार यह कहते हुए चल दिए, "चलो, और अपने इलाहों पर जमे रहो। निश्चय ही यह कोई सोची-समझी बात है। हमने तो यह बात पिछले दीन में सुनी ही नहीं; यह तो बस एक गढ़न्त है। क्या हम सबमें से बस इसी पर याददिहानी उतारी गई?" नहीं—बल्कि वे मेरी याददिहानी के बारे में शक में हैं; नहीं, बल्कि उन्होंने अभी मेरी यातना चखी नहीं। (1–8)

या उनके पास तुम्हारे रब की दयालुता के ख़ज़ाने हैं, जो प्रभुत्वशाली, बड़ा देने वाला है? या आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उन दोनों के बीच है उसकी बादशाही उन्हीं की है? तो उन्हें चाहिए कि रस्सियाँ तानकर ऊपर चढ़ जाएँ! यह भी उन जत्थों में का एक लश्कर है, जो यहीं मात खाने वाला है। इनसे पहले नूह की क़ौम ने झुठलाया, और आद ने, और मेख़ों वाले फ़िरऔन ने, और समूद ने, और लूत की क़ौम ने, और घने बन के रहने वालों ने—वही थे वे जत्थे। उनमें से हर एक ने रसूलों को झुठलाया, तो मेरी यातना साबित होकर रही। और ये लोग बस एक ही कड़क की राह देख रहे हैं, जिसमें कोई मुहलत न होगी। और वे कहते हैं, "ऐ हमारे रब, हमारा हिस्सा हमें हिसाब के दिन से पहले ही जल्द दे दे!" जो कुछ वे कहते हैं उस पर सब्र करो, और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो, जो बड़ी शक्ति वाला था; निश्चय ही वह बहुत पलटने वाला था। (9–17)

हमने पहाड़ों को उसके साथ काम में लगा दिया था कि शाम को और सूरज निकलते अल्लाह की तसबीह करें, और परिन्दों को भी, इकट्ठे किए हुए: सब उसी की ओर पलटने वाले थे। और हमने उसकी बादशाही मज़बूत की, और उसे हिकमत और दो-टूक बात कहने की सलाहियत दी। और क्या तुम तक उन झगड़ने वालों की ख़बर पहुँची है, जब वे दीवार फाँदकर उसकी इबादत के कमरे में आ गए? जब वे दाऊद के पास पहुँचे, तो वह उनसे घबरा गया। वे बोले, "डरो नहीं। हम दो झगड़ने वाले हैं, हममें से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है; तो तुम हमारे बीच सत्य के साथ फ़ैसला कर दो, बेइनसाफ़ी न करना, और हमें सीधी राह दिखाओ। यह मेरा भाई है। इसके पास निन्नानवे दुंबियाँ हैं, और मेरे पास एक ही दुंबी है; और इसने कहा, 'इसे भी मेरे हवाले कर दे,' और बात में इसने मुझे दबा लिया।" उसने कहा, "इसने तेरी दुंबी को अपनी दुंबियों में मिलाने की माँग करके तुझ पर ज़ुल्म किया। और बहुत-से साझी एक-दूसरे पर ज़्यादती करते हैं—सिवाय उनके जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, और वे थोड़े ही हैं।" और दाऊद समझ गया कि हमने उसे आज़माया है; तो उसने अपने रब से क्षमा माँगी, झुककर गिर पड़ा, और उसकी ओर पलटा। तो हमने उसकी वह बात

क्षमा कर दी; और निश्चय ही उसके लिए हमारे यहाँ क़ुरबत है और लौटने की सुन्दर जगह। "ऐ दाऊद, हमने तुम्हें ज़मीन में जानशीन बनाया है, तो लोगों के बीच सत्य के साथ फ़ैसला करो, और इच्छा के पीछे न चलो, कि वह तुम्हें अल्लाह की राह से भटका दे। निश्चय ही जो लोग अल्लाह की राह से भटकते हैं उनके लिए कठोर यातना है इसलिए कि वे हिसाब के दिन को भूल गए।" (18–26)

और हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के बीच है बेकार नहीं पैदा किया। यह तो उन लोगों का गुमान है जो सत्य के इनकारी हैं—तो सत्य के इनकारियों के लिए आग के कारण बड़ी तबाही है! क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उनकी तरह कर देंगे जो ज़मीन में बिगाड़ फैलाते हैं? या क्या हम अल्लाह के प्रति सचेत रहने वालों को बदकारों की तरह कर देंगे? यह एक बरकत वाली किताब है जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि वे इसकी आयतों पर ग़ौर करें, और ताकि समझ-बूझ वाले नसीहत पकड़ें। (27–29)

और हमने दाऊद को सुलैमान दिया—क्या ही अच्छा बन्दा! निश्चय ही वह बहुत पलटने वाला था। जब शाम के समय उसके सामने तीन पाँवों पर खड़े होने वाले तेज़-रफ़्तार घोड़े पेश किए गए, तो उसने कहा, "मैंने अपने रब की याद के मुक़ाबले में इस माल की मुहब्बत को पसन्द कर लिया," यहाँ तक कि सूरज परदे में छिप गया। "उन्हें मेरे पास वापस लाओ!" फिर वह उनकी पिंडलियों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगा। और निश्चय ही हमने सुलैमान को आज़माया, और उसके तख़्त पर एक धड़ डाल दिया; फिर वह पलटा। उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मुझे क्षमा कर दे, और मुझे ऐसी बादशाही दे जो मेरे बाद किसी के लिए शोभा न दे। निश्चय ही तू ही बड़ा देने वाला है।" तो हमने हवा को उसके वश में कर दिया, जो उसके हुक्म से नर्म-नर्म चलती थी जिधर वह पहुँचना चाहता, और शैतानों को भी, हर तरह के मेमार और ग़ोताख़ोर, और दूसरों को भी जो ज़ंजीरों में जकड़े हुए थे। "यह हमारी देन है: तो एहसान करो या रोक रखो, कोई हिसाब नहीं।" और निश्चय ही उसके लिए हमारे यहाँ क़ुरबत है और लौटने की सुन्दर जगह। (30–40)

और हमारे बन्दे अय्यूब को याद करो, जब उसने अपने रब को पुकारा, "शैतान ने मुझे तकलीफ़ और यातना पहुँचाई है।" "अपना पाँव ज़मीन पर मारो! यह है नहाने का ठंडा पानी, और पीने का।" और हमने उसे उसके घर वाले दिए, और उनके साथ उतने ही और भी, अपनी ओर से दयालुता के तौर पर और समझ-बूझ वालों के लिए याददिहानी। "और अपने हाथ में तिनकों का एक मुट्ठा लो और उससे मार दो, और अपनी क़सम न तोड़ो।" निश्चय ही हमने उसे सब्र करने वाला पाया—क्या ही अच्छा बन्दा! निश्चय ही वह बहुत पलटने वाला था। (41–44)

और हमारे बन्दों इबराहीम, इसहाक़ और याक़ूब को याद करो, जो शक्ति और सूझ-बूझ वाले थे। हमने उन्हें एक ख़ालिस ख़ूबी के कारण चुन लिया: उस घर की याद। और निश्चय ही वे हमारे यहाँ चुने हुए, नेक लोगों में से हैं। और इसमाईल, अल-यसअ और ज़ुल-किफ़्ल को याद करो; और ये सब नेक लोगों में से थे। यह

एक याददिहानी है। और निश्चय ही अल्लाह के प्रति सचेत रहने वालों के लिए लौटने की सुन्दर जगह है: (45–49)

अदन के बाग़, जिनके दरवाज़े उनके लिए खुले होंगे। वहाँ वे तकिया लगाए बैठे होंगे, वहाँ बहुत-से फल और पीने की चीज़ें मँगवाएँगे, और उनके पास निगाहें नीची रखने वाली, हमउम्र साथिनें होंगी। "यह है वह जिसका हिसाब के दिन के लिए तुमसे वादा किया जाता है। निश्चय ही यह हमारी दी हुई रोज़ी है; जो कभी ख़त्म होने वाली नहीं।" (50–54)

यह तो हुआ। और निश्चय ही हर हद से गुज़र जाने वालों के लिए लौटने की बुरी जगह है: जहन्नम, जिसमें वे जलेंगे—तो क्या ही बुरा बिछौना है। यह है। तो वे इसे चखें: खौलता हुआ पानी और पीप, और इसी क़िस्म की दूसरी तरह-तरह की यातनाएँ। "यह एक भीड़ है जो तुम्हारे साथ घुसी चली आ रही है। इनके लिए कोई ख़ुश-आमदीद नहीं! ये आग में जलने वाले हैं।" वे कहेंगे, "नहीं—बल्कि तुम्हारे ही लिए कोई ख़ुश-आमदीद नहीं! तुम्हीं यह हमारे आगे लाए—तो क्या ही बुरी ठहरने की जगह है!" वे कहेंगे, "ऐ हमारे रब, जो यह हमारे आगे लाया, उसे आग में दोहरी यातना दे।" और वे कहेंगे, "क्या बात है, कि हमें वे लोग दिखाई नहीं देते जिन्हें हम बुरों में गिनते थे? क्या हमने यूँ ही उनका मज़ाक़ बना लिया था, या निगाहें उनसे चूक गई हैं?" निश्चय ही यह सच्ची बात है: आग वालों का आपस में झगड़ना। (55–64)

कह दो, "मैं तो बस एक सचेत करने वाला हूँ। और अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, जो अकेला है, सब पर ग़ालिब, आसमानों और ज़मीन का रब और उस सबका जो इन दोनों के बीच है, प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील।" कह दो, "यह एक बड़ी ख़बर है, और तुम इससे मुँह फेरे हुए हो। मुझे ऊँची मजलिस का कोई ज्ञान न था जब वे झगड़ रहे थे। मेरी ओर तो बस यही वह्य की जाती है कि मैं एक खुला सचेत करने वाला हूँ।" (65–70)

जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा, "मैं मिट्टी से एक इनसान पैदा करने वाला हूँ। तो जब मैं उसे ठीक-ठीक बना लूँ और उसमें अपनी रूह में से फूँक दूँ, तो तुम उसके आगे सजदे में गिर जाना।" तो फ़रिश्तों ने सजदा किया, सब-के-सब ने—सिवाय इबलीस के। उसने घमंड किया, और वह सत्य के इनकारियों में से था। उसने कहा, "ऐ इबलीस, तुझे किस चीज़ ने उसके आगे सजदा करने से रोका जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया? क्या तूने घमंड किया, या तू ऊँचे दर्जे वालों में से है?" वह बोला, "मैं उससे बेहतर हूँ: तूने मुझे आग से पैदा किया, और उसे मिट्टी से।" उसने कहा, "तो निकल जा यहाँ से, क्योंकि तू धुत्कारा हुआ है, और बदले के दिन तक तुझ पर मेरी लानत है।" वह बोला, "ऐ मेरे रब, तो मुझे उस दिन तक मुहलत दे जब वे उठाए जाएँगे।" उसने कहा, "तू उनमें से है जिन्हें मुहलत दी गई, उस दिन तक जिसका समय ठहरा हुआ है।" वह बोला, "तो तेरी इज़्ज़त की क़सम, मैं उन सबको ज़रूर भटकाऊँगा, सिवाय उनमें से तेरे चुने हुए बन्दों के।" उसने कहा, "तो सत्य यह है—और मैं सत्य ही कहता हूँ: कि मैं जहन्नम को तुझसे और उन सबसे जो उनमें से तेरे पीछे चलें ज़रूर भर दूँगा।" (71–85)

कह दो, “मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, और न मैं बनावट करने वालों में से हूँ। यह तो बस सारे संसारों के लिए एक याददिहानी है, और कुछ समय बाद तुम इसकी ख़बर ज़रूर जान लोगे।” (86–88)

# 39. गिरोह (अज़-ज़ुमर)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की ओर से है, जो प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। निश्चय ही हमने यह किताब तुम्हारी ओर सत्य के साथ उतारी है; तो अल्लाह की इबादत करो, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए। सुन लो, ख़ालिस दीन अल्लाह ही का हक़ है। और जिन लोगों ने उसके सिवा दूसरे संरक्षक बना रखे हैं, वे कहते हैं, "हम तो इनकी इबादत बस इसलिए करते हैं कि ये हमें अल्लाह के क़रीब कर दें"— अल्लाह उनके बीच उस बात का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे मतभेद करते हैं। निश्चय ही अल्लाह उसे राह नहीं दिखाता जो झूठा, नाशुक्रा हो। अगर अल्लाह किसी को बेटा बनाना चाहता, तो अपनी मख़लूक़ में से जिसे चाहता चुन लेता। वह पाक है! वही अल्लाह है, अकेला, सब पर ग़ालिब। उसने आसमानों और ज़मीन को सत्य के साथ पैदा किया। वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है; और उसने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है, हर एक एक ठहराई हुई अवधि के लिए चल रहा है। सुन लो, वही प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है। (1–5)

उसने तुम्हें एक ही जान से पैदा किया, फिर उसी से उसका जोड़ा बनाया, और उसने तुम्हारे लिए चौपायों में से आठ जोड़े उतारे। वह तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेट में पैदा करता है, एक बनावट के बाद दूसरी बनावट में, तीन अँधेरों के भीतर। यही अल्लाह है, तुम्हारा रब; बादशाही उसी की है। उसके सिवा कोई इलाह नहीं। तो तुम किधर फेरे जाते हो? अगर तुम इनकार करो, तो अल्लाह तुमसे निस्पृह है; फिर भी वह अपने बन्दों के लिए नाशुक्री पसन्द नहीं करता। और अगर तुम शुक्र करो, तो वह उसे तुम्हारे लिए पसन्द करता है। और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। फिर तुम्हें अपने रब ही की ओर लौटना है, और वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे। निश्चय ही वह सीनों तक की बात ख़ूब जानता है। (6–7)

और जब इनसान को कोई तकलीफ़ छूती है, तो वह अपने रब को उसी की ओर पलटते हुए पुकारता है; फिर जब वह उसे अपनी ओर से कोई नेमत दे देता है, तो वह उसे भूल जाता है जिसके लिए वह पहले पुकार रहा था, और अल्लाह के बराबर वाले ठहराने लगता है ताकि दूसरों को उसकी राह से भटकाए। कह दो, "अपने इनकार के साथ थोड़ी देर मज़े कर ले; निश्चय ही तू आग वालों में से है।" क्या वह जो रात की घड़ियों में सजदे और क़ियाम में फ़रमाँबरदारी से लगा रहता है, आख़िरत से डरता और अपने रब की दयालुता की आस रखता है उस जैसा हो सकता है जो ऐसा नहीं? कह दो, "क्या जानने वाले और न जानने वाले बराबर हो सकते हैं?" नसीहत तो बस समझ-बूझ वाले ही पकड़ते हैं। (8–9)

कह दो, "अल्लाह कहता है: ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो, अपने रब के प्रति सचेत रहो। जिन लोगों ने इस दुनिया में अच्छा किया उनके लिए भलाई है; और अल्लाह की ज़मीन कुशादा है। निश्चय ही सब्र करने वालों को उनका बदला बेहिसाब पूरा-पूरा दिया जाएगा।" कह दो, "मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की

इबादत करूँ, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह के आगे समर्पण करने वालों में सबसे पहला बनूँ।" कह दो, "अगर मैं अपने रब की अवज्ञा करूँ, तो मुझे एक बड़े दिन की यातना का डर है।" कह दो, "मैं अल्लाह ही की इबादत करता हूँ, अपने दीन को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए; तो तुम उसके सिवा जिसकी चाहो इबादत करो।" कह दो, "असल घाटे वाले तो वे हैं जिन्होंने क़ियामत के दिन अपने आप को और अपने घर वालों को घाटे में डाल दिया। सुन लो, यही खुला घाटा है। उनके लिए उनके ऊपर से भी आग की छतरियाँ होंगी और उनके नीचे से भी छतरियाँ।" इसी से अल्लाह अपने बन्दों को डराता है: "ऐ मेरे बन्दो, मेरे ही प्रति सचेत रहो।" (10–16)

और जो लोग झूठे इलाहों की इबादत से बचे रहे और अल्लाह की ओर पलट आए—उनके लिए शुभ-सूचना है। तो मेरे उन बन्दों को शुभ-सूचना दे दो, जो बात को ध्यान से सुनते हैं फिर उसकी सबसे अच्छी बात की पैरवी करते हैं। यही हैं जिन्हें अल्लाह ने राह दिखाई; और यही समझ-बूझ वाले हैं। तो क्या वह जिस पर यातना की बात पूरी हो चुकी? क्या तुम उसे छुड़ा सकते हो जो आग में है? मगर जो लोग अपने रब के प्रति सचेत रहे उनके लिए ऊँचे बालाख़ाने हैं, जिनके ऊपर और बालाख़ाने बने हुए हैं, जिनके नीचे नहरें बहती हैं: यह अल्लाह का वादा है—अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (17–20)

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह आसमान से पानी उतारता है फिर उसे ज़मीन में सोतों के रूप में पिरो देता है; फिर उसके द्वारा तरह-तरह के रंगों की खेती निकालता है; फिर वह सूख जाती है तो तुम उसे पीली पड़ी देखते हो; फिर वह उसे चूरा-चूरा कर देता है? निश्चय ही इसमें समझ-बूझ वालों के लिए याददिहानी है। (21)

तो क्या वह जिसका सीना अल्लाह ने अपने आगे समर्पण के लिए खोल दिया, तो वह अपने रब की ओर से एक रौशनी पर चलता है, उस जैसा हो सकता है जिसका दिल सख़्त है? तो तबाही है उनके लिए जिनके दिल अल्लाह की याद की ओर से सख़्त हो चुके हैं! वे खुली गुमराही में हैं। अल्लाह ने सबसे अच्छा कलाम उतारा है: एक ऐसी किताब जिसकी बातें आपस में मिलती-जुलती हैं, बार-बार दोहराई हुई। जो लोग अपने रब से डरते हैं उनके रोंगटे इससे खड़े हो जाते हैं; फिर उनकी खालें और उनके दिल नर्म होकर अल्लाह की याद की ओर झुक जाते हैं। यह अल्लाह का मार्गदर्शन है: इसके द्वारा वह जिसे चाहता है राह दिखाता है; और जिसे अल्लाह भटकने दे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं। (22–23)

तो क्या वह जो क़ियामत के दिन बदतरीन यातना से अपने चेहरे को ढाल बनाएगा उस जैसा हो सकता है जो अमन में है? और ज़ालिमों से कहा जाएगा, "चखो उसका मज़ा जो तुम कमाते थे।" इनसे पहले के लोगों ने भी झुठलाया, तो यातना उन पर वहाँ से आई जहाँ से उन्हें गुमान तक न था। तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई चखाई; और आख़िरत की यातना तो निश्चय ही कहीं बड़ी है, काश वे जानते। (24–26)

और हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर तरह की मिसाल बयान कर दी है, ताकि वे नसीहत पकड़ें: एक अरबी क़ुरआन, जिसमें कोई टेढ़ नहीं, ताकि वे अल्लाह के प्रति सचेत हो जाएँ। अल्लाह एक मिसाल बयान करता है: एक आदमी है जिसमें कई साझी शरीक हैं जो आपस में खींचा-तानी करते हैं, और एक आदमी

पूरा-का-पूरा एक ही मालिक का है। क्या दोनों का हाल एक-सा हो सकता है? सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है! मगर उनमें से अधिकतर जानते नहीं। (27–29)

निश्चय ही तुम्हें भी मरना है, और उन्हें भी मरना है; फिर क़ियामत के दिन तुम सब अपने रब के सामने झगड़ोगे। तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बोले और सत्य को झुठला दे जब वह उसके पास आए? क्या सत्य के इनकारियों का ठिकाना जहन्नम में नहीं? और जो सत्य लेकर आया, और जिसने उसकी पुष्टि की—यही अल्लाह के प्रति सचेत रहने वाले हैं। उनके लिए उनके रब के पास वह सब है जो वे चाहेंगे। यह अच्छा करने वालों का बदला है, ताकि अल्लाह उनके सबसे बुरे काम उनसे दूर कर दे और उन्हें उनका बदला उनके सबसे अच्छे कामों के अनुसार दे। (30–35)

क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं? और ये तुम्हें उनसे डराते हैं जो उसके सिवा हैं। और जिसे अल्लाह भटकने दे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं; और जिसे अल्लाह राह दिखाए, उसे कोई भटकाने वाला नहीं। क्या अल्लाह प्रभुत्वशाली, बदला लेने वाला नहीं? और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया, तो वे ज़रूर कहेंगे, "अल्लाह ने।" कह दो, "तो भला बताओ, जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो—अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे, तो क्या ये उसकी दी हुई तकलीफ़ दूर कर सकते हैं? या अगर वह मुझ पर दया करना चाहे, तो क्या ये उसकी दयालुता को रोक सकते हैं?" कह दो, "मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है; भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं।" कह दो, "ऐ मेरी क़ौम, तुम अपनी जगह काम किए जाओ; मैं भी काम कर रहा हूँ। जल्द ही तुम जान लोगे कि किस पर वह यातना आती है जो उसे रुसवा कर देगी, और किस पर हमेशा रहने वाली यातना उतरती है।" (36–40)

निश्चय ही हमने लोगों के लिए तुम पर यह किताब सत्य के साथ उतारी है। तो जो राह पर आया, अपने ही भले के लिए; और जो भटका, वह अपने ही नुक़सान के लिए भटकता है। और तुम उन पर कोई ज़िम्मेदार नहीं हो। अल्लाह जानों को उनकी मौत के समय क़ब्ज़ कर लेता है, और जिनकी मौत नहीं आई, उन्हें उनकी नींद में। फिर जिनके लिए उसने मौत का फ़ैसला कर दिया उन्हें रोक लेता है, और दूसरों को एक ठहराई हुई अवधि तक के लिए वापस भेज देता है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार करते हैं। या इन्होंने अल्लाह के सिवा दूसरे सिफ़ारिशी बना रखे हैं? कह दो, "क्या उस हाल में भी कि वे न किसी चीज़ का अधिकार रखते हों, और न कुछ समझते हों?" कह दो, "सारी सिफ़ारिश अल्लाह ही के अधिकार में है। आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है; फिर उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे।" (41–44)

और जब अकेले अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है, तो उन लोगों के दिल कुढ़ने लगते हैं जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते; और जब उसके सिवा दूसरों का ज़िक्र किया जाता है, तो वे एकाएक खिल उठते हैं। कह दो, "ऐ अल्लाह, आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, परोक्ष और प्रत्यक्ष के जानने वाले! तू ही अपने बन्दों के बीच उस बात का फ़ैसला करेगा जिसमें वे मतभेद करते रहे हैं।" और अगर ज़ुल्म करने वालों के

पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है, और उसके साथ उतना ही और भी, तो वे क़ियामत के दिन बदतरीन यातना से छूटने के लिए उसे फ़िदये में दे डालें। और अल्लाह की ओर से उनके सामने वह आ जाएगा जिसका उन्हें गुमान तक न था; और उनकी कमाई की बुराइयाँ उनके सामने आ जाएँगी, और वही चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसका वे मज़ाक़ उड़ाया करते थे। (45–48)

और जब इनसान को कोई तकलीफ़ छूती है, तो वह हमें पुकारता है; फिर जब हम उसे अपनी ओर से कोई नेमत दे देते हैं, तो कहता है, "यह तो मुझे बस ज्ञान के कारण दिया गया है।" नहीं—बल्कि यह एक आज़माइश है, मगर उनमें से अधिकतर जानते नहीं। यही बात उनसे पहले के लोग भी कह चुके हैं, मगर जो कुछ वे कमाते थे वह उनके कुछ काम न आया। तो उनकी कमाई की बुराइयाँ उन पर आ पड़ीं; और इन लोगों में से जो ज़ुल्म कर रहे हैं—उन पर भी उनकी कमाई की बुराइयाँ आ पड़ेंगी, और वे बच निकलने वाले नहीं। क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और नपी-तुली भी देता है? निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान रखते हैं। (49–52)

कह दो, "अल्लाह कहता है: ऐ मेरे बन्दो जिन्होंने अपने ऊपर ज़्यादती की है, अल्लाह की दयालुता से निराश न हो। निश्चय ही अल्लाह सारे गुनाह क्षमा कर देता है; निश्चय ही वही बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। और अपने रब की ओर पलट आओ, और उसके आगे समर्पित हो जाओ, इससे पहले कि तुम पर यातना आ जाए; फिर तुम्हारी मदद न की जाएगी। और उस सबसे अच्छी चीज़ की पैरवी करो जो तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर उतारी गई है, इससे पहले कि तुम पर अचानक यातना आ जाए, और तुम्हें ख़बर तक न हो, कहीं ऐसा न हो कि कोई जान कहने लगे, 'हाय अफ़सोस मुझ पर, उस कोताही पर जो मैंने अल्लाह के हक़ में की, और मैं तो मज़ाक़ उड़ाने वालों ही में रहा!' या कहने लगे, 'अगर अल्लाह मुझे राह दिखाता, तो मैं भी उसके प्रति सचेत रहने वालों में से होता!' या जब यातना देखे, तो कहने लगे, 'काश मुझे एक बार और लौटना मिल जाए, तो मैं अच्छा करने वालों में से हो जाऊँ!'" क्यों नहीं! मेरी आयतें तेरे पास आई थीं, मगर तूने उन्हें झुठलाया और घमंड किया, और तू सत्य के इनकारियों में से था। (53–59)

और क़ियामत के दिन तुम उन लोगों को देखोगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोला कि उनके चेहरे सियाह हैं। क्या घमंड करने वालों का ठिकाना जहन्नम में नहीं? और अल्लाह उन लोगों को जो उसके प्रति सचेत रहे उनकी कामयाबी की जगह पहुँचाकर बचा लेगा: न उन्हें कोई बुराई छुएगी, और न वे दुखी होंगे। अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है, और वही हर चीज़ का निगहबान है। आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ उसी के पास हैं; और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इनकार किया—वही घाटे में हैं। (60–63)

कह दो, "तो क्या तुम मुझे अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत का हुक्म देते हो, ऐ नादानो?" और तुम्हारी ओर, और उनकी ओर जो तुमसे पहले थे, यही वह्य की जा चुकी है: "अगर तुमने अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराया, तो तुम्हारा किया-धरा ज़रूर अकारथ जाएगा, और तुम ज़रूर घाटा उठाने वालों में से होगे।" नहीं—बल्कि अल्लाह ही की इबादत करो, और शुक्रगुज़ारों में से हो जाओ। और उन्होंने अल्लाह की वैसी

क़द्र न की जैसी उसकी क़द्र का हक़ है। क़ियामत के दिन सारी ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी, और आसमान उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे। वह पाक है! और उससे बहुत ऊँचा जो वे साझी ठहराते हैं। और सूर फूँका जाएगा, तो वे सब जो आसमानों में हैं और वे सब जो ज़मीन में हैं बेहोश होकर गिर पड़ेंगे, सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह चाहे। फिर उसमें दोबारा फूँका जाएगा, तो वे एकाएक खड़े होकर देखने लगेंगे। और ज़मीन अपने रब के नूर से चमक उठेगी; और किताब रख दी जाएगी; और नबी और गवाह हाज़िर किए जाएँगे; और उनके बीच सत्य के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा, और उन पर ज़ुल्म न होगा। और हर जान को उसके किए का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा; और जो कुछ वे करते हैं वह उसे ख़ूब जानता है। (64–70)

और सत्य के इनकारी गिरोह-गिरोह जहन्नम की ओर हाँके जाएँगे; यहाँ तक कि जब वे उसके पास पहुँचेंगे, तो उसके दरवाज़े खोल दिए जाएँगे, और उसके दारोग़ा उनसे कहेंगे, "क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे, जो तुम्हें तुम्हारे रब की आयतें सुनाते और तुम्हें तुम्हारे इस दिन के मिलने से सचेत करते थे?" वे कहेंगे, "क्यों नहीं"—मगर सत्य के इनकारियों पर यातना की बात पूरी होकर रही। कहा जाएगा, "जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, उसमें सदा-सदा रहने के लिए।" तो क्या ही बुरा ठिकाना है घमंड करने वालों का! (71–72)

और जो लोग अपने रब के प्रति सचेत रहे वे गिरोह-गिरोह जन्नत की ओर ले जाए जाएँगे; यहाँ तक कि जब वे उसके पास पहुँचेंगे, और उसके दरवाज़े खुले होंगे, तो उसके दारोग़ा उनसे कहेंगे, "तुम पर सलाम हो! तुम अच्छे रहे, तो इसमें दाख़िल हो जाओ, सदा-सदा रहने के लिए।" और वे कहेंगे, "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने हमसे अपना वादा सच्चा कर दिखाया और हमें इस ज़मीन का वारिस बनाया, कि हम जन्नत में जहाँ चाहें ठिकाना बनाएँ।" तो क्या ही अच्छा बदला है काम करने वालों का! और तुम फ़रिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्द घेरा डाले हुए हैं, अपने रब की हम्द के साथ तसबीह कर रहे हैं। और उनके बीच सत्य के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा, और कहा जाएगा, "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसारों का रब है।" (73–75)

# 40. क्षमा करने वाला (ग़ाफ़िर)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

हा मीम। (1)

इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की ओर से है, जो प्रभुत्वशाली, सब कुछ जानने वाला है, गुनाह क्षमा करने वाला और तौबा क़बूल करने वाला, कठोर सज़ा देने वाला, बड़े अनुग्रह वाला। उसके सिवा कोई इलाह नहीं; उसी की ओर लौटना है। अल्लाह की आयतों में बस वही लोग झगड़ते हैं जो सत्य के इनकारी हैं; तो ऐ नबी, शहरों में उनका चलना-फिरना तुम्हें धोखे में न डाले। इनसे पहले नूह की क़ौम ने झुठलाया, और उनके बाद के गिरोहों ने भी; और हर समुदाय ने अपने रसूल के बारे में ठानी कि उसे पकड़ ले, और वे बातिल के सहारे झगड़े ताकि उससे सत्य को पछाड़ दें—तो मैंने उन्हें पकड़ लिया, तो कैसी रही मेरी सज़ा! और इसी तरह तुम्हारे रब की बात सत्य के इनकारियों पर पूरी हो चुकी: कि वे आग वाले हैं। (2–6)

जो अर्श को उठाए हुए हैं और जो उसके गिर्द हैं वे अपने रब की हम्द के साथ तसबीह करते हैं और उस पर ईमान रखते हैं, और ईमान लाने वालों के लिए क्षमा माँगते हैं: “ऐ हमारे रब, तू अपनी दयालुता और ज्ञान से हर चीज़ पर छाया हुआ है; तो उन्हें क्षमा कर दे जो तौबा करें और तेरी राह पर चलें, और उन्हें दोज़ख़ की यातना से बचा ले। ऐ हमारे रब, उन्हें अदन के उन बाग़ों में दाख़िल कर जिनका तूने उनसे वादा किया है, और उनके बाप-दादा, उनके जोड़ों और उनकी औलाद में से जो नेक हों उन्हें भी: निश्चय ही तू ही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। और उन्हें बुराइयों से बचा; और जिसे तूने उस दिन बुराइयों से बचा लिया, उस पर तूने दया की—और यही बड़ी कामयाबी है।” जिन लोगों ने सत्य का इनकार किया उन्हें पुकारकर कहा जाएगा: “आज तुम्हें अपने आप से जितनी नफ़रत है अल्लाह की नफ़रत तुमसे उससे कहीं बढ़कर थी; जब तुम्हें ईमान की ओर बुलाया जाता था, तो तुम इनकार करते थे।” वे कहेंगे, “ऐ हमारे रब, तूने हमें दो बार मौत दी और दो बार ज़िन्दगी दी; अब हम अपने गुनाहों का इक़रार करते हैं। तो क्या निकलने की कोई राह है?” “यह इसलिए कि जब अकेले अल्लाह को पुकारा जाता था, तो तुम इनकार करते थे; और जब उसके साथ साझी ठहराए जाते, तो तुम मान लेते थे। तो अब फ़ैसला अल्लाह ही का है, जो सर्वोच्च, महान है।” (7–12)

वही है जो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से रोज़ी उतारता है; और नसीहत बस वही पकड़ता है जो उसकी ओर पलटता है। तो अल्लाह को पुकारो, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए, चाहे सत्य के इनकारियों को कितना ही नागवार हो। वह ऊँचे दर्जों वाला, अर्श का मालिक है, वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपने हुक्म की रूह डालता है, ताकि वह मिलने के दिन से सचेत करे—जिस दिन वे निकल खड़े होंगे, अल्लाह से उनकी कोई चीज़ छिपी न होगी। “आज बादशाही किसकी है?”

"अल्लाह की, जो अकेला है, सब पर ग़ालिब। आज हर जान को उसकी कमाई का बदला दिया जाएगा; आज कोई ज़ुल्म नहीं। निश्चय ही अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।" (13–17)

और उन्हें उस दिन से सचेत करो जो क़रीब ही आता जा रहा है, जब कलेजे घुटकर मुँह को आ रहे होंगे; ज़ालिमों का न कोई जिगरी दोस्त होगा, और न कोई ऐसा सिफ़ारिशी जिसकी बात मानी जाए। वह आँखों की ख़यानत को भी जानता है और उसे भी जो सीने छिपाते हैं। और अल्लाह सत्य के साथ फ़ैसला करता है, जबकि जिन्हें वे उसके सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज़ का भी फ़ैसला नहीं करते। निश्चय ही अल्लाह ही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है। (18–20)

क्या ये ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते कि इनसे पहले के लोगों का अंजाम कैसा हुआ? वे ताक़त में और ज़मीन में छोड़े हुए निशानों में इनसे कहीं बढ़े हुए थे, फिर भी अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों पर पकड़ लिया, और अल्लाह से उन्हें बचाने वाला कोई न था। यह इसलिए हुआ कि उनके रसूल उनके पास खुले प्रमाण लेकर आते रहे और उन्होंने इनकार किया; तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया। निश्चय ही वह शक्तिशाली, कठोर सज़ा देने वाला है। (21–22)

और हमने मूसा को अपनी निशानियों और एक खुले प्रमाण के साथ फ़िरऔन, हामान और क़ारून की ओर भेजा, मगर वे बोले, "जादूगर है, बड़ा झूठा!" फिर जब वह हमारी ओर से उनके पास सत्य लेकर आया, तो वे बोले, "जो लोग इसके साथ ईमान लाए हैं उनके बेटों को क़त्ल कर डालो, और उनकी औरतों को ज़िन्दा रहने दो।" मगर सत्य के इनकारियों की चाल अकारथ ही जाती है। और फ़िरऔन ने कहा, "मुझे छोड़ो कि मैं मूसा को क़त्ल कर दूँ, और वह अपने रब को पुकार देखे! मुझे डर है कि वह तुम्हारा दीन बदल डालेगा, या ज़मीन में बिगाड़ फैलाएगा।" और मूसा ने कहा, "मैंने हर उस घमंडी से जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता अपने रब और तुम्हारे रब की पनाह ली है।" (23–27)

और फ़िरऔन के घराने का एक ईमान वाला आदमी, जो अपना ईमान छिपाए हुए था, बोला, "क्या तुम एक आदमी को इस बात पर क़त्ल करोगे कि वह कहता है, 'मेरा रब अल्लाह है,' हालाँकि वह तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारे पास खुले प्रमाण लेकर आया है? और अगर वह झूठा है, तो उसका झूठ उसी पर पड़ेगा; और अगर वह सच्चा है, तो जिस चीज़ की वह तुम्हें धमकी देता है उसका कुछ हिस्सा तुम पर आकर रहेगा। निश्चय ही अल्लाह उसे राह नहीं दिखाता जो हद से गुज़रने वाला, बड़ा झूठा हो। ऐ मेरी क़ौम, आज बादशाही तुम्हारी है, और तुम ज़मीन में ग़ालिब हो—मगर अल्लाह की यातना के मुक़ाबले में कौन हमारी मदद करेगा अगर वह हम पर आ गई?" फ़िरऔन ने कहा, "मैं तुम्हें वही सुझाता हूँ जो मुझे ख़ुद सूझता है, और मैं तुम्हें बस सही राह ही दिखाता हूँ।" (28–29)

और जो ईमान लाया था वह बोला, "ऐ मेरी क़ौम, मुझे तुम पर अगले गिरोहों के दिन जैसी चीज़ का डर है—नूह की क़ौम, आद, समूद और उनके बाद वालों के-से हाल का। और अल्लाह अपने बन्दों पर कोई ज़ुल्म नहीं चाहता। और ऐ मेरी क़ौम, मुझे तुम पर चीख़-पुकार के दिन का डर है, जिस दिन तुम पीठ फेरकर

भागोगे, और अल्लाह से तुम्हें बचाने वाला कोई न होगा। और जिसे अल्लाह भटकने दे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं। और इससे पहले यूसुफ़ तुम्हारे पास खुले प्रमाण लेकर आया था, मगर जो कुछ वह तुम्हारे पास लाया था उसमें तुम बराबर शक ही करते रहे, यहाँ तक कि जब वह मर गया, तो तुमने कहा, 'अब अल्लाह इसके बाद हरगिज़ कोई रसूल न भेजेगा।' इसी तरह अल्लाह उसे भटकने देता है जो हद से गुज़रने वाला, शक में पड़ा रहने वाला हो— (30–34)

वे जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं बिना किसी प्रमाण के जो उनके पास आया हो। यह अल्लाह के नज़दीक और ईमान वालों के नज़दीक बहुत नफ़रत की बात है। इसी तरह अल्लाह हर घमंडी, सरकश के दिल पर मुहर लगा देता है।" और फ़िरऔन ने कहा, "ऐ हामान, मेरे लिए एक ऊँचा बुर्ज बना, ताकि मैं उन राहों तक पहुँच जाऊँ—आसमानों की राहों तक—और मूसा के इलाह को झाँककर देखूँ; और मैं तो उसे झूठा ही समझता हूँ।" और इसी तरह फ़िरऔन के लिए उसका बुरा काम लुभावना बना दिया गया, और वह राह से रोक दिया गया; और फ़िरऔन की चाल तबाही ही में ख़त्म हुई। (35–37)

और जो ईमान लाया था वह बोला, "ऐ मेरी क़ौम, मेरे पीछे चलो: मैं तुम्हें सही राह दिखाऊँगा। ऐ मेरी क़ौम, यह दुनिया की ज़िन्दगी तो बस थोड़े दिनों का सामान है; और ठहरने का घर तो आख़िरत ही है। जो कोई बुरा काम करेगा उसे बस उसी के बराबर बदला मिलेगा; और जो कोई अच्छा काम करेगा, मर्द हो या औरत, और वह ईमान वाला हो—तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, जहाँ उन्हें बेहिसाब रोज़ी दी जाएगी। और ऐ मेरी क़ौम, यह क्या बात है कि मैं तुम्हें छुटकारे की ओर बुलाता हूँ और तुम मुझे आग की ओर बुलाते हो? तुम मुझे बुलाते हो कि मैं अल्लाह का इनकार करूँ और उसके साथ उसे साझी ठहराऊँ जिसका मुझे कोई ज्ञान नहीं, और मैं तुम्हें उसकी ओर बुलाता हूँ जो प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है। इसमें कोई शक नहीं कि जिसकी ओर तुम मुझे बुलाते हो उसे न दुनिया में पुकारे जाने का कोई हक़ है न आख़िरत में; और हमारा लौटना अल्लाह ही की ओर है, और हद से गुज़रने वाले ही आग वाले हैं। तो जल्द ही तुम याद करोगे जो कुछ मैं तुमसे कह रहा हूँ; और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ। निश्चय ही अल्लाह अपने बन्दों को देख रहा है।" तो अल्लाह ने उसे उन बुरी चालों से बचा लिया जो वे चल रहे थे, और फ़िरऔन के लोगों को बुरी यातना ने आ घेरा: (38–45)

आग—जिसके सामने वे सुबह और शाम पेश किए जाते हैं; और जिस दिन वह घड़ी आ खड़ी होगी तो कहा जाएगा, "फ़िरऔन के लोगों को सबसे सख़्त यातना में दाख़िल कर दो।" और जब वे आग में आपस में झगड़ेंगे, तो कमज़ोर लोग उनसे कहेंगे जो घमंड करते थे, "हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे; तो क्या अब तुम आग का कुछ हिस्सा हमसे हटा सकते हो?" घमंड करने वाले कहेंगे, "हम सब इसी में हैं; अल्लाह अपने बन्दों के बीच फ़ैसला कर चुका।" और जो आग में होंगे वे जहन्नम के दारोग़ाओं से कहेंगे, "अपने रब से दुआ करो कि हमसे एक दिन ही की यातना हलकी कर दे।" वे कहेंगे, "क्या तुम्हारे रसूल तुम्हारे पास खुले प्रमाण लेकर न आते रहे थे?" वे कहेंगे, "क्यों नहीं।" वे कहेंगे, "तो तुम ही पुकारो—और सत्य के इनकारियों की पुकार अकारथ ही जाने वाली है।" (46–50)

निश्चय ही हम अपने रसूलों की और उनकी जो ईमान लाए मदद करके रहते हैं, दुनिया की ज़िन्दगी में भी और उस दिन भी जब गवाह खड़े होंगे—जिस दिन ज़ालिमों को उनका उज़्र कुछ फ़ायदा न देगा: और उन्हीं के लिए लानत है, और उन्हीं के लिए बुरा घर। और हमने मूसा को मार्गदर्शन दिया, और इसराईल की सन्तान को किताब का वारिस बनाया, जो समझ-बूझ वालों के लिए मार्गदर्शन और याददिहानी थी। तो सब्र करो: निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है। और अपने क़ुसूर की क्षमा माँगो, और शाम और सुबह अपने रब की हम्द के साथ तसबीह करो। जो लोग अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं बिना किसी प्रमाण के जो उनके पास आया हो, उनके सीनों में बस बड़ाई की एक हवस है जिस तक वे कभी पहुँचने वाले नहीं। तो अल्लाह की पनाह माँगो: निश्चय ही वही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है। (51–56)

निश्चय ही आसमानों और ज़मीन का पैदा करना इनसानों के पैदा करने से कहीं बड़ा काम है, मगर अधिकतर लोग जानते नहीं। और अंधा और देखने वाला बराबर नहीं, और न वे जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए और बुरा करने वाला। तुम कितना कम सोच-विचार करते हो! निश्चय ही वह घड़ी आने वाली है; उसमें कोई सन्देह नहीं; मगर अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते। और तुम्हारे रब ने कहा है, "मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी सुनूँगा। निश्चय ही जो लोग घमंड के मारे मेरी इबादत से मुँह मोड़ते हैं वे ज़लील होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे।" (57–60)

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो, और दिन को दिखाने वाला बनाया। निश्चय ही अल्लाह लोगों पर बड़ा अनुग्रह करने वाला है, मगर अधिकतर लोग शुक्र अदा नहीं करते। यही अल्लाह है, तुम्हारा रब, हर चीज़ का पैदा करने वाला; उसके सिवा कोई इलाह नहीं। तो तुम किधर फेरे जाते हो? इसी तरह वे लोग फेरे जाते रहे जो अल्लाह की आयतों का इनकार करते थे। अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को ठहरने की जगह और आसमान को छत बनाया, जिसने तुम्हारी सूरतें बनाईं तो तुम्हारी सूरतें अच्छी बनाईं, और तुम्हें अच्छी चीज़ों की रोज़ी दी। यही अल्लाह है, तुम्हारा रब: तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह, सारे संसारों का रब। वही ज़िन्दा है; उसके सिवा कोई इलाह नहीं। तो उसी को पुकारो, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए। सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसारों का रब है। (61–65)

कह दो, "मुझे इससे रोका गया है कि मैं उनकी इबादत करूँ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, जबकि मेरे रब की ओर से मेरे पास खुले प्रमाण आ चुके हैं, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं सारे संसारों के रब के आगे समर्पित हो जाऊँ।" वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर एक बूँद से, फिर एक चिमटने वाले रूप से; फिर वह तुम्हें बच्चा बनाकर निकालता है; फिर तुम्हें जीने देता है ताकि तुम अपनी पूरी जवानी को पहुँचो, फिर ताकि बूढ़े हो जाओ—और तुममें से कोई इससे पहले ही उठा लिया जाता है—और ताकि तुम एक ठहराई हुई अवधि तक पहुँचो, और ताकि तुम बुद्धि से काम लो। वही है जो ज़िन्दगी देता और मौत देता है; फिर जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है, तो उससे बस यही कहता है, "हो जा," और वह हो जाता है। (66–68)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं—वे किधर फेरे जाते हैं? जिन लोगों ने इस किताब को और उस चीज़ को झुठलाया जिसके साथ हमने अपने रसूल भेजे थे वे जल्द ही जान लेंगे, जब तौक़ उनकी गर्दनों में होंगे, और ज़ंजीरें भी, वे खौलते पानी में घसीटे जाएँगे, फिर आग में झोंक दिए जाएँगे। फिर उनसे पूछा जाएगा, "कहाँ हैं वे जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा साझी ठहराते थे?" वे कहेंगे, "वे हमसे खो गए; नहीं—बल्कि हम इससे पहले किसी चीज़ को पुकारते ही न थे।" इसी तरह अल्लाह सत्य के इनकारियों को भटकने देता है। "यह इसलिए कि तुम ज़मीन में नाहक़ इतराते थे, और इसलिए कि तुम अकड़ते थे। जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, उसमें सदैव रहने के लिए। तो क्या ही बुरा ठिकाना है घमंड करने वालों का।" (69–76)

तो सब्र करो: निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है। फिर चाहे हम तुम्हें उसका कुछ हिस्सा दिखा दें जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं, या उससे पहले तुम्हें अपने पास बुला लें, उन्हें लौटाया तो हमारी ही ओर जाएगा। और हमने तुमसे पहले भी रसूल भेजे; उनमें कुछ वे हैं जिनका हाल हमने तुम्हें सुनाया, और कुछ वे हैं जिनका हाल हमने तुम्हें नहीं सुनाया। और किसी रसूल के बस में न था कि अल्लाह की इजाज़त के बिना कोई निशानी ले आए। फिर जब अल्लाह का हुक्म आ जाता है, तो सत्य के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है, और उस समय बातिल पर चलने वाले घाटे में रह जाते हैं। (77–78)

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए, ताकि तुम उनमें से कुछ पर सवार हो और कुछ को खाओ; और उनमें तुम्हारे लिए और भी फ़ायदे हैं, और ताकि तुम उन पर चढ़कर अपने दिलों की किसी ज़रूरत तक पहुँचो; और उन पर और नौकाओं पर तुम सवार किए जाते हो। और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है: तो तुम अल्लाह की किन-किन निशानियों का इनकार करोगे? (79–81)

क्या ये ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते कि इनसे पहले के लोगों का अंजाम कैसा हुआ? वे इनसे गिनती में ज़्यादा थे, और ताक़त में और ज़मीन में छोड़े हुए निशानों में इनसे बढ़े हुए; फिर भी जो कुछ वे कमाते थे वह उनके कुछ काम न आया। फिर जब उनके रसूल उनके पास खुले प्रमाण लेकर आए, तो वे उसी ज्ञान पर इतराते रहे जो उनके पास था; और वही चीज़ उन्हें घेर बैठी जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे। फिर जब उन्होंने हमारी यातना देखी, तो बोले, "हम अकेले अल्लाह पर ईमान लाए, और उन सबका इनकार करते हैं जिन्हें हम उसके साथ साझी ठहराते थे।" मगर हमारी यातना देख लेने के बाद उनका ईमान लाना उन्हें कुछ फ़ायदा न दे सकता था—यही अल्लाह की रीत है, जो उसके बन्दों में हमेशा से चली आई है—और उस समय सत्य के इनकारी घाटे में रह गए। (82–85)

# 41. खोलकर बयान की गई (फ़ुस्सिलत)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

हा मीम। (1)

यह उसका उतारा हुआ है जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है: एक ऐसी किताब जिसकी आयतें खोल-खोलकर बयान की गई हैं, अरबी क़ुरआन के रूप में उन लोगों के लिए जो जानते हैं, शुभ-सूचना देने वाली और सचेत करने वाली। फिर भी उनमें से अधिकतर ने मुँह मोड़ लिया, तो वे सुनते ही नहीं। और वे कहते हैं, "जिस चीज़ की ओर तुम हमें बुलाते हो उससे हमारे दिल ग़िलाफ़ों में हैं, और हमारे कानों में बोझ है, और हमारे और तुम्हारे बीच एक परदा है। तो तुम अपना काम किए जाओ; हम भी अपना काम कर रहे हैं।" कह दो, "मैं तो बस तुम्हारे ही जैसा एक इनसान हूँ। मेरी ओर वह्य की जाती है कि तुम्हारा इलाह बस एक ही इलाह है; तो सीधे उसी की ओर रुख़ रखो और उससे क्षमा माँगो।" और तबाही है उनके लिए जो उसके साथ साझी ठहराते हैं, जो ज़कात नहीं देते, और जो आख़िरत के इनकारी हैं। निश्चय ही जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उनके लिए ऐसा बदला है जो कभी ख़त्म न होगा। (2–8)

कह दो, "क्या तुम सचमुच उसका इनकार करते हो जिसने ज़मीन को दो युगों में पैदा किया, और उसके बराबर वाले ठहराते हो? वही सारे संसारों का रब है।" और उसने उसमें उसके ऊपर से जमे हुए पहाड़ रख दिए, और उसमें बरकत रखी, और उसमें उसकी रोज़ी का सामान चार युगों में ठीक अन्दाज़े से ठहरा दिया, सब माँगने वालों के लिए बराबर। फिर उसने आसमान की ओर रुख़ किया जबकि वह अभी धुआँ था, और उससे और ज़मीन से कहा, "दोनों आ जाओ, ख़ुशी से या मजबूरी से।" दोनों ने कहा, "हम ख़ुशी से आ गए।" फिर उसने उन्हें दो युगों में सात आसमान बना दिया, और हर आसमान में उसका काम वह्य कर दिया। और हमने सबसे क़रीब के आसमान को चिराग़ों से सजाया, और उसे सुरक्षित कर दिया। यह उसका ठहराया हुआ है जो प्रभुत्वशाली, सब कुछ जानने वाला है। (9–12)

फिर अगर वे मुँह मोड़ें, तो कह दो, "मैं तुम्हें एक ऐसी कड़क से सचेत करता हूँ जैसी आद और समूद की कड़क थी।" जब रसूल उनके पास उनके आगे से और उनके पीछे से आए, कि "अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो," तो वे बोले, "अगर हमारा रब चाहता, तो फ़रिश्ते उतार देता; तो जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गए हो हम उसका इनकार करते हैं।" रहे आद, तो उन्होंने ज़मीन में नाहक़ घमंड किया, और बोले, "ताक़त में हमसे बढ़कर कौन है?" क्या उन्होंने न देखा कि अल्लाह, जिसने उन्हें पैदा किया, ताक़त में उनसे कहीं बढ़कर है? और वे हमारी आयतों का इनकार ही करते रहे। तो हमने नहूसत के दिनों में उन पर एक सनसनाती आँधी भेजी, ताकि उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई की यातना चखाएँ; और आख़िरत की यातना तो इससे भी ज़्यादा रुसवा करने वाली है, और उनकी मदद न की जाएगी। और रहे समूद, तो हमने उन्हें राह दिखाई, मगर उन्होंने मार्गदर्शन के मुक़ाबले में अंधेपन को पसन्द किया; तो उनकी कमाई के

बदले उन्हें अपमान की यातना की कड़क ने आ पकड़ा। और हमने उन्हें बचा लिया जो ईमान लाए और अल्लाह के प्रति सचेत रहते थे। (13–18)

और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन आग की ओर इकट्ठे किए जाएँगे, तो वे क़तारों में रोके जाएँगे, यहाँ तक कि जब वे उसके पास पहुँचेंगे, तो उनके कान, उनकी आँखें और उनकी खालें उनके ख़िलाफ़ उन कामों की गवाही देंगी जो वे करते थे। और वे अपनी खालों से कहेंगे, "तुमने हमारे ख़िलाफ़ गवाही क्यों दी?" वे कहेंगी, "हमें उसी अल्लाह ने बोलने की शक्ति दी, जिसने हर चीज़ को बोलने की शक्ति दी है। उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया, और उसी की ओर तुम लौटाए जा रहे हो। और तुम इस ख़याल से छिपते न थे कि तुम्हारे कान, तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देंगी; बल्कि तुमने यह समझ रखा था कि अल्लाह तुम्हारे बहुत-से कामों को जानता ही नहीं। और तुम्हारा यही गुमान, जो तुमने अपने रब के बारे में किया, तुम्हें ले डूबा, और तुम घाटे में रहने वालों में से हो गए।" तो अगर वे सब्र करें, तब भी आग ही उनका ठिकाना है; और अगर वे मनाना चाहें, तो वे उनमें से न होंगे जिन्हें मनाने दिया जाए। (19–24)

और हमने उन पर ऐसे साथी लगा दिए जिन्होंने उनके आगे और उनके पीछे की हर चीज़ उनके लिए लुभावनी बना दी; और उन पर भी वही बात पूरी हो गई, जिन्नों और इनसानों के उन समुदायों के साथ जो उनसे पहले गुज़र चुके। निश्चय ही वे घाटे में रहने वाले थे। और सत्य के इनकारी कहते हैं, "इस क़ुरआन को न सुनो; और इसमें शोर-ग़ुल मचा दो, ताकि तुम ग़ालिब रहो।" तो हम सत्य के इनकारियों को ज़रूर कठोर यातना चखाएँगे, और उन्हें उनके सबसे बुरे कामों का बदला ज़रूर देंगे। यह है अल्लाह के दुश्मनों का बदला: आग, जिसमें उनके लिए हमेशगी का घर है—इसका बदला कि वे हमारी आयतों का इनकार करते थे। और सत्य के इनकारी कहेंगे, "ऐ हमारे रब, हमें जिन्नों और इनसानों में से वे दिखा दे जिन्होंने हमें भटकाया था; हम उन्हें अपने पाँवों तले रौंद डालें, ताकि वे सबसे नीचे वालों में से हों।" निश्चय ही जिन लोगों ने कहा, "हमारा रब अल्लाह है," फिर उस पर जमे रहे—उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं: "न डरो, और न दुखी हो, और उस जन्नत की ख़ुशी मनाओ जिसका तुमसे वादा किया जाता था। हम दुनिया की ज़िन्दगी में भी तुम्हारे दोस्त हैं और आख़िरत में भी; और वहाँ तुम्हारे लिए वह सब है जिसे तुम्हारा जी चाहे, और वहाँ तुम्हारे लिए वह सब है जो तुम माँगो, उसकी ओर से मेहमानी के तौर पर जो बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है।" (25–32)

और उससे अच्छी बात किसकी होगी जो अल्लाह की ओर बुलाए, अच्छा काम करे, और कहे, "मैं उन लोगों में से हूँ जो अल्लाह के आगे समर्पित हैं"? और भलाई और बुराई बराबर नहीं। बुराई को उस ढंग से दूर करो जो सबसे अच्छा हो, तो वह जिसके और तुम्हारे बीच दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा मानो वह कोई जिगरी दोस्त हो। और यह बात बस उन्हीं को मिलती है जो सब्र करते हैं, और यह बस उसी को मिलती है जो बड़े नसीब वाला हो। और अगर शैतान की ओर से कोई उकसाहट तुम्हें उकसाए, तो अल्लाह की पनाह माँगो: निश्चय ही वही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। (33–36)

और उसकी निशानियों में से हैं रात और दिन, और सूरज और चाँद। न सूरज को सजदा करो, न चाँद को, बल्कि उस अल्लाह को सजदा करो जिसने इन्हें पैदा किया, अगर तुम उसी की इबादत करते हो। फिर अगर वे घमंड करें—तो जो तुम्हारे रब के पास हैं वे रात और दिन उसकी तसबीह करते हैं, और कभी नहीं थकते। और उसकी निशानियों में से यह भी है: कि तुम ज़मीन को दबी-पड़ी देखते हो, फिर जब हम उस पर पानी उतारते हैं, तो वह लहलहा उठती है और उभरती है। निश्चय ही जिसने उसे ज़िन्दा किया वही मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है: निश्चय ही वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। (37–39)

निश्चय ही जो लोग हमारी आयतों में टेढ़ निकालते हैं वे हमसे छिपे नहीं हैं। तो क्या वह जो आग में डाला जाए बेहतर है, या वह जो क़ियामत के दिन अमन के साथ आए? जो चाहो करो: निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो वह उसे देख रहा है। निश्चय ही जिन लोगों ने याददिहानी का इनकार किया जब वह उनके पास आई—हालाँकि यह एक ज़बरदस्त किताब है: बातिल न इसके आगे से इस पर आ सकता है न इसके पीछे से; यह उसका उतारा हुआ है जो हिकमत वाला, हर प्रशंसा के योग्य है। ऐ नबी, तुमसे बस वही कहा जा रहा है जो तुमसे पहले के रसूलों से कहा जा चुका है। निश्चय ही तुम्हारा रब क्षमा वाला भी है, और दुखद सज़ा देने वाला भी। और अगर हम इसे अजमी क़ुरआन बनाते, तो वे कहते, "इसकी आयतें खोल-खोलकर बयान क्यों न की गईं? क्या—किताब अजमी और रसूल अरबी?" कह दो, "यह ईमान लाने वालों के लिए मार्गदर्शन और शिफ़ा है; और जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में बोझ है, और यह उनके लिए अंधापन है। ये ऐसे हैं मानो इन्हें किसी दूर की जगह से पुकारा जा रहा हो।" और हमने मूसा को किताब दी, तो उसमें मतभेद किया गया; और अगर तुम्हारे रब की ओर से एक बात पहले न हो चुकी होती, तो उनके बीच फ़ैसला कर दिया गया होता। और वे इसके बारे में गहरे शक में हैं। (40–45)

जो कोई अच्छा काम करता है अपने ही लिए करता है, और जो कोई बुराई करता है उसका वबाल उसी पर है; और तुम्हारा रब अपने बन्दों पर कभी ज़ुल्म करने वाला नहीं। उस घड़ी का ज्ञान उसी की ओर लौटाया जाता है। और कोई फल अपने ग़िलाफ़ से नहीं निकलता, और न कोई मादा गर्भवती होती है न बच्चा जनती है, मगर उसके ज्ञान से। और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा, "कहाँ हैं मेरे साझी?" तो वे कहेंगे, "हम तुझसे अर्ज़ कर चुके: हममें से कोई इसकी गवाही देने वाला नहीं।" और जिन्हें वे इससे पहले पुकारा करते थे वे उनसे खो जाएँगे, और वे समझ लेंगे कि उनके लिए बच निकलने की कोई जगह नहीं। (46–48)

इनसान भलाई की दुआ माँगते नहीं थकता; और अगर उसे बुराई छू जाए, तो निराश होकर आस तोड़ बैठता है। और अगर किसी तकलीफ़ के बाद, जो उसे छू गई हो, हम उसे अपनी ओर से दयालुता का मज़ा चखा दें, तो वह ज़रूर कहेगा, "यह तो मेरा हक़ है; और मैं नहीं समझता कि वह घड़ी कभी आएगी, और अगर मैं अपने रब की ओर लौटाया भी गया, तो उसके पास मेरे लिए ज़रूर सबसे अच्छा बदला होगा।" तो हम सत्य के इनकारियों को ज़रूर बता देंगे जो कुछ उन्होंने किया, और उन्हें ज़रूर सख़्त यातना चखाएँगे। और जब हम इनसान पर नेमत करते हैं, तो वह मुँह फेर लेता और पहलू बचाकर दूर हो जाता है; और जब उसे बुराई छूती है, तो लम्बी-चौड़ी दुआएँ करने लगता है। कह दो, "भला सोचो तो: अगर यह अल्लाह की ओर से हुआ

फिर तुमने इसका इनकार किया, तो उससे बढ़कर भटका हुआ कौन होगा जो दूर की मुख़ालफ़त में पड़ा हो?" हम जल्द ही उन्हें अपनी निशानियाँ क्षितिजों में भी दिखाएँगे और ख़ुद उनके अपने भीतर भी, यहाँ तक कि उन पर खुल जाएगा कि यही सत्य है। क्या यह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब हर चीज़ पर गवाह है? सुन लो, वे अपने रब से मिलने के बारे में शक में हैं। सुन लो, वह हर चीज़ को घेरे हुए है। (49–54)

# 42. मशविरा (अश-शूरा)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

हा मीम। ऐन सीन क़ाफ़। (1–2)

ऐ नबी, इसी तरह अल्लाह, जो प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है, तुम्हारी ओर वह्य करता है, जैसे तुमसे पहले के लोगों की ओर करता रहा है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है; और वही सर्वोच्च, महान है। क़रीब है कि आसमान अपने ऊपर से फट पड़ें, और फ़रिश्ते अपने रब की हम्द के साथ तसबीह करते हैं और ज़मीन वालों के लिए क्षमा माँगते हैं। सुन लो, अल्लाह ही बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। और जिन लोगों ने उसके सिवा दूसरे संरक्षक बना रखे हैं, अल्लाह उन पर निगहबान है; और तुम उन पर कोई ज़िम्मेदार नहीं हो। (3–6)

और इसी तरह हमने तुम्हारी ओर एक अरबी क़ुरआन वह्य किया है, ताकि तुम बस्तियों की माँ को और उसके आस-पास के सब लोगों को सचेत करो, और इकट्ठे किए जाने के दिन से सचेत करो, जिसमें कोई सन्देह नहीं: एक गिरोह जन्नत में होगा, और एक गिरोह दहकती आग में। और अगर अल्लाह चाहता, तो उन्हें एक ही समुदाय बना देता; मगर वह जिसे चाहता है अपनी दयालुता में दाख़िल करता है, और ज़ालिमों का न कोई संरक्षक है न मददगार। या उन्होंने उसके सिवा दूसरे संरक्षक बना रखे हैं? तो संरक्षक तो अल्लाह ही है; वही मुर्दों को ज़िन्दा करता है, और वही हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। और जिस बात में भी तुम मतभेद करते हो, उसका फ़ैसला अल्लाह ही के हवाले है। “यही अल्लाह है, मेरा रब; उसी पर मैंने भरोसा किया, और उसी की ओर मैं पलटता हूँ। वह आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है: उसने तुम्हारे लिए तुम्हीं में से जोड़े बनाए, और चौपायों में भी जोड़े, इस तरह वह तुम्हें फैलाता है। उस जैसी कोई चीज़ नहीं; और वही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है। आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ उसी के पास हैं; वह जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और नपी-तुली भी देता है। निश्चय ही वह हर चीज़ का ज्ञान रखता है।” (7–12)

उसने तुम्हारे लिए दीन का वही तरीक़ा ठहराया है जिसकी ताकीद उसने नूह को की थी, और जो हमने तुम्हारी ओर वह्य किया है, और जिसकी ताकीद हमने इबराहीम, मूसा और ईसा को की थी: “इस दीन को क़ायम रखो, और इसमें अलग-अलग न हो जाओ।” अल्लाह के साथ साझी ठहराने वालों पर वह बात बहुत भारी है जिसकी ओर तुम उन्हें बुलाते हो। अल्लाह जिसे चाहता है अपने लिए चुन लेता है, और अपनी ओर उसी को राह दिखाता है जो उसकी ओर पलटे। और वे अलग-अलग नहीं हुए मगर इसके बाद कि उनके पास ज्ञान आ चुका था, आपस की ज़िद के कारण। और अगर तुम्हारे रब की ओर से एक बात पहले न हो चुकी होती, जो उन्हें एक ठहराई हुई अवधि तक मुहलत देती है, तो उनके बीच फ़ैसला कर दिया गया होता। और जो लोग उनके बाद किताब के वारिस बनाए गए वे उसके बारे में गहरे शक में हैं। तो तुम इसी की ओर

बुलाओ, और जमे रहो जैसा तुम्हें हुक्म दिया गया है। और उनकी इच्छाओं पर न चलो, बल्कि कह दो, "अल्लाह ने जो किताब भी उतारी है मैं उस पर ईमान लाया, और मुझे हुक्म दिया गया है कि तुम्हारे बीच न्याय करूँ। अल्लाह ही हमारा भी रब है और तुम्हारा भी रब। हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म; हमारे और तुम्हारे बीच कोई झगड़ा नहीं। अल्लाह हम सबको इकट्ठा करेगा, और उसी की ओर लौटना है।" और जो लोग अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, इसके बाद कि उसे मान लिया गया, उनकी दलील उनके रब के नज़दीक बातिल है; और उन पर ग़ज़ब है, और उनके लिए कठोर यातना है। अल्लाह ही है जिसने सत्य के साथ यह किताब उतारी, और तराज़ू भी। और तुम्हें क्या ख़बर? शायद वह घड़ी क़रीब ही हो। जो लोग उस पर ईमान नहीं रखते वे उसके लिए जल्दी मचाते हैं, और जो ईमान रखते हैं वे उससे डरते हैं और जानते हैं कि वह सत्य है। सुन लो, जो लोग उस घड़ी के बारे में झगड़ते हैं वे भटककर बहुत दूर जा पड़े हैं। (13–18)

अल्लाह अपने बन्दों पर बड़ा मेहरबान है; वह जिसे चाहता है रोज़ी देता है; और वही शक्तिशाली, प्रभुत्वशाली है। जो कोई आख़िरत की खेती चाहता है, हम उसके लिए उसकी खेती में बढ़ोतरी करते हैं; और जो कोई दुनिया की खेती चाहता है, हम उसे उसमें से कुछ दे देते हैं, मगर आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। या उनके कुछ ऐसे साझी हैं जिन्होंने उनके लिए दीन का वह तरीक़ा ठहरा दिया जिसकी अल्लाह ने इजाज़त नहीं दी? और अगर फ़ैसले की बात तय न हो चुकी होती, तो उनके बीच फ़ैसला कर दिया गया होता। और निश्चय ही ज़ालिमों के लिए दुखद यातना है। तुम ज़ालिमों को देखोगे कि अपनी कमाई के कारण डर रहे हैं, और वह उन पर पड़कर रहेगी। मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए वे जन्नतों के बाग़ीचों में होंगे; उनके लिए उनके रब के पास वह सब होगा जो वे चाहेंगे। यही बड़ा अनुग्रह है। यह है वह जिसकी शुभ-सूचना अल्लाह अपने उन बन्दों को देता है जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए। कह दो, "मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, सिवाय अपने रिश्तेदारों के लिए मुहब्बत के।" और जो कोई कोई नेकी कमाएगा, हम उसके लिए उसमें ख़ूबी बढ़ा देंगे। निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, गुणग्राहक है। (19–23)

या वे कहते हैं, "इसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है"? तो अगर अल्लाह चाहे, तो तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे। और अल्लाह बातिल को मिटाता है और अपनी बातों से सत्य को क़ायम कर देता है। निश्चय ही वह सीनों तक की बात जानता है। और वही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और बुराइयों को माफ़ करता है, और जानता है जो कुछ तुम करते हो। और वह उन लोगों की दुआ क़बूल करता है जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, और अपने अनुग्रह से उन्हें और ज़्यादा देता है; और सत्य के इनकारियों के लिए कठोर यातना है। और अगर अल्लाह अपने सब बन्दों के लिए रोज़ी कुशादा कर देता, तो वे ज़मीन में सरकशी करने लगते; मगर वह जितना चाहता है एक अन्दाज़े से उतारता है। निश्चय ही वह अपने बन्दों की पूरी ख़बर रखता है, और उन्हें देख रहा है। और वही है जो लोगों के निराश हो जाने के बाद बारिश उतारता है, और अपनी दयालुता फैला देता है। और वही संरक्षक, हर प्रशंसा के योग्य है। (24–28)

और उसकी निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना, और वे जानदार जो उसने इन दोनों में फैला रखे हैं; और वह जब चाहे उन्हें इकट्ठा कर लेने की सामर्थ्य रखता है। और तुम पर जो मुसीबत भी आती है वह उसी के कारण है जो तुम्हारे अपने हाथों ने कमाया—और वह बहुत कुछ माफ़ कर देता है। और तुम ज़मीन में उससे बच निकलने वाले नहीं, और अल्लाह के सिवा तुम्हारा न कोई संरक्षक है न मददगार। और उसकी निशानियों में से हैं समुद्र में चलने वाली नौकाएँ, पहाड़ों जैसी। अगर वह चाहे, तो हवा को ठहरा दे, और वे उसकी सतह पर खड़ी-की-खड़ी रह जाएँ। निश्चय ही इसमें हर उस आदमी के लिए निशानियाँ हैं जो सब्र करने वाला, शुक्र करने वाला हो। या वह उन्हें उनकी कमाई के बदले तबाह कर दे—और वह बहुत कुछ माफ़ कर देता है—और ताकि वे लोग जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं जान लें कि उनके लिए बच निकलने की कोई जगह नहीं। (29–35)

तो जो कुछ भी तुम्हें दिया गया है वह दुनिया की ज़िन्दगी का सामान है; और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बेहतर है और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं, जो बड़े-बड़े गुनाहों और अश्लील कामों से बचते हैं, और जब ग़ुस्सा आता है, तो माफ़ कर देते हैं; जो अपने रब की पुकार क़बूल करते हैं, और नमाज़ क़ायम रखते हैं, और जिनके मामले आपस के मशविरे से तय होते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं; और जो, जब उन पर ज़्यादती होती है, तो अपना बचाव करते हैं। और बुराई का बदला वैसी ही बुराई है; मगर जो कोई माफ़ कर दे और सुधार कर ले, उसका बदला अल्लाह के ज़िम्मे है। निश्चय ही वह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता। और जो कोई ज़ुल्म सहने के बाद अपना बचाव करे—तो ऐसे लोगों पर इलज़ाम की कोई राह नहीं; इलज़ाम की राह तो बस उन पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ ज़्यादती करते हैं। ऐसे ही लोगों के लिए दुखद यातना है। और जो कोई सब्र करे और माफ़ कर दे—तो निश्चय ही यह हिम्मत के कामों में से है। (36–43)

और जिसे अल्लाह भटकने दे उसके लिए उसके बाद कोई संरक्षक नहीं। और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वे यातना को देखेंगे, तो कहेंगे, "क्या वापस जाने की कोई राह है?" और तुम उन्हें देखोगे कि उसके सामने पेश किए जा रहे हैं, ज़िल्लत के मारे झुके हुए, कनखियों से देखते हुए; और ईमान वाले कहेंगे, "निश्चय ही घाटे वाले तो वे हैं जिन्होंने क़ियामत के दिन अपने आप को और अपने घर वालों को घाटे में डाल दिया।" सुन लो, ज़ालिम हमेशा रहने वाली यातना में होंगे। और उनके कोई संरक्षक न होंगे जो अल्लाह के सिवा उनकी मदद करें; और जिसे अल्लाह भटकने दे उसके लिए कोई राह नहीं। (44–46)

अपने रब की पुकार क़बूल कर लो इससे पहले कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाए जो टलने वाला नहीं। उस दिन न तुम्हारे लिए कोई पनाह की जगह होगी, और न तुम्हारे लिए इनकार की कोई गुंजाइश। फिर अगर वे मुँह मोड़ें—तो हमने तुम्हें उन पर निगहबान बनाकर नहीं भेजा; तुम्हारे ज़िम्मे तो बस सन्देश पहुँचा देना है। और जब हम इनसान को अपनी ओर से दयालुता का मज़ा चखाते हैं, तो वह उस पर इतराने लगता है; और अगर उनके हाथों की आगे भेजी हुई करतूतों के कारण उन पर कोई बुराई आ पड़े, तो इनसान बड़ा नाशुक्रा है। आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है। वह जो चाहता है पैदा

करता है: जिसे चाहता है बेटियाँ देता है, और जिसे चाहता है बेटे देता है, या उन्हें बेटे और बेटियाँ मिला-जुलाकर देता है; और जिसे चाहता है बाँझ कर देता है। निश्चय ही वह सब कुछ जानने वाला, सामर्थ्य वाला है। (47–50)

और किसी इनसान का यह मक़ाम नहीं कि अल्लाह उससे बात करे मगर वह्य के द्वारा, या परदे के पीछे से, या इस तरह कि वह कोई सन्देश लाने वाला भेज दे जो उसके हुक्म से वह वह्य करे जो वह चाहे। निश्चय ही वह सर्वोच्च, हिकमत वाला है। और इसी तरह हमने तुम्हारी ओर अपने हुक्म की एक रूह वह्य की है। तुम न जानते थे कि किताब क्या है, और न ईमान; मगर हमने इसे एक रौशनी बनाया है जिसके द्वारा हम अपने बन्दों में से जिसे चाहते हैं राह दिखाते हैं। और निश्चय ही तुम सीधे मार्ग की राह दिखाते हो, उस अल्लाह के मार्ग की, जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है। सुन लो, सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटते हैं। (51–53)

# 43. सोने के ज़ेवर (अज़-ज़ुख़रुफ़)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

हा मीम। (1)

क़सम है उस किताब की जो हर बात स्पष्ट कर देती है, हमने इसे अरबी क़ुरआन बनाया है, ताकि तुम समझो; और निश्चय ही यह हमारे पास असल किताब में बहुत ऊँचे दर्जे की, हिकमत से भरी हुई है। (2–4)

तो क्या हम यह याददिहानी तुमसे बिलकुल ही फेर लें इसलिए कि तुम हद से गुज़र जाने वाले लोग हो? और हमने अगलों में कितने ही नबी भेजे! और उनके पास जो भी नबी आया वे उसका मज़ाक़ ही उड़ाते रहे। तो हमने उन्हें हलाक कर दिया जो इनसे कहीं ज़्यादा ज़ोरावर थे, और अगलों की मिसाल गुज़र चुकी है। और अगर तुम उनसे पूछो, "आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया?" तो वे ज़रूर कहेंगे, "इन्हें उसी ने पैदा किया जो प्रभुत्वशाली, सब कुछ जानने वाला है"—वही जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया, और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बनाए, ताकि तुम राह पा सको; जिसने आसमान से एक अन्दाज़े के साथ पानी उतारा—फिर उसके द्वारा हमने एक मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया; इसी तरह तुम भी निकाले जाओगे—जिसने सारे जोड़े पैदा किए, और तुम्हारे लिए वे नौकाएँ और चौपाए बनाए जिन पर तुम सवार होते हो, ताकि तुम उनकी पीठ पर जमकर बैठो, फिर जब उन पर ठीक से बैठ जाओ तो अपने रब की नेमत को याद करो और कहो, "पाक है वह जिसने इसे हमारे वश में कर दिया, वरना हम इसे क़ाबू में लाने वाले न थे; और निश्चय ही हम अपने रब ही की ओर लौटने वाले हैं।" (5–14)

फिर भी उन्होंने उसके अपने बन्दों में से उसका एक हिस्सा ठहरा दिया। निश्चय ही इनसान खुला नाशुक्रा है। या उसने अपनी पैदा की हुई चीज़ों में से बेटियाँ ले लीं, और तुम्हें बेटों के लिए चुन लिया? और जब उनमें से किसी को उस चीज़ की ख़बर दी जाती है जिसे वह रहमान के लिए ठहराता है, तो उसका चेहरा सियाह पड़ जाता है और वह ग़म से घुटकर रह जाता है: "क्या वह जो ज़ेवरों में पाली जाती है, और झगड़े में अपनी बात खोलकर कह नहीं पाती?" और उन्होंने फ़रिश्तों को, जो रहमान के बन्दे हैं, औरतें ठहरा दिया। क्या वे उनके पैदा किए जाने के समय मौजूद थे? उनकी यह गवाही लिख ली जाएगी, और उनसे पूछ होगी। (15–19)

और वे कहते हैं, "अगर रहमान चाहता, तो हम इनकी इबादत न करते।" उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं; वे बस अटकल दौड़ाते हैं। या हमने इससे पहले उन्हें कोई किताब दी है, जिसे वे मज़बूती से थामे हुए हैं? नहीं; बल्कि वे कहते हैं, "हमने अपने बाप-दादा को एक तरीक़े पर पाया है, और हम उन्हीं के नक़्शे-क़दम पर राह पा रहे हैं।" और इसी तरह, हमने तुमसे पहले जिस बस्ती में भी कोई सचेत करने वाला भेजा उसके ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा, "हमने अपने बाप-दादा को एक तरीक़े पर पाया है, और हम उन्हीं के नक़्शे-क़दम पर चल रहे हैं।" उसने कहा, "क्या उस हाल में भी कि मैं तुम्हारे पास उससे बेहतर राह दिखाने वाली

चीज़ ले आऊँ जिस पर तुमने अपने बाप-दादा को पाया है?" वे बोले, "जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गए हो हम उसका इनकार करते हैं।" तो हमने उनसे बदला लिया: तो देखो, झुठलाने वालों का अंजाम कैसा हुआ। और जब इबराहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा, "मैं उनसे बरी हूँ जिनकी तुम इबादत करते हो—सिवाय उसके जिसने मुझे पैदा किया; और वही मुझे राह दिखाएगा।" और उसने इसी को अपनी नस्ल में बाक़ी रहने वाली बात बना दिया, ताकि वे अल्लाह की ओर पलटें। (20–28)

बल्कि मैंने इन लोगों को और इनके बाप-दादा को जीवन का सुख भोगने दिया, यहाँ तक कि उनके पास सत्य आ गया, और एक रसूल जो हर बात खोलकर बयान करता है। मगर जब उनके पास सत्य आया, तो बोले, "यह जादू है, और हम इसके इनकारी हैं।" और वे कहते हैं, "यह क़ुरआन दोनों बस्तियों के किसी बड़े आदमी पर क्यों न उतारा गया?" क्या तुम्हारे रब की दयालुता को यही बाँटते हैं? दुनिया की ज़िन्दगी में उनकी रोज़ी उनके बीच हम ही ने बाँटी है, और उनमें से कुछ को कुछ पर दर्जों में ऊँचा किया है, ताकि वे एक-दूसरे से काम ले सकें। और तुम्हारे रब की दयालुता उससे बेहतर है जो वे समेटते हैं। और अगर यह न होता कि सारे लोग इनकार करने वालों का एक ही समुदाय बन जाएँगे, तो हम रहमान का इनकार करने वालों के घरों की छतें चाँदी की कर देते, और वे सीढ़ियाँ भी जिन पर वे चढ़ते हैं, और उनके घरों के दरवाज़े, और वे तख़्त जिन पर वे तकिया लगाते हैं, और सोने के ज़ेवर भी। और यह सब तो बस दुनिया की ज़िन्दगी का सामान है; और आख़िरत, तुम्हारे रब के यहाँ, उन्हीं के लिए है जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं। (29–35)

और जो कोई रहमान की याद से अंधा बनता है, हम उस पर एक शैतान लगा देते हैं, तो वही उसका साथी बन जाता है। और ये उन्हें राह से रोकते हैं, और वे समझते हैं कि वे सही राह पर हैं। यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आएगा, तो कहेगा, "काश मेरे और तेरे बीच पूरब और पश्चिम की दूरी होती! तो क्या ही बुरा साथी है!" और चूँकि तुम ज़ुल्म कर चुके, आज यह बात तुम्हें कुछ फ़ायदा न देगी कि तुम यातना में साझी हो। (36–39)

तो क्या तुम बहरों को सुना सकते हो, या अंधों को और उसे राह दिखा सकते हो जो खुली गुमराही में हो? फिर चाहे हम तुम्हें ले जाएँ, तो भी हम उनसे बदला लेकर रहेंगे, या तुम्हें वह दिखा दें जिसका हमने उनसे वादा किया है—तो हम उन पर पूरी सामर्थ्य रखते हैं। तो जो कुछ तुम्हारी ओर वह्य किया गया है उसे मज़बूती से थामे रहो: निश्चय ही तुम सीधे मार्ग पर हो। और निश्चय ही यह तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए एक याददिहानी है, और जल्द ही तुम सबसे पूछ होगी। और हमारे उन रसूलों से पूछ लो जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा: क्या हमने रहमान के सिवा कभी दूसरे इलाह ठहराए कि उनकी इबादत की जाए? (40–45)

और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा, तो उसने कहा, "मैं सारे संसारों के रब का रसूल हूँ।" मगर जब वह उनके पास हमारी निशानियाँ लेकर आया, तो वे एकाएक उन पर हँसने लगे। और हम उन्हें जो भी निशानी दिखाते वह अपनी बहन से बढ़कर होती; और हमने उन्हें यातना में पकड़ा, ताकि वे पलट आएँ। और वे बोले, "ऐ जादूगर, अपने रब से हमारे लिए उस अह्द के वास्ते

से दुआ कर जो उसने तुझसे कर रखा है; हम ज़रूर राह पर आ जाएँगे।" मगर जब हमने उनसे यातना हटा दी, तो वे एकाएक अपनी बात तोड़ने लगे। और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम में पुकारकर कहा, "ऐ मेरी क़ौम, क्या मिस्र की बादशाही मेरी नहीं, और ये नहरें जो मेरे नीचे बह रही हैं? तो क्या तुम देखते नहीं? क्या मैं इस आदमी से बेहतर नहीं, जो हक़ीर है और अपनी बात भी मुश्किल ही से खोलकर कह पाता है? तो इस पर सोने के कंगन क्यों न डाले गए, या इसके साथ फ़रिश्ते परे बाँधकर क्यों न आए?" इस तरह उसने अपनी क़ौम को हलका कर दिया, तो उन्होंने उसकी बात मान ली; निश्चय ही वे अवज्ञाकारी लोग थे। फिर जब उन्होंने हमें ग़ुस्सा दिलाया, तो हमने उनसे बदला लिया और उन सबको डुबो दिया, और उन्हें गया-गुज़रा और बाद वालों के लिए मिसाल बना दिया। (46–56)

और जब मरयम के बेटे की मिसाल दी गई, तो तुम्हारी क़ौम के लोग एकाएक उस पर चिल्लाने लगे, और बोले, "हमारे इलाह बेहतर हैं, या वह?" उन्होंने यह बात तुम्हारे सामने बस झगड़ने के लिए रखी: बल्कि वे हैं ही झगड़ालू लोग। वह तो बस एक बन्दा था जिस पर हमने एहसान किया, और जिसे हमने इसराईल की सन्तान के लिए एक मिसाल बनाया। और अगर हम चाहते, तो तुममें से फ़रिश्ते बना देते, जो ज़मीन में तुम्हारे जानशीन होते। (57–60)

और निश्चय ही वह उस घड़ी की एक निशानी है; तो उसमें हरगिज़ शक न करो, और मेरे पीछे चलो: यही सीधा मार्ग है। और शैतान तुम्हें रोकने न पाए; निश्चय ही वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। और जब ईसा खुले प्रमाण लेकर आया, तो उसने कहा, "मैं तुम्हारे पास हिकमत लेकर आया हूँ, और इसलिए कि जिन बातों में तुम मतभेद करते हो उनमें से कुछ तुम्हारे सामने खोल दूँ। तो अल्लाह के प्रति सचेत रहो, और मेरी आज्ञा मानो। निश्चय ही अल्लाह ही मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब; तो उसी की इबादत करो। यही सीधा मार्ग है।" मगर गिरोहों ने आपस में मतभेद किया। तो तबाही है ज़ुल्म करने वालों के लिए, एक दुखद दिन की यातना से! क्या वे बस उस घड़ी की राह देख रहे हैं, कि वह उन पर अचानक आ जाए और उन्हें ख़बर तक न हो? उस दिन जिगरी दोस्त एक-दूसरे के दुश्मन होंगे—सिवाय उनके जो अल्लाह के प्रति सचेत रहे। "ऐ मेरे बन्दो, आज तुम पर न कोई भय है, और न तुम दुखी होगे—तुम जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और अल्लाह के आगे समर्पित रहे। जन्नत में दाख़िल हो जाओ, तुम और तुम्हारे जोड़े, तुम्हें ख़ुश किया जाएगा।" उनके बीच सोने की रकाबियाँ और प्याले फिराए जाएँगे; और वहाँ वह सब होगा जिसे जी चाहे और जिससे आँखें लज़्ज़त पाएँ; और तुम वहाँ सदा-सदा रहोगे। और यह है वह जन्नत जिसके तुम वारिस बनाए गए हो, उन कामों के बदले जो तुम करते थे; उसमें तुम्हारे लिए बहुत-से फल हैं, जिनमें से तुम खाओगे। मगर अपराधी जहन्नम की यातना में सदा-सदा रहेंगे; वह उनसे हलकी न की जाएगी, और वे उसमें निराश पड़े होंगे। और हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया; बल्कि वे ख़ुद ही ज़ालिम थे। और वे पुकारेंगे, "ऐ मालिक, तुम्हारा रब हमारा काम ही तमाम कर दे!" वह कहेगा, "तुम्हें यहीं रहना है।" हम तुम्हारे पास सत्य लाए थे, मगर तुममें से अधिकतर को सत्य नागवार है। (61–78)

या उन्होंने कोई बात पक्की ठान ली है? तो हम भी पक्का फ़ैसला करने वाले हैं। या वे समझते हैं कि हम उनके भेद और उनकी कानाफूसियाँ नहीं सुनते? क्यों नहीं, और हमारे भेजे हुए उनके पास ही लिखते जा रहे हैं। (79–80)

कह दो, “अगर रहमान के कोई बेटा होता, तो सबसे पहले इबादत करने वाला मैं होता।” पाक है आसमानों और ज़मीन का रब, अर्श का रब, उन बातों से बहुत ऊँचा जो ये बयान करते हैं! तो उन्हें छोड़ दो कि बेहूदा बातों में पड़े रहें और खेलते रहें, यहाँ तक कि अपने उस दिन से जा मिलें जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। और वही है जो आसमान में भी इलाह है और ज़मीन में भी इलाह; और वही हिकमत वाला, सब कुछ जानने वाला है। और बड़ी बरकत वाला है वह जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उन दोनों के बीच है उसकी बादशाही है; और उसी के पास उस घड़ी का ज्ञान है, और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे। और जिन्हें ये उसके सिवा पुकारते हैं वे सिफ़ारिश का कोई अधिकार नहीं रखते—सिवाय उनके जो सत्य की गवाही दें, और वे जानते हों। और अगर तुम उनसे पूछो कि उन्हें किसने पैदा किया, तो वे ज़रूर कहेंगे, “अल्लाह ने।” तो फिर वे किधर फेरे जाते हैं? और अल्लाह उसकी यह पुकार सुनता है, “ऐ मेरे रब, ये ऐसे लोग हैं जो ईमान नहीं लाते।” तो उनसे मुँह फेर लो और कह दो, “सलाम।” तो जल्द ही वे जान लेंगे। (81–89)

# 44. धुआँ (अद-दुख़ान)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

हा मीम। (1)

क़सम है उस किताब की जो हर बात स्पष्ट कर देती है, हमने इसे एक बरकत वाली रात में उतारा—निश्चय ही हम हमेशा सचेत करते रहे हैं—ऐसी रात जिसमें हिकमत का हर मामला अलग-अलग किया जाता है, हमारी ओर से एक हुक्म के तौर पर—निश्चय ही हम हमेशा रसूल भेजते रहे हैं—तुम्हारे रब की दयालुता के तौर पर। निश्चय ही वही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है, आसमानों और ज़मीन का रब और उस सबका जो इन दोनों के बीच है, अगर तुम यक़ीन करने वाले हो। उसके सिवा कोई इलाह नहीं; वही ज़िन्दगी देता है और वही मौत देता है—वह तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे अगले बाप-दादा का भी रब। बल्कि वे शक में पड़े खेल रहे हैं। (2–9)

तो उस दिन की राह देखो जब आसमान एक खुला धुआँ लेकर आएगा जो लोगों को ढाँप लेगा: यह है दुखद यातना। "ऐ हमारे रब, हमसे यह यातना हटा दे; हम ईमान लाते हैं।" अब उन्हें नसीहत कहाँ काम देगी, जबकि उनके पास एक रसूल आ चुका था जो हर बात खोलकर बयान करता था, फिर उन्होंने उससे मुँह मोड़ लिया और कहा, "यह तो सिखाया-पढ़ाया हुआ है, दीवाना"? हम थोड़ी देर के लिए यातना हटा देते हैं; तुम फिर वही करोगे जो करते थे। जिस दिन हम सबसे बड़ी पकड़ पकड़ेंगे, उस दिन हम बदला लेकर रहेंगे। (10–16)

और इनसे पहले हमने फ़िरऔन की क़ौम को आज़माया, जब उनके पास एक इज़्ज़त वाला रसूल आया: "अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले कर दो: मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ। और अल्लाह के मुक़ाबले में सरकशी न करो: मैं तुम्हारे पास एक खुला प्रमाण लाता हूँ। और मैं अपने रब और तुम्हारे रब की पनाह ले चुका हूँ इससे कि तुम मुझे पत्थर मार-मारकर हलाक करो; और अगर तुम मेरी बात नहीं मानते, तो मुझसे अलग ही रहो।" (17–21)

फिर उसने अपने रब को पुकारा: "ये लोग अपराध में डूबे हुए हैं।" "तो मेरे बन्दों को रातों-रात ले चलो, क्योंकि तुम्हारा पीछा किया जाएगा। और समुद्र को फटा हुआ, ठहरा हुआ छोड़ दो: वे एक ऐसा लश्कर हैं जो डुबोया जाने वाला है।" वे कितने ही बाग़ और सोते छोड़ गए, और खेतियाँ और शानदार ठिकाने, और आराम के वे सामान जिनमें वे मज़े कर रहे थे! ऐसा ही हुआ; और हमने दूसरे लोगों को इनका वारिस बना दिया। फिर न आसमान उन पर रोया न ज़मीन, और न उन्हें मुहलत दी गई। और हमने इसराईल की सन्तान को अपमान की उस यातना से छुटकारा दिया जो फ़िरऔन की ओर से थी; निश्चय ही वह बड़ा सरकश था, हर हद से गुज़र जाने वालों में से। और हमने उन्हें, जानते-बूझते, सारे संसार वालों पर चुन लिया, और उन्हें ऐसी निशानियाँ दीं जिनमें खुली आज़माइश थी। (22–33)

मगर ये लोग कहते हैं, "बस हमारी यही पहली मौत है; और हम दोबारा उठाए जाने वाले नहीं। तो ले आओ हमारे बाप-दादा को, अगर तुम सच्चे हो!" क्या ये बेहतर हैं, या तुब्बा की क़ौम और वे जो उनसे पहले थे? हमने उन्हें हलाक कर दिया: निश्चय ही वे अपराधी थे। और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के बीच है खेल के तौर पर नहीं पैदा किया। हमने उन्हें बस सत्य ही के साथ पैदा किया है, मगर उनमें से अधिकतर जानते नहीं। (34–39)

निश्चय ही फ़ैसले का दिन उन सबका ठहराया हुआ समय है—जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ भी काम न आएगा, और न उनकी मदद की जाएगी, सिवाय उनके जिन पर अल्लाह दया करे। निश्चय ही वही प्रभुत्वशाली, सदा दयावान है। निश्चय ही ज़क़्क़ूम का पेड़ गुनहगार का खाना है; पिघले हुए ताँबे की तरह वह पेटों में खौलेगा, जैसे खौलता पानी खौलता है। "पकड़ो इसे, और घसीटते हुए दहकती आग के बीचोंबीच ले जाओ; फिर इसके सिर पर खौलते पानी की यातना उँडेल दो। चख! तू ही तो बड़ा ज़बरदस्त, इज़्ज़त वाला था! यही है वह जिसमें तुम शक किया करते थे।" निश्चय ही जो अल्लाह के प्रति सचेत रहे वे अमन की जगह में होंगे, बाग़ों और सोतों में, बारीक रेशम और दबीज़ रेशम पहने हुए, आमने-सामने। ऐसा ही होगा; और हम उनके जोड़े सुन्दर, बड़ी-बड़ी आँखों वाली साथिनों से लगा देंगे। वहाँ वे अमन के साथ हर तरह के फल मँगवाएँगे। वहाँ वे मौत का मज़ा न चखेंगे, सिवाय उस पहली मौत के; और वह उन्हें दहकती आग की यातना से बचा लेगा—तुम्हारे रब के अनुग्रह से। यही बड़ी कामयाबी है। (40–57)

तो हमने इसे तुम्हारी ज़बान में आसान कर दिया है, ताकि वे नसीहत पकड़ें। तो तुम राह देखो; वे भी राह देख रहे हैं। (58–59)

# 45. घुटनों के बल (अल-जासिया)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

हा मीम। (1)

इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की ओर से है, जो प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। निश्चय ही आसमानों और ज़मीन में ईमान वालों के लिए निशानियाँ हैं; और तुम्हारे अपने पैदा किए जाने में, और उन जानदारों में जिन्हें वह फैलाता है, उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो यक़ीन रखते हैं; और रात और दिन के अदल-बदल में, और उस रोज़ी में जो अल्लाह आसमान से उतारता है, फिर उसके द्वारा ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा करता है, और हवाओं के फेर-बदल में, उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं। ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हें ठीक-ठीक सुना रहे हैं। तो अल्लाह और उसकी आयतों के बाद वे और किस बात पर ईमान लाएँगे? (2–6)

तबाही है हर झूठ गढ़ने वाले गुनहगार के लिए जो अल्लाह की आयतें सुनता है जब वे उसे सुनाई जाती हैं, फिर घमंड के साथ अड़ा रहता है मानो उसने उन्हें सुना ही नहीं। तो उसे दुखद यातना की ख़बर सुना दो। और जब उसे हमारी आयतों में से कोई बात मालूम होती है, तो वह उनका मज़ाक़ बना लेता है। ऐसे ही लोगों के लिए अपमानजनक यातना है: उनके पीछे जहन्नम है। और जो कुछ उन्होंने कमाया वह उनके कुछ काम न आएगा, और न वे जिन्हें उन्होंने अल्लाह के सिवा संरक्षक बना रखा है; और उनके लिए बड़ी यातना है। यह है मार्गदर्शन; और जिन लोगों ने अपने रब की आयतों का इनकार किया उनके लिए दुखद सज़ा की यातना है। (7–11)

अल्लाह ही है जिसने समुद्र को तुम्हारे वश में कर दिया, ताकि उसके हुक्म से उसमें नौकाएँ चलें, और ताकि तुम उसका अनुग्रह ढूँढो, और ताकि तुम शुक्र अदा करो। और उसने जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब तुम्हारे वश में कर दिया, सब अपनी ओर से। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार करते हैं। (12–13)

ईमान लाने वालों से कह दो कि वे उन लोगों को माफ़ कर दिया करें जो अल्लाह के दिनों की आस नहीं रखते, ताकि वह एक क़ौम को उसकी कमाई का बदला दे। जो कोई अच्छा काम करता है अपने ही लिए करता है, और जो कोई बुराई करता है उसका वबाल उसी पर है; फिर तुम अपने रब ही की ओर लौटाए जाओगे। (14–15)

और हमने इसराईल की सन्तान को किताब, हुक्म और नुबुव्वत दी; और उन्हें अच्छी चीज़ों की रोज़ी दी, और उन्हें सारे संसार वालों पर श्रेष्ठता दी। और हमने उन्हें इस मामले के खुले प्रमाण दिए; फिर उन्होंने मतभेद नहीं किया मगर इसके बाद कि उनके पास ज्ञान आ चुका था, आपस की ज़िद के कारण। निश्चय ही

तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उनके बीच उन बातों का फ़ैसला कर देगा जिनमें वे मतभेद करते थे। फिर हमने तुम्हें इस मामले के एक साफ़ रास्ते पर क़ायम किया, तो उसी पर चलो, और उन लोगों की इच्छाओं पर न चलो जो जानते नहीं। वे अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे कुछ भी काम नहीं आ सकते। और ज़ालिम एक-दूसरे के संरक्षक हैं, मगर अल्लाह उनका संरक्षक है जो उसके प्रति सचेत रहते हैं। ये लोगों के लिए आँखें खोल देने वाली दलीलें हैं, और मार्गदर्शन और दयालुता उन लोगों के लिए जो यक़ीन रखते हैं। (16–20)

या जो लोग बुरे काम करते हैं उन्होंने यह समझ रखा है कि हम उन्हें उन लोगों की तरह कर देंगे जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, कि उनका जीना और मरना बराबर हो? कैसा बुरा फ़ैसला है जो वे करते हैं! और अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को सत्य के साथ पैदा किया, और ताकि हर जान को उसकी कमाई का बदला दिया जाए; और उन पर ज़ुल्म न होगा। तो क्या तुमने उसे देखा जिसने अपनी इच्छा ही को अपना इलाह बना लिया, और अल्लाह ने ज्ञान के होते हुए उसे भटकने दिया, उसके कान और उसके दिल पर मुहर लगा दी, और उसकी आँख पर परदा डाल दिया? तो अल्लाह के बाद उसे कौन राह दिखाएगा? तो क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते? (21–23)

और वे कहते हैं, "ज़िन्दगी तो बस यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है: हम मरते हैं और जीते हैं, और हमें बस ज़माना ही हलाक करता है।" उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं; वे बस गुमान करते हैं। और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं, तो उनकी दलील बस यही होती है कि कहते हैं, "हमारे बाप-दादा को ले आओ, अगर तुम सच्चे हो।" कह दो, "अल्लाह ही तुम्हें ज़िन्दगी देता है, फिर तुम्हें मौत देता है, फिर तुम्हें क़ियामत के दिन इकट्ठा करेगा, जिसमें कोई सन्देह नहीं; मगर अधिकतर लोग जानते नहीं।"[43] (24–26)

और आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है; और जिस दिन वह घड़ी आ खड़ी होगी, उस दिन बातिल पर चलने वाले घाटे में रहेंगे। और तुम हर समुदाय को घुटनों के बल गिरा हुआ देखोगे; हर समुदाय अपने आमालनामे की ओर बुलाया जाएगा: "आज तुम्हें उसका बदला दिया जाएगा जो तुम करते थे। यह हमारा लिखा हुआ है, जो तुम्हारे ख़िलाफ़ ठीक-ठीक बोल रहा है: जो कुछ भी तुम करते थे हम उसे लिखवाते जाते थे।" तो जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, उन्हें उनका रब अपनी दयालुता में दाख़िल करेगा। यही खुली कामयाबी है। और जिन्होंने सत्य का इनकार किया: "क्या मेरी आयतें तुम्हें सुनाई न जाती थीं? मगर तुमने घमंड किया, और तुम अपराधी लोग थे। और जब कहा जाता था, 'अल्लाह का वादा सच्चा है, और वह घड़ी—उसमें कोई सन्देह नहीं,' तो तुम कहते थे, 'हम नहीं जानते कि वह घड़ी क्या है; हम तो बस एक गुमान-सा रखते हैं, और हमें यक़ीन नहीं आता।'" (27–32)

---

[43] **नास्तिकता की बुनियाद अटकल (ज़न्न) पर है: एक वैज्ञानिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या**
**नास्तिकता, अटकल और इल्म की क़ुरआनी माँग**
**नास्तिकता, आख़िरत और अटकल: एक क़ुरआनी पड़ताल**

और उनके कर्मों की बुराइयाँ उनके सामने आ जाएँगी, और वही चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसका वे मज़ाक़ उड़ाया करते थे। और कहा जाएगा, "आज हम तुम्हें भुला देते हैं, जैसे तुमने अपने इस दिन के मिलने को भुला दिया था। और तुम्हारा ठिकाना आग है, और तुम्हारा कोई मददगार नहीं। यह इसलिए कि तुमने अल्लाह की आयतों को मज़ाक़ बना लिया था, और दुनिया की ज़िन्दगी ने तुम्हें धोखे में डाले रखा।" तो आज न वे उसमें से निकाले जाएँगे, और न उनसे मनाने की माँग की जाएगी। (33–35)

तो सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो आसमानों का रब और ज़मीन का रब है, सारे संसारों का रब। और आसमानों और ज़मीन में बड़ाई उसी के लिए है; और वही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। (36–37)

# 46. रेत के टीले (अल-अहक़ाफ़)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

हा मीम। (1)

इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की ओर से है, जो प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के बीच है नहीं पैदा किया मगर सत्य के साथ, और एक ठहराई हुई अवधि के लिए; फिर भी सत्य के इनकारी उस चीज़ से मुँह फेरे हुए हैं जिससे उन्हें सचेत किया गया है। कह दो, "भला बताओ, जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो—मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन का कौन-सा हिस्सा पैदा किया है; या आसमानों में उनका कोई साझा है? मेरे पास इससे पहले की कोई किताब ले आओ, या ज्ञान का कोई बचा-खुचा निशान, अगर तुम सच्चे हो।" और उससे बढ़कर भटका हुआ कौन होगा जो अल्लाह के सिवा उन्हें पुकारे जो क़ियामत के दिन तक उसे जवाब न देंगे, और जो उनकी पुकार से बेख़बर हैं? और जब लोग इकट्ठे किए जाएँगे, तो वे उनके दुश्मन होंगे, और उनकी इबादत का इनकार कर देंगे। (2–6)

और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं, तो सत्य के इनकारी सत्य के बारे में, जब वह उनके पास आया, कहते हैं, "यह तो खुला जादू है।" या वे कहते हैं, "इसने इसे ख़ुद गढ़ लिया है"? कह दो, "अगर मैंने इसे गढ़ा है, तो तुम अल्लाह के मुक़ाबले में मेरे लिए किसी चीज़ का अधिकार नहीं रखते। जिन बातों में तुम इसके बारे में लगे हुए हो वह उन्हें ख़ूब जानता है; मेरे और तुम्हारे बीच गवाह के तौर पर वही काफ़ी है। और वही बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है।" कह दो, "मैं रसूलों में कोई अनोखा नहीं हूँ; और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या। मैं तो बस उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरी ओर वह्य किया जाता है, और मैं तो बस एक खुला सचेत करने वाला हूँ।" कह दो, "भला सोचो तो: अगर यह अल्लाह की ओर से हुआ और तुमने इसका इनकार कर दिया, जबकि इसराईल की सन्तान में से एक गवाह इसी जैसी चीज़ की गवाही दे चुका और ईमान ले आया, और तुम घमंड ही करते रहे—" निश्चय ही अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। (7–10)

और सत्य के इनकारी ईमान वालों के बारे में कहते हैं, "अगर यह कोई भली चीज़ होती, तो ये लोग इसकी ओर हमसे आगे न बढ़ जाते।" और चूँकि उन्होंने इससे राह नहीं पाई, तो अब कहेंगे, "यह तो पुराना झूठ है।" और इससे पहले मूसा की किताब थी, मार्गदर्शक और दयालुता; और यह एक किताब है जो उसकी पुष्टि करती है, अरबी ज़बान में, ताकि ज़ुल्म करने वालों को सचेत करे और अच्छा करने वालों के लिए शुभ-सूचना हो। निश्चय ही जिन लोगों ने कहा, "हमारा रब अल्लाह है," फिर उस पर जमे रहे—उन पर न कोई भय होगा, न वे दुखी होंगे। वही जन्नत वाले हैं, जिसमें वे सदा-सदा रहेंगे, उन कामों के बदले में जो वे करते थे। (11–14)

और हमने इनसान को अपने माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की है। उसकी माँ ने तकलीफ़ के साथ उसे पेट में रखा और तकलीफ़ के साथ उसे जना; और उसका पेट में रहना और उसका दूध छूटना तीस महीनों में होता है। यहाँ तक कि जब वह अपनी पूरी जवानी को पहुँचता है और चालीस वर्ष का हो जाता है, तो कहता है, "ऐ मेरे रब, मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी उस नेमत का शुक्र अदा करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर की है, और ऐसे नेक काम करूँ जो तुझे पसन्द हों; और मेरे लिए मेरी औलाद को नेक बना दे। मैं तेरे आगे तौबा करता हूँ, और मैं उन लोगों में से हूँ जो तेरे आगे समर्पित हैं।" यही हैं वे लोग जिनके सबसे अच्छे कामों को हम क़बूल करते हैं, और जिनकी बुराइयों से हम दरगुज़र करते हैं, वे जन्नत वालों में होंगे: यह वह सच्चा वादा है जो उनसे किया जाता था। (15–16)

मगर वह जिसने अपने माँ-बाप से कहा, "तुफ़ है तुम दोनों पर! क्या तुम मुझसे यह वादा करते हो कि मैं निकाला जाऊँगा, हालाँकि मुझसे पहले कितनी ही नस्लें गुज़र चुकी हैं?" और वे दोनों अल्लाह से फ़रियाद करते हैं: "तेरी कमबख़्ती! ईमान ले आ! निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है।" मगर वह कहता है, "यह तो बस अगलों की कहानियाँ हैं।" यही हैं वे लोग जिन पर बात पूरी हो चुकी, जिन्नों और इनसानों के उन समुदायों के साथ जो इनसे पहले गुज़र चुके। निश्चय ही वे घाटे में रहने वाले थे। और हर एक के लिए उनके कर्मों के मुताबिक़ दर्जे हैं, और ताकि वह उन्हें उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला दे; और उन पर ज़ुल्म न होगा। और जिस दिन सत्य के इनकारी आग के सामने पेश किए जाएँगे: "तुम अपनी अच्छी चीज़ें अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में उड़ा चुके और उनका मज़ा उठा चुके; तो आज तुम्हें बदले में अपमान की यातना दी जाएगी, इसलिए कि तुम ज़मीन में नाहक़ घमंड करते थे, और इसलिए कि तुम अवज्ञा करते थे।" (17–20)

और आद के भाई को याद करो, जब उसने रेत के टीलों में अपनी क़ौम को सचेत किया—और सचेत करने वाले उससे पहले भी गुज़र चुके थे और उसके बाद भी—कि "अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो: मुझे तुम पर एक बड़े दिन की यातना का डर है।" वे बोले, "क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमें हमारे इलाहों से फेर दो? तो ले आओ हम पर वह चीज़ जिसकी तुम हमें धमकी देते हो, अगर तुम सच्चे हो।" उसने कहा, "ज्ञान तो बस अल्लाह ही के पास है। मैं तुम्हें वही पहुँचाता हूँ जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ, मगर मैं देखता हूँ कि तुम नादान लोग हो।" फिर जब उन्होंने उसे एक बादल के रूप में अपनी वादियों की ओर बढ़ते देखा, तो बोले, "यह बादल है जो हम पर बरसेगा।" नहीं—बल्कि यह वही है जिसके लिए तुम जल्दी मचा रहे थे: एक आँधी जिसमें दुखद यातना है, जो अपने रब के हुक्म से हर चीज़ को तबाह कर देती है। तो सुबह हुई तो उनके घरों के सिवा कुछ दिखाई न देता था। हम अपराधी लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। (21–25)

और हमने उन्हें उन चीज़ों में जमाव दिया था जिनमें तुम्हें जमाव नहीं दिया, और हमने उन्हें कान और आँखें और दिल दिए थे; मगर न उनके कान उनके कुछ काम आए, न उनकी आँखें, न उनके दिल, क्योंकि वे अल्लाह की आयतों का इनकार करते रहे; और वही चीज़ उन्हें घेर बैठी जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे। और हमने तुम्हारे आस-पास की बस्तियों को हलाक कर दिया, और हमने निशानियाँ तरह-तरह से बयान कीं,

ताकि वे पलट आएँ। तो उन्होंने उनकी मदद क्यों न की जिन्हें उन्होंने अल्लाह के सिवा, क़ुरबत हासिल करने के लिए, इलाह बना रखा था? नहीं—बल्कि वे उनसे खो गए। और यह था उनका झूठ, और वह जो वे गढ़ा करते थे। (26–28)

और याद करो जब हमने जिन्नों के एक गिरोह को तुम्हारी ओर फेर दिया, कि वे क़ुरआन सुनें। फिर जब वे उसके पास हाज़िर हुए, तो बोले, "चुप रहो!" फिर जब वह पूरा हो गया, तो वे सचेत करने वाले बनकर अपनी क़ौम की ओर लौटे। उन्होंने कहा, "ऐ हमारी क़ौम, हमने एक किताब सुनी है जो मूसा के बाद उतारी गई है, उसकी पुष्टि करती हुई जो इससे पहले आ चुका, सत्य की और सीधी राह की ओर ले जाती है। ऐ हमारी क़ौम, अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात मान लो और उस पर ईमान ले आओ: वह तुम्हारे गुनाह क्षमा कर देगा और तुम्हें दुखद यातना से बचा लेगा। और जो कोई अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात न माने वह ज़मीन में बच निकलने वाला नहीं, और उसके सिवा उसके कोई संरक्षक नहीं। ऐसे लोग खुली गुमराही में हैं।" (29–32)

क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह, जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उनके पैदा करने से थका नहीं, इसकी सामर्थ्य रखता है कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे? क्यों नहीं: निश्चय ही वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। और जिस दिन सत्य के इनकारी आग के सामने पेश किए जाएँगे: "क्या यह सत्य नहीं?" वे कहेंगे, "क्यों नहीं, हमारे रब की क़सम।" वह कहेगा, "तो अब यातना का मज़ा चखो, इसलिए कि तुम सत्य का इनकार करते थे।" (33–34)

तो सब्र करो, जैसे हिम्मत वाले रसूलों ने सब्र किया, और उनके लिए जल्दी न करो। जिस दिन वे उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वादा किया जा रहा है, तो ऐसा लगेगा मानो वे दिन की बस एक घड़ी ही ठहरे थे। यह एक सन्देश है जो पहुँचा दिया गया: तो क्या अवज्ञाकारी लोगों के सिवा कोई और हलाक होगा? (35)

# 47. मुहम्मद (मुहम्मद)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

जिन लोगों ने सत्य का इनकार किया और दूसरों को अल्लाह की राह से रोका—उसने उनके कर्म अकारथ कर दिए। और जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, और उस पर ईमान लाए जो मुहम्मद पर उतारा गया है—और वही उनके रब की ओर से सत्य है—उसने उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर दीं और उनका हाल सँवार दिया। यह इसलिए कि जिन्होंने सत्य का इनकार किया वे बातिल के पीछे चले, और जो ईमान लाए वे अपने रब की ओर से आए हुए सत्य के पीछे चले। इसी तरह अल्लाह लोगों के लिए उनकी मिसालें बयान करता है। (1–3)

तो जब लड़ाई में तुम्हारा सामना सत्य के इनकारियों से हो, तो गर्दनें मारो; फिर जब उन्हें अच्छी तरह कुचल चुको, तो क़ैदियों को मज़बूत बाँध लो। फिर उसके बाद उन्हें छोड़ दो, या तो एहसान करके या फ़िदया लेकर, यहाँ तक कि लड़ाई अपने बोझ उतार रखे। यह तो हुआ। और अगर अल्लाह चाहता, तो ख़ुद ही उनसे बदला ले लेता, मगर यह इसलिए है कि वह तुममें से कुछ को कुछ के द्वारा आज़माए। और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए, वह उनके कर्म हरगिज़ अकारथ न करेगा: वह उन्हें राह दिखाएगा और उनका हाल सँवार देगा, और उन्हें उस जन्नत में दाख़िल करेगा जिसकी पहचान उसने उन्हें करा दी है। ऐ ईमान लाने वालो, अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे, तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा। (4–7)

और जिन्होंने सत्य का इनकार किया—उनके लिए तबाही है, और वह उनके कर्म अकारथ कर देगा। यह इसलिए कि उन्होंने उस चीज़ को नापसन्द किया जो अल्लाह ने उतारी, तो उसने उनके कर्म बेकार कर दिए। क्या ये ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते कि इनसे पहले के लोगों का अंजाम कैसा हुआ? अल्लाह ने उन्हें पूरी तरह तबाह कर दिया, और सत्य के इनकारियों के लिए वैसी ही चीज़ें हैं। यह इसलिए कि अल्लाह उनका संरक्षक है जो ईमान लाए, और सत्य के इनकारियों का कोई संरक्षक नहीं। निश्चय ही अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं; और जो सत्य के इनकारी हैं वे मज़े कर रहे हैं और उस तरह खा रहे हैं जैसे चौपाए खाते हैं, और आग ही उनका ठिकाना है। और कितनी ही बस्तियाँ थीं, जो ताक़त में तुम्हारी उस बस्ती से बढ़ी हुई थीं जिसने तुम्हें निकाल दिया, हमने उन्हें हलाक कर दिया, तो उनका कोई मददगार न हुआ! (8–13)

तो क्या वह जो अपने रब की ओर से एक खुले प्रमाण पर हो उस जैसा हो सकता है जिसके बुरे काम उसके लिए लुभावने बना दिए गए हों, और जो अपनी इच्छाओं के पीछे चलते हों? उस जन्नत का हाल, जिसका वादा अल्लाह के प्रति सचेत रहने वालों से किया गया है, यह है: उसमें ऐसे पानी की नहरें हैं जो बिगड़ता नहीं, और ऐसे दूध की नहरें जिसका स्वाद कभी नहीं बदलता, और ऐसी शराब की नहरें जो पीने वालों के लिए लज़ीज़ है, और साफ़ किए हुए शहद की नहरें; और उसमें उनके लिए हर तरह के फल हैं, और उनके रब की ओर

से क्षमा। क्या ये उन जैसे हो सकते हैं जो आग में सदा-सदा रहेंगे और जिन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, जो उनकी आँतें काटकर रख देगा? (14–15)

और ऐ नबी, उनमें कुछ ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं, मगर जब तुम्हारे पास से निकलते हैं तो उन लोगों से जिन्हें ज्ञान दिया गया है कहते हैं, "अभी-अभी इसने क्या कहा था?" यही हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी, और जो अपनी इच्छाओं के पीछे चले। और जिन लोगों ने राह पाई—वह उन्हें मार्गदर्शन में और बढ़ाता है और उन्हें उनकी सचेतता देता है। तो क्या वे बस उस घड़ी की राह देख रहे हैं, कि वह उन पर अचानक आ जाए? उसकी निशानियाँ तो आ ही चुकी हैं। फिर जब वह उन पर आ जाएगी, तो उनका नसीहत पकड़ना उनके किस काम आएगा? तो जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, और अपने क़ुसूर की क्षमा माँगो और ईमान वाले मर्दों और औरतों के लिए भी। और अल्लाह तुम्हारे चलने-फिरने को भी जानता है और तुम्हारे ठिकाने को भी। (16–19)

और ईमान वाले कहते हैं, "कोई सूरत क्यों न उतारी गई!" मगर जब एक पक्की सूरत उतार दी जाती है और उसमें लड़ाई का ज़िक्र होता है, तो तुम उन लोगों को जिनके दिलों में रोग है देखते हो कि तुम्हारी ओर यूँ ताकते हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी छा रही हो। तो उनके लिए बेहतर था फ़रमाँबरदारी और भली बात। फिर जब मामला पक्का हो जाए, तो अगर वे अल्लाह से सच्चे रहते तो यह उनके लिए बेहतर होता। तो क्या तुमसे यही उम्मीद है कि अगर तुम मुँह मोड़ लो, तो ज़मीन में बिगाड़ फैलाओ और अपने रिश्ते-नाते काट डालो? यही हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, तो उन्हें बहरा कर दिया और उनकी आँखें अंधी कर दीं। तो क्या वे क़ुरआन पर ग़ौर नहीं करते? या दिलों पर उनके ताले लगे हुए हैं? निश्चय ही जो लोग पीठ फेरकर पलट गए इसके बाद कि मार्गदर्शन उन पर स्पष्ट हो चुका था—शैतान ने उन्हें बहकाया और उन्हें झूठी उम्मीदें दिलाईं। यह इसलिए कि उन्होंने उन लोगों से जो अल्लाह की उतारी हुई चीज़ को नापसन्द करते हैं कहा, "कुछ मामलों में हम तुम्हारी बात मानेंगे।" और अल्लाह उनकी राज़ की बातें जानता है। (20–26)

तो उस समय क्या हाल होगा जब फ़रिश्ते उनकी जानें निकालेंगे, उनके चेहरों और उनकी पीठों पर मारते हुए? यह इसलिए कि वे उस चीज़ के पीछे चले जो अल्लाह को नाराज़ करती है और उसकी रज़ामन्दी को नापसन्द किया, तो उसने उनके कर्म अकारथ कर दिए। (27–28)

या जिन लोगों के दिलों में रोग है वे यह समझते हैं कि अल्लाह उनके कीने कभी ज़ाहिर न करेगा? और अगर हम चाहते, तो उन्हें तुम्हें दिखा देते, फिर तुम उन्हें उनकी निशानियों से पहचान लेते; और तुम उन्हें उनकी बात के ढंग से ज़रूर पहचान लोगे। और अल्लाह तुम्हारे सब कामों को जानता है। और हम तुम्हें ज़रूर आज़माएँगे यहाँ तक कि तुममें से जिहाद करने वालों और सब्र करने वालों को जान लें, और यहाँ तक कि तुम्हारे हालात को परख लें। निश्चय ही जिन लोगों ने सत्य का इनकार किया, दूसरों को अल्लाह की राह से रोका, और रसूल का विरोध किया इसके बाद कि मार्गदर्शन उन पर स्पष्ट हो चुका था, वे अल्लाह का कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे, और वह उनके कर्म अकारथ कर देगा। ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह की आज्ञा मानो

और रसूल की आज्ञा मानो, और अपने कर्म बरबाद न करो। निश्चय ही जिन लोगों ने सत्य का इनकार किया और दूसरों को अल्लाह की राह से रोका, फिर इनकार ही की हालत में मर गए—अल्लाह उन्हें हरगिज़ क्षमा न करेगा। (29–34)

तो तुम हिम्मत न हारो और सुलह की ओर न बुलाओ जबकि तुम्हीं ग़ालिब हो, और अल्लाह तुम्हारे साथ है, और वह तुम्हारे कर्मों का बदला हरगिज़ न घटाएगा। दुनिया की ज़िन्दगी तो बस खेल और तमाशा है; और अगर तुम ईमान लाओ और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, तो वह तुम्हें तुम्हारे बदले देगा और तुमसे तुम्हारे माल न माँगेगा। अगर वह तुमसे उन्हें माँगे और तुम पर ज़ोर डाले, तो तुम कंजूसी करने लगोगे, और वह तुम्हारे कीने ज़ाहिर कर देगा। देखो, तुम वे लोग हो जिन्हें अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए बुलाया जाता है, तो तुममें कुछ ऐसे हैं जो कंजूसी करते हैं—और जो कंजूसी करता है वह अपने ही साथ कंजूसी करता है। और अल्लाह निस्पृह है, और तुम मुहताज हो। और अगर तुम मुँह मोड़ोगे, तो वह तुम्हारी जगह दूसरे लोगों को ले आएगा, फिर वे तुम जैसे न होंगे। (35–38)

# 48. फ़तह (अल-फ़त्ह)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ऐ नबी, निश्चय ही हमने तुम्हें एक खुली फ़तह दी है, ताकि अल्लाह तुम्हारे अगले और पिछले क़ुसूर क्षमा कर दे, तुम पर अपनी नेमत पूरी करे, तुम्हें सीधे मार्ग पर चलाए, और तुम्हारी ज़बरदस्त मदद करे। वही है जिसने ईमान वालों के दिलों में सकीनत उतारी, ताकि वे अपने ईमान के साथ ईमान में और बढ़ जाएँ। और आसमानों और ज़मीन के लश्कर अल्लाह ही के हैं; और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। यह इसलिए, कि वह ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वे सदैव रहेंगे, और उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर दे—और अल्लाह के नज़दीक यही बड़ी कामयाबी है—और ताकि वह मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को, और अल्लाह के साथ साझी ठहराने वाले मर्दों और औरतों को यातना दे, जो अल्लाह के बारे में बुरे गुमान रखते हैं। बुरी गर्दिश उन्हीं पर है: और अल्लाह उन पर ग़ज़बनाक हुआ, उन पर लानत की और उनके लिए जहन्नम तैयार की—और वह बहुत बुरी जगह है। और आसमानों और ज़मीन के लश्कर अल्लाह ही के हैं; और अल्लाह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। ऐ नबी, हमने तुम्हें गवाह, शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा है, ताकि तुम लोग अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, उसकी मदद करो और उसका आदर करो, और सुबह और शाम अल्लाह की तसबीह करो। (1–9)

निश्चय ही जो लोग तुमसे बैअत करते हैं वे अल्लाह ही से बैअत करते हैं: अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है। तो जो कोई अपना अह्द तोड़ेगा वह अपने ही नुक़सान के लिए तोड़ेगा, और जो कोई उस अह्द को पूरा करेगा जो उसने अल्लाह से किया है—तो वह उसे बड़ा बदला देगा। जो देहाती अरब पीछे रह गए वे तुमसे कहेंगे, "हमें हमारे माल और हमारे घर वालों ने उलझाए रखा, तो हमारे लिए क्षमा माँगिए।" वे अपनी ज़बानों से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं। कह दो, "तो कौन है जो अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे लिए किसी चीज़ का अधिकार रखता हो, अगर वह तुम्हें कोई नुक़सान पहुँचाना चाहे या तुम्हें कोई फ़ायदा पहुँचाना चाहे? नहीं—बल्कि अल्लाह तुम्हारे सब कामों की ख़बर रखता है।" नहीं; बल्कि तुमने यह समझा कि रसूल और ईमान वाले अपने घर वालों की ओर कभी लौटकर न आएँगे, और यह बात तुम्हारे दिलों को भली लगी। और तुमने बुरे गुमान किए, और तुम हलाक होने वाले लोग थे। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान न लाए—तो हमने सत्य के इनकारियों के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है। और आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है: वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे यातना दे। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (10–14)

जब तुम ग़नीमतें लेने के लिए चलोगे, तो पीछे रह जाने वाले कहेंगे, "हमें भी अपने पीछे आने दो," वे चाहते हैं कि अल्लाह की बात बदल दें। कह दो, "तुम हमारे पीछे हरगिज़ न आओगे: अल्लाह पहले ही ऐसा कह

चुका है।" फिर वे कहेंगे, "नहीं, बल्कि तुम हमसे जलते हो।" बल्कि बात यह है कि वे बहुत ही कम समझते हैं। (15)

पीछे रह जाने वाले देहाती अरबों से कह दो, "जल्द ही तुम्हें एक बड़े ज़ोरावर क़ौम के मुक़ाबले के लिए बुलाया जाएगा, कि तुम उनसे लड़ो या वे समर्पण कर दें। तो अगर तुम आज्ञा मानोगे, तो अल्लाह तुम्हें अच्छा बदला देगा; और अगर तुम वैसे ही मुँह मोड़ोगे जैसे पहले मोड़ चुके हो, तो वह तुम्हें दुखद यातना देगा।" न अंधे पर कोई गुनाह है, न लँगड़े पर, न बीमार पर। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानेगा, उसे वह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं; और जो कोई मुँह मोड़ेगा, उसे वह दुखद यातना देगा। (16–17)

निश्चय ही अल्लाह ईमान वालों से राज़ी हुआ जब वे पेड़ के नीचे तुमसे बैअत कर रहे थे। तो उसने जान लिया जो कुछ उनके दिलों में था, फिर उन पर सकीनत उतारी और बदले में उन्हें एक क़रीब की फ़तह दी, और बहुत-सी ग़नीमतें जिन्हें वे हासिल करेंगे। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। अल्लाह ने तुमसे बहुत-सी ग़नीमतों का वादा किया है जिन्हें तुम हासिल करोगे, तो यह उसने तुम्हें जल्द ही दे दी, और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिए, और ताकि यह ईमान वालों के लिए एक निशानी हो और वह तुम्हें सीधे मार्ग पर चलाए; और कुछ दूसरी भी हैं जिन पर तुम अभी क़ाबू न पा सके, मगर अल्लाह ने उन्हें घेर रखा है। और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। (18–21)

और अगर सत्य के इनकारी तुमसे लड़ते, तो ज़रूर पीठ फेर जाते; फिर वे न कोई संरक्षक पाते न मददगार। यही अल्लाह की रीत है जो पहले से चली आ रही है; और तुम अल्लाह की रीत में कोई बदलाव न पाओगे। और वही है जिसने मक्का की वादी में उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिए, इसके बाद कि वह तुम्हें उन पर ग़लबा दे चुका था। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। ये वही लोग हैं जिन्होंने सत्य का इनकार किया, तुम्हें मसजिदे-हराम से रोका, और क़ुरबानी के जानवरों को भी रोके रखा कि वे अपनी क़ुरबानी की जगह न पहुँचें। और अगर कुछ ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें न होतीं, जिन्हें तुम नहीं जानते थे, कि तुम उन्हें रौंद डालते और फिर बेख़बरी में उनके कारण तुम पर इलज़ाम आता—तो अल्लाह तुम्हें लड़ने देता, यह इसलिए कि अल्लाह जिसे चाहे अपनी दयालुता में दाख़िल करे। अगर वे अलग-अलग हो गए होते, तो हम उनमें से सत्य के इनकारियों को दुखद यातना देते। जब सत्य के इनकारियों ने अपने दिलों में हमीयत बिठा ली, जाहिलियत की हमीयत, तो अल्लाह ने अपने रसूल पर और ईमान वालों पर अपनी सकीनत उतारी, और उन्हें अल्लाह के प्रति सचेतता की बात का पाबन्द रखा, और वे उसके ज़्यादा हक़दार और उसके लायक़ थे। और अल्लाह हर चीज़ का पूरा ज्ञान रखता है। (22–26)

निश्चय ही अल्लाह ने अपने रसूल का ख़्वाब सच्चाई के साथ सच कर दिखाया: तुम ज़रूर मसजिदे-हराम में दाख़िल होगे, अगर अल्लाह ने चाहा, अमन के साथ, अपने सिर मुँडाए हुए या बाल कतरवाए हुए, तुम्हें कोई डर न होगा। तो वह उस बात को जानता था जो तुम नहीं जानते थे, तो उसने इससे पहले एक क़रीब की

फ़तह दे दी। वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य के दीन के साथ भेजा, ताकि उसे हर दीन पर ग़ालिब कर दे। और गवाह के तौर पर अल्लाह काफ़ी है। मुहम्मद अल्लाह का रसूल है, और जो लोग उसके साथ हैं वे सत्य के इनकारियों पर सख़्त हैं, आपस में रहमदिल। तुम उन्हें रुकू और सजदे में देखते हो, वे अल्लाह का अनुग्रह और उसकी रज़ामन्दी ढूँढते हैं; उनकी निशानी उनके चेहरों पर सजदे के असर से है। यह है उनका हाल तौरात में; और इंजील में उनका हाल ऐसा है जैसे एक खेती जिसने अपनी कोंपल निकाली फिर उसे मज़बूत किया, फिर वह मोटी हुई और अपने तने पर सीधी खड़ी हो गई, बोने वालों को भली लगती है—ताकि उनके द्वारा वह सत्य के इनकारियों को जलाए। अल्लाह ने उनमें से उन लोगों से जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए क्षमा और बड़े बदले का वादा किया है। (27–29)

# 49. हुजरे (अल-हुजुरात)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो, और अल्लाह के प्रति सचेत रहो: निश्चय ही अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। ऐ ईमान लाने वालो, अपनी आवाज़ें नबी की आवाज़ से ऊँची न करो, और न उससे उस तरह ज़ोर से बात करो जिस तरह तुम आपस में एक-दूसरे से ज़ोर से बोलते हो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म अकारथ हो जाएँ और तुम्हें ख़बर तक न हो। निश्चय ही जो लोग अल्लाह के रसूल के सामने अपनी आवाज़ें धीमी रखते हैं वही हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने अपने प्रति सचेतता के लिए जाँच लिया है: उनके लिए क्षमा है और बड़ा बदला। निश्चय ही जो लोग तुम्हें कमरों के बाहर से पुकारते हैं—उनमें से अधिकतर बुद्धि से काम नहीं लेते। और अगर वे सब्र करते यहाँ तक कि तुम उनके पास निकल आते, तो यह उनके लिए बेहतर होता। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (1–5)

ऐ ईमान लाने वालो, अगर कोई अवज्ञाकारी तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए, तो उसकी छान-बीन कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम नादानी में किसी क़ौम को नुक़सान पहुँचा बैठो फिर अपने किए पर पछताओ। और जान लो कि तुम्हारे बीच अल्लाह का रसूल मौजूद है। अगर वह बहुत-से मामलों में तुम्हारी बात मान ले, तो तुम ज़रूर मुश्किल में पड़ जाओ। मगर अल्लाह ने तुम्हें ईमान प्यारा कर दिया और उसे तुम्हारे दिलों में सजा दिया, और इनकार, अवज्ञा और नाफ़रमानी को तुम्हारे लिए नापसन्द बना दिया। यही लोग सही राह पर हैं, अल्लाह के अनुग्रह और एहसान से। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। (6–8)

और अगर ईमान वालों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें, तो उनके बीच सुलह करा दो। फिर अगर उनमें से एक दूसरे पर ज़्यादती करे, तो ज़्यादती करने वाले से लड़ो यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म की ओर पलट आए; फिर अगर वह पलट आए, तो उनके बीच न्याय के साथ सुलह करा दो, और इनसाफ़ करो: निश्चय ही अल्लाह इनसाफ़ करने वालों को पसन्द करता है। ईमान वाले तो आपस में भाई-भाई हैं, तो अपने दो भाइयों के बीच सुलह करा दो, और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, ताकि तुम पर दया की जाए। (9–10)

ऐ ईमान लाने वालो, न मर्दों का कोई गिरोह दूसरे गिरोह का मज़ाक़ उड़ाए, हो सकता है कि वे उनसे बेहतर हों; और न औरतें दूसरी औरतों का मज़ाक़ उड़ाएँ, हो सकता है कि वे उनसे बेहतर हों। और आपस में एक-दूसरे को ताने न दो, और न एक-दूसरे को बुरे नामों से पुकारो। ईमान के बाद अवज्ञा का नाम ही बहुत बुरा है! और जो तौबा न करें—तो वही ज़ालिम हैं। ऐ ईमान लाने वालो, बहुत-से गुमानों से बचो, क्योंकि कुछ गुमान गुनाह होते हैं। और टोह में न लगो, और न तुममें से कोई किसी की ग़ीबत करे। क्या तुममें से कोई यह पसन्द करेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए? तो इससे तुम्हें घिन आएगी। और अल्लाह के प्रति सचेत रहो: निश्चय ही अल्लाह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला, सदा दयावान है। ऐ लोगो, हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया, और तुम्हें क़ौमें और क़बीले बनाया ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। निश्चय

ही अल्लाह के नज़दीक तुममें सबसे इज़्ज़त वाला वह है जो उसके प्रति सबसे ज़्यादा सचेत है। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जानने वाला, पूरी ख़बर रखने वाला है। (11–13)

देहाती अरब कहते हैं, "हम ईमान लाए।" कह दो, "तुम ईमान नहीं लाए; बल्कि यूँ कहो कि हमने समर्पण कर दिया, क्योंकि ईमान अभी तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुआ। और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानोगे, तो वह तुम्हारे कर्मों में से कुछ भी न घटाएगा। निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है।" ईमान वाले तो बस वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए फिर शक में न पड़े, और अपने माल और अपनी जान से अल्लाह की राह में जिहाद किया। वही सच्चे हैं। कह दो, "क्या तुम अल्लाह को अपना दीन जताते हो, हालाँकि अल्लाह वह सब जानता है जो आसमानों और ज़मीन में है? और अल्लाह हर चीज़ का पूरा ज्ञान रखता है।" वे तुम पर एहसान जताते हैं कि उन्होंने समर्पण कर दिया। कह दो, "अपने समर्पण का मुझ पर एहसान न जताओ। बल्कि अल्लाह का तुम पर एहसान है कि उसने तुम्हें ईमान की राह दिखाई, अगर तुम सच्चे हो।" निश्चय ही अल्लाह आसमानों और ज़मीन के परोक्ष को जानता है, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। (14–18)

# 50. क़ाफ़ (क़ाफ़)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क़ाफ़। क़सम है अज़मत वाले क़ुरआन की! बल्कि इन्हें इस पर अचम्भा हुआ कि इनके पास इन्हीं में से एक सचेत करने वाला आया, और सत्य के इनकारी बोले, "यह तो अजीब बात है। क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी हो जाएँगे? यह वापसी तो बहुत दूर की बात है।" हम ख़ूब जानते हैं कि ज़मीन उनमें से क्या कुछ घटाती है, और हमारे पास एक किताब है जो सब कुछ सुरक्षित रखती है। नहीं—बल्कि उन्होंने सत्य को झुठला दिया जब वह उनके पास आया, तो वे एक उलझी हुई हालत में पड़े हैं। क्या उन्होंने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा—कि हमने उसे कैसे बनाया और सजाया, और यह कि उसमें कोई दरार नहीं? और ज़मीन—हमने उसे फैलाया और उसमें जमे हुए पहाड़ डाल दिए, और उसमें हर तरह की ख़ुशनुमा चीज़ें जोड़ा-जोड़ा उगाईं, आँखें खोलने और याद दिलाने के लिए हर उस बन्दे के वास्ते जो अल्लाह की ओर पलटता है। और हमने आसमान से बरकत वाला पानी उतारा, फिर उससे बाग़ और कटने वाली खेती का अनाज उगाया, और खजूर के ऊँचे-ऊँचे पेड़ जिनके गुच्छे तह-पर-तह होते हैं, बन्दों की रोज़ी के लिए; और उससे हमने एक मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया। इसी तरह निकलना होगा। इनसे पहले नूह की क़ौम ने झुठलाया, और कुएँ वालों ने और समूद ने, और आद ने और फ़िरऔन ने और लूत के भाइयों ने, और घने बन के रहने वालों ने और तुब्बा की क़ौम ने: हर एक ने रसूलों को झुठलाया, तो मेरी धमकी पूरी होकर रही। (1–14)

तो क्या हम पहली बार पैदा करके थक गए थे? नहीं—बल्कि ये लोग नए सिरे से पैदा किए जाने के बारे में शक में पड़े हैं। और हमने इनसान को पैदा किया, और हम जानते हैं जो वसवसे उसका अपना जी उसके मन में डालता है: और हम उसकी शहरग से भी ज़्यादा उसके क़रीब हैं। जब दो लेने वाले लेते जाते हैं, दाएँ और बाएँ बैठे हुए, वह कोई बात ज़बान से नहीं निकालता मगर उसके पास एक निगरानी करने वाला तैयार रहता है। और मौत की बेहोशी सत्य लेकर आ पहुँची: "यही है वह जिससे तू कतराता था।" (15–19)

और सूर फूँका जाएगा: "यही है वह दिन जिसकी धमकी दी गई थी।" और हर जान इस हाल में आएगी कि उसके साथ एक हाँकने वाला होगा और एक गवाह। "तू इससे बेपरवाही में पड़ा था; तो अब हमने तुझ पर से तेरा परदा हटा दिया, तो आज तेरी निगाह बड़ी तेज़ है।" और उसका साथी कहेगा, "यह है जो मेरे पास तैयार है।" "तुम दोनों जहन्नम में डाल दो हर हठी इनकारी को, भलाई से रोकने वाले, हद से बढ़ने वाले, शक में पड़े हुए को, जिसने अल्लाह के साथ दूसरा इलाह ठहरा लिया। तो उसे कठोर यातना में डाल दो।" उसका साथी कहेगा, "ऐ हमारे रब, मैंने इसे सरकश नहीं बनाया; बल्कि यह ख़ुद ही दूर की गुमराही में पड़ा था।" वह कहेगा, "मेरे सामने झगड़ा न करो; मैं तुम्हारे पास पहले ही धमकी भेज चुका था। मेरे यहाँ बात बदली नहीं जाती, और मैं बन्दों पर कभी ज़ुल्म करने वाला नहीं।" जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे, "क्या तू भर गई?" और वह कहेगी, "क्या कुछ और भी है?" और जन्नत अल्लाह के प्रति सचेत रहने वालों के क़रीब ले आई जाएगी, कुछ दूर न होगी: "यह है वह जिसका तुमसे वादा किया जाता था—हर उस आदमी के लिए जो

अल्लाह की ओर पलटने वाला और उसकी हदों की हिफ़ाज़त करने वाला था, जो बिन देखे रहमान से डरा और उसकी ओर झुका हुआ दिल लेकर आया। इसमें सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ। यह हमेशगी का दिन है।" वहाँ उनके लिए वह सब होगा जो वे चाहेंगे, और हमारे पास और भी बहुत कुछ है। (20–35)

और हम इनसे पहले कितनी ही नस्लें हलाक कर चुके हैं, जो इनसे कहीं ज़्यादा ज़ोरावर थीं! तो उन्होंने शहरों में छान मारा—क्या कोई बच निकलने की जगह है? निश्चय ही इसमें उसके लिए याददिहानी है जिसके पास दिल हो, या जो हाज़िर-दिमाग़ होकर कान लगाए। और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के बीच है छह युगों में पैदा किया, और हमें कोई थकान न छू सकी। तो जो कुछ वे कहते हैं उस पर सब्र करो, और सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले अपने रब की हम्द के साथ तसबीह करो; और रात के कुछ हिस्से में भी उसकी तसबीह करो, और सजदों के बाद भी। और कान लगाकर सुनो जिस दिन पुकारने वाला एक क़रीब की जगह से पुकारेगा—जिस दिन वे उस कड़क को ठीक-ठीक सुनेंगे: वही निकलने का दिन है। निश्चय ही हम ही ज़िन्दगी देते और मौत देते हैं, और हमारी ही ओर लौटना है—जिस दिन ज़मीन उन पर से फट जाएगी और वे तेज़ी से निकल पड़ेंगे। यह इकट्ठा करना हमारे लिए आसान है। जो कुछ वे कहते हैं हम उसे ख़ूब जानते हैं, और तुम उन पर ज़बरदस्ती करने वाले नहीं हो। तो क़ुरआन के द्वारा उसे नसीहत करो जो मेरी धमकी से डरे। (36–45)

# 51. बिखेरने वाली हवाएँ (अज़-ज़ारियात)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क़सम है उन हवाओं की जो दूर-दूर तक बिखेरती हैं, फिर उन बादलों की जो भारी बोझ उठाते हैं, फिर उन नौकाओं की जो आसानी से चलती हैं, फिर उन फ़रिश्तों की जो हुक्म से बाँटते हैं: जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जा रहा है वह निश्चय ही सच्ची है, और बदला निश्चय ही होकर रहेगा। क़सम है राहों वाले आसमान की, तुम इसके बारे में अलग-अलग बातों में पड़े हो; इससे वही फेरा जाता है जो फिर गया। मारे जाएँ अटकल दौड़ाने वाले, जो बेपरवाही के रेले में डूबे पड़े हैं![44] वे पूछते हैं, "बदले का दिन कब होगा?" वह उस दिन होगा जब वे आग पर तपाए जाएँगे: "चखो अपनी आज़माइश का मज़ा! यही है वह जिसके लिए तुम जल्दी मचाते थे।" निश्चय ही जो अल्लाह के प्रति सचेत रहे वे बाग़ों और सोतों में होंगे, जो कुछ उनका रब उन्हें देगा उसे ले रहे होंगे, क्योंकि वे इससे पहले अच्छा करने वाले थे: वे रात को बहुत कम सोते थे, और सहर की घड़ियों में क्षमा माँगते थे, और उनके माल में माँगने वाले और महरूम का हक़ था। और ज़मीन में यक़ीन करने वालों के लिए निशानियाँ हैं, और ख़ुद तुम्हारे अपने भीतर भी। तो क्या तुम देखते नहीं? और आसमान में तुम्हारी रोज़ी है, और वह सब जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है। तो आसमान और ज़मीन के रब की क़सम, यह बात बिलकुल सत्य है—वैसे ही जैसे तुम बोलते हो। (1–23)

क्या तुम तक इबराहीम के इज़्ज़त वाले मेहमानों की ख़बर पहुँची है? जब वे उसके पास आए और कहा, "सलाम," तो उसने कहा, "सलाम"—और जी में कहा, "अनजाने लोग हैं।" फिर वह चुपके से अपने घर वालों के पास गया और एक मोटा-ताज़ा बछड़ा ले आया, और उसे उनके सामने रखा। उसने कहा, "क्या आप लोग खाते नहीं?" और उसने उनसे मन में कुछ डर महसूस किया। वे बोले, "डरो नहीं," और उन्होंने उसे एक ज्ञान वाले बेटे की शुभ-सूचना दी। तब उसकी पत्नी चिल्लाती हुई आगे बढ़ी, उसने अपना चेहरा पीट लिया, और बोली, "एक बुढ़िया, बाँझ!" वे बोले, "तुम्हारे रब ने ऐसा ही कहा है; निश्चय ही वही हिकमत वाला, सब कुछ जानने वाला है।" उसने कहा, "तो ऐ भेजे हुओ, तुम्हारी मुहिम क्या है?" वे बोले, "हम एक अपराधी क़ौम की ओर भेजे गए हैं, ताकि उन पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाएँ, जो तुम्हारे रब के यहाँ हर हद से गुज़र जाने वालों के लिए निशान लगे हुए हैं।" फिर हमने वहाँ जितने ईमान वाले थे उन्हें निकाल लिया, मगर हमने वहाँ अल्लाह के आगे समर्पित लोगों का बस एक ही घर पाया, और हमने वहाँ उन लोगों के लिए एक निशानी छोड़ दी जो दुखद यातना से डरते हैं। (24–37)

और मूसा में भी एक निशानी है: जब हमने उसे खुले प्रमाण के साथ फ़िरऔन के पास भेजा, तो वह अपने बल-बूते के घमंड में मुँह फेर गया, और बोला, "जादूगर है, या दीवाना!" तो हमने उसे और उसके लश्करों को पकड़ लिया और उन्हें समुद्र में फेंक दिया, और वह मलामत के लायक़ था। और आद में भी: जब हमने

[44] **नास्तिकता की बुनियाद अटकल (ज़न्न) पर है: एक वैज्ञानिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या**

उन पर बाँझ आँधी भेजी, जो जिस चीज़ पर से गुज़री उसे गली-सड़ी हड्डी की तरह करके छोड़ा। और समूद में भी: जब उनसे कहा गया, "एक समय तक मज़े कर लो," मगर उन्होंने अपने रब के हुक्म से सरकशी की, तो उन्हें कड़क ने आ पकड़ा और वे देखते रह गए, फिर न वे उठ सके, और न अपना बचाव कर सके। और इनसे पहले नूह की क़ौम को भी: निश्चय ही वे अवज्ञाकारी लोग थे। और आसमान—हमने उसे शक्ति के साथ बनाया, और निश्चय ही हम उसे फैलाते जा रहे हैं। और ज़मीन—हमने उसे बिछाया; तो हम क्या ही अच्छे बिछाने वाले हैं! और हर चीज़ के हमने जोड़े पैदा किए, ताकि तुम नसीहत पकड़ो। तो अल्लाह की ओर दौड़ो: मैं उसकी ओर से तुम्हारे लिए खुला सचेत करने वाला हूँ। और अल्लाह के साथ कोई दूसरा इलाह न ठहराओ: मैं उसकी ओर से तुम्हारे लिए खुला सचेत करने वाला हूँ। (38–51)

इसी तरह, इनसे पहले के लोगों के पास भी जो रसूल आया उन्होंने यही कहा, "जादूगर है, या दीवाना!" क्या ये एक-दूसरे को इसी की वसीयत करते आए हैं? नहीं—बल्कि ये हर हद से गुज़र जाने वाले लोग हैं। तो उनसे मुँह फेर लो; तुम पर कोई मलामत नहीं। और नसीहत करते रहो, क्योंकि नसीहत ईमान वालों को फ़ायदा देती है। (52–55)

और मैंने जिन्नों और इनसानों को बस इसी लिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें। मैं उनसे कोई रोज़ी नहीं चाहता, और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलाएँ। निश्चय ही अल्लाह ही रोज़ी देने वाला है, शक्ति वाला, अटल। तो जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उनके लिए भी वैसा ही हिस्सा है जैसा उनके साथियों का हिस्सा था—तो वे मुझसे जल्दी न मचाएँ। तो तबाही है सत्य के इनकारियों के लिए, उनके उस दिन के कारण जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। (56–60)

# 52. पहाड़ (अत-तूर)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क़सम है तूर की, और उस किताब की जो खुले हुए वरक़ में लिखी हुई है, और उस आबाद घर की, और उस ऊँची छत की, और उस लबालब भरे हुए समुद्र की: तुम्हारे रब की यातना ज़रूर होकर रहेगी—उसे कोई टालने वाला नहीं—जिस दिन आसमान बुरी तरह डगमगाएगा, और पहाड़ चल पड़ेंगे। तो उस दिन तबाही है झुठलाने वालों के लिए, जो बेहूदा बातों में पड़े खेल रहे हैं। जिस दिन वे धक्के दे-देकर जहन्नम की आग की ओर धकेले जाएँगे: "यही है वह आग जिसे तुम झुठलाया करते थे। तो क्या यह जादू है? या तुम्हें सूझता नहीं? इसमें जलो! अब सब्र करो या न करो, तुम्हारे लिए बराबर है: तुम्हें बस उसी का बदला दिया जा रहा है जो तुम करते थे।" (1–16)

निश्चय ही अल्लाह के प्रति सचेत रहने वाले बाग़ों और नेमतों में होंगे, जो कुछ उनके रब ने उन्हें दिया है उस पर मगन, और उनके रब ने उन्हें दहकती आग की यातना से बचा लिया। "मज़े से खाओ और पियो, उन कामों के बदले जो तुम करते थे," क़तार में बिछे हुए तख़्तों पर तकिया लगाए हुए। और हम उनके जोड़े सुन्दर आँखों वाली साथिनों से लगा देंगे। और जो लोग ईमान लाए, और उनकी औलाद भी ईमान में उनके पीछे चली—हम उनकी औलाद को उनसे मिला देंगे, और उनके कर्मों में से उनका कुछ भी न घटाएँगे: हर आदमी अपनी कमाई के बदले गिरवी है। और हम उन्हें फल और गोश्त, जो भी उनका जी चाहेगा, देते चले जाएँगे। वहाँ वे एक-दूसरे से जाम लेते-देते होंगे जिसमें न कोई बेहूदा बात होगी न गुनाह। और उनकी ख़िदमत के लिए उनके लड़के उनके पास आते-जाते होंगे, मानो वे छिपाकर रखे हुए मोती हों। और वे एक-दूसरे की ओर रुख़ करके हाल पूछेंगे। कहेंगे, "हम इससे पहले अपने घर वालों में डरते हुए रहते थे, तो अल्लाह ने हम पर एहसान किया और हमें झुलसा देने वाली लू की यातना से बचा लिया। हम इससे पहले उसी को पुकारते थे: निश्चय ही वही बड़ा एहसान करने वाला, सदा दयावान है।" तो ऐ नबी, नसीहत करते रहो: अपने रब के अनुग्रह से तुम न काहिन हो न दीवाने। या वे कहते हैं, "यह कवि है—हम इसके बारे में ज़माने की गर्दिश की राह देख रहे हैं"? कह दो, "राह देखो; मैं भी तुम्हारे साथ राह देखने वालों में हूँ।" क्या उनकी अक़्लें उन्हें यही सिखाती हैं, या वे हर हद से गुज़र जाने वाले लोग हैं? या वे कहते हैं, "इसने इसे ख़ुद गढ़ लिया है"? नहीं—बल्कि वे ईमान नहीं लाते। तो उन्हें चाहिए कि इस जैसा कोई कलाम ले आएँ, अगर वे सच्चे हैं। (17–34)

या वे किसी चीज़ के बिना ही पैदा हो गए? या वे ख़ुद ही पैदा करने वाले हैं? या उन्होंने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है? नहीं—बल्कि वे यक़ीन नहीं रखते।[45] (35–36)

---

[45] पवित्र क़ुरआन: अल्लाह ही सबसे पहला और हर चीज़ का आरम्भ करने वाला है! – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस
**वीडियो: शून्य के बजाय ख़ुदा क्यों?**
वीडियो: शून्य के नौ स्तर कौन-से हैं? | रॉबर्ट लॉरेंस कून – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस

या उनके पास तुम्हारे रब के ख़ज़ाने हैं? या वही सब पर हाकिम हैं? या उनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर चढ़कर वे सुन लेते हैं? तो उनका सुनने वाला कोई खुला प्रमाण ले आए। या उसके लिए बेटियाँ हैं, और तुम्हारे लिए बेटे? या तुम उनसे कोई बदला माँगते हो, कि वे तावान के बोझ तले दबे जा रहे हैं? या उनके पास परोक्ष का ज्ञान है, कि वे उसे लिख लेते हैं? या वे कोई चाल चलना चाहते हैं? तो सत्य के इनकारी ख़ुद ही उस चाल का शिकार होंगे। या उनका अल्लाह के सिवा कोई और इलाह है? पाक है अल्लाह उससे जो वे साझी ठहराते हैं! (37–43)

और अगर वे आसमान का कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें, तो कहेंगे, "तह-पर-तह जमा हुआ बादल है।" तो उन्हें छोड़ दो यहाँ तक कि वे अपने उस दिन से जा मिलें, जिसमें वे बेहोश होकर गिर पड़ेंगे—जिस दिन उनकी चाल उनके कुछ भी काम न आएगी, और न उनकी मदद की जाएगी। और जिन्होंने ज़ुल्म किया उनके लिए उससे पहले भी एक यातना है, मगर उनमें से अधिकतर जानते नहीं। और अपने रब के फ़ैसले पर सब्र किए रहो, क्योंकि तुम हमारी निगाहों में हो; और जब तुम उठो तो अपने रब की हम्द के साथ तसबीह करो, और रात के कुछ हिस्से में भी उसकी तसबीह करो, और तारों के ढलते समय भी। (44–49)

---

आख़िरी सवालों को ठीक ढंग से पूछना ही नास्तिकता का खंडन कर देता है
वीडियो: परम शून्यता की कल्पना करके ख़ुदा तक पहुँचना

# 53. तारा (अन-नज्म)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क़सम है तारे की जब वह डूबे! तुम्हारा साथी न भटका है, न बहका है, और न वह अपनी इच्छा से बोलता है। यह तो बस एक वह्य है जो की जाती है, इसे उसने सिखाया है जो बड़ी ज़बरदस्त शक्ति वाला है, बल वाला, फिर वह सीधा खड़ा हुआ जबकि वह सबसे ऊँचे क्षितिज पर था; फिर वह क़रीब आया और उतर आया, यहाँ तक कि दो कमानों के बराबर फ़ासला रह गया, या उससे भी कम, फिर उसने उसके बन्दे की ओर वह्य की जो वह्य की। दिल ने उसे झूठ न कहा जो उसने देखा। तो क्या तुम उससे उस चीज़ पर झगड़ते हो जो वह देखता है? और निश्चय ही उसने उसे एक बार और भी देखा, आख़िरी हद की बेरी के पास, जिसके पास ठिकाने की जन्नत है, जब उस बेरी पर छा रहा था जो कुछ छा रहा था। निगाह न बहकी, न हद से बढ़ी। निश्चय ही उसने अपने रब की कुछ बड़ी-बड़ी निशानियाँ देखीं। (1–18)

भला तुमने लात और उज़्ज़ा को देखा, और तीसरी, उस एक और, मनात को? क्या तुम्हारे लिए बेटे और उसके लिए बेटियाँ? तब तो यह बड़ी बेइनसाफ़ी का बँटवारा हुआ! ये तो बस कुछ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं, जिनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा। वे बस अटकल के और उस चीज़ के पीछे चल रहे हैं जो उनके जी चाहते हैं—हालाँकि उनके रब की ओर से उनके पास मार्गदर्शन आ चुका है। या इनसान को वह सब मिल जाएगा जिसकी वह आरज़ू करे? तो आख़िरत भी अल्लाह ही की है और दुनिया भी। और आसमानों में कितने ही फ़रिश्ते हैं जिनकी सिफ़ारिश कुछ काम नहीं आती, सिवाय इसके कि अल्लाह जिसके लिए चाहे इजाज़त दे और पसन्द करे! (19–27)

निश्चय ही जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वे फ़रिश्तों के नाम औरतों के-से रखते हैं। हालाँकि उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं; वे बस अटकल के पीछे चलते हैं, और अटकल सत्य की जगह कुछ भी काम नहीं देती।[46] (28)

तो तुम उससे मुँह फेर लो जो हमारी याद से मुँह मोड़े और दुनिया की ज़िन्दगी के सिवा कुछ न चाहे।[47] यही उनके ज्ञान की पहुँच है। निश्चय ही तुम्हारा रब उसे ख़ूब जानता है जो उसकी राह से भटक गया, और वह उसे भी ख़ूब जानता है जो राह पर है। और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है, ताकि वह बुरा करने वालों को उनके किए का बदला दे, और अच्छा करने वालों को सबसे अच्छा बदला दे—वे जो बड़े-बड़े गुनाहों और अश्लील कामों से बचते हैं, सिवाय छोटी-मोटी चूकों के। निश्चय ही तुम्हारा रब बड़ी समाई वाली क्षमा वाला है। वह तुम्हें ख़ूब जानता था जब उसने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया

[46] **नास्तिकता की बुनियाद अटकल (ज़न्न) पर है: एक वैज्ञानिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या**

[47] ख़ुदा का इनकार और आख़िरत का इनकार साथ-साथ चलते हैं, और क़ुरआन की कई आयतों में यह बात आई है।

और जब तुम अपनी माँओं के पेट में बच्चे थे। तो अपनी पाकी का दावा न करो: वही ख़ूब जानता है कि कौन उसके प्रति सचेत है। (29–32)

भला तुमने उसे देखा जिसने मुँह मोड़ लिया, जिसने थोड़ा-सा दिया फिर हाथ रोक लिया? क्या उसके पास परोक्ष का ज्ञान है, कि वह देख रहा है? या उसे उसकी ख़बर नहीं दी गई जो मूसा के सहीफ़ों में है, और इबराहीम के, जिसने अपना हक़ अदा कर दिया: कि कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा; और यह कि इनसान के लिए बस वही है जिसकी उसने कोशिश की; और यह कि उसकी कोशिश देखी जाएगी, फिर उसे उसका पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा; और यह कि आख़िरकार पहुँचना तुम्हारे रब ही के पास है; और यह कि वही हँसाता है और वही रुलाता है; और यह कि वही मौत देता है और वही ज़िन्दगी देता है; और यह कि उसी ने दोनों क़िस्में, नर और मादा, पैदा कीं, एक बूँद से जब वह टपकाई जाती है; और यह कि दूसरी बार उठा खड़ा करना उसी के ज़िम्मे है; और यह कि वही मालदार करता और पूँजी देता है; और यह कि वही शेअरा का रब है; और यह कि उसी ने अगले आद को हलाक किया और समूद को भी, फिर किसी को बाक़ी न छोड़ा, और उनसे पहले नूह की क़ौम को भी—निश्चय ही वे सबसे ज़्यादा ज़ालिम और सबसे ज़्यादा सरकश थे; और उसी ने उलटी हुई बस्तियों को दे पटका, फिर उन पर छा गया जो कुछ छा गया। तो तुम अपने रब की किन-किन नेमतों में झगड़ोगे? (33–55)

यह भी अगले सचेत करने वालों में से एक सचेत करने वाला है। क़रीब आने वाली घड़ी क़रीब आ लगी: अल्लाह के सिवा कोई उसे खोलने वाला नहीं। तो क्या तुम इस बात पर आश्चर्य करते हो, और हँसते हो और रोते नहीं, और तुम ग़फ़लत में पड़े खेल रहे हो? तो अल्लाह के आगे सजदा करो और इबादत करो! (56–62)

# 54. चाँद (अल-क़मर)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

वह घड़ी क़रीब आ गई, और चाँद फट गया। (1)

फिर भी अगर वे कोई निशानी देखते हैं, तो मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं, "यह तो हमेशा का चला आता जादू है।" और उन्होंने झुठलाया और अपनी इच्छाओं के पीछे चले—हालाँकि हर मामला अपने ठिकाने पर पहुँचकर रहेगा। और उनके पास वे ख़बरें आ चुकी हैं जिनमें काफ़ी डाँट है—पहुँची हुई हिकमत—मगर चेतावनियाँ कुछ काम नहीं आतीं। तो उनसे मुँह फेर लो। जिस दिन पुकारने वाला एक बड़ी नागवार चीज़ की ओर पुकारेगा, वे झुकी हुई निगाहों के साथ क़ब्रों से निकलेंगे मानो बिखरी हुई टिड्डियाँ हों, पुकारने वाले की ओर दौड़ते हुए। सत्य के इनकारी कहेंगे, "यह तो बड़ा कठिन दिन है।" (2–8)

इनसे पहले नूह की क़ौम ने झुठलाया: तो उन्होंने हमारे बन्दे को झुठलाया और कहा, "दीवाना है!" और उसे झिड़क दिया गया। तो उसने अपने रब को पुकारा, "मैं दब गया हूँ, तो तू मेरी मदद कर!" तब हमने मूसलाधार पानी से आसमान के दरवाज़े खोल दिए, और ज़मीन को सोतों से फाड़ दिया, तो सारा पानी उस काम के लिए मिल गया जो पहले ठहर चुका था। और हमने उसे तख़्तों और कीलों वाली नौका पर सवार किया, जो हमारी आँखों के सामने चलती थी—यह बदला था उसका जिसकी नाक़द्री की गई थी। और हमने उसे एक निशानी बनाकर छोड़ दिया: तो है कोई नसीहत पकड़ने वाला? तो कैसी रही मेरी यातना और मेरी चेतावनियाँ! और निश्चय ही हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है: तो है कोई नसीहत पकड़ने वाला? (9–17)

आद ने झुठलाया। तो कैसी रही मेरी यातना और मेरी चेतावनियाँ! हमने एक लगातार नहूसत के दिन उन पर एक सनसनाती आँधी भेजी, जो लोगों को यूँ उखाड़ फेंकती थी मानो वे उखड़े हुए खजूर के तने हों। तो कैसी रही मेरी यातना और मेरी चेतावनियाँ! और निश्चय ही हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है: तो है कोई नसीहत पकड़ने वाला? (18–22)

समूद ने चेतावनियों को झुठलाया। वे बोले, "क्या हम अपने ही में के एक अकेले इनसान के पीछे चलें? तब तो हम ज़रूर गुमराही और दीवानगी में होंगे। क्या हम सबमें से बस उसी पर याददिहानी डाली गई? नहीं—बल्कि वह बड़ा झूठा, शेख़ीबाज़ है।" कल ही वे जान लेंगे कि कौन बड़ा झूठा, शेख़ीबाज़ है! हम ऊँटनी को उनकी आज़माइश के लिए भेज रहे हैं, तो उन्हें देखते रहो, और सब्र से काम लो। और उन्हें बता दो कि पानी उनके बीच बाँट दिया गया है: हर एक अपनी बारी पर हाज़िर हो। मगर उन्होंने अपने साथी को पुकारा, तो उसने हथियार उठाया और उसकी कूँचें काट डालीं। तो कैसी रही मेरी यातना और मेरी चेतावनियाँ! हमने उन पर एक ही कड़क भेजी, तो वे बाड़ लगाने वाले की रौंदी हुई सूखी टहनियों की तरह होकर रह गए।

और निश्चय ही हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है: तो है कोई नसीहत पकड़ने वाला? (23–32)

लूत की क़ौम ने चेतावनियों को झुठलाया। हमने उन पर पत्थर बरसाने वाली आँधी भेजी—सिवाय लूत के घर वालों के, जिन्हें हमने सहर के समय बचा लिया, अपनी ओर से एहसान के तौर पर। हम शुक्र करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। और उसने उन्हें हमारी पकड़ से सचेत कर दिया था, मगर वे चेतावनियों में झगड़ते रहे। और उन्होंने उससे उसके मेहमानों तक को माँगा, तो हमने उनकी आँखें मिटा दीं: “अब चखो मेरी यातना और मेरी चेतावनियों का मज़ा!” और सुबह-सवेरे एक ठहर जाने वाली यातना ने उन्हें आ लिया: “अब चखो मेरी यातना और मेरी चेतावनियों का मज़ा!” और निश्चय ही हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है: तो है कोई नसीहत पकड़ने वाला? (33–40)

और फ़िरऔन के लोगों के पास भी चेतावनियाँ आईं। उन्होंने हमारी सारी निशानियों को झुठला दिया, तो हमने उन्हें उस तरह पकड़ा जैसे एक प्रभुत्वशाली, सामर्थ्य वाला पकड़ता है। (41–42)

क्या तुम्हारे इनकारी उन लोगों से बेहतर हैं? या तुम्हारे लिए सहीफ़ों में कोई छूट लिखी हुई है? या वे कहते हैं, “हम एक जत्था हैं, जो ग़ालिब होकर रहेगा”? जल्द ही यह जत्था मात खाएगा और वे पीठ फेरकर भागेंगे। नहीं—बल्कि वह घड़ी उनके वादे का समय है, और वह घड़ी कहीं ज़्यादा आफ़त वाली और कहीं ज़्यादा कड़वी है। निश्चय ही अपराधी गुमराही और दीवानगी में हैं। जिस दिन वे अपने मुँह के बल आग में घसीटे जाएँगे: “चखो जहन्नम की लपट का मज़ा!” निश्चय ही हमने हर चीज़ एक अन्दाज़े के साथ पैदा की है। और हमारा हुक्म बस एक ही बात होता है, जैसे पलक का झपकना। और हम तुम जैसों को हलाक कर चुके हैं—तो है कोई नसीहत पकड़ने वाला? (43–51)

और जो कुछ उन्होंने किया वह सब सहीफ़ों में है: और हर छोटी और बड़ी बात लिखी हुई है। निश्चय ही अल्लाह के प्रति सचेत रहने वाले बाग़ों और नहरों में होंगे, सच्ची बैठक में, उस बादशाह के पास जो पूरी सामर्थ्य वाला है। (52–55)

# 55. रहमान (अर-रहमान)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

रहमान: उसी ने क़ुरआन सिखाया, इनसान को पैदा किया, और उसे साफ़-साफ़ बोलना सिखाया। सूरज और चाँद एक ठीक-ठीक हिसाब से चल रहे हैं, और तारे और पेड़ सजदा करते हैं। और आसमान—उसने उसे ऊँचा किया, और तराज़ू रख दी, ताकि तुम तराज़ू में ज़्यादती न करो: और इनसाफ़ के साथ तौल सीधी रखो, और तराज़ू में कमी न करो। और ज़मीन—उसने उसे सारी ख़िल्क़त के लिए बिछाया, उसमें फल हैं, और खजूर के पेड़ जिनके गुच्छों पर ग़िलाफ़ होते हैं, और भूसे वाला अनाज, और ख़ुशबूदार फूल-पत्ते। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? (1–13)

उसने इनसान को ठीकरे की तरह खनखनाती सूखी मिट्टी से पैदा किया, और जिन्नों को आग की बिना धुएँ की लपट से पैदा किया। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? वही दोनों पूरबों का रब है और दोनों पश्चिमों का रब। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? उसने दो समुद्रों को छोड़ दिया कि आपस में मिल जाएँ, फिर भी उनके बीच एक परदा है जिससे वे आगे नहीं बढ़ते। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? उन दोनों से मोती और मूँगे निकलते हैं। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? और उसी की हैं वे नौकाएँ जो समुद्र में पहाड़ों की तरह ऊँची उठी हुई हैं। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? (14–25)

जो कोई भी इस ज़मीन पर है मिट जाने वाला है, और तुम्हारे रब का चेहरा ही बाक़ी रहेगा, जो जलाल और इज़्ज़त वाला है। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? जो कोई आसमानों और ज़मीन में है उसी से माँगता है; हर दिन वह किसी न किसी काम में है। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? ऐ दोनों बोझो, जल्द ही हम तुम्हारी ओर ध्यान देंगे! तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? ऐ जिन्नों और इनसानों के गिरोह, अगर तुममें यह ताक़त हो कि आसमानों और ज़मीन की सरहदों से निकल जाओ, तो निकल जाओ! तुम नहीं निकल सकते मगर ज़ोर के साथ। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? तुम दोनों पर आग का शोला और पिघला हुआ ताँबा छोड़ा जाएगा, फिर तुम अपना बचाव न कर सकोगे। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? फिर जब आसमान फट जाएगा और लाल चमड़े की तरह सुर्ख़ हो जाएगा—तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? तो उस दिन न किसी इनसान से उसके गुनाह के बारे में पूछा जाएगा न किसी जिन्न से। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? अपराधी अपनी निशानियों से पहचान लिए जाएँगे, फिर पेशानी के बालों और पाँवों से पकड़े जाएँगे। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? यह है वह जहन्नम, जिसे अपराधी झुठलाते हैं; वे उसके और खौलते हुए गर्म पानी के बीच चक्कर काटते फिरेंगे। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? (26–45)

और जो कोई अपने रब के सामने खड़े होने से डरा उसके लिए दो बाग़ हैं। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? दोनों घनी शाख़ों वाले। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? दोनों में दो बहते हुए सोते हैं। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? दोनों में हर फल की दो-दो क़िस्में हैं। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? वे ऐसे बिछौनों पर तकिया लगाए होंगे जिनके अस्तर दबीज़ रेशम के होंगे, और दोनों बाग़ों के फल झुके हुए क़रीब होंगे। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? उनमें निगाहें नीची रखने वालियाँ होंगी, जिन्हें उनसे पहले न किसी इनसान ने छुआ होगा न किसी जिन्न ने। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? मानो वे याक़ूत और मूँगे हैं। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? भलाई का बदला भलाई के सिवा और क्या है? तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? (46–61)

और इन दोनों के सिवा दो बाग़ और हैं—तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? गहरे हरे-भरे। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? दोनों में दो उबलते हुए सोते हैं। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? दोनों में फल हैं, और खजूरें, और अनार। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? उनमें नेक और ख़ूबसूरत साथिनें होंगी। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? सुन्दर आँखों वाली साथिनें, ख़ेमों में ठहराई हुई। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? जिन्हें उनसे पहले न किसी इनसान ने छुआ होगा न किसी जिन्न ने। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? हरे गाव-तकियों और उम्दा, ख़ूबसूरत क़ालीनों पर तकिया लगाए हुए। तो तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? बड़ी बरकत वाला है तुम्हारे रब का नाम, जो जलाल और इज़्ज़त वाला है।[48] (62–78)

[48] **सूरा रहमान की व्याख्या, एक तस्वीर के साथ और केवल एक पैराग्राफ़ में**
सूरा अर-रहमान: रहमत और मेहरबानी वाला रब
इबराहीमी धर्मों का पालनहार ख़ुदा: सादा पानी आपको यह कहानी सुना देगा
ज़रा-सा मोड़ डेविड एटनबरो को इबराहीमी धर्मों के ख़ुदा का एक बड़ा उस्ताद बना देता है
हमारे कृपाशील ख़ुदा के लिए दस की घात पाँच सौ दलीलें

# 56. होकर रहने वाली (अल-वाक़िआ)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

जब वह होकर रहने वाली घटना घट जाएगी—उसके घटने में कोई झूठ नहीं—वह किसी को पस्त करने वाली होगी, किसी को ऊँचा करने वाली। जब ज़मीन बुरी तरह हिला डाली जाएगी, और पहाड़ चूर-चूर कर दिए जाएँगे, और बिखरी हुई धूल होकर रह जाएँगे, और तुम तीन क़िस्मों में बँट जाओगे: तो दाहिने हाथ वाले—क्या कहने दाहिने हाथ वालों के! और बाएँ हाथ वाले—क्या हाल होगा बाएँ हाथ वालों का! और आगे बढ़ जाने वाले तो आगे बढ़ जाने वाले ही हैं: वही क़रीब किए हुए हैं, नेमत भरे बाग़ों में—अगलों में से एक बड़ा गिरोह और पिछलों में से थोड़े-से। सोने के तारों से बुने हुए तख़्तों पर, उन पर तकिया लगाए हुए, आमने-सामने। उनके पास सदा एक ही हाल पर रहने वाले लड़के आबख़ोरे, जग और बहते सोते का जाम लिए फिरते होंगे—न उससे उनके सिर में दर्द होगा, और न उनकी अक़्ल बहकेगी—और फल भी जो वे पसन्द करें, और परिन्दों का गोश्त, जिसका उनका जी चाहे, और सुन्दर आँखों वाली साथिनें, मानो वे छिपाकर रखे हुए मोती हों: यह बदला होगा उन कामों का जो वे करते थे। वहाँ वे न कोई बेहूदा बात सुनेंगे न गुनाह की बात, बस यही कहना होगा, "सलाम, सलाम।" (1–26)

और दाहिने हाथ वाले—क्या कहने दाहिने हाथ वालों के! वे बिना काँटों की बेरियों में होंगे, और तह-पर-तह चढ़े हुए केलों में, और लम्बी फैली हुई छाया में, और बहते हुए पानी में, और बहुत-से फलों में, जो न कभी ख़त्म होंगे, न जिनसे रोका जाएगा, और ऊँचे बिछौनों पर। हमने उनकी साथिनों को एक ख़ास उठान पर उठाया है, और उन्हें कुँवारियाँ बनाया है, प्यार करने वालियाँ, हमउम्र, दाहिने हाथ वालों के लिए: अगलों में से एक बड़ा गिरोह और पिछलों में से भी एक बड़ा गिरोह। (27–40)

और बाएँ हाथ वाले—क्या हाल होगा बाएँ हाथ वालों का! वे झुलसा देने वाली लू और खौलते पानी में होंगे, और काले धुएँ की छाया में, जो न ठंडी होगी न आराम देने वाली। निश्चय ही वे इससे पहले ऐश में पड़े थे, और बड़े गुनाह पर अड़े रहते थे, और कहा करते थे, "क्या! जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएँगे, तो क्या हम सचमुच दोबारा उठाए जाएँगे, और हमारे अगले बाप-दादा भी?" कह दो, "अगले और पिछले सब एक जाने-बूझे दिन के ठहराए हुए समय पर ज़रूर इकट्ठे किए जाएँगे। फिर ऐ भटके हुओ, झुठलाने वालो, तुम ज़क़्क़ूम के पेड़ में से खाओगे, फिर उसी से पेट भरोगे, फिर उस पर खौलता हुआ पानी पियोगे, फिर इस तरह पियोगे जैसे प्यासे ऊँट पीते हैं।" बदले के दिन यही उनकी मेहमानी होगी। (41–56)

हम ही ने तुम्हें पैदा किया—तो फिर तुम सच क्यों नहीं मानते? भला देखो तो, जो बीज तुम टपकाते हो? क्या उसे तुम पैदा करते हो, या पैदा करने वाले हम हैं? हम ही ने तुम्हारे बीच मौत ठहराई है, और हम इससे बेबस नहीं कि तुम्हारी शक्लें बदल दें और तुम्हें ऐसी सूरत में उठा खड़ा करें जिसे तुम नहीं जानते। और तुम पहली पैदाइश को तो जान ही चुके हो—तो फिर नसीहत क्यों नहीं पकड़ते? भला देखो तो, जो कुछ तुम

बोते हो? क्या उसे तुम उगाते हो, या उगाने वाले हम हैं? अगर हम चाहें, तो उसे चूरा-चूरा कर दें, फिर तुम बातें बनाते रह जाओ: “हम पर तो तावान पड़ गया; नहीं, बल्कि हम महरूम ही रह गए!” भला देखो तो, वह पानी जो तुम पीते हो? क्या उसे बादल से तुमने उतारा, या उतारने वाले हम हैं? अगर हम चाहें, तो उसे खारा कर दें: तो फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते? भला देखो तो, वह आग जो तुम सुलगाते हो? क्या उसका पेड़ तुमने पैदा किया, या पैदा करने वाले हम हैं? हम ही ने उसे याददिहानी बनाया, और बियाबान के मुसाफ़िरों के लिए काम की चीज़। तो अपने रब के नाम की तसबीह करो, जो सबसे महान है! (57–74)

तो मैं क़सम खाता हूँ तारों के ठिकानों की—और अगर तुम जानो तो यह बहुत बड़ी क़सम है—कि यह निश्चय ही एक इज़्ज़त वाला क़ुरआन है, एक सुरक्षित किताब में, जिसे बस वही छूते हैं जो पाक किए गए हैं: यह सारे संसारों के रब की ओर से उतारा हुआ है। तो क्या इसी बात को तुम हलका समझते हो? और अपना हिस्सा यही ठहराते हो कि इसे झुठलाते रहो? (75–82)

तो फिर क्यों नहीं, जब जान गले तक आ पहुँचती है, और तुम उस समय देख रहे होते हो—और हम तुमसे ज़्यादा उसके क़रीब होते हैं, मगर तुम्हें दिखाई नहीं देता—तो फिर क्यों नहीं, अगर तुम किसी के अधीन नहीं कि बदला पाओ, उसे लौटा लाते, अगर तुम सच्चे हो?[49] (83–87)

फिर अगर वह क़रीब किए हुओं में से है, तो राहत है और ख़ुशबू और नेमत भरा बाग़; और अगर वह दाहिने हाथ वालों में से है, तो “तुम्हारे लिए सलाम है,” दाहिने हाथ वालों की ओर से। और अगर वह झुठलाने वाले भटके हुओं में से है, तो खौलते पानी की मेहमानी है और जहन्नम में जलना। निश्चय ही यही यक़ीनी सत्य है। तो अपने रब के नाम की तसबीह करो, जो सबसे महान है! (88–96)

---

[49] ये बुनियादी आयतें मेरे लिए एक गहरी अन्तर्दृष्टि लेकर आती हैं, क्योंकि केवल नींद के रोगों पर ध्यान देने से पहले मैंने दस साल या उससे ज़्यादा समय तक क्रिटिकल केयर विशेषज्ञ के रूप में काम किया है। इन आयतों की एक व्यापक व्याख्या इन लिंकों पर मिल सकती है: **मौत के बिस्तर की चुनौती: क़ुरआन 56:83–87 की एक व्यापक व्याख्या**
**जब जान हलक़ तक पहुँचती है: क़ुरआन 56:75–89 (सूरा अल-वाक़िआ) की आयत-दर-आयत वैज्ञानिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या**
**अन्तिम घड़ियों का शरीर-विज्ञान और इस्लामी रूह**
**सूरा वाक़िआ: मौत की दहलीज़ पर**

# 57. लोहा (अल-हदीद)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब अल्लाह की तसबीह करता है; और वही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है: वही ज़िन्दगी देता है और वही मौत देता है, और वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। वही पहला है और वही आख़िरी, वही ज़ाहिर है और वही छिपा हुआ, और वह हर चीज़ का पूरा ज्ञान रखता है।[50] वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छह युगों में पैदा किया, फिर अर्श पर विराजमान हुआ। वह जानता है जो कुछ ज़मीन में दाख़िल होता है और जो कुछ उससे निकलता है, जो कुछ आसमान से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है; और वह तुम्हारे साथ है जहाँ कहीं भी तुम हो। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है, और सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटाए जाते हैं। वह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है, और वह दिलों तक की बात जानता है।[51] (1–6)

अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, और उसमें से ख़र्च करो जिसमें उसने तुम्हें जानशीन बनाया है: तो तुममें से जो ईमान लाए और ख़र्च किया उनके लिए बड़ा बदला है। और तुम्हें क्या हो गया है, कि अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, जबकि रसूल तुम्हें बुला रहा है कि अपने रब पर ईमान लाओ, और वह तुमसे अह्द ले चुका है—अगर तुम ईमान वाले हो? वही है जो अपने बन्दे पर खुली-खुली आयतें उतारता है, ताकि तुम्हें घुप अँधेरों से निकालकर रौशनी में ले आए। और निश्चय ही अल्लाह तुम पर बड़ा मेहरबान, दयावान है। और तुम्हें क्या हो गया है, कि अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते, जबकि आसमानों और ज़मीन की मीरास अल्लाह ही की है? तुममें से जिन्होंने फ़तह से पहले ख़र्च किया और लड़े वे दूसरों के बराबर नहीं: उनका दर्जा उन लोगों से बड़ा है जिन्होंने बाद में ख़र्च किया और लड़े। फिर भी अल्लाह ने सबसे अच्छे बदले का वादा किया है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है। (7–10)

कौन है जो अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दे, कि वह उसे उसके लिए कई गुना कर दे और उसे इज़्ज़त का बदला दे? जिस दिन तुम ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को देखोगे, कि उनकी रौशनी उनके आगे-आगे और उनके दाहिने दौड़ रही होगी: “आज तुम्हारे लिए शुभ-सूचना है—ऐसे बाग़ जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें तुम सदा-सदा रहोगे। यही बड़ी कामयाबी है।” जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें ईमान

---

[50] पवित्र क़ुरआन: अल्लाह ही सबसे पहला और हर चीज़ का आरम्भ करने वाला है! – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस
**वीडियो: शून्य के बजाय ख़ुदा क्यों?**
वीडियो: शून्य के नौ स्तर कौन-से हैं? | रॉबर्ट लॉरेंस कून – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस
**आख़िरी सवालों को ठीक ढंग से पूछना ही नास्तिकता का खंडन कर देता है**
**वीडियो: परम शून्यता की कल्पना करके ख़ुदा तक पहुँचना**

[51] ऑकेज़नलिज़्म (अवसरवाद का दर्शन) – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस

वालों से कहेंगे, "ज़रा हमारा इन्तिज़ार करो, कि हम तुम्हारी रौशनी से कुछ ले लें।" कहा जाएगा, "पीछे लौट जाओ और रौशनी ढूँढो।" फिर उनके बीच एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा होगा: उसके भीतर दयालुता होगी, और बाहर, उसके सामने, यातना। वे उन्हें पुकारेंगे, "क्या हम तुम्हारे साथ न थे?" वे कहेंगे, "क्यों नहीं, मगर तुमने अपने आप को फ़ितने में डाला, तुम राह देखते रहे, शक में पड़े रहे, और झूठी आरज़ूओं ने तुम्हें धोखे में डाले रखा यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा—और उस बड़े धोखेबाज़ ने अल्लाह के बारे में तुम्हें धोखे में डाले रखा। तो आज न तुमसे कोई फ़िदया क़बूल किया जाएगा, और न उन लोगों से जिन्होंने सत्य का इनकार किया। तुम्हारा ठिकाना आग है: वही तुम्हारी साथी है—और वह बहुत बुरी जगह है।" (11–15)

क्या ईमान लाने वालों के लिए अभी वह समय नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद के लिए और उस सत्य के लिए जो उतरा है झुक जाएँ, और वे उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिन्हें इससे पहले किताब दी गई थी, फिर उन पर लम्बी मुद्दत गुज़र गई, तो उनके दिल सख़्त हो गए और उनमें से बहुत-से अवज्ञाकारी हैं? जान लो कि अल्लाह ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा करता है। हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ खोलकर बयान कर दी हैं, ताकि तुम बुद्धि से काम लो। निश्चय ही सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें, और जिन्होंने अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया—उनके लिए वह कई गुना किया जाएगा, और उनके लिए इज़्ज़त का बदला है। और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए—वही अपने रब के नज़दीक सच्चे, और गवाह हैं: उनके लिए उनका बदला और उनकी रौशनी है। और जिन्होंने सत्य का इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही दहकती आग वाले हैं। जान लो कि दुनिया की ज़िन्दगी तो बस खेल और तमाशा है, सज-धज और आपस में एक-दूसरे पर बड़ाई जताना, और माल और औलाद में एक-दूसरे से बढ़ जाने की होड़। इसकी मिसाल ऐसी है जैसे बारिश जिसकी पैदावार किसानों को भली लगती है; फिर वह सूख जाती है तो तुम उसे पीली पड़ी देखते हो; फिर वह चूरा-चूरा हो जाती है। और आख़िरत में कठोर यातना भी है, और अल्लाह की ओर से क्षमा और रज़ामन्दी भी; और दुनिया की ज़िन्दगी तो बस धोखे का सामान है। अपने रब की क्षमा की ओर और उस जन्नत की ओर एक-दूसरे से आगे बढ़ो जिसकी चौड़ाई आसमान और ज़मीन की चौड़ाई जैसी है, जो उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए। यह अल्लाह का अनुग्रह है, जिसे चाहे देता है; और अल्लाह बड़े अनुग्रह का मालिक है। (16–21)

न ज़मीन में कोई मुसीबत आती है और न तुम्हारी अपनी जानों में मगर वह एक किताब में है इससे पहले कि हम उसे पैदा करें—निश्चय ही यह अल्लाह के लिए आसान है।[52] (22)

ताकि तुम उस पर ग़म न करो जो तुम्हारे हाथ से जाता रहा, और न उस पर इतराओ जो उसने तुम्हें दिया। और अल्लाह किसी इतराने वाले, शेख़ी बघारने वाले को पसन्द नहीं करता—वे जो ख़ुद कंजूसी करते हैं

[52] ऑकेज़नलिज़्म (अवसरवाद का दर्शन) – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस

और लोगों को भी कंजूसी का हुक्म देते हैं। और जो कोई मुँह मोड़े—तो अल्लाह ही निस्पृह, प्रशंसा के योग्य है। निश्चय ही हमने अपने रसूलों को खुली निशानियों के साथ भेजा, और उनके साथ किताब और तराज़ू उतारी, ताकि लोग इनसाफ़ पर क़ायम हों। और हमने लोहा उतारा, जिसमें बड़ी शक्ति है और लोगों के लिए फ़ायदे हैं, और ताकि अल्लाह जान ले कि कौन बिन देखे उसकी और उसके रसूलों की मदद करता है। निश्चय ही अल्लाह शक्तिशाली, प्रभुत्वशाली है। (23–25)

और हमने नूह और इबराहीम को भेजा, और उनकी औलाद में नुबुव्वत और किताब रख दी: तो उनमें कुछ राह पर हैं, मगर उनमें से बहुत-से अवज्ञाकारी हैं। फिर हमने उनके नक़्शे-क़दम पर अपने रसूल भेजे, और उनके पीछे मरयम के बेटे ईसा को भेजा और उसे इंजील दी, और जो लोग उसके पीछे चले उनके दिलों में हमने नर्मी और दयालुता रख दी। मगर रहबानियत उन्होंने ख़ुद ईजाद कर ली—हमने उसे उन पर फ़र्ज़ नहीं किया था—बस अल्लाह की रज़ामन्दी की तलाश में; फिर उन्होंने उसे वैसा न निबाहा जैसा उसके निबाहने का हक़ था। तो उनमें से जो ईमान लाए हमने उन्हें उनका बदला दिया, मगर उनमें से बहुत-से अवज्ञाकारी हैं। ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह के प्रति सचेत रहो और उसके रसूल पर ईमान लाओ: वह तुम्हें अपनी दयालुता के दो हिस्से देगा, और तुम्हें एक रौशनी देगा जिसमें तुम चलो, और तुम्हें क्षमा कर देगा। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। यह इसलिए कि किताब वाले जान लें कि वे अल्लाह के अनुग्रह में से किसी चीज़ पर अधिकार नहीं रखते, और यह कि अनुग्रह अल्लाह ही के हाथ में है: जिसे चाहे देता है। और अल्लाह बड़े अनुग्रह का मालिक है। (26–29)

# 58. तकरार (अल-मुजादला)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ऐ नबी, अल्लाह ने उस औरत की बात सुन ली जो अपने पति के बारे में तुमसे झगड़ रही थी और अल्लाह के सामने अपनी फ़रियाद रख रही थी; और अल्लाह तुम दोनों की बातचीत सुन रहा था। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है। तुममें से जो लोग अपनी पत्नियों को माँ कहकर अलग कर देते हैं—वे उनकी माँएँ नहीं हैं; उनकी माँएँ तो बस वही हैं जिन्होंने उन्हें जना। और वे निश्चय ही एक नापसन्दीदा और झूठी बात कहते हैं। और निश्चय ही अल्लाह माफ़ करने वाला, बड़ा क्षमाशील है। और जो लोग अपनी पत्नियों को इस तरह अलग कर दें फिर अपनी कही हुई बात से पलटें उन्हें एक ग़ुलाम आज़ाद करना होगा इससे पहले कि दोनों एक-दूसरे को हाथ लगाएँ। यह है वह जिसकी तुम्हें नसीहत की जाती है, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है। फिर जो कोई ग़ुलाम न पाए उसे लगातार दो महीने रोज़े रखने होंगे इससे पहले कि दोनों एक-दूसरे को हाथ लगाएँ; और जो इसकी भी ताक़त न रखता हो उसे साठ मुहताजों को खाना खिलाना होगा। यह इसलिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ। और ये अल्लाह की ठहराई हुई हदें हैं, और सत्य के इनकारियों के लिए दुखद यातना है। निश्चय ही जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं वे ज़लील किए जाएँगे, जैसे उनसे पहले के लोग ज़लील किए गए। और हमने खुली-खुली आयतें उतार दी हैं, और सत्य के इनकारियों के लिए अपमानजनक यातना है, जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा फिर उन्हें बता देगा जो कुछ उन्होंने किया। अल्लाह ने उसे गिन रखा है, जबकि वे उसे भूल गए; और अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है। (1–6)

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह वह सब जानता है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है? तीन आदमियों की कोई कानाफूसी नहीं होती मगर वह उनका चौथा होता है, और न पाँच की मगर वह उनका छठा होता है; और न इससे कम की, न इससे ज़्यादा की, मगर वह उनके साथ होता है जहाँ कहीं भी वे हों।[53] (7)

फिर क़ियामत के दिन वह उन्हें बता देगा जो कुछ उन्होंने किया। निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ का पूरा ज्ञान रखता है। क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें कानाफूसी से रोका गया था, फिर भी वे वही करते हैं जिससे उन्हें रोका गया था, और गुनाह, ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की कानाफूसी करते हैं? और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो तुम्हें उन शब्दों में सलाम करते हैं जिनमें अल्लाह ने तुम्हें सलाम नहीं किया, और अपने जी में कहते हैं, "जो कुछ हम कहते हैं उस पर अल्लाह हमें यातना क्यों नहीं देता?" उनके लिए जहन्नम ही काफ़ी है: वे उसमें जलेंगे—तो वह बहुत बुरी जगह है! (8)

[53] **ईश्वरीय सर्वव्यापकता की आयामी बनावट: क़ुरआन 58:7 की एक वैज्ञानिक, दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या**
ऑकेज़नलिज़्म (अवसरवाद का दर्शन) – द ग्लोरियस क़ुरआन एंड साइंस

ऐ ईमान लाने वालो, जब तुम आपस में कानाफूसी करो, तो गुनाह, ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की कानाफूसी न करो, बल्कि नेकी और अल्लाह के प्रति सचेतता की कानाफूसी करो; और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, जिसके पास तुम इकट्ठे किए जाओगे। कानाफूसी तो बस शैतान का काम है, ताकि वह ईमान लाने वालों को दुखी करे; हालाँकि वह अल्लाह के हुक्म के बिना उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती। और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (9–10)

ऐ ईमान लाने वालो, जब तुमसे कहा जाए कि मजलिसों में जगह कुशादा करो, तो जगह कुशादा कर दिया करो, अल्लाह तुम्हारे लिए कुशादगी पैदा करेगा; और जब कहा जाए कि उठ जाओ, तो उठ जाया करो। अल्लाह तुममें से उन लोगों के दर्जे ऊँचे करेगा जो ईमान लाए और जिन्हें ज्ञान दिया गया। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है। ऐ ईमान लाने वालो, जब तुम रसूल से अकेले में बात करना चाहो, तो अपनी उस बातचीत से पहले कुछ सदक़ा दे दिया करो: यह तुम्हारे लिए बेहतर और ज़्यादा पाकीज़ा है। फिर अगर तुम्हें इसका सामान न मिले, तो अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (11–12)

क्या तुम इससे डर गए कि अपनी बातचीत से पहले सदक़े दो? तो जब तुमने ऐसा नहीं किया, और अल्लाह ने तुम पर दया-दृष्टि की, तो नमाज़ क़ायम रखो, ज़कात दो, और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानो। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है। (13)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो ऐसे लोगों को दोस्त बनाते हैं जिन पर अल्लाह ग़ज़बनाक है? वे न तुममें से हैं न उनमें से, और वे जानते-बूझते झूठी बात पर क़समें खाते हैं। अल्लाह ने उनके लिए कठोर यातना तैयार कर रखी है: निश्चय ही बहुत बुरा है जो वे करते रहे हैं। उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है, और इस तरह दूसरों को अल्लाह की राह से रोका; तो उनके लिए अपमानजनक यातना है। अल्लाह के मुक़ाबले में न उनके माल उनके कुछ काम आएँगे न उनकी औलाद। वही आग वाले हैं, और वे उसमें सदैव रहेंगे। जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा, तो वे उसके सामने भी उसी तरह क़समें खाएँगे जिस तरह तुम्हारे सामने खाते हैं, और समझेंगे कि वे किसी बुनियाद पर हैं। सुन लो, वही झूठे हैं। शैतान उन पर छा गया है और उसने उन्हें अल्लाह की याद भुला दी है। वही शैतान का गिरोह हैं—सुन लो, शैतान का गिरोह ही घाटे में रहने वाला है। निश्चय ही जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं वही सबसे ज़लील लोगों में होंगे। अल्लाह ने लिख दिया है: "मैं ज़रूर ग़ालिब रहूँगा, मैं और मेरे रसूल।" निश्चय ही अल्लाह शक्तिशाली, प्रभुत्वशाली है। (14–21)

तुम ऐसे लोग न पाओगे जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हों और उनसे मुहब्बत रखें जो अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं, चाहे वे उनके बाप हों, या उनके बेटे, या उनके भाई, या उनके कुटुम्ब वाले। यही हैं जिनके दिलों में उसने ईमान लिख दिया है और अपनी ओर की एक रूह से उन्हें शक्ति दी है। और वह उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वे सदा-सदा रहेंगे। अल्लाह

उनसे राज़ी हुआ और वे उससे राज़ी हुए। वही अल्लाह का गिरोह हैं—सुन लो, अल्लाह का गिरोह ही सफल होने वाला है। (22)

# 59. लश्करों का इकट्ठा होना (अल-हश्र)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह की तसबीह करता है; और वही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। वही है जिसने किताब वालों में से सत्य के इनकारियों को पहले ही जमावड़े पर उनके घरों से निकाल बाहर किया। तुम्हें गुमान न था कि वे निकलेंगे, और वे समझते थे कि उनके क़िले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे; मगर अल्लाह उन पर वहाँ से आया जहाँ से उन्हें गुमान तक न था, और उनके दिलों में दहशत डाल दी, कि वे अपने घरों को ख़ुद अपने हाथों से और ईमान वालों के हाथों से उजाड़ने लगे। तो सबक़ लो, ऐ आँख वालो। और अगर अल्लाह ने उनके लिए देश-निकाला न लिख दिया होता, तो वह उन्हें दुनिया ही में यातना दे देता; और आख़िरत में उनके लिए आग की यातना है। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया; और जो कोई अल्लाह का विरोध करे—तो अल्लाह कठोर सज़ा देने वाला है। (1–4)

तुमने खजूर के जो पेड़ भी काटे या जिन्हें उनकी जड़ों पर खड़ा छोड़ दिया, वह अल्लाह ही के हुक्म से था, और ताकि वह अवज्ञाकारियों को रुसवा करे। और जो कुछ अल्लाह ने उनसे अपने रसूल की ओर पलटा दिया, उस पर तुमने न घोड़े दौड़ाए न ऊँट; बल्कि अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है ग़लबा दे देता है। और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। जो कुछ अल्लाह ने बस्तियों वालों से अपने रसूल की ओर पलटा दिया वह अल्लाह का है, और रसूल का, और उसके क़रीबी रिश्तेदारों, यतीमों, मुहताजों और मुसाफ़िर का, ताकि वह तुम्हारे मालदारों ही के बीच चक्कर न काटता रहे। और जो कुछ रसूल तुम्हें दे, वह ले लो; और जिससे वह तुम्हें रोके, उससे रुक जाओ। और अल्लाह के प्रति सचेत रहो: निश्चय ही अल्लाह कठोर सज़ा देने वाला है। (5–7)

यह उन ग़रीब मुहाजिरों के लिए है जो अपने घरों और अपने माल से निकाल दिए गए, वे अल्लाह का अनुग्रह और उसकी रज़ामन्दी ढूँढते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं: यही सच्चे हैं। और जो लोग इनसे पहले इस शहर में और ईमान में ठिकाना बना चुके थे वे उससे मुहब्बत करते हैं जो हिजरत करके उनके पास आए, और जो कुछ उन्हें दिया जाए उसकी अपने दिलों में कोई ख़्वाहिश नहीं पाते, और उन्हें अपने ऊपर तरजीह देते हैं, चाहे ख़ुद तंगी में हों। और जो कोई अपने जी के लालच से बचा लिया गया—तो वही सफल होने वाले हैं। और जो लोग उनके बाद आए वे कहते हैं, "ऐ हमारे रब, हमें और हमारे उन भाइयों को क्षमा कर दे जो ईमान में हमसे आगे निकल गए, और हमारे दिलों में ईमान लाने वालों के लिए कोई कीना न रहने दे। ऐ हमारे रब, तू बड़ा मेहरबान, सदा दयावान है।" (8–10)

क्या तुमने उन मुनाफ़िक़ों को नहीं देखा जो अपने उन भाइयों से जो किताब वालों में से सत्य के इनकारी हैं कहते हैं, "अगर तुम निकाले गए, तो हम भी ज़रूर तुम्हारे साथ निकल जाएँगे, और तुम्हारे ख़िलाफ़ कभी किसी की बात न मानेंगे; और अगर तुमसे लड़ाई हुई, तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे"? और अल्लाह

गवाही देता है कि वे झूठे हैं। अगर वे निकाले गए, तो ये उनके साथ न निकलेंगे; और अगर उनसे लड़ाई हुई, तो ये उनकी मदद न करेंगे; और अगर इनकी मदद की भी, तो पीठ फेरकर भागेंगे, फिर उनकी मदद न की जाएगी। ऐ ईमान वालो, उनके दिलों में तुम्हारा डर अल्लाह से भी बढ़कर है: यह इसलिए कि वे ऐसे लोग हैं जो समझ नहीं रखते। वे सब मिलकर भी तुमसे न लड़ेंगे मगर क़िलाबन्द बस्तियों में या दीवारों के पीछे से। आपस में उनकी लड़ाई बड़ी सख़्त है: तुम उन्हें इकट्ठा समझते हो, हालाँकि उनके दिल अलग-अलग हैं। यह इसलिए कि वे ऐसे लोग हैं जो बुद्धि से काम नहीं लेते। इनका हाल उन लोगों जैसा है जो इनसे कुछ ही पहले गुज़रे: उन्होंने अपनी करतूत का वबाल चखा, और उनके लिए दुखद यातना है। इनकी मिसाल शैतान की-सी है जब वह इनसान से कहता है, "इनकार कर," फिर जब वह इनकार कर बैठता है, तो कहता है, "मेरा तुझसे कोई वास्ता नहीं; मैं अल्लाह से डरता हूँ, जो सारे संसारों का रब है।" तो दोनों का अंजाम यह हुआ कि वे आग में होंगे, उसमें सदैव रहेंगे: और यही ज़ालिमों का बदला है। (11–17)

ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह के प्रति सचेत रहो, और हर जान देख ले कि उसने कल के लिए क्या आगे भेजा है। और अल्लाह के प्रति सचेत रहो: निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है। और उन लोगों की तरह न हो जाना जो अल्लाह को भूल गए, तो उसने उन्हें ख़ुद उनका अपना आप भुला दिया: वही अवज्ञाकारी हैं। आग वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं: जन्नत वाले ही कामयाब हैं। अगर हम इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर उतार देते, तो तुम उसे देखते कि अल्लाह के भय से दबा जा रहा है और फटा पड़ता है। और ये मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं, ताकि वे सोच-विचार करें। (18–21)

वही अल्लाह है, जिसके सिवा कोई इलाह नहीं: परोक्ष और प्रत्यक्ष का जानने वाला, वही अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है। वही अल्लाह है, जिसके सिवा कोई इलाह नहीं: बादशाह, पाक, सलामती का स्रोत, अमन देने वाला, निगहबान, प्रभुत्वशाली, ज़बरदस्त, बड़ाई वाला। पाक है अल्लाह, उससे बहुत ऊँचा जो वे साझी ठहराते हैं। वही अल्लाह है: पैदा करने वाला, वुजूद में लाने वाला, सूरत बनाने वाला; सबसे अच्छे नाम उसी के हैं। जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब उसकी तसबीह करता है; और वही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। (22–24)

# 60. जाँची जाने वाली औरतें (अल-मुम्तहिना)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ऐ ईमान लाने वालो, मेरे दुश्मनों और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, कि तुम उनकी ओर मुहब्बत के पैग़ाम भेजो, हालाँकि वे उस सत्य का इनकार कर चुके हैं जो तुम्हारे पास आया है और रसूल को और ख़ुद तुम्हें इस बात पर निकाल चुके हैं कि तुम अल्लाह, अपने रब, पर ईमान रखते हो। अगर तुम मेरी राह में जिहाद के लिए और मेरी रज़ामन्दी की तलाश में निकले हो, तो तुम चुपके-चुपके उनसे मुहब्बत कैसे जताते हो? और मैं ख़ूब जानता हूँ जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो। और तुममें से जो कोई ऐसा करे वह सीधी राह से भटक गया। अगर वे तुम पर क़ाबू पा जाएँ, तो तुम्हारे दुश्मन हो जाएँगे, और बुराई के साथ तुम पर अपने हाथ और अपनी ज़बानें चलाएँगे: और वे तो यही चाहते हैं कि तुम भी सत्य का इनकार कर दो। (1–2)

क़ियामत के दिन न तुम्हारे रिश्ते-नाते तुम्हारे कुछ काम आएँगे न तुम्हारी औलाद: वह तुम्हारे बीच फ़ैसला कर देगा। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। तुम्हारे लिए इबराहीम में और उसके साथ वालों में एक अच्छा नमूना है, जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, "हम तुमसे और उनसे जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो बरी हैं। हमने तुम्हारा इनकार किया, और हमारे और तुम्हारे बीच हमेशा के लिए दुश्मनी और बैर ज़ाहिर हो गया, जब तक तुम अकेले अल्लाह पर ईमान न ले आओ"—सिवाय इबराहीम के अपने बाप से यह कहने के, "मैं आपके लिए ज़रूर क्षमा माँगूँगा, हालाँकि मैं अल्लाह के सामने आपके लिए किसी चीज़ का अधिकार नहीं रखता।" "ऐ हमारे रब, तुझी पर हमने भरोसा किया, तेरी ही ओर हम पलटे, और तेरी ही ओर लौटना है। ऐ हमारे रब, हमें सत्य के इनकारियों के लिए आज़माइश न बना, और ऐ हमारे रब, हमें क्षमा कर दे। निश्चय ही तू ही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है।" निश्चय ही तुम्हारे लिए उनमें एक अच्छा नमूना है, हर उस आदमी के लिए जो अल्लाह और अंतिम दिन की आस रखता हो। और जो कोई मुँह मोड़े—तो अल्लाह ही निस्पृह, प्रशंसा के योग्य है। (3–6)

हो सकता है कि अल्लाह तुम्हारे और उन लोगों के बीच जिनसे आज तुम्हारी दुश्मनी है मुहब्बत पैदा कर दे: और अल्लाह सामर्थ्य वाला है, और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। अल्लाह तुम्हें इससे नहीं रोकता कि तुम उन लोगों के साथ भलाई और इनसाफ़ का बरताव करो जिन्होंने दीन के मामले में तुमसे लड़ाई नहीं की और न तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला: निश्चय ही अल्लाह इनसाफ़ करने वालों को पसन्द करता है। अल्लाह तो तुम्हें बस इससे रोकता है कि तुम उन्हें दोस्त बनाओ जिन्होंने दीन के मामले में तुमसे लड़ाई की, तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला, या तुम्हारे निकालने में मदद की। और जो कोई उन्हें दोस्त बनाए—तो वही ज़ालिम हैं। (7–9)

ऐ ईमान लाने वालो, जब ईमान वाली औरतें हिजरत करके तुम्हारे पास आएँ, तो उन्हें जाँच लिया करो—उनके ईमान को अल्लाह ही ख़ूब जानता है—फिर अगर तुम उन्हें ईमान वाली जान लो, तो उन्हें सत्य के इनकारियों की ओर न लौटाओ: न ये उन मर्दों के लिए हलाल हैं, न वे मर्द इनके लिए हलाल। और उन मर्दों को वह दे दो जो उन्होंने मह्र में ख़र्च किया हो; और तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम इनसे निकाह कर लो, जब तुम इन्हें इनके मह्र दे दो। और सत्य का इनकार करने वाली औरतों से निकाह के नाते बाँधे न रखो; और जो कुछ तुमने ख़र्च किया हो वह माँग लो, और वे भी माँग लें जो कुछ उन्होंने ख़र्च किया हो। यह अल्लाह का फ़ैसला है: वह तुम्हारे बीच फ़ैसला करता है, और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। और अगर तुम्हारी पत्नियों में से कोई सत्य के इनकारियों की ओर चली जाए, फिर तुम्हारी बारी आए, तो जिनकी पत्नियाँ चली गई हैं उन्हें उतना दे दो जितना उन्होंने ख़र्च किया था; और उस अल्लाह के प्रति सचेत रहो, जिस पर तुम ईमान रखते हो। (10–11)

ऐ नबी, जब ईमान वाली औरतें तुम्हारे पास इस बात पर बैअत करने आएँ—कि वे अल्लाह के साथ किसी चीज़ को साझी न ठहराएँगी, चोरी न करेंगी, ज़िना न करेंगी, अपनी औलाद को क़त्ल न करेंगी, अपने हाथों और पाँवों के बीच से गढ़ा हुआ कोई बोहतान न लाएँगी, और किसी भली बात में तुम्हारी नाफ़रमानी न करेंगी—तो उनसे बैअत ले लो और उनके लिए अल्लाह से क्षमा माँगो। निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (12)

ऐ ईमान लाने वालो, ऐसे लोगों को दोस्त न बनाओ जिन पर अल्लाह ग़ज़बनाक है: वे आख़िरत से उसी तरह निराश हो चुके हैं, जिस तरह सत्य के इनकारी क़ब्रों में पड़े हुओं से निराश हैं। (13)

# 61. ठोस सफ़ें (अस-सफ़्फ़)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह की तसबीह करता है; और वही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। ऐ ईमान लाने वालो, तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं? अल्लाह के नज़दीक यह बड़ी नफ़रत की बात है कि तुम वह कहो जो करते नहीं। निश्चय ही अल्लाह उन लोगों को पसन्द करता है जो उसकी राह में क़तार बाँधकर लड़ते हैं, मानो वे सीसा पिलाई हुई दीवार हों। (1–4)

और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, "ऐ मेरी क़ौम, तुम मुझे तकलीफ़ क्यों देते हो, हालाँकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का रसूल हूँ?" फिर जब वे टेढ़े हुए, तो अल्लाह ने उनके दिल टेढ़े कर दिए: और अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को राह नहीं दिखाता। और जब मरयम के बेटे ईसा ने कहा, "ऐ इसराईल की सन्तान, मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का रसूल हूँ, उस तौरात की पुष्टि करने वाला जो मुझसे पहले आ चुकी है, और एक रसूल की शुभ-सूचना देने वाला जो मेरे बाद आएगा, जिसका नाम अहमद होगा।" फिर जब वह उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आया, तो वे बोले, "यह तो खुला जादू है।" (5–6)

और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े जबकि उसे अल्लाह के आगे समर्पण की ओर बुलाया जा रहा हो? और अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। वे चाहते हैं कि अल्लाह की रौशनी को अपने मुँह से बुझा दें, मगर अल्लाह अपनी रौशनी को पूरा करके रहेगा, चाहे सत्य के इनकारियों को कितना ही नागवार हो। वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य के दीन के साथ भेजा, ताकि उसे हर दीन पर ग़ालिब कर दे, चाहे अल्लाह के साथ साझी ठहराने वालों को कितना ही नागवार हो। (7–9)

ऐ ईमान लाने वालो, क्या मैं तुम्हें एक ऐसा सौदा बताऊँ जो तुम्हें दुखद यातना से बचा ले? अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, और अपने माल और अपनी जान से अल्लाह की राह में जिहाद करो: यही तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानो। वह तुम्हारे गुनाह क्षमा कर देगा और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं, और अदन के बाग़ों में उम्दा घरों में। यही बड़ी कामयाबी है। और एक और चीज़ भी जो तुम्हें प्यारी है: अल्लाह की ओर से मदद और एक क़रीब की फ़तह। और ईमान वालों को शुभ-सूचना दे दो। ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह के मददगार बनो, जैसे मरयम के बेटे ईसा ने हवारियों से कहा था, "अल्लाह की राह में मेरे मददगार कौन हैं?" हवारियों ने कहा, "हम अल्लाह के मददगार हैं।" फिर इसराईल की सन्तान का एक गिरोह ईमान लाया और एक गिरोह ने इनकार किया; तो हमने ईमान लाने वालों को उनके दुश्मन के मुक़ाबले में शक्ति दी, और वही ग़ालिब रहे। (10–14)

# 62. जुमे का दिन (अल-जुमुआ)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह की तसबीह करता है, जो बादशाह है, पाक, प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला। वही है जिसने उम्मी लोगों में उन्हीं में का एक रसूल उठाया, जो उन्हें उसकी आयतें सुनाता है, उन्हें पाक करता है, और उन्हें किताब और हिकमत सिखाता है—हालाँकि इससे पहले वे खुली गुमराही में थे—और उनमें के दूसरों के लिए भी जो अभी उनसे नहीं मिले। और वही प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है। यह अल्लाह का अनुग्रह है, जिसे चाहता है देता है: और अल्लाह बड़े अनुग्रह का मालिक है। जिन लोगों पर तौरात का बोझ रखा गया फिर उन्होंने उसे न उठाया उनकी मिसाल उस गधे की-सी है जो किताबें लादे हुए हो। बहुत बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया: और अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। (1–5)

ऐ नबी, कह दो, "ऐ वे लोगो जो यहूदी मत पर हो, अगर तुम्हारा दावा है कि सब लोगों को छोड़कर बस तुम्हीं अल्लाह के दोस्त हो, तो मौत की आरज़ू करो, अगर तुम सच्चे हो।" मगर वे कभी उसकी आरज़ू न करेंगे, उन करतूतों के कारण जो उनके हाथ आगे भेज चुके हैं। और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। कह दो, "जिस मौत से तुम भागते हो वह तुमसे आ मिलकर रहेगी। फिर तुम उसकी ओर लौटाए जाओगे जो परोक्ष और प्रत्यक्ष का जानने वाला है, और वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे।" (6–8)

ऐ ईमान लाने वालो, जब जुमे के दिन नमाज़ के लिए पुकारा जाए, तो अल्लाह की याद की ओर लपको और ख़रीद-फ़रोख़्त छोड़ दो: यही तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानो। फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए, तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का अनुग्रह ढूँढो, और अल्लाह को बहुत याद करो, ताकि तुम सफल हो। मगर जब वे कोई कारोबार या तमाशा देखते हैं तो उसकी ओर टूट पड़ते हैं और तुम्हें खड़ा छोड़ जाते हैं। कह दो, "जो कुछ अल्लाह के पास है वह तमाशे और कारोबार से बेहतर है। और अल्लाह सबसे अच्छा रोज़ी देने वाला है।" (9–11)

# 63. मुनाफ़िक़ (अल-मुनाफ़िक़ून)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ऐ नबी, जब मुनाफ़िक़ तुम्हारे पास आते हैं, तो कहते हैं, “हम गवाही देते हैं कि तुम निश्चय ही अल्लाह के रसूल हो।” और अल्लाह जानता है कि तुम निश्चय ही उसके रसूल हो, और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ झूठे हैं। उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है, और इस तरह दूसरों को अल्लाह की राह से रोका। निश्चय ही बहुत बुरा है जो वे करते रहे हैं। यह इसलिए कि वे ईमान लाए फिर इनकार किया, तो उनके दिलों पर मुहर लगा दी गई, तो वे समझते नहीं। और जब तुम उन्हें देखो, तो उनके डील-डौल तुम्हें भले लगते हैं; और जब वे बोलें, तो तुम उनकी बात सुनते रह जाते हो। फिर भी वे ऐसे हैं मानो दीवार से टिकाई हुई लकड़ियाँ हों। वे हर ज़ोर की आवाज़ को अपने ही ख़िलाफ़ समझते हैं। वही दुश्मन हैं—तो उनसे बचकर रहो। अल्लाह इन्हें ग़ारत करे! ये सत्य से किधर फेरे जाते हैं! (1–4)

और जब उनसे कहा जाता है, “आओ, अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए क्षमा माँगे,” तो वे अपने सिर फेर लेते हैं, और तुम उन्हें देखते हो कि घमंड करते हुए कतरा जाते हैं। उनके लिए बराबर है कि तुम उनके लिए क्षमा माँगो या न माँगो: अल्लाह उन्हें हरगिज़ क्षमा न करेगा। निश्चय ही अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को राह नहीं दिखाता। यही हैं जो कहते हैं, “जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं उन पर ख़र्च न करो, ताकि वे तितर-बितर हो जाएँ।” हालाँकि आसमानों और ज़मीन के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं, मगर मुनाफ़िक़ समझते नहीं। वे कहते हैं, “अगर हम मदीना लौटे, तो जो इज़्ज़त वाला है वह ज़लील को वहाँ से ज़रूर निकाल बाहर करेगा।” हालाँकि इज़्ज़त अल्लाह ही के लिए है, और उसके रसूल और ईमान वालों के लिए; मगर मुनाफ़िक़ जानते नहीं। (5–8)

ऐ ईमान लाने वालो, तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें। और जो कोई ऐसा करे—तो वही घाटे में हैं। और जो कुछ हमने तुम्हें दिया है उसमें से ख़र्च करो इससे पहले कि तुममें से किसी की मौत आ जाए और वह कहे, “ऐ मेरे रब, तूने मुझे थोड़ी-सी मुहलत और क्यों न दी, कि मैं सदक़ा देता और नेक लोगों में से हो जाता।” मगर अल्लाह किसी जान को हरगिज़ मुहलत नहीं देता जब उसका ठहराया हुआ समय आ जाए। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है। (9–11)

# 64. आपसी उपेक्षा (अत-तग़ाबुन)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह की तसबीह करता है। बादशाही उसी की है और प्रशंसा भी उसी के लिए; और वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। वही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर भी तुममें कोई सत्य का इनकारी है और कोई ईमान वाला। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। उसने आसमानों और ज़मीन को सत्य के साथ पैदा किया; और तुम्हारी सूरतें बनाईं तो तुम्हारी सूरतें अच्छी बनाईं; और उसी की ओर लौटना है। वह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और वह जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो। और अल्लाह सीनों तक की बात ख़ूब जानता है। (1–4)

क्या तुम तक उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जिन्होंने इससे पहले सत्य का इनकार किया, फिर अपनी करतूत का वबाल चखा? और उनके लिए दुखद यातना है। यह इसलिए हुआ कि उनके रसूल उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आते रहे, मगर वे बोले, "क्या इनसान हमें राह दिखाएँगे?" तो उन्होंने इनकार किया और मुँह फेर लिया; और अल्लाह को उनकी कोई परवाह न थी। और अल्लाह निस्पृह, प्रशंसा के योग्य है। (5–6)

सत्य के इनकारियों का दावा है कि वे हरगिज़ उठाए न जाएँगे। कह दो, "क्यों नहीं, मेरे रब की क़सम, तुम ज़रूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें ज़रूर बताया जाएगा जो कुछ तुमने किया। और यह अल्लाह के लिए आसान है।" (7)

तो अल्लाह और उसके रसूल पर और उस रौशनी पर ईमान लाओ जो हमने उतारी है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है। जिस दिन वह तुम्हें इकट्ठा होने के दिन के लिए इकट्ठा करेगा— वही आपसी उपेक्षा का दिन होगा। और जो कोई अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा काम करे, वह उसकी बुराइयाँ उससे दूर कर देगा और उसे ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वे सदा-सदा रहेंगे। यही बड़ी कामयाबी है। और जिन्होंने सत्य का इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया— वही आग वाले हैं, उसमें सदैव रहेंगे। और वह बहुत बुरी जगह है! (8–10)

कोई मुसीबत नहीं आती मगर अल्लाह के हुक्म से। और जो कोई अल्लाह पर ईमान लाए, वह उसके दिल को राह दिखाता है। और अल्लाह हर चीज़ का पूरा ज्ञान रखता है। और अल्लाह की आज्ञा मानो और रसूल की आज्ञा मानो। फिर अगर तुम मुँह मोड़ो, तो हमारे रसूल के ज़िम्मे तो बस साफ़-साफ़ सन्देश पहुँचा देना है। अल्लाह: उसके सिवा कोई इलाह नहीं। और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। ऐ ईमान लाने वालो, तुम्हारे जोड़ों और तुम्हारी औलाद में कुछ तुम्हारे दुश्मन हैं, तो उनसे बचकर रहो। और

अगर तुम माफ़ कर दो, दरगुज़र करो और क्षमा कर दो—तो अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (11–14)

तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तो बस एक आज़माइश हैं, जबकि अल्लाह ही के पास बड़ा बदला है। तो जहाँ तक तुम्हारे बस में हो अल्लाह के प्रति सचेत रहो; सुनो, आज्ञा मानो, और ख़र्च करो: यह तुम्हारे अपने ही लिए बेहतर है। और जो कोई अपने जी के लालच से बचा लिया गया—तो वही सफल होने वाले हैं। अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगे, तो वह उसे तुम्हारे लिए कई गुना कर देगा और तुम्हें क्षमा कर देगा। और अल्लाह गुणग्राहक, सहनशील है, परोक्ष और प्रत्यक्ष का जानने वाला, प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला। (15–18)

# 65. तलाक़ (अत-तलाक़)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ऐ नबी, जब तुम लोग औरतों को तलाक़ दो, तो उन्हें उनकी इद्दत के आरम्भ पर तलाक़ दो, और इद्दत को ठीक-ठीक गिनो; और अल्लाह के प्रति सचेत रहो, जो तुम्हारा रब है। उन्हें उनके घरों से न निकालो, और न वे ख़ुद निकलें, सिवाय इसके कि वे कोई खुली अश्लीलता कर बैठें। ये अल्लाह की ठहराई हुई हदें हैं; और जो कोई अल्लाह की हदों से आगे बढ़ेगा उसने अपने ही ऊपर ज़ुल्म किया। तुम नहीं जानते: शायद इसके बाद अल्लाह कोई नई सूरत पैदा कर दे। (1)

फिर जब वे अपनी मुद्दत के अन्त को पहुँच जाएँ, तो या तो उन्हें भले ढंग से रोक लो या भले ढंग से उनसे अलग हो जाओ। और अपने में से दो इनसाफ़ वाले आदमियों को गवाह बना लो, और गवाही अल्लाह के लिए ठीक-ठीक अदा करो। यह नसीहत उसे की जाती है जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखता हो। और जो कोई अल्लाह के प्रति सचेत रहे—वह उसके लिए निकलने की राह पैदा कर देगा, और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जहाँ से उसे गुमान तक न हो। और जो कोई अल्लाह पर भरोसा करे—तो वह उसके लिए काफ़ी है। निश्चय ही अल्लाह अपना काम पूरा करके रहता है; अल्लाह ने हर चीज़ के लिए एक अन्दाज़ा ठहरा रखा है। (2–3)

और तुम्हारी औरतों में से जो हैज़ की उम्र से गुज़र चुकी हों, अगर तुम्हें शक हो, तो उनकी इद्दत तीन महीने है, और उनकी भी जिन्हें अभी हैज़ नहीं आया। और जो गर्भवती हों, उनकी मुद्दत यह है कि वे अपना बोझ जन लें। और जो कोई अल्लाह के प्रति सचेत रहे—वह उसके काम में उसके लिए आसानी पैदा कर देगा। यह अल्लाह का हुक्म है, जो उसने तुम्हारी ओर उतारा है। और जो कोई अल्लाह के प्रति सचेत रहे—वह उसकी बुराइयाँ उससे दूर कर देगा और उसका बदला बड़ा कर देगा। (4–5)

उन्हें वहीं ठहराओ जहाँ तुम ख़ुद रहते हो, अपनी हैसियत के मुताबिक़, और उन्हें तंग करने के लिए न सताओ। और अगर वे गर्भवती हों, तो उन पर ख़र्च करते रहो यहाँ तक कि वे अपना बोझ जन लें; फिर अगर वे तुम्हारे लिए बच्चे को दूध पिलाएँ, तो उन्हें उनका हक़ दो, और आपस में भले ढंग से मशविरा कर लिया करो। और अगर तुम एक-दूसरे को तंगी में डालो, तो बाप के लिए बच्चे को कोई दूसरी औरत दूध पिला देगी। गुंजाइश वाले को चाहिए कि अपनी गुंजाइश के मुताबिक़ ख़र्च करे; और जिसकी रोज़ी नपी-तुली हो वह उसी में से ख़र्च करे जो अल्लाह ने उसे दिया है। अल्लाह किसी जान पर उससे बढ़कर बोझ नहीं डालता जितना उसने उसे दिया है। जल्द ही अल्लाह तंगी के बाद आसानी पैदा कर देगा। (6–7)

और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्होंने अपने रब के हुक्म से और उसके रसूलों से सरकशी की! तो हमने उनका कड़ा हिसाब लिया और उन्हें बुरी यातना दी। तो उन्होंने अपनी करतूत का वबाल चखा, और उनके काम का अंजाम घाटा ही रहा। अल्लाह ने उनके लिए कठोर यातना तैयार कर रखी है। तो अल्लाह के प्रति सचेत

रहो, ऐ समझ-बूझ वालो, जो ईमान लाए हो: अल्लाह ने तुम्हारी ओर एक याददिहानी उतारी है, एक रसूल जो तुम्हें अल्लाह की खुली-खुली आयतें सुनाता है, ताकि उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए घुप अँधेरों से निकालकर रौशनी में ले आए। और जो कोई अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा काम करे, वह उसे ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वे सदा-सदा रहेंगे। अल्लाह ने उसके लिए बहुत अच्छी रोज़ी रखी है। (8–11)

अल्लाह ही है जिसने सात आसमान पैदा किए, और ज़मीन में से भी उन्हीं जैसी। उनके बीच हुक्म उतरता रहता है, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है, और यह कि अल्लाह अपने ज्ञान से हर चीज़ को घेरे हुए है। (12)

# 66. हराम ठहराना (अत-तहरीम)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ऐ नबी, तुम उस चीज़ को क्यों हराम ठहराते हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की है, अपनी पत्नियों की ख़ुशी चाहते हुए? और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। ऐ ईमान वालो, अल्लाह ने तुम्हारे लिए अपनी क़समों से निकलने का तरीक़ा ठहरा दिया है। और अल्लाह तुम्हारा संरक्षक है; और वही सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। (1–2)

और जब नबी ने अपनी एक पत्नी से राज़ की एक बात कही, फिर जब उसने वह बात बता दी, और अल्लाह ने नबी पर इसे ज़ाहिर कर दिया, तो उसने उसका कुछ हिस्सा जता दिया और कुछ से दरगुज़र किया। फिर जब उसने उसे यह बात बताई, तो वह बोली, "आपको यह किसने बताया?" उसने कहा, "मुझे उसने बताया जो सब कुछ जानने वाला, पूरी ख़बर रखने वाला है।" अगर तुम दोनों अल्लाह के आगे तौबा कर लो, क्योंकि तुम्हारे दिल झुक ही गए हैं, तो बेहतर है; और अगर तुम उसके ख़िलाफ़ एक-दूसरे की मदद करोगी, तो अल्लाह उसका संरक्षक है, और जिबरील, और नेक ईमान वाले; और इसके बाद फ़रिश्ते भी उसके मददगार हैं। हो सकता है कि अगर वह तुम्हें तलाक़ दे दे, तो उसका रब उसे तुम्हारे बदले तुमसे बेहतर पत्नियाँ दे दे: अल्लाह के आगे समर्पित, ईमान वाली, फ़रमाँबरदार, तौबा करने वाली, इबादत करने वाली और रोज़ा रखने वाली, शौहर-दीदा भी और कुँवारियाँ भी। (3–5)

ऐ ईमान लाने वालो, अपने आप को और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन इनसान और पत्थर हैं, जिस पर कड़े और सख़्त फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं, जो अल्लाह के किसी हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करते, और वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म दिया जाता है। "ऐ सत्य के इनकारियो, आज बहाने न बनाओ: तुम्हें बस उसी का बदला दिया जा रहा है जो तुम करते थे।" (6–7)

ऐ ईमान लाने वालो, अल्लाह के आगे सच्ची तौबा करो। हो सकता है कि तुम्हारा रब तुम्हारी बुराइयाँ तुमसे दूर कर दे और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिस दिन अल्लाह नबी को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए रुसवा न करेगा। उनकी रौशनी उनके आगे-आगे और उनके दाहिने दौड़ रही होगी, और वे कहेंगे, "ऐ हमारे रब, हमारे लिए हमारी रौशनी पूरी कर दे और हमें क्षमा कर दे: निश्चय ही तू हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है।" (8)

ऐ नबी, सत्य के इनकारियों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करो, और उनके साथ सख़्ती से पेश आओ। उनका ठिकाना जहन्नम है—और वह बहुत बुरी जगह है! अल्लाह ने सत्य के इनकारियों के लिए एक मिसाल बयान की है: नूह की पत्नी और लूत की पत्नी की। वे हमारे बन्दों में से दो नेक बन्दों के निकाह में थीं, मगर उन्होंने उनसे ख़यानत की, तो उनके पति अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ भी काम न आए। और उनसे कह दिया गया, "दाख़िल होने वालों के साथ तुम दोनों भी आग में दाख़िल हो जाओ।" और अल्लाह ने ईमान वालों

के लिए एक मिसाल बयान की है: फ़िरऔन की पत्नी की, जब उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दे; और मुझे फ़िरऔन से और उसके काम से छुटकारा दे, और मुझे ज़ालिम लोगों से छुटकारा दे।" और इमरान की बेटी मरयम की, जिसने अपनी पाकदामनी की हिफ़ाज़त की: तो हमने उसमें अपनी रूह में से फूँक दिया, और उसने अपने रब की बातों और उसकी किताबों को सच माना, और वह सचमुच फ़रमाँबरदारों में से थी। (9–12)

# 67. बादशाही (अल-मुल्क)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

बड़ी बरकत वाला है वह जिसके हाथ में सारी बादशाही है, और वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है—वही जिसने मौत और ज़िन्दगी पैदा की ताकि तुम्हें आज़माए कि तुममें कौन कर्म में सबसे अच्छा है। और वही प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है। वही जिसने तह-पर-तह सात आसमान पैदा किए। तुम रहमान की सृष्टि में कोई बेजोड़पन न देखोगे। फिर निगाह दौड़ाओ: क्या तुम्हें कोई ख़लल दिखाई देता है? फिर बार-बार निगाह दौड़ाओ: निगाह तुम्हारी ओर नाकाम और थकी-हारी लौट आएगी। (1–4)

और हमने सबसे क़रीब के आसमान को चिराग़ों से सजाया है, और उन्हें शैतानों को मार भगाने का सामान बनाया है, और उनके लिए हमने दहकती आग की यातना तैयार कर रखी है। और जिन लोगों ने अपने रब का इनकार किया उनके लिए जहन्नम की यातना है—और वह बहुत बुरी जगह है! जब वे उसमें डाले जाएँगे तो उसके दहाड़ने की आवाज़ सुनेंगे और वह जोश मार रही होगी, क़रीब होगा कि ग़ुस्से से फट पड़े। जब भी कोई गिरोह उसमें डाला जाएगा, उसके दारोग़ा उनसे पूछेंगे, "क्या तुम्हारे पास कोई सचेत करने वाला नहीं आया था?" वे कहेंगे, "क्यों नहीं, हमारे पास सचेत करने वाला आया था, मगर हमने उसे झुठला दिया और कहा कि अल्लाह ने कुछ भी नहीं उतारा, और तुम तो बस बड़ी गुमराही में पड़े हो।" और वे कहेंगे, "अगर हम सुनते, या बुद्धि से काम लेते, तो आज दहकती आग वालों में न होते।" तो वे अपने गुनाह का इक़रार कर लेंगे—तो दूर हों दहकती आग वाले! जो लोग बिन देखे अपने रब से डरते हैं, उनके लिए क्षमा है और बड़ा बदला। (5–12)

और तुम अपनी बात चुपके से कहो या पुकारकर, वह सीनों तक की बात ख़ूब जानता है। क्या वही न जानेगा, जिसने पैदा किया? और वही सूक्ष्मदर्शी, पूरी ख़बर रखने वाला है। वही है जिसने ज़मीन को तुम्हारे बस में कर दिया: तो उसके रास्तों में चलो और उसकी दी हुई रोज़ी में से खाओ—और उसी की ओर दोबारा उठकर जाना है। क्या तुम इससे निश्चिन्त हो कि वह जो आसमान में है तुम्हें ज़मीन में धँसा दे, और वह एकाएक डगमगाने लगे? या तुम इससे निश्चिन्त हो कि वह जो आसमान में है तुम पर पत्थर बरसाने वाली आँधी भेज दे? फिर तुम जान लोगे कि मेरी चेतावनी कैसी होती है। और इनसे पहले के लोग भी झुठला चुके हैं: तो कैसा भयानक रहा मेरा उन्हें ठुकराना! क्या उन्होंने अपने ऊपर परिन्दों को नहीं देखा, पर फैलाए हुए और उन्हें समेटते हुए? उन्हें रहमान के सिवा कोई नहीं थामे हुए: निश्चय ही वह हर चीज़ को देख रहा है। भला वह कौन है जो तुम्हारा लश्कर बनकर, रहमान के मुक़ाबले में तुम्हारी मदद करे? सत्य के इनकारी तो बस धोखे में पड़े हैं। भला वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे अगर वह अपनी रोज़ी रोक ले? बल्कि वे सरकशी और बेज़ारी पर अड़े हुए हैं। तो क्या वह जो अपने मुँह के बल औंधा चलता है ज़्यादा राह पर है, या वह जो सीधा होकर सीधे मार्ग पर चलता है? (13–22)

कह दो, “वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए कान, आँखें और दिल बनाए—तुम कितना कम शुक्र अदा करते हो!” कह दो, “वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया, और उसी के पास तुम इकट्ठे किए जाओगे।” और वे कहते हैं, “यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो?” कह दो, “उसका ज्ञान तो बस अल्लाह ही के पास है; और मैं तो बस एक खुला सचेत करने वाला हूँ।” फिर जब वे उसे क़रीब आया हुआ देखेंगे, तो सत्य के इनकारियों के चेहरे बिगड़ जाएँगे, और कहा जाएगा, “यही है वह जिसे तुम माँगा करते थे।” कह दो, “भला सोचो तो: अल्लाह चाहे मुझे और मेरे साथ वालों को हलाक कर दे, या हम पर दया करे, सत्य के इनकारियों को दुखद यातना से कौन बचाएगा?” कह दो, “वही रहमान है: हम उस पर ईमान लाए और उसी पर हमने भरोसा किया। तो जल्द ही तुम जान लोगे कि खुली गुमराही में कौन है।” (23–29)

कह दो, “भला सोचो तो: अगर तुम्हारा पानी ज़मीन में उतर जाए, तो कौन है जो तुम्हें बहता हुआ पानी ला दे?”[54] (30)

[54] **वह पानी जो नीचे उतर सकता था: क़ुरआन 67:30 की एक दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या**

# 68. क़लम (अल-क़लम)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

नून। क़सम है क़लम की और उसकी जो वे लिखते हैं, ऐ नबी, तुम अपने रब के अनुग्रह से दीवाने नहीं हो। और निश्चय ही तुम्हारे लिए ऐसा बदला है जो कभी ख़त्म न होगा, और निश्चय ही तुम बड़े ऊँचे अख़लाक़ पर हो। तो जल्द ही तुम भी देख लोगे, और वे भी देख लेंगे, कि तुममें से कौन जुनून में पड़ा है। निश्चय ही तुम्हारा रब उसे ख़ूब जानता है जो उसकी राह से भटक गया, और वह उन्हें भी ख़ूब जानता है जो राह पर हैं। तो सत्य के इनकारियों की बात न मानो: वे तो चाहते हैं कि तुम नर्म पड़ो, तो वे भी नर्म पड़ जाएँ। और किसी ऐसे की बात न मानना जो बहुत क़समें खाने वाला, बेवक़अत है, ताने देने वाला, चुग़लियाँ लिए फिरने वाला, भलाई से रोकने वाला, हद से बढ़ने वाला, गुनहगार, उजड्ड और, इस सबके बाद, बदअसल है—बस इसलिए कि वह माल और बेटों वाला है। जब उसे हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो कहता है, "अगलों की कहानियाँ!" जल्द ही हम उसकी सूँड पर दाग़ लगाएँगे। (1–16)

हमने इन्हें उसी तरह आज़माया है जिस तरह बाग़ वालों को आज़माया था, जब उन्होंने क़सम खाई कि सुबह होते ही उसका फल ज़रूर तोड़ लेंगे, और कोई गुंजाइश न छोड़ी। तो वे सो ही रहे थे कि तुम्हारे रब की ओर से उस पर एक आफ़त फिर गई, और सुबह तक वह ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती। फिर सुबह होते उन्होंने एक-दूसरे को पुकारा: "अगर तुम्हें फल तोड़ना है, तो सवेरे-सवेरे अपने खेत पर चलो।" तो वे चल पड़े, और आपस में चुपके-चुपके कहते जाते थे: "आज वहाँ तुम्हारे पास कोई मुहताज न आने पाए।" और वे सवेरे-सवेरे इस इरादे के साथ निकले कि रोक लेने की सामर्थ्य रखते हैं। मगर जब उन्होंने उसे देखा, तो बोले, "हम ज़रूर राह भूल गए हैं! नहीं—बल्कि हम महरूम रह गए!" उनमें जो सबसे समझदार था वह बोला, "क्या मैंने तुमसे कहा न था, कि तुम तसबीह क्यों नहीं करते?" वे बोले, "पाक है हमारा रब! निश्चय ही हम ज़ालिम थे।" फिर वे एक-दूसरे की ओर रुख़ करके आपस में मलामत करने लगे। बोले, "हाय हमारी कमबख़्ती! निश्चय ही हम सरकश थे। उम्मीद है कि हमारा रब इसके बदले हमें इससे बेहतर देगा: हम अपने रब ही से लौ लगाते हैं।" यातना ऐसी ही होती है; और आख़िरत की यातना तो कहीं बड़ी है, काश वे जानते। (17–33)

निश्चय ही जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं उनके लिए उनके रब के पास नेमत भरे बाग़ हैं। तो क्या हम उन लोगों को जो अल्लाह के आगे समर्पित हैं अपराधियों की तरह कर देंगे? तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा फ़ैसला करते हो? या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम पढ़ते हो कि उसमें तुम्हारे लिए वही है जो तुम पसन्द करो? या तुम्हारे लिए हम पर क़ियामत के दिन तक पहुँचने वाली क़समें हैं, कि तुम्हारे लिए वही होगा जो तुम फ़ैसला करो? उनसे पूछो कि उनमें से कौन इसका ज़िम्मा लेता है! या उनके कुछ ठहराए हुए साझी हैं? तो वे अपने साझियों को ले आएँ, अगर वे सच्चे हैं। जिस दिन पिंडली खोल दी जाएगी और वे सजदे के

लिए बुलाए जाएँगे, तो वे न कर सकेंगे; उनकी निगाहें झुकी होंगी, ज़िल्लत उन पर छाई होगी। और वे उस समय सजदे के लिए बुलाए जाते थे जब भले-चंगे थे। (34–43)

तो मुझे और उन्हें छोड़ दो जो इस बात को झुठलाते हैं: हम उन्हें धीरे-धीरे ऐसी जगह से ले चलेंगे जहाँ से उन्हें ख़बर तक न होगी। और मैं उन्हें मुहलत देता हूँ, क्योंकि मेरी तदबीर बड़ी मज़बूत है। या तुम उनसे कोई बदला माँगते हो, कि वे तावान के बोझ तले दबे जा रहे हैं? या उनके पास परोक्ष है, कि वे उसे लिख लेते हैं? तो अपने रब के फ़ैसले के लिए सब्र से इन्तिज़ार करो, और मछली वाले की तरह न हो जाना, जब उसने पुकारा और वह ग़म से घुट रहा था। अगर उसके रब की नेमत उसे सँभाल न लेती, तो वह चटियल मैदान में बुरे हाल में फेंक दिया जाता। मगर उसके रब ने उसे चुन लिया और उसे नेक लोगों में से बनाया। और सत्य के इनकारी जब यह याददिहानी सुनते हैं तो ऐसे लगते हैं मानो अपनी निगाहों से तुम्हें फिसला ही देंगे, और कहते हैं, “यह तो निश्चय ही दीवाना है!” हालाँकि यह तो बस सारे संसारों के लिए एक याददिहानी है। (44–52)

# 69. अटल घड़ी (अल-हाक़्क़ा)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

वह होकर रहने वाली घड़ी! क्या है वह होकर रहने वाली घड़ी? और तुम्हें क्या ख़बर कि वह होकर रहने वाली घड़ी क्या है? (1–3)

समूद और आद ने उस खड़खड़ा देने वाली आफ़त को झुठलाया। तो रहे समूद, वे एक हद से बढ़ी हुई कड़क से हलाक किए गए; और रहे आद, वे एक सनसनाती, बेक़ाबू आँधी से हलाक किए गए, जिसे उसने सात रातें और आठ दिन लगातार उन पर छोड़े रखा, तो तुम उन लोगों को वहाँ यूँ पछड़े पड़े देखते, मानो वे गिरे हुए खजूर के खोखले तने हों। तो क्या तुम्हें उनमें का कोई बचा हुआ दिखाई देता है? और फ़िरऔन, और उससे पहले के लोग, और उलट दी गई बस्तियाँ, सब बड़ी ख़ता के मुर्तकिब हुए; और उन्होंने अपने रब के रसूल की नाफ़रमानी की, तो उसने उन्हें बड़ी सख़्त पकड़ में पकड़ लिया। जब पानी हद से चढ़ गया, तो हमने तुम्हें चलती हुई नौका में सवार किया, ताकि उसे तुम्हारे लिए याददिहानी बना दें, और याद रखने वाले कान उसे याद रखें। (4–12)

फिर जब सूर में एक बार फूँक मारी जाएगी, और ज़मीन और पहाड़ उठाकर एक ही चोट में चूर-चूर कर दिए जाएँगे, तो उस दिन वह होने वाली घटना घट जाएगी; और आसमान फट जाएगा, तो उस दिन वह बोदा होगा; और फ़रिश्ते उसके किनारों पर होंगे, और उस दिन तुम्हारे रब के अर्श को आठ अपने ऊपर उठाए होंगे। उस दिन तुम पेश किए जाओगे: तुम्हारी कोई छिपी बात छिपी न रहेगी। तो जिसे उसका आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दिया गया वह कहेगा, “लो, पढ़ो मेरा आमालनामा! मुझे यक़ीन था कि मुझे अपने हिसाब से मिलना है।” तो वह मनपसन्द ज़िन्दगी में होगा, ऊँची जन्नत में, जिसके फलों के गुच्छे झुके पड़ रहे होंगे। “मज़े से खाओ और पियो उन कामों के बदले जो तुमने गुज़रे हुए दिनों में आगे भेजे।” और जिसे उसका आमालनामा उसके बाएँ हाथ में दिया गया वह कहेगा, “काश मुझे मेरा आमालनामा दिया ही न जाता, और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है! काश वही मौत काम तमाम कर देने वाली होती! मेरा माल मेरे कुछ काम न आया; मेरा ज़ोर मुझसे जाता रहा।” “पकड़ो इसे और इसकी गर्दन में तौक़ डाल दो, फिर इसे जहन्नम में झोंक दो, फिर इसे एक ज़ंजीर में जकड़ दो जिसकी नाप सत्तर हाथ है!” निश्चय ही यह महान अल्लाह पर ईमान न रखता था, और न मुहताज को खाना खिलाने पर उभारता था। तो आज यहाँ न उसका कोई जिगरी दोस्त है, और न घावों के धोवन के सिवा कोई खाना, जिसे गुनहगारों के सिवा कोई नहीं खाता। (13–37)

तो मैं क़सम खाता हूँ उसकी जो तुम देखते हो और उसकी जो तुम नहीं देखते: यह निश्चय ही एक इज़्ज़त वाले रसूल का कहा हुआ है, यह किसी कवि का कहा हुआ नहीं—तुम कितना कम ईमान लाते हो!—और न किसी काहिन का कहा हुआ है—तुम कितनी कम नसीहत पकड़ते हो! यह सारे संसारों के रब की ओर से उतारा हुआ है। और अगर वह हमारे नाम से कुछ बातें गढ़ लाता, तो हम उसका दाहिना हाथ पकड़ लेते,

फिर उसकी शहरग काट डालते, फिर तुममें से कोई उसे बचाने वाला न होता। और निश्चय ही यह उन लोगों के लिए याददिहानी है जो अल्लाह के प्रति सचेत रहते हैं। और हम जानते हैं कि तुममें कुछ झुठलाने वाले हैं; और निश्चय ही यह सत्य के इनकारियों के लिए पछतावे का कारण होगा; और निश्चय ही यह यक़ीनी सत्य है। तो अपने रब के नाम की तसबीह करो, जो सबसे महान है। (38–52)

# 70. चढ़ाई के रास्ते (अल-मआरिज)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

एक माँगने वाले ने उस यातना के बारे में पूछा जो सत्य के इनकारियों पर पड़कर रहने वाली है—उसे कोई टालने वाला नहीं—अल्लाह की ओर से, जो चढ़ाई की राहों का मालिक है। फ़रिश्ते और रूह उसकी ओर एक ऐसे दिन में चढ़ते हैं जिसकी मिक़दार पचास हज़ार वर्ष है। तो सब्र करो, ऐसा सब्र जो ख़ूबसूरत हो। वे उसे दूर देखते हैं, और हम उसे क़रीब देखते हैं: जिस दिन आसमान पिघले हुए ताँबे की तरह होगा और पहाड़ धुनकी हुई ऊन की तरह, और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा, हालाँकि वे एक-दूसरे को दिखाए जाएँगे। अपराधी चाहेगा कि काश उस दिन की यातना से छूटने के लिए अपने बेटों को फ़िदये में दे दे, और अपनी पत्नी को, और अपने भाई को, और अपने उस कुटुम्ब को जो उसे पनाह देता था, और ज़मीन में जितने भी हैं सबको—फिर यह उसे बचा ले। हरगिज़ नहीं! वह भड़कती हुई आग है, जो खाल तक उधेड़ लेती है, वह हर उस आदमी को अपनी ओर बुलाती है जिसने पीठ फेरी और मुँह मोड़ा, और माल जमा किया फिर उसे सेंत-सेंतकर रखा। (1–18)

निश्चय ही इनसान बड़ा बेसब्रा पैदा हुआ है: जब उसे तकलीफ़ छूती है तो घबरा उठता है, और जब उसे भलाई मिलती है तो कंजूसी करने लगता है—सिवाय नमाज़ पढ़ने वालों के, जो अपनी नमाज़ की पाबन्दी करते हैं; और जिनके माल में माँगने वाले और महरूम का एक जाना-बूझा हक़ है; और जो बदले के दिन को सच मानते हैं; और जो अपने रब की यातना से डरते हैं—क्योंकि उनके रब की यातना से कोई निश्चिन्त नहीं हो सकता—और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं, सिवाय अपनी पत्नियों या अपनी लौंडियों के, कि उन पर कोई मलामत नहीं—मगर जो इसके आगे कुछ चाहे, तो वही हद से बढ़ने वाले हैं—और जो अपनी अमानतों और अपने अह्द का पास रखते हैं; और जो अपनी गवाहियों पर क़ायम रहते हैं; और जो अपनी नमाज़ की निगहबानी करते हैं। यही लोग बाग़ों में इज़्ज़त के साथ होंगे। (19–35)

तो ऐ नबी, सत्य के इनकारियों को क्या हो गया है, कि वे तुम्हारी ओर दौड़े चले आ रहे हैं, दाएँ से और बाएँ से, गिरोह-दर-गिरोह? क्या उनमें से हर एक यह लालच रखता है कि नेमत भरे बाग़ में दाख़िल किया जाए? हरगिज़ नहीं! हमने उन्हें उस चीज़ से पैदा किया है जिसे वे जानते हैं। तो मैं क़सम खाता हूँ पूरबों और पश्चिमों के रब की कि हम इसकी पूरी सामर्थ्य रखते हैं कि उनकी जगह उनसे बेहतर ले आएँ, और हमसे कोई आगे निकल जाने वाला नहीं। तो उन्हें छोड़ दो कि बेहूदा बातों में पड़े रहें और खेलते रहें यहाँ तक कि अपने उस दिन से जा मिलें जिसका उनसे वादा किया जा रहा है: जिस दिन वे क़ब्रों से तेज़ी के साथ निकलेंगे, मानो किसी निशाने की ओर दौड़े जा रहे हों, उनकी निगाहें झुकी होंगी, ज़िल्लत उन पर छाई होगी। यही है वह दिन जिसका उनसे वादा किया जाता था। (36–44)

# 71. नूह (नूह)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा: "अपनी क़ौम को सचेत कर दो इससे पहले कि उन पर दुखद यातना आ जाए।" उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम, मैं तुम्हारे लिए खुला सचेत करने वाला हूँ: कि अल्लाह की इबादत करो, उसके प्रति सचेत रहो, और मेरी आज्ञा मानो। वह तुम्हारे गुनाह क्षमा कर देगा और तुम्हें एक ठहराए हुए समय तक मुहलत देगा। निश्चय ही अल्लाह का ठहराया हुआ समय जब आ जाता है तो टाला नहीं जाता, काश तुम जानते।" (1–4)

उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मैंने अपनी क़ौम को रात और दिन बुलाया, मगर मेरे बुलाने से उनका भागना ही बढ़ा। और जब भी मैंने उन्हें बुलाया, ताकि तू उन्हें क्षमा कर दे, उन्होंने अपनी उँगलियाँ अपने कानों में ठूँस लीं, अपने कपड़े ओढ़ लिए, अपनी हठ पर अड़ गए और बड़ा घमंड किया। फिर मैंने उन्हें पुकार-पुकारकर बुलाया; फिर मैंने उनसे खुलेआम भी कहा और चुपके-चुपके भी कहा, तो मैंने कहा, अपने रब से क्षमा माँगो: निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील है। वह तुम पर आसमान से ख़ूब बारिश भेजेगा, और माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा, और तुम्हारे लिए बाग़ बनाएगा और तुम्हारे लिए नहरें जारी करेगा। तुम्हें क्या हो गया है, कि तुम अल्लाह के लिए किसी बड़ाई की आस नहीं रखते, हालाँकि उसने तुम्हें तरह-तरह के मरहलों से गुज़ारकर पैदा किया? क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने किस तरह तह-पर-तह सात आसमान पैदा किए, और उनमें चाँद को रौशनी बनाया और सूरज को चिराग़ बनाया? और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से ख़ास ढंग से उगाया, फिर वह तुम्हें उसी में लौटाएगा, और तुम्हें नए सिरे से निकाल खड़ा करेगा। और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया, ताकि तुम उसके खुले रास्तों में चलो।" (5–20)

नूह ने कहा, "ऐ मेरे रब, इन्होंने मेरी नाफ़रमानी की और उनके पीछे चले जिनके माल और औलाद ने उनके घाटे ही को बढ़ाया। और उन्होंने बड़ी भारी चाल चली, और कहा, अपने इलाहों को हरगिज़ न छोड़ना: और न वद्द को छोड़ना, न सुवाअ को, और न यग़ूस, यऊक़ और नस्र को। और इन्होंने बहुतों को भटका दिया है। ऐ मेरे रब, इन ज़ालिमों को गुमराही के सिवा किसी चीज़ में न बढ़ा।" (21–24)

अपनी ख़ताओं के कारण वे डुबो दिए गए फिर आग में दाख़िल कर दिए गए, तो उन्होंने अल्लाह के सिवा अपना कोई मददगार न पाया। और नूह ने कहा, "ऐ मेरे रब, ज़मीन पर सत्य के इनकारियों में से एक भी बसने वाला न छोड़। अगर तूने इन्हें छोड़ दिया, तो ये तेरे बन्दों को भटकाएँगे और इनसे बस बदकार, कट्टर इनकारी ही पैदा होंगे। ऐ मेरे रब, मुझे और मेरे माँ-बाप को क्षमा कर दे, और उसे भी जो ईमान वाला होकर मेरे घर में दाख़िल हो, और ईमान वाले मर्दों और औरतों को भी; और ज़ालिमों को तबाही के सिवा किसी चीज़ में न बढ़ा।" (25–28)

# 72. जिन्न (अल-जिन्न)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ऐ नबी, कह दो, "मेरी ओर वह्य की गई है कि जिन्नों के एक गिरोह ने कान लगाकर सुना फिर कहा, हमने एक अनोखा क़ुरआन सुना है, जो सही राह दिखाता है, तो हम उस पर ईमान ले आए: और हम अपने रब के साथ कभी किसी को साझी न ठहराएँगे। और यह कि हमारे रब की शान बहुत ऊँची है: उसने न कोई पत्नी बनाई न बेटा। और यह कि हममें का नादान अल्लाह के बारे में हद से गुज़री हुई बातें कहता था, और यह कि हमने समझा था कि इनसान और जिन्न अल्लाह पर कभी झूठ न बोलेंगे। और यह कि इनसानों में से कुछ मर्द जिन्नों में से कुछ मर्दों की पनाह माँगते थे, तो उन्होंने उनकी सरकशी और बढ़ा दी। और यह कि उन्होंने भी वैसा ही गुमान किया जैसा तुमने किया, कि अल्लाह किसी को न उठाएगा। और यह कि हमने आसमान को टटोला तो उसे सख़्त पहरेदारों और शोलों से भरा हुआ पाया। और यह कि हम वहाँ सुनने के ठिकानों पर बैठा करते थे, मगर अब जो सुनने की कोशिश करे वह अपने लिए एक शोला घात में लगा हुआ पाता है। और यह कि हम नहीं जानते कि ज़मीन वालों के साथ बुराई का इरादा किया गया है, या उनके रब ने उन्हें सही राह दिखाने का इरादा किया है। और यह कि हममें कुछ नेक हैं, और कुछ इससे भिन्न: हम अलग-अलग राहों पर चलते रहे। और यह कि हमने जान लिया कि हम ज़मीन में अल्लाह को कभी बेबस नहीं कर सकते, और न भागकर उसे बेबस कर सकते हैं। और यह कि जब हमने मार्गदर्शन सुना तो उस पर ईमान ले आए; और जो कोई अपने रब पर ईमान लाए उसे न किसी घाटे का डर होगा न ज़ुल्म का। और यह कि हममें कुछ अल्लाह के आगे समर्पित हैं, और कुछ राह से हटे हुए। तो जिन्होंने समर्पण किया उन्होंने सही राह ढूँढ निकाली; और जो राह से हटे वे जहन्नम का ईंधन होंगे।" (1–15)

और यह कि अगर वे सीधी राह पर जमे रहते, तो हम उन्हें ख़ूब पानी पिलाते, ताकि उसमें उन्हें आज़माएँ; और जो कोई अपने रब की याद से मुँह मोड़ेगा, वह उसे चढ़ती हुई सख़्त यातना में डाल देगा। और यह कि इबादत की जगहें अल्लाह ही के लिए हैं, तो अल्लाह के साथ किसी को न पुकारो। और यह कि जब अल्लाह का बन्दा उसे पुकारने को खड़ा हुआ, तो वे क़रीब थे कि उस पर भीड़ बनकर टूट पड़ें। कह दो, "मैं तो बस अपने रब ही को पुकारता हूँ, और उसके साथ किसी को साझी नहीं ठहराता।" कह दो, "मैं न तुम्हारे किसी नुक़सान का अधिकार रखता हूँ न तुम्हें सही राह पर लाने का।" कह दो, "मुझे अल्लाह से कोई नहीं बचा सकता, और न मैं उसके सिवा कोई पनाह की जगह पा सकता हूँ—मेरा काम तो बस अल्लाह की ओर से पहुँचा देना है, और उसके सन्देश। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करे उसके लिए जहन्नम की आग है, जिसमें वे सदा-सदा रहेंगे।" यहाँ तक कि जब वे उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वादा किया जा रहा है, तब जान लेंगे कि किसके मददगार ज़्यादा कमज़ोर हैं और किसकी गिनती कम। कह दो, "मैं नहीं जानता कि जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है वह क़रीब है, या मेरा रब उसके लिए कोई लम्बी मुद्दत ठहराएगा। वह परोक्ष का जानने वाला है, और वह अपने परोक्ष को किसी पर ज़ाहिर नहीं करता,

सिवाय उस रसूल के जिसे उसने पसन्द कर लिया हो; फिर वह उसके आगे और उसके पीछे निगहबान लगा देता है, ताकि वह जान ले कि उन्होंने अपने रब के सन्देश पहुँचा दिए। और जो कुछ उनके पास है उसे वह घेरे हुए है, और उसने हर चीज़ को गिन रखा है।" (16–28)

# 73. चादर में लिपटने वाला (अल-मुज़्ज़म्मिल)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ऐ कपड़े में लिपटने वाले, रात को नमाज़ में खड़े रहा करो, थोड़े हिस्से के सिवा—आधी रात, या उससे कुछ कम कर लो, या उस पर कुछ बढ़ा लो—और क़ुरआन को ठहर-ठहरकर, साफ़-साफ़ पढ़ो। हम जल्द ही तुम पर एक भारी बात डालने वाले हैं। निश्चय ही रात का उठना दिल पर ज़्यादा गहरा असर छोड़ता है और बात को ज़्यादा दुरुस्त करता है, क्योंकि दिन में तो तुम्हारे लिए लम्बी मसरूफ़ियत है। और अपने रब के नाम को याद करो और सबसे कटकर उसी के हो रहो। वह पूरब और पश्चिम का रब है, उसके सिवा कोई इलाह नहीं, तो उसी को अपना कारसाज़ बना लो। और जो कुछ वे कहते हैं उस पर सब्र करो, और भले ढंग से उनसे अलग हो जाओ। और मुझे और उन झुठलाने वालों को छोड़ दो जो ऐश में पड़े हैं, और उन्हें थोड़ी-सी मुहलत दो। निश्चय ही हमारे पास बेड़ियाँ हैं और दहकती आग, और गले में अटक जाने वाला खाना, और दुखद यातना, जिस दिन ज़मीन और पहाड़ काँप उठेंगे, और पहाड़ भुरभुरी रेत के टीले होकर रह जाएँगे। (1–14)

निश्चय ही हमने तुम्हारी ओर एक रसूल भेजा है जो तुम पर गवाह है, जैसे हमने फ़िरऔन की ओर एक रसूल भेजा था। मगर फ़िरऔन ने उस रसूल की नाफ़रमानी की, तो हमने उसे बड़ी सख़्त पकड़ में पकड़ लिया। तो अगर तुमने सत्य का इनकार किया, तो उस दिन से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा, जिस दिन आसमान फट जाएगा? उसका वादा पूरा होकर रहेगा। निश्चय ही यह एक याददिहानी है: तो जो चाहे अपने रब की ओर राह अपना ले। (15–19)

ऐ नबी, तुम्हारा रब जानता है कि तुम दो-तिहाई रात के क़रीब, या आधी रात, या एक-तिहाई रात नमाज़ में खड़े रहते हो, और तुम्हारे साथ वालों में से एक गिरोह भी। और अल्लाह ही रात और दिन का अन्दाज़ा ठहराता है; उसने जान लिया कि तुम उसे पूरा गिन न सकोगे, तो उसने तुम पर दया-दृष्टि की। तो अब क़ुरआन में से जितना आसानी से हो सके पढ़ लिया करो। उसने जान लिया कि तुममें कुछ बीमार होंगे, और कुछ दूसरे अल्लाह का अनुग्रह ढूँढते हुए ज़मीन में सफ़र करेंगे, और कुछ दूसरे अल्लाह की राह में लड़ेंगे। तो उसमें से जितना आसानी से हो सके पढ़ लिया करो, और नमाज़ क़ायम रखो, ज़कात दो, और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो। और जो भलाई भी तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के पास पाओगे, कहीं बेहतर और बदले में कहीं बड़ी। और अल्लाह से क्षमा माँगो: निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सदा दयावान है। (20)

# 74. चादर ओढ़ने वाला (अल-मुद्दस्सिर)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ऐ चादर ओढ़ने वाले, उठो और सचेत करो! और अपने रब ही की बड़ाई बयान करो; और अपने कपड़े पाक रखो; और हर गन्दगी से दूर रहो; और इसलिए एहसान न करो कि ज़्यादा हासिल करो; और अपने रब की ख़ातिर सब्र करो। (1–7)

फिर जब सूर में फूँक मारी जाएगी, तो वह दिन बड़ा कठिन दिन होगा, सत्य के इनकारियों पर आसान न होगा। मुझे और उसे छोड़ दो जिसे मैंने अकेला पैदा किया, और जिसे मैंने बहुत-सा माल दिया और पास हाज़िर रहने वाले बेटे, और जिसके लिए मैंने हर तरह की राह हमवार की—फिर भी वह लालच रखता है कि मैं और ज़्यादा दूँ। हरगिज़ नहीं! वह हमारी आयतों का दुश्मन रहा है। जल्द ही मैं उसे एक कठिन चढ़ाई चढ़वाऊँगा। उसने सोचा और एक बात ठहराई—तो मारा जाए वह, कैसी बात ठहराई! फिर मारा जाए वह, कैसी बात ठहराई! फिर उसने निगाह दौड़ाई; फिर त्योरी चढ़ाई और मुँह बनाया; फिर पीठ फेरी और घमंड किया, और बोला, "यह तो बस जादू है जो पहले से चला आ रहा है; यह तो बस इनसान का कहा हुआ है।" (8–25)

जल्द ही मैं उसे सक़र में झोंक दूँगा। और तुम्हें क्या ख़बर कि सक़र क्या है? वह न बाक़ी रखती है न छोड़ती है, इनसान की खाल झुलसा देने वाली। उस पर उन्नीस मुक़र्रर हैं। और हमने आग के दारोग़ा बस फ़रिश्ते ही बनाए हैं, और उनकी गिनती को हमने सत्य के इनकारियों के लिए बस एक आज़माइश बनाया है, ताकि जिन्हें किताब दी गई थी वे यक़ीन कर लें, और ईमान वालों का ईमान और बढ़े, और किताब वाले और ईमान वाले किसी शक में न रहें; और ताकि वे लोग जिनके दिलों में रोग है और सत्य के इनकारी कहें, "इस मिसाल से अल्लाह का क्या मतलब है?" इसी तरह अल्लाह जिसे चाहता है भटकने देता है और जिसे चाहता है राह दिखाता है; और तुम्हारे रब के लश्करों को उसके सिवा कोई नहीं जानता। और यह तो बस इनसानों के लिए एक याददिहानी है। हरगिज़ नहीं! क़सम है चाँद की, और रात की जब वह पलटे, और सुबह की जब वह रौशन हो, कि वह निश्चय ही बड़ी-बड़ी चीज़ों में से एक है, इनसानों को सचेत करने वाली, तुममें से हर उस आदमी के लिए जो आगे बढ़ना चाहे या पीछे रहना चाहे। (26–37)

हर जान अपनी कमाई के बदले गिरवी है, सिवाय दाहिने हाथ वालों के, जो बाग़ों में होंगे, अपराधियों के बारे में पूछते हुए: "तुम्हें किस चीज़ ने सक़र में पहुँचाया?" वे कहेंगे, "हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे, और न मुहताज को खाना खिलाते थे; और हम बेहूदा बातों में पड़ने वालों के साथ पड़े रहते थे, और हम बदले के दिन को झुठलाते थे यहाँ तक कि वह यक़ीनी चीज़ हम पर आ पहुँची।" तो सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश उन्हें कुछ फ़ायदा न देगी। (38–48)

तो उन्हें क्या हो गया है, कि इस याददिहानी से मुँह फेरे हुए हैं मानो वे बिदके हुए गधे हों जो शेर से भाग रहे हों? बल्कि उनमें से हर एक चाहता है कि उसे आसमान से खुले हुए सहीफ़े दिए जाएँ। हरगिज़ नहीं! असल बात यह है कि वे आख़िरत से नहीं डरते। हरगिज़ नहीं! यह निश्चय ही एक याददिहानी है: तो जो चाहे इससे नसीहत पकड़े। और वे नसीहत न पकड़ेंगे मगर यह कि अल्लाह चाहे। वही इस लायक़ है कि उससे डरा जाए, और वही इस लायक़ है कि क्षमा करे। (49–56)

# 75. क़ियामत (अल-क़ियामा)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

मैं क़सम खाता हूँ क़ियामत के दिन की, और मैं क़सम खाता हूँ उस जान की जो अपने आप को मलामत करती है! क्या इनसान यह समझता है कि हम उसकी हड्डियाँ इकट्ठी न करेंगे? क्यों नहीं: हम इसकी सामर्थ्य रखते हैं कि उसकी उँगलियों के पोर तक ठीक-ठीक बना दें। बल्कि इनसान चाहता है कि आगे भी गुनाह करता चला जाए; वह पूछता है, "क़ियामत का यह दिन कब होगा?" (1–6)

तो जब निगाह चौंधिया जाएगी, और चाँद गहना जाएगा, और सूरज और चाँद इकट्ठे कर दिए जाएँगे—उस दिन इनसान कहेगा, "कहाँ है भागने की जगह?" हरगिज़ नहीं! कोई पनाह की जगह नहीं। उस दिन ठहरने की जगह बस तुम्हारे रब ही के पास होगी। उस दिन इनसान को बता दिया जाएगा जो कुछ उसने आगे भेजा और जो कुछ पीछे छोड़ा। बल्कि इनसान ख़ुद अपने ऊपर खुला गवाह होगा, चाहे अपने कितने ही बहाने पेश करे। (7–15)

ऐ नबी, इसे जल्दी-जल्दी याद कर लेने के लिए इसके साथ अपनी ज़बान को हरकत न दो: इसे जमा करना और इसे पढ़वाना हमारे ज़िम्मे है, तो जब हम इसे पढ़ें, तो तुम इसके पढ़ने की पैरवी करो; फिर इसे खोलकर बयान कर देना भी हमारे ही ज़िम्मे है। (16–19)

हरगिज़ नहीं! बल्कि तुम लोग जल्द मिलने वाली ज़िन्दगी से मुहब्बत रखते हो और आख़िरत को छोड़ देते हो। उस दिन कुछ चेहरे तरो-ताज़ा होंगे, अपने रब की ओर देखते हुए; और उस दिन कुछ चेहरे उदास होंगे, समझ रहे होंगे कि उन पर कमर तोड़ देने वाली चोट पड़ने वाली है। (20–25)

हरगिज़ नहीं! जब जान हँसली तक पहुँच जाएगी, और कहा जाएगा, "है कोई झाड़-फूँक करने वाला?" और वह समझ लेगा कि यह जुदाई की घड़ी है, और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी—उस दिन तुम्हारे रब ही की ओर चलना होगा। तो उसने न सच माना न नमाज़ पढ़ी, बल्कि झुठलाया और मुँह मोड़ा, फिर अकड़ता हुआ अपने घर वालों की ओर चल दिया। (26–33)

तबाही है तेरे लिए, फिर तबाही है! फिर तबाही है तेरे लिए, फिर तबाही है! क्या इनसान यह समझता है कि उसे यूँ ही बेकार छोड़ दिया जाएगा? क्या वह टपकाई हुई एक बूँद न था, फिर एक चिमटने वाला रूप हुआ, फिर उसने उसे बनाया और ठीक-ठीक किया, फिर उससे दो क़िस्में बनाईं, मर्द और औरत? क्या वह इसकी सामर्थ्य नहीं रखता कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे? (34–40)

# 76. इनसान (अल-इनसान)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क्या इनसान पर ज़माने का एक ऐसा समय नहीं गुज़रा जब वह कोई ज़िक्र के लायक़ चीज़ न था? हमने इनसान को एक मिली-जुली बूँद से पैदा किया, ताकि उसे आज़माएँ; तो हमने उसे सुनने वाला, देखने वाला बनाया। हमने उसे राह दिखा दी, चाहे वह शुक्र करने वाला बने या नाशुक्रा। (1–3)

सत्य के इनकारियों के लिए हमने ज़ंजीरें, तौक़ और दहकती आग तैयार कर रखी है। नेक लोग ऐसे जाम से पिएँगे जिसमें काफ़ूर की मिलावट होगी, एक सोते से जिससे अल्लाह के बन्दे पिएँगे, उसे जहाँ चाहेंगे बहा ले जाएँगे। वे अपनी मन्नतें पूरी करते हैं, और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई दूर-दूर तक फैली होगी; और वे उसकी मुहब्बत में मुहताज, यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं: “हम तुम्हें बस अल्लाह की ख़ातिर खिलाते हैं: हम तुमसे न कोई बदला चाहते हैं, न शुक्रिया। हमें अपने रब की ओर से एक ऐसे दिन का डर है जो मुँह बिगाड़ देने वाला, बड़ा सख़्त होगा।” तो अल्लाह उन्हें उस दिन की बुराई से बचा लेगा, और उन्हें ताज़गी और ख़ुशी देगा, और उनके सब्र के बदले उन्हें बाग़ और रेशम देगा। वहाँ वे तख़्तों पर तकिया लगाए होंगे, वहाँ न धूप की तपिश देखेंगे न कड़ाके की सर्दी; और उसके साए उन पर झुके होंगे, और उसके फलों के गुच्छे बिलकुल उनके बस में कर दिए जाएँगे। और उनके बीच चाँदी के बर्तन और शीशे के प्याले फिराए जाएँगे—शीशे, मगर चाँदी के—जिन्हें वे ठीक अन्दाज़े से भरेंगे। और वहाँ उन्हें ऐसा जाम पिलाया जाएगा जिसमें सोंठ की मिलावट होगी, वहाँ के एक सोते से जिसका नाम सलसबील है। और उनके पास सदा एक ही हाल पर रहने वाले लड़के आते-जाते होंगे: जब तुम उन्हें देखो तो समझो कि बिखरे हुए मोती हैं। और जब तुम वहाँ देखोगे, तो नेमत ही नेमत और एक बड़ी बादशाही देखोगे। उनके ऊपर बारीक हरे रेशम और दबीज़ रेशम के कपड़े होंगे, और उन्हें चाँदी के कंगन पहनाए जाएँगे; और उनका रब उन्हें पाकीज़ा शराब पिलाएगा। “यह तुम्हारा बदला है: और तुम्हारी कोशिश की क़द्र की गई।” (4–22)

ऐ नबी, हम ही ने तुम पर यह क़ुरआन थोड़ा-थोड़ा करके उतारा है। तो अपने रब के फ़ैसले के लिए सब्र से इन्तिज़ार करो, और उनमें से किसी गुनहगार या नाशुक्रे की बात न मानो। और सुबह और शाम अपने रब का नाम याद करो, और रात को भी उसके आगे सजदा करो, और लम्बी रात तक उसकी तसबीह करते रहो। (23–26)

ये लोग जल्द मिलने वाली ज़िन्दगी से मुहब्बत रखते हैं, और अपने पीछे एक भारी दिन को छोड़े दे रहे हैं। हम ही ने उन्हें पैदा किया और उनके जोड़-बन्द मज़बूत किए; और जब हम चाहें, उनकी जगह उन्हीं जैसे दूसरे बदलकर ले आएँ। (27–28)

निश्चय ही यह एक याददिहानी है: तो जो चाहे अपने रब की ओर राह अपना ले। और तुम न चाहोगे मगर यह कि अल्लाह चाहे। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। वह जिसे चाहता है अपनी दयालुता में दाख़िल करता है; और ज़ालिमों के लिए उसने दुखद यातना तैयार कर रखी है। (29–31)

# 77. भेजी जाने वालियाँ (अल-मुरसलात)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क़सम है उनकी जो एक के बाद एक भेजी जाती हैं, फिर उनकी जो तूफ़ान के ज़ोर से चलती हैं, और उनकी जो दूर-दूर तक फैलाती हैं, फिर उनकी जो फाड़कर अलग कर देती हैं, फिर उनकी जो याददिहानी डालती हैं, उज़्र के तौर पर या चेतावनी के तौर पर: जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जा रहा है वह ज़रूर होकर रहेगी। तो जब तारे बुझा दिए जाएँगे, और जब आसमान फाड़ दिया जाएगा, और जब पहाड़ धूल बनाकर उड़ा दिए जाएँगे, और जब रसूल ठहराए हुए समय पर इकट्ठे किए जाएँगे—यह सब किस दिन के लिए टाला गया है? फ़ैसले के दिन के लिए। और तुम्हें क्या ख़बर कि फ़ैसले का दिन क्या है? तबाही है उस दिन सत्य के इनकारियों के लिए! क्या हमने अगलों को हलाक नहीं किया? फिर हम पिछलों को भी उनके पीछे लगा देंगे: हम अपराधियों के साथ ऐसा ही किया करते हैं। तबाही है उस दिन सत्य के इनकारियों के लिए! (1–19)

क्या हमने तुम्हें एक तुच्छ पानी से पैदा नहीं किया, फिर उसे एक जानी-बूझी मुद्दत तक एक सुरक्षित ठिकाने में रखा? तो हमने अन्दाज़ा ठहराया—तो हम क्या ही अच्छा अन्दाज़ा ठहराने वाले हैं! तबाही है उस दिन सत्य के इनकारियों के लिए! क्या हमने ज़मीन को समेट रखने वाली नहीं बनाया, ज़िन्दों को भी और मुर्दों को भी, और उसमें ऊँचे-ऊँचे जमे हुए पहाड़ रखे, और तुम्हें मीठा पानी पिलाया? तबाही है उस दिन सत्य के इनकारियों के लिए! (20–28)

“चलो उस चीज़ की ओर जिसे तुम झुठलाया करते थे! चलो तीन शाख़ों वाले साए की ओर, जो न छाया देता है और न लपट से कुछ बचाता है।” वह महलों जैसी बड़ी-बड़ी चिनगारियाँ फेंकती है, मानो वे ज़र्द ऊँट हों। तबाही है उस दिन सत्य के इनकारियों के लिए! यह वह दिन है कि वे बोल न सकेंगे, और न उन्हें इजाज़त दी जाएगी कि उज़्र पेश करें। तबाही है उस दिन सत्य के इनकारियों के लिए! “यह फ़ैसले का दिन है: हमने तुम्हें और अगलों को इकट्ठा कर लिया। तो अगर तुम्हारे पास कोई चाल है, तो मेरे ख़िलाफ़ चल देखो!” तबाही है उस दिन सत्य के इनकारियों के लिए! निश्चय ही जो अल्लाह के प्रति सचेत रहे वे सायों और सोतों में होंगे, और उन फलों में जो वे चाहें: “मज़े से खाओ और पियो उन कामों के बदले जो तुम करते थे।” हम अच्छा करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। तबाही है उस दिन सत्य के इनकारियों के लिए! (29–45)

“थोड़े दिन खा लो और मज़े कर लो: निश्चय ही तुम अपराधी हो।” तबाही है उस दिन सत्य के इनकारियों के लिए! और जब उनसे कहा जाता है, “झुको,” तो वे नहीं झुकते। तबाही है उस दिन सत्य के इनकारियों के लिए! तो इसके बाद वे और किस बात पर ईमान लाएँगे? (46–50)

# 78. बड़ी ख़बर (अन-नबा)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ये लोग आपस में किस चीज़ के बारे में पूछ-ताछ कर रहे हैं? उस बड़ी ख़बर के बारे में, जिसमें ये मतभेद कर रहे हैं। हरगिज़ नहीं! जल्द ही ये जान लेंगे। फिर हरगिज़ नहीं! जल्द ही ये जान लेंगे। (1–5)

क्या हमने ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया, और पहाड़ों को मेख़ें? और हमने तुम्हें जोड़े-जोड़े पैदा किया, और तुम्हारी नींद को आराम बनाया, और रात को ओढ़ना बनाया, और दिन को रोज़ी कमाने का समय बनाया। और हमने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए, और वहाँ एक दहकता हुआ चिराग़ रखा, और निचुड़ते बादलों से मूसलाधार पानी उतारा, ताकि उसके द्वारा अनाज और सब्ज़ा निकालें, और घने बाग़। (6–16)

निश्चय ही फ़ैसले का दिन एक ठहराया हुआ समय है: जिस दिन सूर फूँका जाएगा तो तुम गिरोह-दर-गिरोह चले आओगे, और आसमान खोल दिया जाएगा तो दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएगा, और पहाड़ चला दिए जाएँगे तो सराब होकर रह जाएँगे। निश्चय ही जहन्नम घात में है, हर हद से गुज़र जाने वालों का ठिकाना, जिसमें वे युगों पड़े रहेंगे, वहाँ न किसी ठंडक का मज़ा चखेंगे न पीने की किसी चीज़ का, सिवाय खौलते पानी और पीप के—पूरा-पूरा बदला। निश्चय ही वे किसी हिसाब की आस न रखते थे, और उन्होंने हमारी आयतों को बुरी तरह झुठलाया; हालाँकि हमने हर चीज़ लिखकर गिन रखी है। “तो अब मज़ा चखो! हम तुम्हारे लिए यातना के सिवा कुछ न बढ़ाएँगे।” (17–30)

निश्चय ही जो अल्लाह के प्रति सचेत रहे उनके लिए कामयाबी है: बाग़ और अंगूर, और नौजवान, हमउम्र साथिनें, और छलकता हुआ जाम। वहाँ वे न कोई बेहूदा बात सुनेंगे न झूठ: यह तुम्हारे रब की ओर से बदला है, पूरे हिसाब की देन, उसकी ओर से जो आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उन दोनों के बीच है सबका रब है, रहमान, जिससे बात करने का किसी को अधिकार न होगा—जिस दिन रूह और फ़रिश्ते सफ़ बाँधे खड़े होंगे। कोई न बोलेगा सिवाय उसके जिसे रहमान इजाज़त दे, और जो ठीक बात कहे। वह दिन सत्य है। तो जो चाहे अपने रब की ओर लौटने की राह अपना ले। हमने तुम्हें एक क़रीब आ लगी यातना से सचेत कर दिया है: जिस दिन आदमी वह सब देख लेगा जो उसके अपने हाथों ने आगे भेजा, और सत्य का इनकारी कहेगा, “काश मैं मिट्टी होता!”[55] (31–40)

[55] [सूरा अन-नबा: बड़ी ख़बर]
[सूरा अन-नबा: सृष्टि, ईश्वरीय दफ़्तर और आख़िरी खुलासे का दिन]

# 79. ज़ोर से खींचने वाले (अन-नाज़िआत)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क़सम है उनकी जो सख़्ती से खींच निकालते हैं, और उनकी जो नर्मी से खोल देते हैं, और उनकी जो तेज़ी से तैरते चले जाते हैं, फिर उनकी जो दौड़कर आगे बढ़ जाते हैं, फिर उनकी जो काम का प्रबन्ध करते हैं: जिस दिन हिला डालने वाली पहली चीज़ हिला डालेगी, और उसके पीछे दूसरी आएगी, उस दिन दिल धड़क रहे होंगे, और निगाहें झुकी होंगी। वे कहते हैं, "क्या हम सचमुच उलटे पाँव पहली हालत में लौटाए जाएँगे, क्या तब भी जब हम गली-सड़ी हड्डियाँ हो चुके होंगे?" वे कहते हैं, "तब तो यह लौटना बड़े घाटे का होगा!" वह तो बस एक ही डाँट होगी, और वे एकाएक खुले मैदान में होंगे। (1–14)

क्या तुम तक मूसा की ख़बर पहुँची है? जब उसके रब ने उसे तुवा की पाक घाटी में पुकारा: "फ़िरऔन के पास जाओ, क्योंकि वह हर हद से गुज़र गया है, और कहो, 'क्या तेरा जी चाहता है कि तू पाकीज़गी अपनाए, और मैं तुझे तेरे रब की राह दिखाऊँ, कि तू उससे डरे?'" फिर उसने उसे बड़ी निशानी दिखाई, मगर उसने झुठलाया और नाफ़रमानी की। फिर वह दौड़-धूप करता हुआ पलटा, और लोगों को इकट्ठा किया और पुकारकर कहा, "मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूँ!" तो अल्लाह ने उसे आख़िरत और दुनिया की इबरत भरी सज़ा में पकड़ लिया। निश्चय ही इसमें उसके लिए सबक़ है जो अल्लाह से डरे। (15–26)

क्या तुम्हारा पैदा करना ज़्यादा कठिन है, या आसमान का जिसे उसने बनाया? उसने उसकी छत ऊँची की और उसे ठीक-ठीक किया, उसकी रात को अँधेरा किया और उसका दिन निकाला; और उसके बाद ज़मीन को बिछाया, उसमें से उसका पानी और उसका चारा निकाला, और पहाड़ों को जमा दिया—तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के काम के लिए। फिर जब वह बड़ी आफ़त आएगी, जिस दिन इनसान वह सब याद करेगा जिसके लिए उसने दौड़-धूप की, और दहकती आग हर देखने वाले के सामने निकालकर रख दी जाएगी: तो जिसने हर हद से आगे क़दम रखा और दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह दी, तो दहकती आग ही उसका ठिकाना है; और जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरा, और अपने जी को बुरी ख़्वाहिश से रोके रखा, तो जन्नत ही उसका ठिकाना है। (27–41)

ऐ नबी, वे तुमसे उस घड़ी के बारे में पूछते हैं: "वह कब आकर ठहरेगी?" तुम्हें उसके बताने से क्या वास्ता? उसकी आख़िरी ख़बर तुम्हारे रब ही के पास है। तुम तो बस उसे सचेत करने वाले हो जो उससे डरे। जिस दिन वे उसे देखेंगे, तो ऐसा लगेगा मानो वे दुनिया में बस एक शाम, या उसकी सुबह भर ठहरे थे। (42–46)

# 80. उसने त्योरी चढ़ाई (अबस)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

उसने त्योरी चढ़ाई और मुँह फेर लिया इस पर कि उसके पास अंधा आ गया। और तुम्हें क्या ख़बर? शायद वह पाकीज़गी में बढ़ता, या नसीहत पकड़ता, तो नसीहत उसे फ़ायदा देती। रहा वह जो बेपरवाह बनता है, तो तुम उसी की ओर ध्यान लगाते हो, हालाँकि अगर वह पाकीज़गी न अपनाए तो तुम पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं; और जो तुम्हारे पास दौड़ता हुआ आया, और वह अल्लाह से डरता है—तो उससे तुम बेरुख़ी बरतते हो। हरगिज़ नहीं! यह तो एक याददिहानी है, तो जो चाहे इससे नसीहत पकड़े, यह इज़्ज़त वाले सहीफ़ों में दर्ज है, जो ऊँचे दर्जे वाले और पाक रखे गए हैं, ऐसे लिखने वालों के हाथों में, जो इज़्ज़त वाले और नेक हैं। (1–16)

मारा जाए इनसान! वह सत्य का कैसा इनकारी है! उसने उसे किस चीज़ से पैदा किया? एक बूँद से उसे पैदा किया और उसका अन्दाज़ा ठहराया; फिर उसके लिए राह आसान की; फिर उसे मौत दी और क़ब्र में पहुँचाया; फिर जब चाहेगा, उसे दोबारा उठा खड़ा करेगा। हरगिज़ नहीं! उसने अभी वह पूरा नहीं किया जिसका उसने उसे हुक्म दिया था। तो इनसान अपने खाने ही को देख ले: हमने ख़ूब पानी बरसाया, फिर ज़मीन को फाड़-फाड़कर चीरा, फिर उसमें अनाज उगाया, और अंगूर और हरा चारा, और ज़ैतून और खजूर, और घने बाग़, और फल और घास—तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के काम के लिए। (17–32)

फिर जब वह कान बहरे कर देने वाली कड़क आएगी, उस दिन आदमी अपने भाई से भागेगा, और अपनी माँ और अपने बाप से, और अपनी पत्नी और अपनी औलाद से: उस दिन उनमें से हर एक को बस अपनी ही पड़ी होगी। उस दिन कुछ चेहरे चमक रहे होंगे, हँसते हुए, ख़ुश; और उस दिन कुछ चेहरों पर धूल पड़ी होगी, उन पर सियाही छाई होगी: यही हैं वे सत्य के इनकारी, बदकार। (33–42)

# 81. अँधेरे में लिपटा हुआ (अत-तकवीर)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

जब सूरज लपेट दिया जाएगा, और जब तारे झड़कर बेनूर हो जाएँगे, और जब पहाड़ चला दिए जाएँगे, और जब गाभिन ऊँटनियाँ यूँ ही छोड़ दी जाएँगी, और जब जंगली जानवर इकट्ठे कर दिए जाएँगे, और जब समुद्र भड़का दिए जाएँगे, और जब जानें अपने जोड़ों से मिला दी जाएँगी, और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई बच्ची से पूछा जाएगा कि वह किस गुनाह पर मारी गई, और जब सहीफ़े खोल दिए जाएँगे, और जब आसमान की खाल खींच ली जाएगी, और जब जहन्नम दहका दी जाएगी, और जब जन्नत क़रीब ले आई जाएगी—तब हर जान जान लेगी कि वह क्या लेकर आई है। (1–14)

तो मैं क़सम खाता हूँ उन तारों की जो पीछे हट जाते हैं, जो चलते हैं फिर छिप जाते हैं, और रात की जब वह छाने लगे, और सुबह की जब वह साँस ले: यह निश्चय ही एक इज़्ज़त वाले पैग़ाम लाने वाले का कहा हुआ है, जो शक्ति वाला है, अर्श के मालिक के यहाँ ऊँचे रुतबे वाला, वहाँ उसकी बात मानी जाती है, और वह अमानतदार है। और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं: और उसने उसे खुले क्षितिज पर देखा है, और वह परोक्ष की बातों पर कंजूसी करने वाला नहीं। और न यह किसी धुत्कारे हुए शैतान का कहा हुआ है। (15–25)

तो तुम किधर जा रहे हो? यह तो बस सारे संसारों के लिए एक याददिहानी है, तुममें से हर उस आदमी के लिए जो सीधा चलना चाहे—और तुम न चाहोगे मगर यह कि अल्लाह चाहे, जो सारे संसारों का रब है। (26–29)

# 82. फट जाना (अल-इनफ़ितार)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

जब आसमान फट जाएगा, और जब तारे बिखर जाएँगे, और जब समुद्र फाड़ दिए जाएँगे, और जब क़ब्रें उखाड़ दी जाएँगी, तब हर जान जान लेगी जो कुछ उसने आगे भेजा और जो कुछ पीछे छोड़ा। ऐ इनसान, तुझे अपने उस करीम रब के बारे में किस चीज़ ने धोखे में डाल दिया, जिसने तुझे पैदा किया, तुझे ठीक-ठीक बनाया और तुझे सन्तुलित किया, जिस सूरत में चाहा तुझे जोड़ दिया? हरगिज़ नहीं! बल्कि तुम बदले को झुठलाते हो। हालाँकि तुम पर निगहबान मुक़र्रर हैं, इज़्ज़त वाले लिखने वाले, जो जानते हैं जो कुछ तुम करते हो। निश्चय ही नेक लोग नेमतों में होंगे, और बदकार दहकती आग में, जिसमें वे बदले के दिन दाख़िल होंगे, और उससे कभी ग़ायब न हो सकेंगे। और तुम्हें क्या ख़बर कि बदले का दिन क्या है? फिर तुम्हें क्या ख़बर कि बदले का दिन क्या है? वह दिन जब कोई जान किसी जान के लिए कुछ न कर सकेगी: और उस दिन सारा हुक्म अल्लाह ही का होगा। (1–19)

# 83. नाप-तौल में कमी करने वाले (अल-मुतफ़्फ़िफ़ीन)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

तबाही है नाप-तौल में कमी करने वालों के लिए, जो जब लोगों से नापकर लेते हैं, तो पूरा-पूरा लेते हैं, और जब उन्हें नापकर या तौलकर देते हैं, तो घटाकर देते हैं। क्या ये लोग नहीं समझते कि वे उठाए जाने वाले हैं, एक बड़े दिन के लिए, जिस दिन सारे लोग सारे संसारों के रब के सामने खड़े होंगे? (1–6)

हरगिज़ नहीं! निश्चय ही बदकारों का आमालनामा सिज्जीन में है—और तुम्हें क्या ख़बर कि सिज्जीन क्या है?—एक लिखा हुआ दफ़्तर। तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए, जो बदले के दिन को झुठलाते हैं! और उसे बस वही झुठलाता है जो हद से गुज़रने वाला, गुनहगार हो, जिसे जब हमारी आयतें सुनाई जाती हैं, तो कहता है, "अगलों की कहानियाँ!" हरगिज़ नहीं! बल्कि जो कुछ वे कमाते रहे उसका ज़ंग उनके दिलों पर चढ़ गया है। हरगिज़ नहीं! निश्चय ही उस दिन वे अपने रब से ओट में रखे जाएँगे; फिर वे जहन्नम में जलेंगे; फिर कहा जाएगा, "यही है वह जिसे तुम झुठलाया करते थे।" (7–17)

हरगिज़ नहीं! निश्चय ही नेक लोगों का आमालनामा इल्लिय्यीन में है—और तुम्हें क्या ख़बर कि इल्लिय्यीन क्या है?—एक लिखा हुआ दफ़्तर, जिसके गवाह वे हैं जो अल्लाह के क़रीब किए गए हैं। निश्चय ही नेक लोग नेमतों में होंगे, तख़्तों पर बैठे नज़ारा कर रहे होंगे; तुम उनके चेहरों पर नेमतों की रौनक़ पहचान लोगे। उन्हें मुहरबन्द ख़ालिस शराब पिलाई जाएगी, जिसकी मुहर कस्तूरी की होगी—तो बढ़-चढ़कर कोशिश करने वालों को इसी के लिए कोशिश करनी चाहिए—और उसमें तसनीम की मिलावट होगी, एक सोता जिससे क़रीब किए हुए लोग पिएँगे। (18–28)

जो अपराधी थे वे ईमान वालों पर हँसा करते थे; और जब उनके पास से गुज़रते तो आपस में आँखों से इशारे करते, और जब अपने लोगों की ओर लौटते तो ठिठोलियाँ करते हुए लौटते, और जब उन्हें देखते तो कहते, "ये लोग निश्चय ही भटके हुए हैं"—हालाँकि वे उन पर निगहबान बनाकर नहीं भेजे गए थे। तो आज ईमान वाले सत्य के इनकारियों पर हँस रहे हैं, तख़्तों पर बैठे नज़ारा कर रहे हैं: क्या सत्य के इनकारियों को उनके किए का बदला मिल गया? (29–36)

# 84. चिर जाना (अल-इनशिक़ाक़)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

जब आसमान फट जाएगा और अपने रब की बात मानेगा, और उसे यही चाहिए; और जब ज़मीन फैलाकर समतल कर दी जाएगी, और जो कुछ उसके अन्दर है उसे निकाल फेंकेगी और ख़ाली हो जाएगी, और अपने रब की बात मानेगी, और उसे यही चाहिए—ऐ इनसान, तू अपने रब की ओर मेहनत करता चला जा रहा है, कड़ी मेहनत, और तू उससे मिलकर रहेगा। तो जिसका आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दिया गया उससे आसान हिसाब लिया जाएगा, और वह अपने लोगों की ओर ख़ुश-ख़ुश लौटेगा; और जिसका आमालनामा उसकी पीठ के पीछे से दिया गया वह तबाही को पुकारेगा, और भड़कती आग में जलेगा। वह अपने लोगों में मगन रहा करता था; उसने समझ रखा था कि वह कभी अल्लाह की ओर न लौटेगा। क्यों नहीं! उसका रब उसे बराबर देख रहा था। तो मैं क़सम खाता हूँ शाम की लाली की, और रात की और उस सबकी जिसे वह समेट लेती है, और चाँद की जब वह पूरा हो जाए: तुम ज़रूर एक दर्जे से दूसरे दर्जे पर चढ़ते चले जाओगे। (1–19)

तो उन्हें क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते, और जब उनके सामने क़ुरआन पढ़ा जाता है तो सजदा नहीं करते? बल्कि सत्य के इनकारी उसे झुठलाते हैं, हालाँकि अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ वे अपने भीतर जमा कर रहे हैं। तो उन्हें दुखद यातना की ख़बर सुना दो—सिवाय उनके जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए: उनके लिए कभी न ख़त्म होने वाला बदला है। (20–25)

# 85. ऊँचे बुर्ज (अल-बुरूज)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क़सम है ऊँचे बुर्जों वाले आसमान की, और उस दिन की जिसका वादा किया गया है, और गवाह की और उसकी जिस पर गवाही दी जाए: मारे गए खाई वाले, ईंधन से भरी आग वाले, जब वे उसके किनारे बैठे थे, और जो कुछ ईमान वालों के साथ कर रहे थे उसे देख रहे थे। उन्हें उनसे बस यही शिकायत थी कि वे अल्लाह पर ईमान लाए, जो प्रभुत्वशाली, प्रशंसा के योग्य है, जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है। और अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है। (1–9)

निश्चय ही जिन लोगों ने ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को सताया और फिर तौबा न की, उनके लिए जहन्नम की यातना है, और जलने की यातना। निश्चय ही जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं: यही बड़ी कामयाबी है। निश्चय ही तुम्हारे रब की पकड़ बड़ी सख़्त है। वही पहली बार पैदा करता है और वही दोबारा लौटाता है, और वही बड़ा क्षमाशील, बड़ा मुहब्बत करने वाला है, अर्श का मालिक, बड़ी शान वाला, जो चाहे कर डालने वाला। क्या तुम तक लश्करों की ख़बर पहुँची है, फ़िरऔन और समूद की? फिर भी सत्य के इनकारी झुठलाने ही में लगे हुए हैं, हालाँकि अल्लाह उन्हें पीछे से घेरे हुए है। (10–20)

बल्कि यह एक बड़ी शान वाला क़ुरआन है, जो सुरक्षित तख़्ती में महफ़ूज़ है।[56] (21–22)

[56] **क़ुरआन एक सूरा का नाम तारामंडलों पर क्यों रखता है?**

# 86. रात को आने वाला (अत-तारिक़)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क़सम है आसमान की और रात को आने वाले की—और तुम्हें क्या ख़बर कि रात को आने वाला क्या है?—वह चमकता हुआ तारा जो अँधेरे को चीर देता है: कोई जान ऐसी नहीं जिस पर कोई निगहबान मुक़र्रर न हो। (1–4)

तो इनसान देख ले कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है: वह एक उछलते पानी से पैदा किया गया है, जो पीठ और पसलियों के बीच से निकलता है। निश्चय ही वह उसे लौटा लाने की सामर्थ्य रखता है, जिस दिन छिपे भेद खोल दिए जाएँगे, तो उसके पास न कोई ज़ोर होगा, न कोई मददगार। (5–10)

क़सम है बारिश लौटा लाने वाले आसमान की, और उस ज़मीन की जो उगती खेती से फट जाती है: यह निश्चय ही एक दो-टूक बात है, और कोई हँसी-मज़ाक़ नहीं। वे एक चाल चल रहे हैं, और मैं भी एक तदबीर कर रहा हूँ। तो सत्य के इनकारियों को मुहलत दो; उन्हें थोड़ी देर के लिए छोड़ दो। (11–17)

# 87. सबसे ऊँचा (अल-आला)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

अपने रब के नाम की तसबीह करो, जो सबसे ऊँचा है, जिसने पैदा किया और ठीक-ठीक बनाया, जिसने अन्दाज़ा ठहराया फिर राह दिखाई, जिसने चारा उगाया, फिर उसे स्याह, सूखा कूड़ा कर दिया। हम तुम्हें पढ़ाएँगे, फिर तुम न भूलोगे—सिवाय उसके जो अल्लाह चाहे। वह जानता है जो खुला है और जो छिपा है। और हम तुम्हें आसान राह की ओर आसानी से ले चलेंगे। तो नसीहत करो, अगर नसीहत फ़ायदा दे। जो अल्लाह से डरता है वह नसीहत पकड़ लेगा, और सबसे बड़ा बदबख़्त उससे दूर रहेगा—वह जो सबसे बड़ी आग में जलेगा, जहाँ न मरेगा न जिएगा। कामयाब हुआ वह जिसने अपने आप को पाक किया, और अपने रब का नाम याद किया, और नमाज़ पढ़ी। मगर तुम लोग दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह देते हो, हालाँकि आख़िरत बेहतर है और ज़्यादा बाक़ी रहने वाली। निश्चय ही यही बात अगले सहीफ़ों में है, इबराहीम और मूसा के सहीफ़ों में। (1–19)

# 88. छा जाने वाली घटना (अल-ग़ाशिया)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क्या तुम तक उस छा जाने वाली घटना की ख़बर पहुँची है? उस दिन कुछ चेहरे झुके हुए होंगे, मेहनत करते, थके-हारे, दहकती आग में जल रहे होंगे, उन्हें एक खौलते सोते से पिलाया जाएगा। उनके लिए एक काँटेदार, कड़वे पौधे के सिवा कोई खाना न होगा, जो न मोटा करे और न भूख मिटाए। उस दिन कुछ और चेहरे तरो-ताज़ा होंगे, अपनी कोशिश पर ख़ुश, ऊँची जन्नत में, जहाँ कोई बेहूदा बात न सुनेंगे। उसमें एक बहता हुआ सोता है; उसमें ऊँचे बिछे हुए तख़्त हैं, और सामने रखे हुए प्याले, और क़तार में लगे हुए गाव-तकिए, और बिछे हुए उम्दा क़ालीन। तो क्या ये लोग ऊँटों को नहीं देखते, कि कैसे पैदा किए गए? और आसमान को, कि कैसे ऊँचा किया गया? और पहाड़ों को, कि कैसे जमाए गए? और ज़मीन को, कि कैसे बिछाई गई? (1–20)

तो तुम नसीहत करते रहो, क्योंकि तुम बस नसीहत करने वाले हो; तुम उन पर कोई दारोग़ा नहीं हो। मगर जिसने मुँह मोड़ा और सत्य का इनकार किया, तो अल्लाह उसे सबसे बड़ी यातना देगा। निश्चय ही हमारी ही ओर उनका लौटना है; फिर निश्चय ही हमारे ही ज़िम्मे उनका हिसाब है। (21–26)

# 89. भोर (अल-फ़ज्र)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क़सम है भोर की, और दस रातों की, और जुफ़्त और ताक़ की, और रात की जब वह चलने लगे—क्या इसमें अक़्ल वाले के लिए कोई क़सम नहीं? (1–5)

क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने आद के साथ क्या किया, ऊँचे सुतूनों वाले इरम के साथ, जिनके जैसा सारे मुल्कों में कोई पैदा नहीं किया गया था; और समूद के साथ, जिन्होंने घाटी में चट्टानें तराशी थीं; और मेख़ों वाले फ़िरऔन के साथ? इन सबने मुल्कों में सरकशी की और उनमें बहुत बिगाड़ फैलाया, तो तुम्हारे रब ने उन पर यातना का कोड़ा बरसा दिया। निश्चय ही तुम्हारा रब घात में है। (6–14)

रहा इनसान, तो जब उसका रब उसे आज़माता है और उसे इज़्ज़त और नेमत देता है, तो वह कहता है, "मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी"; और जब वह उसे आज़माता है और उसकी रोज़ी उस पर तंग कर देता है, तो वह कहता है, "मेरे रब ने मुझे ज़लील कर दिया।" हरगिज़ नहीं! बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते, और न एक-दूसरे को मुहताज को खाना खिलाने पर उभारते हो; और तुम मीरास का माल समेट-समेटकर खा जाते हो, और माल से जी भरकर मुहब्बत रखते हो। हरगिज़ नहीं! जब ज़मीन कूट-कूटकर चूरा कर दी जाएगी, और तुम्हारा रब आएगा, और फ़रिश्ते सफ़-दर-सफ़, और उस दिन जहन्नम सामने लाई जाएगी—उस दिन इनसान को समझ आएगी, मगर तब समझ आने से उसे क्या फ़ायदा? वह कहेगा, "काश मैंने अपनी इस ज़िन्दगी के लिए कुछ भलाई आगे भेजी होती!" तो उस दिन न कोई उसकी-सी यातना देगा, और न कोई उसका-सा बाँधेगा। "ऐ इत्मीनान वाली जान, अपने रब की ओर लौट चल, तू उससे राज़ी, वह तुझसे राज़ी; तो मेरे बन्दों में शामिल हो जा, और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा।" (15–30)

# 90. शहर (अल-बलद)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

मैं क़सम खाता हूँ इस शहर की—और ऐ नबी, इस शहर में तुम पर कोई पाबन्दी नहीं—और जनने वाले की और उसकी जो उसने जना: हमने इनसान को मशक़्क़त में पैदा किया है। क्या वह समझता है कि उस पर किसी का बस न चलेगा? वह कहता है, "मैंने ढेरों माल उड़ा दिया।" क्या वह समझता है कि उसे किसी ने नहीं देखा? क्या हमने उसके लिए दो आँखें नहीं बनाईं, और एक ज़बान और दो होंठ, और उसे दोनों रास्ते नहीं दिखा दिए? मगर उसने उस दुश्वार घाटी पर चढ़ने की हिम्मत न की। और तुम्हें क्या ख़बर कि वह दुश्वार घाटी क्या है? किसी गर्दन को ग़ुलामी से छुड़ाना, या भूख के दिन खाना खिलाना, किसी क़रीबी यतीम को, या ख़ाक में पड़े किसी मुहताज को; फिर उन लोगों में शामिल होना जो ईमान लाए, और एक-दूसरे को सब्र की ताकीद करते रहे, और एक-दूसरे को रहम की ताकीद करते रहे। यही दाहिने हाथ वाले हैं। और जिन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया वे बाएँ हाथ वाले हैं: उन पर हर ओर से बन्द की हुई आग छाई होगी। (1–20)

# 91. सूरज (अश-शम्स)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क़सम है सूरज की और उसकी चढ़ती धूप की, और चाँद की जब वह उसके पीछे आए, और दिन की जब वह उसे रौशन कर दे, और रात की जब वह उसे ढाँप ले, और आसमान की और उसकी जिसने उसे बनाया, और ज़मीन की और उसकी जिसने उसे बिछाया, और जान की और उसकी जिसने उसे ठीक-ठीक बनाया, फिर उसकी बदी और उसकी अल्लाह के प्रति सचेतता उसके दिल में डाल दी: निश्चय ही सफल हुआ वह जिसने उसे पाक किया, और नाकाम हुआ वह जिसने उसे बिगाड़ में दबा दिया। समूद ने अपनी सरकशी के कारण सत्य को झुठलाया, जब उनका सबसे बड़ा बदबख़्त उठ खड़ा हुआ। तो अल्लाह के रसूल ने उनसे कहा, “अल्लाह की ऊँटनी—और उसके पानी पीने की बारी!” मगर उन्होंने उसे झुठलाया और ऊँटनी की कूँचें काट डालीं। तो उनके रब ने उनके गुनाह के कारण उन्हें कुचल डाला और उन्हें बराबर कर दिया, और उसे इसके अंजाम का कोई डर नहीं। (1–15)

# 92. रात (अल-लैल)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क़सम है रात की जब वह छा जाए, और दिन की जब वह रौशन हो, और उसकी जिसने नर और मादा पैदा किए: निश्चय ही तुम्हारी कोशिशें तरह-तरह की हैं। तो जिसने दिया, और अल्लाह के प्रति सचेत रहा, और सबसे अच्छे बदले को सच माना, हम उसे आसान राह की ओर आसानी से ले चलेंगे; और जिसने कंजूसी की, और अपने आप को बेनियाज़ समझा, और सबसे अच्छे बदले को झुठलाया, हम उसे कठिन राह की ओर आसानी से ले चलेंगे, और जब वह गिरेगा तो उसका माल उसके कुछ काम न आएगा। (1–11)

निश्चय ही मार्गदर्शन देना हमारे ज़िम्मे है, और निश्चय ही आख़िरत और दुनिया दोनों हमारे ही हैं। तो मैंने तुम्हें एक भड़कती हुई आग से सचेत कर दिया है; उसमें बस वही जलेगा जो सबसे बड़ा बदबख़्त है, जिसने झुठलाया और मुँह मोड़ा; और उससे दूर रखा जाएगा वह जो अल्लाह के प्रति सबसे ज़्यादा सचेत है—जो अपना माल इसलिए देता है कि पाक हो, और उस पर किसी का कोई एहसान नहीं जिसका बदला चुकाया जा रहा हो, बल्कि बस अपने सर्वोच्च रब की ख़ुशी चाहते हुए। और वह ज़रूर ख़ुश हो जाएगा। (12–21)

# 93. चढ़ते दिन की रौशनी (अज़-ज़ुहा)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क़सम है चढ़ते दिन की रौशनी की, और रात की जब वह ठहर जाए: तुम्हारे रब ने न तुम्हें छोड़ा, और न वह तुमसे नाराज़ हुआ; और जो बाद में आने वाला है वह तुम्हारे लिए पहले से बेहतर होगा; और तुम्हारा रब ज़रूर तुम्हें इतना देगा कि तुम ख़ुश हो जाओगे। क्या उसने तुम्हें यतीम नहीं पाया, फिर ठिकाना दिया? और तुम्हें राह ढूँढता पाया, तो राह दिखाई? और तुम्हें ज़रूरतमन्द पाया, तो ग़नी कर दिया? (1–8)

तो जो यतीम है, उस पर सख़्ती न करो; और जो माँगने वाला है, उसे न झिड़को; और जो तुम्हारे रब की नेमत है, उसका चर्चा करते रहो। (9–11)

# 94. राहत (अश-शर्ह)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क्या हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा सीना नहीं खोल दिया, और तुम पर से तुम्हारा वह बोझ नहीं उतार दिया, जिसने तुम्हारी पीठ तोड़ रखी थी, और तुम्हारे लिए तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द नहीं कर दिया? तो निश्चय ही कठिनाई के साथ आसानी है; निश्चय ही कठिनाई के साथ आसानी है। तो जब तुम फ़ारिग़ हो जाओ, तो मेहनत में लग जाओ, और अपने रब ही की ओर लौ लगाओ। (1–8)

# 95. अंजीर (अत-तीन)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क़सम है अंजीर और ज़ैतून की, और सीना के पहाड़ की, और इस अमन वाले शहर की: निश्चय ही हमने इनसान को सबसे अच्छी बनावट पर पैदा किया, फिर हम उसे नीचों से भी नीचा कर देते हैं—सिवाय उनके जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए: उनके लिए कभी न ख़त्म होने वाला बदला है। तो इसके बाद कौन-सी चीज़ तुम्हें बदले के बारे में झुठलाने पर आमादा करती है? क्या अल्लाह सब हाकिमों से बढ़कर इनसाफ़ करने वाला हाकिम नहीं? (1–8)

# 96. चिमटने वाला रूप (अल-अलक़)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

पढ़ो! अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया—इनसान को एक चिमटने वाले रूप से पैदा किया। पढ़ो! और तुम्हारा रब सबसे बढ़कर करीम है, जिसने क़लम के द्वारा सिखाया, इनसान को वह सिखाया जो वह न जानता था। (1–5)

हरगिज़ नहीं! निश्चय ही इनसान हर हद से गुज़र जाता है, ज्यों ही वह अपने आप को बेनियाज़ देखता है। निश्चय ही तुम्हारे रब ही की ओर लौटना है। क्या तुमने उसे देखा जो अल्लाह के एक बन्दे को रोकता है जब वह नमाज़ पढ़ता है? भला देखो तो, क्या वह मार्गदर्शन पर है, या अल्लाह के प्रति सचेत रहने का हुक्म देता है? भला देखो तो, क्या वह झुठलाता और मुँह मोड़ता है? क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह देख रहा है? हरगिज़ नहीं! अगर वह बाज़ न आया तो हम उसे पेशानी के बालों से पकड़कर घसीटेंगे—झूठी, ख़ताकार पेशानी। फिर वह अपनी मजलिस को बुला ले; हम भी जहन्नम के प्यादों को बुला लेंगे। हरगिज़ नहीं! उसकी बात न मानो। सजदा करो, और क़रीब हो जाओ। (6–19)

# 97. शबे-क़द्र (अल-क़द्र)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

हमने इसे शबे-क़द्र में उतारा। और तुम्हें क्या ख़बर कि शबे-क़द्र क्या है? शबे-क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। उसमें फ़रिश्ते और रूह अपने रब की इजाज़त से हर हुक्म लेकर उतरते हैं। सलामती ही सलामती है वह, भोर के निकलने तक। (1–5)

# 98. खुली दलील (अल-बय्यिना)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

किताब वालों और मुशरिकों में से जिन्होंने सत्य का इनकार किया वे बाज़ आने वाले न थे जब तक उनके पास खुली दलील न आ जाती: अल्लाह की ओर से एक रसूल, जो पाक सहीफ़े पढ़कर सुनाए, जिनमें ठीक और सच्चे हुक्म लिखे हों। और जिन्हें किताब दी गई थी वे आपस में बँटे नहीं मगर इसके बाद कि उनके पास खुली दलील आ चुकी थी। हालाँकि उन्हें बस यही हुक्म दिया गया था कि अल्लाह की इबादत करें, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करके, सच्चे ईमान वाले बनकर, और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें: यही सच्ची सीधी राह का दीन है। निश्चय ही किताब वालों और मुशरिकों में से जो सत्य का इनकार करते हैं वे जहन्नम की आग में होंगे, उसमें सदा रहेंगे। वही सारी मख़लूक़ में सबसे बुरे हैं। (1–6)

निश्चय ही जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए—वही सारी मख़लूक़ में सबसे अच्छे हैं। उनका बदला उनके रब के यहाँ अदन के बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जहाँ वे हमेशा-हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ, और वे उससे राज़ी हुए। यह उसके लिए है जो अपने रब से डरे। (7–8)

# 99. भूचाल (अज़-ज़लज़ला)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

जब ज़मीन अपने आख़िरी भूचाल से हिला डाली जाएगी, और ज़मीन अपने बोझ निकाल फेंकेगी, और इनसान कहेगा, "इसे क्या हो गया है?"—उस दिन वह अपनी ख़बरें सुना देगी, क्योंकि तुम्हारे रब ने उसे यही इशारा किया होगा। उस दिन लोग अलग-अलग टोलियों में निकलेंगे ताकि उन्हें उनके कर्म दिखाए जाएँ: तो जिसने ज़र्रा भर भलाई की होगी वह उसे देख लेगा, और जिसने ज़र्रा भर बुराई की होगी वह उसे देख लेगा। (1–8)

# 100. दौड़ते घोड़े (अल-आदियात)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क़सम है उन घोड़ों की जो हाँफते हुए दौड़ते हैं, फिर टाप मारकर चिनगारियाँ झाड़ते हैं, फिर भोर के समय धावा बोलते हैं, फिर ग़ुबार का बादल उठाते हैं, और दुश्मन के जत्थे के बीच जा घुसते हैं: निश्चय ही इनसान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है, और निश्चय ही वह ख़ुद इस पर गवाह है; और निश्चय ही वह माल की मुहब्बत में बड़ा सख़्त है। (1–8)

तो क्या वह नहीं जानता कि जब वह सब निकाल लिया जाएगा जो क़ब्रों में है, और वह सब ज़ाहिर कर दिया जाएगा जो सीनों में है, तो उस दिन उनका रब उनकी पूरी ख़बर रखने वाला होगा? (9–11)

# 101. खड़खड़ा देने वाली चोट (अल-क़ारिआ)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

वह खड़खड़ा देने वाली चोट! क्या है वह खड़खड़ा देने वाली चोट? और तुम्हें क्या ख़बर कि वह खड़खड़ा देने वाली चोट क्या है? वह दिन जब लोग बिखरे हुए पतंगों की तरह होंगे, और पहाड़ धुनकी हुई ऊन के गालों की तरह। तो जिसके पलड़े भारी होंगे, वह मनपसन्द ज़िन्दगी में होगा; और जिसके पलड़े हल्के होंगे, उसकी माँ वह गहरी खाई होगी—और तुम्हें क्या ख़बर कि वह क्या है?—दहकती हुई आग। (1–11)

# 102. ज़्यादा पाने की धुन (अत-तकासुर)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

ज़्यादा से ज़्यादा पाने की धुन ने तुम्हें ग़ाफ़िल कर रखा है, यहाँ तक कि तुम क़ब्रों में जा पहुँचते हो। हरगिज़ नहीं! जल्द ही तुम जान लोगे। फिर हरगिज़ नहीं! जल्द ही तुम जान लोगे। हरगिज़ नहीं! काश तुम यक़ीन के इल्म से जानते! तुम जहन्नम को ज़रूर देखोगे; फिर तुम उसे ज़रूर यक़ीन की आँख से देखोगे; फिर उस दिन तुमसे ज़रूर उन नेमतों के बारे में पूछा जाएगा जिनके मज़े तुमने लिए। (1–8)

# 103. ढलता दिन (अल-अस्र)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क़सम है ढलते दिन की, निश्चय ही इनसान घाटे में है—सिवाय उनके जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, और एक-दूसरे को सत्य की ताकीद करते रहे, और एक-दूसरे को सब्र की ताकीद करते रहे। (1–3)

# 104. पीठ पीछे बुराई करने वाला (अल-हुमज़ा)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

तबाही है हर उस शख़्स के लिए जो पीठ पीछे बुराई करता और ताने देता है, जो माल जमा करता और उसे गिन-गिनकर रखता है, समझता है कि उसका माल उसे हमेशा ज़िन्दा रखेगा। हरगिज़ नहीं! वह ज़रूर उस चूर-चूर कर देने वाली में फेंक दिया जाएगा—और तुम्हें क्या ख़बर कि वह चूर-चूर कर देने वाली क्या है?—अल्लाह की भड़काई हुई आग, जो दिलों तक जा चढ़ती है। वह उन पर बन्द कर दी जाएगी, लम्बे-लम्बे सुतूनों में। (1–9)

# 105. हाथी (अल-फ़ील)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया? क्या उसने उनकी चाल को अकारथ नहीं कर दिया, और उन पर परिन्दों के झुंड के झुंड नहीं भेजे, जो उन पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर मार रहे थे, फिर उन्हें खाए हुए भूसे जैसा कर दिया?[57] (1–5)

[57] जिद्दा की घेराबन्दी, 1517: पुर्तगाल, लाल सागर और पवित्र शहरों की रक्षा
"ऐ मेरे रब, इस शहर को अमन वाला बना दे": क़ुरआन 14:35–41 की ऐतिहासिक और धर्मशास्त्रीय व्याख्या, इबराहीम से लेकर 2026 के मक्का रक्षा गठबन्धन तक मक्का की सुरक्षा के सदी-दर-सदी इतिहास के साथ

# 106. क़ुरैश (क़ुरैश)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क़ुरैश की हिफ़ाज़त के लिए, जाड़े और गर्मी के सफ़र में उनकी हिफ़ाज़त के लिए—उन्हें चाहिए कि इस घर के रब की इबादत करें, जिसने उन्हें भूख में खाना खिलाया और डर से अमन दिया। (1–4)

# 107. आम बरतने की चीज़ें (अल-माऊन)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

क्या तुमने उसे देखा जो बदले को झुठलाता है? वही तो है जो यतीम को धक्के देता है, और मुहताज को खाना खिलाने पर नहीं उभारता। तो तबाही है उन नमाज़ पढ़ने वालों के लिए जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं, जो दिखावा करते हैं, और आम बरतने की मामूली चीज़ें भी देने से हाथ रोक लेते हैं।[58] (1–7)

[58] **सूरा अल-माऊन – आम बरतने की चीज़ें**

# 108. भरपूर भलाई (अल-कौसर)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

निश्चय ही हमने तुम्हें भरपूर भलाई दी है। तो अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ो और क़ुरबानी करो। निश्चय ही जो तुमसे बैर रखता है वही जड़-कटा है। (1–3)

# 109. सत्य के इनकारी (अल-काफ़िरून)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

कह दो, "ऐ सत्य के इनकारियो, मैं उसकी इबादत नहीं करता जिसकी तुम इबादत करते हो, और न तुम उसकी इबादत करते हो जिसकी मैं इबादत करता हूँ। और न मैं कभी उसकी इबादत करूँगा जिसकी तुमने इबादत की, और न तुम कभी उसकी इबादत करोगे जिसकी मैं इबादत करता हूँ। तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन, और मेरे लिए मेरा दीन।"[59] (1–6)

[59] **क़ुरआन की 23 साल की बेदाग़ गवाही: "कह दो" और ख़ुदा की आवाज़**

# 110. मदद (अन-नस्र)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

जब अल्लाह की मदद आ जाए, और फ़तह, और तुम लोगों को देखो कि झुंड के झुंड अल्लाह के दीन में दाख़िल हो रहे हैं, तो अपने रब की हम्द के साथ उसकी तसबीह करो और उससे क्षमा माँगो: निश्चय ही वह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला है। (1–3)

# 111. खजूर की छाल (अल-मसद)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

टूट जाएँ अबू लहब के दोनों हाथ, और वह ख़ुद तबाह हो! न उसका माल उसके कुछ काम आएगा और न वह जो उसने कमाया। वह भड़कते शोलों वाली आग में जलेगा, और उसकी पत्नी भी, ईंधन ढोने वाली, जिसकी गर्दन में खजूर की छाल की बटी हुई रस्सी होगी। (1–5)

# 112. ख़ालिस ईमान (अल-इख़लास)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

कह दो, “वह अल्लाह है, एक अकेला, अल्लाह, जो सदा से है और जिसके सब मुहताज हैं। न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद, और कोई चीज़ नहीं जो उसके बराबर ठहराई जा सके।”[60] (1–4)

[60] क़ुरआन की 23 साल की बेदाग़ गवाही: “कह दो” और ख़ुदा की आवाज़

# 113. भोर (अल-फ़लक़)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

कह दो, "मैं पनाह लेता हूँ भोर के रब की, उस सबकी बुराई से जो उसने पैदा किया, और अँधेरे की बुराई से जब वह छा जाए, और गिरहों में फूँकने वालियों की बुराई से, और हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करे।"[61] (1–5)

[61] क़ुरआन की 23 साल की बेदाग़ गवाही: "कह दो" और ख़ुदा की आवाज़

# 114. लोग (अन-नास)

*अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, सदा दयावान है।*

कह दो, "मैं पनाह लेता हूँ लोगों के रब की, लोगों के बादशाह की, लोगों के माबूद की, उस वसवसा डालने वाले की बुराई से जो पीछे हट जाता है, जो लोगों के दिलों में वसवसे डालता है—जिन्नों में से हो या इनसानों में से।"[62] (1–6)

[62] **क़ुरआन की 23 साल की बेदाग़ गवाही: "कह दो" और ख़ुदा की आवाज़**